जाग उठा इन्सान

मिरज़ा इब्राहीमोव

जाग उठा इनसान

उपन्यास

अनुक्रम

सोवियत जनता का सपूत

सुप्रसिद्ध सोवियत गद्यकार, नाटककार और पत्रकार, अकादमीशियन और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, आज़रबैजान के जन लेखक और समाजवादी श्रम वीर मिरज़ा इब्राहीमोव सोवियत लोगों की उस पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं, जिनका जीवन और कार्यकलाप महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। यदि क्रांति न होती, तो उनका भाग्य भी वैसा ही रहा होता, जैसा कमरतोड़ मेहनत और ग़रीबी के कारण अकाल काल-कवलित हुए उनके पिता और दादा का रहा था।

मिरज़ा अजदर ओगली इब्राहीमोव का जन्म १९११ में दक्षिण आज़रबैजान में एक निर्धन किसान परिवार में हुआ था। वह अभी सात वर्ष के बालक ही थे कि भुखमरी और बीमारी से मां चल बसी और उसके कुछ ही समय बाद छोटी बहन भी। बेटों को भी ऐसे ही काल के मुंह में जाने से बचाने के लिए भावी लेखक के पिता ने गांव छोड़ दिया और बेहतर ज़िंदगी की तलाश में बाकू के एक तेल-निकासी उद्यम में काम करने लगे। किंतु साल भर भी न बीत पाया कि बड़ा बेटा और वह ख़ुद भी चल बसे और आठवर्षीय मिरज़ा को अनाथ छोड़ गये। जीवनपालन का और कोई साधन न होने के कारण बालक खेत-मजदूरी करने लगा। वह शायद ज़िंदगी भर उजरती खेत-मजदूर ही रहता, अगर अक्तूबर क्रांति न हो गयी होती। आज़रबैजानी जनता ने अपने आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए समाजवाद का पथ चुना और नन्हे खेत-मजदूर को शिक्षा पाने का अवसर मिल गया।

१९२३ में मिरज़ा इब्राहीमोव स्कूल में भरती हुए, इसके बाद एक औद्योगिक स्कूल में और फिर बाकू के तेल उद्योग विद्यालय में शिक्षा पायी। १९३० में वह आज़रबैजान की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने।

मिरज़ा इब्राहीमोव में साहित्यिक प्रतिभा के अंकुर काफ़ी पहले ही प्रकट हो गये थे। जब वह तेल उद्योग विद्यालय में पढ़ते थे, तभी उन्होंने प्रसिद्ध आज़रबैजानी गद्यकार सईद हुसैन द्वारा संचालित एक साहित्यिक मंडली में लेखनकला का प्रशिक्षण पाना आरंभ कर दिया था। सईद हुसैन को यह प्रतिभाशाली और मेहनती युवक भा गया। १९३० में उनकी सिफ़ारिश पर मिरज़ा इब्राहीमोव की पहली कहानी – 'ज़ुहरा' – प्रकाशित हुई और इसके बाद पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताएं, कहानियां और लेख प्रायः छपने लगे। उनमें युवा लेखक स्वयं अपने जीवन और आसपास के जीवन की ज्वलंत मिसालों के आधार पर नये जीवन की श्रेष्ठता और संभावनाओं को दर्शाया करता था। इस तरह आज़रबैजान के साहित्याकाश में एक नये जाज्वल्यमान नक्षत्र – मिरज़ा इब्राहीमोव – का उदय हुआ, जिन्हें सोवियत आज़रबैजानी गद्य और नाट्यलेखन की बुनियाद रखनेवालों में भी गिना जाता है।

शीघ्र ही आगे पढ़ने की लालसा, अपना साहित्यिक ज्ञान तथा कौशल बढ़ाते जाने की इच्छा युवा लेखक को लेनिनग्राद के प्राच्यविद्या संस्थान में ले आयी, जहां उन्होंने पी-एच० डी० के कोर्स में प्रवेश लिया। किंतु जीवन उनसे अपने मातृ-जनतंत्र के क्रांतिकारी निर्माण में प्रत्यक्ष भाग लेने की मांग कर रहा था। वह आज़रबैजान लौट आये और पार्टी ने उन्हें किसानों के बीच शिक्षा-प्रसार तथा संगठनात्मक कार्य करने के लिए एक सबसे महत्त्वपूर्ण इलाक़े – दक्षिणी आज़रबैजान – में भेजा। वहां वह 'सूरत' नामक समाचारपत्र के मुख्य संपादक बने। तभी मिरज़ा इब्राहीमोव ने कम्युनिस्ट पार्टी की नीति सीधे-सादे निरक्षर किसानों को स्पष्ट करने के उद्देश्य से जनजीवन की घटनाओं पर नाटक लिखने भी आरंभ किये। उनका नाटक 'हयात' (१९३५), जो क्रांति के बाद के आज़रबैजान की ग्रामीण नारी के बारे में था, जातीय नाट्यकला के विकास में एक महत्त्वपूर्ण मंज़िल सिद्ध हुआ और नाख़ीचेवान ही नहीं, अन्यत्र भी हर कहीं दर्शकों से खचाखच भरे हुए थियेटरों में दिखाया गया। इस नाटक में मिरज़ा इब्राहीमोव ने अपने समकालीनों के यथार्थ जीवन और विचारजगत में पैठने में समर्थ सच्ची कलात्मक अंतर्दृष्टि का परिचय देते हुए दिखाया कि पहले जो किसान

नारी अज्ञानग्रस्त और उत्पीड़ित थी, उसे सोवियत सत्ता काल में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो गये हैं और अब वह ख़ुद भी ज़मीन पाने की हक़दार हो सकती है, काम कर सकती है और पढ़ सकती है।

'हयात' में लेखक ने दक्षिणी आज़रबैजान के सामूहिक फ़ार्म आंदोलन की वास्तविक घटनाओं को चित्रित किया और वास्तविक आदि-प्ररूपों के सहारे दिखाया कि सामूहिक खेती करनेवाले नये मेहनतकश, नयी सामूहिकतावादी प्रवृत्ति और नयी जीवन-पद्धति का जन्म कैसे हुए। नाटक का नाम 'हयात' संयोगवशात् नहीं रखा गया – वह नायिका का भी नाम है और उसका अर्थ जीवन होता है।

किंतु जैसा कि विदित है, नूतन पुरातन से संघर्ष की प्रक्रिया में ही जन्मता और जड़ें जमाता है। अतः नाटककार भी बड़े कलात्मक अभिव्यंजना कौशल के साथ उन लोगों के विनाश की अपरिहार्यता को उजागर करता है, जो मरणोन्मुख पुरातन को बचाये रखना चाहते हैं।

क्रांति ने आज़रबैजानी जनता के जीवन के क्षितिजों को काफ़ी व्यापक बना दिया। अब आज़रबैजानी लोग अपने विशाल सोवियत देश की और विदेशों की भी घटनाओं तथा उपलब्धियों में गहन रुचि लेने लगे। फ़ासिज़्म के विरुद्ध स्पेनी जनता के युद्ध ने उन्हें विशेषतः उद्वेलित कर दिया था। जनतंत्र के सामान्य जन क्रांतिकारी स्पेन की सहायता के लिए तत्पर थे, अनाथ स्पेनी बच्चों को अपने घरों में शरण देने के लिए तैयार थे। इसका साहित्य पर भी प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। मिरज़ा इब्राहीमोव स्पेन की घटनाओं पर प्रतिक्रिया दिखानेवाले पहले लेखकों में थे। १९३८ में उनका नाटक 'मेड्रिड' प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने फ़ासिस्ट विचारधारा का परदाफ़ाश भी किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि स्पेनी देशभक्त अकेले नहीं हैं, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना से प्रेरित सारी दुनिया के मेहनतकश उनके साथ हैं।

जब फ़ासिस्ट जर्मनी ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया, तो आज़रबैजानी समझ गये कि उन्हें अपनी जान पर खेलते हुए स्वतंत्रता और राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा के लिए मरणांतक संघर्ष करना है। लोगों की उन वर्षों की भावनाएं, इच्छाएं और आकांक्षाएं मिरज़ा इब्राहीमोव के युद्धकाल में लिखे हुए सबसे उत्कृष्ट नाटक 'मुहब्बत' (१९४२) में प्रतिबिंबित हुईं। 'मुहब्बत' नाटक ऐसी भावप्रवणता और विश्वासोत्पादकता के साथ लिखा गया है कि वह पिछवाड़े में देशभक्तों के निःस्वार्थ श्रम के उन वर्षों की

ग्रौर फ़ासिस्ट दरिंदों पर विजय की ख़ातिर ग्रपना सर्वस्व तक होम कर देने की हर सोवियत ग्रादमी की तत्परता की याद दिलाकर ग्राज के दर्शक को भी उद्वेलित कर डालता है।

तीव्रनाटकीय संघर्ष, यथार्थवादी चरित्रों की ग्राशावादिता व गहराई ग्रौर समस्याग्रों की प्रासंगिकता, जो इब्राहीमोव की युद्धपूर्व ग्रौर युद्धकाल की रचनाग्रों की विशिष्टताएं थीं, उनकी युद्धोत्तर काल की रचनाग्रों में भी ग्रपना स्थान यथावत् बनाये रहीं। मिरज़ा इब्राहीमोव ने ग्रब कहानियों, नाटकों ग्रौर प्रहसनों के ग्रलावा उपन्यास भी लिखने शुरू किये। उपन्यास की विधा तब तक ग्राजरबैजानी साहित्य के लिए लगभग नयी ही थी। युद्ध के बाद की उनकी पहली कृति उपन्यास थी। वह लेखक के ग्रपने परिवार की कहानी पर ग्राधारित था। उन्होंने महान सर्वहारा लेखक मक्सिम गोर्की की उक्ति "वह दिन ग्रायेगा, जब सारे देशों के मज़दूर सिर उठाकर ज़ोर देकर कहेंगे: बहुत हो चुका!" का उपयोग करते हुए उसका शीर्षक 'वह दिन ग्रायेगा' (१९४८) रखा। यह कृति उनके इस दृढ़ विश्वास से ग्रोतप्रोत है कि वह दिन ग्रायेगा, जब राजतंत्र ग्रौर साम्राज्यवाद के जुए तले पिसते हुए लोग भी ग्रपनी बेड़ियां तोड़ डालेंगे ग्रौर नये, न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करेंगे।

मिरज़ा इब्राहीमोव का दूसरा उपन्यास 'जाग उठा इनसान' (१९५८) था। इसमें भी लेखक ने एक सबसे सामयिक समस्या को उठाया ग्रौर दिखाया कि जीवन द्वारा प्रस्तुत नयी सामग्री, युद्धोत्तरकालीन सामूहिक फ़ार्म संबंधी विषयवस्तु के साहित्यिक चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। 'जाग उठा इनसान' पर काम १९५२ से १९५८ तक जारी रहा। इसके लिए उन्हें तत्कालीन देहात की वास्तविकता का ग्रध्ययन करना कृषि तथा उसके संगठन की समस्याग्रों में पैठना ग्रौर उन्हें चित्रित करने की नयी युक्तियों तथा साधनों को ढूंढ़ना पड़ा। यहां भी लेखक ग्रपने ग्रादर्श से विचलित नहीं होता ग्रौर नये मानव का लक्ष्यनिष्ठ ग्रौर जनता के हितों के दृढ़, निःस्वार्थ नायक का गुणगान करता है।

उपन्यास का कथानक मुग़ान के एक सामूहिक फ़ार्म के जीवन से संबंध रखता है। किंतु कलात्मक सामान्यीकरण के सहारे लेखक ने घटनाग्रों ग्रौर पात्रों का ऐसा सशक्त प्रभावोत्पादक चित्र उपस्थित किया है कि उपन्यास उन सभी समस्याग्रों का प्रतिबिम्ब बन जाता है, जिनसे सारे ही ग्राजरबैजानी देहातों का विकास जुड़ा हुग्रा है। उपन्यास के पात्रों को जिन बड़े सवालों

से जूझना पड़ता है, वे ग्रौर 'नवजीवन' फ़ार्म की रोज़मर्रा की चिन्ताएं ग्राज़रबैजान के सभी सामूहिक फ़ार्मों सामने उठनेवाले सवाल ग्रौर चिन्ताएं हैं।

इस उपन्यास में मिरज़ा इब्राहीमोव दिखाते हैं कि नये की जीत कभी ग्रासानी से, मानव कार्यकलाप के सभी क्षेत्रों में संघर्ष के बिना नहीं होती, कि उसे विरोध का सामना करना पड़ता है, लेकिन विजय ग्रंततः ग्रौर हमेशा उसी की होती है, क्योंकि यही ऐतिहासिक विकास का नियम है। नये का पुराने से यह संघर्ष स्वाभाविक ग्रौर फलप्रद है, – वह ग्रात्मा को पवित्र, मज़बूत ग्रौर सौंदर्यमय बनाता है, नया जन्म देता है।

नया युग नये लोगों को जन्म देता है, उनसे नई बातों की ग्रपेक्षाएं करता है। समय बदलता है, ज़मीन का भी कायाकल्प होता है, लोगों ग्रौर उनके स्वभावों में भी परिवर्तन ग्राता है। वे ग्रपनी मेहनत से ज़मीन को सुधारते हैं ग्रौर उसके साथ स्वयं भी सुधारते, उदात्त बनते जाते हैं। ग्राज हमें यह देखकर हर्ष होता है कि ग्राज के मुग़ान में मनुष्य ने जो करिश्मा दिखाया है, वह किसी भी दंतकथा से सुंदर है।

१९७० में मिरज़ा इब्राहीमोव का तीसरा उपन्यास – 'परवाना' – निकला, जिसकी विषयवस्तु ग्राज़रबैजानी क्रान्तिकारी तथा समाज-सुधारक, महान सोवियत नेता नरीमन नरीमानोव के जीवन से संबंध रखती है। एक बृहद् ऐतिहासिक-क्रांतिकारी चित्र सरीखे इस उपन्यास को लेखक ने ग्राज़रबैजानी जनता की ग्रपने इतिहास के उन सत्यों को जानने की ग्रांतरिक ग्राकांक्षा की पूर्ति के लिए लिखा था, जिन्हें जाने बिना भविष्य का निर्माण नहीं किया जा सकता।

मिरज़ा इब्राहीमोव के उपरोक्त तीनों उपन्यास ग्राज़रबैजानी उपन्यासकला के विकास के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके माध्यम से लेखक ने ग्राज़रबैजानी जातीय साहित्य के ग्रागे भी समृद्धतर बनते जाने की मज़बूत बुनियाद रखी।

६० ग्रौर ७० के दशकों में मिरज़ा इब्राहीमोव ने बहुत बड़ी संख्या में लेख, कहानियां, साहित्यिक समीक्षाएं ग्रौर शोध रचनाएं भी लिखीं। वे सभी सोवियत जनता के जीवन से, उसके सृजनात्मक श्रम से, जनतंत्र ग्रौर देश की मुख्य घटनाग्रों से ग्रभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। इन वर्षों में प्रकाशित उनकी 'दक्षिणी कहानियां' तथा 'हमारे लोग' शीर्षक कथामालाग्रों

और 'मेरी ज़िंदगी की किताब' शीर्षक शब्दचित्र संग्रह में उनके सोवियत तथा विदेशी समकालीनों के अद्भुत चित्र पाये जाते हैं।

मिरज़ा इब्राहीमोव अत्यंत परिश्रमी व्यक्ति हैं। वह प्रायः देश-विदेश की यात्राएं करते हैं और अपने लेखन कार्य के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक कार्य में भी व्यस्त रहते हैं। १९४५ में वह आज़रबैजान की विज्ञान अकादमी के सदस्य चुने गये, कई वर्षों तक आज़रबैजान की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष रहे (१९५४-१९५८), कई बार सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य और सोवियत संघ तथा आज़रबैजान की कम्युनिस्ट पार्टियों की कांग्रेसों के लिए प्रतिनिधि चुने गये। आजकल मिरज़ा इब्राहीमोव आज़रबैजान के लेखक संघ के अध्यक्ष हैं।

मिरज़ा इब्राहीमोव शांति के लिए संघर्ष में रत संगठनों की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं और सोवियत संघ की अफ़्रेशियाई एकता समिति के अध्यक्ष रहे हैं। लेखक का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करनेवाले पूर्वी देशों में भारत का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस देश की यात्रा उन्होंने पहली बार १९४७ में एक सोवियत प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में की थी। तभी जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के साथ भी उनकी पहली मुलाक़ात हुई थी। उस यात्रा के दौरान दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के सम्मेलन में उन्होंने अपना भाषण इन शब्दों के साथ ख़त्म किया था: "भारत और भारतीय जनता आज़ाद हों! यही वक़्त की पुकार है और यही मेरे और हर सोवियत आदमी के दिल की भी पुकार है!" ये शब्द इस महान और प्राचीन देश की स्वाधीनता की घोषणा से कुछ महीने पहले गूंजे थे।

स्वदेश लौटकर मिरज़ा इब्राहीमोव ने अपनी भारत यात्रा के अनुभवों के बारे में कई कहानियां और लेख लिखे। बाग़ी किसानों के साथ सहानुभूति दिखाने के लिए कलकत्ता की जेल में बंद एक ग्रामीण अध्यापक रामूली की ओर से कही गयी कहानी 'चंद्र का विद्रोह' में वह अंग्रेज़ उपनिवेशवादियों के अत्याचारों का पर्दाफ़ाश करते हैं और भारत को चूसनेवाले अंग्रेज़ों और दूसरों की दया पर निर्भर न रहकर न्याय तथा सच्ची मानवीयता के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं। विप्लवी किसानों के शौर्य के प्रति सच्ची प्रशंसा के भाव से ओतप्रोत इस कहानी में मिरज़ा इब्राहीमोव ने अनुपम लेखन कौशल और आज़रबैजानी क्लासिकल किस्सागोई की उत्कृष्ट परंपराओं का परिचय दिया है।

तब से मिरज़ा इब्राहीमोव और भी कई बार अतिथिप्रेमी भारत की यात्राएं कर चुके हैं, जहां उनके बहुत मित्र और उनके ही जैसे ढंग से सोचनेवाले लोग हैं। 'मेरी ज़िंदगी की किताब' में वह स्वाधीनता-प्राप्ति के तुरंत बाद के भारत और ६० तथा ७० के दशकों के भारत के बारे में लिखते हैं और वह जो प्रगति कर रहा है, उसपर एक ऐसे व्यक्ति की तरह हर्षित होते हैं, जो स्वाधीन भारत को अपने अंतर्तम से फूलता-फलता देखना चाहता है।

'मेरी ज़िंदगी की किताब' जीवंत और प्रभावोत्पादक बिंबों, चरित्रों तथा घटनाओं के रूप में अंकित लेखक की सृजनात्मक तलाश का भूगोल, उसकी मुलाक़ातों का और आधी सदी लंबे सक्रिय सृजन के जीवन में जो देखा और भुगता है, उसका विश्वकोश है। उसमें बहुत से देशों और महाद्वीपों की चर्चा है। वह आनंददायी खोजों और उपलब्धियों से भरपूर है। स्वयं लेखक के शब्दों में, "आधी सदी राह में गुज़ारते हुए" उन्हें बड़े-बूढ़ों की दानिशमंदी की बातें सुनने को मिलीं, विद्वानों की सभाओं में, शांति समर्थकों के सम्मेलनों में भाषण करने पड़े... "शांति सौभाग्य है। शांति आनंद है। शांति जीवन है। शांति निरभ्र आकाश है," साइप्रस में अफ़्रेशियाई एकता संगठन के सम्मेलन में भाषण करते हुए मिरज़ा इब्राहीमोव ने कहा था। "मेरा देश और सोवियत लोग इन्हीं उज्ज्वल आदर्शों के लिए संघर्ष करने को अपना सर्वोच्च और सम्माननीय कर्त्तव्य मानते हैं। सभी संभव और उपलब्ध साधनों से शांति के लिए संघर्ष करते हुए मिरज़ा इब्राहीमोव हर कहीं—अपने भाषणों में, अपने लेखों में, अपनी रचनाओं में—मेहनतकश आदमी का गुणगान करते हैं, आम आदमी को अपनी कृतियों का नायक बनाते हैं, जिसकी, चाहे वह गड़रिया हो या माना जाना वैज्ञानिक, मुख्य ख़ूबी वह उसकी व्यक्तित्व संपन्नता में, उसकी नैतिक महत्ता में, नये और संभावनाशील को ग्रहण करने, संजोकर रखने और जीवन में चरितार्थ करने की उसकी क्षमता में देखते हैं।

क्रान्ति, मुक्ति, स्वाधीनता और नया मानव—ये ही इस शानदार साहित्यकार की कृतियों के मुख्य विषय और मुख्य पात्र हैं। मिरज़ा इब्राहीमोव के सारे लेखन पर जीवन के सत्य, वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीयतावाद और हमारे युग की महत्ता तथा क्रान्तिकारी उपलब्धियों की गहरी छाप है।

स्वेतलाना अलीयेवा

मिरज़ा इब्राहीमोव

जाग उठा इनसान

उपन्यास

पहला परिच्छेद

१

उस शाम मुग़ान स्तेपी में मौसम गरम और शान्त था, मानो पतझड़ के आरम्भ के दिन हों, जब कि जाड़ा आ चुका था। सूर्यास्त के बाद कोहरे ने सूखी, मुरझायी घास से ढके मैदान को अपने आग़ोश में ले लिया, पर चांद निकला, और देखते-देखते धुंध छंट गयी, तो तारों से जगमगाता मुग़ान का विशिष्ट दक्षिणी आसमान खुल गया। और जब छतों पर फिसलता चांद डूबा, तारों की संख्या और बढ़ गयी – गिनना असम्भव हो उठा; ध्यानमग्न, उज्ज्वलमुखी तारे हमारी धरती को अनिमेष देख रहे थे, मानो उसपर उकेरी प्यार की दास्तान पढ़ रहे हों।

इतनी शाम ढले सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष रुस्तम सुनहली चाय का गिलास लिये, माथा हथेली पर टिकाये दिन भर की मेहनत, उसकी चिन्ता, आशंकाओं का लेखा-जोखा लेता हुआ बैठा रहता और यदा-कदा अपनी पत्नी से एक-दो बात कर लेता। अभी तक सुडौल और उम्र के बावजूद जवान लगनेवाली सकीना अपनी बेटी की हंसी व किचिर-मिचिर की ओर कान देती मोज़े बुनती रहती या कशीदाकारी करती रहती और एकाध शब्द में पति की बातों का उत्तर देती रहती – सकीना को हाथ पर हाथ धरे बैठा रहना पसंद नहीं था। जब कि बेटी पेरशान सोने से पहले कुछ न कुछ खटर-पटर करती रहती, हालांकि वह अठारह की हो चुकी थी: कभी शीशे के सामने मटकती, कभी बिल्ली से खेलने लगती, कभी गीत छेड़ती और कभी किसी बात पर ख़ुशी से खिलखिलाकर उसे तुरंत बंद कर देती...

लेकिन उस दिन शाम अत्यधिक निरानन्द थी। पेरशान जब कनखियों से उदास पिता और चिन्तामग्न मां की तरफ़ देखती, उसका दिल दुखने

लगता। इसके बावजूद उनसे बात करने का साहस उसे नहीं हो पा रहा था। लगता था जैसे वे लड़ पड़े हैं ग्रौर एक दूसरे की ग्रोर ध्यान ही नहीं दे रहे हैं।

लम्बे-चौड़े कमरे का पूरा कोना घेर रही किताबों की ग्रलमारी को छान मारकर पेरशान ने हाथ में ग्रायी एक पुस्तक निकाली, उसके पन्ने उलटे-पुलटे ग्रौर पटक दिया, फिर नुकीले पायोंवाली चौकोर मेज़ के पास ग्राकर रेडियो खोल दिया। कमरे में खड़खड़ाहटभरी ग्रौर फटी ग्रावाज़ें गूंज उठीं। रुस्तम ने भौंहें सिकोड़कर बेटी की तरफ़ देखा, पर कहा कुछ नहीं। थोड़ी देर में युवती रेडियो से भी ऊब उठी। रेडियो बंद करके वह खिड़की के पास ग्रा खड़ी हुई।

परिवार का मुखिया समोवार के पास निश्चल बैठा था। चित्रित कांच के गिलास में चाय ठण्डी हुई जा रही थी। रुस्तम के हाथ में नक़्क़ाशीदार पाइप से धुग्रां निकल रहा था, ग्रौर उसके सामने मेज़ पर 'ज़ोलोतोये रुनो'* मार्का तम्बाकू का खुला डिब्बा रखा था। ग्राम तौर पर रुस्तम उस तम्बाकू की मधुसुवासित मसालेदार ख़ुशबू का ग्रानन्द लेता ग्रौर उसके भूरे-सुनहले रंग को निहारता कश लगाया करता था, पर उस समय वह न उसके रंग पर ध्यान दे रहा था, न सुगन्ध पर ग्रौर उतावली में कश पर कश खींचता हुग्रा कमरे में धुएं के गहरे नीले बादल भरे जा रहा था।

सुबह से ही रुस्तम का भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा था, जैसे बिल्ली रास्ता काट गयी हो।

कार्यालय के ग्रहाते में घुसते ही बरसाती की सीढ़ियों पर बैठी तेल्ली चाची पर नज़र पड़ते ही उसकी भौंहें सिकुड़ गयीं। "बुढ़िया हमेशा बुरी ख़बरें लाती है," उस ने सोचा। पूर्वाभास ग़लत नहीं निकला,—चाची जल्दी से उठकर उसकी तरफ़ बढ़ी ग्रौर उस पर झिड़कियों की बौछार शुरू कर दी:

"हाय, हाय, कैसी मुसीबत टूटी पड़ी है, कीशी**! ग्रौर तुम पड़े पलंग तोड़ते रहते हो! फ़ार्म में महामारी से एक के बाद एक भेड़ें मरी जा रही हैं!"

---

*'ज़ोलोतोये रुनो'—'सुनहला ऊन'।

**कीशी—जनाब, ग्रादरसूचक सम्बोधन।

ग्रध्यक्ष ने उसे ऐसी जलती नज़रों से घूरा, मानो नीली जाकेट व चुन्नटदार लहंगा पहने ख़ुद तेल्ली चाची फ़ार्म में महामारी फैला रही हो।

"ग्राख़िर कब मैं तुम्हारे मुंह से कोई ख़ुशख़बरी सुनूंगा? कम-से-कम ग्रपने कमरे में तो जाने दो!"

चाची ने ग्रपने सांवले नसदार हाथ से गुद्दी पर खिसक ग्राया काला रूमाल ठीक किया ग्रौर ग़ुस्से में चिल्लायी:

"ख़बर बुरी हो या ग्रच्छी, ग्रगर तुम ग्रध्यक्ष हो, तो ग्रपना काम ढंग से करो! मैं फ़ार्म में ग्रपने बेटे के पास गयी थी, मैंने ग्रपनी ग्रांखों से भेड़ों को मरते देखा। जब कि यह उनके ब्यान का समय है!"

"पशु-चिकित्सक है तो सही—वही इलाज करे उनका," रुस्तम ने विरोध किया। "हर काम के लिए ग्रध्यक्ष के पीछे नहीं पड़ना चाहिए। कम-से-कम खुद भी तो कुछ फ़ैसला करना सीखना चाहिए!"

"मैं बेकार इस झगड़ालू ग्रौरत के साथ माथा पचा रहा हूँ," रुस्तम ने सोचा ग्रौर चाची के पास से निकल कर इमारत में घुस गया।

इस के बावजूद उसने टेलीफ़ोन पर तुरन्त ज़िला मुख्यालय से सम्पर्क स्थापित करके ज़रूरी लोगों को ढूंढ़ लिया ग्रौर उसे चैन तभी ग्राया, जब तक कि उसे ग्राश्वासन नहीं दे दिया गया कि पशु-चिकित्सक दवाइयां लेकर फ़ार्म के लिए रवाना हो रहा है।

चौकीदार को घोड़ा तैयार करके लाने को कहकर रुस्तम बरामदे में निकला ग्रौर उसे फाटक में भागकर घुसता टोली-नायक हुसैन नज़र ग्रा गया।

"क्यों?" रुस्तम किसी नयी विपत्ति का पूर्वाभास पाकर चिल्लाया।

जवाब देने के बजाय टोली-नायक कुछ ग्रस्पष्ट बुदबुदाया—उसकी इस ग्रादत के लिए गांववालों ने ग्ररसे से उसका नाम "गूंगा हुसैन" रख छोड़ा था।

"ग्राप लोगों ने उसे निकालने की कोशिश की?" ग्रन्त में यह समझ में ग्रा जाने पर कि खनिज खाद से लदा ट्रक सड़क किनारे की खाई में गिर गया है, ग्रध्यक्ष धमकी-भरे स्वर में चिल्लाया।

गूंगे हुसैन ने केवल ग्रपने मोटे-मोटे होंठ हिला दिये—न "हां", न "नहीं।"

रुस्तम ने हाथ झटका ग्रौर उछलकर घोड़े पर सवार हो स्तेपी रवाना हो गया।

2—2207

ट्रक के पिछले पहिये खाई में फंसे हुए थे। ड्राइवर कैबिन में चमड़े की जाकेट ओढ़े सो रहा था। रुस्तम ने उसे झंझोड़कर जगाया और उसे भागकर पास के खेत से सामूहिक किसानों को बुला लाने को कहा। जब खाद की बोरियां उतार ली गयीं, रुस्तम का अनुमान ठीक निकला कि गाड़ी को निकालना इतना कठिन काम नहीं था। अध्यक्ष ने लोगों को हिदायतें दीं, ज़ोर लगाने से घरघरा रही गाड़ी के ख़ुद कंधा लगाया, और अन्ततः गांव से वहां आ पहुँचे गूंगे हुसैन पर चिल्लाया। रुस्तम पसीने-पसीने हो गया, उसका गला बैठ गया। वह काठी पर सवार हुआ और घोड़े को उसने भेड़-पालन फ़ार्म की तरफ़ मोड़ दिया।

वह देर शाम गये थका-हारा और कीचड़ के छींटों से सना चेहरा लिये घर लौटा। न जाने क्यों उसे आज, उसी वक़्त, जब मानसिक तनाव अपने चरम-बिन्दु पर था, अपनी पत्नी के साथ कुछ दिन पहले हुई बहस का फ़ैसला करने की सूझी। लेकिन बात कैसे शुरू की जाये, रुस्तम की समझ में नहीं आ रहा था, वह अधीरता से उपयुक्त अवसर की तलाश में था, और इस बीच पाइप के कश पर कश खींचने से उसका चेहरा लाल हुआ जा रहा था।

सकीना को पति से सामूहिक फ़ार्म के काम-काज के बारे में पूछने की आदत नहीं थी। अगर चुप हैं, तो चुप ही सही, यानी ऐसा जरूरी है। वह रंगबिरंगे क़ालीन पर आलथी-पालथी मारे और अपने चारों ओर धागों के गोलों, सुइयों व बटनों से भरे डिब्बे रखे बैठी थी। वह सदा की तरह शान्तचित्त रहते हुए बेटी की परेशान नजरों व पति की उदास मुखमुद्रा की ओर ध्यान न देने की कोशिश कर रही थी। कोई उसे देखकर सोच सकता था कि वह कशीदाकारी में तल्लीन है। जब कि सकीना वास्तव में देख भी नहीं रही थी कि उसके फुरतीले हाथ में सूई कैसे चमक रही है: पति और पुत्री ही थे, जिनके बारे में वह आशंकित हुई सोच रही थी।

जब गली में कहीं लवलीन व अधीर स्वर में गाया गया गीत गूंज उठा, मां तब भी सूई चुभने के बावजूद सिहरी नहीं, उसने केवल आंखें उठाकर चौंक उठी बेटी पर एक प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। पेरशान ने सुरीला स्वर सुनकर एक गहरी सांस ली और खिड़की की चौखट से और भी ज़्यादा सट गयी। गीत कहीं दूर से निकट आता जा रहा था और शीशे से पंख फड़फड़ाकर मार रही चिड़िया की तरह टकरा रहा था। पेरशान को तीव्र इच्छा हो रही थी कि खिड़की पूरी खोल दे, ताकि घर में गीत गाता पुरुष

स्वर गूंज उठे, पर उसने अपने आवेग पर नियंत्रण कर लिया। फिर गीत अत्यन्त निकट गूंज उठा...

> अराक्स में बाढ़ आई, गंदला है उसका पानी,
> वसंत आई है, लहलहाते हैं बाग़ सारे।
> प्रिय, ऐसे में आ के तुम मेरे पास बैठो,
> एकाध घंटा तो मेरे पास आ के बैठो, प्यारी!*

गीत को ध्यानपूर्वक सुनकर अध्यक्ष ने मूँछों में मुस्करा दिया और दीवार से अपने पोर्टफ़ोलियो का काम देनेवाले फ़ील्ड बैग को उतारा, उसमें से नोटबुक निकालकर अपने को याद दिलाने के लिए लिख दिया: "टोली-नायक को सहगान-मण्डली के गठन की ज़िम्मेदारी सौंपनी है।" कहने की आवश्यकता नहीं कि विचार बहुत अच्छा था। "इस मीठी आवाज़-वाली बुलबुल को बेकार गला फाड़ने की क्या ज़रूरत है," रुस्तम ने मन-ही-मन कहा, "बेहतर है जिलास्तरीय ग़ैरपेशेवर कला प्रतियोगिता के लिए गायक-मण्डली तैयार करे। और प्रथम श्रेणी का प्रमाण-पत्र लिये बिना वापस न लौटें!"

पेरशान तो जैसे सारी शाम ऊबी ही नहीं थी – उसका चेहरा खिल उठा, आंखों में चमक आ गयी। गायक मानो भांप गया कि उसका गीत युवती के हृदय को छू रहा है और वह और ज़्यादा दर्दभरे स्वर में गा उठा:

> छुप गया है डूबकर आकाश में सूरज कहीं,
> लुप्त हो रह गया है चांद का प्रकाश भी।
> प्रिये, तेरे नैनों के ये बाण कितने तेज़ हैं,
> आ गई नज़दीक जैसे मेरे मरने की घड़ी!

और कोई समय होता, तो रुस्तम समझ जाता कि प्रेमरस की बैतें उस घर की खिड़की के तले यूं ही नहीं गायी जातीं, जिसमें पेरशान जैसी बाला रहती हो। "बेटी पर नज़र रखो!" उसने पत्नी को सख़्त हिदायत

---

*कविताओं का अनुवाद मनजर सलीम ने किया है।

दे दी होती। और उस समय वह उलझे, पके, घुंघराले बालोंवाला सिर सीने पर झुकाये, गीत का भावार्थ न समझता, यह याद करता खिन्नता से मुस्करा रहा था कि कभी वह भी नवयौवना सकीना के घर के सामने ऐसे ही गाया करता था।

उसने पत्नी को खोजते हुए अगल-बग़ल देखा, पर मालूम पड़ा कि वह बग़ल के कमरे में जा चुकी थी।

रुस्तम को यह अच्छा नहीं लगा: उपेक्षा कर रही है या घृणा... उसने ठान ली कि चाहे रात की नीन्द ख़राब हो जाये, पर हर क़ीमत पर आज ही पत्नी के साथ बात करके अरसे से चलती आ रही बहस का निबटारा किये बिना वहां से टस से मस नहीं होगा।

२

रुस्तम और सकीना का विवाह पूरे तीस वर्ष पहले हुआ था। वे तीस वर्ष से दो तन एक प्राण की तरह ईमानदारी से अपने सुख-दुःख बांटते जी रहे थे।

इतने वर्षों में केवल एक बार उनकी अभिलाषाएं मेल न खा सकीं, विचारों और उद्देश्यों में मतभेद उत्पन्न हुआ था।

यह युद्ध की पूर्ववेला में हुआ था।

रुस्तम उस समय तक रुस्तम-कीशी के नाम से पुकारा जाने लगा था, उसे जनता का सम्मान और आदर प्राप्त था। आदमी को लोगों द्वारा तहे दिल से ख़ुद कीशी कहकर पुकारे जाने का इन्तज़ार करना चाहिए। क्योंकि इसे उसके पहचान-पत्र में नहीं लिखा जा सकता। लेकिन यह शब्द न केवल कर्ण-प्रिय लगता है, न केवल अहंकार को सन्तुष्ट करता है, बल्कि मन में दुःखदायी विचार भी जगाता है: जवानी के दिन बीत गये, जीवनरूपी भवन की दीवारों से बहुत-सी ईंटें टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गयीं...

लेकिन रुस्तम उस समय अपने जीवन के स्वर्ण-युग से गुज़र रहा था। वह दो वर्ष से 'नवजीवन' नामक सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष था। मुग़ान के विशालतम सामूहिक फ़ार्मों में से एक यह सामूहिक फ़ार्म बसंत में जल से तृप्त और मां सदृश उदार मुग़ान स्तेपी की तरह फल-फूल रहा था। उनकी प्रथम सन्तान – बेटा गराश आठ साल का था और चहकारी बेटी पेरशान – तीन साल की। बेडौल और दुबली-पतली सकीना का बदन गदराने लगा था, जैसे तन गया हो और राह चलते लोगों की नज़रें पैंतीसवर्षीया सुखी नारी के परिपक्व सौन्दर्य की ओर आकर्षित होने लगी थीं।

एक बार पतझड़ की एक शाम को, जब बच्चे सो चुके थे, पति और पत्नी सायबान के नीचे बैठे हुए थे। सकीना लालटेन अपने पास रखे बेटी के लिए जाड़े के लिए मोज़े बुन रही थी, और रुस्तम सन्तुष्ट मुस्कान के साथ उसे बता रहा था कि देखो, उनके सामूहिक फ़ार्म ने सरकार को सप्लाई का कोटा पूरा कर लिया है और पहली बार – पहली बार, जान लो यह क्या मायने रखता है! – उसने प्रत्येक श्रम-दिन के बदले में दो किलोग्राम अनाज और पांच रूबल नक़द दिये हैं। और सब्ज़ियां? और फल? और शहद? ज़रा हिसाब लगाकर देखो, सामूहिक फ़ार्म में एक श्रम-दिन कितने का पड़ता है? वास्तव में सामूहिक फ़ार्म का नाम 'नवजीवन' यूं ही तो नहीं रखा गया है!

वह ख़ुशी-ख़ुशी बोल रहा था, उसका चित्त भी प्रसन्न था और वह बीच-बीच में अपनी पत्नी की तरफ़, उसकी तराशी हुई गरदन व सुन्दर, गुलाबी चेहरे के इर्द-गिर्द बिखरी केश-राशि की मन-ही-मन सराहना करता देखता भी जा रहा था। सकीना सलाइयों व उसकी उंगलियों में सरक रहे ऊन से नज़रें हटाये बिना पति की बात ध्यानपूर्वक सुन रही थी, स्वीकृति में सिर हिला रही थी और उसकी नेक आंखों में अपने भाग्य, पति व बच्चों पर पूर्ण सन्तोष का भाव पढ़ा जा सकता था। उसके बालों की ख़ुशबू व सुडौल बदन की तपिश ने रुस्तम को मतवाला बना दिया और वह व्याकुल स्वर में कह उठा:

"बस करो, ऊन और सलाइयां समेटकर बिस्तर लगाओ, सोने का समय हो गया।"

सकीना पति की अधीरता भांप गयी और सतर्कतापूर्वक मुस्करायी।

"जल्दी मत मचाओ, पूरी रात पड़ी है।"

रुस्तम ने आवेश में उचककर पत्नी का हाथ पकड़ लिया और कांप उठा, सलाई झन्न से ज़मीन पर गिरने के कारण नहीं, बल्कि इस लिए कि उसने पहली बार महसूस किया कि पत्नी का हाथ कितना खुरदरा हो गया है, जैसे चमड़ी को कमाकर धूप में सुखाया गया हो। उसने जीवन में पहली बार सोचा कि पत्नी कई वर्षों से कुदाल चला रही है, शाम को घर में दौड़-धूप करती है, और उसका हाथ फिर ज़ोर से कसते हुए आदेशपूर्ण स्वर में बोला:

"कल से खेत में काम करने नहीं जाओगी।"

सकीना ने सोचा पति मज़ाक़ कर रहा है। कहीं रुस्तम ने उसकी परीक्षा लेने की तो नहीं ठान ली है? और सकीना की नीली, नम्र आंखें मुस्करा उठीं।

"छोड़ दो अपनी टोली को, बहुत हो गया!" रुस्तम ने फिर कहा।

"वाह, कीशी, क्या तुम बुढ़ापे में यह चाहते हो कि तुम्हारी बीवी बेगम बन जाये? यह अच्छा नहीं लगता, फिर मैं बेगम हो ही नहीं सकती।"

"बेगम... मुझे तुम्हारी बेगम के रूप में ज़रूरत भी नहीं है। हम किंडरगार्टन खोल रहे हैं, तुम वहीं काम करोगी। काम हल्का है, खाना पकाने के लिए भी समय बचा रहेगा और अपना ख़याल रखने का भी।"

पति मज़ाक़ नहीं कर रहा था, लेकिन सकीना को भी मज़ाक़ पसंद नहीं था।

"नहीं, कीशी, मैं कहीं नहीं जाऊंगी। किंडरगार्टन में मैं क्या करूंगी? ऊब जाऊंगी! पहली बात तो यह है कि मैंने सर्वश्रेष्ठ कृषक बनने का वचन दिया है, दूसरी..."

"हा-हा! 'पहली बात यह और दूसरी यह है!'" रुस्तम ने उसे टोक दिया। "पदक का सपना देख रही हो?"

"तुमसे क्या छिपाना – देखती हूं।"

"अच्छा, दूसरी बात क्या है?"

"दूसरी बात यह है कि अगर मैं खेत में न जाऊं, तो 'काम पर जाने का वक़्त हो गया!' कहकर तुम कौन-से मुंह से परायी बीवियों की खिड़कियां खटखटाओगे? यह सुनने से पहले कि 'पहले अपनी बीवी को रवाना करो, फिर हमें आवाज़ दो'। तो ज़मीन में ज़िन्दा दफ़न हो जाना बेहतर है। यही जवाब मिलेगा। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें ताने मारे जायें!"

"लोग मुझे ताने देंगे? घबराओ मत!" रुस्तम ने अपने घुंघराले बालों को झटका दिया। तुम ख़ुद देख रही हो, मैंने यहां काया पलट कर दिया है – हरेक को सात-आठ क्विंटल अनाज मिल रहा है और ढेरों पैसा। और सरकार को सप्लाई के सारे कोटे भी पूरे कर लिये हैं! और हमारे ज़माने में योजना पूरी कर ली – फिर चाहे मौज करो, जैसे मन में आये रहो, कोई बुरा नहीं कहेगा, एक शब्द भी नहीं कहेगा।"

"यानी योजना पूरी कर ली, तो नियमों का जैसे तुम से कोई वास्ता नहीं है?" सकीना ने पूछा। "नहीं, कीशी, अपने आप को धोखा मत दो। मैं नहीं चाहती कि तुम पापलर वृक्ष जैसे ऊंचे हो जाओ, जिसकी चोटी को कोई हाथ से छू भी न सके। मैं तुम्हें इतना नीचे भी गिरते नहीं देखना चाहती कि पांवों तले रोंदे जाओ। बुद्धिमान को हमेशा एक-सा रहना चाहिए: जब उसकी इज़्ज़त की जाती है, वह चिलचिलाती धूप में बदन गरमाता है और जब छाया में रहता है... नहीं, नहीं, कीशी, किंडरगार्टन में काम करने किसी विधवा या कुंवारी को भेजो, मैं तो खेत में ही काम करती रहूँगी!"

रुस्तम पूरी पतझड़ इतना प्रसन्नचित्त रहा था कि उसे इस समय भी पत्नी पर गुस्सा करने की इच्छा नहीं हो रही थीं। वह उसकी बातों का अर्थ ठीक से नहीं समझ पाया था – बस स्त्री-सुलभ अविश्वास और सनक है। फिर भी उसके स्वर में यह दृढ़-संकल्पना और आत्म-विश्वास कहां से उत्पन्न हो सकते हैं? रुस्तम पत्नी की नम्रता का अभ्यस्त था। आख़िर आज यह इतनी मनमौजी और ढीठ क्यों हो रही है? सकीना में कुछ नया परिवर्तन आ गया है, जो रुस्तम की समझ में नहीं आ रहा है और उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचा रहा है। उसने पत्नी को घूरकर देखा, और द्वेषभाव के कारण वह सब, जो कुछ क्षण पूर्व उसे उसकी ओर आकर्षित कर रहा था, – सुडौल कंधे, उन्नत उरोज, मनोहर चेहरे को घेर रही अलकें, – घृणास्पद और पराया लगने लगा। उसने पाइप में तम्बाकू भरकर धीरे से कहा:

"बहस बंद करो! मैंने सब सोच लिया है। तुम कल ही किंडरगार्टन जाओगी।"

"फिर मेरी आज़ादी कहां गयी?" सकीना ने भी वैसे ही धीरे से पूछा। "क्या तुम ही हो, जो मीटिंगों में स्त्रियों के समान अधिकारों के बारे में बढ़-चढ़कर बोलते हो?"

रुस्तम जब कभी पत्नी की आंखों से आंसू बहते देखता था, उसे उसको तसल्ली दिलाने और प्यार करने की इच्छा होती थी। वह मुंह मोड़कर बड़बड़ाया:

"क्या आज़ादी का मतलब मनमानी करना होता है? पति पति ही होता है और पत्नी पत्नी ही। या फिर इस घर में मालिक को कोई अधिकार नहीं रहे?"

"तुम्हारे अधिकार बहुत हैं! लेकिन मुझे भी अपनी ज़िन्दगी अपने ढंग से जीने का हक़ है। माफ़ करना, इस मामले में तुम्हारा रोब नहीं चलेगा..."

बात यह शान्तिपूर्वक कही गयी थी, सकीना की आंखों में आंसू तक भी सूख गये थे, लेकिन उसी क्षण रुस्तम समझ गया कि उसकी हार हो गयी है: हमेशा नम्र रहनेवाली पत्नी दमिश्क़ी तलवार जैसी कठोर हो गयी है...

"अरे, तुम भी..." रुस्तम बड़बड़ाया और बग़ीचे में चला गया, वहां काफ़ी देर तक चहलक़दमी करता रहा, फिर सायबान में अपना बिस्तर लगाकर लेट गया और सोने का ढोंग करने लगा हालांकि अहाते में सकीना के चलने-फिरने की आहट बराबर उसके कान में पड़ रही थी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनमें फिर से मेल हो गया, अगली ही रात को सुलह हो गयी। रुस्तम केवल मोर्चे पर, मुठभेड़ों में, पत्नी व बच्चों की याद में तड़पने पर ही समझ पाया कि सकीना की बात कितनी सही थी, वह उसे इस बारे में लिखना चाहता था, पर टालता रहा: न जाने उसे फ़ुरसत नहीं मिली, न जाने वह भूल गया, या न जाने उसका आहत स्वाभिमान उसे रोकता रहा।

उधर रेजिमेंट में आनेवाले क्षेत्रीय समाचारपत्र में टोली-नेत्री सकीना रुस्तमोवा की प्रशंसा की जाती रही, सर्वश्रेष्ठ फ़सल पैदा करनेवाली किसान होने के नाते उसका यशोगान किया जाता रहा। रुस्तम समझ गया कि उसके परिवार को तंगी में गुज़र नहीं करनी पड़ रही है, उसके बच्चे भूखे नहीं रहते, स्कूल में पढ़ते हैं, न कि दूसरे सैनिकों के बच्चों की तरह चौराहों पर सेब और तरबूज़ बेचते रहते हैं। मई सन् १९४१ में ख़ारकोव के मोर्चे पर रुस्तम को समाचारपत्र का वह अंक मिला, जिसमें "श्रम का लाल झण्डा" पदक से सम्मानित सकीना का फ़ोटो छपा था। तब जाकर वह पत्नी को यह लिखने का साहस जुटा पाया: "मुझे माफ़ करना, मैं ग़लती पर था..." हां, उसने उन दिनों देख लिया कि पत्नी की नज़र उससे पैनी है, कि सकीना जीवन में वह सब समझ लेती है, जो वह अपनी सफलता के नशे में चूर होकर समझ पाने में असफल रहा। उसने तब वचन लिया कि वह उसे कभी किसी काम के लिए मजबूर नहीं करेगा, उसकी बुद्धिमत्ता व संवेदनशीलता में विश्वास रखेगा।

३

सभी लोग ऐसे नहीं हैं जो भावोद्वेग के क्षणों में, जब हृदय में उदात्त विचार उमड़ उठते हैं, खायी गयी सौगंध के प्रति निष्ठावान् रह पायें। समय निष्ठुर और क्रूर होता है, वह अनेक लोगों के भावोद्रेक को मिटा देता है, कुंठित कर देता है, स्मृति से उन पवित्र क्षणों को मिटा देता है, जब लगता है कि शुद्धहृदय से शपथ ली गयी है।

युद्ध की आंधी शान्त हो चुकी थी। थके-हारे सैनिकों ने बन्दूकें शस्त्रागारों में जमा करा दीं और हाथों में कुल्हाड़े और आरे उठा लिये; टैंकचियों ने ट्रैक्टर व कम्बाइनें संभाल लीं; हल ने गढ़ों से भरी ज़मीन पर पहली हलरेखा खींची और बीज ड्रिल खेत में बोवाई करने निकल पड़ी... लोग शान्तिपूर्ण श्रम में वैसे ही साहस व उत्साह से जुट गये, जैसे कि वे लगातार चार वर्षों तक लड़ते रहे थे। सैनिकों के बच्चों व पोतों की नयी पीढ़ी जीवन में पदार्पण कर रही थी।

रुस्तमोव परिवार में भी परिवर्तन हुए। सकीना का सिर तुषाराच्छादित चेरी के वृक्ष सदृश हो गया, उसकी चारु नयनों व ख़ूबसूरत आकृतिवाले मुख के इर्द-गिर्द झुर्रियों का जाल फैल गया। लाल-लाल गालोंवाले नन्हे गराश की मसें भीगने लगी थीं, पेरशान सयानी हो चली थी।

और रुस्तम भी पहले जैसा नहीं रहा था। उसके घने बाल छीदे होने लगे, उनमें चांदी के तार-से चमकने लगे। लेकिन रुस्तम के न कंधे झुके, न ही कमर, वह सिर तानकर चलता, तो उसकी दृढ़संकल्पी दृष्टि देखकर लोग सकपका जाते। स्कूली बच्चे "सलाम, रुस्तम चचा!" कहते हुए जल्दी से अपनी नन्ही टोपियां उतार लेते। ठीक है, चचा कहते हैं, तो चचा ही सही। कुछ दिनों बाद दादा कहकर पुकारने लगेंगे! इसमें कोई कर ही क्या सकता है!

रुस्तम के स्वभाव में अप्रिय परिवर्तन भी होने लगे, जो निस्सन्देह सबसे अच्छी तरह सकीना को नज़र आते थे: पति उतावला और चिड़-चिड़ा होता जा रहा था। लेकिन सकीना उसे प्यार करती थी और हर बात में उसकी सफ़ाई देती थी: युद्ध... कई बार वह इस दृढ़ विश्वास के साथ चुप लगा जाती, कई बार चालाकी से काम लेती कि पति कितना भी गुस्सा क्यों न होता रहे, बहस क्यों न करता रहे, आख़िर झुकना तो उसे यानी पत्नी को ही पड़ेगा। गृहकलह के क्षणों में—उनके बिना

कोई जी सकता है! – वह सावधानी से हर शब्द नाप-तौलकर शान्तिपूर्वक उत्तर देने का प्रयास करती, जिससे कि कहीं अनजाने में – ख़ुदा बचाये! – पत के धैर्य का बांध न टूट जाये। कभी-कभी वह झुक भी जाती...

एक सप्ताह पहले सकीना ने ख़ुशी-ख़ुशी ख़बर सुनायी थी:

"ऐ, कोशी, बधाई – बेटे ने शादी करने की ठान ली है!"

"तो क्या वह बाल पकने तक कुंवारा घूमता रहेगा?" रुस्तम ने टिप्पणी की। "उसके इरादे की तारीफ़ करनी चाहिए। कोई है उसकी नज़र में?"

"अगर नहीं होती, तो मैंने बात ही नहीं छेड़ी होती... शहरी है! उन्होंने पहले ही सब तय कर रखा है। कहीं की भी क्यों न हो, शहर की या गांव की, बस लायक़ होनी चाहिए। मुझे सबसे ज़्यादा डर इसी बात का था कि उसे कहीं कोई चुलबुली छोकरी न मिल जाये।"

"क्यों मिलेगी? ज़ाहिर है, गराश तुम्हारे दूध और मेरी रोटी पर पला है। ऐसी वैसी पर नहीं रीझेगा।"

सकीना आपत्ति करने को तैयार थी कि सब हो सकता है, ऐसा भी होता है कि अच्छे लड़के चंचल तितलियों के प्यार में फंस जाते हैं, पर चुप कर गयी: "कहीं मुंह से निकली बात सच न हो जाये!" वह केवल एक ठण्डी सांस लेकर बोली:

"तुम्हारी बात सच निकले, कोशी!"

ख़ुशख़बरी सबके मन को भा गयी। पिछले कुछ अरसे से रुस्तम इस आशंका से परेशान था कि कहीं बेटा किसी मुसीबत में न फंस जाये। कोई ज़रा सुन्दर नौजवान को क़ाबू में रखकर तो देखे! क्योंकि गराश से मिलते ही हर लड़की का चेहरा खिल उठता था, सांस लेने में मुश्किल होने लगती थी, और आँखें खिल उठती थीं...

"जितनी जल्दी वह बहू हमारे घर में लेकर आयेगा, उतना ही अच्छा होगा!" रुस्तम ने कहा।

"मैं भी यही सोचती हूं: दूल्हा-दुलहन के लिए कमरा तैयार करना शुरू कर देना चाहिए!" सकीना उल्लसित हो उठी पर पेरशान उससे भी अधिक उल्लसित हो उठी। वह खुशी से उछलने-कूदने लगती, मां को झंझोड़ने लगती, गराश के कमरे के फ़र्नीचर एक कोने से दूसरे कोने में सरका-सरकाकर उसे सजाने की कोशिश करती।

बस तभी से रुस्तमोव परिवार में कलह शुरू हुआ था।

अग्रणी सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को इच्छा हुई कि बेटे की शादी धूम-धाम से की जाये। उसने पारिवारिक जशन में न केवल अपने गांववालों को बल्कि ज़िले के कार्यकर्त्ताओं को भी निमंत्रण देने की ठान ली। नाना प्रकार के व्यंजनों के बोझ से मेज़ें टूट जायें, मोटरकारों का क़ाफ़िला दुलहन को सहेलियों के साथ यहां पहुंचाये, उसका स्वागत बाजे-गाजे से किया जाये... "यह कहलायेगी हमारे ढंग से, रुस्तमोव परिवार के ढंग से शादी!"

पेरशान ख़ुश हो रही थी: इसमें छिपाने की क्या बात है, वह भी तो अपनी शादी इसी तरह से गरमी की एक झुलसती रात को होने के सपने देख रही थी।

लेकिन पति और पुत्री को इस बात ने अचरज में डाल दिया कि सकीना इस झंझट में फंसने को तैयार नहीं थी।

"धूम-धाम की क्या ज़रूरत है? गराश के पांच-छः दोस्तों और रिश्तेदारों को बुला लेंगे। जितनी सादगी से शादी हो, उतना ही अच्छा होगा।"

"तुम भी क्या!" रुस्तम बुरा मान गया। "इकलौता लड़का है – और मैं उसकी शादी में कंजूसी करूं? ज़िले के लोग क्या कहेंगे? ताने मारने लगेंगे: 'अध्यक्ष रुस्तम को शादी की दावत में बचत करने की सूझी!' नहीं, बीवी, तुम अक़्लमंदी की बातें नहीं कर रही हो। दुलहन भी तो ज़रा देख ले कि हम बेटे की ख़ुशी के लिए किसी चीज़ में कंजूसी नहीं करेंगे..."

"ऑं-ऑं, मां!" पेरशान ने मचलकर मुंह फुला लिया। "क्या तुम नहीं चाहतीं कि वे सुखी रहें?"

"सुख इससे थोड़े ही मिलता है, बेटी," सकीना ने कहा। "जब मेरी और तुम्हारे अब्बा की शादी हुई थी, शादी में एक भी ज़ुरनाची* नहीं था। काश, सभी को ऐसा सुखी जीवन नसीब हो सके!"

"वह ज़माना ही और था," रुस्तम ने आपत्ति की। मैं खेत में मज़दूरी करता था, खेत-मज़दूर था, भिखारी! याद है, मैं तुम्हें भी तो किसी महल से विदा कराके नहीं लाया था। कुछ भी तो नहीं था – न सामूहिक फ़ार्म था, न ही यह दुमंज़िला मकान। और अब, ख़ुदा की

* ज़ुरनाची – शहनाई वादक। (ज़ुरना – शहनाई)।

इनायत से, हमें किसी चीज़ की कमी नहीं है। मैं बेटे की शादी ऐसी करूंगा कि सारी मुग़ान में धूम मच जायेगी!"

"मुग़ान में ही क्यों!" सकीना ने नम्रता से कहा। "बाकू तक में धूम सुनाई देगी। मैं डरती हूं कि कहीं ऐसे शोर से हम तुम बहरे न हो जायें..."

परिवार में रोज़ाना बहस होने लगी।

"तुम्हारे दिल में सब उलटा करने की भावना घर कर गयी है।" रुस्तम ने पत्नी को झिड़का। "काली क़मीज़ मांगता हूं, सफ़ेद ले आती हो। मेरे मुंह से 'हां' निकलते-निकलते ही, 'नहीं' चिल्ला उठती हो।"

"मैं जैसी थी, वैसी ही हूं, कीशी। मेरी बदलने की उम्र गुज़र चुकी है। क़ब्र में दफ़नाये जाने तक वैसी ही बनी रहूँगी।... लगता है, तुम ख़ुद बदल गये हो। बाल पक चले हैं, पर चाल अभी तेज़ है!"

वह झल्लाकर चिल्लाया :

"ठीक है, मैं तुम्हें मजबूर कर दूंगा!"

और वह कार्यालय चला गया, जिससे कि अपने कमरे में बैठकर अपना क्रोध शांत कर ले...

इस प्रकार सेब के वृक्षों व अंगूर की बेलों से घिरे आरामदेह दुमंज़िला घर में कलह और फूट ने अपना अड्डा जमा लिया।

यही कारण था कि रुस्तम-कीशी इस समय मुंह में पाइप दबाये सचमुच आग-बबूला हो उठा था।

गायक की आवाज़ बंद होते ही पेरशान ने अलमारी से शायरी की किताब निकाली और पिता की ओर बिलकुल भी ध्यान न देकर उसे पढ़ने में निमग्न हो गयी।

सकीना आख़िर कहां ग़ायब हो गयी? रुस्तम ने अपनी याद दिलाने के लिए ज़ोर से खांसा, पर पत्नी उसके पास नहीं आयी। शाम के खाने के बाद वह बग़ल की अंधेरी कोठरी में क्या कर रही है? आख़िरकार उसका धैर्य जवाब दे गया और उसने आवाज़ दी :

"सकीना!"

पत्नी उसके पास फ़ौरन नहीं आयी, जैसा कि प्रायः होता था। उसे ग़ुस्सा आने के बजाय आश्चर्य हुआ और उसने ज़रा और ज़ोर से आवाज़ दी :

"सकीना, तुम कहां हो?"

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। रुस्तम ने तब तक किताब से ऊब चुकी और फिर रेडियो खोल कर बैठी पेरशान से कहा :

"बिटिया, ज़रा जाकर मां को बुला लाओ।"

उसे ख़ुद को भी बुरा महसूस हुआ कि जब उसने पत्नी को आवाज़ दी, उसका स्वर तीखा और रूखा था, लेकिन पेरशान से अनुरोध करते समय वह स्नेहपूर्ण हो उठा था।

पेरशान तुरंत भांप गयी कि बात किस बारे में होगी, उसने अपनी लम्बी चोटियां कंधे पर डाल, पिता का आलिंगन कर प्यार किया और फ़ुसफ़ुसायी :

"देखो, मां के आगे झुकना नहीं..."

और लपककर बरामदे में चली गयी।

पिता मुस्करा उठा। "हू-बहू सकीना जैसी है। एक चने की दो दालों जैसी।" मेज़ सरकाकर वह, यह सोचता हुआ कि बात कैसे शुरू करे, कमरे में चहलक़दमी करने लगा। "बस ऊंची आवाज़ में नहीं बोलना है!" रुस्तम अपने को समझाता रहा। "अगर ऊंचे सुर में बात छेड़ी, तो बीवी भी बिफर उठेगी, उससे न रहा जाएगा। कहीं पड़ोसी न सुन लें। सुनेंगे एक शब्द और पूरा क़िस्सा गढ़ लेंगे। आख़िर ये झगड़े क्यों होते हैं? जब देखो कि पत्नी अड़ गयी है–चुप लगा जाओ और जब उसका ग़ुस्सा उतर जाये, लौटकर पुचकार लो, ताकि उसका दिल रूई के गाले जैसा नरम हो जाये। सचमुच कितनी हंसी आती है–कैसी मामूली बातों पर यह झगड़ा शुरू हुआ है। दमड़ी की मुर्ग़ी, नौ टका निकियाई!"

सकीना जब कंधों पर रोयेंदार गरम रूमाल डाले खाने के कमरे में आयी, रुस्तम ने मुस्कराकर उसका स्वागत किया।

"क्यों, ग़ुस्सा ठण्डा हो गया न? मिज़ाज ठीक है न?"

"ग़ुस्सा तो तुम्हारा ठण्डा हुआ होगा, मुझे तो नाम को भी ग़ुस्सा नहीं आया था," सकीना ने पति की चुभती नज़र बर्दाश्त करके दृढ़तापूर्वक कहा। "और तुम्हें क्या चाहिए?" उसने दरवाज़े में से झांक रही पेरशान से कहा। "क्यों ताक रही हो? मेरे झुर्रीदार गाल अब फूल जैसे नहीं रहे। अपने कमरे में जाओ!"

पेरशान मां से चिमटकर फ़ुसफ़ुसायी :

"ख़ुदा के वास्ते, मां, ज़िद मत करो, मान जाओ..."

"मान जायेगी, मान जायेगी!" पिता ने कृत्रिम निश्चिन्तता के साथ कहा। "जाओ!"

पेरशान के जाने तक इन्तज़ार करके सकीना ने पति के विनोद के प्रत्युत्तर में गम्भीरतापूर्वक कहा:

"अगर इस झमेले में तुम अकेले फंसे होते, तो मैं ज़बान पर ताला लगा देती, चुप लगा जाती। 'जैसा तुम्हारा दिल चाहे, वैसा ही करो! लेकिन तुम्हारे पेड़ के फल खट्टे निकले, तो तुम्हीं मुंह बिगाड़ोगे!' लेकिन इस मनहूस झंझट में न सिर्फ़ तुम, बल्कि सारा घर–गराश भी, पेरशान भी और मैं, मां भी, सभी फंस जायेंगे। और अगर इसका नतीजा अच्छा निकलने के बजाय बुरा निकला, तो हम तीनों तुमसे जवाब तलब करेंगे। ठीक है, मेरी बात तो छोड़ो, पर तुम बेटे और बेटी को क्या जवाब दोगे?"

"और मुझे जवाब किस बात का देना होगा? मेरे किसी तरह समझ में नहीं आता। मैं क्या कोई अपराध करने जा रहा हूं? तुम तो, बीवी, अपनी परछाईं तक से डरती हो!"

"हां, डरती हूं," सकीना ने स्वीकार किया। "आख़िर क्यों न डरूं? तुम सैकड़ों मेहमानों को बुला लोगे। और ऐसी दावत पर ख़र्च कितना आयेगा, तुमने इस बारे में सोचा?"

"कंजूस मत बनो! तुम्हारे अपने पांच मेढ़े हैं–तीन काट लेंगे! उन्हें क्या अपने साथ क़ब्र में ले जाना है?"

"चलो, माना पुलाव के लिए मेढ़े काट लेंगे। पर चावल? तेल? मसाले? फल? शराब? नहीं, कीशी, मैं ऐसी ऐयाशी की दावतों के लिए बिना आस्तीन चढ़ाये चावल नहीं भिगोऊंगी! तुम अध्यक्ष हो। सबकी नज़रें तुम्हीं पर टिकी हैं। शराब की एक बोतल रखेंगे–मेहमानों में से एक ऐसा निकल आयेगा, जिसे पांच बोतलें नज़र आयेंगी। मेढ़े अपने काटेंगे– लोग कहेंगे: 'सामूहिक फ़ार्म के हैं।' ऐसे भी होंगे, जो छककर खा-पी लेंगे, फिर जाते समय तुम्हें ही दोषी ठहरायेंगे। मैं ऐसा नहीं होने देना चाहती, कीशी, नहीं चाहती! ज़रा शांति से सोचो–ख़ुद समझ लोगे कि मेरी बात ठीक है।"

रुस्तम शान्ति बनाये रखने के अपने निश्चय के बारे में भूल खीजकर बोला:

"थूकता हूं मैं चुग़लख़ोरों पर! भाड़ में जायें! बहुत हो चुका! मेरे

एक बेटा है और एक बार ही उसकी शादी करवानी है। लड़के को ख़ुश करना चाहता हूं। लोग ज़बान चलायेंगे फिर चुप हो जायेंगे..."

"तुम बेकार, कीशी, बेकार लोगों को ऐसा समझते हो। तुम उन्हें तुच्छ समझते हो, तुम्हें यह शोभा नहीं देता। लोगों के तुम पर विश्वास का आदर करना चाहिए, उसकी क़ीमत समझनी चाहिए! वरना ख़ुद ही अपने किये पर पानी फेर दोगे। यह तो अपने पांव में आप कुल्हाड़ी मारना होगा। मेरी इतनी उम्र हो गयी, पर मैंने कभी नहीं देखा कि सारे लोग झूठ बोलते हों। न ऐसा कभी हुआ है, न ही होगा, कीशी!... अगर लोग किसी को बुरा कहते हैं, तो इसका मतलब है, वह आदमी ठोकर खा गया है, ग़लत रास्ते पर चल रहा है। तुम सब की नज़रों में ऐसे जियो कि लोग तुम्हें याद करके तुम्हारी तारीफ़ ही करें! पहले ज़माने में बेक* लोग डींग हांकते थे, लोगों से नफ़रत करते थे। यह कोई अच्छी बात है, कीशी? और आज भी ऐसे घमण्डियों की कमी नहीं है, जो ग़लती तो ख़ुद करते हैं, पर लोगों की राय का बुरा मानते हैं। नहीं, अगर अपना अंतःकरण चश्मे के पानी की तरह साफ़ हो, तो आदमी बेधड़क सबसे नज़र मिला सकता है।"

"तुम इतनी ज़िद क्यों कर रही हो, मां?" पेरशान लपककर मां के पास पहुंची और उसके कान में फुसफुसायी।

सकीना उसे परे हटाकर बोली:

"अब्बा और मुझे साफ़-साफ़ बात कर लेने दो। तुम्हें तो बस अपना दिल बहलाने की सूझती है।"

पेरशान के मुंह पर लाली छा गयी, केवल पुष्ट कपोलों पर ही नहीं, काले बालों की घुंघराली लटों तले से नज़र आ रही सुन्दर कानों की ललरियों पर भी। उसने शर्माकर निर्ममतापूर्वक कहा:

"सारी मांएं, मां होने के नाते अपने बेटों की अच्छी शादी करना चाहती हैं। पर तुम... समझ में नहीं आता कि इस का क्या मतलब लगाऊं। मेरे ख़याल में, तुम हमें प्यार नहीं करती हो।"

"जैसी हूँ, वैसी हूँ," मां ने जवाब दिया। "आदमी का स्वभाव कोई पोशाक तो है नहीं, जो शादी के लिए ख़ास तौर से सिलवा लिया जाये।"

---

*बेक–ज़मींदार।

सब चुप हो गये।

परेशान मुंह फुलाये किताब के पन्ने उलटती रही, फिर मां से बिना शुभ-रात्रि कहे अपने कमरे में चली गयी।

"तुम बात को इस हद तक मत बढ़ाओ कि मुझे तेल्ली को शादी की तैयारी के लिए बुलवाना पड़ जाये!" रुस्तम ने धमकी दी।

"जब तक मैं तुम्हारी बीवी हूं, इस घर में तेल्ली चाची क़दम भी नहीं रख सकेगी," सकीना ने जवाब दिया। "तुम, कीशी, सो जाओ। रात मां का पेट। हर हालत में तुम मुझसे सहमत हो जाओगे..."

रुस्तम बक-झककर बरामदे में चला गया और उसके एक कोने से दूसरे कोने तक चहलक़दमी करने लगा। "औरत की जात! औरत की जात!" वह खीजता हुआ सोचता रहा। "दुनिया भर की अफ़वाहें सुन लीं, इसी लिए घबरा गयी है। तेल्ली चाची अपनी ज़हरीली ज़बान से जिसे कहिए उसे परेशान कर डाले... अध्यक्ष, अध्यक्ष!.. 'सबकी नजरों में रहता हूं...' और कोई यह नहीं सोचता कि आख़िर मैं भी बाप हूँ, मैंने भी बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया है। उसकी शादी की दावत दूं, पोते को गोदी में खिलाऊं – मेरी तमन्नाएं कोई हज़ार थोड़े ही हैं, बस एक ही तो है..."

उसे स्तेपी में घूमने, वर्षा से धुली और चश्मे के पानी-सी स्वच्छ हवा का सेवन करने की इच्छा हुई... पर वह यह भी तो नहीं कर सकता: सकीना पूरी तरह से रूठ जायेगी। "मैंने कभी बीवी को ऐसे रूप में नहीं देखा। हद हो गयी है ज़िद की!" रुस्तम ने सोचा।

दूसरा परिच्छेद

१

सकीना सुबह भी नरम नहीं पड़ी।

"अपनी राय बदलने का मेरा कोई इरादा नहीं है," उसने कहा। "और तुम, कीशी, जैसी मर्ज़ी हो, वैसा ही करो।"

रुस्तम, इतने ज़ोर से दरवाज़ा बंद करके कि दीवार पर टंगे साज के सारे तार दर्दभरे स्वर में रो उठे, लंबे-लंबे डग भरता कार्यालय की ओर चल दिया। आकाश में फिर काले बादल छा गये, मन में भी उदासी छा गयी... दरवाज़े के पास किसी बारे में ज़ोर-शोर से बहस में उलझे सामूहिक किसान अध्यक्ष की प्रतीक्षा कर रहे थे, और बेशक सब से ज़्यादा गला फाड़ रहा था कोम्सोमोल का सचिव नजफ़।

"लीजिये शनिवार भी आ गया, आज कामरेड अध्यक्ष क्या कहते हैं?" नाटे व मोटे नजफ़ ने द्वेषपूर्वक पूछा।

तभी रुस्तम को अपने वादे की याद आयी। चार महीने से स्कूल में रूसी भाषा का अध्यापक नहीं था: भूतपूर्व अध्यापक ग्रीष्मावकाश के आरम्भ में बाकू गया था और फिर नहीं लौटा। रुस्तम ने अपने गांववालों को तसल्ली दिलायी थी – एक सप्ताह में सब ठीक हो जायेगा। लोगों ने उस पर भरोसा रखा, पर रुस्तम हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा। भूल गया... मन-ही-मन भगोड़े को गाली देकर अध्यक्ष ने मज़ाक़ में टालने की सोची:

"आप दिन क्यों गिनते हैं? इस हफ़्ते के बाद क्या क़यामत की घड़ी आ जायेगी? मैंने वादा किया है, तो उसे पूरा करूंगा।"

लेकिन सामूहिक किसान वहां से हटे नहीं; कुछ चुप हो गये और कुछ असन्तुष्ट हो बड़बड़ाने लगे:

"तुम तो मज़े में हो – बेटी ने सारी विधाएं सीखकर प्रमाणपत्र गद्दे के नीचे दबा लिया!"

"इन्हें क्या चिन्ता, हमारे बच्चे पढ़ें या न पढ़ें..."

"कहीं से भी लाओ, पर अध्यापक लाओ!"

"हर काम मैं ही करूं! लगता है, मैंने सारे सामूहिक फ़ार्म की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है – यह कोई हल्का बोझ नहीं है। मेरी जगह कोई और होता, तो उसकी कमर झुक गयी होती।"

"सोलहों आने सही है!" यारमामेद ने हां में हां मिलायी।

अध्यक्ष ने आराम से तम्बाकू की डिब्बी निकाली और पाइप में भरी। डिब्बी हाथ से छूट गयी, किसी ने उसे ज़मीन पर गिरने से पहले पकड़ लिया और सादर उसे दे दिया। ख़ुशामदी हाथ की फुरती से रुस्तम ने यारमामेद को पहचान लिया और बिना शुक्रिया अदा किये माचिस की तीली जलाकर जल्दी-जल्दी कश लगाने लगा।

"तुम बेकार हम पर छींटे कस रहे हो," नजफ़ बोला। "हम भी यह काम कर चुके हैं, और अगर तुम भी एक बार ज़िला मुख्यालय हो आओ, तो फ़ार्म का कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

रुस्तम जानता था कि नजफ़ को किस बात से खिजाया जा सकता है।

"वाह, कामरेड सचिव! अगर तुम अपने काम में भी इतने ही माहिर होते, जितने कि बातें बनाने में हो, तो कभी के जनतंत्र के जाने-माने ट्रैक्टर-चालक हो गये होते!"

लेकिन नजफ़ को परेशान करना मुश्किल था।

"वाह, रुस्तम चाचा," उसने उसी लहजे में विरोध किया, "बात ट्रैक्टरों की नहीं, स्कूल की हो रही है!.. लोगों की इच्छा है कि अध्यक्ष स्कूल की कुछ चिन्ता करे।"

"इन्हें स्कूल की याद आये कैसे!" तेल्ली चाची बीच में बोल उठी, वह अपने लड़ाके स्वभाव के लिए सारे जिले में मशहूर थी। "यह तो यहाँ तक भूल गये कि हमारे यहां साल कौन-सा चल रहा है। बीते साल में जी रहे हैं! आजकल हरेक से शिक्षा प्राप्त करने की आशा की जाती है। तुम अगर अध्यक्ष हो, तो अध्यापक कहीं से भी लाओ, चाहे पाताल से लाओ!"

"तुम्हारी जैसी ज़बान हो, तो आदमी मक्का ही क्या, दुनिया के दूसरे छोर पर पहुंच जाये..." रुस्तम बनावटी हंसी हंसा।

"तुम मुझे बेवक़ूफ़ मत बनाओ!" बूढ़ी ने उसे टोक दिया। "वरना मैं तुम्हारा नाम ऐसा उछालूंगी कि सारा मुग़ान देखने जमा हो जायेगा। सीधी बात का सीधा जवाब दो!"

"रुस्तम-कीशी को बदनाम करना चाहती हो?" यारमामेद मीठी मुस्कान के साथ रुस्तम से आंखें मिलाता हुआ गुस्सा हुआ। "ख़ुशनसीब है वह मां, जिसने ऐसे बेटे को जन्म दिया!"

बूढ़ी ने अपने दोनों हाथ बड़े जोर से यारमामेद के सिर की तरफ़ बढ़ाये।

"वाह रे बातूनिया! अध्यक्ष के आगे दुम हिलाने की तुम्हें ख़ूब आदत है! रुस्तम-कीशी तो क्या, मंत्रियों तक की हंसी उड़ाई जाती है, अगर वे ग़लती करते हैं..."

अध्यक्ष का मिज़ाज तेल्ली चाची के मिज़ाज से तेज था। किसी और ने ऐसे अपमानकारी शब्द कहे होते, तो उसने उनका वैसा ही जवाब दे दिया होता, पर उसे मर्दों के सामने बातूनी बुढ़िया के मुंह लगते शर्म महसूस होती थी। रुस्तम ने अपनी खीज पर क़ाबू पाकर हांफते हुए यारमामेद से कहा:

"तुम्हें सैकड़ों बार समझा चुका हूँ कि कार्यालय के कर्मचारी को पराये मामलों में नहीं उलझना चाहिए! तुम्हारी अपनी दफ़्तर की ज़िम्मेदारियां हैं – उन्हें ही निभाओ! आदरणीय सामूहिक किसान को अपने विचार व्यक्त करने से रोकने की तुम्हें हिम्मत कैसे हुई!" और यारमामेद की ओर से पलटकर वह एकत्र लोगों से मर्मस्पर्शी स्वर में बोला: "आपको सब्र करना होगा, कामरेडो। सोवियत सत्ता भी मुग़ान की सूखी जमीन की प्यास एक ही हफ़्ते में नहीं बुझा पायी थी! फिर अध्यापक क्या होता है! जैसे जनशिक्षा मंत्रालय के पास कोई अतिरिक्त अध्यापक है ही नहीं!.."

"सुविस्तृत उत्तर मिल गया!" नजफ़ ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ टिप्पणी की।

तेल्ली चाची ने पूछा:

"तुम्हारा वादा पक्का है?"

अध्यक्ष फिर भड़क उठा। वह हर सामूहिक किसान के साथ बना कर रख सकता था, पर लंबी ज़बानवाली औरत उसे हमेशा इस हद तक खिजा देती थी कि वह ग़ुस्से के मारे भूत हो उठता था।

"तुम्हें क्या दूसरों से ज्यादा की जरूरत है? तुम्हारे बच्चों में से ऐसा कौन है, जो अध्यापक की कमी से परेशान हो रहा है? तुम्हारे कुल जमा एक बेटा है – केरेम और वह भी चरवाहा है। क्या मैंने उसे पशुपालन फ़ार्म का इनचार्ज नहीं बनाया है?"

"मैंने एक जना हो या पांच – यह मेरा मामला है। कितने और कब पैदा किये जायें, इसकी योजना बनाना तुम्हारा काम नहीं है!" चाची ने एकत्र लोगों की समवेत हंसी के बीच फ़ौरन विरोध किया। "और मेरे बेटे को फ़ार्म का ज़िम्मा सौंपनेवाले तुम अकेले ही कैसे हुए? इस काम के लिए प्रबन्ध-समिति है। और अगर केरेम अच्छा काम करता है, तो उसकी कर्मनिष्ठा की प्रशंसा की जानी चाहिए। और मेरी भी! और अगर स्कूल मेरे बच्चे नहीं जाते तो क्या हुआ, मेरे पोते तो जाते हैं। और अगर पोते भी न होते..."

यारमामेद से अध्यक्ष का ऐसा अपमान किया जाते देख रहा न गया और वह चिल्ला पड़ा:

"बहुत हो गया, चाची, बस करो! तुम्हारी ज़बान घिस जायेगी!"

लेकिन तेल्ली चाची ने हाथ से उसे ऐसे दूर कर दिया, जैसे मक्खी उड़ा रही हो।

"अगर पोते न होते, तो पराये बच्चों की देख-भाल करती! इनके बच्चे मेरे सगे बच्चों जैसे हैं," उसने हाथ ऐसे पूरे फैलाये जैसे पोर्च में खड़े सभी लोगों को गले लगाना चाहती हो। "लेकिन बस तुम्हारे जैसा आदमी..."

"होश में आओ, तेल्ली, चुप करो!" अध्यक्ष ने सख़्ती से कहा और यह भांपकर कि और तू-तू मैं-मैं करने से उसके हित में कुछ अच्छा न होने के आसार नज़र आ रहे हैं, वह गराज की ओर बढ़ गया, जिसमें उसकी हाल ही में मिली 'पोब्येदा' कार खड़ी थी।

कुछ ही मिनट में कार ज़ोरदार घरघराहट के साथ उसे बिजली की तरह ज़िला मुख्यालय की ओर ले उड़ी।

रुस्तम अकेले एक अध्यापक की ख़ातिर गंदी व ऊबड़-खाबड़ सड़क से चालीस किलोमीटर दूर ज़िला मुख्यालय कभी न गया होता। केवल कल ही मालूम पड़ा था कि जाड़े के गेहूं के बीज के अंकुर सौ हेक्टेयर से ज़्यादा के क्षेत्रफल में नहीं फूटे हैं। अब सारे खेत की दुबारा जोताई व बोवाई करना ज़रूरी हो गया था। दुबारा जोताई और बोवाई करना कठिन नहीं था, पर इसके लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन से सब तय करना ज़रूरी था, ताकि उस टुकड़े को परती मान लिया जाये, उसे वसंतकालीन योजना में शामिल कर लिया जाये और बीज हासिल कर लिये जायें। ऐसे काम के लिए तो आदमी ज़िला मुख्यालय ही नहीं, राजधानी भी जाने को तैयार हो जाये!

कल शाम तक कई दिनों से लगातार फुहारें पड़ती रही थीं। रास्ता नरम पड़ गया था, पहियों के नीचे से कीचड़ के ढेले उचट रहे थे। मुग़ान का कीचड़ सरेस जैसा होता है: एक क्षण को रुके और सूख जाये। गंदले पानी से भरे गड्ढों के कारण गाड़ी हचकोले खा रही थी पर रुस्तम जल्दी से जल्दी पक्के राज-मार्ग पर पहुँचने के इरादे से मोड़ों पर भी गति कम नहीं कर रहा था।

अधखुली खिड़की में से होकर स्तेपी की सुगंधों से सिक्त आर्द्र शीतल हवा का प्रवाह अंदर आ रहा था। जाड़े में भी स्तेपी सुरभित हो रही थी—अपर्ण झाड़ियों की नम छाल से, वर्षा से गीली व नरम हुई मिट्टी से, सूखी घास से, सर्दी के मौसम के बावजूद हठपूर्वक उग रही ज़मुर्रदी पिछली घास से।

बर्फ़ीली हवा के झोंकों ने रुस्तम का क्रोध ठण्डा कर दिया, वह शांत

हो गया और हाल ही में हुई बहस उसे निरर्थक व संयोगवश महसूस होने लगी। उसका हृदय शीघ्र शांत हो जानेवाला था, उसे अब तेल्ली चाची पर भी क्रोध नहीं आ रहा था। "सबसे बुरी बात आत्मसंयम की कमी है," वह ख़ुद को झिड़कता रहा। "आग में चैली की तरह जल उठनेवाले को काम से गया समझ लेना चाहिए। लोगों को भला-बुरा कहनेवाला भी काफ़ी अरसे के लिए अपनी मनःस्थिति बिगाड़ लेता है। और मुग़ान, हमारी मुग़ान, कितनी सुन्दर है! उसका न ओर है, न छोर, देखते-देखते दिल गा उठता है। इस समय बारिश और पतले कीचड़ में भी स्तेपी तुम्हारी ओर देखकर मुस्करा रही है, तुम्हें प्रसन्न करना चाहती है, आनन्दित करना चाहती है..."

२

बुज़ुर्ग यूं ही तो नहीं कहते हैं कि जाड़े में स्वर्ग का रास्ता मुग़ान से होकर गुज़रता है।

रुस्तम जब ज़िला केन्द्र पहुंचा, उसकी मुखमुद्रा देखकर उसे किशोर माना जा सकता था: लाल-लाल गाल, अपरिवर्ती, दृढ़निश्चयी दृष्टि। जन-शिक्षा के क्षेत्रीय विभाग की एकमंज़िला इमारत के सामने कार खड़ी करके रुस्तम हल्के क़दमों से उसके चरमराते पोर्च पर चढ़ गया। वह अरसे से ज़िला विभागाध्यक्ष गोशातख़ां को उसकी असाधारण विचार-स्वतंत्रता के लिए पसंद नहीं करता था। रुस्तम ऐसे लोगों के सामने नहीं शर्माता था, और इस समय भी वह बिना दरवाज़ा खटखटाये उसके कमरे में घुस गया और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से, मानो बहुत मामूली बात हो, बोला:

"ऐ, शिक्षा विभागाध्यक्ष मुझे फ़ौरन और इसी वक़्त रूसी और जर्मन भाषाओं के अध्यापक दो, मैं उन्हें अभी बूट में ठूंसकर सामूहिक फ़ार्म ले जाऊंगा!"

"लाओ दो लगा रखी है! मांग करना, ख़ुदा की इनायत से, तुम्हें ख़ूब आता है," गोशातख़ां ने उपदेशात्मक व किंचित् अलसाये स्वर में कहा। "और जब गांव में नौजवान शहरी अध्यापक पहुंचता है, तो आप लोगों को उसके लिए तख़्तों का पलंग तक बनाते आलस आता है। स्कूल में जाड़े में जलावन नहीं रहता, गरमियों में—पानी। अनुभवी अध्यापक अपने यहां रखना चाहते हो, तो उसकी क़द्र करना सीखो..."

गोशातख़ां को अध्यक्ष का बड़ी बेतकल्लुफ़ी से घुस आना अच्छा नहीं लगा। रुस्तम के उसे उसके नाम से सम्बोधित न करने से उसके मर्मस्थल पर चोट पहुंची। गोशातख़ां अक्सर अशिष्ट लोगों को नीचा दिखा दिया करता था। और उसने इस बार भी ऐसा ही किया।

रुस्तम हक्का-बक्का रह गया। ज़रा देखिये तो, ऐसे फटकार रहा है, जैसे वह कोई नटखट स्कूली लड़का हो! वैसे उसे पहले भी मालूम था कि गोशातख़ां की ज़हरीली फ़बतियों से बहुत-से लोग घबराते हैं। सम्मेलनों से पहले जिले के कुछ कार्यकर्ता गोशातख़ां से भेंट हो जाने पर एहतियातन उससे झुककर सलाम कर लेते थे। यूं तो वह कमज़ोर और दुबला-पतला दिखता था, पर मंच पर पहुंचते ही क्रोधोन्मत्त सिंह हो जाता था। फिर उसे कोई रोककर देखे! इसीलिए रुस्तम ने उसे जवाब फ़ौरन नहीं दिया। वह सफ़ेद खोल चढ़े चरमरानेवाले सोफ़े पर बैठ गया और उसके प्रति अनादर के संकेत के रूप में अपने पैर पसार लिये। वृद्ध को इस विचार से कुछ सन्तोष अनुभव हो रहा था कि गोशातख़ां का कोट बोरे जैसा था, उसकी क़मीज़ इस हद तक पीली पड़ गयी थी कि आंखें चौंधिया जायें और उसकी मुसी हुई टाई बछेड़े की दुम जैसी लग रही थी। "सुसंस्कृत हैं! ढंग के कपड़े तक पहनना नहीं आता, पर अहंकार की कोई सीमा नहीं!" रुस्तम ने सोचा और नाक-भौं सिकोड़कर बोला:

"अगर तुम्हारी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता, तो ज़िले के पहली कक्षा के बच्चे भी अकादमी-सदस्य होते। यानी हम तो अध्यापकों को सिर्फ़ लस्सी पिलाते हैं, और दूसरे सामूहिक फ़ार्मों में उन्हें शहद चटाते हैं, यही बात है न?"

यह कहते-कहते उसने अपने पाइप से धुएं का घना बादल छोड़ दिया। तम्बाकू की बू न सह पानेवाले गोशातख़ां ने अपनी छोटी-सी हथेली से तीखे धुएं के बादल को छितरा दिया।

"तुम मुझे मधुमक्खी के छत्ते की तरह क्यों धुआंर रहे हो? अपना पाइप हटाओ," उसने शान्त व संयत स्वर में कहा, "रुस्तम-कीशी! ऐसी नेतागीरी जाकर चायखाने में करो और मुझे शान्ति से रहने दो... जहां तक अध्यापकों का प्रश्न है, तो तुम्हें बता दूं कि कोई उपयुक्त आदमी हमारी नज़र में नहीं है। और अगर मिल भी जाता, तो मैंने उसे 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म में भेज दिया होता। पहले अध्यापकों के लिए सुविधाएं जुटाइये, उसके बाद उनकी मांग कीजिये।"

रुस्तम को सबसे ज़्यादा चिढ़ विभागाध्यक्ष के आत्मसंयम से हो रही थी, अगर गोशातख़ां चिल्लाता या बदज़बानी करता, तो रुस्तम के लिए आसान हो जाता।

"कौन-सी सुविधाएं, नेकटाईधारी मुन्ने, कौन-सी?" रुस्तम चिल्लाया। "मैंने स्कूल की बीस कमरोंवाली पक्की इमारत बनवायी है। हर कमरे को सुहाग-मन्दिर की तरह सजा रखा है। तुम्हें और क्या चाहिए? कम-से-कम शुक्रिया तो अदा करो।"

"पहली बात तो यह है कि मैं तुम्हारे लिए 'मुन्ना' नहीं हूं। कृपा करके शिष्टता से पेश आओ, बेशक अगर ऐसा कर सकते हो..." गोशातख़ां का स्वर पूर्ववत् मन्द व कृपालु था, हालांकि यह अनुमान लगाया जा सकता था कि रुस्तम की सारी बातों में से उसने केवल एक शब्द 'मुन्ना' ही सुना था।

"और दूसरी?"

"दूसरी यह कि तुमने स्कूल की नयी इमारत बनवाई—बहुत-बहुत शुक्रिया!" गोशातख़ां ने अधखड़े होकर सिर भी झुकाया। "फिर भी मुझे इसमें बहादुरी की कोई बात नज़र नहीं आती। सारे सामूहिक फ़ार्मों में ऐसे ही स्कूल हैं और फिर तुमने यह सब मेरे लिए थोड़े ही किया है—जनता के लिए किया है।"

"मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा रहा हूं केवल वास्तविकता बता रहा हूं और सारे सामूहिक फ़ार्मों में ऐसे स्कूल नहीं हैं, तुम्हें ग़लतफ़हमी हुई है।"

गोशातख़ां ने गम्भीरतापूर्वक रुस्तम के सीने पर चमक रहे देशभक्तिपूर्ण युद्ध के पदक की ओर हाथ से संकेत किया।

"मातृभूमि का पदक धारण करनेवाले का कर्त्तव्य है कि वह उक़ाब की तरह आगे देखे, न कि पीछे। फिसड्डियों की तरफ़ मुड़कर मत देखो, अगर हिम्मत के पूरे हो, तो अग्रणी लोगों से होड़ करो।"

"वे हैं कहां अग्रणी, मुन्ने? नाम गिनाओ, मैं उन्हें उंगलियों पर गिन लूंगा..."

"अपने बूते से बाहर का काम मत करो। तुम्हारे पड़ोसी कारा केरे-गोगलू ने अध्यापकों के लिए बीस कमरों का मकान बनवा दिया है। सारी सुविधाएं हैं, बरामदे हैं, छायादार बग़ीचा है..."

बेहतर होता वह उस आदमी का नाम न लेता! कारा केरेमोगलू का नाम सुनते ही रुस्तम आग-बबूला हो उठा।

"तुमसे बात करना बेकार है, इससे तो मक्खियां उड़ाना बेहतर है! जिले में जन-शिक्षा का बंटाधार कर दिया और अब अध्यक्षों के मामले में अपनी भूल सुधारने की ठान ली! अगर तुम्हें ज़िला समिति के ब्यूरो में न घसीट ले जाऊं, तो मेरा भी नाम रुस्तम नहीं!"

उसे विश्वास था कि इस धमकी से अड़ियल आदमी का मुंह बंद हो जायेगा। लेकिन उसका अंदाज ग़लत निकला। विभागाध्यक्ष ने केवल अपने पतले-पतले होंठ चबाये।

"मेरी तो कब से तमन्ना है कि ज़िला समिति स्कूलों की जांच करे। तब मैं तुम्हें काले और सफ़ेद में फ़र्क करना सिखा दूंगा।"

रुस्तम ने महसूस किया कि उसका हाथ अपने आप विभागाध्यक्ष के गरेबान की ओर बढ़ रहा है। "इसे एक बार ऐसा झंझोड़ डालूं कि फ़ौरन होश में आ जाये!" पर उसने आत्मसंयम से काम लिया और केवल दांत पीसते हुए कहा:

"मैं भी मैं नहीं, अगर तुम्हें अध्यापक भेजने के लिए मजबूर न करूं।" और झपटकर कमरे से बाहर चला गया।

३

रुस्तम फ़ौरन ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के पास जाना चाहता था, पर उसे चायख़ाने का साइनबोर्ड नज़र आ गया। ज़िन्दगी ने उसे काफ़ी पहले किसी महत्त्वपूर्ण बातचीत या किसी से मन-मुटाव होने के बाद सुनहली चाय का गिलास सामने रखते और अपने प्यारे पाइप के कश खींचते हुए थोड़ी देर बैठना सिखा दिया था, जब तक कि मन में बुद्धिमत्तापूर्ण विचार न आने लगें, जो संतुलित हों और अविवेचित आवेश न हो।

इस बार भी रुस्तम ने चायख़ाने में परिचितों के साथ थोड़ी बहुत गपशप करके और चाय के दो गिलास पीकर अपने मन की खोयी शान्ति फिर पा ली और सीटी बजाता ज़िला कार्यकारिणी समिति की तरफ़ चल दिया।

उसके कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष कलंतर केलबियेव के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं थे, पर उसने सुन रखा था कि वह उपाय-कुशल व्यक्ति है और अपने से सलाह या मदद मांगा जाना उसे अच्छा लगता है।

कई सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्ष उससे अकारण – उसकी राय जानने या उससे सलाह मांगने – मिलते रहते थे। ऐसे लोगों को कलंतर केलबियेव, बिना ख़ास दिलचस्पी लिये कि अध्यक्ष अच्छा है या बुरा, संरक्षण प्रदान करता था। लेकिन धृष्ट और स्वावलम्बी की ख़ैर नहीं थी। चाहे अध्यक्ष का मामला पूर्णतया न्यायसंगत हो, पर कलंतर कोई न कोई मीन-मेख निकाल लेता और अवश्य मन्दबुद्धि व्यक्ति के विरुद्ध बोलता... कहने का अर्थ है कि उसे अपने लोगों का समर्थन करना और उन्हें पहचानना आता था। उसे कभी-कभी "लेलेश" – "भैया" के नाम से यूं ही नहीं पुकारा जाता था। लोग इसी नाम से पुकारते थे: "कलंतर-लेलेश"।

रुस्तम उच्चाधिकारियों के साथ ऐसे सम्बंधों के विरुद्ध था। वह केवल दो-तीन बार कलंतर के पास गया था और यह उल्लेखनीय है कि केवल स्वयं कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के बुलाने पर।

अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनकर रुस्तम इस बार भी ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के पास नहीं बल्कि पार्टी की ज़िला समिति में गया। इसके बावजूद उसे प्रथम सचिव असलान के पास जाने का साहस नहीं हुआ। "कहीं उसकी नज़रों में गिर न जाऊं!" उसके दिमाग़ में विचार कौंधा। और वह द्वितीय सचिव के पास चला गया। लेकिन उसने भी रुस्तम के दावों का समर्थन नहीं किया, बल्कि इसके विपरीत बोला कि अध्यापक के भागने में दोष रुस्तम का ही है।

"यानी हर मामले में मैं ही दोषी हूं!"

"आपको आदमी का ख़याल रखना चाहिए। अब इन्तज़ार करना पड़ेगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं है।"

"अहा, तो बात यह है!" कमरे से बाहर आकर रुस्तम समझ गया। "जब तक मैं चायख़ाने में आराम करता रहा, गोशातख़ां ने टेलीफ़ोन पर मेरे बारे में सारी झूठी-सच्ची अपने ही ढंग से लगा दी। ख़तरनाक आदमी है, बखेड़िया है!.."

इस निष्कर्ष ने उसे अविलंब कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर दिया। रुस्तम को स्मरण हो आया कि एक बार ज़िला समिति के ब्यूरो में गोशातख़ां ने कैसे कलंतर की सचमुच हंसी ही उड़ा दी थी। और बैठक के

बार उसने विनोदमिश्रित गम्भीर स्वर में टिप्पणी की थी : "ऐ, उस्तादों के उस्ताद, मुझे भी तुम्हें कभी न कभी सबक़ सिखाना ही पड़ेगा!" यह याद आने पर रुस्तम ने सोचा कि इस समय केवल कलंतर ही बखेड़िये को नीचा दिखा सकता है, उसके छक्के छुड़ा सकता है। फिर भी कार्यकारिणी समिति के द्वारमण्डप की सीढ़ियों पर पैर रखते ही उसकी अंतरात्मा पुकार उठी : "कलंतर-लेलेश का ऋणी मत बन! ऐसा आदमी टके की मुर्ग़ी का छः टके महसूल वसूले बग़ैर चैन से नहीं बैठेगा।" लेकिन तभी कक्ष की एल्म से आच्छादित बाग़ में खुलनेवाली खिड़की भड़ाक से खुली और उसके दासे पर अपनी थुलथुल तोंद टिकाकर कलंतर-लेलेश खड़ा हो गया।

"आओ, आओ, क्या हुआ? साल में पहली बार तो हमारी गली में नज़र आये हो, फिर भी कतराकर निकल जाना चाहते हो..."

तंग गलियारे में से होकर रुस्तम कलंतर के कमरे में पहुंचा। अध्यक्ष भारी-भरकम मेज़ पर बैठा टेलीफ़ोन पर किसी से बात कर रहा था। उसने कान से चोंगा हटाये बिना लापरवाही से अपना मोटा, गोरा हाथ रुस्तम की ओर बढ़ा दिया।

"सलाम, कीशी, सलाम!"

रुस्तम पछताने लगा था कि वह यहां क्यों आया। "ज़रा भी तमीज़ नहीं है, लगता है जैसे जंगल में पला है। यह इतने ऊंचे पद पर पहुंच कैसे गया?" लेकिन और कोई चारा न था, गोशातख़ां की शिकायत करनी ही पड़ी।

"दोषी वही नहीं है, हम सब दोषी हैं।" कलंतर ने मेज़ पर मुक्का मारा। "हां, हम दोषी हैं! हम अपने हमवतनों, मुग़ानवासियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं! हमने निकम्मे काराबाख़वासियों को अपने सिर पर बिठा लिया, इसीलिए अब वे हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं। और बिलकुल ठीक करते हैं!"

"क्या कह रहा है यह? क्या कह रहा है?" रुस्तम ने मन-ही-मन सोचा। "अब भला यह कोई महत्त्व रखता है कि फ़लां मुग़ानवासी है, फ़लां गंजावासी है, फ़लां लेनकोरनवासी है?"

"कामरेड कलंतर, हमें अध्यापक चाहिए। चाहे वह काराबाख़ का हो, गंजा का या नूखा का – बस, बच्चों को पढ़ाये।"

"अरे, नहीं, भई, पूछो मत!" कलंतर की काली आंखें क्रोध से

चमक उठीं। "अन्तर बहुत बड़ा है। हर गांव के बाशिंदे को अपनी ज़मीन से प्यार होता है, वह अपनों का साथ देता है, अपने आदमी का बुरा नहीं होने देता। जब कि बाहर के आदमी की निगाहें रास्ते पर ही जमी रहती हैं – किसी तरह जल्दी से भाग निकलूं। समझे?"

स्थानीय कर्मचारियों का इससे क्या वास्ता? लेकिन कलंतर बातचीत करते समय हमेशा बड़ी सरलता से विषय बदल देता था, और रुस्तम समझ गया कि बहस करना व्यर्थ होगा।

"हमारी मदद करोगे या नहीं?" उसने उतावली में पूछा।

कलंतर अपनी बग़लों पर हाथ मारकर हंस पड़ा।

"अगर दोस्त रुस्तम की मदद नहीं करूंगा, तो फिर और किस की करूंगा? लेकिन पहले तुम मेरे सिखाये कर्मचारियों को अपने यहां लगा लो, फिर हम अध्यापक के बारे में भी सलाह-मशविरा कर लेंगे।"

"कैसे कर्मचारी? कौन-से कर्मचारी?" रुस्तम चौकन्ना हो उठा।

"तुम्हारे पशुपालन फ़ार्म का प्रबंधक कौड़ी का है! तुम्हें चेतावनी दिये देता हूं – उसके कारण तुम्हें बहुत रोना-कलपना पड़ेगा। समय रहते उस बदमाश को निकाल बाहर करो। बेशक, फ़ौरन नहीं, धीरे-धीरे..."

"चरवाहा केरेम सबसे ईमानदार आदमी है," रुस्तम ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा, हालांकि वह तेल्ली चाची के बेटे को उतना ही नापसंद करता था, जितना कि चाची को।

"हा-हा! जैसे तुम्हें लोगों की मुझसे ज़्यादा परख है! मैं फिर कह रहा हूं : केरेम को निकाल भगाओ। उसके बदले में मैंने तुम्हारे लिए एक बहुत ही ईमानदार आदमी ढूंढ़ लिया है।"

"कौन है?"

"फ़रहाद को जानते हो?"

रुस्तम अपने कानों पर विश्वास न कर पाया और स्तब्ध रह गया। फ़रहाद चचा? अरे, उसके बारे में तो सारी दुनिया जानती है कि वह धोखेबाज़ है। वह चार-पांच सामूहिक फ़ार्मों में कहीं लेखाकार का काम कर चुका था, तो कहीं पशुपालन फ़ार्म के प्रबंधक का, अपनी करतूतों पर परदा डालने में ऐसा माहिर था कि सब यह जानते हुए भी कि वह चोर है, पक्का धोखेबाज़ है, उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते थे।

"नहीं, कामरेड अध्यक्ष कलंतर अपने फ़रहाद को मेरी शीरीन से दूर ही रखिये!" रुस्तम मूंछों ही मूंछों में मुस्कराया।

"लेकिन क्यों? केरेम तो सीधा-सादा है। या तुम्हें डर है कि वह शिकायत कर देगा? क्यों? अरे, थोड़ा डराया जा सकता है!" कलंतर ने रुस्तम को आंख मारी। "या तुमने सोच लिया है कि पशुपालन फ़ार्म अकेला तुम्हारा ही है? ज़िले में तुम्हारे अलावा और भी तो मेमने के गोश्त के सींक-कबाब के शौक़ीन हैं न!"

रुस्तम धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। उसके माथे पर गहरे बल पड़ गये।

"सारी मुग़ान जानती है कि मैंने ज़िन्दगी में कभी बेईमानी की कमाई का रोटी का टुकड़ा नहीं खाया है!" यह कहते-कहते गुस्से से उसका चेहरा तमतमा उठा। "अगर तुम्हारे पास कोई तथ्य है, तो जांच-समिति को भेज दो। लेकिन फ़रहाद जैसे लोगों को, जब तक मैं ज़िन्दा हूं, हमारे पशुपालन फ़ार्म के पास भी नहीं फटकने दूंगा..."

और वह बिना विदा लिये दरवाज़े की ओर बढ़ गया। लेकिन कलंतर से न रहा गया, उसने लपककर अपने स्वाभाविक सरपरस्ताने अशिष्ट तरीक़े से रुस्तम को रोक लिया।

"अरे, ठहरो, ठहरो... मज़ाक़ भी नहीं समझते! मैं तो तुम्हारी सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेना चाहता था। हाल ही में यह शर्त लगायी गयी थी: रुस्तम फ़रहाद को रख सकता है या नहीं? मैंने बेशक दृढ़तापूर्वक कहा था: 'किसी क़ीमत पर नहीं रखेगा! देखा, मैं अध्यक्ष वर्ग को कितनी अच्छी तरह जानता हूं... और जहां तक अध्यापक का प्रश्न है, तो, सुनो, क्या कहता हूं," और कलंतर का स्वर दफ़्तरशाही हो उठा, "अगले साल तक इन्तज़ार करो। फ़िलहाल कुछ नहीं कर सकता..."

४

मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन बस्ती के छोर पर, राज-मार्ग के निकास पर स्थित था। पिछले वर्ष तक वहां स्तेपी थी: गरमी में भूरी, वसन्त में हरी और सर्दी में – मटमैले-से धूसर रंग की। और अब जगह-जगह तख़्ते व शहतीर पड़े थे, ईंटों के ढेर लगे थे। अहाते में तिल धरने की जगह नहीं थी – ट्रैक्टरों, कम्बाइनों, पेट्रोल की टंकियों व ट्रकों की क़तारें लगी हुई थीं।

रुस्तम को जवानी से ही निर्माण-स्थलों पर घूमने का शौक़ था। और इस समय भी ओवरआल, चमड़े की कनटोपियों, गर्मसूट पहने बढ़इयों व ट्रैक्टर-चालकों को मिलजुलकर काम करते देख वह अभी-अभी कलंतर के

कमरे में हुई अपमानजनक बात के बारे में बिलकुल भूल गया। वह प्रबंध-कार्यालय की एकमंज़िला, अभी तक पलस्तर नहीं की हुई इमारत के पास पहुंचा। वह उपनिदेशक के पास जाना चाहता था, पर इरादा बदल गया। "दस नबियों के दरवाज़े खटखटाने से तो बेहतर होगा ख़ुद ख़ुदा से ही मांग लूं!" और वह निदेशक के पास गया।

दुर्भाग्य से वह अपने कमरे में नहीं था, बाकू चला गया था।

"और उपनिदेशक कहां है?"

पकी चेरियों जैसी आंखोंवाली चुलबुली लड़की ने जवाब दिया:

"अभी-अभी निकले हैं। भोजनालय में गये हैं।"

भोजनालय भी अधबने घर में था। ज़मीन में खंभे गाड़ दिये, उनके ऊपर शहतीर जमाकर बस किसी तरह ढक दिया, पलस्तर कर दिया – बिलकुल घुमक्कड़ों का पड़ाव लगता था! लेकिन जैसे ही दरारों में से रुस्तम को बोज़बाश* की ख़ुशबू आयी, उसे लगा कि उसने बहुत देर से खाना नहीं खाया है और कुछ खा-पी लेने में कोई हर्ज नहीं है।

उपनिदेशक भोजनालय में भी नहीं मिला, उसे बताया गया कि वह खाना खाकर वर्कशाप चला गया है।

कोई चारा न था, फिर डबरों में छपछप करते जाना पड़ा।

वर्कशाप भूरे पत्थर की दो ऊंची दीवारों के बीच स्थित था; छत के स्थान पर मेघाच्छन्न आकाश नीचे झुका हुआ था। लोहे के टुटवां दरवाज़े से भीतर पहुंचकर सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष विस्मित रह गया: "यह कौन-सा वर्कशाप हुआ? यह तो कारख़ाना है!"

और सचमुच सीधी क़तारों में खराद मशीनें लगी थीं, गराड़ियां घूम रही थीं, छीलनों के लच्छे पैरों में आ रहे थे। हर तरफ़ लोग आगंतुक की ओर ध्यान दिये बिना काम में जुटे हुए थे। रुस्तम ने जिससे भी पूछा, उसने यही जवाब दिया कि उपनिदेशक एक मिनट पहले वहां से गया है।

अचानक रुस्तम का दिल उमड़ आया: ट्रैक्टर-चालकों के मध्य में शराफ़ोगलू खड़ा था। हां, वह वही शराफ़ोगलू था, बस फ़ौजी ओवरकोट नहीं, बल्कि बटन खुला भूरा ओवरकोट पहने था और पतलून के पायंचे बूटों में उड़से हुए था। वह लंबा, दुबला-पतला, उतना ही अनुद्विग्न व शान्त था, जितना कि रेजिमेंट में, उसकी मुस्कान भी पहले जैसी ही

---

*बोज़बाश – काबुली चने और भेड़ के गोश्तवाला शोरबा।

सहृदय व सौम्य थी, ट्रैक्टर-चालकों से बात भी वह वैसी ही बेतकल्लुफ़ी से कर रहा था, जैसे कभी अपने रेजिमेंट के जवानों के साथ करता था।

रुस्तम ने अपने प्रथम अनभिप्रेत उद्वेग – ट्रैक्टर-चालकों को हटाकर दोस्त को बांहों में भर गले लगा लूं – पर नियंत्रण किया और उनकी काम-काजी बातचीत ख़तम होने तक इन्तज़ार करने का फ़ैसला कर एक ओर हटकर खड़ा हो गया...

दोस्त! पुराना दोस्त शराफ़ोगलू!.. रुस्तम को अपनी युवावस्था जैसे साक्षात् दिखाई दे गयी। शराफ़ोगलू काफ़ी अरसे तक मुग़ान में रहकर काम कर चुका था। सन् ३० के दशक की बात है, जब धूप में झुलसी स्तेपी का सिंचाई कार्य आरम्भ किया गया था और बाद में जब प्रथम सामूहिक फ़ार्म अस्तित्व में आये थे। उसी ज़माने में उनकी दोस्ती हुई थी। उसके बाद शराफ़ोगलू वहां से चला गया था, और रुस्तम से उसकी मुलाक़ात फिर सन् उन्नीस सौ बयालीस में उक्रइन में हुई थी। मित्र दो वर्ष तक एक ही रेजिमेंट में सेवारत रहे – साथ-साथ मोज़दोक तक पीछे हटे, बुडापेस्ट तक आगे बढ़े, जमी हुई ज़मीन पर सोये, नदियां और दलदल पार किये। एक बार जब रुस्तम के पैर में चोट आयी थी, वह अस्पताल में भरती हो गया और वहां से छुट्टी पाकर अपनी रेजिमेंट में लौट आया था। बुडापेस्ट की लड़ाई में युद्ध ने शराफ़ोगलू को भी नहीं बख़्शा। रुस्तम दोस्त को रण-भूमि से उठाकर निकाल लाया। जब उनके मोर्चे पर अपेक्षाकृत शान्ति रही, रुस्तम कमाण्डर की अनुमति लेकर अस्पताल पहुंच गया। शराफ़ोगलू कमज़ोर हो गया था, उसका काफ़ी ख़ून बह गया था, वह अपने साथी की आवाज़ सुनकर बड़ी मुश्किल से आंखें खोल पाया... वह रुस्तम की तरफ़ प्रेम व कृतज्ञता के भाव से देखकर लाचारी में मुस्कराया, मानो स्वयं दोषी हो, और उसने सिरहाने रखी छोटी अलमारी के ख़ाने से नक़्क़ाशीदार पाइप निकालकर उसे भेंट कर दिया। उस दिन से रुस्तम ने अपनी अखरोट की लकड़ी की बनी गंवई नासदानी पोटली में डाल ली और फिर कभी उस उपहार – शैतान के सिरवाले पाइप से जुदा नहीं हुआ।

"बहुत भला और ईमानदार आदमी है। बहादुर है!" अपने रेजिमेंट में लौटते समय द्रवित हुआ रुस्तम सोच रहा था। तब से वे एक दूसरे से नहीं मिल पाये थे।

शायद शराफ़ोगलू को रुस्तम की चुभती नज़र महसूस हो गयी थी, क्योंकि उसने कंधे सिकोड़े और पलटकर देखा। उसका चेहरा खिल उठा।

"बहुत ख़ुशी हुई तुम्हें देखकर, प्यारे दोस्त!"

उसने काले तेल से सना अपना हाथ बढ़ाया, पर रुस्तम ने पूरी हार्दिकता से मित्र को अपनी बांहों में भर लिया।

"यह कैसा चमत्कार हुआ! तुम यहां कैसे आ पहुंचे, जल्दी से बताओ! मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता..."

"अच्छा होगा, तुम बताओ कि तुम कैसे हो! तगड़े हो, ख़ुदा क़सम! चाल-ढाल भी फ़ौजियों जैसी है! किसे ढूंढ़ रहे हो?"

"उपनिदेशक को।"

"अच्छा, तो यह बात है!" शराफ़ोगलू ने ट्रैक्टर-चालकों की तरफ़ पलटकर उनसे जल्दी से कुछ कहा और फिर रुस्तम के हाथ में हाथ डालकर उसे कार्यालय में ले गया। "तुम्हें उपनिदेशक से क्या काम है?"

तभी रुस्तम की समझ में आया कि शराफ़ोगलू ही वह व्यक्ति है, जिसे वह ढूंढ़ रहा था।

"अलीयेव कहां है?"

"उसे दूसरे मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन का निदेशक नियुक्त कर दिया गया है।"

"तुम से मैं नाराज़ हूं, बहुत नाराज़," रुस्तम ने भौंहें सिकोड़कर कहा। "बग़ल में ही रहते हो और अपने बारे में ख़बर तक नहीं करवाते। दोस्त कभी ऐसा करते हैं?"

उपनिदेशक का कक्ष कारिडर जैसा एक लम्बा-चौड़ा कमरा था। उसके किवाड़ों पर पीला मोमजामा मढ़ा हुआ था, एक कोने में लोहे की अंगीठी थी, धुंधले शीशों में से बरसात की दोपहरी का धूसर प्रकाश अनिच्छापूर्वक छनकर आ रहा था। हरी बनात से ढकी दो मेज़ें – एक लिखने की और दूसरी लम्बी व संकरी – उस सुख-साधनरहित सीलभरे कमरे की सज्जा में अपना योगदान दे रही थीं। "हूं, मेरे कार्यालय में मेरा कक्ष इससे कहीं बेहतर है। क़ालीन हैं!" रुस्तम ने सोचा।

शराफ़ोगलू ने मेहमान का ओवरकोट टांगा, उसके पास ही अपना भूरा-सा ओवरकोट भी टांग दिया, फिर रुस्तम को बिठाया, दोनों एक दूसरे की तरफ़ देखते हुए मिनट भर मौन रहे, फिर लपककर गले लग गये,

हंस पड़े और फिर मौन हो गये। अन्त में सीने पर आड़े हाथ रख और पुरजोश उल्लसित आंखें अतिथि पर टिकाकर शराफ़ोगलू ने पूछा:

"सकीना भाभी कैसी हैं? और बच्चे? बहुत बड़े हो गये हैं, क्यों? अहा, रुस्तम, कितना अच्छा हुआ कि हमारी मुलाक़ात हो गयी... तुम बस अपने परिवार के बारे में अभी कुछ मत बताना, वरना मैं सारे काम छोड़कर फ़ौरन गांव रवाना हो जाऊंगा। मुझे तो वैसे ही महसूस हो रहा है कि तुम जैसे मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने घर में खींच ले जा रहे हो।"

"नहीं, मैं इतना नाराज़ हूं कि तुम्हें देहलीज़ पर क़दम भी नहीं रखने दूंगा!" रुस्तम ने विनोदपूर्ण कठोरता के साथ कहा। "सुनो, तुम्हारे मां-बाप को जन्नत नसीब हो, आख़िर हमने दांत काटी रोटी खायी है, एक दूसरे को भाई माना है, साथ ख़ून बहाया है... तुम क्या सचमुच सब भूल गये? तुम सब, यार मेरे, ऐसे ही हो, तुम्हारा ख़ून मछली के ख़ून जैसा ठण्डा है। अगर मैं तुम्हारी जगह होता..."

"अरे, अब बहुत ताने दे लिये, बस करो," शराफ़ोगलू मुस्कराया। "मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे सिर यहां इतने सारे काम आ पड़ेंगे! स्टेशन पर नयी मशीनरी-कम्बाइनें उतरवा रहे हैं। एक दिन पहले आता, या एक दिन बाद, पर हर हालत में आता ही और तुम्हारा दरवाज़ा खटखटाता। तुम मुझे अंदर नहीं आने देते, तो क्या, सकीना दरवाज़ा खोल देती... और बेटी की शादी कर दी? घर में बहू आ गयी?"

"आओ, तब ख़ुद देख लोगे..."

"ज़रूर आऊंगा," शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया और लिपिक को बुलाकर ख़ूब कड़क व ख़ुशबूदार चाय भिजवाने को कहा। "यानी घर पर सब ठीक है न? और बोवाई की तैयारी कैसी चल रही है?"

रुस्तम पर टिकी उसकी आंखों में प्यार था, पर स्वर कामकाजी था और यह अध्यक्ष को ज़रा चुभ गया।

"अब क्या कहूं? हमने रिपोर्ट यहां समय पर भिजवा दी थी," रुस्तम ने मुट्ठी पर गाल टिकाकर कहा। "कपास के लिए हमने सात सौ टन से ज़्यादा पाँस तैयार कर ली है। खनिज खाद पहुंचा दी गयी है। मशीनों की मरम्मत हो चुकी है। टोलियों और उपटोलियों का पुनर्गठन कर लिया गया है।" उसने कुछ सोचा और अपने स्वाभाविक आत्मविश्वास के साथ आगे बोला: "तैयारी पिछले साल से काफ़ी अच्छी की है। हमारे

बारे में निश्चिन्त रह सकते हो, धोखा नहीं देंगे! रुस्तम-कीशी के कारण न ज़िले को नीचा देखना पड़ेगा, न ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन को!"

शराफ़ोगलू ध्यानपूर्वक सुन रहा था और बीच-बीच में सवाल करता जा रहा था। स्पष्ट था कि उसे कृषि तकनीक का काफ़ी अच्छा ज्ञान है।

मोर्चे पर बिताये दिनों की रुस्तम को याद थी कि शराफ़ोगलू मितभाषी से मितभाषी और अंतर्मुखी सैनिक को खुलकर बात करने के लिए मजबूर करने में प्रवीण था। न जाने यह उसकी आंखों का नीलापन था या उसकी सहृदय मुस्कान, जो सम्भाषियों का दिल जीत लेती थी, लोग द्रवित, प्रसन्नचित्त हो उठते थे और बेझिझक खुले दिल से बातचीत करने लगते थे।

"और पाइप कहां है? तम्बाकू पीना छोड़ तो नहीं दिया?" शराफ़ोगलू ने उसको अचानक टोक दिया।

"तुम तो तम्बाकू पीते ही नहीं हो इसीलिए तम्बाकू के धुएं से हवा में ज़हर घोलना नहीं चाहता," रुस्तम ने मज़ाक़ किया।

"कोई बात नहीं, पियो, शर्माओ मत।"

शराफ़ोगलू ने मेज़ की निचली दराज़ से राखदानी निकालकर रुस्तम के सामने रख दी। वह मुस्कराता हुआ रुस्तम को पाइप में बड़ी तत्परता से तम्बाकू भरते, दियासलाई जलाते और पीछे को झुककर कश खींचते ही ख़ुशबूदार धुएं की चादर में लिपटते देखता रहा।

"बिलकुल विलायती लार्ड लगते हो!" शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया। "क्या ठवन है!.."

"और नहीं तो क्या!" रुस्तम ने भी उसी स्वर में कहा। "शायद ही कोई लार्ड मेरा मुक़ाबला कर सके!"

"शायद ही करे," शराफ़ोगलू ने सहमति प्रकट की और चौखानेदार बस्ती रूमाल से अपना चेहरा पोंछा, उसने मानो अपनी विनोदशील मुस्कान पोंछ दी, और फिर चिन्ताकुल हो उठा। "सारी बातें तो बता दीं, पर सबसे अहम बात के बारे में चुप लगा गये।"

"अहम बात?"

शराफ़ोगलू ने कोट का पल्ला हटाकर जेब से चाबी निकाली, लिखने की मेज़ की दराज़ का ताला खोला और उसमें से नोट-बुक निकाली। रुस्तम अपने दिमाग़ पर ज़ोर देकर उसकी मन्द चेष्टाओं को देखता हुआ सोच रहा था: "ऐसी कौन-सी अहम बात है, जो उसने नहीं बतायी?"

और शराफ़ोगलू ने नोट-बुक के पन्ने पलटकर कुछ पढ़ा और बिना सिर उठाये, बिना दोस्त की तरफ़ देखे पूछा :

"प्रति हेक्टेयर उपज कितनी रही? कपास की और अनाज की?"

रुस्तम सकपका गया और टुटियल मेज़ पर सीना टिकाकर जल्दी से बोला :

"मैं इनकार नहीं करता – प्रति हेक्टेयर उपज की योजना हम पूरी नहीं कर पाये। फिर भी विगत वर्ष की तुलना में अनाज दो क्विंटल ज़्यादा पैदा किया और कपास – तीन क्विंटल ज़्यादा। हर हेक्टेयर से। वृद्धि काफ़ी ठोस है!"

शराफ़ोगलू नोट-बुक रखकर उठ खड़ा हुआ और कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"तुम छुपाते क्यों हो, दोस्त? तुम ख़ुद भी जानते हो कि ऐसी तुलना की कोई क़ीमत नहीं होती, यही बात है न?" और स्वयं ही बोला : "हां, यही बात है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है!" रुस्तम ने विरोध किया और उसकी घनी भौंहें नाक के बांसे पर जुड़ गयीं। "योजना अपनी जगह है, उसके ख़िलाफ़ मुझे कुछ नहीं कहना। योजना सरकारी है – मैं चुप रहूंगा। पर उसके अलावा जीवन भी है और उसके अपने नियम होते हैं। सामूहिक फ़ार्म पिछड़ा हुआ था, कछुए की चाल से रेंग रहा था – कोई सुधार कर दिखाता! पर मैंने उसकी हालत सुधार दी! काफ़ी लाभ कमाया।"

"काफ़ी कमाया?" शराफ़ोगलू ने रुस्तम के कंधे के ऊपर से हाथ बढ़ाकर नोट-बुक उठायी और जरूरी पृष्ठ ढूंढ़कर मित्र को दिखाया। "हिसाब लगा लो।"

"मैं क्यों हिसाब लगाऊं?"

"ज़रा लगाकर तो देखो।"

रुस्तम की हिसाब लगाने की जरा भी इच्छा नहीं थी, वह जानता था कि हिसाब लगाने का कोई अच्छा नतीजा नहीं निकलेगा। और उसने चुनौती देने की तरह सीने पर हाथ आड़े रख लिये : ख़ुद हिसाब लगा लो, अगर लगाना ही चाहते हो... उसका चेहरा उदास हो गया, शराफ़ोगलू भी सोचने लगा कि अब मित्र अपनी पुरानी आदत के अनुसार उससे भिड़ जायेगा, लेकिन रुस्तम की आंखों में शरारत की चमक झलक उठी : मैं भी

बस बेकार सारे दिन अपनी सेहत बिगाड़ रहा हूं, आगे भी काम आयेगी!..

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं, कामरेड उपनिदेशक," उसने विनम्र भाव से मीठे शब्द कहे मानो चीनी डाले फल हों। "मैं अपनी ग़लतियां पूरी तरह स्वीकार करता हूं। हां, हम से काफ़ी भूलें हुईं। हां, हमने ढंग से लगकर मेहनत नहीं की..." उसने चैन की सांस ली, मानो सिर का बोझ उतर गया हो और बिलकुल बदले स्वर में किंचित् रूखे, उदास स्वर में बोला : "तुमने क्या मुग़ान की धूल कम फांकी है, जो हमारे कामों के बारे में राय क़ायम करने लगे?"

ये शब्द अनुचित थे, और शराफ़ोगलू ने ठीक ही किया कि उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"सब से ख़राब बात यह है, प्यारे दोस्त, कि तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म की गतिविधियों में, कहते हैं, कोई गहराई नहीं है," उसने अपने पुराने साथी को मीठी झिड़की दी। "जैसे मन में आता है, वैसे ही काम करते रहते हो। बोवाई के बाद निराई, निराई के बाद कटाई – बस ऐसे ही चक्कर-झूला चलता रहता है। जैसे तुम लोगों ने कृषि-तकनीक जैसी विद्या का नाम ही नहीं सुना है। बहुत अच्छे-अच्छे प्रयोग किये जा चुके हैं, पर उनका विस्तार और उपयोग नहीं किया गया। यही बात है न? हां। बाबा आदम के ढंग से जी रहे हो। अब केवल मुग़ान की जलवायु और मुग़ान की ज़मीन के भरोसे रहना ठीक नहीं है। बिना निर्भीक विज्ञानसम्मत योजना और उन्नत प्रयोगों का उपयोग किये बिना हम कुछ हासिल नहीं कर सकेंगे।"

मित्र की आम बातों और उपदेशात्मक स्वर से रुस्तम ऊब उठा और उसने घबराहट में मुंह और मूंछ पर हाथ रखकर अचानक जंभाई ले ली।

"ये उपदेश तो, प्यारे दोस्त, हम तुम्हारे यहां आने से पहले भी सुन चुके हैं। ज़रा सही-सही और ठोस बात कहो कि हम किस काम में पिछड़ गये हैं?"

रुस्तम नरमाई से बोल रहा था, पर शराफ़ोगलू उसके शब्दों में छिपी चुनौती को भांप गया और आत्मविश्वास के साथ बोला :

"ठीक है। तुम कामकाजी बात सुनना चाहते हो? ठीक है, मैं चूकूंगा नहीं!.. तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म के बारे में मुझे उड़ती ख़बरें ही मिली हैं, पर सारी रिपोर्टें बताती हैं कि सत्तर प्रतिशत काम, ख़ासतौर

4*

से कपास का, हाथ से किया जाता है। यही बात है न? हां, हां... यही बात है। यंत्रीकरण की हम केवल बातें करते हैं, पर उसे कार्यरूप में परिणत नहीं करते। तुमने अभी तक गम्भीरता से न तो वर्ग-गुच्छवाली बोवाई शुरू की है, न ही संकीर्ण-क़तारोंवाली, और इसके बिना सच्चे मानों में यंत्रीकरण करना असम्भव है।"

अध्यक्ष उपेक्षात्मक ढंग से मुस्कराया।

"कपास आलू नहीं होती! हमारे लोगों से कोई चौकोर क़तारें देखे..."

"पर ताजिकिस्तान में यह काम कैसे कर लिया गया? ऐसे ही लोगों ने..."

सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को बातचीत का रुख़ इस तरह बदलने की आशा नहीं थी, शराफ़ोगलू से तर्क-वितर्क करना कठिन था।

"हां, हमें जो सूझा, वही करते रहे," उसने क्लान्त स्वर में कहा। "गांव लौटकर इन सब प्रश्नों के बारे में बेशक कृषि-विज्ञ से भी बात करूंगा और प्रबंध-समिति के सदस्यों से भी। हर तरह से आज़मा कर देखेंगे।"

"प्रबंध समिति की बैठक में मुझे बुलाओगे?" शराफ़ोगलू ने मित्र से सावधानीपूर्वक पूछा, ताकि उसे ठेस न पहुंचे। तत्क्षण मोर्चे के साथी जैसा उत्तर मिला:

"जी।"

"अच्छा, तो अब बताओ कि तुम्हें उपनिदेशक से क्या काम था?"

"सच पूछो, तो ऐसा कोई फ़ौरी काम नहीं था। अलीयेव के हाल-चाल पूछने चला आया था।" रुस्तम ने आगे अपने मन की बात न कहने का फ़ैसला कर लिया। "और बेटे के बारे में भी पता करना चाहता था: उससे सन्तुष्ट हैं या नहीं? मेरा गराश तुम्हारे यहां ट्रैक्टर-चालक जो है। तुम तो ख़ुद ही जानते हो, जवानी दीवानी! इस समय वह बाकू में सम्मेलन में है..."

शराफ़ोगलू न जाने क्यों कुछ व्याकुल हो उठा।

"अच्छा, यह बात है?" उसने धीरे-धीरे कहा। "तो फिर मुझे तुमसे एक काम है। कृपया यह पत्र पढ़ लो।"

उसने मेज़ की दराज़ से स्कूली कापी से फाड़ा, कुछ लिखा हुआ पन्ना निकालकर रुस्तम को दिखाया। अक्षर बड़े-बड़े और विचपिच थे, जब कि हस्ताक्षर के स्थान पर लिखा था: "सामूहिक किसान"। पत्र

में जाड़े के उसी सौ हेक्टेयर बरबाद हुए गेहूं का ज़िक्र किया गया था, पर प्रेषक ने सच्ची बात के साथ-साथ मिथ्यारोप भी लगाया था: उसके अनुसार बोवाई बिलकुल की ही नहीं गयी थी, और बीज और किसी ने नहीं, बल्कि स्वयं सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष ने हड़प लिये थे।

रुस्तम के माथे पर पसीने की मोटी-मोटी बूंदें उभर आयीं।

"बदमाश! .. मैं जानना चाहता हूं कि इसे किसने लिखा है!"

"यह सच है?" शराफ़ोगलू ने शान्ति से पूछा।

"बदमाश..."

"शान्त हो जाओ," शराफ़ोगलू ने उसे टोक दिया। "मुझे बिलकुल शक नहीं है कि तुमने एक दाना भी नहीं लिया है।"

"सौ हेक्टेयर में गेहूं के अंकुर नहीं फूटे, यह सच है," रुस्तम ने दबी आवाज़ में कहा। उसको इस बात से कुछ सान्त्वना मिली कि शराफ़ोगलू ने ख़ुद पहले कह दिया कि वह उस पर विश्वास करता है, लेकिन यह स्वीकार करना भी तो कठिन होता है कि बोवाई बरबाद हो गयी। "कारण क्या था? सिंचाई के लिए पानी कम पड़ गया था।"

शराफ़ोगलू ने उसके हाथ से चिट्ठी ले ली और सफ़ाई से उसकी तह करके मेज़ की खुली दराज़ में डाल दी।

"अब स्थिति स्पष्ट हो रही है," उसने कहा। "तुम उपनिदेशक को उससे नये सिरे से सौ हेक्टेयर की जोताई और बोवाई की अनुमति पाने के लिए ढूंढ़ रहे थे। यही बात है न?" और उसने आगे अपना तकिया-कलाम जोड़ दिया: "हां, यही बात है।"

उनकी नज़रें मिल गयीं, और रुस्तम को विश्वास हो गया कि इस समय उसमें अपने मित्र की कठोर, फ़ौलाद से ढली-सी आंखों से आंखें बराबर करने का सामर्थ्य नहीं है।

"हां, इसीलिए।"

"और फिर इरादा बदल गया।"

रुस्तम कंधे उचकाकर चुप रह गया। उसे बहुत शर्म महसूस हो रही थी कि वह ऐसी लाचारी की हालत में फंस गया, और उसके सांवले चेहरे का रंग और काला पड़ गया, मानो उसपर कोयले की धूल जम गयी हो। संवेदनशील शराफ़ोगलू समझ गया।

"कोई बात नहीं, दोबारा बोवाई कर लेंगे," उसने अपनी सहृदय और रुस्तम के लिए चिर-परिचित मुस्कान के साथ संक्षेप में कहा।

तीसरा परिच्छेद

१

घर में अभी तक सब सोये नहीं थे। उद्विग्न रुस्तम कड़क चाय का पांचवाँ गिलास पी रहा था। सकीना बरतन समेट रही थी। अचानक बरामदे में किसी के तेज़ क़दमों की आहट सुनाई दी, दरवाज़ा भड़ाक से बंद हुआ।

"मां, पेरशान, कहां हो?" गराश का युवा व शक्तिशाली स्वर गूंज उठा।

चौंक जाने के कारण पिता से तम्बाकू घुटनों पर बिखर गया।

जूते खटखटाती पेरशान अपने कमरे से बाहर लपकी।

"तुम कितने ठीक समय पर आये हो, बेटा!" सकीना ने पिता जैसे चौड़े कंधों, ऊंचे क़द और पिता ही जैसी जुड़ी हुई भौंहों व उक़ाब सदृश दृष्टिवाले गराश को गर्व व स्नेह से देखते हुए कहा। उसका संवेदनशील हृदय तुरन्त भांप गया कि गराश किसी बात से परेशान है।

"क्या हुआ, बेटा? तुमने न अब्बा से ढंग से दुआ-सलाम की, न मुझसे..."

पिता को देखकर गराश घबरा गया, मानो उसे उसके घर पर मिलने की आशा ही न थी।

"मैं आख़िर अकेला नहीं आया हूं..." वह तेज़ी से मुड़कर बरामदे के अंधेरे में ओझल हो गया।

"दिन-बदिन परेशानियां बढ़ती ही जा रही हैं," रुस्तम ने सोचा। "बिना किसी से पूछे लड़का इतनी रात गये मेहमानों को घर ले आया है..."

"आओ, माय्या, आओ," इस बीच ड्योढ़ी में खड़ा गराश कह रहा था। "यह मेरी मां हैं, यह मेरे अब्बा हैं, यह मेरी बहन है!"

सकीना का दिल आशंका से धक-धक करने लगा।

माय्या छोटे-छोटे क़दम रखती कमरे में घुसी, मानो उसे पैर फिसलने का डर हो। उसकी आंखें झुकी हुई थीं, उसके कोमल कपोलों पर लाज की गहरी लाली छा गयी, जो रंग में मुग़ान की सुन्दरियों के लाल-सांवले कपोलों से बिलकुल भी नहीं मिलते थे, जिन्हें सूरज भी झुलसाता था और हवाएं भी थपेड़े मारती थीं। उसके पतले होंठ और हंसिया सदृश काली भौंहें चेहरे के गोरे रंग को गौण कर रहे थे। लेकिन सकीना ने उस क्षण, जिसकी वह अधीरता से प्रतीक्षा कर रही थी, जिसके बारे में आशंकित रहती थी, केवल सुदर्शन मुख ही नहीं देखा। उसने अनुमान लगा लिया–ऐसा उसे प्रतीत हुआ–कि माय्या की अंतरात्मा विनीत है और हृदय सौम्य है। "शाबाश, बेटा! लड़की अच्छी है!" सकीना ने सोचा।

यह समझते हुए कि युवती के लिए अपरिचितों की कुतूहली आंखों के सामने खड़ा रहना कितना कठिन होता है, सकीना अपनी बांहें फैलाये उसकी मदद करने जल्दी से लपकी।

"खुश-आमदीद, बेटी! तुम्हारे क़दम इस घर में बरकत लायें..."

और उसने माय्या के हाथ से पर्स लेकर ओवरकोट उतारने में उसकी मदद की।

"तुम पर वारी जाऊं, बहू।"

माय्या सास के साथ प्रथम भेंट की धड़कते दिल से प्रतीक्षा कर रही थी, न जाने उसने कितनी बार इसे टालने की कोशिश की थी, पर अब सकीना के स्नेहपूर्ण शब्दों व सच्ची ख़ुशी से उसका चित्त शान्त हो गया, उसे विश्वास हो गया कि वह इस घर में सुखी रहेगी।

युवती की लज्जालु व किंचित् विनयपूर्ण मुस्कान रुस्तम के दिल को छू गयी, उसने मेज़ से उठकर उसका माथा चूमा और बधाई दी।

जब तक मां और अब्बा बहू से परिचय करते रहे, पेरशान एक मिनट चैन से न बैठी रह सकी, इर्द-गिर्द चक्कर काटती रही और फिर बवण्डर की तरह युवती से लिपटकर उसे चूमने लगी और अचानक रो पड़ी।

"कितना प्यार करता है गराश तुम्हें!" माय्या फुसफुसायी।

"अच्छा, अच्छा, अब बस करो!" सकीना बड़बड़ायी। "ख़ुशी के मारे आदमी रो भी पड़ता है, पर सब हद में होना चाहिए, हद में!"

माय्या को तकियोंवाले सोफ़े पर बिठाकर मां भी साथ बैठ गयी और फिर उसने अभी तक दरवाज़े के पास खड़े ग़राश पर नज़र डाली।

"अच्छा, बेटा, ज़रा बताओ, हमारी बहू क्या काम करती है?"

गराश के मुंह खोलने से पहले माय्या ने जवाब दे दिया:

"मैं हाइड्रोतकनीकल इंजीनियर हूं, मां!"

रुस्तम के मुंह से पाइप गिरते-गिरते बचा। उसे सब स्वीकार था – अध्यापिका हो या अभिनेत्री – पर इंजीनियर...

"कौन-से संस्थान में पढ़ी थीं?" उसने सख़्ती से पूछा।

"कीरोवाबाद के कृषि संस्थान में।"

रुस्तम ने पसंदगी में सिर हिलाया। "बहुत अच्छा किया!" पर पेरशान की पहले तो भौंहें सिकुड़ गयीं, मानो उसे बुरा लगा हो कि माय्या इंजीनियर है, पर बाद में फिर मुस्करा उठी।

"बहुत अच्छा पेशा है तुम्हारा, बेटी," सकीना ने कहा। "मुग़ान की बदक़िस्मती यही है कि यहां पानी की कमी है। तुम्हारे जादुई हाथ और बुद्धि कितने काम आयेंगे यहां! तुम ज़रा बैठकर ससुर और ननद से बात करो, मैं जाकर चाय बनाती हूं और ऐसा चिख़िर्तमा* पकाऊंगी कि उंगलियां चाटती रह जाओगी! न पुलाव की ज़रूरत पड़ेगी, न ही सींक कबाब की।"

सकीना समोवार आसानी से उठाकर ख़ुद को तरोताज़ा व जवान हुई महसूस करती बावरचीख़ाने में चली गयी।

पुलाव व सींक कबाब का ज़िक्र करने में बेशक एक इशारा छिपा था और रुस्तम व बेटी ने बरबस एक दूसरे की तरफ़ देखा। अब रुस्तम को धूमधाम की शादी के बारे में बहस करना निरर्थक लग रहा था। वह इस बात से बहुत परेशान हो उठा था कि जीत अचानक सकीना की हो गयी, मानो उसकी पत्नी वास्तव में दिव्यदर्शिनी थी और पहले से जानती थी कि उनके घर में बहू कैसे आयेगी। उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि वह बेटे के साथ कैसे पेश आये। निस्सन्देह गराश ने जल्दबाज़ी की थी, अपनी बहू को बिना मां-बाप के आशीर्वाद की प्रतीक्षा किये और बिना शादी किये पिता के घर में ले आया था। लेकिन अब वह क्या करे – उसे झिड़की दे या चुप लगा जाये? और अगर वह चुप रहे, तो क्या पिता की प्रतिष्ठा को आघात नहीं पहुंचेगा, क्या गराश आगे भी इसी तरह धृष्टता व अशिष्टता का व्यवहार नहीं करेगा? "नदियां किनारे बदलती रहती हैं," रुस्तम ने अक़्लमंदी और लगभग वृद्धों की-सी दयालुता से सोचा, "और समय लोगों के रीति-रिवाज बदलता रहता है। बेटा और बहू शायद अपने ही ढंग से जीना चाहते हैं।"

---

* चिख़िर्तमा – भुना हुआ मुर्ग़ा।

और उसने कुछ नहीं कहा।

उधर पेरशान बेझिझक माय्या को निहार रही थी, हंस रही थी, उसे गले लगा रही थी। उसे लग रहा था कि भाई ने भाभी को घर में लाकर किसी अज्ञात, आनन्ददायक रहस्यों व सुख से परिपूर्ण दुनिया का द्वार खोल दिया है। और सचमुच, इस बात का विश्वास करने के लिए कि वे किसी दूसरे ही, परी-लोक में पहुंच गये हैं, गराश व माय्या के चेहरों पर नज़र डालना ज़रूरी था।

२

रुस्तम जानता था कि जब आदमी को चोट लगती है, उसे दर्द महसूस नहीं होता – दर्द तो बाद में होता है... बहू-बेटे के अप्रत्याशित आगमन से उत्पन्न हुआ उत्साह ठण्डा पड़ते ही उसे फिर बेटे पर क्रोध आता महसूस होने लगा। ऐसा कभी होता है: "सलाम, अब्बा और मां! यह मेरी बीवी है, मेहरबानी करके इसे प्यार कीजिये..."

रुस्तम भौंहें सिकोड़े बहू को देखता हुआ सोच रहा था कि वह वफ़ादार पत्नी साबित होगी या नहीं। पराये घर में बड़ी आसानी से चली आयी। कहीं इसी तरह फुर्र से उड़ तो नहीं जायेगी? सुन्दर तो है, इसमें कोई शक नहीं... लेकिन रुस्तम को उसकी सुन्दरता भी भंगुर और अस्थायी लग रही थी। कोमल है, बहुत ही कोमल, हल्के-से स्पर्श से झड़ जानेवाले फूल की तरह!

जब कि गराश हट्टा-कट्टा, लंबा और तगड़ा था, उसके शक्तिशाली हाथ घने रोंयों से ढके थे, कड़ी धूप और तेज़ हवाओं में काला पड़ा उसका चेहरा ख़ुरदरा लगता था और चेष्टाएं – भारी-भरकम। दुबली-पतली माय्या के सामने वह भालू-सा भोंडा दिखता था। समझ में नहीं आता कि ऐसे लोग एक दूसरे से मिल कैसे जाते हैं...

यह सच है कि रुस्तम यह देखने में नहीं चूका कि बहू में चापलूसी और छल-कपट नाम को भी नहीं है, उसकी आंखें निष्कपट हैं और मुस्कान हार्दिक है। इसके बावजूद वह अपने पूर्वाग्रह पर नियंत्रण नहीं रख पा रहा था: बिना अगुओं के लड़के के घर चली आयी – यह कोई अच्छी बात है! उसने यह तक नहीं सोचा कि गराश की बहन की भी शादी की उम्र

है। कल पेरशान भी उसकी देखादेखी घर से भाग सकती है। माय्या के मां-बाप तो थे न, वे क्या कर रहे थे, बेटी को क्या शिक्षा दी उन्होंने?

"तुम्हारी पैदायश कहां की है, बहू?" रुस्तम ने पूछा।

माय्या ने उलाहनाभरी दृष्टि से गराश की तरफ़ देखा: "तुमने यह सब पहले से क्यों नहीं बताया, जिससे मेरा इस पूछताछ से पिण्ड छूट जाता?" गराश ने केवल कंधे उचका दिये।

"मैं मास्को में पैदा हुई थी..."

"मास्को में?!"

"इसकी मां शूशा की है, पर बाप की तरफ़ से यह हमारी मुग़ान की है। यह अनाथ है, बिलकुल अनाथ," गराश ने पत्नी की मदद करने के इरादे से झट से कहा। उसे इस बात पर शर्म महसूस हो रही थी कि माय्या ने अब देख लिया है कि वह अपने पिता के सामने कितना सहम जाता है—उसे उसके बारे में बताने तक साहस नहीं हो पाया।

रुस्तम वैसा ही शान्तचित्त रुखाई से पूछता रहा:

"लगता है, तुम मां पर ज़्यादा गयी हो। काराबाख़ की औरतें लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई होती हैं, नाज़ुक होती हैं... लेकिन हमारे इलाके को जानती हो?"

"नहीं, मैं पहली बार मुग़ान आयी हूं। मैंने केवल किताबों में पढ़ा था," रुस्तम के वैमनस्य से आहत माय्या ने सकुचाते हुए कहा।

"उनमें क्या लिखते हैं, मैं ज़रा जानना चाहता हूं? शायद तरह-तरह की झूठी-सच्ची बातें लिखी होंगी, क्यों?"

माय्या गराश की ओर पलटी:

"ज़रा मेरा सूटकेस खोल दो, किताब उसी में है।"

रुस्तम को यह भी अच्छा नहीं लगा: "अच्छा, हुक्म देती है!"

"बैठे रहो!" उसने उचककर उठे बेटे को रुखाई से रोक दिया। "अभी पेरशान ले आयेगी। सूटकेस कहां है?"

"नहीं, मैं ख़ुद..."

माय्या सहजता से सोफ़े से उठ खड़ी हुई, पर गराश ने उसे रोक दिया:

"अभी लाया!"

"लाओ, बेटा, लाओ!" रुस्तम ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ अनुमोदन किया। "हमारे ज़माने में तौर-तरीक़े कुछ और ही थे। बहू सास-

ससुर के सामने कभी पति को हुक्म नहीं देती थी। लेकिन अब तो पूछो ही मत.. हम तो जाहिल, गंवई लोग हैं, और तुम पढ़े-लिखे हो, डिग्री-धारी हो..."

माय्या किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गयी—सूटकेस लेने जाये या नहीं?

"वाह, कीशी, बहू सोच सकती है कि तुम यह सब दिल से कह रहे हो," कमरे में घुसी सकीना ने नरमाई से कहा। "गराश के क्या पैर टूट जायेंगे, अगर उसे उठा लायेगा? ज़रा बीवी का ख़याल रखे। कितना अच्छा लगता है, कीशी, जब मर्द हमेशा औरत का ध्यान रखता है..."

लेकिन रुस्तम ने विरोध किया:

"बेहतर होगा, मेरी बात ध्यान से सुनो, बहू। मेरी सलाहें हमेशा झुमकों की तरह तुम्हारे कानों में रहें। पत्नी पति का जितना ज़्यादा आदर करेगी, परिवार उतना ही ज़्यादा मज़बूत होगा!"

"यह ठीक है," माय्या ने अनिच्छापूर्वक कहा। "'रीति-रिवाज आदमी के पैरों की बेड़ियां होती हैं' यह एक शायर ने कहा था। आदमी जैसा होता देखता है, वैसे का आदी हो जाता है। आप बचपन से ही ऐसे रीति-रिवाज देखते आये हैं, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे आपको अच्छे लगते हैं!"

पेरशान ने भड़ककर उसका समर्थन किया।

"ज़रा विरोध करके देखो, अगर हिम्मत है!" सकीना ने पति से कहा और स्नेहपूर्वक बेटी की तरफ़ देखकर मन-ही-मन सोचा: "मैं तो इसे बिलकुल नन्ही-मुन्नी समझती थी, सोचती थी कि इसे बस गुड़ियों से खेलना चाहिए पर बेटी तो सयानी और समझदार हो गयी..."

रुस्तम ने मुंह फेर लिया और मूंछों-ही-मूंछों में कुछ बड़बड़ाया।

जब कि सकीना ने हंसते हुए लोहे का ट्रंक खोलकर काग़ज़ में लिपटा चीनी का डला निकाला और पेरशान को दे दिया।

"जाओ, इसे तोड़ लाओ और खाने से पहले हमें एक-एक गिलास मीठी चाय दे दो। इस बीच में दूसरे काम निबटा लूंगी।" देहलीज़ पर उसने पति की ओर थोड़ा मुड़कर आगे कहा: "टोली-नायकों से बात करना सगी बेटी से बात करने से कहीं ज़्यादा आसान है! हां, अगर मतदान की नौबत आ जाये, तो मेरा मत पेरशान के पक्ष में दिया समझना।"

"बेहतर होता, बेटी को सिखातीं कि बड़ों की बात काटना शोभा

नहीं देता है," रुस्तम ने बड़ी मुश्किल से अपने को क़ाबू में रखते हुए कहा। "बेटी का गहना शील होता है, न कि धृष्टता। क्या यह कहावत भूल गयीं: एक चुप सौ संकट टाले।"

"यह कहावत तो तुम पर भी लागू होती है," पेरशान के मुंह से निकल गया। "आज चुप रहते, तो माय्या की नज़रों में अक़्लमंद हो गये होते!"

रुस्तम गुस्से के मारे भूत हो गया, उसकी आंखें लाल हो उठीं और उसने बिना सोचे-समझे कि वह क्या कर रहा है, बेटी के कंधे पर हाथ मार दिया।

"बिलकुल बेशर्म हो गयी! ले!"

सकीना हाथों से चेहरा ढांप चीख़ उठी और धम्म से कुरसी पर बैठ गयी। रुस्तम कंधे झुकाये, बूढ़ों की तरह पैर घिसटता उसके पास से निकल गया और अंधेरे सोने के कमरे में चला गया।

३

गराश पिता को प्यार करता था। समय के साथ यह प्यार आदर में परिवर्तित हो गया: अब्बा सबसे ज़्यादा अक़लमंद, बहादुर और ताक़तवर हैं। गराश की बाल्य-काल में भी और किशोरावस्था में भी सबसे उत्कट इच्छा हर मामले में पिता जैसा बनने की थी, बिलकुल वैसा, जैसे वह हैं।

अब वह आहत और कुंठित महसूस कर रहा था। कभी वह सोचता कि उसे तुरन्त माय्या के साथ पिता का घर छोड़ अलग रहना चाहिए, अपनी घर-गृहस्थी बसा लेना चाहिए... कभी वह पुत्र-सुलभ आज्ञाकारिता से अपने को मनाने लगता कि उसे चुप रहना चाहिए, अब्बा की राय बदल जायेगी, वह पछतायेंगे, उनकी आत्मा उन्हें कचोटेगी, उनकी सबसे सुलह हो जायेगी, घर में शान्ति व मेल-मिलाप का वातावरण व्याप्त हो जायेगा।

पिता के गुस्सा होने पर गराश चुप रहने का अभ्यस्त हो चुका था। इस बार भी वह मौन साधे रहा। वह चुप रहा, हालांकि उसका दिल बुरी तरह दुख रहा था, मानो गुस्से से भूत हुए पिता ने उसकी बहन को नहीं, बल्कि उसको माय्या के सामने मारा हो।

वह उदासी से सोच रहा था कि माय्या कितनी कुंठित हो रही होगी, इस शाम को वह कैसा महसूस कर रही होगी क्योंकि माय्या को तो उससे

भी कहीं ज़्यादा भुगतना पड़ा है: वह अपने घर आया था, जब कि माय्या ने पराये घर में क़दम रखा था। गराश को यह बात नहीं खटक रही थी कि पिता की अशिष्टता से उसमें व माय्या में ताल-मेल भंग हो जायेगा। उसका विश्वास था कि दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जो उनके प्यार को तबाह कर सके। लेकिन पिता की अशिष्टता व स्वेच्छाचार, हालांकि पिता की तारीफ़ों के उसने पुल बांध रखे थे, अवश्य ही माय्या के मन में गराश के प्रति अविश्वास उत्पन्न कर देंगे।

वह कम-से-कम ख़ुद अपनी ही नज़रों में पिता को उचित ठहराना चाहता था क्योंकि गराश को बचपन से ही इस बात का विश्वास था कि पिता का अनादर सबसे भयावह बात होती है। इसलिए वह अपने आप को इस बात का क़ायल कर लेना चाहता था: "क्षणिक आवेश है... मोर्चे पर कितनी मुसीबतें भुगती हैं!.. तो क्या हुआ!"

उधर माय्या ने यह महसूस करते हुए कि गराश को कितना बुरा लग रहा होगा, अपने चेहरे पर शिकन भी नहीं आने दी। वह रो रही पेरशान के सिर पर हाथ फेरती रही, उसका कांपते कंधों को बांहों में लिये रही।

"तुम बहुत अच्छी हो, तुम अब मेरी प्यारी ननद हो... मत रोओ, बस करो, सब ठीक हो जायेगा।"

सकीना ने सबसे पहले अपने को वश में किया। हालांकि वह इतनी उत्तेजित थी कि उसकी नस-नस फड़क रही थी, पर वह मुस्करायी और विनोदी स्वर में बेटी से बोली:

"वाह रे, रोनी, जल्दी से चलो, बहू के लिए चिख़िर्त्मा पकाते हैं! माय्या भी यह देख ले कि तुम्हें सिर्फ़ टसुए बहाना ही नहीं आता है, बल्कि तुम खाना पकाने में भी माहिर हो। तुम कब से सपने देख रही थीं: 'भैय्या की बस शादी हो जाये, फिर भाभी की ख़ूब सेवा करूंगी।' अच्छा, चलो, अब सरको भी!"

केवल तभी माय्या को महसूस हुआ कि उसे बहुत तेज़ भूख लगी है। उसने और गराश ने बाकू में नाश्ता किया था।

"चलो, पेरशान, खाना पकाना शुरू करते हैं। आमलेट बनाना मुझे आता है। गराश के पेट में भी चूहे कूद रहे होंगे!"

माय्या ने गराश के बारे में यह कहा, अपने बारे में नहीं, और सकीना ने इस स्त्री-सुलभ व्यवहार-कुशलता की मन-ही-मन प्रशंसा की।

"मेरे प्यारे बच्चो!" उसने हाथ पर हाथ मारा। "आख़िर मैं क्यों

खड़ी हूं? शायद इन्होंने सुबह से कुछ नहीं खाया है! और तुम भी बड़े अच्छे हो!" उसने बेटे से कहा। "तार भी नहीं भेज सके! क्या किसी ख़ानदानी घर में बहू का ऐसे स्वागत किया जाता है? पुलाव पकता, शराब पिलाई जाती, बाजे-गाजे से स्वागत किया जाता..." सकीना ने उस समय ध्यान नहीं दिया कि वह पति के शब्द दोहरा रही है। "क्या हम औरों से गये-गुज़रे हैं? अल्लाह की इनायत से हमारा अच्छा नाम है, हमारी इज़्ज़त की जाती है। हमारे रिश्तेदार और दोस्त भी हैं – उन्हें भी बुलाना चाहिए। कम-से-कम कल ही ख़बर कर दी होती..."

"माफ़ करो, मां, किसी तरह नहीं कर सका... कुछ ऐसा हो गया," गराश ने सारा दोष अपने सिर लेने की तत्परता के साथ ख़ुशी-ख़ुशी कहा।

इस बीच सकीना माय्या को बताने लगी:

"एक हफ़्ते पहले इसने कहा था: 'बाकू जा रहा हूं, मशीन-आपरेटरों के सम्मेलन में भाग लेने।' मेरे दिल में तभी चोर बैठ गया था कि कुछ न कुछ ज़रूर होनेवाला है। मां का दिल अच्छी तरह भांप लेता है, तुम ख़ुद भी समय आने पर जान जाओगी... मैंने पूछा: 'अकेले लौटकर आओगे? दो-एक भेड़ें काटने की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी?' 'बिलकुल अकेला,' बोला, 'जल्दबाज़ी मत करो!' पर जल्दबाज़ी किसने की – इसने की या मां ने?"

"अच्छा, मां, भैय्या को मत झाड़ लगाओ। वैसे ही सफ़र से थका हुआ है," निश्चिन्त, प्रसन्नचित्त पेरशान ने माय्या के कंधे से सिर सटाकर भाई का पक्ष लेते हुए कहा, मानो कुछ मिनट पहले वह नहीं रोयी थी। "मैं और माय्या पलक झपकते आमलेट बना लेंगे!"

"छोड़ो, कौन-सा आमलेट!" सकीना झल्ला उठी। "चिख़िर्तमा थोड़ी देर में तैयार हो जायेगा!"

"नहीं, मां, नहीं" माय्या ने पहली बार सकीना को इस तरह सम्बोधित किया, "आमलेट सबसे अच्छा रहेगा।"

"हमारे पास पनीर, शहद और मक्खन हैं," गराश ने माय्या का समर्थन किया। "अभी खा-पीकर तरो-ताज़ा हो जायेंगे।"

पेरशान ने उचककर भाई की गरदन पर प्यार कर लिया, उससे ऊपर नहीं पहुंच पायी।

"तुम मां के साथ बातें करो, हम ख़ुद बनायेंगे, ख़ुद! .."

"मैं और बहू को पहले ही दिन बरतन-भांड़ों में खटने दूंगी? ऐसा कभी नहीं होगा, जब तक मैं ज़िन्दा हूं!" सकीना क्षुब्ध हो उठी।

"प्यारी मां, मुझे ऐसे सुख से वंचित मत करो!" माय्या ने ऐसी मुस्कान के साथ उसकी तरफ़ देखा कि सकीना का दिल पिघल गया।

"अच्छा, अच्छा, जाओ!" उसने ठण्डी सांस ली।

जब युवतियां स्कूली छात्राओं की तरह हाथ में हाथ डाले वहां से भाग गयीं, गराश ने मां पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली।

"तुम्हारी पसंद बहुत अच्छी है! उस पर नज़र डालते ही दिल बाग़-बाग़ हो उठता है।" और सकीना ने बेटे का सिर अपने सीने से सटा लिया। "इसकी संभाल करना, ख़याल रखना! यह सदा तुम्हारी बांदी नहीं, दोस्त बनकर रहे!"

४

माय्या ने पेरशान के साथ भागकर बरामदे में निकलते ही स्तेपी की ताज़ा हवा में गहरी सांस ली और महसूस किया कि रात्रिकालीन निस्तब्धता मानो उसकी थकान दूर किये डाल रही है। जब वह पूर्व की ओर मुड़ी, तो आश्चर्यचकित रह गयी: उसे चांद ज़मीन में हज़ारों बार प्रतिबिम्बित होता प्रतीत हुआ, मानो सारी स्तेपी एक विशाल दर्पण में परिवर्तित हो गयी हो।

"यह क्या है? मैंने ज़िन्दगी में ऐसा कभी होते नहीं देखा!"

"'संगम' – इस स्थान को इसी नाम से पुकारते हैं!" पेरशान ने माय्या का आलिंगन करते हुए जवाब दिया। "यहां अराक्स और कूरा मिलते हैं। इनके बारे में एक दंत-कथा है, सुनी है? युवक अराक्स और युवती कूरा को पर्वतश्रेणी ने एक दूसरे से जुदा कर रखा था, पर वे एक दूसरे को इतना प्यार करते थे कि उनके प्रेम ने सारी बाधाओं पर विजय पा ली। उन्होंने चट्टानें तोड़ डालीं, घाटियां पार कर लीं, ताकि यहां मुग़ान में, हमारी आज़रबैजानी भूमि पर एक दूसरे के आलिंगन में बंध सकें, सदा के लिए एक हो सकें... बहुत पुरानी दंत-कथा है, मां को इसे बार-बार सुनाना अच्छा लगता है," पेरशान अपने लिए बिलकुल अस्वाभाविक उदासी के साथ फुसफुसायी।

"हां, सुन्दर है, बहुत ही सुन्दर!" विचारमग्न माय्या ने कहा। "और तुम्हारा अपना बाग़ है?"

"पूछो मत, जन्नत का टुकड़ा है!" पेरशान मुखर हो उठी। "अंगूर वाटिका है, सेब और नाशपाती के पेड़ हैं। हमारे यहां तो अगर पानी दिया जाये, तो सब उग आये–ख़ुरमा भी, केला भी,–ज़मीन ही ऐसी है। चाहो, तो चलकर देखें।"

"चलो, माना केला नहीं होगा," माय्या ने विरोध किया। "पर रात में घूमने में क्या तुक है? गराश आमलेट का इन्तज़ार कर रहा होगा।"

"अरे, मैं तो बिलकुल ही भूल गयी!" पेरशान को अचानक याद आ गया। "अभी लो, बस एक मिनट रुको।"

"पर बावरचीख़ाना कहां है?"

पेरशान नहीं जानती थी कि बावरचीख़ाना क्या होता है। पहले तो माय्या ने सोचा कि वह मज़ाक़ कर रही है, पर बाद में पता चला कि पेरशान ने वास्तव में कभी बावरचीख़ाना नहीं देखा है।

"तब तुम लोग खाना कहां पकाते हो?"

"आंगन में। वह रहा चूल्हा।"

पत्थर जमाकर बनाये चूल्हे के पास पेरशान ने मिट्टी के तेल का चूल्हा जलाया और माय्या रकाबी में अण्डे फेंटने लगी।

"तुम्हारे यहां पानी इतना गंदला क्यों है?" माय्या ने पेरशान के बाल्टी से प्लाईवुड का टुकड़ा हटा लेने पर पूछा।

"इसे अभी थोड़ी देर और रखा रहना चाहिए था," पेरशान ने कंधे उचकाये। "नदी का है, गंद-भरा है।"

"नल नहीं है?"

"बेशक, नहीं है। वाह, नल भी चाहिए तुम्हें..."

"तलछाटनकुण्ड लगाया जा सकता है। आम इस्तेमाल की बड़ी नांद!" माय्या ने कहा। "हमाम में पानी कैसे पहुंचाते हो?"

"अरे, हमारे यहां कोई हमाम नहीं है! अब्बा कहते हैं कि यह सामूहिक फ़ार्म के बूते से बाहर का काम है–नल भी और हमाम भी," पेरशान ने झल्लाकर जवाब दिया।

पेरशान ने सोचा कि माय्या अब गांव की जिन्दगी से डर जायेगी और गराश को शहर जाने के लिए मना लेगी। निस्सन्देह, डिग्रीधारी इंजीनियर है

शहर की सुविधाओं की आदी हो चुकी है। मुग़ान की स्तेपी के विस्तार से उसे क्या! इसने 'संगम' की दीप्ति की प्रशंसा तो की, पर कुछ भी हो, बिजली की बत्ती की रोशनी आंखों को ज्यादा सुखद लगती है।

"पेरशान, माय्या, क्यों रुकी हुई हो वहां?" बरामदे से सकीना की आवाज़ सुनाई दी। "ठण्ड लग जायेगी, रात ठण्डी है!"

"गराश ने भेजा है मां को," पेरशान फुसफुसायी। "वह उतावला हो रहा होगा, जानती हूँ..."

"तुम क्या जानती हो? बस करो!"

"जानती हूं, सब जानती हूं। तुम्हें जानबूझकर सोने नहीं दूंगी!"

"गराश शहर में थक गया है, वह घोड़े बेचकर सोयेगा।"

"यानी तुम्हें उस पर दया आती है?"

"क्यों नहीं आयेगी?"

"दया आती है, यानी उसे प्यार करती हो? ख़ुदा के वास्ते, बताओ, भाभी, क्या तुम्हें उससे पहली नज़र में प्यार हो गया था या धीरे-धीरे हुआ? लड़के से फ़ौरन प्यार करना बेहतर होता है या पहले से उसे जानकर उसका आदी होना?" पेरशान की बक-बक उसे समोवार संभालने से नहीं रोक रही थी।

"ऐसे भी अच्छा है और वैसे भी," माय्या मुस्करा पड़ी। "बस प्यार सच्चा होना चाहिए।"

"यानी उसकी तसवीर हमेशा दिल में रखनी चाहिए, क्यों? उसे सपनों में देखना चाहिए, क्यों? दिन-रात उसके बारे में सोचना चाहिए, क्यों?"

"तुम्हें ख़ुद सब मालूम हो जायेगा," माय्या हंस पड़ी, "जब प्यार हो जायेगा..."

चौथा परिच्छेद

१

पौ फटते ही नीन्द खुलने के बाद रुस्तम ने जल्दी-जल्दी हाथ-मुंह धो लिये। उसने चुपचाप कार्यालय खिसक जाने की ठानी। उसे शर्म भी महसूस हो रही थी और दुःख भी। वह बार-बार अपने आप से कह रहा था:

"गुस्से में अक़ल मारी जाती है।" ख़ुदा की इनायत से गराश की शादी हो गयी, बहू समझदार, सीधी-सादी और सुन्दर है, अब सब ठीक हो जायेगा, लड़ाई-झगड़े भुला दिये जायेंगे...

अपने किये पर अफ़सोस होते हुए भी घर की व्यवस्था का अभ्यस्त और परिवार में अपनी स्थिति को क़ायम रखनेवाला रुस्तम प्रकट में पश्चाताप करना या अपने किसी निकट सम्बन्धी के साथ अपना दुःख बांटना सच्चे मर्द के लिए अपमानजनक समझता था।

लेकिन वह पंजों के बल बरामदे में निकला ही था कि उसकी मुठभेड़ सकीना से हो गयी। पत्नी ने बाअदब दुआ-सलाम करने के बाद कहा :

"तुम बिना कुछ खाये-पिये कहां चल दिये, कीशी? नाश्ता तैयार है।"

रुस्तम ने केवल सिर हिलाया और मौन साधे आंगन में उतरकर चूल्हे के पास बैठ गया। उसने खाया भी मौन साधे, तश्तरियों में हठपूर्वक नज़र गड़ाये और जाते-जाते क़सूरवार की तरह अपनी पत्नी की तरफ़ देखा।

सकीना को और कुछ चाहिए ही नहीं था...

सकीना की विशालहृदयता से रुस्तम द्रवित हो उठा। "ऐसी औरत विरले ही मिलती है।" उसने गर्वपूर्वक सोचा।

भूरी घोड़ी चिर-परिचित रास्ते से अध्यक्ष को कार्यालय की ओर ले चली, पर रुस्तम ने अचानक लगाम ज़ोर से खींच ली। "मेरे कमरे की यह मुई मेज़ चुम्बक की तरह खींच लेती है। और बैठते ही हर तरफ़ से सिर पर प्रार्थनापत्रों, परिपत्रों और आदेशों की झड़ी लग जाती है... टेलीफ़ोन घनघनाता है, मुलाक़ाती आते हैं, समय बड़ी जल्दी बीत जाता है, और खेत जाने की फ़ुरसत किसी तरह मिल ही नहीं पाती!"

और रुस्तम प्रातःकालीन धुंध से आच्छादित स्तेपी की ओर मुड़ गया।

उसने काफ़ी अरसे पहले कपास की बोवाई आरम्भ करने से पूर्व बाग़ और सागबाड़ियां बनाने का फ़ैसला कर लिया था। अब सामूहिक फ़ार्म ख़ुद अपने लिए अधिकतम लाभदायक फ़सल चुन सकते थे, और रुस्तम-कीशी कृषि-योग्य ज़मीन पर अपनी चिर-अभीप्सित योजना को साकार करने के लिए अधीर था। मुग़ान का तरबूज़ शहद से भी मीठा होता है! बाकू के बाज़ारों में उसका मुक़ाबला किसी और जगह का तरबूज़ नहीं कर सकता! झुलसती गरमी में वह आदमी को पर्वतीय चश्मे के शीतल जल की तरह तरो-ताज़ा कर देता है। और मुग़ान की धरती के इस चमत्कार की ही तो

अभी तक उपेक्षा की जाती रही है। ज़रा सोचिये तो–कुछ दिन पहले तक सामूहिक फ़ार्म को बिना अनुमति के दो हेक्टेयर ज़मीन में प्याज़ बोने का भी अधिकार नहीं था! अब तो विश्वास ही नहीं होता...

चुलबुली घोड़ी गांव के छोर के कच्चे घरों के पास से गुज़रकर सूखे हुए रास्ते के किनारे-किनारे पाँस ढोकर ले जा रहे छकड़ों को पीछे छोड़ती दुलकी चाल से दौड़ पड़ी। अध्यक्ष ने गाड़ीवालों से दुआ-सलाम की। उसे बहुत अच्छा लगा कि वे लोग बिना जल्दी करने को कहे और बिना याद दिलाये स्वयं इतने भोर में काम पर निकल पड़े थे।

अध्यक्ष की पैनी नज़र से सड़क पर पड़ा भाप छोड़ता गोबर का ढेर बच न सका, जो शायद किसी टूटे हुए छकड़े से गिरा था। रुस्तम शीघ्र ही उनींदे, छोटी-छोटी फ़ैशनेबुल मूंछोंवाले लड़के के पास जा पहुंचा, जो अधभरे छकड़े पर सवार था।

"देखता हूं, तुम्हारी मूंछें तो वैसी ही काली हैं, जैसा तुम्हारा मन!" रुस्तम चिल्लाया।

गाड़ीवान ने सिगरेट मुंह से गिरा दी और घबराकर पूछा :

"क्या हो गया, चाचा?"

"ऊपर से पूछ रहे हो, बेशर्म! तुमने क्या गोबर सड़क पर बिछाने की ठान ली है? फ़ौरन, इसी वक़्त छकड़े की मरम्मत करो, दरार बंद करो!" और रुस्तम, घोड़ी को एड़ लगाकर बिना पलटकर देखे, सरपट आगे बढ़ गया।

सागबाड़ियों के पास घोड़ी धीरे-धीरे चलने लगी–वह थक गयी थी। लेकिन अध्यक्ष ख़ुद भी यह ज़रा अच्छी तरह देखने के लिए थोड़ी देर रुकना चाहता था कि वहां ज़मीन की जोताई कैसी की गयी है और उसमें खाद कैसी डाली गयी है। कुछ टुकड़ों में चुकंदर व प्याज़ की बोवाई की जा चुकी थी। रुस्तम ने मेड़ के पास खड़े छकड़े से घोड़ी बांध, खांसते हुए उकड़ूं बैठकर चुटकी से नम मिट्टी उठाकर मसला और सूंघा, बस उसे जीभ से चाटा नहीं। उसका मूड बहुत ही अच्छा था–बोवाई की तैयारी बहुत अच्छी की गयी थी। अचानक उसे कहीं नाली के उस पार से उत्तेजित आवाज़ें सुनाई दीं। अध्यक्ष उस तरफ़ गया–उसके पद का तक़ाज़ा था : कहीं भी लोगों में बहस छिड़ जाये या झगड़ा हो जाये, इच्छा हो या न हो बीच-बचाव ख़ुद रुस्तम-कीशी को ही करना पड़ता।

"क्या हुआ?" उसने कलौंछ में सने, अस्त-व्यस्त बालोंवाले ट्रैक्टर-चालक से पूछा, जिसे उपटोली-नायिका गिज़ेतार डांट रही थी।

ट्रैक्टर-चालक रुस्तम की बात अनसुनी करके युवती से बहस करता रहा।

"तुम्हें मुझे खेत से निकाल भगाने का कोई हक़ नहीं है।"

"है," गिज़ेतार ने कहा। "ढंग से काम करना चाहते हो, तो करो, तुम्हें चाहे जैसे जोतने नहीं दूंगी, यह समझ लेना! अपना रास्ता नापो, प्यारे!" और वह क्रुद्ध लड़के की तरफ़ पीठ करके खड़ी हो गयी।

रुस्तम के लिए आँखों की कोर से जोताई पर नज़र डालना ही यह भांपने के लिए काफ़ी था कि हल-रेखा चौदह सैंटीमीटर से ज़्यादा गहरी नहीं है, जब कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के साथ हुए अनुबंध के अनुसार उन्हें जोताई बीस-बाईस सैंटीमीटर गहरी करनी चाहिए थी...

"हाथ मत हिलाओ!" लड़का चिल्ला रहा था। "न जाने अपने को क्या समझ बैठी हो!"

रुस्तम के भारी हाथ ने उसकी क़मीज़ का गरेबान पकड़ लिया।

"उपटोली-नायिका का आदेश पत्थर की लकीर है! दोबारा जोताई करो, जैसा कि तुमसे कहा जा रहा है," अध्यक्ष ने धीरे से कहा, पर उसकी आवाज़ में ऐसी धमकी का पुट था कि लड़का थरथर कांप उठा। वह बिना चूं किये दूर खड़े ट्रैक्टर की तरफ़ भाग लिया।

रुस्तम का मूड न जाने क्यों अच्छा ही रहा। उसे यह अच्छा लगा कि सुशील, तंदुरुस्त और देखने में बिलकुल भी कठोर न लगनेवाली उपटोली-नायिका, पेरशान की सहेली अपने काम में माहिर है और आलसी व लापरवाह ट्रैक्टर-चालक के साथ ज़रा-सी भी रिआयत नहीं कर रही है। गिज़ेतार ने हाल ही में पेरशान के साथ स्कूल पास किया था, उसने पांचवीं कक्षा में दो साल लगाये थे। पढ़ाई में पेरशान उसके बराबर पहुंच गयी थी, पर काम के मामले में पिछड़ गयी थी: उसकी सहेली सातवीं कक्षा से ही कपास की खेती करने लगी थी और उसके श्रम-दिन वर्ष में दो सौ से कम नहीं रहते थे। पेरशान उससे एक और मामले में पिछड़ गयी थी: गिज़ेतार नज़फ़ से शादी कर चुकी थी, जब कि रुस्तम की बेटी के मंगेतर का तो जैसे अभी नाम-निशान भी नहीं था...

उपटोली-नायिका को नज़रों ही नज़रों में धन्यवाद देकर रुस्तम घोड़ी को सरपट पशुपालन-फ़ार्म की ओर दौड़ा ले चला। वहां भी सुखद समाचार

उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे: पशु-विशेषज्ञ, पशुपालन-फ़ार्म का इनचार्ज करेम और चरवाहे सभी ने एक स्वर में अध्यक्ष को विश्वास दिलाया कि पशुओं की महामारी का उन्मूलन हो चुका है, ख़तरा टल गया है।

२

शाम देर गये रुस्तम क्लान्त किन्तु सन्तुष्ट मनःस्थिति में घर लौटा, उसने सकुचा रही माय्या का माथा चूमा, बेटे का कंधा थपथपाया और भागकर आयी बेटी की चोटियों का होंठों से स्पर्श किया।

"लाओ, घरवाली, कुछ खाने को लाओ – फल, चाय, शराब!" उसने सत्कारक गृह-स्वामी-सुलभ सहृदयता से कहा।

"क्या खाना नहीं खाओगे? मैंने बहुत बढ़िया पुलाव पकाया है।"

"क्या सचमुच तुम लोगों ने खाना नहीं खाया? देखो, कहीं बहू को भूखों मत मार देना – वरना छोड़ भागेगी," रुस्तम ने मज़ाक़ किया।

सकीना कभी पति को खिलाये बिना खाना नहीं खाती थी, अब उसने क़सूरवार की तरह कहा:

"मैं भी बच्चों के साथ खाना खा चुकी हूं। हमने काफ़ी देर तक तुम्हारा इन्तज़ार किया। गराश कार्यालय में गया, तो सलमान कहने लगा – तुम कूरा के उस पार गये हुए हो..."

"मैंने चरवाहों के साथ खाना खा लिया," रुस्तम ने कहा। "हमने दुम्बे को भेड़िये के मुंह में से बचा लिया, पर, मरदूद आख़िर उसकी चर्बीदार पूंछ उखाड़कर ले ही गया। क्या करता? मैंने चरवाहों को उसे ज़िबह करके बोज़ार्त्मा* बनाने की इजाज़त दे दी। चाय ले आओ... हां, यहां क्या ख़ुशख़बरी है?"

उसने सब से पूछा, पर माय्या को लगा जैसे रुस्तम-कीशी केवल उसी से पूछ रहा है और उसी को ग़ौर से देख रहा है। और वह फिर घबरा उठी।

स्तेपी की शीतल हवा के कारण रुस्तम के गाल लाल-सुर्ख़ हो उठे थे, झुर्रियां ग़ायब हो गयी थीं, वह जवान-सा हो गया था और पाइप के कश खींचता सहृदयतापूर्वक मुस्करा रहा था, लेकिन माय्या को ससुर पहले जैसा

---

*बोज़ार्त्मा – अपनी ही चर्बी में भुनी साबुत भेड़।

भयानक लग रहा था, वह अत्यन्त सावधानीपूर्वक, सोच-समझकर, विनम्रतापूर्वक जवाब दे रही थी, मानो किसी गम्भीर रूप से बीमार से बात कर रही हो... इस समय तो मुस्करा रहे हैं, मजाक़ कर रहे हैं, पर ख़ुदा ही जाने, क्षण भर में इनका क्या रूप होगा, – कुछ भी कर सकते हैं।

रुस्तम बहू की सतर्कता भांप गया, लेकिन उसने उसे कोई महत्त्व नहीं दिया।

"नयी जगह में ऊबने तो नहीं लगीं?"

"अरे, आप भी कैसी बातें कर रहे हैं!"

"हमारे यहां कौन-सा काम करने का इरादा है?"

"मैं इंजीनियर हूं, मुझे काम करना चाहिए। आख़िर मुग़ान को हाइड्रोतकनीकल इंजीनियरों की जरूरत है..."

"ओहो, बस, पूछो मत! ठीक है, काम करो, काम करो," रुस्तम ने कृपालु स्वर में कहा। बिलकुल ऐसी ही बात वह कुछ अरसे पहले अपनी गुड़िया को सजा रही पेरशान से कहा करता था: ठीक है, खेलो, खेलो! "मुझे बस डर है कि तुम्हें, बहू, कहीं दूर सामूहिक फ़ार्म में काम करने न भेज दिया जाये। हमारे यहां ऐसा तो होता ही है: पति यहां काम करता है, तो पत्नी को दुनिया के दूसरे छोर पर भेज दिया जाता है... मैं मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में बात करूंगा – तुम्हें हमारे यहां काम पर लगा दिया जायेगा, हमारे सामूहिक फ़ार्म में," उसने विश्वासपूर्वक कहा।

"आप बेकार परेशान न होइये, क्योंकि मंत्रालय का निर्देश है ही, और मैं बाकू में बात तय कर चुकी हूं।"

"पर मंत्रालय मंत्रालय ही होता है और ज़िला ज़िला ही। लेकिन, बहू, बस इतना याद रखना: मुग़ान नाज़ुक लोगों को पसंद नहीं करती है। यहां सर्दी और पतझड़ में बहुत अच्छा लगता है, कहने की कोई बात ही नहीं। हां, बस कीचड़ ज़रा मूड ख़राब कर देता है। लेकिन गरमी शुरू होने की देर है," उसने सिर हिलाया, "उसे सह पाना हर किसी के बस की बात नहीं है।"

पेरशान को लगा कि पिता के शब्दों में कोई चुभता हुआ इशारा है, और वह खीजकर कह उठी:

"तुम माय्या को डराओ मत! गरमी गरमी जैसी ही होती है, हरियाली है, बाग़ों में ठण्डक रहती है। हम भी तो रहते हैं न? यह भी आदी हो जायेंगी।"

माय्या को डर लगा कि कहीं उसके कारण बाप-बेटी में फिर लड़ाई न हो जाये, वह मेल-मिलाप के स्वर में बोली:

"मुझसे गरमी नहीं सहन होती, इससे कड़ाके की ठण्ड बेहतर है। लेकिन किताबों में तो लिखा है कि आप के यहां गरमियों की शामें ठण्डी रहती हैं।"

"किताबों में!" रुस्तम ने हुंकार भरी। "हमारी मुग़ान के बारे में क्या बहुत-सी किताबें लिखी गयी हैं?"

"ज़्यादा नहीं हैं, पर हैं। एक यह रही मेरे पास..." और उसने सफ़ेद जिल्दवाली पुस्तक ससुर की ओर बढ़ा दी।

रुस्तम ने किताब का नाम पढ़कर यह अंदाज़ लगाने के इरादे से कि वह भारी है या नहीं, या आदर के योग्य है या नहीं, उसे हाथ पर रखकर तौला और सोच में डूबे हुए कहा:

"अच्छी किताब लिखी है। विज्ञान है!"

उसने माय्या द्वारा उस पर लिखी गयी टिप्पणियों पर नज़र डालते हुए पन्ने पलटे और बहू को किताब लौटाकर कहा:

"पढ़कर सुनाओ! मुझे सुनना अच्छा लगता है।"

माय्या बिना पुस्तक में देखकर पढ़े बताती रही। उसका उपयोग वह केवल ससुर की उसे परेशान करनेवाली नज़रों से बचने के लिए आड़ के रूप में ही कर रही थी। उसकी आवाज़ खनकदार थी, आंखें रोशन हो रही थीं, उसकी वाणी रुस्तम को सकीना के बुने सुन्दर, बेलबूटेदार पलंगपोश जैसी लग रही थी।

रुस्तम का पाइप बुझ गया।

माय्या ने रुककर माचिस की पेटी गराश की तरफ़ सरकायी और प्यार से कहा:

"ज़रा अब्बा को अंगारा ला दो।"

"अब्बा को पाइप के बुझने का पता ही नहीं चला, तो इसका मतलब है कि बातचीत उन्हें बहुत अच्छी लगी है!" पेरशान हंस पड़ी।

रुस्तम जैसे झपकी से जाग उठा, उसने बेटे के हाथ से दियासलाई की डिब्बी ले ली, पर पाइप सुलगाया नहीं, और मेज़ से उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा। और पुरानी गहरी झुर्रियां उसके विषादमय चेहरे पर फिर पड़ गयीं।

"अब्बा, आप किस सोच में डूब गये?" बेटी व्यथित हो उठी और उस के पास लपककर पहुंच कान में फुसफुसायी:

"दावत कब होगी?"

पिता ने सिर हिला दिया।

"शादी के बाद धूम-धड़क्का वैसे ही है जैसे सांप निकल जाने पर लकीर पीटना। तुम्हारी शादी तक के लिए उठा रखते हैं।"

माय्या झुककर दबी जबान में गराश से बात कर रही थी, उसने ससुर की बात नहीं सुनी।

"ओफ़, तुम भी कैसे हो, अब्बा!" और युवती ने मुंह हाथों से ढांप लिया।

सारी शाम माय्या को निहारता रहा गराश भी पिता व पुत्री में हुई मामूली-सी बातचीत बिलकुल न सुन सका। और रुस्तम ने जब बेटे पर नज़र डाली, उसका माय्या की ओर उन्मुख पुलकित चेहरा देखा, तो पिता का हृदय द्रवित हो उठा...

सचमुच माय्या को क्या दोष दूं? आख़िर उसने इकलौते बेटे को सुखी किया है। क्या हुआ, अगर वह यहां सदियों पुराने रीति-रिवाज तोड़कर बिना अगुओं के आ गयी,—आख़िर वे स्त्राबोन* की किताब जितने यानी दो हज़ार दो सौ छप्पन बरस पुराने तो हैं नहीं, बल्कि उससे भी कहीं ज़्यादा, लेकिन बुढ़ऊ, जरा बेटे के चेहरे पर तो नज़र डाल: क्या गराश को इस समय दुनिया की सारी दौलत नहीं मिल गयी है?.. वास्तव में बेटे का चेहरा खिला हुआ था: उसकी आंखें मुस्करा रही थीं, धनुषाकार भौंहें, छैलों की-सी, धागे जैसी पतली-पतली मूंछें मुस्करा रही थीं। गराश पहले से अधिक सुन्दर, आकर्षक और शायद गम्भीर हो गया था।

रुस्तम की सदा की अन्तर्मुखता ने उसे वह सब कहने से रोक दिया, जो उसकी अन्तरात्मा कहने को प्रेरित कर रही थी, और वह बस जल्दी से इतना कहकर, "देखता हूं, तुम्हारी मां कहां ग़ायब हो गयी है। उसके समोवार का पानी उबलते-उबलते रात ढल जायेगी," अन्धेरे बरामदे में चला गया।

*स्त्राबोन—(लगभग ई० पू० सन् ६३—सन् २०) प्राचीन यूनानी भूगोलवेत्ता तथा इतिहासकार।

३

पिता के क़दमों की आहट आनी बंद भी नहीं हुई थी कि एक मिनट भी शान्त न बैठ पानेवाली पेरशान माय्या के पास जा बैठी और उसके आड़ू सदृश लाल कपोल पर चुमकारकर फुसफुसायी:

"भैया की आंखें तो दहक रही हैं और तुम्हारी—और भी तेज़ चमक रही हैं। क्या कारण है?"

माय्या ने केवल कंधे उचका दिये: कितनी बातूनी है!..

गराश ने बहन को उंगली उठाकर धमकाया: ठहरो, ज़रा अभी बताता हूं तुम्हें।

"देखो, कितना सुन्दर है मेरा भाई। सामूहिक फ़ार्म की सारी लड़कियां इसे देख-देख छिप-छिपकर आहें भरा करती थीं!"

"छिप-छिपकर क्यों?"

"पता नहीं। कहते हैं, ऐसी रीत है। लड़की को खुले तौर पर अपनी भावनाएं व्यक्त करना शोभा नहीं देता।"

"प्यार को छिपाने की क्या जरूरत है? आदमी को हमेशा ईमानदार और स्पष्टवादी होना चाहिए।"

गराश ने असन्तुष्ट भाव से फुसफुसाकर बातें कर रही बहन व माय्या की ओर आंखें तरेरकर देखा और ज़ोर से बोला:

"पेरशान की तो बचपन से ही सहेलियों के साथ गुप-चुप बातें करने की आदत पड़ी हुई है! और वह भी सारी प्रेम के बारे में!"

"तुम तो, भैया, मुझे न इस समय समझ पा रहे हो और न ही दस बरस पहले समझ पाते थे!" पेरशान ने ठण्डी सांस ली। "कितने बुद्धू हो तुम! हम तो तुम्हारे बारे में बात कर रहे हैं।"

"मेरे बारे में? फिर कानाफूसी करने की क्या जरूरत पड़ी है? खुलकर बात करो! नहीं, तुम किसी के बारे में गपशप कर रही हो, आख़िर मैं तो, बहन, तुम्हारी रग-रग पहचानता हूं!"

"चुप करो, झूठे!" पेरशान चिल्लायी। "मैं किस के बारे में गपशप कर रही थी? मैंने तो अपने जीवन में किसी भी आदमी के बारे में कभी कोई बुरी बात नहीं कही! मां कहती हैं, जिस घर में इधर की उधर लगाई जाती हैं, उसमें कभी शान्ति नहीं रहती!"

"बेशक, मां यह कह चुकी हैं और एक बार नहीं," गराश हंस पड़ा,

"लेकिन इस से फ़ायदा क्या हुआ! तुम इसके बावजूद लुक-छिपकर सहेलियों के साथ कानाफूसी करती रहती हो! माय्या को यह सब मत सिखा देना, वरना बुरा होगा!"

और उसने अपना बेलचे जैसा चौड़ा हाथ हिलाकर धमकाया।

पेरशान तनकर खड़ी हो गयी।

"ख़ुदा की क़सम, अगर तुमने मुझ पर हाथ उठाने की हिम्मत की, तो तुम्हें चूज़े की तरह पैरों तले रौंद दूंगी!" उसने शान से कहा। "और माय्या पर भी रहम नहीं करूंगी कि वह विधवा हो जायेगी!.. मैं अब कोई चौथी कक्षा में पढ़नेवाली थोड़े ही हूं।"

"तो क्या अभी भी मार खाने को मन करता है?" भाई ने शरारती ढंग से पूछा।

"मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम बहन को मार लगा सकते हो!" माय्या ने टिप्पणी की।

"बस, पूछो मत!" पेरशान कह उठी। "मर्द है! मालिक जो है! बड़ी-बूढ़ी ठीक ही कहती हैं कि लड़कों के जन्म से ही दिल में गांठ पड़ी होती है!.. मैं एक लड़की के साथ डेस्क पर बैठी थी, उसका नाम गिज़ेतार है, मैं तुम्हें उससे मिलाऊंगी, बहुत प्यारी लड़की है!" पेरशान बड़े जोश में बताने लगी। "चतुर और फुरतीली है..."

"अरे, तुम गिज़ेतार की नहीं, अपनी बात करो!" भाई ने टोक दिया।

"मुझे अपने बारे में कुछ नहीं कहना! बात तो तुम्हारे बारे में होगी, बहादुर। मुझे बस यही डर है कि तुम्हारे कारनामों का पता चलने पर माय्या को हैरानी होगी कि तुम्हारे प्रति उसका प्रेम कम हो गया है।"

"तुम्हें ग़लतफ़हमी है।"

"बेशक, तुम्हें ज़्यादा मालूम होना चाहिए, ऐसे मामलों की मुझे बिलकुल भी जानकारी नहीं है!" पेरशान ने अपने पतले होंठ भींचे। "हां, तो एक बार गिज़ेतार मेरे पास आयी, हमने जल्दी-जल्दी पाठ तैयार किये और खेलने लगीं, जब कि यह आलसी कभी किताब में नज़रें गड़ा रहा था, कभी पेंसिल बनाने लगता था, कभी मां से चुराकर लायी हुई नान चबाने लगता था, कभी काग़ज़ की गोलियां बना-बनाकर मेरे कान में और गिज़ेतार की नाक पर मारता था!.. यह बचपन से ही ऐसा है, पक्का ज़िद्दी! मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इसे प्यार किस लिए करने लगीं!"

"तुम अपने लिए मुझसे बेहतर ढूंढ़ लेना!" गराश बुरा मान गया।

"कुछ भी हो, मेरा वह तुमसे कई गुना बेहतर होगा!" बहन ने निःसंकोच कहा। "हां, तो, माय्या, इसे अपने किये का फल मिल गया: मां ने गराश की शरारत देख ली, इसका कान पकड़कर मेज़ पर बिठा दिया, पाठ याद करने को और हमें न छेड़ने को कहा। हम कोने में बैठी इधर-उधर की बातें कर रही थीं, हम ने इस दुष्ट पर दया भी की... और अचानक यह सोचकर कि हम इस पर हंस रहे हैं, इस नरभक्षी ने उचककर मेरे लात मार दी। तुम तो समझ ही गयी होगी कि लात कौन-सी जगह पर मारी होगी!" पेरशान ने सकुचाकर नज़रें झुका लीं। "और लगा गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने: 'ख़बरदार, जो कानाफूसी की!' क्यों! कैसा लगा तुम्हें यह सुनकर? इतनी छोटी उम्र में ही यह कितना बेशर्म था!"

"हूं, यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा!" माय्या ने सहमति जताई, लेकिन गम्भीरतापूर्वक कहे गये ये शब्द उसे गराश पर प्यारभरी नज़र डालने से न रोक पाये।

"पर तुम आगे का क़िस्सा क्यों नहीं बताती हो? ज़रा बताओ, फिर तुम कैसे चीख़ पड़ी थीं, इतना शोर मचाया कि शीशे टूटते-टूटते बचे थे!" गराश ने हंसी के कारण आंखों में आये आंसू रूमाल से पोंछते हुए कहा। "मां तंदूर में रोटियां फेंककर भागी आयीं। बेचारी बुरी तरह डर गयीं, उन्होंने सोचा कि घर में डाकू घुस आये हैं। मार-काट मचा रहे हैं... यह हमेशा से रोने-चीख़नेवाली और चुग़लख़ोर रही है!" गराश ने व्यंग्यपूर्ण कटु मुस्कान के साथ अपनी बात पूरी की।

"आगे का क़िस्सा क्यों नहीं सुनाते हो?" चंचल पेरशान कह उठी। "बताओ ना कि मां ने कैसे बेलन उठाया, और तुम खिड़की में से कूदकर ऐसे भागे जैसे रस्सी तुड़ाकर बछड़ा भागता है!"

"मैं क्या रुककर मार लगाये जाने तक इन्तज़ार करता! दुश्मन से समय पर बच निकलने को भी तो बहादुरी कहते हैं, यह कोई मामूली बहादुरी का काम नहीं होता!"

"तुम्हारे दुश्मन ज़िन्दगी में ऐसी ही बहादुरी दिखायें!" बहन ने उदारतापूर्वक शुभकामना व्यक्त की। "तब तुम बहादुरों में बहादुर की तरह मशहूर हो सकोगे!"

उसने माय्या से चिमटकर अपनी गरम सांसों से उसकी गरदन जलाते

हुए शरारती ढंग से कुछ फुसफुसाया। माय्या ने सहमति में सिर हिलाया और गराश की तरफ़ देखा। गराश को उसकी आंखों में केवल सदा का प्रेम ही नहीं बल्कि संकोचपूर्ण ललक भी दिखाई दी, जो कल तक उन में नहीं थी...

४

"आओ, आओ, तशरीफ़ लाओ," रुस्तम ने बरामदे से वापस लौटते हुए किसी को अनुग्रहपूर्वक बुलाया।

गृहस्वामी के पीछे-पीछे खाने के कमरे में शराफ़ोगलू आया। गराश घबराहट में उचक पड़ा: "मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गयी?"

"कैसे आना हुआ, कामरेड उपनिदेशक?"

"तुमने क्या सोच लिया कि बाकू में चुपचाप शादी कर लोगे और बात आयी गयी हो जायेगी?" शराफ़ोगलू ने गराश से हाथ मिलाते और माय्या की बंदगी करते हुए कहा। "और सोचा कि हमें इस बारे में मालूम ही नहीं पड़ेगा? पर तुम इसमें नाकामयाब रहे, दोस्त। ख़बर फैलते देर नहीं लगती। आजकल के नौजवान घमण्डी हो गये, उनके दिमाग़ आसमान पर चढ़ गये हैं," उसने रुस्तम को सम्बोधित किया। "दिखा दें, दोस्त, कि हम, पुराने सिपाही भी इन मामलों में कुछ दख़ल रखते हैं... ऐ, बच्चो, ज़रा अंदर आना!"

दरवाज़ा पूरा खुला और शेरज़ाद, नजफ़ व गिज़ेतार कमरे में दाख़िल हुए।

वे गराश के साथ-साथ बड़े हुए थे, खेले थे, आपस में लड़े थे और उन्होंने साथ ही माध्यमिक स्कूल पास किया था। लेकिन उस समय अपने स्कूल के सहपाठी को उसकी नववधू के साथ देखकर लड़के सकुचा गये, उन्होंने हड़बड़ाहट में सकुचाकर भोंडे ढंग से बिना कुछ कहे बंदगी की, केवल गिज़ेतार नहीं घबरायी, उसने माय्या की ओर ग्रीनहाउस के गुलाबों का एक गुलदस्ता बढ़ा दिया।

"बधाई, गराश, दोस्तों की ओर से और हमारे सारे युवाओं की ओर से भी... आप दोनों सदा सुखी रहें..."

माय्या गुलदस्ते में मुंह छिपाकर फुसफुसायी:

"धन्यवाद। फूल... ऐसे मौसम में!"

"यह तो कुछ भी नहीं है!" नजफ़ कह उठा। "हमारी गिज़ेतार तो हिमपात में भी ऑर्किड उगा ले। कपास की जानी-मानी विशेषज्ञ है! और, हमारी बधाई स्वीकार हो, मेरा नाम नजफ़ है।"

"अब मुझ बूढ़े को भी आपसे हाथ मिलाने की इजाज़त दीजिये। हृदय से आपकी सुख-समृद्धि की कामना करता हूं," शराफ़ोगलू ने कहा।

माय्या धन्यवाद व अभिवादन करती गुलदस्ता एक हाथ से दूसरे में संभाल रही थी, अन्त में उसे गुलदस्ता गराश को थमाने का ध्यान आ गया।

"और आप लोगों को भी मुबारक हो, आशा है आप जल्दी ही दादी, दादा बन जायेंगे," शराफ़ोगलू ने सकीना और गृहस्वामी की बंदगी की।

इस बीच गिज़ेतार व नजफ़ ने टोकरी में से सौगात में लायी खाने की चीज़ें निकालीं। उसमें मिठाइयां, बिस्कुट, चीनी में पगी मेवा व पेस्टीला थे।

अचानक नजफ़ ने देखा कि शेरज़ाद माय्या को बधाई दे ही नहीं रहा है। वह एक तरफ़ दरवाज़े के पास खड़ा हुआ था। उसका ध्यान पेरशान की तरफ़ था और उस समय उसे केवल वही नज़र आ रही थी। उधर पेरशान शेरज़ाद की तरफ़ बिलकुल भी ध्यान दिये बिना, जैसे वह कमरे में हो ही नहीं, कभी माय्या के साथ कानाफूसी कर रही थी, तो कभी गिज़ेतार को हंसा रही थी।

"मदद करो, दोस्त, बुत-से क्यों खड़े हो?" नजफ़ ने शेरज़ाद से कहा और फ़ौरन एलान कर दिया: "पोर्टेबल फ़िल्म-प्रोजेक्टर आ गया है! बहुत बढ़िया फ़िल्म है!"

"कौन-सी फ़िल्म है?" पेरशान ने पूछा।

"रोमियो-जुलिएट", नजफ़ ने तपाक से कहा। उसे ख़याल भी नहीं था कि कौन-सी फ़िल्म आयी है। "रोमियो-जुलिएट!" उसने बायीं आंख दबाकर अर्थपूर्ण भाव से कहा।

छाया में खड़े शेरज़ाद ने मुट्ठियां कस लीं। पेरशान ने भी इशारा समझ लिया और उपेक्षापूर्वक नाक सिकोड़ी।

पर नजफ़ चुप नहीं हुआ:

"ओ पेरशान, यह अजीब बात है, ज़रा समझाओ तो: कमरे में

दाख़िल होने पर तुम सुमुखी की तरफ़ काफ़ी देर तक मेरा ध्यान ही नहीं गया! .."

"गिज़ेतार ने तुम्हारी आंखें चौंधिया दीं। फिर कैसे देख सकोगे दूसरी लड़कियों को, और वह भी मेरी जैसी को।"

"तुम ठीक कहती हो, अल्लाह क़सम, ठीक कहती हो! लोग तो प्रकाश की तरफ़ खिंचे चले जाते हैं, जब कि यह नास्तिक मुझे अंधकार की ओर खींच ले जाती है! क्यों यही बात है न, मेरे दोस्त शेरज़ाद?"

"नहीं, यह बात नहीं है," शेरज़ाद ने उसके पीछे खड़े हुए शुष्क स्वर में कहा। "गिज़ेतार की उंगलियों के तुम्हारी आंखों का स्पर्श करने से उनकी ज्योति लौट आयी।"

"लगता है चुप्पा नौजवान हाज़िरजवाबी में किसी से उन्नीस नहीं है," पेरशान ने शान्त भाव से टिप्पणी की।

"इसे तो थोड़ी-सी छूट देने की देर है—ऐसा गीत रच डालेगा कि किसी मशहूर से मशहूर आशिक़ ने सपने में भी नहीं सोचा होगा," नजफ़ ने कहा।

"बेशक, पेरशान की मदद से!" गिज़ेतार भी चुभती बात कहने में नहीं चूकी।

"ज़ाहिर है!" नजफ़ ने जोश में सहमति व्यक्त की। "मैं भी तो तुम्हारी मदद से अद्वितीय प्रेम-गाथा 'गिज़ेतार-नामा' रच रहा हूं। दो महीने बाद बाकू की पत्रिका में पढ़ लेना।"

सब हंस पड़े, जब कि गिज़ेतार ने हताश होकर कानों में उंगलियां ठूंस लीं।

"माय्या क्या सोचेगी तुम्हारे बारे में? आपको विश्वास नहीं होगा," उसने माय्या को सम्बोधित किया, "यह काग़ज़ पर दो शब्द भी नहीं लिख सकते। पेंसिल हाथ में लेते ही सिर-दर्द की शिकायत करने लगते हैं।"

"झूठी निन्दा मत करो, नारी!" नजफ़ ने ऊंचे स्वर में कहा। "क्या मैंने तुमसे प्रेम-निवेदन पत्र में नहीं किया था? क्या मेरे सुमधुर शब्दों ने तुम्हें मदमत्त नहीं कर दिया था? पढ़ते ही सीधी मेरे पास दौड़ी आयी थीं।"

"फिट्टे मुंह! दो साल तक तो शेरज़ाद को दूत बनाकर भेजते रहे। सूखकर कांटा होने लगे... मैं डर गयी कि कहीं छिपटी होकर न रह जायें, बस इसी लिए मुझे दया आ गयी।"

नाटे, गोल-मटोल नजफ़ ने कोट की जेब में हाथ डालकर धमकी-भरी आवाज़ में कहा:

"यही बात है, तो इनका जवाब में भेजा गया सन्देश पढ़कर सुनाये देता हूं, जिसमें इन्होंने सदा प्रेम करने की क़सम खायी थी।"

गिज़ेतार ने उसकी बग़ल में टहोका मार दिया।

"चुप करो। इसमें किसी को दिलचस्पी नहीं है।"

"तुम नाराज़ क्यों होती हो?" नजफ़ बिसूर उठा। "मैं हर मामले में तुम्हारा कहना मानता हूं। कहती हो: 'काम करो!'—काम करने जाता हूं। कहती हो: 'सो जाओ!'—सोने चला जाता हूं, 'उठो, आलसी!'—उठ खड़ा होता हूं... ज़रा इनसे कहना, पेरशान, लड़ने से तो बेहतर होगा कि मेहमानों की इज़्ज़त करें, खाना परोसने का समय हो गया! नहीं तो ऐसे बैठ गयी हैं, जैसे मुंहदिखाई के मौक़े पर तुनकमिज़ाज बहू! देख लेना, ख़ानम, देख लेना, इन गरमियों में कपास की खेती पहले से काफ़ी मुश्किल होगी। कहीं नाक न कट जाये!"

"फ़िक्र मत करो, मेरा कभी बाल भी बांका नहीं होगा!" पेरशान ने उसे आश्वासन दिलाया।

"ये छींटे किस पर कसे जा रहे हैं? कहीं आप पर तो नहीं, टोली-नायक शेरज़ाद?" नजफ़ ने दिलचस्पी दिखाई। "अरे, मैं भोला-भाला, तो समझ बैठा था कि आपकी टोली में अनुशासन बहुत अच्छा है, कि आप अपने अधीनस्थों को, ख़ास तौर से पेरशान को, कर्मनिष्ठा और विनम्रता की भावना सिखाते हैं! .. अरे, अरे, बुत की तरह क्यों खड़े हो, ज़रा पास आओ, सुनते हो, मैं तुम्हारी कितनी तारीफ़ कर रहा हूं! बैठो, खखारकर अपना बुलबुल जैसा गला साफ़ करो और माय्या व गराश के सम्मान में एक गीत सुनाओ!"

इधर नजफ़ चुटकुलों व हंसी-मज़ाक़ से अपने मित्रों का मनोरंजन कर रहा था, तो उधर सकीना, शराफ़ोगलू व रुस्तम सोफ़े पर बैठे धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे। अन्त में शराफ़ोगलू युवाओं के पास आया।

"ऐ, नजफ़, सार्वजनिक सांस्कृतिक कार्यक्रम समाप्त करने का समय आ गया या नहीं? अब दूसरे कार्य का श्रीगणेश करना चाहिए," उसने दबी आवाज़ में कहा।

"हमारे पास सब तैयार है!"

बड़ी-सी टोकरी में से एक बोतल निकालकर नजफ़ ने उसे सीने

से सटा लिया और ओपेरा 'केरोगली'* के विदूषक की नक़ल करता गाने लगा :

"सुना रे, मजनूं, एक प्रेम का गीत सुना!"

सब हंस पड़े, शेरज़ाद भी अपनी हंसी न रोक पाया।

"पहले चाय न परोसें? क्यों, कीशी?" सकीना ने पति को सम्बोधित किया।

"ज़रूर, चाय, मीठी चाय। यह तो बहुत अच्छा रिवाज है," शराफ़ोगलू ने गृह-स्वामी के सहमति व्यक्त करने से पहले कह दिया।

सकीना सक्रिय हो उठी, उसने बेटी व माय्या को मेज़ लगाने को कहा और स्वयं समोवार लेने चली गयी।

पेरशान ने हाथ में आया पहला मेज़पोश उठाकर मेज़ पर डाल दिया। शेरज़ाद की एकाग्र व म्लान नज़रों तथा नजफ़ के इशारों से परेशान हो जाने के कारण उसने बिलकुल भी नहीं सोचा कि वह क्या कर रही है।

"क्या इस चिथड़े के अलावा बिछाने को और कुछ नहीं है?" रुस्तम ने सख़्ती से पूछा और यह महसूस कर कि मेहमान फ़ौरन चुप हो गये, वह कृत्रिम हंसी के साथ बोला, "तुम्हें हो क्या गया है, बेटी? इतने इज़्ज़तदार लोग आये हैं, ऐसा ख़ुशी का मौक़ा है, क्या तुम्हें घर में कोई ख़ूबसूरत मेज़पोश नहीं मिला? यह सोचकर डर लगता है कि हमारी मेहमाननवाज़ी के बारे में, मिसाल के तौर पर, नजफ़ क्या कहेगा..."

"आपने ठीक कहा, क़सम से, हमेशा की तरह ठीक कहा, कीशी!" नजफ़ कह उठा और उसके मांसल, भरे-भरे गाल लाल हो उठे। "मैं तो ज़मींदार के महल में पला हूं और ज़रीदार मेज़पोशों का आदी हो चुका हूं..."

"चुप रहो!" गिज़ेतार उसके कोट की आस्तीन खींचती हुई फुसफुसायी।

"मैं चुप क्यों रहूं?" नजफ़ ने हाथ फैलाये। "जैसे चाचा को मालूम नहीं है कि मेरे घर में चिख़िर्त्मा नहीं पकाया जाता था और न ही पड़ोसियों के यहां से आता था। मेरे पास जादूई मेज़पोश नहीं था और न ही मैं रेशमी रज़ाई ओढ़ता था..."

इस समय नजफ़ मज़ाक़ नहीं कर रहा था, सच कह रहा था। सामूहिक

---

*केरोगली – एक प्रसिद्ध पौराणिक वीर, जिसका यशोगान १६ वीं शताब्दी के आज़रबैजानी लोक-काव्य में किया गया है।

फ़ार्म में यह सर्वविदित था कि नजफ़ अनाथ है! उसे स्कूल में ही मशीनों में गहरी दिलचस्पी हो गयी थी, वह माडल बनाया करता था, चालकों के साथ स्तेपी में समय गुज़ारा करता था और स्कूल पास करने के बाद ट्रैक्टर-चालक का प्रशिक्षण पाने चला गया था। उसे यह काम बहुत अच्छा लगा और उसने और किसी काम में दिलचस्पी ही नहीं ली।

"तुम सोवियत शासन में अनाथ हुए थे," रुस्तम ने कहा। "यह भी कोई अनाथ होना हुआ? अनाथ होने के दुःख भोगना तो मेरी क़िस्मत में बदा था। हर कोई मेरे मुंह का आख़िरी कौर छीन लेता था, बेइज़्ज़ती करता था, सताता था। सच पूछो, तो समझदारी का ग़रीबी या अमीरी से कोई वास्ता नहीं होता है।"

"लेकिन खाने के स्वाद का भी तो मेज़पोश से कोई वास्ता नहीं होता," नजफ़ ने तपाक से कहा। "हमने आपके घर का दरवाज़ा, चाचा, सिर्फ़ आवभगत किये जाने के सपने देखते हुए ही खोला था।"

उसी क्षण सकीना कमरे में उबलता समोवार लेकर आयी। उसने नजफ़ के अन्तिम शब्द सुन लिये।

"ठीक कहते हो, बेटा, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। हमारा घर – तुम्हारा अपना घर है। गराश के दोस्त – हमारे दोस्त हैं। और बिलकुल ठीक किया कि तुम बिना बुलावे के आ गये। आगे भी ऐसा ही करना।"

इस बीच पेरशान ने मेज़ पर नीली किनारी व भरी-भरी झालरवाला पीला मेज़पोश बिछा दिया था। माय्या व गिज़ेतार बरतन व मुरब्बों के मर्तबान ले आयीं।

समोवार शान से मेज़ पर रखा हुआ था और छत की ओर भाप के छल्ले छोड़ रहा था। ख़ुशबूदार चाय का रंग अंगूरी शराब की याद दिला रहा था। मेहमानों को सिर झुका-झुकाकर गिलास पेश किये गये। सब के सब चुप हो गये।

"सकीना चाची के घर को छोड़कर इतनी ख़ुशबूदार चाय किसी के घर में नहीं होती!" कभी निरुत्साह न होनेवाले नजफ़ ने झिलमिलाते सुनहले पेय के रंग को देखते हुए कहा। "हम आये बिना कैसे रह सकते थे, चाची! हमारे जिगरी दोस्त ने शादी की, घर में ऐसी हूर को लाया है, और हम फ़िल्म देखने जायें? जैसे ही कामरेड शराफ़ोगलू ने ख़बर दी, हम पलक झपकते जमा हो गये!"

रुस्तम ने मुंह से पाइप निकालकर मूंछों पर हाथ फेरा।

"यानी जब मैंने तुम्हारी समझदारी की बात की थी, तो बिलकुल

ठीक कहा था। शराफ़ोगलू तो भांप गये, पर तुम नहीं," उसने उल्लास के साथ कहा। "सुराही में पानी तो तुम्हारा है, पर ख़मीर मेरे मोर्चे के दोस्त का है।"

"क़सम से, आपने हमेशा की तरह ठीक कहा, चाचा!" नजफ़ ने सहमति जतायी। "मुझ में समझ की कमी है। वैसे तो इस मामले में हम सब थोड़े फिसड्डी हैं। मुझ भोले-भाले ने तो सोचा था कि गृहस्वामी ख़ुद बुलायेगा। कहेगा: पड़ोसियो, दोस्तो, मेरे बेटे ने शादी की है, कितनी ख़ुशी का मौक़ा है, हमारे यहां पधारिये!"

वे लोग रुस्तम व नजफ़ की मज़ाक़िया नोक-झोंक के आदी भले ही हो गये थे, पर इस बार वे नहीं हंसे: गृहस्वामी की भौंहें सिकुड़ गयीं, पाइप सिसकारी भर उठा, मानो किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठा हो कि बुझूं या सुलगता रहूं...

पिता को बचाने के लिए गराश ने कहा:

"अकसर न्योता परायों को दिया जाता है, और मां तुम्हें समझा चुकी है कि यह तुम्हारा अपना घर है।"

परेशान द्वेषपूर्वक कह उठी:

"वरना तुम यहां आये ही कैसे होते? हमारे नजफ़ सरीखा शर्मीला, भीरु आदमी बिना न्योते के पराये घर का दरवाज़ा नहीं खोल सकता था।"

सब हंस पड़े, रुस्तम भी, इस बात से सन्तुष्ट होकर कि उसके बच्चों ने उसका पक्ष लिया और हाज़िर-जवाब को सबक़ सिखा दिया, मूंछों ही मूंछों में मुस्करा पड़ा।

५

मेहमानों की नज़र बचाकर सकीना ने पति को बगल के कमरे में बुला लिया।

"ऐ, कीशी, चाय से पेट नहीं भरता, अभी शराब पीना शुरू कर देंगे, शाम के खाने के लिए क्या पकाऊं? भेड़ काटोगे या फिर मैं जल्दी से मुर्ग़ी का चिख़िर्तमा तैयार कर लूं?"

"कोई ज़रूरत नहीं है," रुस्तम मुस्कराया। "मक्खन और पनीर ले आओ, दस-एक अण्डे उबाल लो..."

"तुम आज कुछ अजीब-से लग रहे हो, कीशी," सकीना ने झिड़की

दी। "फिर नाक-भौं क्यों सिकोड़ ली? दिन में तो ख़ुशमिज़ाज और प्यारे थे, और अब... मेहरबानी करके, कीशी, ख़ुशी के दिन पर ग़म की छाया मत फैलाओ। माय्या पर भी दया आती है, आख़िर वह हमारे बेटे के उसके प्यार के कारण हमारे घर में आयी है। उसके मन को भी तो चैन मिलना चाहिए..."

"ठीक है, ठीक है," रुस्तम बड़बड़ाया। "मैं ख़ुद भेड़ ज़िबह कर देता हूं, सींक कबाब बना लेना। गराश से कह दो चिख़िर्तमा के लिए मुर्ग़ी काट ले। ऐसी बैठक में एक ही तरह के खाने से काम नहीं चलेगा। हमारे बुज़ुर्ग ठीक ही कहते थे: जब अशरफ़ियां लुटें, तो कोयलों पर क्या छाप लगानी।" वह थोड़ी देर चुप रहा। "हमारे लिए खाना यहां लगाना और तुम लोगों के लिए – वहां।"

"मैं कुछ समझी नहीं।"

"क्या रिवाज नहीं जानती हो? मर्द यहां खायेंगे, औरतें वहां। अब समझीं?"

पत्नी ने केवल सिर हिला दिया। "वाह, वाह!.. ख़ूब सोची!" उसने विरोध करना चाहा, पर इरादा छोड़ दिया: "जब तक पकाऊंगी, तब तक इन्हें ख़ुद को अक़्ल आ जायेगी..."

लेकिन रुस्तम-कीशी को सही रास्ते पर लाना आसान काम नहीं था। सच पूछिये, तो उसे ख़ुद को इस बात की इतनी चिन्ता नहीं थी कि औरतें कहां बैठेंगी, लेकिन लोग क्या कहेंगे? माय्या शहर की है, बाहर से आयी है, सब उसी की मलामत करने लगेंगे। अभी तक रुस्तम बुज़ुर्गों की नज़र में आदर्श गृहस्थ माना जाता था। बेकार शादी की दावत की पुरानी परम्परा क्यों तोड़ी जाये? उसने बुज़ुर्गों की ग़ुस्से के मारे हिलती बनी-संवरी दाढ़ियों की कल्पना की, सीधे सकीना के कान में फुसफुसाती हुई इज़्ज़तदार बूढ़ियों की भी कल्पना की: "नहीं, नहीं, बुज़ुर्गों के रिवाजों का मज़ाक़ उड़ाना ग़लत है!..."

भेड़ को काटकर उसने हाथ धोये और मेहमानों के पास लौट आया। खाने के कमरे में एक दूसरे से सटाकर रखी हुई तीन मेज़ों पर सफ़ेद-झक मेज़पोश बिछाये हुए थे। बेटी, बहू व गिज़ेतार प्लेटें व जाम आदि रख रही थीं।

रुस्तम सीढ़ियों पर भागता हुआ चढ़कर धधकते हुए चूल्हे के पास पहुंचा, जिस पर सकीना खाना पका रही थी।

"तुम्हें मेरी इस उम्र में मुझ से मज़ाक करने की सूझी है? क्या नजफ़ से सीखा है?"

पत्नी शान्त रही।

"तुम, कीशी, ख़ुद ही गिज़ेतार से कहो कि उसे अपने पति के साथ बैठने का अधिकार नहीं है।"

"मुझे गिज़ेतार से कोई मतलब नहीं है, भाड़ में जाये!"

"तुम मेरे बारे में कह रहे हो? मैं तो लोगों के सामने निकलूंगी भी नहीं। पर पेरशान और बहू से तुम ख़ुद बात करो।"

"मैं क्या डरता हूं उनसे?" रुस्तम ने कहा और जूते से ज़मीन पर पड़ी छिपटी को ठोकर मारकर कमरे में लौट आया।

रुस्तम ने खाने के कमरे में बेटी को एक ओर बुलाया और धीरे से बोला, जिससे कि मेहमान न सुन पायें:

"बेटी, एक मेज़ बग़ल के कमरे में लगानी चाहिए। औरतें वहां बैठेंगी, और हम, मर्द, यहीं बैठेंगे। ऐसे जगह ज़्यादा रहेगी..."

"यहां तो बीस मेहमानों के लिए भी जगह काफ़ी रहेगी!" पेरशान ने भोलेपन से कहा। "हमने तो प्लेटें वग़ैरह भी फ़ालतू रख दी हैं—कहीं कोई यूं ही मिलने चला आये।"

"श-श!" रुस्तम ने उसके मुंह के आगे हाथ हिलाये। "धीरे बोलो, चिल्लाओ मत! गराश को बुलाओ।"

पेरशान जहां ख़ुशी के मारे फूली नहीं समा रही थी, वहां बेटा पिता की इच्छा फ़ौरन समझ गया और उसने इतने ज़ोर से दांत भींचे कि उसके गालों की नसें फड़क उठीं।

"यह समझ लो: दावत में औरतों की अपनी जगह होती है और मर्दों की—अपनी," रुस्तम बच्चों को समझाने लगा। "तुम्हारे ख़याल से यह कोई अच्छी बात होगी कि कोई नशे में धुत्त मेहमान इज़्ज़तदार औरत की तरफ़ हाथ बढ़ाये, और यही नहीं, कुंवारी लड़की के साथ जाम टकराये?"

अब जाकर सारी बात पेरशान की समझ में आयी और उसने अपमान से तमतमाया अपना चेहरा हाथों से ढांप लिया जब कि गराश आंखें बराबर करके तनकर खड़ा हो गया, उसे चिल्लाकर कहने की इच्छा हुई: "तुम कौन-से ज़माने में जी रहे हो, अब्बा? लोग तुम्हारी मिसाल देते हैं, तुम अध्यक्ष हो!" लेकिन प्रकट में उसने बिलकुल दूसरी बात कही।

केवल उसके रुक-रुककर सांस लेने और माथे पर छलछला आयी पसीने की बूंदों से ही इस बात का पता चल पा रहा था कि उसके लिए शान्त रह पाना कितना कठिन हो रहा है:

"अब्बा, यहां सब आपके अपने बच्चे हैं..."

"मेरे मन में उनके ख़िलाफ़ कोई बुरी बात नहीं है, पर रिवाज ही ऐसा है। इसे न हमने शुरू किया है और न ही हम इसे तोड़ेंगे। शादी-ब्याह में भी, चेहलुम में भी औरतें अलग कमरे में बैठती हैं। क्या तुमने ख़ुद नहीं देखा है?"

"मेरे देखने से क्या होता है! ऐसे रिवाज हमारी बेड़ियां हैं... क्या अपने हाथों से माय्या को बेड़ियों में जकड़ दूं? फिर लोग क्या कहेंगे?"

"लोगों को इस मामले में कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है," रुस्तम ने जी मनाते हुए कहा। "तुम सच-सच कहो: कौन-से गांव में, कौन-से घर में और कौन-सी दावत में औरतें पराये मर्दों के साथ बैठी हैं? ऐसा कभी नहीं हुआ! रिवाज, बेटा, रिवाज ही होता है। हर क़ौम के अपने रिवाज होते हैं।"

"ख़राब रिवाज है," गराश ने दृढ़तापूर्वक कहा। "दुनिया में मां से ज़्यादा नज़दीक तुम्हारा कौन है? उनके दिल का ज़र्रा-ज़र्रा तुम्हारा है, कोई ख़याल ऐसा नहीं आता, जो तुमसे न जुड़ा हो। मैं तुम्हारी ख़ातिर जान पर खेलने को तैयार हूं, मेरा कर्त्तव्य है—तुम्हें प्यार करना, पर मैं माय्या को भी प्यार करता हूं! मां की तरह निःस्वार्थ भाव से तुम्हें प्यार मैं अब नहीं कर सकता। और अब उसे क्या ख़ुशी की दावत में साथ बैठने की जगह नहीं मिलेगी? तुम अपने इस पवित्र रिवाज से उसका अपमान कर रहे हो!"

"और क्या कहना चाहते हो?" रुस्तम ने क्लान्त स्वर में कहा। "यानी मुझ पर स्त्रियों के समानाधिकार के विरोधी की तरह मुक़दमा चलाया जा सकता है..."

"इस में दोष तुम्हारा नहीं, रिवाजों का है। हालांकि बेशक कुछ तुम्हारा भी है। हमें अपने दोस्तों के बीच मां, पत्नी और पेरशान के न होते हुए उनके साथ दावत खाते शर्म महसूस होगी! यह सोचते हुए शर्म आती है कि वे सिर्फ़ चूल्हे पर खाना ही पका सकती हैं।"

रुस्तम को क्रोध नहीं आया, बल्कि आश्चर्य हुआ कि साधारणतया आसानी से मान जानेवाला विनम्र बेटा अचानक हठी हो गया है और पिता

से सहमत नहीं है। क्या माय्या ने उसे ऐसा प्रभावित किया है? अभी आये एक दिन भी नहीं हुआ, पर पतिदेव को ऐसी उल्टी पट्टी पढ़ा दी। बड़ी फुर्ती दिखाई! लगा जैसे गराश ने रुस्तम को बर्फ़ीले पहाड़ी चश्मे में अपने शब्दों के उफनते, पूर्वविचारित, भावप्रवण प्रवाह में ग़ोता दे दिया हो। जैसे वह पहले से जानता था कि पिता के साथ मुठभेड़ होगी और इसके लिए तैयार था...

"जैसा तुम चाहो, करो," उसने कटुतापूर्वक कहा। "साथ बैठकर दावत उड़ाओ पर मेरा वहां कोई काम नहीं..."

वह सिर झुकाये सोने के कमरे में चला गया और बिना बत्ती जलाये पलंग पर लेट गया।

६

"सुनिये, क्या आपके ख़ानदानी सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति की बैठक अभी समाप्त नहीं हुई?" बरामदे में आ पहुँचे नजफ़ ने पूछा। "सींक-कबाब परोस दिया गया है, माय्या ख़ानम और गिज़ेतार चिख़िर्त्मा ले आयी हैं। अगर देर करेंगे, तो आपके लिए कुछ नहीं बचेगा।"

"पूरी भेड़ और पांच मुर्ग़ों में से कुछ नहीं बचेगा?" पेरशान कृत्रिम भय के साथ कह उठी।

"सीधी-सी बात है! आप मुझे अभी ठीक से नहीं जानते हैं... जल्दी से चलिये!"

रुस्तम शराफ़ोगलू के बारे में व्यर्थ चिन्तित हो रहा था, वह माय्या व गिज़ेतार के पास बैठा बातचीत से उनका मनोरंजन कर रहा था। शराफ़ोगलू जब मूड में आ जाता, तो बहुत रोचक क़िस्से सुनाने लगता।

"तुम ख़ुद ही को कोसो," खाने के कमरे में भागी आयी पेरशान से गिज़ेतार ने कहा, "तुम ने कामरेड शराफ़ोगलू का क़िस्सा न सुनकर बहुत कुछ खो दिया।"

शेरज़ाद किताबों की अलमारी के पास जमा खड़ा न जाने शराफ़ोगलू की बातें सुन रहा था या पढ़ रहा था। पेरशान की आवाज़ सुनकर वह चौंक पड़ा और उसने किताब झट से बंद कर दी।

"वह किस बारे में सुना रहे थे?" पेरशान ने शेरज़ाद को बिलकुल न देखने का दिखावा करते हुए माय्या से पूछा।

"मुग़ान के अतीत के बारे में सुना रहे थे। मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी।"

"अरे, परिवार का मुखिया कहां है?" सकीना के उससे मेज़ के सिरे पर बैठने का अनुरोध करने पर शराफ़ोगलू ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"उनके सिर में तेज़ दर्द हो रहा है।" सकीना झूठ बोलने की आदी नहीं थी, उसका चेहरा किंचित् लाल हो उठा।

"तो फिर डाक्टर को बुलाना चाहिए," शराफ़ोगलू गिलास हटाता हुआ चिन्तित हो उठा।

"आप परेशान न होइये, थोड़ी देर लेट लेंगे, तो सब ठीक हो जायेगा। उन्हें सिर-दर्द अकसर होता रहता है। आधे घंटे में खाने की मेज़ पर आ जायेंगे," पूर्णतया घबड़ा उठी सकीना ने कहा।

"मेरी जेब में एस्पिरिन है, मैं ख़ुद भी सिर-दर्द से परेशान रहता हूं। गुमचोट लगने के बाद से शुरू हुआ," शराफ़ोगलू ने कहा। "मैं समझता हूं, रुस्तम के भी यह युद्ध के दिनों में शुरू हुआ है। आप लोग शुरू कीजिये," उसने युवाओं से कहा, "मैं जाकर दोस्त को देखता हूं..."

शराफ़ोगलू रुस्तम के कमरे में गया। वहां अंधेरा था, और रुस्तम ने किवाड़ की चरमराहट सुनी, तो सोचा कि पत्नी उसे चैन से नहीं रहने दे रही है और खीजभरी कराह के साथ सिर पर रज़ाई ओढ़ ली।

"तुम्हें क्या हुआ, दोस्त?"

उसे रज़ाई हटाकर अधबैठा होना पड़ा।

"बैठो, कामरेड शराफ़।"

"बैठ तो मैं जाऊंगा, पर तुम बताओ कि क्या तुम्हारी तबीयत ख़राब हो गयी है? तापमान देखना चाहिए, शायद ठण्ड लग गयी है..."

रुस्तम के विरोध के बावजूद उसका तापमान लिया गया, नब्ज़ भी देखी गयी और एस्पिरिन की गोली लेने को भी मजबूर किया गया।

"कैसा मज़ाक़ है!" रुस्तम मन-ही-मन खीजता रहा, पर मित्र का कहना हर बात में मानता रहा।

और शराफ़ोगलू – वह कहीं भांप तो नहीं गया? – मुस्कराता हुआ बोला:

"तुम्हारा दिल तो अठारह साल के लड़के जैसा है। और तापमान भी बिलकुल सामान्य है।"

"सामान्य है, तो सामान्य ही सही," रुस्तम ने दीवार की ओर मुंह फेरकर क्लान्त स्वर में कहा।

"जब बुख़ार नहीं है," शराफ़ोगलू ने उत्साहपूर्ण स्वर में बोलना जारी रखा, "तो फिर कपड़े पहनो और मेज़ पर आकर नवविवाहितों की ख़ुशक़िस्मती का जाम पियो। आधा घंटे में हम तुम्हें छोड़ देंगे।"

"कैसा पीछे पड़ गया है! यह अच्छा हुआ कि बीवी को सारा दोष सिर-दर्द को देने की सूझ आयी," रुस्तम शराफ़ोगलू के पीछे-पीछे खाने के कमरे में जाता हुआ सोच रहा था।

यह निश्चित था कि युवा उनका इन्तजार नहीं करते रहे थे, सेहत के कई जाम पिये जा चुके थे। नजफ़ बराबर मजाक़ पर मज़ाक़ किये जा रहा था और उसने पेरशान की चहक को भी दबा दिया था, शेरज़ाद पूरी तरह अपने में खोया मेज़ से सटकर रुस्तम जैसा उतरा चेहरा लिये बैठा था।

वे कुछ मिनट तक जगह बदलते रहे: गृहस्वामी से सबसे सम्मानित स्थान पर बैठने का आग्रह किया गया, पर रुस्तम ने अस्वीकार कर दिया— मेज़ सिरे पर नवविवाहितों को ही बैठना चाहिए, आज उन्हीं को यश मिल रहा है, उन्हीं का सम्मान किया जा रहा है... और वह सकीना के पास बैठ गया। "देखते हैं, तुम्हारी दावत का क्या अंजाम होता है!" वह मन-ही-मन में द्वेषभाव से ख़ुश हो रहा था और ज़ोर-ज़ोर से अपनी कनपटियां मल रहा था, जिससे कि कम-से-कम किसी तरह अपने अनुपस्थित रहने का औचित्य सिद्ध कर सके।

नवविवाहितों के लिए जाम शराफ़ोगलू ने उठाया, उसने उनके अत्यन्त सुखमय जीवन व समृद्धि की कामना की। जाम मधुर स्वर में झनझनाये। सकीना ने बहू व बेटे के साथ जाम टकराया, लेकिन उसने पिया नहीं, केवल मुंह जुठार लिया।

"चाची! ..." नजफ़ ने चिरौरी करते हुए उससे कहा, लेकिन शराफ़ोगलू ने उसे सख़्ती से रोक दिया:

"मेहरबानी करके उन्हें मजबूर न करो।"

"कितनी अनमोल बात कही!" शेरज़ाद ने उसके साथ सहमति व्यक्त की और सब अचानक बोल उठे चुप्पे की तरफ़ देखने लगे। "मेज़ पर शराब आदमी को गिराने के लिए नहीं, बल्कि उसका चित्त प्रसन्न करने के लिए रखी जाती है।"

"लफ़्फ़ाज़ी की ज़रूरत नहीं है!" नजफ़ चिढ़ उठा। "नहीं पीना चाहते हो, तो मत पियो, मगर हमारा मज़ा मत ख़राब करो। बेहतर

होता कि साज़ उठाते और गाकर नवविवाहितों का दिल ख़ुश कर देते। रुस्तम-कीशी के पास बहुत बढ़िया साज़ है।"

"अभी लायी," पेरशान ने कहा और लपककर बरामदे में गयी।

कुछ मिनट में वह लौट आयी और अतलस के खोल में बंद साज़ शेरज़ाद की ओर बढ़ाते हुए आदेशपूर्ण स्वर में बोली:

"बैत गा-गाकर रोज़ाना शाम को लोगों की नीन्द ख़राब करने से तो बेहतर होगा कि अपना हुनर यहां दिखाओ। माहिर लोग यहां इकट्ठा हुए हैं, तारीफ़ करेंगे।"

शेरज़ाद ने उसके लहजे का बुरा नहीं माना,—वह जानता था कि यह नख़रा है,—और साज़ के सुर मिलाने लगा।

"एक ग़ज़ल सुनाओ!" पेरशान ने फ़रमाइश की।

रुस्तम ने शराब नाम मात्र को ही होंठों से छुआई। उसका पाइप सोने के कमरे में रह गया था,—उसे लाने जाना चाहता था, पर आलस कर गया... उसे पेरशान की चरब-ज़बानी पर गुस्सा आ रहा था, वह उसे बदतमीज़ लग रही थी, लेकिन वह बेटी को रोकने की हिम्मत नहीं कर पाया। गराश के साथ हुई बहस के बाद उसे उनसे कोई आशा नहीं रही थी।

उधर शेरज़ाद ने खड़े होकर तारों पर हाथ फेरा और कमरे में शान्ति छा गयी।

वह गीत जनता के अमर मनोबल, उसकी दृढ़ इच्छा-शक्ति और सतत परिवर्त्तनशील जीवन के प्रति प्रेम के बारे में था। कभी उदास, तो कभी प्रफुल्ल गीत वीर-कर्मों के लिए आह्वान कर रहा था, अपनी उस एकमात्र प्रियतमा की ओर, जिससे अधिक प्रिय व निकट संसार में और कोई नहीं होता...

माय्या का बचपन मास्को में बीता था, वह शहर के स्कूल में पढ़ी थी, उसके बाद संस्थान में और उसने साज़ विरले ही सुना था। मात्र आंखें मूंदते ही उसे प्रतीत होने लगा, जैसे कोई सुरीला आरकेस्ट्रा बज रहा हो,—कभी उसमें ट्रम्पेट का गर्जन, तो कभी वायोलिन की रुद्ध कंठ से निकलती-सी मधुर आवाज सुनाई देती। यह विश्वास कर पाना कठिन था कि स्वरों का ऐसा बाहुल्य केवल एक वाद्य में उत्पन्न हो सकता है... और माय्या ने केवल अब शेरज़ाद को अच्छी तरह देखा, जो पूरी शाम छाया में छिपा-सा रहा था।

तो ऐसा है शेरज़ाद! सुन्दर, ख़ुश-लिबास, गठीला। ततैये-सी पतली

कमर पर कसी बेल्ट, ऊंचे बूट, बिरजिस व फ़ौजी क़मीज़ में वह चुस्त नौजवान लग रहा था। उसकी मुखमुद्रा गम्भीर हो उठी और आंखों से चिनगारियां छूटने लगीं।

तारों की झन्कार उत्तरोत्तर मन्द होती गयी। शेरज़ाद गा उठा :

> प्यार की आग बुझाये नहीं बुझती, लोगो!
> मुझको घायल किया, हालत यह बना दी, लोगो!
> प्यार का राज़ छिपाया जो तो मेरे दिल के
> टुकड़े-टुकड़े हुए तलवार बिना ही, लोगो!

रुस्तम ने अपने जीवन में बहुत से शायरी के कलाम सुने थे, उसे आश्चर्यचकित करना कठिन था, पर गीत उसके दिल को भी छू गया—आख़िर वह शेरज़ाद को क़रीब-क़रीब बचपन से ही जानता था, शेरज़ाद चौदह साल की उम्र से ही संगीत और शायरी में दिलचस्पी लेने लगा था, उसने कहीं से एक साज़ ले लिया और शायर अलेस्केर की ग़ज़लें ज़बानी याद कर लीं। कुछ ही समय में गांव में उसका नाम भी "शायर शेरज़ाद" रख दिया गया।

मां के अनुसार शायरी के प्रति उसे प्रेम अपने पिता क़सूम केन्गेरली से विरासत में मिला। मुग़ान में बैत सुनाने में कोई क़सूम का मुक़ाबला नहीं कर सकता था।

अध्यापकों का विचार था कि स्कूल पास करके शेरज़ाद बाकू के संगीत-महाविद्यालय में प्रवेश ले लेगा और संगीतज्ञ बन जायेगा। वह स्वयं भी इसी के सपने देखता था। लेकिन जीवन ने उस पर दया नहीं की: उसका बड़ा भाई मर गया और दसवीं कक्षा के छात्र शेरज़ाद को अपनी बूढ़ी मां व नन्ही बहन की संभाल करने को मजबूर होना पड़ा। किशोर सामूहिक फ़ार्म में काम करने लगा, पर उसने स्कूल भी विशिष्ट योग्यता के साथ पास किया। अब वह एक अच्छा टोली-नायक था, जिसे वृद्धों व युवाओं का भी सम्मान प्राप्त था।

रुस्तम को उस समय अपना सफ़ेद सिर झुकाये और शेरज़ाद का गायन सुनते हुए यह सब बरबस याद हो आया। पर जब उसके पीछे से पेरशान ने आकर कुरसी की पीठ पर कोहनियां टिका दीं, तो उसने आंखें तरेरकर उससे कहा :

"मुंह तो बंद कर लो, बेटी..."

पेरशान का मुंह वास्तव में अधखुला था। वह चैन से बैठ ही नहीं पा रही थी—कभी मां से चिमट जाती, कभी पिता के पास आ जाती, पर किसी तरह गीत से दूर नहीं भाग पाती। शेरज़ाद उसी की ख़ातिर गा और बजा रहा था, अपनी प्रियतमा के लिए; पेरशान को भी यह मालूम था, पर किसी प्रकार की निश्चेष्टता उसे गायक का धन्यवाद करने से, कम-से-कम दृष्टिपात से ही, रोके हुए थी।

"शाबाश, शेरज़ाद, शाबाश! बहुत अच्छे! लाजवाब!" उसके चुप होने पर मेहमानों व मेज़बानों ने दाद दी।

"बुलबुल का-सा गला पाया है! कितना अच्छा गाया है!" शराफ़ोग्लू ने कहा और जाम भरकर गायक के सौभाग्य की कामना की।

पेरशान ने अपना लाल हुआ चेहरा पिता के घने बालों में छिपा लिया, मानो बिल्लौरी जाम उसी के सम्मान में टकराये गये हों।

७

मेहमान उठ खड़े हुए, जाने का समय हो गया था, काफ़ी रात हो चुकी थी। अचानक अहाते में रखवाला कुत्ता दो बार भोंका।

गराश ने बाहर जाकर देखना चाहा, पर पिता ने रोक दिया :

"यह सलमान है। मेरा अलसेशियन उसका इसी तरह स्वागत करता है।"

एक मिनट बाद मूंछों व काली भौंहोंवाला व्यक्ति सावधानी से किवाड़ थोड़ा खोलकर तिरछा होकर कमरे में दाख़िल हुआ। माय्या को तो लगा जैसे वह चलकर नहीं, रेंगकर अंदर आया हो...

"आओ, आओ, सलमान, तुम वहां रुक क्यों गये?" रुस्तम ने शिष्टतापूर्वक कहा।

"आया, कामरेड अध्यक्ष," उसने अपने लहजे व मुस्कान से यह प्रकट करते हुए जवाब दिया कि गृहस्वामी और उसमें अंतरंग सम्बन्ध हैं।

सलमान हाथ में रेशमी फ़ीतों से बंधे लाल डिब्बे लिये हुए था। वह रुस्तम से देर तक हाथ मिलाते हुए चिकने-चुपड़े ढंग से मुस्कराता रहा और गृहस्वामिनी के आगे सिर झुकाता रहा। "मुबारक हो, सकीना ख़ाला!"

फिर उनके पीछे-पीछे शान से चलता हुआ कमरा पार करके माय्या व गराश के पास पहुंचा।

"हमारी मुग़ान और आदरणीय रुस्तम-कीशी के घर में आपका स्वागत है... आपका जीवन भी आपके चेहरे जैसा उज्ज्वल हो। मुग़ान के रास्तों में आपके सुन्दर पैरों को कोई कष्ट न हो," सलमान ने प्रवाहमय स्वर में कहा।

सलमान की सख़्त व खड़ी युयुत्सु मूंछों तथा चिकनी, बटन जैसी गोल व उभरी हुई आंखों के कारण माय्या उस वाचाल बधाई देनेवाले का चेहरा ठीक से नहीं देख पायी। जब कि वह, इसके विपरीत, माय्या को बड़ी दिलचस्पी के साथ देख रहा था, जैसे उसके सुडौल शरीर, घुंघराली अलकों व रेशमी रूमाल से अधढके उन्नत उरोजों का मूल्यांकन कर रहा हो।

"बहुत मुश्किल है, आपके लायक़ उपहार ढूंढ़ पाना, बहुत ही मुश्किल है। आपके सामने तो हीरा भी डाह के मारे धुंधला पड़ जाये। फिर भी मैंने धृष्टता कर ही ली। इस मामूली-से उपहार का बुरा न मानिये," सलमान ने डिब्बे उसकी ओर बढ़ाते हुए अपनी बात पूरी की।

माय्या किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी: नये मेहमान से उपहार लेना उसके लिए उचित होगा या नहीं।

सलमान तुरंत चेत गया, उसने डिब्बे माय्या व गराश के बीच मेज़ पर रख दिये, जैसे दिखाना चाह रहा हो कि बिना पति की सहमति के वह किसी प्रकार के उपहार देने का साहस नहीं कर सकता।

"यह गांव है, सकीना ख़ाला, गांव..." उसने गृहस्वामिनी से क्षमा-याचना की। "यहां कोई अच्छी चीज़ नहीं मिलती।"

"तुम बेकार परेशान हुए," सकीना की भौंहें सिकुड़ गयीं। "इसकी भी कोई ज़रूरत नहीं थी।"

"उपहार ही तो सब कुछ नहीं होते, सकीना ख़ाला, बात तो इज़्ज़त करने की है!" सलमान हाथ सीने पर रखकर कह उठा। "यह शुद्ध हृदय से है... सुखी जोड़ी से बढ़कर अच्छा कुछ नहीं होता... लोग ठीक ही कहते हैं: मियां-बीवी के दिल मिल जायें, तो घर की छिपटी भी सोने की हो जायें।"

"बस फ़लसफ़ा मत झाड़ो," नजफ़ ने कानों में उंगलियां दे लीं, "बैठो और शराब पियो!"

"खोलो, जल्दी से खोलो," उत्कट कुतूहल से ग्रस्त गिजेतार ने कहा।

"अरी ख़ातून! यह आख़िर तुम्हारे लिए नहीं, माय्या के लिए है," नजफ़ ने ठण्डी सांस ली, पर उसके बावजूद फ़ीते खोल दिये।

एक डिब्बे में 'क्रासनया मस्क्वा' इत्र की शीशी थी और दूसरे में – चाकलेट।

"तुम ये सब कबाड़ कहां से लाते हो, सलमान?"

सलमान ने मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा:

"मेहरबानी करके सही शब्दों का इस्तेमाल कीजिये: मैं कबाड़कर नहीं लाता हूं, बल्कि सरकारी दुकान से ख़रीदकर लाता हूं। बहुत पहले ख़रीद रखा था। मेरे दिल ने भविष्यवाणी कर दी थी: गराश की शादी सिर पर आ गयी है। देख ही रहे हैं, मैंने संभालकर रख लिया..."

उसने माय्या पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली।

माय्या ने नज़रें झुकाकर धन्यवाद दिया।

"यह सब बेकार की बातें हैं," सकीना ने दोबारा असन्तोष प्रकट किया।

सलमान छब्बीस वर्ष का था, पर वह इतनी-सी उम्र में घाट-घाट का पानी पी चुका था। वह बाकू में रह चुका था, मास्को में भी, कृषि-स्कूल में पढ़ा था, इसके बाद उसने दंतटेकनीशियन बनने का निश्चय किया, पर उस व्यवसाय के प्रति उसका उत्साह अचानक ठण्डा पड़ गया, दो वर्ष तक वह नाट्य-कला स्कूल में पढ़ता रहा, पर उसे भी यह सोचकर छोड़ आया कि कलाकारों को वेतन अधिक नहीं मिलता है। बाकू में सलमान ने किसी कार्यालय में इनचार्ज के पद पर कार्य करके उस क्षेत्र में विशेष कार्य-कुशलता दिखाई, लेकिन इस बात से निराश होकर कि उसने कोई अच्छा विशेष प्रशिक्षण नहीं पाया, अन्त में उसने लेखा-कर्म का प्रशिक्षण लिया और लेखापाल का डिप्लोमा लेकर मुग़ान लौट आया। चापलूसी और अपने धृष्ट स्वभाव के कारण वह रुस्तम को भा गया और सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय में काम पर लग गया – आरम्भ में लेखालिपिक के और बाद में – लेखापाल के। सलमान मोटर चलाने में माहिर था, तार* व पियानो मामूली बजा लेता था, स्वादिष्ट सींक-कबाब पका लेता था और आटे में लपेटकर ट्राउट मछली सेंकने में दक्ष था। उसे स्त्रियों को ख़ुश रखना आता था और अपने को वह नारी-सौन्दर्य का पारखी मानता था। माय्या को ताकते और उसकी

---

* तार – चार तारोंवाला एक आज़रबैजानी वाद्य।

ताक़तवर किन्तु अनगढ़ गराश से तुलना करते हुए वह सोच रहा था: "ख़ूबसूरत है! लोग सच ही कहते हैं: अंधे के हाथ बटेर लगी है।"

अतिथियों व मेज़बानों को अपने उपहारों से प्रभावित कर लेने से सन्तुष्ट होकर सलमान लपककर बरामदे में पहुंचा और आवाज़ दी:

"यारमामेद!"

"मैं यहां हूं, यहां!"

"तुम इन्तज़ार किसका कर रहे हो? क्या छपे हुए निमंत्रण-पत्र का? तोहफ़ा लाओ।"

सब हैरान रह गये। यह क्या? और भी तोहफ़ा है? कैसा उपकारी आदमी है!

"वैसे तुम कभी चूकते नहीं हो," नजफ़ ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।

"मैं क्यों?" सलमान ने विरोध किया। "सूझ तो यारमामेद की है, मैं क्यों जवाब दूं?"

यारमामेद मज़ाक़िया लग रहा था – खड़े हुए बिखरे बाल, पसीने में तर... ठसाठस भरी ख़ुरजी से कंधा झुका जा रहा था, पतली गरदन आगे को निकली हुई थी, मानो खीरे की बेल से बनाया चाबुक हो, खीरे जैसा, आयताकार सिर इधर-उधर हिल रहा था।

"बात क्या है, यारमामेद?" रुस्तम ने सख़्ती से पूछा। अब वह अपने को सत्कारशील गृहस्वामी नहीं, सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष महसूस कर रहा था। "तुम्हारी ख़ुरजी में क्या भरा है?"

"आदरणीय कामरेड अध्यक्ष, यह भेड़ है," यारमामेद अपनी फीकी आंखें मिचमिचाता हुआ हकला गया। "मेरी अपनी भेड़ है। मैंने आपके प्यारे बेटे, आपके गराश की शादी की ख़ुशी में काटी है!"

"चमत्कार हो गया, सचमुच चमत्कार!" नजफ़ कह उठा। "हमें अभी तक यह भी नहीं मालूम था कि इसके घर का दरवाज़ा किस तरफ़ खुलता है, न इसके खाने का स्वाद चखा था, न चाय का रंग देखा था... वाह, भई, यारमामेद, बड़े उदार निकले!"

"कितनी ख़राब बात है!" सकीना क्रुद्ध हो उठी। "इसकी किसी को ज़रूरत नहीं है। सींक-कबाब भी है और चिख़िर्त्मा भी। वापस ले जाओ, यारमामेद, फ़ौरन, इसी वक़्त।"

शराफ़ोगलू ड्योढ़ी में सीने पर आड़े हाथ रखे उदासी से मुस्करा रहा था।

"आदरणीय अध्यक्ष, इतनी ख़ुशी के मौक़े पर तोहफ़े लौटाने नहीं चाहिएं।" यारमामेद ने रुस्तम पर याचनापूर्ण दृष्टि डाली। "मैं ऐसी बेइज़्ज़ती नहीं सह सकूंगा।"

सकीना ने सलमान की ओर मुड़कर कटु स्वर में आदेश दिया:

"फ़ौरन ले जाओ भेड़!"

कुछ न समझ पा रही माय्या को यारमामेद पर दया आ गयी, जिसका सब मज़ाक़ उड़ा रहे थे, और वह मन-ही-मन सास की हठधर्मिता को बुरा कहने लगी।

"मैंने क्या कहा, सलमान?" क्रुद्ध गृहस्वामिनी शान्त नहीं हुई।

"अरी, सकीना ख़ाला," चापलूसी-भरी मुस्कान के साथ सलमान ने जवाब दिया, "इसमें कोई बुरी बात नहीं है। पुराना दस्तूर है: शादी में और चेहलुम में एक पड़ोसी दूसरे के यहां ख़ाली हाथ नहीं जाता है।"

"फिर ये पुराने रीति-रिवाज," खिन्न गराश ने सोचा।

"आप से ज़्यादा ज़िन्दगी किसने देखी है, सकीना ख़ाला," सलमान ने उत्साह में आगे कहा। "आपको कहीं यह तो शक नहीं हो रहा है कि यारमामेद ने सामूहिक फ़ार्म के भेड़ों के बाड़े पर हाथ मारा है? हरगिज़ नहीं! 'अपनी चीज़ देने में किस बात की शर्म?' लोग यही कहते हैं। जो है, सो ख़ुशी से देते हैं..."

"मीठी बातें सुनने में भी अच्छी लगती हैं," सकीना ने उसे टोक दिया। "लेकिन कुछ भी हो, अपनी भेड़ वापस ले जाओ।"

यारमामेद ने झुककर इतने कातर ढंग से आंखें झपकायीं कि लगा जैसे वह रो ही पड़ेगा।

"ठहरो, बीवी," रुस्तम ने कहा। "मेहमान तोहफ़ा लेकर आया है, शुक्रिया। चलो, यारमामेद की भेड़ के भी सींक-कबाब बना लेते हैं।"

लेकिन पति के पीछे-पीछे बरामदे में निकलकर सकीना ने दृढ़तापूर्वक कहा:

"मैं इस गोश्त को छूऊंगी भी नहीं..."

रुस्तम हैरानी में पीछे सरक गया।

"ख़ुदा ही जाने, इस घर में क्या हो रहा है! नेक गृहस्थ अपने दरवाज़े से आवारा कुत्ते को भी दुतकारकर नहीं भगा सकता। चुप रहो, कम-से-कम आज तो चुप रहो, कल मैं उसे एक के बदले में दो भेड़ें दे आऊंगा।"

"मुझे नफ़रत है तुम्हारे चापलूसों से! यारमामेद से भी और सलमान से भी..."

"बस करो!" रुस्तम ने ऊंची आवाज़ में कहा। "मैं, तुम देख ही रही हो, शान्त हो गया हूं। दिन ही ऐसा है। किसी मेहमान के मुंह पर भड़ाक से दरवाज़ा बंद करना राही को लूटने से भी बुरा होता है। तुम्हारा दो-तीन सींक-कबाब पकाने में क्या जाता है? इतनी देर ज़बान चलाने के बजाय कभी का पका सकती थीं..."

"मैंने कह दिया कि नहीं पकाऊंगी, यानी नहीं पकाऊंगी," सकीना ने तपाक से जवाब दिया। "ख़ुद एप्रन बांधो और खटर-पटर करो..."

रुस्तम किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया, शायद जीवन में पहली बार।

लालटेन मेज़ के बीचोंबीच रखी थी, पर लम्बे-चौड़े कमरे के कोनों में अंधेरा था, किसी ने लौटकर आयी सकीना को नहीं देखा। वह, इस इच्छा से कि अतिथियों को उसकी परेशानियों का पता न चले, ज़बरदस्ती मुस्करा रही थी।

फिर दावत उड़ायी जाने लगी।

सलमान जाम बोलने के लिए सारे इलाक़े में मशहूर था। वह बढ़िया सिले कोट के पल्ले खोल, टाई उतार और क़मीज़ का कॉलर खोलकर सबसे सम्मानित स्थान पर जा बैठा और हाथ नचा-नचाकर गराश की तारीफ़ के पुल बांधने लगा।

सकीना अपने बेटे को कितना ही प्यार क्यों न करती थी, फिर भी वह ऐसी प्रशंसा से ख़ुश नहीं हुई।

माय्या कुतूहलवश सलमान पर नज़र डाले बिना न रह सकी। मेहमान ने सलीके से बालों में कंघी की हुई थी, उससे महंगे इत्र की ख़ुशबू आ रही थी और गालों पर दाढ़ी बनाने के बाद पाउडर लगा हुआ था। आख़िर वह कौन है? अध्यापक? डाक्टर? ज़िला मुख्यालय का कोई अधिकारी?

जब गराश ने उसे कान में फुसफुसाकर बताया कि सलमान सामूहिक फ़ार्म का लेखापाल है तो माय्या चकित रह गयी: कोई सोच भी नहीं सकता, देखने में तो पूरा शहरी लगता है।

सामूहिक फ़ार्म में लेखापाल का नाम "यास्ती सलमान"–"सपाट सलमान" पड़ा हुआ था। लोगों की नज़र बड़ी पैनी होती है और वे किसी का नाम यूं ही नहीं रखते हैं। जब सलमान बोलने के लिए मुंह खोलता, दुनिया की हर चीज़ सपाट, निरानन्द और हद से ज़्यादा उबाऊ हो उठती।

उसका सब से मनपसंद काम था पति व पत्नी, पिता और पुत्र के झगड़ों में हस्तक्षेप करना, वह बड़ी चतुराई से प्रेमियों में सुलह करवा देता था, उन लोगों को तसल्ली दिला देता था, जिन पर अध्यक्ष नाराज़ हो जाता था। सलमान का नाक-नक़्श भी कुछ सपाट-सा था, जैसे उसे किसी भारी प्रेस में दबाकर निकाला गया हो: चिल्ले जैसा चौड़ा, हमवार चेहरा, चपटी नाक और पतले-पतले होंठ।

माय्या को यह अच्छा लगा कि गराश पर सलमान के शब्दाडम्बर का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। उसकी मुखमुद्रा निर्लिप्त रही, पर अगर उसके स्थान पर कोई और होता, तो कम-से-कम एक बार खीसें ज़रूर निपोड़ देता।

अन्त में सलमान का गला बैठ गया और वह थका-हारा-सा धीरे से कुरसी पर बैठ गया।

शराफ़ोगलू ने बोलना शुरू किया। माय्या को यह अच्छा लगा कि वह, बिना गृहस्वामी के साथ अपनी मित्रता को रेखांकित किये और किसी भी प्रकार यह ज़ाहिर किये बिना कि वह गराश का उच्चाधिकारी है, पृष्ठभूमि में ही रहना चाहता है।

"मैं दुनिया की सारी भाषाओं और बोलियों के सारे शब्दों में एक शब्द को सबसे ज़्यादा क़ीमती समझता हूं–दोस्ती को! वह आदमी भाग्यवान है, जिसका कोई अच्छा दोस्त होता है। और इस धरती पर सबसे ज़्यादा अभागा कौन होता है? वह, जिससे दोस्त ने मुंह फेर लिया हो, जिसे दोस्त ने ठुकरा दिया हो। मैं यह सुनते ही कि मेरे दोस्त के बेटे ने शादी की है, वहां बैठा न रहा सका, फ़ौरन यहां भागा आया। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि मेरी और रुस्तम की दोस्ती की नींव पक्की है, वह मोर्चे की कसौटी पर खरी उतरी है। अफ़सोस, मेरे टोस्ट को घर का मुखिया नहीं सुन रहा है, शायद उसकी तबीयत फिर ख़राब हो गयी है... और तुम से, मेरे नौजवान दोस्तो, माय्या और गराश, मुझे यही कहना है: मिल-जुलकर रहो। पति और पत्नी होना ज़्यादा मुश्किल नहीं होता, पर अच्छे और बुरे दिनों में सच्चे दोस्त बने रह पाना हर किसी के लिए सम्भव नहीं होता। इस उजले घर में अपनी दोस्ती क़ायम रखो। सदा सुखी रहो!"

उसी क्षण रुस्तम खाने के कमरे में सींक-कबाब लिये आया। उसने हैरतभरी नज़रों की ओर ध्यान दिये बिना उदास व अप्रसन्न मुखमुद्रा में उन्हें यारमामेद की ओर बढ़ाया और कहा:

"परोस दो!"

यारमामेद ने लड़खड़ाते हुए मेज़ का चक्कर काटा और एक सींक से सारे कबाब उतारकर शराफ़ोगलू की प्लेट में रख दिये, फिर गृहस्वामी की प्लेट भर दी, उसके अलावा गोश्त के सालन में भीगी गरम-गरम चुरेक* भी रख दी और फुसफुसाया:

"आदरणीय अध्यक्ष को ऐसी रोटी पसंद है।"

"चुप रहो!" रुस्तम ने दांत पीसते हुए कहा। "बेसिर-पैर की बातें मत करो!" उसने अपना ताक़तवर हाथ यारमामेद के कंधे पर दबाकर उसे स्टूल पर बिठा दिया।

सब पर सुरूर चढ़ चुका था, खाने के साथ-साथ हंसी-मज़ाक़ जारी था, एक मिनट बाद सब यह भूल भी गये कि सींक-कबाब मेज़ पर स्वयं रुस्तम-कीशी लेकर आया था।

सलमान पियानो के पास जा बैठा और उदास मुखमुद्रा में बजाने लगा। वह बजा बेधड़क और बड़ी तेज़ी से रहा था, जब उसकी उंगलियां ग़लत की पर पड़तीं, तो वह मन्द स्वर में गाने लगता, जिससे अपनी ग़लतियों को किसी न किसी तरह ढककर लोगों को प्रभावित कर सके। रास्त** सब को पसंद आया। इसके बाद सलमान ने एक लोकप्रिय गीत "अपने कॉलर का बटन बंद करो" पियानो पर बजाकर सुनाया।

माय्या भावविभोर हो उठी। वह यह गीत बचपन से ही मां से सुनती रही थी। बालिका को बिस्तर पर लिटाते हुए मां वह गीत गाती थी, और माय्या निश्चिन्त सो जाती थी। तब से संस्थान में और कंसर्टों में यह सीधा-सादा गीत सुनकर माय्या को मां की याद आ जाती थी और उसकी आंखें डबडबा आती थीं। उसने नज़रें बचाकर आंसू पोंछे और मुड़कर देखा, –सब पियानो के पास खड़े थे, और जब सलमान ने बजाना बंद किया, सबने संगीतज्ञ की तालियां बजाकर सराहना की।

अकेला रुस्तम मुंह पर हाथ रखे जंभाइयाँ ले रहा था और हड्डियां चचोड़ता हुआ ग्रास चबा रहा था। यारमामेद भी छककर खा रहा था, उसने चुपचाप शराफ़ोगलू की प्लेट की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उससे सींक-कबाब के कतले उठा लिये।

---

*चुरेक–काकेशियाई लोगों की रोटी।

** रास्त–पूर्वी धुन।

दरवाज़े के पास शेरज़ाद नाक-भौं सिकोड़कर बैठा था–उस मण्डली में केवल अकेला वही समझता था कि सलमान पियानो कितना ख़राब बजाता है।

माय्या की यह आशा व्यर्थ रही कि उसके आंसू किसी ने नहीं देखे होंगे। सलमान की नज़र बड़ी पैनी थी। वह पियानो के पास से हटकर, मानो यूं ही, माय्या के पास बैठ गया और झुककर फुसफुसाया:

"केवल भावुक हृदय ही संगीत के सौन्दर्य को समझ सकता है। जानना चाहता हूं कि आप रो क्यों रही थीं?"

"कारण कोई कम हो सकते हैं..." माय्या ने टालते हुए जवाब दिया।

"मुझे गराश से ईर्ष्या होती है," सलमान ने ठण्डी सांस ली और उदास मुखमुद्रा बनाये ख़ुशियां मना रहे मेहमानों में जा मिला।

सलमान अब तक युवतियों की चाल-ढाल की तुलना कर चुका था। माय्या का व्यवहार संयत व शिष्ट था, जब कि पेरशान के आचरण में दिखावे की छाया भी नहीं थी: उसकी चेष्टाएं झटकेदार व तेज़ थीं, उसे मुस्कराना तक भी नहीं आता था, वह तो सीधे ठहाके लगाने लगती थी। "अगर इस अनगढ़ हीरे को तराशा जाये, तो इसकी ख़ूबसूरती के सामने माय्या फीकी और हमारी सारी लड़कियां भी फीकी पड़ जायें," उसने यह सोचा और पेरशान की तरफ़ बढ़ गया।

"नाचना चाहिए। भाई की शादी में बहन ज़रूर नाचती है, ऐसा रिवाज है।"

"बहन भी, मां भी और बाप भी!" नजफ़ ने हां में हां मिलायी।

"सब एक साथ 'यल्ली' नाचते हैं!" अचानक शेरज़ाद ने सुझाव दिया।

पेरशान, जो सारे समय शेरज़ाद की चुटकियां लेती थी, एकाएक विनम्र हो उठी।

"यह नौजवान बोलता कम है, पर बात पते की कहता है।"

सलमान को पियानो पर बिठा दिया गया, हालांकि वह नाचने का हठ कर रहा था। और तेज़ नाच शुरू हो गया।

संगीत के सुर गूंजने शुरू होते ही रुस्तम मेज़ से उठकर, सावधानीपूर्वक, जिससे कि नाच रहे लोगों को परेशानी न हो, बरामदे में चला गया। कैसा ज़माना आ गया! वह अपने विचारों जैसा कड़वा तम्बाकू का धुआं सांस के साथ खींचता अंधेरे व ठण्डे बरामदे में चहलक़दमी करने लगा।

पाँचवाँ परिच्छेद

१

सपाट छतवाला, नीचा और कच्चा मकान शायद ही किसी राह चलते को नज़र आ सकता था। दिन में उसमें और उसके इर्द-गिर्द के शेडों में अन्तर करना कठिन होता था, और शाम ढलते-ढलते उसकी बाह्य रेखाएं मुग़ान की गहरी पीली मिट्टी के साथ मिलकर एक हो जाती थीं। यह सामूहिक फ़ार्म का क्लब था। मकान के दरवाज़े पर हाल ही में गहरा नीला रंग किया गया था। क्लब के सामने सलमान, शेरज़ाद व नजफ़ कुछ दूरी पर सामूहिक किसानों से बातचीत कर रहे अध्यक्ष का इन्तज़ार कर रहे थे। रुस्तम बांकी अदा के साथ काराकुल की खाल की टोपी गुद्दी पर खिसकाये, ऊंचे चमकाये बूटों में उड़सी फ़ौजी काट की नीली पतलून में पैर चौड़े किये खड़ा ऊंचे क़द व चौड़े कंधोंवाले बांके नौजवान-सा लग रहा था। वह अपने गांववालों के साथ, खेती-बारी के बारे में आदेश देता शान्ति-पूर्वक बात कर रहा था, लेकिन कोई अपरिचित उसे देखता, तो लगता जैसे वह किसी से बस झगड़ ही पड़नेवाला है।

"अध्यक्ष से बात करने का यही सबसे अच्छा समय है," सलमान ने कहा और शेरज़ाद की बग़ल में टहोका मारा।

शेरज़ाद खीजकर एक ओर हट गया।

"तुम टहोके मारने की यह आदत कब छोड़ोगे? तुम न जाने कहां-कहां पढ़े हो, देखने में पी-एच० डी० लगते हो, पर बातचीत शुरू करते ही मुक्के मारने लगते हो।"

"मैं हूं ही ऐसा तेज़मिज़ाज," सलमान ही-ही करने लगा।

"आदत पड़ गयी है," नजफ़ ने स्पष्ट किया। "या तो टहोका मारता है, या हर शब्द के बाद कहता है: 'मिलाओ हाथ!'"

"और तुम ऐसी आदतें होते हुए उपाध्यक्ष बनना चाहते हो?" शेरज़ाद ने बिना किसी लाग-लपेट के पूछा।

सलमान में अपमानकारी शब्दों का हंसी-मज़ाक़ में जवाब देने की अद्भुत

क्षमता थी। उसे ठेस किसी भी तरह नहीं पहुंचायी जा सकती थी। और इस समय भी वह हंस पड़ा।

"मैं पागल नहीं हूं, मेरा पेशा वैसे ही काफ़ी गम्भीर है। पर सामूहिक फ़ार्म के लिए दिल दुखता है। खेती-बारी का काम अपने ज़ोरों पर है, और ऐसे में रुस्तम का कोई स्थानापन्न नहीं है।"

सलमान के दांत वास्तव मे उपाध्यक्ष के पद पर गड़े हुए थे। उसका विचार था कि सामूहिक फ़ार्म के लेखापाल का पद मात्र एक सीढ़ी है: उसकी इच्छा थी कि वह हुक्म चलाये, निर्देश दे, आज्ञाकारी, फुर्तीले आदमियों से घिरा रहे।

शेरज़ाद की राय जानने के इरादे से सलमान ने सादगी से कहा:

"मैं उपाध्यक्ष कैसे हो सकता हूं? मुझे अनुभव तो है ही नहीं।"

उसे आशा थी कि जवाब में वे कहेंगे कि अनुभव तो काम करने से होता है, बस योग्यता और लगन होनी चाहिएं। लेकिन शेरज़ाद और नजफ़ चुप रहे।

सामूहिक किसानों से बातचीत करने के बाद रुस्तम क्लब की तरफ़ गया। युवा आत्मगौरवपूर्ण मुखमुद्रा बनाकर तनकर खड़े हो गये।

"नजफ़, तिरछी नज़रों से क्यों देख रहे हो?" अध्यक्ष ने चलते-चलते बड़बड़ाते हुए पूछा।

"तिरछी नज़रों से देखनेवाला अंधा हो जाये, मैं तो लोगों से नज़रें बराबर करता हूं," नजफ़ ने आत्मसम्मान के साथ कहा। "सुना है, आप फिर मीटिंग करवा रहे हैं?" उसने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए जिज्ञासा व्यक्त की।

रुस्तम ने अपने चेहरे पर शिकन भी नहीं पड़ने दी कि उसे बात चुभी है।

"हां, करवा रहा हूं। क्यों, क्या युवाओं की मीटिंग भी हो रही है? क्या विश्व राजनीति पर चर्चा होगी? या फिर उत्पादकता के बारे में बात होगी?"

अध्यक्ष ने इस बारे में यूं ही नहीं पूछा था। दो-तीन दिन हुए ही नजफ़ ने सामूहिक फ़ार्म की प्रबन्ध समिति के सामने इस वर्ष कपास की प्रति हेक्टेयर उपज कम-से-कम तीस क्विंटल तक पहुंचाने की योजना का सुझाव रखा था।

यह सच है कि नजफ़ ने इसका कोई आकलन नहीं किया था – मात्र

एक आदर्श स्वप्न और उत्साहपूर्ण इच्छा थी। और मौखिक द्वंद्वों में पटु रुस्तम को सलमान व यारमामेद की मदद से उसकी खिल्ली उड़ाने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी।

"पर तुमने सामूहिक किसानों के बारे में सोचा?" रुस्तम ने उससे सीधे पूछ लिया। "मैं अस्सी हेक्टेयर में बोवाई करता हूं और सरकार को अपने कोटे की एक हज़ार छ: सौ टन कपास देता हूं। कोटे से ऊपर के हर टन की हमें दुगुनी दर मिलती है! दुगुनी! अगर मैं तुम्हारा सुझाव मान लूं – तो ज़िला मुख्यालय में कल ही कोई अक़्लमंद निकल आयेगा, जो फ़ौरन हमारा कोटा बढ़ाकर आठ सौ टन कर देगा। फिर करते रहो कमरतोड़ मेहनत! .. फिर हम कोटे से एक भी टन ज़्यादा नहीं दे सकेंगे। और फिर सामूहिक किसानों को श्रम-दिन का क्या मिलेगा? फूटी कौड़ी!"

क्या नजफ़ शान्त हो चुका है? कहीं वह आज फिर मीटिंग में उस बचकाने खेल की बात तो नहीं करने लगेगा?

उसी क्षण बातचीत में मितभाषी शेरज़ाद भी कूद पड़ा:

"हमारा इरादा 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म के अनुभव पर विचार-विमर्श करने का है, ताकि इस साल सारी कपास मशीनों से चुन सकें। आपका इस बारे में क्या विचार है?"

रुस्तम की बुद्धिमत्तापूर्ण आंखों के इर्द-गिर्द झुर्रियों का घेरा गहरा हो गया।

"सलमान, बेटा, ज़रा दोहराना तो साबिर का वह शेर! तुमने कुछ ही दिन हुए तो मुझे उसे सुनाया था।"

सलमान विनम्र मुस्कान के साथ पढ़ने लगा:

पायंचे अपने नदी मिलने से पहले ही चढ़ा लेते हो तुम,
अक़्ल दौड़ाये बिना ही, काम का बीड़ा उठा लेते हो तुम।

"वाह, कितनी अनमोल बात कही है!" रुस्तम ने सिर हिलाया। "अज़ीम शायर का हर लफ़्ज़ दिल को छू लेता है! लगता है जैसे उसने तुम्हारे सरीखे शेख़-चिल्लियों के बारे में ही लिखा है। वाह, कितनी मज़ेदार बात है! मुझे डर है कि तुम लोग कपास भी बिलकुल कारा केरेमोगलू की तरह चुनने लगोगे। आधी कपास झाड़ियों में अटकी रह जायेगी और आधी हवा में उड़ जायेगी।"

"हर नये काम में अपने ही ढंग की मुश्किलें होती हैं," शेरज़ाद ने स्वीकार किया। "कुछ लोगों को हर नया काम अजीब लगता है, लेकिन अगर काम हाथ में लिया जाये, कुछ सीखा जाये, तो धीरे-धीरे सब ठीक हो जाता है।"

"लेकिन ऐसा भी तो होता है, बेटे," रुस्तम ने टोका, "बढ़-चढ़कर बोलनेवालों की बातें तो होती हैं लाख की और करनी ख़ाक की। तुम्हें ऐसे क़िस्से मालूम हैं न, क्यों?"

शेरज़ाद चुप रहा, पर ख़ुशामदी सलमान तुरन्त हां में हां मिला उठा:

"दुश्मन की भी नाक ऐसी न कटे!"

अब नजफ़ के बोलने की बारी आयी। हठी अध्यक्ष को विश्वास दिलाना लगभग असम्भव था, यह सभी जानते थे, पर नजफ़ विनोदी स्वभाव का था और उसने अपने मित्र का समर्थन किया:

"रुस्तम चाचा कपास चुनने की मशीन को वैसी ही नज़रों से देखते हैं, जैसे ऊंट लोहार को।"

घनी मूंछों के नीचे रुस्तम के होंठ कांप उठे। वास्तव में उसे कपास चुनने की कम्बाइन पर ज़्यादा भरोसा नहीं था, उसका मत था कि केवल स्त्री के हाथ में ही खिली डोंड़ी में से बर्फ़-से सफ़ेद और अण्डा फोड़कर निकले चूज़े जैसी फुलफुली रूई का गाला सावधानीपूर्वक निकाल पाने की क्षमता होती है। जब मुगान में मशीनों से कपास चुनने से हुई भारी हानि के बारे में अफ़वाहें फैलने लगीं, तो मितव्ययी अध्यक्ष ने अपना माथा पकड़ लिया और मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि वह फ़िलहाल मशीन से कपास चुनना टाल देगा। लेकिन रुस्तम अपने मन की बात अपनी पत्नी से भी छिपाकर रखता था और बच्चों से भी। उसे अपनी शंकाएं छिपाना आता था, वह समय से पहले बहस में नहीं उलझना चाहता था और उक्रइनी कहावत को अपना आदर्श मानता था: "धधकती आग में अपने बाप से पहले हाथ मत डालो"। उसने यह कहावत मोर्चे पर सुनी थी और वह उसे अकसर याद आ जाती थी।

"जब मशीन खेत में लायी जायेगी, तभी देख लेना, बेटे, कि मेरी उसके बारे में क्या राय है।"

"तब आप पहले मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में दूसरी मशीनों के लिए क्यों रिरियाते रहे थे?" नजफ़ ने तपाक से पूछ लिया।

"सब से पहली बात तो यह है, बेटा, कि मैं किसी चीज़ के लिए नहीं

रिरियाया, मेरा ऐसा स्वभाव ही नहीं है और दूसरी यह कि तुम्हें ऐसी बातों से कोई मतलब नहीं है।"

"नहीं, मतलब है ज़रूर," नजफ़ चुप नहीं हुआ। "सामूहिक फ़ार्म तुम्हारी अपनी मिल्कियत नहीं है, चाचा।"

"बकवास कर रहे हो, बेटा। थोथा चना, बाजे घना। मैं जानता हूं कि मेरा क्या है और क्या जनता का है।"

"अगर जनता का है, तो ज़मींदार के कारिंदे की तरह क्यों पेश आते हो?"

रुस्तम ने गुस्से से लाल हुई आंखें झुका लीं और निराशापूर्ण गहरी सांस ली।

"मैं कारिंदा कैसे हो गया! क्या कारिंदा कभी नजफ़ जैसे लफ़्फ़ाज़ को मुंह लगाता? कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती... और तुम्हारी दुम भी, बेटा, मरते दम तक सीधी नहीं होगी।"

उनकी नोक-झोंक अकेले सलमान को ही अच्छी लग रही थी, उसे दूसरों को झगड़ते देख सदा आनन्द आता था।

"कामरेड अध्यक्ष, नजफ़ के कहने का मतलब है कि आप हमेशा मशीनीकरण के समर्थक रहे हैं," शेरज़ाद बोल उठा। "लेकिन अब..."

रुस्तम ने फ़ौरन उसे टोक दिया:

"मैं बहुत अच्छी तरह समझता हूं कि नजफ़ क्या कहना चाहता था, मुझे बिचवइयों की ज़रूरत नहीं है। अगर नजफ़ समझदार होता, तो सामूहिक फ़ार्म की मीटिंग में सारे युवाओं को 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म के साथ समाजवादी प्रतियोगिता की शर्तें तय करने के लिए लेकर आया होता। वसन्त आने ही वाला है; हमें बोवाई की सोचनी चाहिए। मैं जी-जान लड़ा रहा हूं..."

यह सुनते ही सलमान भांप गया कि अब चारा फेंकने का समय आ गया है, शायद मछली फंस ही जाये।

"क़सम से, रुस्तम-कीशी, हमें आपसे दिल से सहानुभूति है। हम अभी-अभी यही बात कर रहे थे कि आप के लिए अकेले इतने बड़े सामूहिक फ़ार्म का काम चलाना कितना मुश्किल होता है। इतना भारी बोझ ढोना हर किसी के बस का काम नहीं है। तीन महीने बिना उपाध्यक्ष के काम करना – तिस पर आपकी गरदन पर इतना भारी बोझ!.. अगर मोर्चे पर आप सार्जेन्ट थे, तो यहां कर्नल हो गये हैं।"

रुस्तम को अपनी प्रशंसा किया जाना अच्छा लगता था।

"मैं नहीं जानता, नौजवानो, बिलकुल नहीं जानता कि क्या किया जाये," रुस्तम ने इस तरह धीमी आवाज़ में कहा, मानो युवकों को कोई अत्यन्त गोपनीय बात बता रहा हो "हम किसी पर भरोसा नहीं कर सकते।"

"आप किसी की मत सुनिये, रुस्तम-कीशी," सलमान ने भोली-भाली मुखमुद्रा बनाकर कहा। "सामूहिक फ़ार्म की आपको पूरी जानकारी है, किसी व्यवहारकुशल कामकाजी आदमी को चुन लीजिये जो आपका विश्वसनीय सहायक भी बन जाये और लोगों से भी काम लेने में माहिर हो। काम यह, कुछ भी हो, ईर्ष्या करने लायक़ नहीं है और इसमें झंझट भी बहुत है।"

"यह तो सभी जानते हैं," रुस्तम ने पुष्टि की। "क्यों, भाई, अगर उपाध्यक्ष के पद के लिए सलमान के नाम का प्रस्ताव किया जाये तो?"

शेरज़ाद और नजफ़ ने बिना उत्साह के उत्तर दिया: "सलाह करनी चाहिए", जब कि सलमान पीछे सरक गया और भयभीत स्वर में कह उठा:

"चाचा, आप भी क्या! इस सम्मान के लिए आभारी हूं, बात मेरे दिल को छू गयी है, पर मैं यह काम नहीं निभा पाऊंगा, नहीं निभा पाऊंगा।"

"बेशक, लोगों से सलाह करनी चाहिए," रुस्तम ने अनुमोदन किया। "सोचेंगे।" और उसने आगे वही बात कही, जो सलमान को अपने दोस्तों के मुंह से सुनने को नहीं मिली। "अनुभव तो काम करने से आता है, सीख लेगा, अगर..."

"ज़रूर, सीखूंगा," सलमान ने हां में हां मिलायी।

रुस्तम शान्तिपूर्वक आगे बोला:

"और तुम्हें, शेरज़ाद, अगर ख़ुदा ने बुलबुल की-सी आवाज़ बख़्शी है, तो अब तुम्हारे लिए गायक-मण्डली बनाने का समय आ गया है। यह परायी खिड़कियों तले बैत गाने से कहीं ज्यादा बेहतर होगा। नौजवानों को कुछ शग़ल मिल जायेगा, बूढ़ों का दिल बहल जाया करेगा और सामूहिक फ़ार्म का नाम हो जायेगा। देखते-देखते लोक-कला प्रतियोगिता में बाकू भेज दिया जायेगा। बहुत आसान बात है।"

शेरज़ाद का चेहरा लाल हो उठा और वह तांबे के पुराने सिक्के पर बने सैनिक जैसा सांवला हो उठा।

"नौजवानों को तो लोक-कला में ग्रास्तीनें चढ़ाकर भाग लेना चाहिए ही..."

ग्रौर रुस्तम उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय की ग्रोर चल दिया।

नजफ़ ने होंठ भींच लिये ताकि मुंह से कोई ग्रविचारित शब्द न निकल जाये, जब कि शेरज़ाद ने ऐसा कुछ नहीं किया – जीवन ने उसे सदा शान्त रहना सिखा दिया था।

"हमें झुकना पड़ेगा," उसने खेदपूर्वक कहा। "इस बार झुकना पड़ेगा। हम मौक़ा चूक गये..."

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं," सलमान ने मर्मस्पर्शी स्वर में कहा। "हठ किस लिए करें? ग्रध्यक्ष की प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए। ग्रगर हमने स्वेच्छाचार किया, तो हमें ज़िला समिति भी झिड़क देगी।"

नजफ़ ने सलमान के साथ तकल्लुफ़ नहीं बरता ग्रौर उसने ग्रपना सारा गुस्सा उसी पर उतार दिया:

"डराग्रो मत! मैं पार्टी की ज़िला समिति से भी नहीं डरता, ग्रगर... हमारा दृष्टिकोण बिलकुल ठीक है। यह तुम ही हो जो ग्रध्यक्ष की ख़ुशामदी करते हो, उसकी ग्रांखों में ग्रांखें डाले रहते हो..."

"ठहरो, ज़रा ठण्डे हो जाग्रो!" पूर्ववत् शान्त शेरज़ाद ने हाथ उठाया। "ऐसा कर सकते हैं: मैं ग्रौर सलमान सामूहिक फ़ार्म की मीटिंग में जाते हैं, उधर तुम लड़कों से बात करना। फिर उधर ग्रा जाना।"

"बहुत ग्रक़्लमंदी की बात है!" सलमान कह उठा, पर मन-ही-मन सोचने लगा कि यह शेरज़ाद केवल ऊपर से सीधा-सादा बनता है, पर इसमें समझदारी कम नहीं है। लड़के भी सन्तुष्ट हो जायेंगे ग्रौर ग्रध्यक्ष का भी जी ख़ुश हो जायेगा कि शेरज़ाद ने उसके ग्रादेश का पालन किया। कहीं यह बेवक़ूफ़ पेरशान के ही तो सपने नहीं देख रहा है?"

सलमान जानता था कि शेरज़ाद पेरशान को प्यार करता है। वैसे तो यह बात सारे गांव को मालूम थी, केवल रुस्तम को फ़िलहाल ग्रंदाज़ नहीं था कि शेरज़ाद की बैतें किसको समर्पित होती हैं।

ग्रौर ख़ुद युवती शेरज़ाद के बारे में क्या सोचती है? मित्र-मण्डली में वह सदा शेरज़ाद पर ताने कसती रहती थी, उससे मुंह फेर लेती थी ग्रौर उसके सवालों का भी कभी जवाब नहीं देती थी। वह ग्रब ग्रागे कर ही क्या सकता है! ग्रपने को नारी-हृदय का पारखी मानते हुए सलमान ने

शेरज़ाद को कभी ग्रपना प्रबल प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा था, वह पेरशान को ग्रपनी भावी पत्नी मानने का ग्रादी हो चुका था, हालांकि युवती ने कभी उसके प्रति लगाव नहीं दिखाया था। लेकिन रुस्तम की सलमान के प्रति चिन्ताशीलता ग्रौर पितातुल्य व्यवहार के ग्राधार पर उसे इस शादी की पूरी ग्राशा थी। ग्रौर यह सच भी था कि सलमान ग्रध्यक्ष को पसंद था। रुस्तम उसके हर शब्द पर विश्वास करता था ग्रौर उसका ख़याल था कि लेखापाल किसी भी काम को करने में सक्षम है। पिछले वर्ष जब वह प्रदर्शनी में मास्को गया था, तो वह ग्रपने साथ सामूहिक किसानों में से किसी ग्रौर को नहीं, बल्कि सलमान को ही ले गया था।

"तू ग्रपनी बैतें गा-गाकर कितना ही गला बैठा ले, मैं तुझ जैसे सैकड़ों को मुंह की खिला दूंगा, उंगली पर नचा दूंगा," सलमान ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ युवा गायक-प्रेमी के बारे में सोचा।

२

शाम होते-होते मौसम ख़राब हो गया। सारा ग्राकाश नमदे जैसे काले बादलों से ग्राच्छादित हो गया; खेतों से भुरभुरे कोहरे के चिथड़े उठकर, मटमैले सफ़ेद बादल बनकर दक्षिण की ग्रोर जा रहे थे, सल्यानी व लेनकोरान की दिशा में। ग्ररास्क में पानी गंदला हो चला था, नन्ही लहरें हल्के हिलकोरे ले रही थीं ग्रौर ज्यों-ज्यों नदी बस्ती से दूर होती जाती थी, त्यों-त्यों काली पड़ती जाती थी, मानो वह स्तेपी में लीन होती जा रही हो।

निष्प्रभ ग्राकाश की पृष्ठभूमि में वृक्षों की नंगी टहनियां काली-सी नज़र ग्रा रही थीं; धुंधलके के बोझ से दबे जा रहे घर व बस्तियां ग्रौर नीचे लग रहे थे, मानो ज़मीन से लगे जा रहे हों। बत्तियां ग्रभी नहीं जलायी गयी थीं, घर ग्रंधों के समान लग रहे थे।

जैसा तय हुग्रा था, शाम के छः बजे क्लब के सामने शेरज़ाद व सलमान मिले, शीघ्र ही चलते-चलते चुरेक चबाता ग्रौर हांफता हुग्रा नजफ़ भी नज़र ग्रा गया।

"तुम, दोस्तो, चलो, मैं ग्रभी काम निबटाकर ग्राता हूं," उसने कहा, "तुम्हारा हाथ बंटाने ग्रा जाऊंगा।"

सलमान चुप रहा, जब कि शेरज़ाद ने ग्रोवरकोट की बांह सरकाकर घड़ी पर नज़र डाली।

"अभी काफ़ी समय है, जल्दी क्या है? इंतज़ार कर लेते हैं।"

"तुम चलो, मैं सब ठीक कर लूंगा।"

लड़के वहां से टस से मस नहीं हुए।

छीदी झाड़ियां उगी बंजर भूमि में से होकर गांव से क्लब की ओर जानेवाली पगडण्डी पर दरमियाने क़द की सुडौल युवती नज़र आयी। नजफ़ समझ गया कि मित्र किस की बाट जोह रहे थे और उसने ज़बान चटकारी।

"पेरशान! हंसिनी की तरह तैरती-सी आ रही है," उसने कहा, हालांकि सब वैसे ही देख रहे थे कि पेरशान आ रही है।

युवती ने नया काला पोस्तीन पहन रखा था, सिर पर गहरे पीले रंग का गरम रूमाल बांध रखा था और वह पैरों में चमचमाते ऊंचे ऊपरी जूते पहने हुए थी।

सलमान दृढ़निश्चयता के साथ उससे मिलने बढ़ा। शाम की ठण्ड से लाल हुए युवती के चेहरे तथा चंचल काली आंखों को निहारते हुए उसने शिष्टतापूर्वक उसका अभिवादन किया और सावधानी से उसके हाथ में हाथ देकर उसे क्लब के पास ले आया। शेरज़ाद के होंठ कांप उठे, पर युवती पर टिकी उसकी आंखें शान्त रहीं।

पेरशान सकुचा गयी, वह युवक की नज़रों से सदा व्याकुल हो उठती थी, उनमें कातर झिड़की छिपी रहती थी, और अपनी व्याकुलता को छिपाने के लिए वह शेरज़ाद से दूसरों के सामने इतनी बेतकल्लुफ़ी से बात करती थी।

"हां, बाद में कहीं भूल न जाऊं," पेरशान ने युवकों से दुआ-सलाम करके कहा, "अब्बा ने तुम्हें, सलमान, मीटिंग के बाद हमारे घर होते जाने को कहा है।"

"जो हुक्म, पेरशान-खानम!" सलमान ने सिर झुकाया और मन-ही-मन द्वेषपूर्ण ख़ुशी के साथ उदास हुए शेरज़ाद की तरफ़ कनखियों से देखा।

अध्यक्ष द्वारा किसी को शाम को उसके यहां होते जाने के निमंत्रण में कुछ असाधारण बात नहीं थी, शेरज़ाद भी इसी तरह रुस्तम-कीशी के पास कई बार जा चुका था, लेकिन इस समय उसे पेरशान की बात में कुछ छिपा हुआ भाव महसूस हुआ और वह उदास हो उठा।

उधर सलमान युवती के आगे-पीछे घूमता बराबर उसके कान में मीठी-मीठी प्रशंसापूर्ण शब्द फुसफुसा रहा था। शेरज़ाद ने देख लिया कि कैसे पेरशान ने मन्द-मन्द हंसकर उसकी आस्तीन पर अपने दस्ताने से मारा।

बंजर मैदान में माय्या भी नज़र आयी, वह भी पेरशान के जैसे ही कपड़े पहने थी, केवल उसके सिर पर रूमाल के बजाय फ़ेशनेबल हैट था।

"और इतने में वह चंचल सुन्दरी
सामने आंखों के मेरे आ गई..."

सलमान कर्णप्रिय धैवत सुर में गा उठा और जल्दी से उससे मिलने बढ़ा। उससे दुआ-सलाम करके वह उसका पतला हाथ अपने हाथ में थामे रहा। "डाह नारी के हृदय में स्थान पाने का सबसे सरल मार्ग है," सलमान की यही धारणा थी और इसी लिए वह पेरशान के सामने खुले तौर पर माय्या के प्रति प्रेम जताया करता था।

माय्या ने झट से लेखापाल से मुंह फेरकर शेरज़ाद से पूछा:

"अभी काफ़ी समय है?"

"बिलकुल ठीक समय है। अभी लोग इकट्ठा हो जाते हैं।"

"क्या मीटिंग देर तक चलेगी?"

"कोई बीस मिनट।"

"ठीक है, इंतज़ार कर लेते हैं," माय्या पेरशान के हाथ में हाथ डालकर क्लब में चली गयी।

"आकर्षक नारी है," सलमान आंखें चलाता हुआ फुसफुसाया। "गराश बड़ा ख़ुशनसीब है, बिलकुल हिरनी-सी मनोहर पत्नी ढूंढ़ी है।"

"हां..." सलमान की बात अनसुनी करते हुए शेरज़ाद ने अन्यमनस्कता से स्वीकार किया।

"समझ गया, समझ गया, तुम्हारे दिमाग़ में तो अध्यक्ष की बेटी घूम रही है। दुलहन पर तो तुमने ध्यान ही नहीं दिया। लेकिन वह आते ही क्यों क्लब में चली गयी? क्या लड़ाई हो गयी है? कहो तो उसे यहां लाकर तुम्हारी सुलह करवा दूं?"

"मैं चाहता हूं कि तुम चुप रहो," शेरज़ाद ने सलमान को समझ से बाहर उदासी के साथ कहा।

उसे सलमान पसंद नहीं था, हालांकि वह उसकी कुछ ख़ूबियों को स्वीकार करता था। लेखापाल कर्मनिष्ठ था, आवश्यकता पड़ने पर रातों नहीं सोता था, जल्दी से जल्दी आय-व्यय का वार्षिक चिट्ठा तैयार करने में जुट जाता था, लेखाकारों को घर-घर भेजता था और स्वयं बराबर चिट्ठों

की जांच करता रहता था... अगर रुस्तम-कोशी सलमान की इस लगन के लिए उसकी प्रशंसा करता था, तो इस तरह की प्रशंसा का विरोध करने का विचार किसी के मन में आ ही नहीं सकता था।

शेरज़ाद को कभी-कभी लगता कि सलमान ने अपनी चापलूसी-भरी बातों व आधुनिक गीतों से पेरशान का दिल जीत लिया है और उसे सीधे उससे पूछने की इच्छा होती: "क्या तुम उसे प्यार करते हो?"

लेकिन उससे कभी यह बात पूछी जा सकती है? धूर्त हर बात को मज़ाक़ में बदल सकता था, उसके मुंह से सीधा जवाब कभी नहीं उगलवाया जा सकता था, उसे खिजा पाना तक असम्भव था... वह सबके साथ समान ढंग से पेश आता था – स्नेहपूर्वक व दोस्ताना ढंग से, सभी के घरों में उसका आना-जाना था, वह हर परिवार के राज़ जानता था, हर किसी को सलाह देता था, लाभकारी और काम की... कोई मरता – तेज़ सलमान फ़ौरन वहां मौजूद, बढ़ई से ताबूत बनाने को कह देगा, भागकर क़ब्रिस्तान में क़ब्र के लिए स्थान चुनने पहुंच जायेगा, गांव के स्टोर से ग़मी के खाने के लिए सामान ले आयेगा। शादी हो – फिर बिना सलमान के काम नहीं चल सकता: दौड़-धूप कर-करके निढाल हो जायेगा, मुश्किल से पैरों पर खड़ा रह पायेगा... शेरज़ाद सलमान को इसी रूप में जानता था और कभी-कभी स्वीकार करता था: स्वभाव है!.. पर यह देखकर कि वह मक्कार किस तरह अध्यक्ष का विश्वासपात्र बनता जा रहा है, वह प्रायः उसे कोसा करता था और खीजता था।

"अरे, हम ठण्ड में क्यों खड़े हैं? पैर जम गये हैं," कूदते हुए सलमान ने कहा। "कार्यालय में चलते हैं।"

"और दो-तीन युवकों को अपने साथ चलने को कहना चाहिए। नजफ़ से कह दो।"

"वह मेरी बात मानेगा ही नहीं।"

"बात और तुम्हारी नहीं मानेगा?" शेरज़ाद को सचमुच आश्चर्य हुआ। "तुम तो अपनी ज़बान से पत्थर को भी मोम कर दोगे। जाओ।"

सलमान ख़ुशी-ख़ुशी क्लब में चला गया – वहां पेरशान और माय्या जो थीं। उसी क्षण स्त्रियों की प्रफुल्लित हंसी सुनाई दी, और एक मिनट बाद ही वह कलाबाज़ियां खाता बाहर निकल आया, – शायद, पेरशान उसका पीछा कर रही थी, – और हंसी के मारे दोहरा होता बोला:

"भेज देगा..."

और युवक कार्यालय की ओर चल पड़े।

इस बीच क्लब में युवा एकत्र हो रहे थे। गिज़ेतार कंधों पर पोस्तीन डाले आ पहुंची, लड़कियां आ गयीं और वृत्त में बैठकर गीत गाने लगीं; युवक ड्योढ़ी में जमा होकर सिगरेट पीने लगे।

अन्त में नजफ़ ने पेंसिल से शीशे की सुराही पर खटखटाया, लोगों से बैठने को कहकर चेतावनी दी कि धूम्रपान व कानाफूसी करना मना है और कोम्सोमोल की मीटिंग आरम्भ करने की घोषणा की।

"कार्य-सूची में दो प्रश्न हैं: कपास की चुनाई का यंत्रीकरण तथा गांव में जन-स्वास्थ्य-सेवा की स्थिति। हमें जल्दी से जल्दी इस पर विचार-विमर्श करना है ताकि सामूहिक फ़ार्म की मीटिंग में भी समय पर पहुंच सकें।"

"स्वीकार कर लिया जाये! स्वीकार कर लिया जाये!" आवाज़ें गूंज उठीं। नजफ़ ने हाथ उठाकर क्रुद्ध स्वर में कहा:

"कृपा करके व्यवस्था बनाये रखें! बोलने की अनुमति मांगिये, ऐसे मत चीखिये, जैसे बाज़ार में हों! आपको अब तो कम-से-कम शिष्टतापूर्ण व्यवहार करने का आदी हो जाना चाहिए!"

"तुमने इसे कैसा बना दिया है? इतना उदास..." माय्या पास में बैठी गिज़ेतार के कान में फुसफुसायी।

गिज़ेतार स्वयं भी नहीं समझ पा रही थी कि उसके पति को क्या हुआ है, वह क्यों परेशान है, उसने नजफ़ की तरफ़ देखकर सोचा कि उसे गम्भीर रहना बिलकुल शोभा नहीं देता है। उसे अपना यह विचार इतना हास्यकर लगा कि वह मुंह बंद करके हंसते-हंसते रुकी और उसने अपनी पड़ोसिन की पीठ के पीछे मुंह छिपा लिया।

नजफ़ ने आंखें तरेरकर पत्नी की तरफ़ देखा, एक बार और ज़ोर से शीशे की सुराही पर पेंसिल मारी, हालांकि हॉल में शान्ति थी और सभा की कार्रवाई वैसे ही शुरू हो गयी, जैसे सभी सभाओं में होती है: अध्यक्ष-मंडल का चुनाव हुआ, और पेरशान ने प्रथम प्रश्न पर बोलने का अवसर किसी और को नहीं, नजफ़ को ही दिया।

टेढ़े व पतले तख़्तों से बनाया हुआ भाषण-मंच काफ़ी ऊंचा था और उसकी आड़ में नजफ़ का तरबूज़ जैसा गोल सिर बड़ी मुश्किल से नज़र आ रहा था। हॉल में इस बात को लेकर काफ़ी हंसी-मज़ाक़ हो रहा था, पर जब नजफ़ ने बोलना शुरू किया, वह भाव-विभोर होकर जोश में भाषण

देने में कुशल था, तो सब तुरन्त शान्त हो गये... सचिव बड़े उत्साह से अक़्लमंदी, चतुराई और कम लागत में आविष्कृत मशीन के बारे में बता रहा था, जो कपास चुनने में आदमी की मेहनत को आसान बना देती है और सर्वप्रथम स्त्रियों की मेहनत को, क्योंकि कपास चिलचिलाती धूप में, तपती गरमी में चुननी पड़ती है, जब गले सूख जाते हैं, प्यास के मारे होंठ फट जाते हैं, उनसे ख़ून बहने लगता है।

ज्यों-ज्यों नजफ़ आगे बोलता गया, त्यों-त्यों उसके चेहरे की चमक बढ़ती गयी, क्योंकि उसे ख़ुद को भी मशीनें पसंद थीं और वह देख रहा था कि युवाओं को भी मशीनें अच्छी लगने लगी हैं और वे हठीले अध्यक्ष के साथ होनेवाली बहस में सदा उसका और शेरज़ाद का समर्थन करेंगे।

३

वसन्त समीप आता जा रहा था।

रुसतम रोज़ सुबह अपने बरामदे में खड़ा होकर अंगड़ाइयां लेता, कराहता, हल्की कसरत करता और मेघाच्छादित आकाश को बराबर ताकता हुआ अनुमान लगाता रहता कि कब मौसम सुधरेगा, सूरज चमकेगा और ज़मीन सूखेगी।

अध्यक्ष की तरह सामूहिक फ़ार्म में सभी लोग – क्या मर्द, क्या औरतें, क्या बूढ़े, क्या बच्चे – सुबह आसमान को ताकते हुए अटकलें लगाते कि कब बाग़ों में पेड़ों पर हरियाली आयेगी, फूल खिलेंगे, चिड़ियां चहचहाने लगेंगी, खेत से नमी भाप बनकर उठने लगेगी और आकाश की बुलंदियां गहरी नीली हो उठेंगी...

सब को आशा थी कि इस वर्ष फ़सल बहुत बढ़िया होगी और गत वर्षों की तुलना में आय में काफ़ी वृद्धि होगी।

रुस्तम अपने सामूहिक फ़ार्म के सामर्थ्य को सबसे बेहतर जानता था। वह इस बात से भी ख़ुश था कि जाड़े का अन्तिम माह बहुत बर्फ़ीला रहा था, जाड़े की फ़सलें आधा-आधा मीटर ऊंचे बर्फ़ के ढेरों से ढकी थीं। फिर सारे लक्षणों को देखते हुए वसन्त में भी काफ़ी वर्षा होने के आसार थे, जो शुष्क मुग़ान के लिए बड़े भाग्य की बात थी। रुस्तम उस निस्सीम स्तेपी में पचपन सालों से रह रहा था और ज़मीन के चप्पे-चप्पे को भली-भांति जानता था। मुग़ान में पड़ोसी सामूहिक फ़ार्म 'लाल झण्डा' के अध्यक्ष कारा

केरेमोग़लू के बारे में कहा जाता था कि गत तेईस वर्षों में उसने केवल तीन बार मौसम की ग़लत भविष्यवाणी की है। ख़ैर, अगर यही बात है, रुस्तम ने मन-ही-मन सोचा, तो उसने तो एक बार भी ग़लत भविष्यवाणी नहीं की। वह सर्दी के आधार पर वसन्त के लक्षण निर्धारित कर लेता था, वसन्त के आधार पर ग्रीष्म की भविष्यवाणी करता था, सूर्यास्त के या लोमशी बादलों के आधार पर – वर्षा या अच्छे मौसम की... और यह सच है कि प्रायः उसकी मौसम की भविष्यवाणियां रेडियो पर प्रसारित भविष्य-वाणियों की अपेक्षा ज़्यादा सही निकलती थीं। रुस्तम मज़ाक़ में कहा करता था: "उनके पास यंत्र हैं, जब कि मेरी नज़र पैनी है!"

और इस समय भी अपने लक्षणों से मिलान करते हुए अध्यक्ष को सन्देह नहीं रहा था कि सन् एक हज़ार नौ सौ छप्पन का वसन्त बिलकुल वैसा ही होगा, जैसे कि उसे आवश्यकता है।

"अगर बोवाई की तैयारी अच्छी की गयी है, मौसम भी वैसा रहा, जैसा चाहिए और सामूहिक किसानों ने भी दिल से काम किया, तो हम योजना से डेढ़ गुना उत्पादन करेंगे।" इस से कम रुस्तम को मंज़ूर नहीं था।

अपने ख़ुशी के मूड में वह 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म की समाजवादी प्रतियोगिता की चुनौती स्वीकार करने को तैयार हो गया था।

अब उन्हें पड़ोसियों के यहां शर्तनामे पर हस्ताक्षर करने जाना था। आम सभा में प्रतिनिधि-मण्डल में पन्द्रह व्यक्तियों को चुना गया, जिनमें, निस्सन्देह, सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष, गिज़ेतार, यारसामेद, सर्वव्यापी सलमान, शेरज़ाद व नजफ़ भी शामिल थे।

कार्यालय के बाहर तिरपाल से ढका ट्रक ला खड़ा किया गया। प्रतिनिधि बन-ठनकर तैयार हो गये, जैसे किसी शादी में जा रहे हों। माय्या के दिये चौड़े छज्जेवाले हैट में गिज़ेतार सबको बहुत अच्छी लगी। शेरज़ाद नीले सूट में आया, उसकी रंगबिरंगी टाई बार-बार एक तरफ़ हो जाती थी, शायद इसी लिए शेरज़ाद को ये शहरी चोचले पसंद नहीं आते थे, वह फ़ौजी क़मीज़ को बेहतर मानता था।

चिन्ताशील गिज़ेतार बार-बार उसकी टाई ठीक करती हुई कहती:

"कैसे अनाड़ी हो!"

"कुंवारा है, तुम भला इसमें ज़्यादा की क्या आशा रख सकती हो!" सलमान ही-ही कर उठा। "कुंवारे के घर में कितनी ही लकड़ी क्यों न

जलाओ, कभी गरम नहीं होगा। लोग ठीक ही कहते हैं: 'बिन घरनी घर भूत का डेरा'।"

"अरे, हम जल्दी ही इसका ब्याह कर देंगे।" गिज़ेतार ने कहा। "देखते रहना, कैसी रूपवती से करेंगे! सभी आह भरते रह जायेंगे।"

"यह अकेले शेरज़ाद पर थोड़े ही निर्भर करता है, रुस्तम-कीशी पर भी करता है," सलमान ने द्वेषपूर्ण चुटकी ली।

उनके पास प्रसन्नचित्त, ठाठदार कपड़े पहने और अपने सबसे अच्छे मूड में अध्यक्ष भी आ पहुंचा और उसने गरिमा के साथ युवाओं के अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया।

"किस बारे में बात हो रही है?"

"हम यही कह रहे हैं कि दुनिया में ज़िद्दी बाप भी हैं और ज़िद्दी बेटियां भी," नजफ़ ने कहा। "लेकिन हम उनकी ज़िद का ख़ात्मा कर देंगे।"

रुस्तम कुछ नहीं समझ सका, लेकिन कल की बात याद कर यूं ही बोला:

"तुम्हें चुप रहना चाहिए, लड़के।"

सलमान अध्यक्ष की तरफ़दारी करने ऐसे हड़बड़ाकर लपका, जैसे कोई शिकारी कुत्ता अपने स्वामी की सीटी सुनने पर लपकता है:

"ख़ुद तो गिज़ेतार के अंगूठे तले रहता है, चूं भी नहीं कर पाता, और ज़िद्दी बाप से मुक़ाबला करना चाहता है।"

"करूं भी क्या!" नजफ़ सहृदयता से मुस्कराया। "दिये तले अंधेरा रहता ही है।"

"अब तो बिजली के बल्ब सारे कमरे में रोशनी कर देते हैं, सारी गली में भी," सलमान ने कहा और अपने मज़ाक़ पर सब से पहले ख़ुद ही ख़ुश होकर एक ठहाका लगाया।

"हमें अभी तक बिजली की रोशनी देखना नसीब नहीं हुआ है। अध्यक्ष कहते हैं कि सामूहिक फ़ार्म के पास पैसा नहीं है..." नजफ़ ने गम्भीर स्वर में कहा।

लेकिन इतने में ट्रक का हार्न ज़ोर से बज उठा – चालक इन्तज़ार करता-करता ऊब उठा था। अध्यक्ष "चलना चाहिए!" कहकर अपनी 'पोब्येदा' कार में बैठ गया, नौजवान चीख़ मारते ट्रक पर टूट पड़े।

ट्रक गढ़ों में हचकोले खाता, कीचड़ उछटाता राजमार्ग की तरफ़ चल पड़ा, और उस बीच 'पोब्येदा' गांव का रास्ता पारकर स्तेपी में दूर जा पहुंची।

रुस्तम कार चलाता हुआ सोच रहा था कि केरेमोगलू को हर मामले में पछाड़ना कोई मुश्किल काम नहीं है, बस जल्दी से जल्दी किसी चतुर और चुस्त आदमी को उपाध्यक्ष बना लेना चाहिए। लेकिन किसे? शेरज़ाद की उक़ाब-सी पैनी नज़र याद कर रुस्तम ने सोचा: "वह पहाड़ के पहाड़ काट डाले और कभी शिकायत न करे कि थक गया है..."

और सोच-विचार की शायद ज़रूरत नहीं है, शेरज़ाद को ही चुन लूं? पर इसमें ख़तरा है। लड़का हद से ज़्यादा आत्मावलम्बी है, युवा उसका अनुसरण करते हैं, ऐसे आदमी पर वह चिल्ला नहीं सकेगा। लेकिन और आगे टालना असम्भव है, ज़िला मुख्यालय जल्दी करने को कह रहा है। रुस्तम ने बुज़ुर्गों, टोली-नायकों व ज़िला मुख्यालय के कर्मचारियों से सलाह की थी। हर आदमी का अपना मनपसंद उम्मीदवार है। इस समय रुस्तम के दिमाग़ में उनकी पूरी सूची थी: "शेरज़ाद, सलमान, नजफ़। यहां तक कि तेल्ली चाची का नाम भी उसमें ठूंस दिया गया था।"

जब नजफ़ का नाम सुझाया गया, रुस्तम भड़क उठा: "लफ़्फ़ाज़ है! उसका नाम भी नहीं सुनना चाहता!" अभी उसके मस्तिष्क से यह विचार नहीं निकल पाया था कि वह अनाम पत्र नजफ़ की करतूत है।

इसी कारण के आधार पर रुस्तम ने तेल्ली चाची के नाम को भी ठुकरा दिया: "मर्द लफ़्फ़ाज़ ही शैतान है और औरत लफ़्फ़ाज़ हो, तो जीना हराम हो जाये। ख़ुदा न करे उससे कहीं रात में मुलाक़ात हो जाये – डर के मारे जान ही निकल जायेगी!"

निस्सन्देह सलमान के साथ काम करना रुस्तम के लिए सब से अच्छा था। उसकी कार्यकुशलता के बारे में सब जानते हैं, और कितना नम्र, सुशील और आज्ञाकारी है! कुछ भी करने को कहिये, फ़ौरन कहेगा: "जो हुक्म!" – फिर एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर काम समय पर पूरा कर देगा। लेकिन ज़िला मुख्यालय में सलमान का समर्थन नहीं किया गया।

इस प्रकार सूची में अकेला शेरज़ाद बच रहा था। "इस लड़के पर ज़िम्मेदारी डाली जाये, तो वह मेरा बोझ हल्का करने के लिए अपना ख़ून पसीना एक कर देगा," रुस्तम ने सोचा। वह जानता था कि शेरज़ाद को अध्यक्ष की इच्छा का पता है, और कुछ सामूहिक किसानों के कहने के अनुसार उसे रुस्तम-कीशी के साथ काम करने में कोई आपत्ति नहीं है।

यह सच था। शेरज़ाद का विचार था कि रुस्तम जैसे अध्यक्ष का

सहायक बनना बहुत सौभाग्य की बात है। उससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। रुस्तम दृढ़ इच्छा-शक्ति का विशिष्ट व्यक्ति है, – यह क्या कम है? रुस्तम को अपनी मुग़ान से अगाध प्यार था, और युवक को यह भी बहुत अच्छा लगता था। शेरज़ाद को मात्र उपाध्यक्ष का पद आकर्षित नहीं कर रहा था, वह सहर्ष टोली-नायक का काम कर रहा था, लेकिन जब उसे पार्टी सचिव चुन लिया गया, तो शेरज़ाद अपनी टोली के खेतों में होनेवाली फ़सल के लिए ही नहीं, बल्कि सारे सामूहिक फ़ार्म की फ़सल के लिए अपने को ज़िम्मेदार मानने लगा था। वह इस बात से भी चिन्तित था कि अध्यक्ष अपने पड़ोसियों से समाजवादी प्रतियोगिता करते हुए ऊंचे उत्पादन की प्रतिज्ञाएं करने का अधिक इच्छुक नहीं है।

'पोब्येदा' व ट्रक दोनों खड्ड के पास रुक गये। लकड़ी के पुल के बीचोंबीच तख़्ते हटने से काला चौड़ा गड्ढा मुंह बाये नज़र आ रहा था। दो बढ़ई एक तरफ़, खाई के पार खड़े साथ-साथ कुल्हाड़ियां चलाते हुए एक शहतीर को तराश रहे थे। उन्होंने बताया कि सुबह एक ट्रैक्टर के पहियों में फंसकर कुछ तख़्ते उखड़ गये और टुकड़े-टुकड़े हो गये।

"और कोई चारा नहीं रहा, कामरेडो," रुस्तम ने कहा, "गाड़ियां यहीं छोड़ देते हैं; और आगे पैदल चलते हैं।"

सामूहिक किसान हंसी-दिल्लगी करते पुल पारकर गये। गिज़ेतार ने छेद में झांककर देखा और उसका दिल धक से रह गया – कितना गहरा था! शेरज़ाद दौड़ता आया और आसानी से दरार को फांद गया। सलमान व यारमामेद ने अध्यक्ष को उसके अपने वज़न से झुके जा रहे तख़्ते पर होकर पार करने में मदद की।

पुल के आगे का रास्ता स्तेपी के झोंकों से सूखा हुआ था, चलना सुखद और आसान हो गया था। नजफ़ ने एक गीत छेड़ दिया, गिज़ेतार व सलमान ने उसका साथ दिया। शेरज़ाद सबसे पिछड़कर एकाग्रचित्त हो कुछ सोचता धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता चल रहा था।

"तुम्हें तो सचमुच शायर होना चाहिए था," रुस्तम ने मुड़कर कहा। "बेकार कपास की खेती करने लगे।"

"इससे दूसरे काम में अड़चन नहीं पड़ती, आदमी कपास भी चुन सकता है और गीत भी रच सकता है," सलमान ने उसका समर्थन किया।

गीत बीच में रुक गया, नजफ़ व गिज़ेतार ने चाल धीमी की और रुस्तम व शेरज़ाद का इंतज़ार किया।

अध्यक्ष के शब्द शुद्धहृदय से कहे गये थे, जब कि सलमान ने स्पष्ट रूप से मज़ाक़ उड़ाते हुए बात कही थी, यह न शेरज़ाद से छिपा रहा और न ही अन्य सामूहिक किसानों से।

"लिखो, रचो, हमारे सामूहिक फ़ार्म का अपना शायर होना चाहिए," रुस्तम ने मुंह से पाइप निकालते हुए आगे कहा। "लेकिन ऐसे गीत रचो कि सारी मुग़ान तुम्हारे साथ गाने लगे। हमारे सामूहिक फ़ार्म के वीरों का यशोगान करो।"

"क्या हमारे यहां वीर बहुत हैं?" गिज़ेतार ने पूछा।

तत्क्षण नजफ़ के कंधे की ओट से यारमामेद की लोमड़ी जैसी थूथनी बाहर निकली।

"रुस्तम-कीशी किस वीर से कम हैं? ऐसे वीर सारे जनतंत्र में एक-दो से ज़्यादा नहीं मिलेंगे।"

सलमान ने शेरज़ाद को कंधों से पकड़ लिया।

"क़सम खाओ कि रुस्तम-कीशी के बारे में नज़म लिखोगे, वरना इस दुनिया में ज़िन्दा नहीं बच पाओगे।"

"याद आया, हमारे अध्यक्ष के बारे में छापा गया था। और काफ़ी छापा गया था," शेरज़ाद ने अपने कंधों से सलमान के हाथ झटककर कहा।

"अख़बारों में? अख़बार क्या होता है... उलटा-पलटा और फेंक दिया। कारा केरेमोगलू के बारे में बाकू किताब निकली है, उनके फ़ोटो के साथ। किताब हमेशा रहेगी – पांच साल बाद भी और दस साल बाद भी!" सलमान जोश में कह उठा।

वह अध्यक्ष को ख़ुश करना चाहता था, लेकिन उसका अंदाज़ ग़लत निकला और उसने रुस्तम को केवल चिन्ता में डाल दिया। "वास्तव में ज़िले के अख़बार में केवल तीन बार उसकी प्रशंसा की गयी है," रुस्तम ने सोचा। "पर शेरज़ाद को यह भी व्यर्थ लगता है।"

उसने शेरज़ाद को सन्देह की दृष्टि से देखा और सर्वप्रथम उसके मुंह पर पड़े गहरे बल व अधमिची आंखों पर ध्यान देकर इस निष्कर्ष पर पहुंचा: "यह उपाध्यक्ष नहीं बन सकता।"

"बस, बस, सलमान, अब और तलवे न चाटो!" नजफ़ ने उलाहनाभरे स्वर में कहा। "समय आने पर सबसे योग्य लोगों के बारे में किताबें लिखी जायेंगी। और कौन योग्य होगा, हम देख लेंगे।"

सलमान को शर्मिंदा करना कठिन था।

"मेरी ज़िन्दगी की ख़ातिर लिखो, शेरज़ाद, क़लम संभालो, हमारे अध्यक्ष के बारे में किताब निकालने की ज़रूरत है, पूछो मत, यह कितना ज़रूरी है!"

शेरज़ाद को यह इतना घिनौना लगा कि वह सलमान से दूर हट गया। "जोंक की तरह क्यों लिपट गये हो? मुझे किताबें लिखना नहीं आता। मेरा काम – ज़मीन जोतना है। मैं किसान हूं! मुझे तो बस बढ़िया फ़सल काटनी चाहिए।" उसने हाथ ऐसे फैलाये जैसे उनमें मोटी, भारी, तीन आदमियों द्वारा हाथ मिलाकर उठायी जानेवाली पूली पकड़े हो।

रास्ता टेकरी की चढ़ाई पर से गुज़र रहा था। सब पोस्तीनों के बटन खोले, टोपियां उतारे धीरे-धीरे चल रहे थे। रुस्तम ज़ोर-ज़ोर से हांफ रहा था, रूमाल से माथे का पसीना पोंछ रहा था। वह उस समय यही सोच रहा था कि जब कभी कोई उसकी तारीफ़ करता है, तो शेरज़ाद व नजफ़ उसे शान्तिपूर्वक नहीं सुन पाते हैं। "अरे, मुझे क्या फ़ायदा तुम्हारी किताबों से! मुझे कोई ख़िलअत तो बख़्शी नहीं जायेगी! मैंने अच्छा किया कि इस डाही छोकरे की उपाध्यक्ष के पद के लिए सिफ़ारिश नहीं की। मैं इसे अभी अच्छी तरह नहीं जानता हूं। सलमान को ये सब तिरछी नज़रों से देखते हैं, जब कि वह इनसे कहीं ज़्यादा अच्छा लगता है..."

"सुनो, नौजवानो, बहुत हो चुका!" रुस्तम ने सख़्ती से कहा। "न तो शेरज़ाद लेखक बन सकता है, और न ही मैं – वीर।"

लम्बे-लम्बे डग भरते चले जा रहे अध्यक्ष से न पिछड़ने के लिए यारमामेद को बहुत छोटे-छोटे क़दमों से लगभग दौड़ना पड़ रहा था।

"मुझे इसका तो विश्वास नहीं है कि शेरज़ाद लेखक बन सकेगा, पर तुम, कीशी, वीर हो चुके हो!" उसने चलते-चलते हृदयस्पर्शी स्वर में कहा और रुस्तम की आंखों में झांका। "बस तुम्हारी जीवनी लिखनेवाला कोई साहसी लेखक जल्दी से जल्दी मिल जाये। पुस्तक बहुत शिक्षाप्रद साबित होगी..."

"चुप रहो! ये जो हैं," रुस्तम ने युवकों की ओर संकेत किया, "ये अफ़वाह उड़ा रहे हैं कि तुम तलवे चाटते हो!" उसने सोचा: "इज़्ज़त करना बेशक बहुत ज़रूरी है। इसके बिना काम नहीं चलता। जहां बड़ों की इज़्ज़त नहीं की जाती, अव्यवस्था, गड़बड़ हो जाती है..."

उसने एकाएक शेरज़ाद व नजफ़ के हाथों में हाथ डाले, बाक़ी हमसफ़रों

पर एक कड़ी नज़र डाली, मानो दिखा रहा हो कि बात काफ़ी गोपनीय होगी, और उन्हें एक तरफ़ ले जाकर पूछा:

"क्यों, उपाध्यक्ष का क्या हुआ? फ़ैसला तो करना ही चाहिए।"

"अपनी राय मैंने आपको कल ही बता दी थी," नजफ़ ने कहा। "हम पूरी तरह शेरज़ाद का समर्थन करते हैं। बाक़ी सब आप पर निर्भर करता है। वही कीजिये, चाचा, जैसा आपका अन्तःकरण कहे।"

रुस्तम ने ओवरकोट के बटन खोलकर तम्बाकू निकालने के लिए जेब में हाथ डाला। उसकी चेष्टाएं बहुत धीमी थीं, पर जैसे ही नजफ़ ने आगे क़दम बढ़ाया, अध्यक्ष ने उसकी आस्तीन पकड़ ली।

"अरे, अरे, जोश में मत आओ! मुझे आख़िर सलाह की ज़रूरत है। क्यों न सलमान को बना दें? तुम्हारा क्या विचार है?"

"वाह, चाचा, आपकी बात कितनी न्यायसंगत है!" यारमामेद की खनकती आवाज़ गूंज उठी। वह चुपचाप पास आकर उनकी बातचीत सुन रहा था। "इसमें सोचने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। सलमान को खेती-बारी में दिलचस्पी है और लड़का भी अक़्लमंद है। उससे किसी भी बारे में पूछिये – सब जानता है, चाहे चीन के बारे में, चाहे बर्मा के बारे में।" यारमामेद की अपनी महत्त्वाकांक्षाएं थीं। अगर सलमान उपाध्यक्ष बन जाता है, तो वह यानी यारमामेद लेखापाल बन जायेगा, यह तो साफ़ ही था। "सलमान से ज़्यादा योग्य मुझे कोई नज़र नहीं आता," उसने अन्त में कहा और राजमार्ग पर दूर निकल गये सामूहिक कर्मियों के पीछे पैर घिसटता चल पड़ा।

"और तुम क्या सोचते हो?" रुस्तम ने शेरज़ाद से पूछा।

"अगर रास्ते के हर मोड़ पर आपको नया उम्मीदवार सूझता है, तो समझदार लड़के के लिए ऐसा काम कोई आकर्षण नहीं होगा", उसने जवाब दिया।

रुस्तम ने उसकी बात का यह अर्थ लगाया: "मुझे मत लालच दो, बहका नहीं सकोगे। मैं अपने टोली-नायक के पद पर पूरी तरह ख़ुश हूं।" और वह बुरा मान गया: "कितना घमण्डी है! उपाध्यक्ष तो अभी बना ही नहीं और नाक पहले ही चढ़ाने लगा। इसे ताक़त सौंपने की देर है कि बागडोर एक ही हाथ में थाम लेगा... एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं! न ऽऽ हीं, सामूहिक फ़ार्म में मेरे अलावा दूसरा अध्यक्ष कभी नहीं

होगा!" और उसने ज़िला मुख्यालय के अधिकारियों को सलमान के नाम की पुष्टि करने के लिए मनाने का निश्चय कर लिया।

४

यारमामेद हमेशा दौड़-धूप करता रहता था और उसे देखकर अपनी पतली-पतली टांगों पर डगमगाता चलता दलदल का चाहा याद आ जाता था। उसकी गहरी भूरी गोल-गोल आंखें हमेशा भटकती रहती थीं, किसी पर नहीं टिक पाती थीं। लगता था जैसे यह व्यक्ति डरता हो कि खुली तौर पर एकटक देखते रहने से उसका भेद खुल जायेगा।

वह सबको ख़ुश करने की कोशिश में रहता था: सम्भाषी के कोट पर से धागा हटा देता, कृषिविद या मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक को अपनी मोटर में बिठा लेता, तार लेकर तारघर भागता और बिना किसी भेद-भाव के सब को देखकर मंद-मंद मुस्कराता। मानो यारमामेद पैदा ही केवल लोगों को ख़ुश करने के लिए हुआ था।

वह विशेष उत्साह के साथ रुस्तम-कीशी के इर्द-गिर्द कई वर्षों से मंडरा रहा था। उसकी नज़रें हमेशा अध्यक्ष पर टिकी रहती थीं और वह उसकी मामूली से मामूली इच्छा को भांप लेने की कोशिश करता रहता था। रुस्तम ने कार्यालय में क़दम रखा नहीं कि यारमामेद उसके हाथ से उसका फ़ील्ड-बैग लेकर किताबों की खुली अलमारी में या दासे पर रख देता। रुस्तम तम्बाकू की थैली निकाल नहीं पाता कि यारमामेद माचिस की तीली जला लेता... कभी-कभी दियासलाई उसकी उंगलियों को झुलसती यूं ही पूरी जल जाती, पर उसके चेहरे पर शिकन भी नहीं आती और वह सन्तुष्ट मुद्रा में मुस्कराता रहता मानो उसका हाथ पत्थर का हो। काश, कोई देखता कि यारमामेद कितनी श्रद्धा के साथ सुलगती तीली अध्यक्ष के पाइप के पास लाता! उस समय उसका चेहरा किशमिशवाली मीठी पाव-रोटी की याद दिलाता था, जिसे अभी-अभी भट्ठी में से निकाला गया हो और उसमें से सौंधी-सौंधी गन्ध आ रही हो।

शेरज़ाद जब कभी यारमामेद को ध्यानपूर्वक देखता, वितृष्णा से मुंह सिकोड़ लेता, और अगर रुस्तम एक बार भी अपने लेखाकार के चेहरे को ध्यान से देखता, तो वह बिना किसी कठिनाई के उसकी विनम्र मुस्कान के पीछे छिपे वर्षों के दबे द्वेष को भांप लेता, जिसे देखकर शायद भूतपूर्व सैनिक सिहर उठता।

५

शेरज़ाद गिज़ेतार के साथ-साथ चल रहा था—वह उसकी अल्पभाषिता की अभ्यस्त थी, उसके चिन्तन में बाधा नहीं डालती थी और वह इसके लिए उसका आभारी था। उसे सलमान के बारे में गम्भीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता थी कि वह उपाध्यक्ष के पद पर सामूहिक फ़ार्म को लाभ पहुंचा सकेगा या नहीं। इससे इनकार नहीं किया जा सकता था कि सलमान चुस्त व मिलनसार है और शायद सामूहिक किसानों में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा भी है। वह सामूहिक फ़ार्म की व्यवस्था की जानकारी रखता है, उसकी नज़र पैनी है और किसी भी खेत की स्थिति देखकर उपयुक्त क़दम उठा सकता है। उसमें कमियां क्या हैं? कमियां उसमें ढेरों हैं। लेकिन ऐसा कौन है, जिसमें कमियां न हों? उसकी आलोचना करते रहेंगे—उसे सुधारेंगे और उस पर बराबर नज़र रखेंगे। सलमान का विरोध करना शेरज़ाद के लिए अनुचित होगा: लोग कहने लगेंगे कि ख़ुद उसने उस पद पर दांत गड़ा रखे हैं।

इस प्रकार विश्वासप्रवण शेरज़ाद ने सलमान को पूर्णतः या लगभग पूर्णतः उचित ठहराया और मन-ही-मन यह प्रश्न रुस्तम के निर्णय पर छोड़ दिया: वह ख़ुद ही निर्णय करें और प्रबन्ध समिति के सामने रखें...

रास्ते में मोटर के हॉर्न की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी, सब ने पलटकर देखा और पीछे से नज़दीक आते ट्रक को देखकर रास्ते के किनारे पर हट गये।

रुस्तम के बराबर आकर चालक ने ज़ोर से ब्रेक लगाया और केबिन से बाहर कूदकर भयभीत मुद्रा में पूछा:

"कामरेड रुस्तमोव, क्या हुआ? आप पैदल क्यों जा रहे हैं?"

चालक 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म से था।

जब उसे स्थिति स्पष्ट की गयी, उसने आलसी बढ़इयों को ज़ोर-ज़ोर से कोसा—अगर पूरा ज़ोर लगाकर काम करें, तो आधा घंटे से ज़्यादा का काम नहीं है—और मेहमानों से ट्रक में बैठने का अनुरोध किया।

यारमामेद ने तत्क्षण केबिन का दरवाज़ा पूरा खोल दिया, आस्तीन से सीट पोंछ डाली और अध्यक्ष की ओर मुड़ा:

"तशरीफ़ रखिये, कीशी, यह आपकी सीट है।"

"तुम खुद बैठो। मैं नौजवानों के साथ जाऊंगा। उनसे बात करनी है..."

रुस्तम ट्रक की साइड पकड़कर ऊपर चढ़ा और बॉडी में कूदकर धीरे से बेंच पर बैठ गया। केवल उसके हांफने से पता चल रहा था कि उसके लिए इस तरह कूदना आसान नहीं था। ट्रक चल पड़ा, स्तेपी के प्रस्तार की हवा का थपेड़ा चेहरे पर लगा और कानों में उसकी सीटियां गूंज उठीं।

इस बात से प्रसन्न रुस्तम ने कि 'लाल झण्डा' के अपरिचित चालक ने उसे पहचान लिया, अपने पास बैठे नजफ़ के कंधे पर हाथ रखा और शान्तिपूर्वक पूछा :

"हां तो, उक़ाबो, अब सारे नौजवानों को तैयार करना काम तुम्हारा है! मुझे सारी आशा तुम्हीं लोगों से है। यह वर्ष विशिष्ट और निर्णायक है। हमें लम्बे-लम्बे डग भरकर बहुत आगे पहुंच जाना चाहिए, जैसे हमने जादूई जूते पहन रखे हों।"

"हमारे अध्यक्ष बहुत अच्छे आदमी हैं!" नजफ़ के हृदय को यह छू गया और उसने सीना फुलाकर विश्वास दिलाया :

"युवा अपने सामूहिक फ़ार्म की नाक नहीं कटायेंगे। और आप का, चाचा, काम है बुजुर्गों को प्रेरणा देना। फिर पूरा तालमेल बैठ जायेगा।"

"अगर ऐसा ही है, तो हम कारा केरेमोगलू को जरूर पीछे छोड़ देंगे!" सलमान कह उठा। "वैसे उसे ज्यादा गम्भीरता से लेने की ज़रूरत भी नहीं है!"

"छोड़ो, छोड़ो!" रुस्तम ने दोनों हाथ हिलाकर भौंहें सिकोड़ीं। "बकवास है! कारा तगड़ा है! और शैतान जैसा अक़्लमंद है।"

"तगड़ा तो है, पर आपके सामने नहीं टिक सकता," सलमान मानने को तैयार नहीं हुआ।

लेखापाल की उबाऊ ठकुरसुहाती बातों से खीजे शेरज़ाद ने उनकी बात काट दी :

"अगर हममें से हरेक केवल काम को ही जीवन समझेगा, सामूहिक फ़ार्म के भले के बारे में सोचेगा, न कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के बारे में, तो बेशक हम विजयी होंगे! लेकिन आप लोग सुबह से ख़याली पुलाव पका रहे हैं।"

चुप्पी छा गयी। हालांकि रुस्तम को सलमान के चापलूसी भरे शब्द

शेरज़ाद की न्यायसंगत कड़वी बात से सुखद लगे, पर उसने शान से अपना पके बालोंवाला सिर झुकाकर स्वीकार किया :

"हां, हमें अभी काम के बारे में बात करनी चाहिए, न कि इनाम के बारे में," उसने हवा से अस्त-व्यस्त हुई अपनी मूंछें ठीक कीं।

६

रास्ते के दोनों तरफ़ 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म के कपास के खेत फैले हुए थे।

जब ट्रक रफ़्तार कम करके गड्ढों के बीच से सावधानीपूर्वक निकलता हुआ जा रहा था, रुस्तम ने ध्यानपूर्वक समतल प्रदेश को देखकर कहा :

"सुनहली धरती है। कारा केरेमोगलू ने कपास की खेती के लिए बहुत बढ़िया ज़मीन चुनी है..."

शेरज़ाद सोचने लगा : अब ये दो स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी-अपनी व्यक्तिगत श्रेष्ठता और खेती-बारी का अनुकरणीय कौशल दिखाने के लिए संघर्ष करेंगे। अधेड़ उम्र में स्वाभिमान विशेष रूप से स्पष्ट हो उठता है। रुस्तम अपने स्वभाव के कारण कभी किसी से उन्नीस रहना पसंद नहीं करता है, हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करने की कोशिश करता है। बेशक, बीते वर्षों में रुस्तम को दूसरे और यहां तक कि तीसरे स्थान पर भी रहना पड़ा, लेकिन तब वह युद्धोत्तर वर्षों की कठिनाइयों की दुहाई देकर अपनी सफ़ाई पेश किया करता था। और लोग प्रायः उससे सहमत हो जाते थे। लेकिन अब युद्ध की दुहाई नहीं दे सकता। ज़बान से ऐसी बात निकालते ही लोग हंसने लगते हैं!

शायद अनुभवी अध्यक्ष इस समय भी पहले से ही अपनी सम्भावित हार का कोई वस्तुगत कारण खोज रहा है : "कारा केरेमोगलू की ज़मीन हमारी ज़मीन से बेहतर है।"

शेरज़ाद को यह दूरदर्शिता अच्छी नहीं लगी, उसने विरोध किया :

"हमारी ज़मीन इनसे बुरी नहीं है। कपास की खेती के कुछ टुकड़े तो यहां की ज़मीन से बेहतर भी हैं।"

रुस्तम अनुग्रहपूर्वक मुस्कराया :

"ज़मीन के बारे में तो, बेटा, तुम मुझसे पूछो। सामूहिक फ़ार्म के खेतों के चप्पे-चप्पे की जानकारी मुझे है।"

"रुस्तम-कीशी तो मुग़ान की कपास की खेती के ख़ुदा हैं!" सलमान ने हां में हां मिलाई। "परती ज़मीन पर भी इनके हाथ लगते ही लिली के फूल खिल उठते हैं..."

"सलमान बेकार ख़ुदा और लिलियों की बात कर रहा है," रुस्तम ने ठण्डी सांस ली। "लेकिन एक मामले में इसका कहना सही है। ख़राब ज़मीन नहीं होती, काश्तकार ख़राब होते हैं। मुग़ान की धरती हमसे कहती है: 'तू प्यार से मेरी संभाल करेगा, तो मैं तुझे ऊंचा उठा दूंगी। और मेरी उपेक्षा करेगा, तो तुझे बरबाद कर दूंगी। तेरी लगन का मैं तुझे दस गुना ज़्यादा इनाम दूंगी, अगर आलस करेगा, तो फिर दोष अपने को ही देना'। बेशक 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म की मिट्टी बेहतर और उपजाऊ है। लेकिन क्यों? क्योंकि उसकी संभाल मुग़ान के तुम्हारे जैसे देशभक्त करते हैं, बेटो।"

उसने अपने पास खड़े युवकों को बांहों में भरा और सन्तोषपूर्वक कहकहे लगाता हुआ उन्हें दबोचने लगा:

"बुड्ढे में नौजवानों के पूरे झुण्ड से कहीं ज़्यादा ताक़त है!"

शेरज़ाद बिलकुल ट्रक की साइड के सहारे बैठा था, अध्यक्ष के हाथ उस तक नहीं पहुंच पाये। वह सोच में डूबा गरम-गरम नम भाप छोड़ रही ज़मीन को ताक रहा था और उसे लग रहा था कि मिट्टी से वैसी ही सौंधी ख़ुशबू आ रही है, जैसी चूल्हे से निकाली गरम-गरम रोटी से।

ट्रक बस्ती के निकट पहुंचता जा रहा था। अब तक पर्णविहीन बाग़ों से घिरे घर, डेरीफ़ार्म, वाटरटावर व शेड नज़र आने लगे। रास्ते में सामूहिक किसान लाल झण्डा लिये झुण्ड बनाये खड़े थे। उनके बीच में साधारण काला कोट व पोस्तीन की कनटोपी पहने दरमियाने क़द का दुबला-पतला कारा केरेमोगलू भी था। उसकी मुखमुद्रा ऐसी थी, मानो वह ग़लती से वहां आ गया हो और भीड़ में खो जाना चाहता हो। केवल उसकी घनी सफ़ेद भौंहों से लगभग पूरी ढकी आंखों में झांककर ही कोई जान सकता था कि वह कितना व्याकुल है।

ट्रक रुका और मेहमान उल्लासपूर्ण आवाज़ों के साथ ज़मीन पर कूद गये। यारमामेद केबिन में से निकला और सब से ज़्यादा नीचे सिर झुकाकर सलाम करने लगा। सलमान ने कराह रहे रुस्तम की उतरने में मदद की, और तभी मालूम हुआ कि कारा केरेमोगलू स्वागतकारियों में, जैसा कि अध्यक्ष के लिए उचित होता है, सब से आगे सम्मानित स्थान पर मौजूद था।

"आपका स्वागत है! तशरीफ़ लाइये!" उसने सहृदय मुस्कान के साथ कहा। "आपके क़दम हमारे लिए बरकती हों, प्यारे मेहमानो!"

दोस्ताना "हुर्रा" की आवाज़ें गूंज उठीं।

अध्यक्षों ने सबसे पहले तो एक दूसरे से हाथ मिलाये, फिर चुम्बनों का आदान-प्रदान किया। चुम्बन लेने का रिवाज मेहमानों व मेज़बानों दोनों को ही पसंद आया, और वे एक दूसरे को चूमने लगे। कोई लपककर गिज़ेतार के पास भी आ पहुंचा और उसने उसका आलिंगन कर उसके ठण्डे गुलाबी कपोल पर चुमकार लिया। फिर उसने अपने को दूसरे युवक के आलिंगन में पाया और वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गयी कि उसे नजफ़ चूम रहा है।

"उफ़, कितने चालाक हो! घर पर जी भरके नहीं चूमा था!" वह हंस पड़ी और पति को धक्का दे दिया।

कारा केरेमोगलू ने अतिथियों को संस्कृति-भवन चलने का निमंत्रण दिया, उनसे समय पर पुल की मरम्मत न करा पाने के लिए क्षमा-याचना की, पर रुस्तम ने उसे तसल्ली दिलायी: मौसम बढ़िया है, थोड़ा टहलना लाभदायक होता है, फिर ऐसा तो होता ही रहता है। ओवरकोट के बटन खोले, भेड़ की खाल की टोपी गुद्दी पर खिसकाये भारी-भरकम रुस्तम मेहमानों को घेरी हुई भीड़ के साथ ज़ोर-ज़ोर से मज़ाक़ करता, हंसता चल रहा था, जब कि उसके साथ चल रहा केरेमोगलू अगोचर लग रहा था।

शेरज़ाद 'लाल झण्डा' सामूहिक फ़ार्म के अपने परिचित युवकों से दोस्ताना अंदाज़ में दुआ-सलाम करके सामूहिक फ़ार्म की नयी बस्ती को ध्यानपूर्वक देखता एक ओर चल रहा था। उसे तीर की तरह सीधा मार्ग, जिस के दोनों ओर मकान बने थे, पसंद आया। उसने कल्पना की कि वसन्त में जब बाग़ों के हरे-भरे और घने वृक्ष सारे मार्ग पर छाया करेंगे, तो कितना सुन्दर लगेगा। शेरज़ाद लड़कपन में चाचा के साथ एक बार बीज लेने 'लाल झण्डा' आया था और उसे टेढ़े-मेढ़े, लोहे की भोंडी चादरों के पैवंद लगे मटमैले घर व गंदे, गड्ढेदार, कूड़े के ढेरों से पटे रास्ते याद थे।

लेकिन 'नवजीवन' में तो आज भी वैसी ही गंदगी है, जैसी कि यहां आज से दस साल पहले थी। सामूहिक फ़ार्म सम्पन्न होता जा रहा है, जिन परिवारों में दो-तीन कामगार हैं उनके यहां कोठियां अनाज के बाहुल्य से फटी जा रही हैं, जब कि अध्यक्ष अभी तक कंजूसी बरत रहा है, कौड़ी-कौड़ी जैसे आड़े दिन के लिए बचाकर रख रहा है... मेहमानों को अपने

यहां बुलाते हैं, तो आंखें शर्म के मारे ज़मीन में गड़ जाती हैं। पटरियों पर पत्थर लगाने व रास्तों के किनारे-किनारे पोपलर के वृक्ष लगाने की फ़ुरसत नहीं है... आख़िर उसने अभी तक इन चीज़ों पर ध्यान क्यों नहीं दिया था? क्या इसका आदी हो गया है? हां, बेशक, सब गंदगी और असभ्यता के आदी हो चुके हैं और अपने को तसल्ली दिलाते रहते हैं: "हमारे पुरखे ऐसे जीते आये हैं, और हमारी क़िस्मत में भी ऐसे ही जीना बदा है..."

इस बीच अतिथियों को संस्कृति-भवन की लाल ईंटों से बनी व स्लेट की छतवाली विशाल उजली इमारत के पास पहुंचा दिया गया।

शेरज़ाद का मूड बिलकुल ख़राब हो गया। "हम यह सोचते हैं कि सारी मुग़ान में हमसे बेहतर सामूहिक फ़ार्म किसी का नहीं है, नाक चढ़ाये रहते हैं, जब कि वास्तव में हैं सबसे गये गुज़रे!" उसे अपनी बस्ती का कच्ची दीवारों के सायबान जैसा क्लब याद आ गया। शर्म आती है! क्योंकि वास्तव में देखा जाये, तो 'लाल झण्डा' 'नवजीवन' से कोई ज़्यादा सम्पन्न नहीं है।

इस बात से बेख़बर कि लड़कियां उसकी ओर कुतूहल से देख रही हैं, शेरज़ाद अपने ओवरकोट की जेबों में हथ ठूंसे, काराकूली टोपी आंखों पर खिसकाये, अन्यमनस्कता से चारों ओर से संस्कृति-भवन भागते आ रहे बच्चों व शान से आते-जाते, साफ़-सुथरी, क़रीने से कंघी की हुई दाढ़ीवाले वृद्धों को देख रहा था। लोग मेहमानों को नज़दीक से देखना चाहते थे, निस्सन्देह ख़ास तौर से रुस्तम-कीशी को। वह सब पर अपनी मनमोहक मुस्कान लुटाता भीमकाय बलूत की तरह भीड़ से ऊपर निकला लग रहा था, सीने पर हाथ रख-रखकर, झुककर सलाम कर रहा था। आख़िर भीड़ रुस्तम व अतिथियों को अपने साथ खुले दरवाज़े में खींच ले गयी।

किसी ने शेरज़ाद के कंधे पर हाथ मारा। उसने पलटकर देखा।

"उदास क्यों हो रहे हो?" गिज़ेतार ने खनकती आवाज़ में पूछा। "डाह हो रही है? सच भी है, क्लब को याद करते ही दिल दुखने लगता है: पुरानी अनाज की कोठी पर चूना पोतकर मान बैठे कि हमने बहुत बड़ा कारनामा कर लिया! चलो, कम-से-कम देख तो लें..."

बिखरे बाल, पसीने से तर-बतर यारमामेद भीड़ को चीरता उनके पास आ पहुंचा और झुर्रीदार, थके चेहरे पर भय का भाव लिये पूछा:

"कामरेड अध्यक्ष को तो नहीं देखा?"

"नहीं देखा, नहीं देखा!" शेरज़ाद दांत पीसता बोला।

उसने जैसे पहली बार देखा कि यारमामेद से चर्बी चू रही है, उसके हाथ व चेहरा ऐसे चमक रहे हैं, जैसे उन पर तेल मला गया हो, शुकनास एस्प की सूखी टहनी की तरह तनी हुई है। तिस पर यारमामेद दुबला-पतला और कमज़ोर भी था और यूंही घृणास्पद लगता था। "थू, घिनौने बिज्जू!" शेरज़ाद ने सोचा।

उसने गिज़ेतार के हाथ में हाथ डाला और उन्होंने इमारत के कई चक्कर लगाकर बेलबूटेदार नक़्क़ाशी के काम – अंगूर के गुच्छों से लदी उत्कीर्ण बेलों – से सुसज्जित किवाड़ों को देख-देखकर सराहा। जिस समय गिज़ेतार प्रवेशद्वार पर अंकित भित्तिचित्र – कपास चुनती युवतियां, तारों-से चमचमाते सफ़ेद-झक कपास के गाले, ऊपर नीला-नीला आकाश – की मन-ही-मन प्रशंसा कर रही थी, तो शेरज़ाद दीवारों की ईंटबंदी के तरीक़े व खिड़कियों तथा दरवाज़ों की लम्बाई-चौड़ाई को ध्यानपूर्वक देखता हुआ मन-ही-मन हिसाब लगा रहा था कि इस प्रकार की इमारत पर कितना पैसा खर्च किया गया होगा। निर्माण उत्कृष्ट हुआ था, यह तुरन्त स्पष्ट हो जाता था कि लोगों ने अपना समझकर बनाया है, दिल लगाकर काम किया है। प्रतीक्षा-कक्ष से नजफ़ भागा आया और उलाहना देता कह उठा:

"जहां शेरज़ाद होगा, बेशक, मेरी बीवी भी वहीं होगी!"

"तो तुम अपनी बीवी का साथ मत छोड़ो," गिज़ेतार ने कहा, "यहां की लड़कियों के पीछे मत भागो।"

"मज़ाक़ छोड़ो, मीटिंग शुरू हो रही है, तुम लोगों को अध्यक्ष-मंडल में स्थान ग्रहण करने का सम्मान प्रदान किया गया है। चलो!"

नजफ़ का स्वभाव बहुत अच्छा था: वह कभी दिल छोटा नहीं करता था, उदास नहीं होता था। वह नीन्द में भी अकसर अकारण मुस्करा पड़ता था, शायद इसी लिए इस दुनिया में ज़िन्दगी अच्छी बीत रही थी।

शेरज़ाद अपने मित्र से भिन्न था: उसके सुन्दर चेहरे पर अकसर चिन्ता व उदासी छायी रहती थी। अन्याय होता देखकर वह काफ़ी देर खिन्न रहता था, अपनी व्यथा वह किसी पर प्रकट नहीं करता था और मुखमुद्रा से शुष्क प्रतीत होता था।

इसके बावजूद नजफ़ व शेरज़ाद पक्के दोस्त थे। उनमें मित्रता केवल इस लिए नहीं हुई कि वे एक ही गली में बड़े हुए थे, एक ही कक्षा में साथ पढ़ते रहे थे, बल्कि इसलिए भी कि उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण

एक-सा था और वे हर मामले में हमख़याल थे। वे इशारे में एक दूसरे की बात समझ लेते थे, कभी-कभी तो इशारों की भी ज़रूरत नहीं पड़ती, पहली नज़र में ही समझ जाते।

इस समय भी नजफ़ मित्र की खिन्न मनःस्थिति के कारण सोचता हुआ हंसी-मज़ाक़ कर रहा था।

"मुझे अच्छी तरह पता है कि तुम उदास क्यों हो। और हर मामले में तुम्हारी बात सही है। पर, चलो, यह बातचीत घर लौटने तक उठा रखते हैं। यह जगह इसके लिए ठीक नहीं है।"

गिज़ेतार को भी शेरज़ाद का उत्साह बढ़ाने की इच्छा हुई:

"सिर तानकर क़दम बढ़ाओ, कामरेड! ऐसे, और, थोड़ा और! और तुम्हारी मुस्कान भी मई के दिन जैसी उजली होनी चाहिए। चलो, मीटिंग में चलते हैं!"

"चलो!"

और शेरज़ाद ने वास्तव में अपने को मुस्कराने के लिए मजबूर कर दिया।

छठा परिच्छेद

१

संस्कृति-भवन का प्रकाश से जगमगाता विशाल हॉल खचाखच भरा था। मोटी डोरीवाले कपड़े से मढ़ी सारी छः सौ हत्थेदार कुरसियों पर लोग बैठे थे और देर से आनेवाले दरवाज़ों के पास पिचपिच खड़े थे।

नेपथ्य में खड़ा शेरज़ाद बड़ी दिलचस्पी के साथ देख रहा था कि हॉल में क्या हो रहा है। मालूम होता था वहां सारा सामूहिक फ़ार्म जमा हो गया है। सफ़ाई से दाढ़ी बनाये हुए व सूट तथा टाइयां पहने हुए युवकों के बीच भेड़ की खाल की झबरी टोपी लगाये चौड़ी व घनी दाढ़ीवाला वृद्ध धंसा हुआ था। कुरसियों की एक पूरी क़तार में गरम जाकेटें पहने व रेशमी रूमाल बांधे स्त्रियां बैठी थीं, उनमें से अनेक की कलाइयों पर सोने की घड़ियां बंधी थीं। आगे की क़तारों में प्रौढ़ सामूहिक किसान नारियां-पुराने फ़ैशन के चुनटदार चौड़े लहंगे व कुरते पहने और सिर के रूमालों की गांठ

ठोढ़ी पर बांधे बैठी थीं। लगभग दस वर्ष पहले सामूहिक फ़ार्म की मीटिंगों में कोई स्त्री शहरी लिबास में नज़र ही नहीं आती थी। उनके रूमाल आंखों पर खिंचे रहते थे और वे पिछली क़तारों में बैठा करती थीं; भाषण वे विरले ही देती थीं, – मर्द ही बोलते रहे। सब कितना बदल चुका था। तीसरी क़तार की कोनेवाली कुरसी पर एक स्त्री काली गरम पोशाक व रेशमी उजला ब्लाउज़ पहने बैठी थी; उसके गहरे काले बालों में भली-भांति कंघी की हुई थी। शेरज़ाद की नज़र महसूस करके उसने सिर उठाया, उनकी नज़रें मिलीं, और वह स्त्री मुस्करा उठी।

वह सारे जनतंत्र की ही नहीं, सारे ट्रांसकाकेशिया की विख्यात नारी ज़ैनब क़ुलियेवा थी। कुछ वर्ष पूर्व वह 'नवजीवन' छोड़कर 'लाल झण्डा' में आ बसी थी।

ज़ैनब का पति युद्ध के अन्तिम वर्ष में मारा गया था। उस समय ज़ैनब अर्द्धशिक्षित थी। दो बेबाप बच्चों के रहने पर वह दुःख के मारे पागल होते-होते बची थी। उसे अपना भविष्य अंधकारमय नज़र आता था, अगर बच्चे न होते, तो वह आत्महत्या कर लेती। लेकिन लोग ठीक ही कहते हैं: "दिन फिरते देर नहीं लगती"। ज़ैनब का दूर का रिश्तेदार कारा केरेमोगलू उससे मिलने आया, उसने उसे तसल्ली दिलायी, 'लाल झण्डा' में आ बसने का निमंत्रण दिया और बच्चों को सामूहिक फ़ार्म के किंडरगार्टन में प्रवेश दिलवा दिया। उसे महसूस हुआ कि कोई उसका ख़याल रखनेवाला है और सैनिक की विधवा के लिए यह बहुत ख़ुशक़िस्मती की बात थी। शुरू में विधवा को दिन भर अपरिचितों के बीच खेत में काम करना कठिन लगा। वह अकेली, चादर से मुंह ढके काम करती रहती, न वह जानती थी और न ही पूछती थी कि उस का कोटा कितना है और उसके हिसाब में कितने श्रम-दिन हुए। शाम ढले वह बच्चों को सुला देती और बिना बत्ती जलाये हाथों में घुटने पकड़े बैठी रोती रहती, उसे अपना दुःख असान्त्वनीय लगता था।

एक बार शाम देर गये किसी ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। अध्यक्ष की आवाज़ आयी:

"ज़रा खोलो तो, प्यारी ज़ैनब, तुमसे बात करनी है।"

ज़ैनब ने दरवाज़ा खोला, पर वह इतनी घबरा गयी थी कि उसने बत्ती तक नहीं जलायी।

"मुझे तुमसे बस एक ही बात कहनी है, लेकिन तुम उसे गांठ बांध

लो, कभी नहीं भूलना," कारा केरेमोगलू ने कुरसी पर बैठते हुए बात छेड़ी। "आदमी के आंसू खारे होते हैं या मीठे?"

जैनब समझ नहीं पायी कि अध्यक्ष को यह जानने की ज़रूरत क्यों पड़ी है, उसने हिचकिचाते हुए जवाब दिया:

"खारे।"

"अहा, देखा! खारे पानी की सुराही तो ख़ुदा भी पूरी नहीं पी सका – उसने उसे हमारे लिए छोड़ दिया... हमारे परदादे, दादे, बाप सदियों से ग़मों के प्याले से पीते आये हैं। मुग़ान की धरती उनके बहाये हुए आंसुओं से नमकीन हो गयी। धीरज रखो, आंसुओं से कोई फ़ायदा नहीं होता। बच्चे बड़े हो जायेंगे, तो उन्हें देखकर तुम्हें अपना खोया सुख मिल जायेगा। आंसू बहाने से तुम्हारा पति लौट नहीं आयेगा। वह एक बहादुर जवान था, उसने अपना जीवन मातृभूमि के लिए बलिदान कर दिया, और हम उसे कभी नहीं भूलेंगे! तुम अपना सुख अपने काम और बच्चों के भले में समझो, बेटी, न कि आंसू बहाने में!"

वह उसके साथ पिता की तरह स्नेहपूर्वक बात करता रहा, उपदेश नहीं दिये, एक प्रकार से उसने अपनी भावनाएं उसके साथ बांटीं। जैनब ने कोई नयी बात नहीं सुनी, कोई ऐसी बात भी नहीं, जो कि ख़ुद उसके दिमाग़ में नहीं आ सकती हो, लेकिन यह कि अध्यक्ष उसके लिए चिन्तित है और उसके साथ दिली बातचीत के लिए समय निकालकर आया है, उसके दिल को छू गया... और सुबह जब उसने पुष्पित स्तेपी में निकलकर नागदौना की चरपरी गंध से सिक्त गरम हवा में सांस ली, तो अपने को स्फूर्तिमान अनुभव किया। उस बातचीत के बाद उसके जीवन में एक नया मोड़ आ गया। शनैः-शनैः वह सामूहिक किसानों की आदी हो गयी और उसकी पड़ोसियों के साथ मित्रता हो गयी। जैनब के हाथ फुरतीले थे, काम से वह घबराती नहीं थी, शीघ्र ही वह अग्रणी किसानों में पहुंच गयी, श्रम-दिनों के भुगतान में उसे इतना अनाज व पैसा मिला कि उसने तुरन्त बच्चों के लिए कपड़े व जूते ख़रीद लिये, ख़ुद भी अच्छे कपड़े पहन लिये और तकिये, परों के गद्दे व फ़र्नीचर ख़रीद लिये।

सन् उन्नीस सौ बावन में उसे समाजवादी श्रम-वीर की उपाधि से सम्मानित किया गया। जैनब ख़ुश भी हुई और घबरा भी उठी: उसे निरन्तर यही लगता कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया है, अन्य स्त्रियों की तरह ही काम किया है...

फिर एक शाम को अध्यक्ष उसके यहां आया, लेकिन इस बार जैनब के घर में उसका स्वागत आंसुओं से नहीं, हार्दिक शब्दों से हुआ, गुलाबी शेडदार लैंप का उज्ज्वल प्रकाश व्याप्त था और मेज पर स्वादिष्ट पकवान परोसे हुए थे।

"बिटिया," कारा केरेमोगलू ने गृहस्वामिनी की लायी हुई अंगूरी शराब से मुंह जुठाकर कहा, "अब तुम सुप्रसिद्ध कपास-उत्पादक हो, तुम्हारे घर ने यश पा लिया है। पर तुम हिज्जे कर-करके बड़ी मुश्किल से पढ़ पाती हो। तुमने निकल की पालिश का पलंग ख़रीद लिया है, पर घर में पाठ्यपुस्तकों के अलावा कोई और किताब नहीं है। तुम अपने आगे के जीवन के बारे में ज़रा सोच लो। तुम्हें पढ़ना चाहिए, अभी वक़्त है, बस इच्छा होनी चाहिए। सामूहिक फ़ार्म में सायंकालीन स्कूल खुल गया है, कल ही जाकर, नाम लिखा लो।"

आदमी को उचित मार्ग पर चलने के लिए आदेश देना या हुक्म चलाना नहीं, बल्कि यह काम समय पर करना ही अद्वितीय कौशल होता है, और कारा केरेमोगलू इसमें सिद्धहस्त था।

जैनब ने विशिष्ट योग्यता के साथ स्कूल पास किया। उसे टोली-नायिका बना दिया गया। वह बहुत पढ़ती थी, और पढ़ना अब उसके लिए कर्त्तव्य नहीं, बल्कि सर्वप्रथम आत्मिक आवश्यकता हो गया था।

उसके बच्चे दिन-प्रतिदिन बड़े, सुन्दर, बुद्धिमान और अध्यवसायी होते जा रहे थे। बेटी सदफ़ दसवीं कक्षा पास करने जा रही थी, बेटा रहीम नवीं में पहुंच गया था।

मीटिंग अभी शुरू नहीं हुई थी। शेरज़ाद मंच से हॉल में उतरा और उसने सादर सिर झुकाकर जैनब से हाथ मिलाया और उसके हाल-चाल पूछे।

"सब ठीक है, धन्यवाद।" वह मुस्कराकर बोली, "मुझे अभी भी आपकी लड़कपन की याद है। अब तो लम्बे-चौड़े हो गये हैं!.. बताइये, आपने समझौते के बारे में क्या सोचा है, आप अपनी कौन-सी साहसिक योजनाओं से हमें अचम्भे में डालना चाहते हैं?"

"साहसिक?" शेरज़ाद सकुचा गया: समझौते और उसके प्रेरक रुस्तम में साहस की ही तो कमी थी।

सौभाग्य से लम्बी घंटी बजी और शेरज़ाद जवाब से कतराकर अपने साथियों के पास लौट गया।

कारा केरेमोगलू ने मंच पर आकर अतिथियों से अध्यक्ष मण्डल में स्थान ग्रहण करने का अनुरोध किया। रुस्तम 'लाल झण्डा' के अध्यक्ष के पासवाली कुरसी पर धीरे से बैठ गया। रुस्तम के चेहरे पर भोली-भाली मृदुल मुस्कान व्याप्त थी, वह औपचारिक भेंट व करतल ध्वनि से बच्चों की तरह प्रसन्न हो रहा था...

जब तक मेहमान व मेज़बान अपने-अपने स्थानों पर बैठते रहे, शेरज़ाद हॉल में इधर-उधर देखता सोचता रहा। उस गांव की हर चीज़ – रास्ते, बाग़, वह सुसज्जित शानदार हॉल – उसे अपने सामूहिक फ़ार्म में संस्कृति के अभाव के बारे में सोचने के लिए विवश कर रही थी। आत्मसन्तोष का यही परिणाम होता है! सिर के नीचे गुदगुदा तकिया हो, चाहे रज़ाई छोटी हो और पैर ठिठुर रहे हों, इसकी चिन्ता किसी को नहीं है। देखना है, रुस्तम-कीशी इस बारे में क्या सोचते हैं?

इस बीच हॉल में शान्ति छा गयी, और कारा केरेमोगलू लाल बनात से ढकी मेज़ पर उंगलियां फैलाकर हाथ रखे, खड़े-खड़े नये कृषि वर्ष व कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा आज़रबैजानी किसान समुदाय के समक्ष रखी गई बृहत् योजनाओं के बारे में भाषण देने लगा। वह बिना हड़बड़ाये शान्तिपूर्वक बोल रहा था; उसकी आवाज़ का रूखापन भी कानों को सुखद प्रतीत हो रहा था, क्योंकि उसमें गम्भीर विचार अंतर्निहित था। हर किसी को उसका भाषण ध्यान से सुनने की इच्छा होती थी।

शेरज़ाद को किंचित् ईर्ष्या हुई: जनता से इस प्रकार बात केवल प्रतिभाशाली व्यक्ति कर सकता है, जिसने उसे बुद्धिमत्ता से सम्पन्न कर देनेवाला दीर्घ श्रमपूर्ण जीवन जिया हो।

"कामरेडो, क्रान्ति से पहले हमारे गांव के वासियों को 'सफ़ेद पाजामेवालों' के नाम से पुकारा जाता था," कारा केरेमोगलू ने मुस्कराकर कहा। "सौ में से निनानवे किसान सारे जाड़े और सारी गरमी हथकरघे के बुने कपड़े के पाजामों में घूमते थे – पतलून के लिए पैसे नहीं होते थे। और हमारे पड़ोसी, आज के हमारे आदरणीय अतिथि कैसे रहते थे? हमसे भी बुरी हालत में। उनका नाम 'भुक्खड़ हसनवासी' था। आप ख़ुद भी समझते हैं कि यह नाम क्या बताता है। साल में नौ महीने 'सफ़ेद पाजामेवालों' और 'भुक्खड़ हसनवालों' में भयानक लड़ाई होती रहती थी, लाठियों से भी लड़ते थे और पत्थरों से भी। दुश्मनी का कारण क्या था? पानी के कारण, चरागाह के कारण। जोत के कारण। और इस कारण भी कि हमारे ज़मींदार का बछड़ा इनके ज़मींदार के खेत में घुस गया। तो ऐसे जीते थे हम! और अब अधेड़ उम्र के लोगों को भी उस ज़माने की धुंधली याद है और वे बड़ी मुश्किल से कल्पना कर पाते हैं कि वे 'सफ़ेद पाजामेवालों' के ही वंशज हैं। हम सामूहिक किसान मुग़ान की धरती, पानी, चरागाहों और पहाड़ी चरागाहों के पूर्ण अधिकार प्राप्त स्वामी बन गये हैं।"

इन शब्दों के साथ ही तालियों की ऐसी गड़गड़ाहट हुई कि विह्वल शेरज़ाद को लगा जैसे हॉल की मोटी-मोटी दीवारें कांप उठी हों। श्रोताओं के शान्त होने के बाद कारा केरेमोगलू ने अपना अत्वरित भाषण जारी रखा:

"और 'भुक्खड़ हसनवालों' का गांव कैसा हो गया है? मुग़ान में उन्होंने ही सब से पहले सामूहिकीकरण के मार्ग पर क़दम रखे, इसी लिए तो उन्होंने अपने सामूहिक फ़ार्म का नाम 'नवजीवन' रखा है। नाम, कहने की ज़रूरत नहीं है, सम्माननीय, प्रसिद्ध और साथ ही उत्तरदायित्वपूर्ण भी है: सर्वप्रथम स्थापित सामूहिक फ़ार्म को वास्तव में नवजीवन का आदर्श होना चाहिए। अब हमारे और पड़ोसियों के बीच उस वैर की छाया भी बाक़ी नहीं रही है, जो दसियों वर्षों तक 'सफ़ेद पाजामेवालों' और 'भुक्खड़ हसनवालों' को अलग किये रहा था। अब हम हमसफ़र हैं – एक ही रास्ते से सर्वजन सुखाय आगे बढ़ रहे हैं। हमारे विचार, प्रेरणाएं और भावनाएं भी एक-से हैं। पहले किसान सिर्फ़ अपने घर, खेत के अपने टुकड़े और अपने गांव को ही जानता था। हम अभी भी अपने गांव को पूर्ववत् प्यार करते हैं, लेकिन हम यह भली-भांति याद रखते हैं कि वह हमारी महान मातृभूमि का एक कण है। हम अपने गांव को सुनियोजित और साथ ही सुन्दर बनाने का प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि हम चाहते हैं कि हमारी समस्त सोवियत मातृभूमि पुष्पित, सुवासित उद्यान में बदल जाये।"

उसने शान से सिर उठाये पास में बैठे रुस्तम-कीशी की तरफ़ थोड़ा झुककर पूछा:

"यही बात है न, पड़ोसी?"

रुस्तम अप्रत्याशित प्रश्न से चौंक उठा और उसे तुरन्त कोई उत्तर नहीं सूझ पाया; सोचने को कुछ समय पाने के लिए उसने अपनी घनी मूंछों पर हाथ फेरा, खांसा और प्रभावकारी स्वर में बोला:

"अगर हमारे हृदयों में मातृभूमि के प्रति प्रेम न होता, तो मुग़ान में सामूहिक फ़ार्म भी नहीं बने होते।"

"बिलकुल ठीक कहते हो, पड़ोसी!" कारा केरेमोगलू ने प्रशंसा की। "मातृभूमि के प्रति प्रेम ही हमारी शक्ति है। ज़रा सोचिये, कैसी है हमारी सोवियत धरती! समाजवादी प्रतियोगिता हमारी शक्ति कई गुना बढ़ा देती है, हमें एक दूसरे से बांध देती है। उदाहरण के लिए हमारा सामूहिक फ़ार्म इसमें विजयी होना चाहता है। बेशक, मैं भी यही चाहता हूं, इसके अलावा और क्या चाह सकता हूं?" कारा केरेमोगलू ने अपने से सवाल किया और सहृदयता से हंस पड़ा। "लेकिन हमें सचमुच दुःख होगा, अगर हमारे पड़ोसी हम से पिछड़ जायेंगे, अपनी प्रतिज्ञाएं नहीं पूरी कर पायेंगे। समाजवादी प्रतियोगिता का अर्थ, मेरे विचार में, एक पांत में आगे बढ़ना ही है।"

उसने फिर रुस्तम की तरफ़ झुककर हास्यमिश्रित गम्भीर स्वर में कहा:

"यही बात है न, पड़ोसी?"

रुस्तम का हाथ आदत के अनुसार पहले मूंछों पर गया और फिर पाइप की ओर बढ़ा। हॉल में सहानुभूतिपूर्ण हंसी गूंज उठी: धूम्रपान वर्जित था, और मूंछों को चाहे जितना खींचिये, वे मूंछें ही रहेंगी। रुस्तम-कीशी ने अधखड़े होकर आत्मविश्वास के साथ कहा:

"हमारा नारा है – ख़ुद भी पूरी रफ़्तार से आगे बढ़ और दोस्त की भी मदद कर और अगर दोस्त तुम से आगे निकल जाये, तो बुरा मत मानो, बल्कि क़दम बढ़ाओ – क्योंकि वह भी तुम्हारी मदद करेगा।"

"मैं इससे पूरी तरह सहमत हूं," कारा केरेमोगलू ने कहा। "और यह जानने के लिए कि हमें कौन-सी दिशा में आगे बढ़ना है, कौन-सी प्रतिज्ञाएं करनी हैं, आइये, हमारे सामूहिक फ़ार्मों के बीच होनेवाली समाजवादी प्रतियोगिता की शर्तें सुनें। पढ़कर सुनायेंगी..."

उसी क्षण रुस्तम-कीशी ने उठकर अध्यक्ष की बात पूरी कर दी:

"हमारी उपटोली-नायिका गिज़ेतार-ख़ानम।"

गिज़ेतार के कपोलों की लाली खिलते पोस्तों से होड़ कर सकती थी। वह न हॉल में गूंज उठे प्रशंसात्मक शोर को सुन रही थी, न देर तक बजती तालियों की गड़गड़ाहट को। उसने बिना नज़रें उठाये अनुबंध-पत्र इतनी तेज़ी से पढ़ना शुरू कर दिया कि फ़ौरन आवाज़ें आने लगीं:

"ज़रा धीरे, ख़ानम! आग बुझाने थोड़ ही भाग रही हैं, रफ़्तार ज़रा कम कीजिये!"

गिज़ेतार ने दम लेकर कनखियों से हॉल की तरफ़ देखा। अपने लोगों के बीच बैठे नजफ़ ने, जो पत्नी से कम घबराया हुआ नहीं था, डरावना मुंह बनाकर उसे घूंसा दिखाया। जब कि शेरज़ाद ने पीछे से उसके पास जाकर भाषण-मंच पर पानी का गिलास रखा और स्नेहपूर्वक फुसफुसाया:

"यहां तो सभी अपने हैं, घबराओ मत।"

गिज़ेतार कुछ शान्त हो गयी। आरम्भ में वह स्कूली छात्रा की तरह हर हिज्जे पर ज़ोर दे-देकर पढ़ती रही, फिर धीरे-धीरे उसमें तल्लीन हो गयी और हर वाक्य को ऐसी भावाभिव्यक्ति के साथ पढ़ने लगी, मानो उसे श्रोताओं को केवल अनुबंध-पत्र से अवगत ही नहीं कराना हो, बल्कि यह भी विश्वास दिलाना हो कि सारी प्रतिज्ञाएं बेहतर से बेहतर ढंग से पूरी करनी हों।

शेरज़ाद ने सोचा कि कारा केरेमोगलू ने बुद्धिमत्तापूर्ण एवं सारगर्भित भाषण दिया, पर अत्यन्त संकोच के साथ, जब कि गिज़ेतार समझौते का अधिकृत विवरण भी किसी कविता की तरह भावविभोर होकर पढ़ने में सफल रही। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं लगी कि भाषण-मंच से उसके जाने पर ज़ोरदार तालियां बजायी गयीं।

अध्यक्ष-मण्डल को अनुबंध-पत्र देकर गिज़ेतार फुरती से मंच से भागकर उतरी और फिर उसने पति के पास बैठकर, उसके भरोसेमंद साये में ही सांस ली और बाल ठीक किये।

"और कोई भाषण देना चाहता है? कौन-कौन-से संशोधनों का सुझाव है?" कारा केरेमोगलू ने पूछा।

सब चुप थे।

प्रतियोगिता की शर्तों पर दोनों सामूहिक फ़ार्मों की प्रबंध समितियों व टोलियों में विचार-विमर्श किया जा चुका था, इसके बावजूद मेज़बान व मेहमान कुछ सोचने लगे: कहीं कोई बात छूटी तो नहीं, सारी बातों पर ठीक से विचार कर लिया गया है? समझौते पर हस्ताक्षर करना कोई कठिन कार्य नहीं होता, पर उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा।

अन्त में हॉल में आवाज़ आयी:

"मुझे बोलने की अनुमति दीजिये!.."

ग्रौर ज़ैनब ग्रध्यक्ष के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना मंच पर चढ़ ग्रायी। शायद वह भी घबरा रही थी, पर किसी तरह ज़ाहिर नहीं होने दे रही थी।

कारा केरेमोगलू ने सादर कहा:

"बोलिये, कामरेड क़ुलियेवा!"

ज़ैनब ने, एक मिनट मौन रहकर, मानो ग्रपने को, ग्रपने विचारों को ग्रन्तिम बार जांच लेना चाहती हो, धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में बोलना शुरू किया:

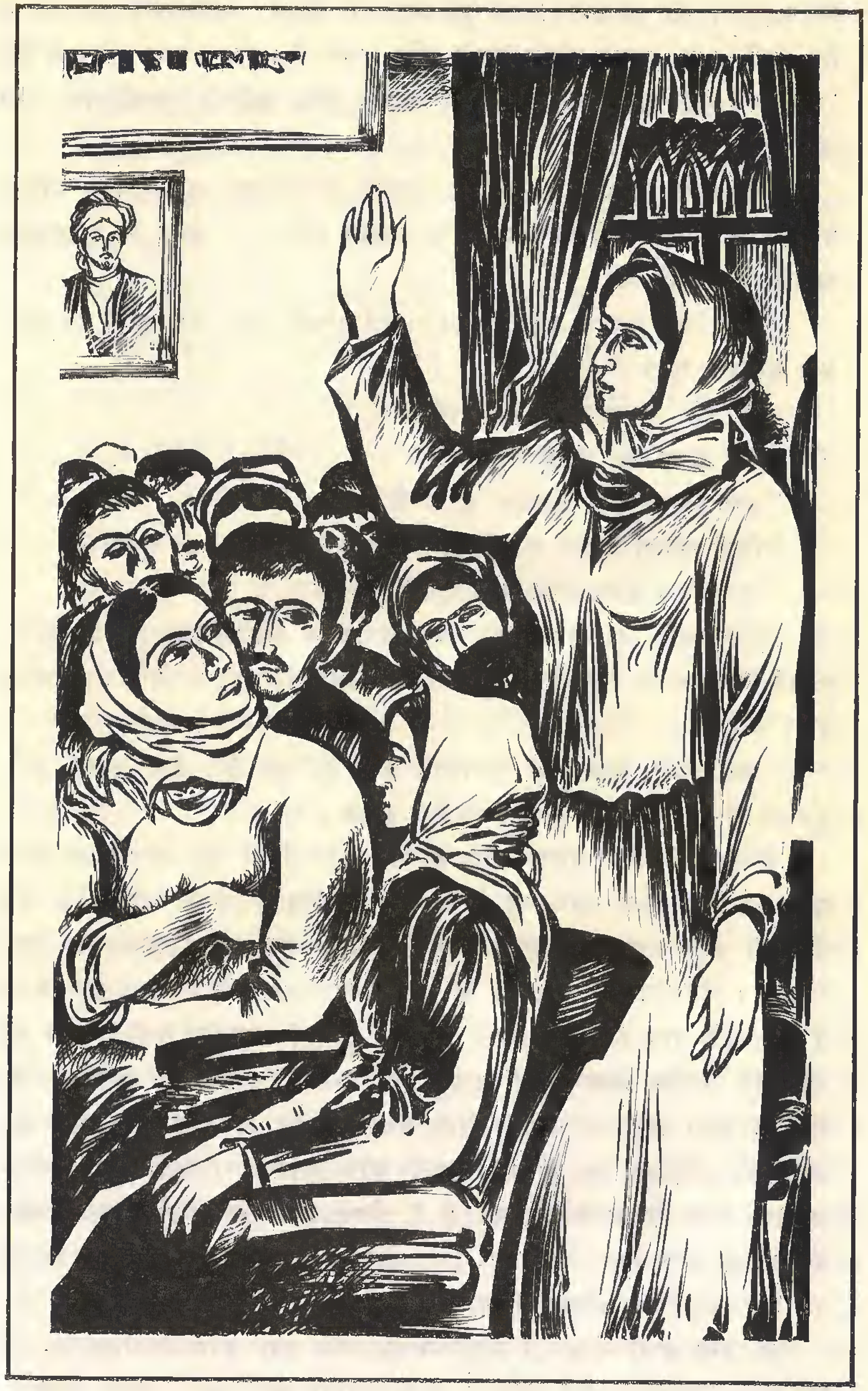
"इस में कोई सन्देह नहीं कि समझौते में कपास की पैदावार में तीस प्रतिशत की वृद्धि करने की बात सही लिखी गयी है। भला इसका विरोध किया जा सकता है? लेकिन कल हम लोगों ने टोली में सोच-विचार, सलाह-मशविरा किया ग्रौर फ़ैसला किया: हमें पैदावार में एक सौ पचास प्रतिशत की वृद्धि की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

"ऐसी फ़सल उगाई कैसे जाये? हम ग्रभी तक महीन रेशे की स्थानीय क़िस्म की कपास हर क़तार के बीच सत्तर-सत्तर सैंटीमीटर की दूरी ग्रौर हर गुच्छ में दो-तीन पौधे रखते हुए बोवाई करते ग्राये हैं। इस प्रकार एक हेक्टेयर में लगभग साठ हज़ार पौधे निकलते हैं। पिछले वर्ष हमने प्रायोगिक खेत में वर्ग-गुच्छ बोवाई पद्धति ग्रपनायी, कतारों के बीच पैंतालीस-पैंतालीस सैंटीमीटर दूरी रखी ग्रौर हर गुच्छ में—दो-तीन पौधे। तो एक हेक्टेयर में कितने पौधे हुए? एक लाख बीस हज़ार!"

"ग्रोहो! यह तो बहुत ही ग्रच्छी बात है!" हॉल में किसी ने प्रशंसा की।

"ग्रौर एक लाख बीस हज़ार पौधे होने पर फ़सल पूरी डेढ़गुना ज़्यादा हो जाती है। यही है, कामरेडो, हमारा छिपा सामर्थ्य। पिछले वर्ष इसी पद्धति से कुछ उपटोलियों ने प्रति हेक्टेयर पच्चीस क्विंटल कपास चुनी, कुछ ऐसी भी थीं, जिन्होंने तीस क्विंटल भी चुनी। 'नवजीवन' में भी ऊंची पैदावार करनेवाली उपटोलियां थीं, जिन्होंने पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर कपास चुनी। जब कि हम समझौते में लिखते हैं: 'तेईस क्विंटल प्रति हेक्टेयर...' यह ग्रांकड़ा कहां से ग्राया? रुस्तम-कीशी ने ग्रभी-ग्रभी ग्रागे बढ़ते रहने की बात कही थी। मैं ग्रापके शब्दों का स्वागत करती हूं, कामरेड रुस्तमोव! लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं ग्राती: ग्राप कैसे ग्रागे बढ़ते रहना चाहते हैं—लम्बे डग भरते हुए या रेंगते हुए?"

हॉल में हंसी गूंज उठी, कहीं-कहीं तालियां बज उठीं। शेरज़ाद ने देखा



कि बहुत से यह इंतज़ार करते हुए मुस्करा रहे थे, कानाफूसी कर रहे थे कि देखें अब रुस्तम-कीशी इससे कैसे बचते हैं। यह स्पष्ट हो गया कि 'नवजीवन' के अध्यक्ष की प्रतिष्ठा इतनी ऊंची नहीं है जितनी कि उसे लगती है।

"मैं दोनों सामूहिक फ़ार्मों में कपास की मध्यम उपज का आंकड़ा पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखने का सुझाव देती हूं," ज़ैनब ने दृढ़तापूर्वक अपनी बात पूरी की।

रुस्तम का चेहरा तमतमा उठा, वह हांफने लगा और मूंछों की नोकों को मसलने लगा।

और हॉल में आवाज़ें आने लगीं:

"ठी ऽऽ क क ऽऽ हा! .."

"हम इसका पूरा समर्थन करते हैं!"

लेकिन अध्यक्ष-मण्डल को किसी की द्वेषपूर्ण आवाज़ भी सुनाई दी:

"सुर बहुत ऊंचा खींच रही हैं!"

हमेशा कोई न कोई ऐसा अक़्लमंद चुप्पा भी निकल ही आता है, जिसमें आवाज़ों के शोर के बीच केवल छोटी-सी टिप्पणी करने का ही साहस होता है।

"क्या कभी साज़ नहीं बजाया? वैसा ही सुर है, जैसा होना है!" युवाओं में से किसी ने तत्क्षण विरोध किया।

शेरज़ाद ज़ैनब से पूर्णतया सहमत था। इन दिनों वह और नजफ़ अपने आप पर इसी लिए खीज रहे थे कि वे सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष के साथ संघर्ष में बड़ी आसानी से हार मान बैठे और न्यूनतम प्रतिज्ञाओं से सहमत हो गये। शेरज़ाद को हाल ही में नजफ़ की रुस्तम के साथ प्रबंध समिति में हुई बहस याद हो आयी, उसे अफ़सोस हुआ कि उन्होंने पूरी तैयारी नहीं की और आर्थिक आंकड़े नहीं इकट्ठे किये। फिर इसमें दोष ख़ुद शेरज़ाद का भी था। इसीलिए रुस्तम-कीशी प्रबंध समिति के बुद्धिमान, सच कहा जाये तो रूढ़िप्रिय सदस्यों को अपनी ओर झुकाकर विजयी हुआ। "हम आसान रास्ते से आगे बढ़ रहे हैं," शेरज़ाद ने रुस्तम के आत्माभिमान की उपेक्षा करते हुए, चाहे यहां हो, चाहे परायों के सामने असमाधेय विवादों को फिर छेड़ने का फ़ैसला किया।

शेरज़ाद अभी सोच ही रहा था कि उसे क्या करना चाहिए कि मंच पर नजफ़ लपककर आ पहुंचा। "अब लोगों का ग़ुस्सा भड़क उठेगा," शेरज़ाद ने सोचा। "अभी मेरा नजफ़ ज्वालामुखी की तरह आग उगलने लगेगा।"

लेकिन उसके मित्र ने चिल्लाकर केवल कुछ ही शब्द कहे:

"हमने अपने यहां सब के लिए पूरे तीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर की मांग की थी, और अब मैं कहता हूं: आपकी बात सही है, कामरेड ज़ैनब, मैं आपके पक्ष में वोट देता हूं!"

रुस्तम अत्यन्त कटुता व घृणा के साथ कह उठा:

"अपनी जगह पर जाओ, बेटा! और बैठ जाओ!"

अब संघर्ष में शेरज़ाद को भी कूद पड़ने की बारी आ गयी।

"मुझे अनुमति दीजिये!" उसने हाथ उठाया, जैसे वह अध्यक्ष-मण्डल में नहीं कक्षा में डेस्क पर बैठा हो।

"बोलिये, कामरेड शेरज़ाद!"

रुस्तम के पास से गुज़रते हुए शेरज़ाद ने देख लिया कि कैसे उसकी भौंहें हिलीं और कनपटी पर नीली नस उभर आयी। "बेशक, मेरा भाषण रुस्तम के लिए बिलकुल अप्रत्याशित होगा," शेरज़ाद ने भाषण-मंच की ओर जाते हुए सोचा। "कहीं वह ख़ुद ही तो दुविधा में नहीं पड़ा है और उसकी मदद करने का समय अभी है? क्योंकि उसने अभी-अभी हॉल को सम्बोधित करके कहा था: 'हमें आगे बढ़ना चाहिए'। और जब चिर-अभीप्सित लक्ष सामने हो, तो बूढ़े जवान हो उठते हैं और जवान – जवांमर्द।"

ये सारे विचार शेरज़ाद के मस्तिष्क में तेज़ी से कौंधे। और वह अध्यक्ष को समय रहते युवाओं के सही होने का क़ायल न कर पाने के लिए स्वयं पर क्रुद्ध होता तीखे स्वर में बोला:

"मैं कामरेड क़ुलियेवा के सुझाव से पूर्णतया सहमत हूं। हां, हमने अपने छिपे सामर्थ्य को ध्यान में नहीं रखा, हमने अग्रणी किसानों की उपलब्धियों को नहीं, बल्कि पिछड़नेवालों के विचारों को आधार बनाया। बड़े अफ़सोस की बात है कि अभी भी हमारे यहां ऐसी उपटोलियां हैं, जिनमें लोग सुस्ती से काम करते हैं, कुछ हासिल करने की इच्छा नहीं रखते, कोई नया तरीक़ा नहीं खोजते। हम उन उदासीन लोगों के प्रभाव में आ गये, उनके आगे झुक गये..."

रुस्तम मेज़पोश पर शान्तिपूर्वक माचिस की पेटी लुढ़का रहा था, लेकिन उसके गाल व गरदन लाल हो उठे थे और आंखों से चिनगारियां

छूटने लगी थीं। "अनाड़ी छोकरे की शेखी," उसने शेरज़ाद के भाषण का यही मूल्यांकन किया।

हॉल में श्रोताओं ने रुस्तम की मनःस्थिति देख ली और वे आपस में कानाफूसी करने लगे।

अन्त में रुस्तम से न रहा गया और वह भड़क उठा :

"बेटा, बार-बार लड्डू कहे से मुंह मीठा नहीं होता। लड्डू बनाने के लिए आटा, मेवा और शक्कर की ज़रूरत पड़ती है। आपकी पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर की बात भी ऐसी ही है। बात तो पचास क्विंटल की भी की जा सकती है – ज़बान हिलाना तो बड़ा आसान होता है! बहादुरी की सराहना भी की जाएगी, क्यों न की जाये! पर ज़रा पच्चीस क्विंटल चुनकर दिखाइये – कितना पसीना बहाना पड़ेगा, कितनी कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ेगी, फिर न जाने कितनी बार अपनी बेवक़ूफ़ी पर पछताना पड़ेगा!"

हॉल में भनभनाहट गूंज उठी।

शेरज़ाद हालांकि रुस्तम-कीशी के बेटे के बराबर था, पर लोगों के सामने, औपचारिक मीटिंग में उससे ऐसे बात करना अच्छा नहीं लग रहा था। 'लाल झण्डा' के सामूहिक किसान इस बात के अभ्यस्त थे कि कारा केरेमोगलू सदा विनम्र रहता था और कभी किसी से ऊंची आवाज़ में नहीं बोलता था। आज के ज़माने में परिवार में भी मिज़ाज दिखाना अच्छा नहीं होता, फिर वह भी किसी और के घर में, पराये सामूहिक फ़ार्म में।

केवल यारमामेद अगली क़तार में बैठे होकर अपनी पतली गरदन आगे निकाल और पूरा धड़ अध्यक्ष-मण्डल की तरफ़ बढ़ाकर यह प्रकट करने की इच्छा के साथ खीं-खीं करने लगा कि वह निस्सन्देह उसके साथ पूर्णतया सहमत है।

शेरज़ाद इस चापलूसी-भरी हंसी से और अधिक खीज उठा और उससे भी ज़्यादा आवेश में बोलने लगा :

"अभी पचास क्विंटल प्रति हेक्टेयर की बात करना जल्दबाज़ी होगी, हालांकि मुझे ख़ुद इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमारे यहां ऐसी फ़सलें होंगी। इस समय बात उन लोगों की हो रही है, जो योजना को जान-बूझकर न्यूनतम रखना चाहते हैं, ताकि पतझड़ में बिना संघर्ष किये अपने को विजय की बधाई दे सकें, और उन लोगों की, जो हाथ-पैर नहीं हिलाना चाहते।"

"ज़रा सुनो तो, तुम क्या मुझे आलस करने का ताना दे रहे हो?" रुस्तम ने पूछा।

"आप, कामरेड रुस्तमोव, फ़सल के लिए जुझारू संघर्ष करने से जी चुराते हैं। वरना आप जैनब क़ुलियेवा के साथ इस तरह बहस नहीं करने लगते। बल्कि आपने फ़ौरन उसका सुझाव मान लिया होता।"

सारा हॉल सांस रोके इस मुठभेड़ को देख रहा था। 'लाल झण्डा' के सामूहिक किसानों ने ऐसा नज़ारा अरसे से नहीं देखा था...

"ठी ऽऽ क है, मैं आलसी हो गया, मैं आत्मसन्तुष्ट हो गया," रुस्तम ने विनम्रता से सिर झुका लिया, "लेकिन ज़िले के अधिकारियों के बारे में तुम क्या कह सकते हो? उन्होंने समझौते को पढ़ा है और बिना कोई आपत्ति किये पूरे का अनुमोदन किया है।"

शेरज़ाद ने किन्हीं लोगों को ठोस लगनेवाली इस दलील की भी धज्जियां उड़ा दीं :

"इस का मतलब है, वहां भी ग़लती की गयी है, छिपे सामर्थ्य को ध्यान में नहीं रखा गया। अगर ज़िले के अधिकारी हमारी क्षमताओं को समझ लेते, तो समझ जाते कि उन्हें न्यूनतम योजना से सहमत नहीं होना चाहिए था।"

"बेटा, पिछले वर्ष आयोजित उपज बीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी। बी ऽऽ स!" रुस्तम ने भावाभिव्यक्ति के साथ कहा, मानो किसी को चिढ़ा रहा हो।

"प्रगति बेशक है," शेरज़ाद ने कंधे उचकाये। "हां, अगर हर साल अपने घर के बरामदे से खेत पर नज़र डाली जाये, तो हर टेकरी विशाल पहाड़ी जैसी लगेगी। लेकिन खेत में निकलकर मुग़ान की स्तेपी पर नज़र दौड़ाई जाये, तो वह टेकरी नज़र भी नहीं आयेगी। यही पच्चीस क्विंटल-वाली बात पर लागू होता है। काग़ज़ पर शंकालुओं को यह डरावनी लग सकती है, लेकिन अगर आस्तीनें चढ़ाकर काम शुरू किया जाये, तो शायद इससे भी ज़्यादा चुन लें।"

शेरज़ाद के शब्द तालियों की गड़गड़ाहट में डूब गये, जब कि जोशीला नजफ़ उचककर हाथ हिलाने और चिल्लाने लगा :

"बोलो, बोलो, दोस्त, हिचकिचाओ मत!.."

रुस्तम की आंखें चढ़ी देखकर कारा केरेमोगलू समझ गया कि मेहमान

हर तरह का फ़साद मचा सकता है और मीटिंग में अवश्य ही रंग में भंग कर सकता है।

"पन्द्रह मिनट का अवकाश!" उसने उठते हुए घोषणा की और रुस्तम-कीशी का हाथ पकड़कर उसे नेपथ्य में खींच ले गया।

३

अवकाश पन्द्रह मिनट नहीं, पूरा आधा घंटा रहा, लेकिन इतने समय में भी कारा केरेमोगलू हठी व बुरी तरह रूठे रुस्तम को समझाने में असफल रहा। मेज़बान ने उससे बुद्धिमानी से काम लेने को कहा, जनता की आवाज़ को ध्यानपूर्वक सुनने का अनुरोध किया, पर वह चिड़चिड़े बच्चे की तरह केवल एक ही रट लगाये रहा:

"मैं और तुम क्या जनता नहीं हैं? हम जनता भी हैं और जनता के नेता भी।"

खिजलाया हुआ कारा केरेमोगलू अन्त में पार्टी की ज़िला समिति में समझौते की पुष्टि पहले ही न करवा लेने के लिए खेद प्रकट करके चला गया।

उधर रुस्तम कमरे में चहलक़दमी करता सोचता रहा कि उसके विचार भाषण-मंच से यदि अन्य किसी साधारण सामूहिक किसान ने व्यक्त किये होते, तो परिणाम इसका विपरीत ही होता। क्योंकि हमारे यहां तो यही होता आया है: एक श्रोता के ताली बजाने की देर होती है कि सारा हॉल तालियां बजाने लगता है और "हुर्रा!" चिल्लाने लगता है... ऐसी हालत में ही तो किसी ठोस, प्रतिष्ठित व्यक्ति की समझदार व सचेत कर देनेवाली आवाज़ की ज़रूरत होती है। लेकिन कौन बोले? यारमामेद? उसकी खिल्ली उड़ायी जायेगी! सलमान बोले? उस पर लोग विश्वास नहीं करेंगे, कहेंगे, वह रुस्तम-कीशी का सहायक बनने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा है। गिज़ेतार? हां, वह सबसे उपयुक्त व्यक्ति होगी: वह शेरज़ाद के निकट है, सामाजिक कार्यकर्त्ता है, पेरशान के साथ बड़ी हुई है, रुस्तम के लिए सगी बेटी-सी है, यानी वह बूढ़े का अनुरोध नहीं ठुकरायेगी।

"मेरी बेटी," रुस्तम ने भीड़ में गिज़ेतार को ढूंढ़कर संक्षेप में कहा, "क्या तुमने नहीं देखा, हमें कितनी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी है? तुम चुप क्यों हो, क्या तुम्हें सांप सूंघ गया है?"

गिज़ेतार बुद्धिमान थी, वह अध्यक्ष की चाल भांपकर व्यंग्यपूर्वक मुस्करा दी।

"बोलूं आख़िर किस बारे में?"

"किस बारे में? बेधड़क भाषण-मंच पर जाकर कह दो कि हम यहां बेकार बकवास करने नहीं जमा हुए हैं।"

गिज़ेतार की आंखों में रोष झलका, उसने खिन्न होकर मुंह फेर लिया।

"नहीं, चाचा, 'लाल झण्डा' के सामूहिक किसानों ने एक गम्भीर प्रश्न रखा है, मेरी तो सलाह यही है कि बहस में उलझने से उससे सहमत होना बेहतर होगा।"

रुस्तम-कीशी ने हताश होकर ठण्डी सांस ली और वापस मंच की तरफ़ बढ़ गया।

उसी समय कारा केरेमोगलू ने घोषणा की कि मीटिंग की कार्रवाई जारी है और उसने 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया। वह हथेलियों से कसकर गाल दबाये, कोरे काग़ज़ में नज़रें गड़ाये, खिजलाता हुआ रुस्तम की भर्रायी व चिड़चिड़ी आवाज़ को ध्यानपूर्वक सुनता रहा:

"हमें फूंक-फूंककर क़दम रखना चाहिए। जो मुंह में आये कह देना—कोई अचरज की बात है? लोगों से तालियां भी बजवाई जा सकती हैं। शेरज़ाद सरीखा शरत् तक अपना वादा न पूरा कर सका, तो कोई मुसीबत नहीं आ जायेगी! पर ज़िला समिति के सामने जवाब तो उसे नहीं, मुझे, रुस्तम-कीशी को देना होगा!.. अदालत में उसे नहीं, मुझे घसीटा जायेगा, न ज़ैनब कुलियेवा को और न ही मेरे प्यारे दोस्त कामरेड कारा केरेमोगलू को।"

"मुझे तो इस मामले में न फंसाता," कारा केरेमोगलू ने भौंहें सिकोड़ कर सोचा। "अपनी फ़िक्र मैं ख़ुद कर लूंगा।"

"वह व्यक्ति भाग्यवान है जो अपने कहे हर शब्द का अर्थ जानता है! मैं थोथी बातें करने का आदी नहीं हूं! प्राण जाये, पर वचन न जाये! पिछले वर्ष उपज बीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर हुई थी और चालू वर्ष में—तेईस क्विंटल, यह क्या प्रगति नहीं हुई? इससे ज़्यादा का तो अभी सपना भी देखना बेकार होगा! मुग़ान की स्तेपी में कोई ऐसा सामूहिक फ़ार्म नहीं है, जिसने हमसे ज़्यादा तेज़ी से उन्नति की हो!" रुस्तम ने दायें

हाथ की उंगली कमरपेटी में ठूंसकर और अपनी मोटी तोंद आगे निकालकर रुखाई से कहा।

"अब छिड़ जायेगी बहस!" कारा केरेमोगलू ने सोचा। और वास्तव में उसके पीछे बैठा शेरज़ाद बोल उठा :

"आपको ग़लतफ़हमी हुई है, कामरेड रुस्तमोव, ऐसे सामूहिक फ़ार्म हैं। आपको पार्टी के निर्णय ज़रा ज़्यादा ध्यान से पढ़ने चाहिए थे।"

"पढ़े हैं, बेटा, तुमसे पहले पढ़े हैं। तुम यहां प्रचार मत करो। ज़रा हमें पछाड़नेवाले सामूहिक फ़ार्मों के नाम तो बताओ।"

"उदाहरण के लिए अगदाम ज़िले को ही लो। उन्होंने दो सौ दस हेक्टेयर से प्रति हेक्टेयर तिरपन क्विंटल कपास प्राप्त की है।"

रुस्तम ने कृत्रिम आश्चर्य व्यक्त करते हुए अपने शक्तिशाली हाथ भाषण-मंच के ऊपर उठाये।

"बेटा, हम रहते कहां हैं—अगदाम में या मुग़ान में? हमारे यहां जाड़े में घुटनों तक कीचड़ रहता है, गरमी में धूल, तपती धूप और लू, जब कि वहां तो धरती पर जन्नत है!"

इन शब्दों का श्रोताओं में से कुछ ने अनुमोदन किया।

"सच है! सच है!"

"हमारी तुलना अगदाम से क्यों करें!"

"ज़रूर तुलना की जा सकती है," कारा केरेमोगलू ने अधीरता से रुस्तम के भाषण-मंच से हटने का इंतज़ार करते हुए सोचा। "ख़ूब सोची, 'जन्नत' है!"

उसी समय सबसे पीछे की क़तार में खिड़की के पास बैठा एक आदमी भौंहों पर टोपी खींचकर चिल्लाया :

"बिलकुल ठीक है! तेईस क्विंटल से ज़्यादा नहीं लिखना चाहिए, यह अगदाम नहीं है!"

सबने पलटकर देखा, विरोध और समर्थन में एक के बाद एक आवाज़ें आने लगीं, लेकिन कारा केरेमोगलू ने अनुरोध किया :

"सुनो, नूरी के पोते, ज़रा भाषण-मंच पर आकर जो कुछ कहना है कहो।"

रुस्तम को ख़ुशी हुई कि 'लाल झण्डा' के सामूहिक किसानों में भी उसके समर्थक निकल आये हैं और वह बड़ी अधीरता से पिछली क़तार

से नूरी के पोते के उठकर आने का इंतज़ार करने लगा, जिसके गाल ऐसे लाल हो रहे थे जैसे अभी-अभी खा-पीकर चुका हो।

"मैं क्या कहना चाहता हूं? मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे अतिथि ने सब अच्छी तरह सोच-विचारकर कहा है, जब कि कामरेड कारा केरेमोगलू अपनी ख़ूबियां दिखाने के लिए बेताब हो रहे हैं, इसीलिए ज़ोर दे रहे हैं," रुस्तम के हिमायती ने जल्दी-जल्दी हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर कहा। "लेकिन कमरतोड़ मेहनत तो हमें, सिर्फ़ हमें ही करनी पड़ेगी।"

बैठे हुए श्रोताओं ने दबी ज़बान से टिप्पणियां कीं :

"ठीक कहा! शाबाश! बिलकुल सच्ची बात कही!"

लेकिन बहुत से लोग मौन रहे, मानो अभी फ़ैसला न कर पाये हों कि वे किस शिविर में जा मिलेंगे।

कारा केरेमोगलू के चेहरे की रंगत उड़ गयी, पर उसने किसी भी तरह अपनी घबराहट ज़ाहिर नहीं होने दी और संयत स्वर में कहा :

"हां, तो, नूरी के पोते, और क्या कहना चाहते हो? या तुमने अपनी बात पूरी कह ली?"

"मैंने तो अपनी बात पूरी कर ली, मेरी ज़्यादा देर बोलने की इच्छा नहीं है, इन बुज़ुर्ग ने सब अच्छी तरह सोच-समझ लिया है, पर वह नौजवान, माफ़ कीजिये, मैं उसका नाम नही जानता," नूरी के पोते ने शेरज़ाद की ओर उंगली उठायी, "ख़ाली बकवास करता है, हमें गंभीर लोगों को तो सुनते हुए भी शर्म महसूस होती है।"

और नूरी का पोता व्यंग्यपूर्ण मुस्कानों की ओर ध्यान दिये बिना, क्योंकि उसके गांववालों में से कोई भी उसे गम्भीर नहीं मानता था, अपने स्थान पर लौट गया।

रुस्तम ने विजेता की मुखमुद्रा में अपना पूरा सीना भाषण-मंच पर टिका दिया, उसे लगा कि उसे अब प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी है, उसने एकत्र लोगों में से सबको नहीं तो अधिकांश को अपनी तरफ़ खींच लिया है।

इस समय भाषण समाप्त करके हट जाना शेरज़ाद की हंसी उड़ाने और उसका मानमर्दन करना जारी रखने से अधिक लाभदायक होगा : छोकरे के मुंह लगना शर्म की बात है। रुस्तम जब पार्टी में शामिल हो चुका था, तब शेरज़ाद इस दुनिया में आया भी नहीं था। ख़ैर, मुख्य काम तो उसने कर लिया, प्रतिद्वंद्वी ने मुंह की खायी और बाक़ी बातों का फ़ैसला घर जाकर आराम से किया जा सकता है।

और रुस्तम ने शोकाकुल मुद्रा में नम्रता से कहा :

"बेटा, भाषण-मंच पर जाने से पहले तुम्हें घर पर बड़ों से सलाह कर लेनी चाहिए थी।"

"यह प्रश्न सबसे सम्बन्ध रखता है! इसलिए मिलजुलकर यहीं फ़ैसला करेंगे।"

"अरे, बेटा, तुम्हारी आवाज़ सुरीली होती, अगर तुम जिस किताब में देख रहे हो, वह कुरान होती," रुस्तम ने शेरज़ाद को मज़ाक़ में जवाब दिया। "वह कुरान नहीं है? तो फिर? घर पहुंचकर, फिर नये सिरे से बहस करेंगे... घरवाली जब तक शोरबा पका न ले, हमें मालूम कैसे हो कि उसने क्या पकाया है?"

चुटकुले का कोई असर नहीं हुआ, हॉल में भनभन होने लगी :

"हम सब एक ही घर के तो हैं।"

"आप क्या परायों के यहां आये हैं?"

"घर तो एक है, पर प्रबंध समितियां अलग-अलग हैं," रुस्तम ने मज़ाक़ किया। "मेरे हाथ प्रबंध समिति के निर्णय ने बांध रखे हैं, उसमें लिखा जो है: 'तेईस क्विंटल'। इससे ज़्यादा नहीं।" उसने ये शब्द विनम्रतापूर्वक, कुछ-कुछ शिकायत-भरे स्वर में कहे, मानो प्रबंध समिति के आसानी से न माननेवाले सदस्यों से ख़ुश न हो।

गिज़ेतार और नजफ़ को भी बहुत अटपटा महसूस हो रहा था : सारे इलाक़े में लोग अरसे से जानते थे कि रुस्तम-कीशी प्रबंध समिति की परवाह नहीं करता है, सब अपने ही मन की करता है।

रुस्तम की भूल का शेरज़ाद ने तुरन्त फ़ायदा उठाया और गुस्से में बोला :

"यही तो मुसीबत है कि आपका मान-दण्ड छोटा है, आप बस सब अपने घर के गज़ से ही नापते हैं, अपने सामूहिक फ़ार्म की सीमाओं से आगे कुछ देखना ही नहीं चाहते हैं... जब कि हम विशाल घर भी पूरा देखते हैं।"

"यह कौन-सा विशाल घर है, बेटा?"

"मातृभूमि। महान मातृभूमि – यही है हमारा विशाल घर!"

"बात बुरी नहीं कही," कारा केरेमोगलू ने आत्मविश्वास के साथ बोल रहे शेरज़ाद के शब्द दिलचस्पी से सुनते हुए सोचा कि आदमी अगर अपनी प्यारी झोंपड़ी में ही घुसा रहे, तो आज के जीवन में वह कभी नहीं

समझेगा कि उसे अपना जीवन सारे सामूहिक फ़ार्मों, सारे जनतंत्र व समस्त सोवियत जनता के जीवन में देखते हुए जीना चाहिए।

रुस्तम भी उसकी बात सुन रहा था, पर अध्यक्ष-मण्डल की ओर आधा मुड़े बैठा और अविश्वासी मुस्कान के साथ। लेकिन जब हॉल तालियों की गड़गड़ाहट और सराहनाभरी आवाज़ों से गूंज उठा, तो वह ऐसे चौंक उठा जैसे किसी ने उसे कंधों से पकड़कर नीचे घसीट लिया हो। उसने अपने समर्थकों की खोज में हॉल में नज़र दौड़ायी। गिज़ेतार व नजफ़ बुत की तरह बैठे थे, ज़ैनब क़ुलियेवा क्रुद्ध मुद्रा में अपनी अग़ल-बग़ल बैठी स्त्रियों से फुसफुसाकर कुछ कह रही थी, और वे सहमति में सिर हिला रही थीं... हां, इनसे आशा कम ही की जा सकती है। केवल यारमामेद यह प्रकट करते हुए अध्यक्ष पर से अपनी वफ़ादार नज़रें नहीं हटा रहा था कि वह मुसीबत में उसका साथ नहीं छोड़ेगा। जब कि सलमान का चेहरा बिलकुल सपाट और अभेद्य हो गया था, शायद सोच रहा था कि कौन-से किनारे पर पहुंचने के लिए हाथ-पैर मारे, किसका पक्ष ले, जिससे कि फ़ायदे में रह सके। "ऐसा आदमी मामूली-से फ़ायदे के लिए दग़ा दे सकता है!" रुस्तम के दिमाग़ में सन्देह कौंधा और उसने हाथ उठाकर श्रोताओं से शान्त रहने को कहा।

"अपना फ़ैसला बदलने और उस पर दुबारा विचार करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मर्दों का एक क़ौल होता है! मुझे एक भी क्विंटल ज़्यादा मंज़ूर नहीं!"

"अब मुझे हस्तक्षेप करना होगा," कारा केरेमोगलू ने रुस्तम के तमतमाये व पसीने से तर-बतर चेहरा लिये मेज़ पर उसके पास बैठ जाने पर सोचा।

कारा केरेमोगलू यह जानता था कि उसे दृढ़ता किन्तु शान्तिपूर्वक, बिना अपनी राय किसी पर मढ़े, एक प्रकार से सलाह व मदद मांगते हुए बोलना चाहिए।

"आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए, कामरेडो, कि रुस्तम-कीशी, शेरज़ाद व ज़ैनब के बीच इतनी उग्र बहस छिड़ी," कारा केरेमोगलू ने धीमे स्वर में बोलना शुरू किया, और हॉल में तत्क्षण शान्ति छा गयी: सामूहिक किसानों को अपने अध्यक्ष की बात सुनने में आनन्द आता था। "प्रश्न वास्तव में बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"जोश दिलाओ इन्हें, दोस्त, जोश दिलाओ!" रुस्तम कृपालु मुस्कान के साथ सोच रहा था। "तुम्हें बड़ा अच्छा मौक़ा मिल गया है!"

"यहां हमारा काम आलोचना या आत्मालोचना के बिना नहीं चल सकता। और आत्मालोचना क्या होती है? सच्ची और स्पष्टवादी बात।"

रुस्तम को महसूस हुआ कि अब बात उसी के बारे में होगी।

"मुझे तुमसे सगे भाई की तरह बात करने की इजाज़त दो..."

"नहीं, नहीं!" रुस्तम ने दोनों हाथ हिलाये। "अगर भाइयों से कुछ फ़ायदा होता, तो अल्लाह ने अपने लिए भी एक भाई बना लिया होता। लेकिन उस दानिशमंद ने न जाने क्यों अकेले ही रहने का फ़ैसला किया।"

हॉल में यारमामेद की फटी हंसी गूंज उठी। अन्य सब मौन रहे, और रुस्तम को यह स्पष्ट हो गया कि श्रोतागण उसके विनोदी स्वर को स्वीकार नहीं कर रहे हैं।

कारा केरेमोगलू कुछ देर के लिए चुप रह गया, पर उसने अपने को जल्दी ही संभाल लिया:

"भाई तो नहीं बनना चाहते, पर क्या दोस्ती से भी इनकार करते हो?"

"इसके ख़िलाफ़ मुझे कुछ नहीं कहना।"

"यही सही, शुक्रिया... दोस्त से भी बात साफ़-साफ़ करनी चाहिए।"

"घुमा-फिराकर नहीं, काम की बात करो," रुस्तम ने अनुरोध किया।

"तो लो सुनो। तुम्हारे भाषण से मुझे हमारे 'सफ़ेद पाजामेवालों' के गांव का एक पुराने ज़माने का क़िस्सा याद आ गया। हमारे यहां केरीमबेक नाम का एक आदमी रहता था। बड़ा ही ज़िद्दी था वह: अगर कह दे कि मुर्ग़ी की एक टांग होती है, तो इसका मतलब था सारी मुर्ग़ियां एकटंगी हो गयीं। अगर कह दे कि दूध काला होता है, तो इसका मतलब था कि वह काला ही होती है। सारी दुनिया उसके सामने हज़ारों किताबें खोलकर रखने को तैयार, पर केरीमबेक किसी हालत में क़ायल न हो: मुर्ग़ियां एकटंगी होती हैं और दूध काला होता है। एक बार बाज़ार में किसानों में इस बारे में बहस छिड़ गयी कि कौन-सा जानवर लाभदायक होता है: एक बोला: 'भैंसा'। 'क्यों?' 'इसलिए कि वह ताक़तवर होता है और बिना चूं किये जूआ खींचता है'। दूसरा बोला: 'गाय बहुत स्वादिष्ट मक्खन देती है'। तीसरे को भेड़ा पसंद था, वह सींक-कबाब का शौक़ीन

था। केरीमबेक सुनता रहा और एकाएक बक उठा: 'बकरा'। 'लेकिन?' 'क्योंकि मैंने यही कहा है'।"

हॉल में ठहाका गूंज उठा, जो हुआ, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

"तुमने मेरी तुलना उस बेक से की है?" हॉल में कुछ शान्ति होते ही रुस्तम ने चुनौती-भरे स्वर में कहा।

"बेशक," कारा केरेमोगलू ने शान्तिपूर्वक कहा। "ख़ुद ही सोचो, क्या हो रहा है। तुम्हें बार-बार समझा रहे हैं: 'प्रति हेक्टेयर पच्चीस क्विंटल कपास चुनी जा सकती है,'—पर तुम अपनी ही हांके जा रहे हो: 'मर्द की इज़्ज़त, मर्द का क़ौल...' देखने में तो बात बहादुराना लगती है, पर वास्तव में है वैसा ही बकरा। अपने स्वाभिमान पर आंच न आने देने के लिए सत्य की रक्षा करनी चाहिए, अपनी ग़लती मानने में शर्म नहीं महसूस करनी चाहिए। मैं सिर झुकाकर सभा के सामने स्वीकार करता हूं: दोष मेरा है, मैं अपने दोस्त रुस्तम-कीशी के इशारे पर चलता रहा, डर गया और प्रति हेक्टेयर तेईस क्विंटल पैदावार के लिए राज़ी हो गया। अब मैंने ज़रा अक़्ल दौड़ाई और देखा: ज़ैनब क़ुलियेवा की बात सही है। और मैं अनुबंध-पत्र में संशोधन करने का प्रस्ताव पेश करता हूं: हमें कपास की मध्यम, मध्यम उपज," उसने ज़ोर देकर कहा, "पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर के लिए प्रतियोगिता करनी चाहिए। और जो इससे ज़्यादा चुनेगा, उसे सम्मान मिलेगा, उसकी प्रशंसा होगी।"

"बिलकुल ठीक है! बिलकुल ठीक है!" गिज़ेतार व नजफ़ समवेत् स्वर में चिल्लाये और तालियां बजाने लगे।

"इसका स्वागत है!" शेरज़ाद ने अध्यक्ष-मण्डल से स्पष्ट स्वर में कहा।

यारमामेद भी मिमियाया: "बिलकुल ठीक है," लेकिन मुंह पीछे करके, ताकि अध्यक्ष न देख सके, पर अग़ल-बग़ल बैठे लोग सुन लें और आवश्यकता पड़ने पर इसकी गवाही दे सकें। चलते पुर्ज़े सलमान ने चेहरा रूमाल में छिपा लिया, मानो उसे छींकें आ रही हों। रुस्तम मेज़पोश का लाल ऊनी धागा खींचकर, सिर झुकाये उसकी गोली बनाता हुआ हॉल में तालियां बजना बंद होने का इंतज़ार कर रहा था।

"मेरी तुलना आप लोग बकरे से भी कर सकते हैं और उस बेक से भी, जैसी आपकी इच्छा हो, वैसा ही करें। पतझड़ आने पर मालूम पड़ जायेगा कि कौन बेक है और कौन असली मालिक," रुस्तम ने कहा।

"क़र्ज़ चाहे जितना लें हुज़ूर, चुकाना पड़ेगा ज़रूर, – हमारी यह कहावत याद है?"

हॉल में फिर शोर मच गया, कहीं-कहीं लोग पैर धमधमाने लगे।

रुस्तम में आत्मविश्वास हद से ज़्यादा था, फिर भी उसने महसूस किया कि उसकी साख ख़त्म होती जा रही है और वह किसी तरह लोगों की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

केवल यारमामेद अध्यक्ष पर चापलूसी-भरी नज़रें टिकाये मिमियाया:

"बिलकुल ठीक है!"

कारा केरेमोगलू ने सुना नहीं और मेज़ पर से आगे झुककर ज़ोर से पूछा:

"आप क्या कहना चाहते हैं?"

"इन्हें कुछ नहीं कहना है!" नजफ़ ने तत्क्षण उत्तर दिया और यारमामेद की बग़ल में बंद मुट्ठी से टहोका मारकर कुरसी पर बिठा दिया।

"कृपया यह ध्यान में रखें कि हमारी अपनी प्रबंध समिति है और अपनी साधारण सभा है। लौटकर विचार करेंगे, लोगों की राय सुनेंगे," रुस्तम ने इस तरह ठिठुरते हुए सफ़ाई पेश की मानो उसे ठण्डी हवा का झोंका लगा हो। वह चैन से नहीं बैठ पा रहा था, उसे जूड़ी-सी चढ़ी हुई थी, और उसे सबसे ज़्यादा डर इस बात का लग रहा था कि घर लौटकर शेरज़ाद व नजफ़ सारे गांव में उसकी आज की हार का ढिंढोरा पीट देंगे।

"कभी कहता है 'हम लोगों की राय सुनेंगे', कभी 'हम जनता के नेता हैं'," कारा केरेमोगलू ने सोचा। "कौन जाने, कब यह चालबाज़ी करता है और कब सच बोलता है। और यह समझते हुए कि मीटिंग लम्बी खिंच गयी है, लोग थक चुके हैं, कारा केरेमोगलू ने अनुबंध-पत्र में भिन्न-भिन्न आंकड़े दर्ज करने का सुझाव दिया: 'लाल झण्डा' के लिए पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर और 'नवजीवन' के लिए – तेईस क्विंटल।

इसी पर फ़ैसला हो गया।

समझौते की अन्य धाराओं पर कोई विवाद नहीं था, आधा घंटे में मीटिंग समाप्त हो गयी।

विनम्र व संयत कारा केरेमोगलू ने रुस्तम के हाथ में हाथ डालकर इस तरह से पूछा, मानो कुछ नहीं हुआ हो:

"हमारा संस्कृति-भवन पसंद आया?"

"बुरा नहीं है," रुस्तम बुदबुदाया और उसने तुरन्त वचन दिया कि

वह चाहे ज़िन्दा रहे, चाहे मरे, पर एक साल के अंदर-अंदर ऐसा संस्कृति-भवन बनवाकर खड़ा कर देगा, जैसा पड़ोसियों ने सपने में भी नहीं देखा होगा।

"हां, पुल की मरम्मत हो गयी है, आपकी गाड़ियां यहां हैं," कारा केरेमोगलू ने क्षमा-याचना के स्वर में कहा।

"हां, हां, अब चलते हैं!" रुस्तम को अचानक ध्यान आया। "जी भर के बातें कर लीं, एक दूसरे को गालियां दे लीं, अब जाकर काम संभालना चाहिए!"

"हमने क्या एक दूसरे को गालियां दीं? यह तो साथियों का वाद-विवाद था," कारा केरेमोगलू ने अत्यन्त अस्पष्ट मुस्कान के साथ विरोध किया।

ट्रक व 'पोब्येदा' संस्कृति-भवन के द्वार के सामने खड़े थे, लेकिन गाड़ी के आस-पास खड़े लोग शेरज़ाद से किसी और ज़ोरदार बहस में उलझे हुए थे। "फिर उसी बारे में बहस कर रहे हैं," रुस्तम ने सोचा, पर शेरज़ाद ने उसके पास आकर बिलकुल और ही बात कही: मेज़बान मेहमानों को शौक़िया कलाकारों का सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने के लिए रुकने का निमंत्रण दे रहे हैं।

"अभी-अभी तो मुझे आलस करने के लिए शर्मिन्दा कर रहे थे और अब ख़ुद ही मनोरंजन के लिए अनुरोध कर रहे हैं। हमें काम करना चाहिए न कि मक्खियां उड़ानी चाहिएं!" रुस्तम एकदम कह उठा।

"अरे, दिल बहला लेने दो इन्हें," कारा केरेमोगलू ने युवाओं की तरफ़दारी की। "और आपके लिए भी, प्यारे पड़ोसी, कंसर्ट देखना अच्छा रहेगा। कुछ अच्छा नहीं लगेगा, अगर चले गये। और शाम को मेरे यहां चिख़िर्त्मा चखने ज़रूर तशरीफ़ लाइये।"

"जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा। इसे पतझड़ तक के लिए उठा रखते हैं। शरत् का चिख़िर्त्मा और ज़्यादा स्वादिष्ट होता है। ख़ैर, लड़को, तुम जैसा चाहो करो, मैं घर चलता हूं!"

उसने मेज़बान के हाथ में अपनी चौड़ी हथेली रखी और भारी क़दमों से 'पोब्येदा' की ओर बढ़ गया। वहां यारमामेद पहले से ही दरवाज़ा खोले उसका इंतज़ार कर रहा था।

"तशरीफ़ रखिये, कामरेड अध्यक्ष!"

रुस्तम ने हिचकिचाकर सिर झुकाये खड़े यारमामेद पर घृणाभरी दृष्टि डाली। क्या वह रुक जाये? रुकना ही सबसे अच्छा होगा।

एक मिनट बाद ही वह गड्ढों पर हिचकोले खाता, कोसता हुआ गाड़ी को राजमार्ग पर ले जा रहा था और सोच रहा था: "क्या हालत हो गयी तुम्हारी, बुढ़ऊ – औरतें और छोकरे तुम्हें सीख दे रहे हैं..."

उधर पिछली सीट पर यारमामेद सिकुड़ा हुआ बैठा था।

४

जब अध्यक्ष की मोटर चली गयी, गिज़ेतार कह उठी:

"अहा, कितना अच्छा दिन है! मीटिंग भी, यह क्लब भी और चारों ओर की हर चीज़!.. लगता है जैसे हम आज तक गाढ़ी नींद में सोते रहे थे! मैं तो सचमुच विश्वास करती थी कि हमारे सामूहिक फ़ार्म ने महान सफलताएं प्राप्त कर ली हैं। योजनाएं पूरी कर लेते हैं, श्रम-दिन भी हमारे ठोस होते हैं – और कोई क्या चाह सकता है?"

"कितनी अजीब बात है कि इस बार मेरी घरवाली की बात सही है," नजफ़ ने कहा। "हमारे अध्यक्ष पर ज़ंग चढ़ती जा रही है। और उसके जीहुज़ूरियाओं," उसने एक तरफ़ अन्यमनस्कता से झुके खड़े हुए सलमान की ओर इशारा किया, "पर भी ज़ंग चढ़ रही है। जब कभी मैं आलोचना या आत्मालोचना करने लगता हूं, तो तुम ही लोग मुझे रोक देते हो। अब जैसा बोया, वैसा ही काटो। ज़रूरत से ज्यादा तारीफ़ कर दी रुस्तम-कीशी की, बहुत ज़्यादा! वह छींके, तो सारे सामूहिक फ़ार्म को छींकना चाहिए, खांसे – तो हमें भी खांसना चाहिए। ऐ सलमान! मेहरबानी करके यह बहाना मत करो कि तुम सुन नहीं रहे हो, सहमत हो मुझसे? फिर चाहे सारी बात रुस्तम-कीशी के कान में डाल देना। पर अब कहो: क्या सहमत हो?"

"मैं लेखापाल हूं, मेरे पास हिसाब-किताब रहता है, बस आंकड़े," सलमान हिचकिचाया। "वैसे मैं आलोचना और आत्मालोचना के पूरे विकास के पक्ष में हूं।"

और वह जल्दी से चलते-चलते लड़कियों से हंसी-ठिठोली की बातें करता उनकी ओर चला गया।

खड़े हुए लोगों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा: "निकल भागा!"

लेकिन शेरज़ाद, वही संयत व मितभाषी शेरज़ाद, जो रोज़ शाम को अत्यन्त मर्मस्पर्शी बैतों से गांव की शान्ति भंग कर देता था, आज पहचाना नहीं जा रहा था।

"सलमान!" उसने लेखापाल को आवाज़ दी। "हमारे यहां कितनी टोलियां और उपटोलियां हैं?"

"चार टोलियां और बारह उपटोलियां," उसने वहीं खड़े-खड़े जवाब दिया। "उनमें से एक टोली तुम्हारी भी है।"

उसने युवतियों की ओर मुड़कर हाथ फैला दिये: यहां भी चैन नहीं लेने दे रहे हैं...

"पिछले साल किस-किस की उपटोलियों ने पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर कपास चुनी थी?"

"कल, मैं कल सारी जानकारी इकट्ठी कर दूंगा। सच कहूं, तो अभी मुझे याद नहीं है। कल पूरी रिपोर्ट मिल जायेगी," सलमान ने जवाब दिया और युवतियों के हाथ में हाथ डालकर उन्हें हॉल में ले गया।

"चलो, हम भी चलें," गिज़ेतार ने सुझाव दिया। "कार्यक्रम शुरू होने ही वाला है।"

फ़ोयर में कारा केरेमोगलू ने शेरज़ाद को रोककर उसे अपने घर आने का निमंत्रण दिया। उस शाम उनके बीच क्या बातें हुईं, सलमान को कुछ मालूम न हो सका, हालांकि लौटते समय वह सारे रास्ते शेरज़ाद से उगलवाने की पूरी कोशिश करता रहा।

५

जब ऊपर तक कीचड़ में सनी पिक-अप 'नवजीवन' के कार्यालय के अहाते में घुसी, अंधेरा हो चुका था। कुत्ते रह-रहकर भौंक रहे थे, चूल्हों से धुआं उठ रहा था, कहीं दूर कूचे में उदास गीत गूंज रहा था। घरों की खिड़कियों में एक के बाद एक बत्तियां जलने लगी थीं।

क्लान्त यात्रियों ने पिक-अप से निकलकर औपचारिक ढंग से एक दूसरे से विदा ली, हर कोई जल्दी से जल्दी घर पहुंचना चाहता था। चौकीदार ने उनके पास आकर कहा कि रुस्तम-कीशी कार्यालय में उनका इंतज़ार कर रहा है।

चंचल नजफ़ भी थक चुका था। गिज़ेतार सारे रास्ते ऊंघती रही थी। शेरज़ाद भी महसूस कर रहा था कि दिन का जोश-ख़रोश अब ग़ायब हो चुका है। लेकिन क्या करते, अध्यक्ष शायद उन नौजवानों से भी कहीं ज्यादा थक चुका था।

"चलो, भई!" शेरज़ाद ने कहा और सब मौन उसके पीछे चल दिये।

कक्ष में धुंधला प्रकाश था – न जाने रुस्तम लैंप बत्ती ऊंची करना भूल गया था, या आलस कर गया था। अपना ओवरकोट व भेड़ की खाल की टोपी उसने कुरसी पर लापरवाही से पटक दी थी। अध्यक्ष गालों पर हथेलियां रखे मेज़ पर बैठा था। लगता था उसे बहुत ज़ोर की नीन्द आ रही थी, पर अपने हठ के कारण तंद्रा से जूझ रहा था।

"क्यों, बेटा, अपने व्यवहार के बारे में तुमने सोचा?" रुस्तम ने शेरज़ाद को सम्बोधित किया – उसे भूमिका पर व्यर्थ समय ख़र्च करने की इच्छा नहीं हुई।

रुस्तम के रोबदार लहजे पर शेरज़ाद को हंसी आयी, पर उसने शान्ति से उत्तर दिया :

"सोचा था।"

"तो कौन-सा निष्कर्ष निकाला तुमने, बेटे?"

"निष्कर्ष यही निकाला कि छः सौ श्रोताओं के सामने हुई उस तू-तू मैं-मैं से बचा जा सकता था।"

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं," रुस्तम ने सहमति में सिर हिलाया और दरवाज़े के पास खड़े नजफ़, गिज़ेतार और कंधे झुकाये खड़े, दुनिया की हर चीज़ के प्रति उदासीन सलमान से बैठने को कहा। "सारा दोष तुम्हारा है! तुम्हारा!" उसने घृणापूर्वक दुबारा कहा। "तुम बड़ों की इज़्ज़त के बारे में भूल गये! आज्ञापालन और नम्रता के बारे में भी। तुम लोग अपनी राय मुझे पहले भी तो बता सकते थे, सलाह मांग सकते थे। मैं भी सोच लेता, अक़्ल लड़ाता और तुम्हें साफ़-साफ़ अपनी राय बता देता।"

"नजफ़ ने आपको हमारी राय बतायी थी, पर आपने उसकी खिल्ली उड़ा दी। उसे जोकर समझ लिया," शेरज़ाद ने खीजकर कहा।

"बात इसी क़ाबिल थी : हवाई क़िले मत बनाओ! सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति ने, जो सभाओं के बीच स्वशासन का सर्वोच्च अवयव है, सच कहूं तो, बिलकुल ठीक ही रुख़ अपनाया।"

"आपको इस सर्वोच्च अवयव की आवाज़ ज़रा ज़्यादा सुननी चाहिए थी।"

"मुझे तुम्हारी सलाहों की ज़रूरत नहीं है। मेरे बाल धूप में सफ़ेद नहीं हुए हैं। मैंने अपनी सारी शक्ति सामूहिक फ़ार्म को अर्पित की है। और मैं भी कुछ समझता हूं... साफ़-साफ़ मेरे मुंह पर कहो : क्या तुम्हें विश्वास है कि बूढ़ा रुस्तम बढ़िया फ़सल उगाने के ख़िलाफ़ है?" और वह उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना बोला : "नहीं, तुम विश्वास नहीं करते। और कर भी नहीं सकते। तुम यह जानते हो कि मैं हर तरह से कपास की पैदावार बढ़ाने के पक्ष में हूं। और पैदावार कैसे, किस अनुपात में बढ़ाई जाये, यह बस मुझ पर छोड़ दो। मुझे सीख देने के लिए तुम अभी बहुत छोटे हो। पांच-एक साल में समझ जाओगे, जब जी भरके मुसीबतें भोग लोगे।"

यह सच था कि वह उनके साथ अपने बच्चों की तरह व्यवहार कर रहा था : वह उन्हें पोतड़ों में देख चुका था, उसे उनकी याद थी, जब वे बिना जांघियां पहने घूमा करते थे। वह देख चुका था कि उनके मां-बाप उन्हें गांव के स्कूल की पहली कक्षा में किस तरह छोड़ने जाते थे। वह इस बात का अभ्यस्त हो गया था कि उनके लिए उसके कहे व माता-पिता की सीख में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। वह जब स्नेह व सहृदयतापूर्वक बोलता, तब भी उसके शब्दों में उनके लिए आदेश, कड़ी आज्ञा का पुट होता था। वर्ष-प्रतिवर्ष यही होता रहा। आख़िर यह सब बदल कैसे गया?

"हमारी उम्र में आप अपने को बेवक़ूफ़ छोकरा नहीं मानते थे। और ज़िम्मेदारी से भी जी नहीं चुराते थे। फिर मेरी ग़लती क्या है?" शेरज़ाद ने पूछा।

"यही, बेटा, कि तुम ज़रूरत से ज़्यादा जोश में आ जाते हो। तुम्हारा सबसे बड़ा दोष यही है। और बड़ों का आदर नहीं करते हो। मैं जब लड़का था, तो कभी बड़ों के सामने सिर झुकाने में शर्माता नहीं था।"

"नहीं, आपकी बात सही नहीं है!" शेरज़ाद ने सोचकर कहा। "बड़ों का आदर मैं करता हूं, पर ऐसा सम्मान सिद्धान्तहीनता नहीं होता! झूठे आदर से बड़ों का भी अपमान होता है और छोटों का भी। उसका भी, जो आदर करता है, और उसका भी, जिसका आदर किया जाता है। अगर आपको दिखावटी आदर की ज़रूरत है, तो उसे ये पूरी कर देंगे," और शेरज़ाद ने यारमामेद व सलमान की तरफ़ सिर से इशारा कर दिया।

लेखाकार ने बेफ़िक्री से नाक इधर से उधर घुमायी, मानो बात उसके बारे में नहीं हो रही हो। लेखापाल खांसने लगा।

"अहा, तो नये ढंग से जीना चाहते हो? आख़िर तुम्हारे नये तौर-तरीक़े कैसे हैं?" रुस्तम ने "नये" शब्द का उच्चारण ऐसी मुखमुद्रा में किया जैसे सूरजमुखी के बीज का छिलका जीभ से चिपक गया हो।

"यही कि आदमी को हमेशा ईमानदार और सच्चा रहना चाहिए और अपने मत पर दृढ़ रहना चाहिए। ये तौर-तरीक़े इतने नये नहीं हैं," शेरज़ाद ने स्पष्ट कहा। अगर मैं अध्यक्ष के साथ सहमत नहीं हूं – तो यही कहूंगा : सहमत नहीं हूं। हां, "अगर मुझे किसी बात की सच्चाई का विश्वास हो, तो फिर चाहे मेरे अब्बा क़ब्र में से उठ आयें, किसी हालत में उससे इनकार नहीं करूंगा।"

सब वैसा नहीं हुआ, जैसे की रुस्तम को आशा थी: उद्दंड लड़के ने क्षमा नहीं मांगी, स्वयं को दोषी नहीं माना, बल्कि इसके विपरीत अध्यक्ष पर दोषारोपणों की बौछार कर दी।

"तुम्हारा भाषण पूरी लफ़्फ़ाज़ी था।"

"आप नाहक़ हमारी बेइज़्ज़ती कर रहे हैं," शेरज़ाद ने कहा और यह प्रकट करते हुए खड़ा हो गया कि बातचीत आगे जारी रखने की आवश्यकता नहीं है।

"आप बिना युवाओं के तो तेईस क्विंटल प्रति हेक्टेयर भी कभी पैदा नहीं कर सकेंगे," नजफ़ बोल उठा।

सलमान ने महसूस किया कि वह अलग कोने में नहीं बैठा रह सकता और मृदुल मुस्कान के साथ बोला:

"बड़ों का आदर होना चाहिए और जवानों को – खुली छूट। बुज़ुर्ग अपने अनुभव से लाभ पहुंचायें और जवान – साहस से। यही तो चाहिए। लड़ने का कोई कारण नहीं रहेगा।"

"मैंने तुमसे अभी राय नहीं मांगी है!" रुस्तम गुर्राया।

सलमान के सपाट चेहरे पर शिकन भी नहीं पड़ी।

गिज़ेताँर ठीक दरवाज़े के पास सोफ़े पर बैठ गयी थी, और शायद रुस्तम ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन अब उसने भी बहस में कूद पड़ने की सोच ली।

"चाचा, लेकिन आपने हमें ढंग से तो समझाया ही नहीं कि आप सहमत क्यों नहीं हैं।"

उसका हृदय दयालु था। उसकी अधिक इच्छा यही थी कि उसके पति, शेरज़ाद व अध्यक्ष में सुलह हो जाये।

"नहीं, मैं सब समझा चुका था," रुस्तम ने अपनी सफ़ेद, घनी केश-राशि को झटका दिया। "मैं ज़िले में बेवकूफ़ और 'छीदी दाढ़ीवाले' के नाम से मशहूर नहीं होना चाहता, जैसा कि पहले मेरा नाम धर चुके हैं। मेहनत करने के मेरे वैसे ही दिन थोड़े ही बचे हैं। बुड्ढे को अपने बचे-खुचे दिन इज़्ज़त के साथ जी लेने दो।"

"आख़िर मैं भी तो बूढ़ा होऊंगा," शेरज़ाद ने पहली बार रुस्तम के बालों की सफ़ेदी व झुर्रियों को देखकर सोचा। "क्या पता मुझे भी रिटायर होने और शान्ति से जीने की इच्छा हो जाये?" पर उसे फ़ौरन शर्म महसूस हुई। "नहीं, मैं कभी मांग नहीं करूंगा कि सारी जनता और समय भी मेरे साथ धीमी चाल से चलें। रुस्तम-क़ीशी का बदन ताक़तवर है, पकी भौंहों तले उनकी आंखों में चमक है, काफ़ी शरारत, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति झलकती है। इसमें इनकी उम्र का कोई क़सूर नहीं है। नजफ़ ने ज़ंग लगने की बात बेकार ही नहीं की थी। ज़ंग कभी-कभी जवान दिलों पर भी लग जाती है। इस सलमान को ही देखिये।"

"आपने यह पुस्तिका पढ़ी?" शेरज़ाद ने ज़ेब से सफ़ेद आवरणपत्रवाली मुड़ी-तुड़ी पुस्तिका निकालते हुए पूछा।

अध्यक्ष ने पुस्तिका पर नज़र डाले बिना जवाब दिया:

"पढ़ना-लिखना अकेले तुम्हें ही नहीं सिखाया गया है, पढ़ी है।"

"बहुत शिक्षाप्रद है।"

रुस्तम ने तिरछी नज़र से शीर्षक पढ़ा – "अग्रणी किसानों से सीखिये" – और उसने मन-ही-मन पेरशान व गराश को डांट लगाने का निश्चय किया: उन्हें अपने पिता के लिए इसे ख़रीदने का ध्यान नहीं आया?

"अच्छा, अब सोना चाहिए!" उसने कराहते हुए जंभाई ली। "अच्छा, अब अपने-अपने घर जाओ। एक बात साफ़ है: शेरज़ाद को एक सप्ताह पहले सचिव चुना गया था और इतने समय में ही उसके दिमाग़ चढ़ गये हैं। घमण्ड के मारे ज़मीन पर पैर ही नहीं रखता है।"

"अपना टेंटर देखे नहीं, दूसरे की फुल्ली निहारे," शेरज़ाद ने शान्त स्वर में कहा और दरवाज़ा ठेलकर बाहर चला गया।

उसके पीछे-पीछे बाक़ी लोग भी चल दिये।

सातवाँ परिच्छेद

१

रुस्तम-कीशी न शेरज़ाद के प्रति गम्भीर था, न ही नजफ़ के प्रति, वह उन्हें कुछ समझता ही नहीं था। उसे इस बात का भी विश्वास नहीं था कि ऐसे बातूनी लफ़्फ़ाज़ों को सामूहिक किसानों में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त है। उन्हें ज़िले में कोई नहीं जानता, फिर कभी ऐसे दुधमुंहों को कभी इतने विशाल व बहुउद्योगी सामूहिक फ़ार्म की ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है? ... लेकिन खर-पतवार गेहूं से ज्यादा तेज़ी से बढ़ते हैं, और बुरी ख़बर रुकती नहीं, उड़ती है। अगर शेरज़ाद व नजफ़ ने अब अध्यक्ष की हमेशा आलोचना शुरू कर दी, तो इसका परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा! इसलिए जल्दी से जल्दी उनके मुंह बंद करना जरूरी है। और बंद भी ख़ूब कसकर किये जाने चाहिएं, ताकि उनके मुंह से "हां" और "जो हुक्म" के अलावा और कोई शब्द न निकलने पाये।

रुस्तम को बहुत भूख लगी थी और वह थक चुका था। इसके बावजूद वह कार्यालय से निकलकर फ़ौरन अपने घर नहीं गया, बल्कि फाटक के पास खड़ा उदास नज़रों से कार्यालय की जानी-पहचानी इमारत को देखता रहा। बिना पलस्तर की हुई ईंटों और शीशा लगाये हुए बरामदोंवाला दुमंज़िला मकान धुंधलके में सुन्दर लग रहा था। अहाते के अंदर बने नीचे, लंबे शेड — भले ही कच्ची ईंटों के — ठोस व मज़बूत लग रहे थे। वहां ख़ूबसूरती की ज़रूरत भी क्या है, बस अनाज की कोठियां ख़ाली नहीं रहनी चाहिएं।

जब रुस्तम ने सामूहिह फ़ार्म का उत्तरदायित्व संभाला था, यहां कूड़े से पटी ऊसर ज़मीन थी। कार्यालय जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ी को बनाया हुआ था। गोदामों का तो नाम-निशान भी न था। रुस्तम का हृदय गर्व के साथ-साथ दुःख से भी ओतप्रोत हो उठा। यह सब उसने अपने हाथों से बनाया है, इस पर उसे गर्व आख़िर क्यों न हो! दुःख उसे इसलिए हो रहा था, क्योंकि नौजवान बड़े हो चुके हैं और उसकी मेहनत की क़ीमत नहीं समझते हैं।

वे भूल गये, बिलकुल भूल गये कि जब युद्ध से पूर्व रुस्तम ने सामूहिक फ़ार्म का कार्यभार संभाला था, उसमें श्रम-दिन के बदले में एक ग्राम भी अनाज नहीं दिया जाता था। अनाज की कोठियों में दाना भी न था, खुले में पड़े हार्वेस्टरों को ज़ंग लग रही थी, लोगों को ज़ोर-ज़बरदस्ती भी खेत में लाना मुश्किल था... बुज़ुर्ग लोग तब कहा करते थे, सामूहिक फ़ार्म ज़नाने हम्माम जैसा लगता है: हो-हल्ला सब करती रहती हैं, पर किस बारे में, कुछ समझ में नहीं आता। कृषि विज्ञान और सस्यावर्तन की तो सोची भी नहीं जा सकती थी।

जब पहली बार श्रम-दिन के भुगतान में प्रत्येक को तीन किलोग्राम अनाज दिया गया, सामूहिक किसान अपने अध्यक्ष को कंधों पर बिठाकर चलने को तैयार थे, जब कि वह केवल मज़ाक़ में टालता था:

"अरे, यह कोई ज्यादा है?"

कार्यालय की इमारत और शेड भी रुस्तम ने अपने डिज़ाइनों के आधार पर बनाये, वह स्वयं ही निर्माण कार्य का अधीक्षक था, रातों पूरी नीन्द नहीं ले पाता था, दिन में खाना भूल जाता था... युद्ध में जाते समय वह सामूहिक फ़ार्म को बहुत अच्छी हालत में छोड़ गया था, वह आश्वस्त था कि सैनिकों की पत्नियों व बच्चों को किसी चीज़ की तंगी नहीं रहेगी — सबके लिए काफ़ी होगा। सन् उन्नीस सौ छियालीस में सेना से लौटने पर उसने देखा कि सामूहिक फ़ार्म कमज़ोर हो गया है, डगमगा रहा है। ज़मीन के कुछ भाग में खारापन बढ़ गया है, घने खर-पतवार बोयी फ़सलों का दम घोंट रहे हैं, जब कि सामूहिक फ़ार्म का पशु-धन आधा रह गया है। विशाल सामूहिक फ़ार्म में मात्र तीन हज़ार भेड़ें और छः सौ गाय-बैल रह गये हैं: छिपटियों जैसी पतली-पतली टांगोंवाले सूखे बछड़े, पेट से चिपके थनोंवाली गायें, भूख से पागल, उदास और दिन-भर छाया में लेटे रहनेवाले बैल।

खेती की हालत तो इससे भी बदतर थी: कपास की बोवाई मात्र तीन सौ हेक्टेयर में की गयी थी, अनाज की — छः सौ पचास हेक्टेयर में, तरबूज़ व ख़रबूज़ों का टुकड़ा सिकुड़कर पन्द्रह हेक्टेयर का रह गया था और लसुन घास का — तीस हेक्टेयर।

और यह उस सहकारी संघ में, जिसमें सात सौ इकाइयां शामिल थीं, जिसको सरकारी आदेश के अनुसार सदा के लिए चार हज़ार हेक्टेयर ज़मीन मिली हुई थी! ..

रुस्तम ने जब लेखा विभाग के बही-खाते देखे, तो वह भयभीत हो उठा था : अनिवार्य सप्लाई की चुकौती के लिए तो पूरे वर्ष की आय भी कम पड़ जायेगी। तिस पर लगभग दस लाख रूबल क़र्ज़ भी रह जायेगा।

इसके बावजूद सामूहिक फ़ार्म ढहा नहीं, क्योंकि लोगों को युद्ध-पूर्व का जीवन याद था, उन्हें विश्वास था कि रुस्तम के आने पर हालत सुधर जायेगी। वे लोग भी, जो थोड़ा बहुत कालाबाज़ारी करना सीख गये थे, आकर बोले : "तुम बस काम संभाल लो, हम तुम्हें कभी दग़ा नहीं देंगे।"

उस समय रुस्तम का दिल उस बाप की तरह दुखता था, जो अपने किशोर बेटे को पराये लोगों के बीच छोड़ गया हो और लंबे बिछोड़े के बाद उसने उसे गली में फटे, मैले चिथड़े पहने देखा हो... सामूहिक फ़ार्म, वह सामूहिक फ़ार्म, जिसको उसने अपने जीवन के कई वर्ष अर्पित किये, बस बिखरनेवाला ही था : घर सूने होते जा रहे थे – बहुत से परिवार तेल-उद्योगों में जा चुके थे – ऊंचे-ऊंचे खर-पतवार कपास के खेतों का दम घोंट रहे थे, बढ़िया नसल के पशुओं के झुण्ड ख़तम हुए जा रहे थे...

उसे पार्टी की ज़िला समिति में बुलाकर वापस अध्यक्ष का पद संभालने का अनुरोध किया गया। जनता की इच्छा यही थी। रुस्तम मान गया। उसने अपने को फिर से मोर्चे पर महसूस किया : वह संघर्ष करने लगा, बुरी फ़सलों, बरबादी व ग़रीबी से वैसे ही जूझने लगा, जैसे दुश्मन से जूझता रहा था।

रुस्तम ने टोलियों व उपटोलियों का नेतृत्व अनुभवी, आदरणीय और बुद्धिमान सामूहिक किसानों को सौंपा और लोगों में सहकारी श्रम के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से उसने पहली ही मीटिंग में घोषणा की :

"आप मुझसे केवल 'हां' कहिये और काम में मदद कीजिये, और मैं आपकी कोठियां अनाज से भर दूंगा!"

उसने सर्वप्रथम मुग़ान के लिए निर्णायक फ़सलों – कपास व अनाज – की खेती पर ज़ोर दिया, लवणमय ज़मीन के टुकड़ों की धुलाई कराने लगा, खेतों में उगी घनी झाड़ियों को उखड़वाने लगा।

रुस्तम की साख पर बैंक ने उधार देने की जोखिम उठायी। सामूहिक फ़ार्म ने कम अश्वशक्ति के दो ट्रैक्टर तथा तीन मोटर ख़रीद लिये, और अब वे स्वयं ही घास की कटाई और हलका हेंगा फेरने का काम करने में सक्षम हो गये।

सन् उन्नीस सौ पचास तक रुस्तम के यहां कपास की खेती सात सौ

हेक्टेयर में और अनाज की – एक हज़ार पांच सौ हेक्टेयर में होने लगी थी; उन्हें अकेले अंगूर के बग़ीचों से पांच लाख रूबल का लाभ हुआ था। गड़रिये भेड़ें गिनते-गिनते थककर चूर हो गये, और जब उन्हें गिन लिया, तो मालूम पड़ा कि भेड़ें और मेढ़े आठ हज़ार हैं। पशुपालन फ़ार्मों में गाय-बैल – एक हज़ार पांच सौ थे। पार्टी की ज़िला समिति और ज़िला कार्यकारिणी में भी लोग रुस्तम की प्रशंसा करते-करते नहीं अघाये, उसे औपचारिक सभाओं के अध्यक्ष-मंडल में अवश्य चुना जाता था, वह इसका इतना अभ्यस्त हो गया था कि चुनाव होने तक प्रतीक्षा किये बिना ही मंच पर पहुंच जाता था... अनेक स्त्रियां, विशेषतः विधवाएं, जो रुस्तम के लौटने पर अभाव का नाम तक भूल गयी थीं, उसे ऐसे देखती थीं, जैसे वह पैग़म्बर हो : वे उसका हर शब्द ध्यान से सुनती थीं, ख़ुद भी दुआ करती थीं और अपने बच्चों को भी उसकी सेहत के लिए ख़ुदा से दुआ करने को मजबूर करती थीं।

तो क्या यह सब उसने स्वयं हासिल किया था? उसकी जन्म से मृदु, सहृदय आवाज में आज्ञासूचक स्वर सुनाई देने लगे। उसने अपनी यह आदेश देने की आदत क्या सार्वजनिक लाभ के लिए नहीं डाली थी? अगर उसे ओवरकोट पहनाया जाता था, उसके लिए कुरसी खिसकाकर रखी जाती थी, माचिस की तीली जलाकर उसका पाइप सुलगाया जाता था या उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता था, तो क्या वह इसका पात्र नहीं हो गया था? वह लोकहित के लिए प्रयास करता था, अपना एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाता था, तो क्या हुआ, लोग उसका भी ख़याल रखें...

अब शेरज़ाद आख़िर क्या चाहता है? उसकी बातों का असली अर्थ है : "एक तरफ़ हो जाओ, रुस्तम-कीशी, रास्ते से हट जाओ, हमारे लिए जगह ख़ाली कर दो, चूज़े अब मुर्ग़े हो गये हैं!" उस अध्यक्ष का एहसान इसी तरह चुका रहे हैं, जिसने युद्ध से पूर्व सामूहिक फ़ार्म अपने पैरों पर खड़ा किया, युद्ध के बाद उसे दूसरा जीवन प्रदान किया, जो इस समय भी सारे फ़ार्म का बोझ अपने कंधों पर संभाले हुए है, जिसने शेरज़ाद, नजफ़, गिज़ेतार और बहुत से दूसरों को पाल-पोसकर बड़ा किया...

रुस्तम अत्यन्त कष्टदायी आश्चर्य के साथ यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि उसके शिष्य, जिन्हें वह अपने सगे बच्चों की तरह प्यार करता था, उससे असन्तुष्ट क्यों हैं। वह उन्हें प्यार करता था और यही

कारण था कि युवाओं के साथ हुए विवाद से वृद्ध को बहुत कष्ट हो रहा था।

"क्या तुम नहीं देखते हो कि मैं ख़ुद दिन-रात चैन से नहीं बैठ पाता हूं, मैंने अपना सारा जीवन लोगों को समर्पित कर दिया है?!"

लेकिन रुस्तम को केवल युवाओं पर ही क्रोध नहीं आ रहा था, मन-ही-मन वह स्वयं से भी इतना सन्तुष्ट नहीं था। लगता है कहीं न कहीं कोई ग़लती हुई है... लेकिन कौन-सी ग़लती हुई है? रुस्तम यह नहीं जानता था। क्या उसे पैदावार के बारे में बहस में नहीं उलझना चाहिए था? मात्र इस विचार से ही रुस्तम को सीने में टीस-सी उठती महसूस होती, जैसे कोई उफनता चश्मा चट्टान को फोड़कर निकल आया हो। निश्चय ही उसे अपनी भूल सुधारनी पड़ेगी, लेकिन यह सारा काम उसे ढंग से, बहुत सफ़ाई से करना होगा, जिससे जनता की दृष्टि में उसकी साख न बिगड़े, उसके सफ़ेद बालों की लाज रह जाये!..

भेड़ की खाल के कोट में लिपटे चौकीदार ने फाटक के पास निश्चल खड़े अध्यक्ष के पास आकर उसकी ओर आश्चर्य से देखा, अपनी गुद्दी खुजलायी और फिर पहरा देने गया।

चन्द्र-कान्ति कार्यालय के द्वार-मण्डप से शेडों तक पहुंच गयी थी और ज़मीन को रुपहले नीले अलंकरणों से सजा रही थी।

कूचे में कुत्ते रह-रहकर भौंक रहे थे, फिर अचानक जैसे उन्हें आदेश दिया गया और वे एकदम चुप हो गये: शायद वे रात में राह चलते अपने परिचित को पहचान गये थे।

रुस्तम ने चांदनी में नहाये अपने घर पर नज़र डाली और सोचा कि समाचारपत्रों में उसकी प्रशंसा यूं ही नहीं की गयी थी। उसे उनके मुखपृष्ठों पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'नवजीवन' के अध्यक्ष की मूल्यवान पहलक़दमी, सक्रियता और संगठनकारी योग्यता का गुणगान याद हो आया। जनतंत्र के समाचारपत्र में एक बार रुस्तम रुस्तमोव का लेख भी छपा था। यह सच है कि उसे लिखा था खुले कॉलर की रेशमी क़मीज़वाले एक बेतकल्लुफ़ युवक ने। उसने रुस्तम के साथ कोई बीस मिनट बातचीत की, आंकड़े और सूचनाएं सलमान से प्राप्त किये, शाम को अध्यक्ष के यहां डटकर चिख़िर्त्मा खाया, मादक पेयों का सेवन करना भी नहीं भूला, ख़ैर कुछ भी हुआ हो, लेख प्रकाशित तो रुस्तम-कीशी के नाम से हुआ था!

लगता था जैसे इस जाड़े के दौरान कुछ नहीं बदला है। आख़िर

नौजवान लोग रुस्तम की पुरानी सेवाओं की कोई क़ीमत न आंकते और "मशीनरी... मशीनरी..." की रट लगाते उस पर क्यों टूट पड़े हैं?..

"मैं मशीनरी के मामले में, लड़को, तुमसे कम नहीं समझता हूं," रुस्तम ने सोचा। "मैं मोर्चे पर भी देख चुका हूं कि मशीनरी क्या होती है। लेकिन मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन को मैं सामूहिक फ़ार्म का धन मुफ़्त में नहीं देना चाहता... मशीनों से काम करने के बाद कपास के खेतों की हालत मैंने देखी है--आधी फ़सल पौधों पर ही रह गयी थी। कपास चुनने के लिए अच्छी मशीनें अभी नहीं बनी हैं!"

इन विचारों ने रुस्तम को ज़ोर से मुट्ठियां कसने को मजबूर कर दिया। "किसान के घर की ख़ातिर रोटी का टुकड़ा बचाने के लिए मैं अपनी जगह से टस से मस नहीं होऊंगा, चाहे सारा इलाक़ा मेरे ख़िलाफ़ क्यों न हो जाये!" उस क्षण उसको पूरा विश्वास था कि उसके पीछे सारी दुनिया देखे और मुग़ान के अच्छे व बुरे दिन देखनेवाले सामूहिक किसान चट्टान की तरह खड़े हो जायेंगे। नहीं, जनता मुझे दग़ा नहीं देगी, जनता हमेशा अपने रक्षकों और ज़बानी जमा-ख़र्च से आग भड़कानेवालों में अन्तर कर सकती है...

"क्या इस सब का निर्माण मैंने नहीं किया है?" रुस्तम ने मालिक की तरह शेडों, अनाज की कोठियों, कार्यालय की इमारत और चांदनी में नहाये अपने चिर-परिचित खेतों पर नज़र डालकर अपने से फिर पूछा...

"बिलकुल सच है!" रात ने सहमति प्रकट की। "ऐसा ही है, सिर्फ़ झूठे लोग ही तुम्हारे महान कार्यों को नकार सकते हैं!"

"कौन है?" रुस्तम ने चिन्तन से जागकर अपने तेज़ी से धड़कते दिल पर हाथ रखकर पूछा।

"आपकी परछाईं," यारमामेद ने द्वार-मण्डप से निकलकर कहा। "मैं क़यामत तक तुम्हारे साथ रहूंगा। मैं सच्ची बात की तसदीक़ करने के लिए बोल उठा!"

"तुम यहां कैसे आ पहुंचे?"

"आप सोचते हुए बोल रहे थे, और आपके बुद्धिमत्तापूर्ण चिन्तन को भंग करने का साहस मुझे नहीं हुआ।"

"फ़ौरन घर जाओ," रुस्तम ने आदेश दिया। "मैं मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन को टेलीफ़ोन नहीं कर पा रहा हूं, मालूम नहीं कर पा रहा हूं कि कल सुबह वसन्त की बोवाई के लिए खेत में दूसरा ट्रैक्टर पहुंचेगा या नहीं।"

"आप इजाज़त दें, मैं फ़ोन कर देता हूं," लेखाकार ने सुझाव दिया।

"तुमने खाना खा लिया?"

"क्या कह रहे हैं आप!" यारमामेद बुरा मान गया। "आप जब अभी तक अपने काम पर डटे हैं, तो मेरे गले में एक गस्सा भी नहीं उतर सकता!.. चाहे भूख के मारे मेरी आंतें एंठ जायें, पर मैं आपसे पहले कार्यालय से नहीं जाऊंगा!"

यह चापलूसी भरी बात अत्यन्त निर्लज्जतापूर्ण थी। यारमामेद ने ख़ुशामदी को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की, पर अडिग, ईमानदार रुस्तम उसकी दुराग्रहपूर्ण सेवाओं से इनकार नहीं कर सका।

ज़रा रुस्तम से पूछकर देखिये, क्या उसे चापलूस पसंद हैं, – वह पूरी ईमानदारी से कहेगा कि वह ख़ुशामदियों को अपने पास भी नहीं फटकने दे सकता... देखिये, जिन्दगी में क्या-क्या न होता है।

"जाओ, फ़ोन कर दो," अध्यक्ष ने शुष्क स्वर में कहा और यारमामेद को द्वार मण्डप में जाने दिया।

वह सिगरेट सुलगाकर अपने कक्ष में लेखाकार की मीठी-मीठी गुटरगूं सुनने लगा:

"लगता है जैसे संचार-अधिकारी के यहां शादी की ख़ुशियां मनाई जा रही हैं – सुरनाई और खंजरी की मिली-जुली आवाज़ें आ रही हैं!.. आपरेटर, आपरेटर, मुझे संगीत की ज़रूरत नहीं है, मेरा फ़ोन निदेशक से मिला दो... क्या? बाकू से वापस नहीं लौटे हैं?.. तो फिर मेहरबानी करके शराफ़ोगलू से मिला दो!.. आपको उनको जगाना पड़ेगा, आपरेटर, मैं कामरेड रुस्तमोव का सचिव बोल रहा हूं... हां, हां... सुना है उसके बारे में?.. हां, तो कामरेड रुस्तमोव को कामरेड शराफ़ोगलू से फ़ौरन बात करनी है!.."

"ऐ पहलवान," रुस्तम ने कक्ष में घुसकर टेलीफ़ोन का चोंगा छीनते हुए कहा, "खड़े-खड़े पैर दुख जायेंगे, बैठ जाओ!"

यारमामेद ही-ही करने लगा, पर उसका अनादर न हो इस डर से बैठा नहीं।

"सलाम, कामरेड शराफ़ोगलू। सेहत कैसी है?.. अरे, अरे, तुम्हें बीमार तो नहीं पड़ना चाहिए!" रुस्तम ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा। "सच कहूं, तो आज 'लाल झण्डा' में तुम्हारे न रहने पर मुझे आश्चर्य हुआ... हमने हस्ताक्षर कर दिये!.. सब ठीक है," रुस्तम खुले दरवाज़े

पर तिरछी नज़र डालकर बुदबुदाया। लेखाकार समझ गया और उसने उसे पलक झपकते भड़ाक से बंद कर दिया: ख़ुदा न करे, कोई सुन ले! "हां, कुछ ग़लतफ़हमियां थीं, उनके बिना कभी काम होता है? मिलने पर पूरा क़िस्सा बताऊंगा। पर, दोस्त, मैं तुम्हें एक काम से टेलीफ़ोन कर रहा हूं, माफ़ करना, मैंने तुम्हें रात में परेशान किया: वसन्त की बोवाई के लिए खेत में दूसरा ट्रैक्टर आख़िर कब आयेगा?"

"तो यह चाहिए तुम्हें!" शराफ़ोगलू ने ग़ुस्से में जवाब दिया। "लेकिन केरीम का ट्रैक्टर आज दिन-भर क्यों बेकार खड़ा रहा? तुम्हारे पास एक ट्रैक्टर के लायक़ तक तो ज़मीन नहीं है, और दूसरा मांग रहे हो क्यों? नहीं, प्यारे दोस्त, यह नहीं चलेगा। ऐसे में, जब काम ज़ोरों पर हो, ट्रैक्टर को घड़ी की तरह काम करता रहना चाहिए! बिलकुल घड़ी की तरह! यह बात ध्यान में रखो: अगर ट्रैक्टरों से पूरा काम नहीं लिया, तो एक भी ट्रैक्टर फ़ालतू नहीं मिलेगा! तुम मेरा स्वभाव जानते हो!" शराफ़ोगलू ने चोंगा रख दिया, और निराश रुस्तम के कानों में सुरनाई व खंजरी की कर्णकटु आवाज़ें आने लगीं।

रुस्तम इतनी भयावह मुखमुद्रा में यारमामेद की तरफ़ बढ़ा कि वह किसी भी क्षण बरामदे में भागने के लिए तैयार उल्टे क़दम दरवाज़े की तरफ़ हट गया।

"केरीम का ट्रैक्टर बेकार क्यों खड़ा रहा?"

"बेकार खड़ा रहा..." लेखाकार ने हाथ हिला दिये।

"मौत उठा ले जाये तुझे!" रुस्तम ग़ुस्से से हांफता हुआ चिल्लाया। "क्यों, मैं पूछता हूं?!"

"केरीम को पानी नहीं पहुंचाया गया। उसे रोटी भी नहीं पहुंचायी गयी... वह इंतज़ार करता रहा, फिर पैदल गांव रवाना हो गया, और दूरी कम-से-कम बारह किलोमीटर की है। और कई बातें हुईं, टंकीवाली गाड़ी का पहिया टूट गया, इसी में दिन निकल गया..."

"भाड़ में जाओ तुम सब! मैंने कितनी बार कहा, आदेश दिया... किसी पर विश्वास नहीं कर सकता!" रुस्तम ने चोंगा उठाकर उसमें फूंक मारी और स्वर बदलकर अनुरोध किया: "आपरेटर, मेहरबानी करके कामरेड शराफ़ोगलू का घर का फ़ोन मिला दीजिये! अरे, बंद करिये अपने इस रेडियो को!.. शराफ़ोगलू? मैं दुबारा फ़ोन कर रहा हूं, रुस्तम। मैं पूरा विश्वास दिलाता हूं: ऐसा फिर कभी नहीं होगा। तुम निश्चिन्त

रहो। अनाड़ी हैं, दोस्त। एक दिन के लिए गया और सब गड़बड़ कर दिया। लगता है मुझे ख़ुद ट्रैक्टर-चालकों को पानी पहुंचाना पड़ेगा," उसने दुःखभरी सांस लेते हुए कहा। "क्या हालत कर दी! लफ़्फ़ाज़ी करने में तो वे उस्ताद हैं, पर काम करने में..."

यारमामेद अध्यक्ष के हर शब्द पर चौंक रहा था और हाथ ऐसे हिला रहा था जैसे मच्छर मार रहा हो,– ऐसे आक्षेप मुझ पर लागू नहीं होते...

"कौन-से लफ़्फ़ाज़?" रुस्तम सकपकाया। "मिलने पर बताऊंगा। मैं तुम्हें, दोस्त, क़सम खाकर विश्वास दिलाता हूं: मैं ख़ुद नज़र रखूंगा... यानी दूसरा ट्रैक्टर भेज दोगे ना?.. सुबह?.. शुक्रिया, बीमार मत पड़ना, मुझे तुम्हारी बीमारी की ख़बर सीने में छुरे जैसी लगती है... शुक्रिया, अच्छा, सलाम..."

रुस्तम ने चोंगा रखकर सीने पर हाथ आड़े रखे और झुककर यारमामेद को बंदगी की।

"बहुत-बहुत शुक्रिया! काम कर दिया!"

"मेरा इसमें क्या क़सूर है? यह तो हसन की टोली का काम है!"

"हसन भी तुम्हारा जैसा ही दग़ाबाज है। अब तुम्हें लेखापाल का पद सपने में भी नहीं मिलेगा।"

रुस्तम कंधों पर ओवरकोट डाल और भेड़ की खाल की टोपी उठाकर लंबे-लंबे डग भरता कक्ष से निकल गया।

बरामदे में कांपता और घबराहट के मारे अभी तक होश में न आ पाया यारमामेद उसके पास भागा आया।

"आपका टेलीफ़ोन है!"

"किसे ज़रूरत पड़ गयी?"

"फिर ज़िला मुख्यालय से आया है।"

रुस्तम ने कोसकर सोचा कि शायद फिर अगली रिपोर्ट मांगेंगे। वसंत आ गया है, नौकरशाही कीड़े धूप की गरमी पाकर फिर जाग उठे हैं... उसने ग़ुस्से में चोंगा झपटकर उठाया, पर शराफ़ोगलू की आवाज़ सुनकर समझ गया कि उसे ग़लतफ़हमी हुई थी।

उसके मित्र ने अप्रत्याशित व्यंग्य के साथ पूछा:

"रुस्तम-कीशी, क्या सारीतोरपक से भी हमारा ट्रैक्टर तुम्हें-ख़बर किये बग़ैर उड़ा ले गये थे?"

रुस्तम फ़ौरन भांप गया कि मामला क्या है और उसने भी वैसे ही विनोदी स्वर में कहा:

"नहीं, कामरेड उपनिदेशक, मेरे अपने आदेश पर। हमने सारीतोरपक के लिए ट्रैक्टर मांगा ही नहीं था, आप लोगों ने ख़ुद ही उसे भिजवाया था... चालबाज़ी मत करो, चालबाज़ी मत करो, दोस्त, तुम केवल मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के हितों का ही ख़याल रखते हो! मुझे भी तो सामूहिक फ़ार्म के हितों का थोड़ा ख़याल रखने दो। सारीतोरपक में मकई का खेत है, यानी हल्का हेंगा मैं अपने ट्रैक्टर से फिरवा दूंगा। सस्ता पड़ेगा..."

"अगर ऐसे ही हमेशा अपना समझकर काम करते, तो ज़िले में सबको पहले ही पीछे छोड़ गये होते," शराफ़ोगलू सहृदयता से हंस पड़ा।

"सीख गया हूं!" रुस्तम ने चोंगा रखते हुए वैसे ही ख़ुशी-ख़ुशी जवाब दिया।

और वह चलते-चलते यारमामेद पर घृणाभरी दृष्टि डालकर अहाते में निकल गया। यारमामेद पेट पर हाथ रखे सरदल के पास ऐसे भिखारी की मुद्रा में खड़ा था, जो मसजिद की सीढ़ियों पर भीख मांगता रहता है।

उस शाम सकीना पति से पहले घर लौटकर मन-ही-मन ख़ुश होती खाना पकाने में जुट गयी थी कि रुस्तम के आने तक स्वादिष्ट खाना तैयार हो जायेगा। दिन में उसने खेत में औरतों से बातचीत की थी और उसे ख़ुशी हो रही थी कि सबका मूड अच्छा था, थोड़ा फ़ालतू पैसा कमाने और सामूहिक फ़ार्म का भी नाम ऊंचा करने के इरादे से मिलजुलकर काम में जुट जाने के सपने देख रहे थे। अब वे चुग़लख़ोर थोड़ी चुप हो गयी थीं, जो पहले बाज़ार की क़ीमतों की बातें बनाया करती थीं... लेकिन घर लौटते समय रास्ते में उसे 'लाल झण्डा' में हुई ज़ोरदार बहस के बारे में लोगों ने बता दिया– अफ़वाहें तो रुकती नहीं, कानोंकान फैलती हैं,– और वह उदास हो उठी, और खिन्न रुस्तम को ड्योढ़ी में घुसते देखकर तो वह बिलकुल ही साहस खो बैठी।

शाम के खाने के बाद उसने हिचकिचाते हुए कहा:

"क्यों, कीशी, तुमने किसी के मेहमान बनकर भी मार-पीट मचा दी? क्या और कुछ करने को नहीं रह गया था? तुम तो ख़ुद अपनी मर्ज़ी से सबसे भारी बोझ उठाने को तैयार रहते थे, मेहनत से जी नहीं चुराते थे, क्या अब अपने कहे से मुकर रहे हो?"

रुस्तम ने अत्यंत आश्चर्य से पत्नी की तरफ़ देखा मानो कहना चाहता

हो : बड़ी दिव्यदर्शी हो! तुमने ठीक समय पर मेरे दिल में झांककर उसमें चुभी फांस निकाल ली!

"मैं तो पहले जैसा ही हूं! प्रबंध समिति के निर्णय ने मेरे हाथ-पैर बांध रखे हैं। मैं दस्तावेज़ की उपेक्षा नहीं कर सकता – अनुशासन की मांग है। कुछ ही दिनों में प्रबंध समिति की बैठक करेंगे और इस कारा* को, इस काले कछुए को चिढ़ाने के लिए ख़ुद हमारी प्रतिज्ञाओं पर पुनर्विचार का प्रस्ताव पेश करूंगा। जैसा तुम कहती हो, जनता का आदर करूंगा। ख़ुश हो?"

"बहुत ख़ुश हूं," सकीना हंस पड़ी। "लेकिन इस मुंह-दर-मुंह मुठभेड़ के बिना भी तो काम चल सकता था!"

२

सलमान हर्षविभोर हो रहा था, ख़ुशियां मना रहा था : त्योहार मनाये जाने के बजाय झगड़ा-फ़साद हो गया। रुस्तम शेरज़ाद से नाराज़ हो गया था। सलमान के लिए सम्भावनाएं एक प्रकार से काफ़ी अच्छी हो गयी थीं! लेकिन बड़े मियां का मिज़ाज बदलता रहता है, घड़ी में तोला घड़ी में माशा। क्या धैर्यपूर्वक इंतज़ार करे? न जाने रुस्तम कितनी देर सोचता रहे – महीना या पांच महीने? यानी अध्यक्ष पर दबाव डालना चाहिए... यह समझ में आते ही सलमान की आंखों के आगे कलंतर-लेलेश की स्थूलकाय आकृति घूम गयी : "उसके मुंह खोलने की देर है – और मैं उपाध्यक्ष बन जाऊंगा!"

सलमान ने सुबह रुस्तम से कहा कि वह चुकंदर के खेत पर जा रहा है। खेत में सामूहिक किसानों से सरसरी तौर पर बात करके वह फ़ौरन जिला कार्यकारिणी समिति के लिए रवाना हो गया।

उसका भाग्य अच्छा था। कलंतर अपने कक्ष में अकेला था, उसका दरवाज़ा भी पूरा खुला हुआ था।

"अंदर आ सकता हूं?"

कलंतर ने काग़ज़ात से नज़रें हटाये बिना अपने मांसल हाथ से इशारा किया – तशरीफ़ लाइये।

---

*कारा – काला (आज़रबैजानी भाषा में)।

शिष्ट सलमान ने बंदगी करके कुरसी की पीठ पर हाथ रखा, पर बैठा नहीं, उसने कलंतर के सिर उठाकर आश्चर्य से पूछने तक प्रतीक्षा की :

"बैठते क्यों नहीं हो? क्या हाल है? सेहत ठीक है?"

सलमान ने तभी सावधानीपूर्वक कुरसी पर बैठकर हथेलियां घुटनों पर रखीं और आदर्श छात्र की मुद्रा में जड़वत् बैठा रहा।

"मैं तो हूं ही क्या! मुझसे जनता का न भला होता है, न बुरा, अगर मुझ जैसा तुच्छ लेखापाल बीमार पड़ जाये। पर आपकी बात और ही होती है। आपके सरकारी काम-काज का हर क्षण ज़िले के लिए महत्त्वपूर्ण होता है!"

खुले तौर पर की गयी ख़ुशामदी से कलंतर उल्लसित हो उठा, अपनी प्रशंसा के मारे ख़ुशी से फूलकर वह विनम्र मुस्कान के साथ बोला :

"मैंने कोई खास काम तो किया नहीं है।"

सलमान ने अपने घुटनों पर हाथ मारे।

"अरे, अगर आप न होते, कामरेड कलंतर, तो हमारा ज़िला खिसककर जनतंत्र में सबसे पीछे पहुंच गया होता! आपकी तो सांसें तक वसन्तकालीन वर्षा की तरह फ़सलों के लिए लाभदायक सिद्ध होती हैं। लोग यूं ही तो आपके स्वास्थ्य की कामना नहीं करते रहते हैं!"

कलंतर का चेहरा चुपड़ी रोटी की तरह चमक उठा। वह आत्मसन्तोष से खिल उठा।

"यह सब तो ठीक है, प्यारे दोस्त, पर मेरे दुश्मन भी तो हैं... कुछ लोग तो मुझे बरदाश्त भी नहीं कर सकते हैं! मिसाल के लिए ज़्यादा दूर जाने की क्या ज़रूरत है..."

सलमान बड़ी मुश्किल से अपने को उसकी हां में हां मिलाने से रोक पाया : "सबसे नज़दीक तो रुस्तम-कीशी ही है!" लेकिन उसे फ़ौरन समझ में आ गया कि सारे छिछोरे चुग़लख़ोर इसी तरह बात करते हैं और उसने ज़रा ज़्यादा चालबाज़ी से काम लिया।

"आपका पद ही ऐसा, कामरेड कलंतर! हर कोई आपसे प्रार्थना करने चला आता है, लेकिन सारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करना असम्भव होता है। आपके लिए तो देश के हित सबसे ऊपर हैं! आप सिद्धान्तवादी और अडिग आदमी हैं, इसलिए आप अकसर और बिलकुल न्यायसंगत तरीक़े से प्रार्थियों को इनकार कर देते हैं। बुद्धिमान लोग आपकी स्थिति समझ जाते हैं, बुरा नहीं मानते हैं, जब कि ढीठ और गला फाड़नेवाले लोग

मन में मैल की तहें जमा किये जाते हैं, गली-गली में पीठ पीछे आपके बारे में बुरी अफ़वाहें फैलाते रहते हैं।"

"मेरे ठेंगे से!" कलंतर ने झट से कहा। "मेरी प्रतिष्ठा का सभी को पता है। मैंने अपने चारों ओर ज़िले के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की ऐसी मजबूत दीवार खड़ी कर रखी है कि कोई उसमें सेंध नहीं लगा सकता... अच्छा, अच्छा, बताओ, किस काम से आये हो।"

सलमान ने नज़रें झुका लीं।

"आपसे मदद मांगने आया हूं। हमारे पशुपालन फ़ार्म में ख़ुदा ही जाने क्या हो रहा है! मुझे डर है कि हम न तो गोश्त का सरकारी कोटा पूरा दे सकेंगे और न ही दूध का। यानी पार्टी के सबसे महत्त्वपूर्ण निर्देश का पालन नहीं कर सकेंगे!" उसने थरथराती हुई आवाज़ में कहा।

कलंतर अपने को ज़िले का सर्वज्ञ मानता था और उसे ख़बरें लेकर आनेवाले मुलाक़ाती पसंद नहीं थे। इसलिए उसने खीजकर सलमान को टोक दिया :

"मुझे बहुत पहले से मालूम है! मैं तुम्हारे फ़ार्म के लिए नया इनचार्ज ढूंढ़ चुका हूं, पर तुम्हारे अध्यक्ष को मेरा आदमी किसी कारण पसंद नहीं आया।"

"बिलकुल सच है," सलमान ने सहमति प्रकट की। "आपके सुझाव से रुस्तम सचमुच आगबबूला हो उठे! हर राह चलते आदमी से कहते हैं: 'कलंतर-लेलेश सामूहिक फ़ार्म की भेड़ें दुपाये भेड़िये को सौंपना चाहते हैं!"

कलंतर ने आदतन अपना सपाट माथा खुजलाया और ठण्डी सांस लेकर लगभग शान्त स्वर में पूछा :

"क्या 'लाल झण्डा' में भी तू-तू मैं-मैं मची थी?"

सलमान बस कहने ही वाला था कि रुस्तम बदतमीज़, ज़िद्दी है, घमण्ड तो उसे हद से ज़्यादा है, पर संचालन करना बिलकुल भी नहीं आता, लेकिन उसने देखा कि कलंतर रहस्यमय मुखमुद्रा में मौन साधे हुए है। "अगर कल ही इनमें सुलह हो गयी तो?" उसने सोचा। और कलंतर इसलिए चुप था, क्योंकि वह दिमाग़ पर ज़ोर देकर सोच रहा था कि वह अपने यानी कलंतर के नुसख़े से बनायी हुई कड़वी गोली रुस्तम के गले उतरवाने के लिए उसे कैसे मजबूर करे...

चुप्पी देर तक छायी रही, और सलमान ने मौक़ा देखकर बात दूसरे ढंग से छेड़ दी :

"रुस्तम-कीशी प्रतिष्ठित और अनुभवी अध्यक्ष हैं, लेकिन मुझे डर है कि वह बुढ़ा गये हैं और आज के हालात को पूरी तरह नहीं समझ पा रहे हैं..."

"कु ऽऽ छ नहीं समझता! बुढ़ा गया है," कलंतर ने सलमान की सारी शंकाएं दूर करते हुए इसकी बिना प्रतिवाद के पुष्टि कर दी। "उसके पेंशन पर जाने का वक़्त आ गया है! अगर हमने दख़ल नहीं दिया, तो पशुपालन फ़ार्म का ही नहीं, पूरे सामूहिक फ़ार्म का बंटाधार कर देगा! तुम, भई, उस पर पूरी नज़र रखो। ज़रा-सी बू मिलते ही फ़ौरन मुझे फ़ोन करना! रात में घर फ़ोन करना।"

"जो हुक्म," सलमान ने पूरी फ़रमानबरदारी के साथ कहा और उठ खड़ा हुआ। कुछ सोचकर वह सावधानीपूर्वक आगे बोला : "मैं हिम्मत करके इतना कहे दे रहा हूं कि रुस्तम-कीशी को कितना ही झंझोड़िये, उनसे हासिल कुछ नहीं होगा। आलोचना को तो बिलकुल ही कान नहीं देते हैं। हां, अगर उनको किसी चुस्त और काम के आदमी का सहारा..."

"उपाध्यक्ष का?" कलंतर को कोई आश्चर्य नहीं हुआ : लगता था जैसे वह स्वयं भी इसी बारे में सोच रहा था। "बिलकुल ठीक कहा! मैं तुम्हें ही उपाध्यक्ष नियुक्त कर दूंगा। शुरू में। और उसके बाद... क्या ख़याल है?"

सलमान का चेहरा फक हो गया।

"कामरेड कलंतर, आप अगर मुझे मौत के मुंह में भी भेजें, तो ज़रूर जाऊंगा। मैं आप पर हद से ज़्यादा विश्वास करता हूं। इसीलिए अभी भी चुप रहूंगा। लेकिन इतना समझ लीजिये कि आप आगे मेरा जीना हराम कर रहे हैं।"

कलंतर भी यह समझता था कि यह बात केवल शिष्टाचारवश कही गयी है। वह हाथ से हवा में लहरदार रेखा बनाकर उत्साहपूर्वक आगे बोला :

"सलमान उपाध्यक्ष हो जायेगा और फ़रहाद-गागा* – पशुपालन फ़ार्म में। बहुत अच्छा रहेगा! बहुत अच्छा! ज़िले के उच्चाधिकारी भी सामूहिक

---

* गागा – आदरपूर्ण सम्बोधन।

फ़ार्म के बारे में पूरी तरह निश्चिन्त रहेंगे। शुभ यात्रा!.. हां, ज़रा उससे... चाचा से कह देना कि शाम को मुझसे मिल जाये।"

सलमान सकपका गया :

"मेरे ख़्याल से अगर आप ही उन्हें बुलायें, तो ज़्यादा अच्छा लगेगा। हो सकता है उन्हें शक हो जाये..."

कलंतर-लेलेश ने बड़ी ख़ुशी से लेखापाल पर नज़र डाली।

"तुम हो बड़े सतर्क... बेशक, तुम्हारी बात ठीक है, मैं ख़ुद उसे बुलाऊंगा।"

सलमान ने एक बार फिर विदा ली और दरवाज़े के पास पहुंचकर हिचकिचाते हुए अनुरोध किया।

"आप शनिवार को हमारे यहां होते जाइये, कलंतर-गागा। हमारे घर की शोभा बढ़ाइये!"

"बाद में देखा जायेगा। अच्छा, जाओ। आंख-कान खुले रखो!" और उसने कृपापूर्वक मुस्कराकर उसे विदा कर दिया।

३

रुस्तम को जब बताया गया कि उसे फ़ौरन ज़िला कार्यकारिणी में कलंतर केलबियेव के पास बुलाया गया है, तो वृद्ध उदास हो उठा। "अब मुझे वह चैन से नहीं रहने देगा! पहले बुलायेंगे, फिर झिड़कियां देंगे। अगर कहना मानूं? इज़्ज़त खो बैठूंगा। नहीं मानूं? मामला ऐसा तूल पकड़ेगा, ऐसा चक्कर चलेगा कि संभल भी नहीं पाऊंगा और काम तमाम हो जायेगा। आख़िर उसे मेरी ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है? ख़ुद मोटर में बैठता और सामूहिक फ़ार्म आ पहुंचता!"

पर कुछ किया नहीं जा सकता था, और रुस्तम कपड़े बदलने और साथ ही खाना खाने के लिए घर गया। उसकी शंकाएं और शिकायतें सुनकर सकीना ने पति को तसल्ली दिलायी :

"अरे, कीशी, तुम तो अपने शंकालु स्वभाव के कारण सभी लोगों को अपना जानी दुश्मन समझ बैठते हो! कुछ भी तो नहीं हुआ। ज़िला कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने तुम्हें बातचीत के लिए बुलवाया है, तो बैठो अपनी 'पोब्येदा' में और रवाना हो जाओ, धीरज से सब सुनो,- काम की सलाह के लिए शुक्रिया अदा करो और बेकार की सलाहों को मानने

से इन्कार कर दो। सीधी-सी बात है। चाहे वह अड़ जाये, चाहे अपनी एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाये – तुम्हें क्या... क्योंकि आख़िर उससे ऊंचे अधिकारी भी तो हैं और उनके पास सत्ता भी है। पार्टी की ज़िला समिति पास ही में है। वहां चले जाना। और तुम हो कि पहले से बिना कुछ जाने, अपना भी जीना हराम कर रहे हो और मेरा भी!"

"अच्छा, अच्छा, तुम्हारे उपदेशों के बग़ैर काम चला लूंगा," रुस्तम पत्नी की बात से सन्तुष्ट होकर दिखावे के लिए बोला।

वह यारमामेद को साथ लेकर, जिसे बैंक में कुछ फ़ौरी काम थे, रवाना हो गया और एक घंटे बाद अपनी मोटर ज़िला कार्यकारिणी के पोर्च में खड़ी कर दी। रुस्तम लेखापाल से दुबारा मिलने का समय तय करके कलंतर के कक्ष में घुसा और उसके कहने की प्रतीक्षा किये बिना आराम-कुरसी पर बैठ गया।

"आपके हुक्म से हाज़िर हो गया हूं!"

सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष की बेतकल्लुफ़ी से कलंतर खीज उठा।

"माफ़ कीजिये, आपको परेशान किया। और कोई रास्ता नहीं रहा था।"

"कोई बात नहीं, हम इसके आदी हैं," कलंतर को उसी स्वर में मज़ाक़िया ढंग से रुस्तम ने जवाब दिया। "कौन-सा काम है?"

"काम यह है, रुस्तम-कीशी, कि बुढ़ापे में तुम्हें अपने व्यवहार के बारे में सोचने का समय आ गया है," कलंतर ने धमकी-भरे स्वर में कहा।

"बातूनी हो तुम, बातूनी!" रुस्तम ने पाइप में तम्बाकू भरते हुए सोचा और उसे आराम से बताने लगा कि आजकल काम ज़ोरों पर है – वसंत की बोवाई चल रही है, दिन-रात खेत में रहकर व्यवस्था स्थापित करनी होती है, काम पर नज़र रखनी होती है, काम बतलाने होते हैं, एक की तारीफ़ करनी होती है तो दूसरे को झाड़ लगानी होती है...

कलंतर ने बड़ी मुश्किल से जंभाई रोककर रुखाई से वृद्ध को टोक दिया :

"आधा घंटा तो देर से आये और ऊपर से पूरी शाम-भर चलनेवाली रिपोर्ट देने लगे। बहुत हो गया। बेहतर होगा मेरी बात सुनो!"

निरंकुश व अधीनस्थ लोगों से रुखाई से पेश आनेवाला कलंतर प्रायः अपने सम्भाषी के मिज़ाज को कोई महत्त्व नहीं देता था। इस समय भी उसने रुस्तम के नाराज़ होने पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

उसी समय किवाड़ चरमराया और दरार में से यारमामेद का सिर निकला और उसकी याचनापूर्ण, मिमियाती-सी आवाज़ सुनाई दी :

"कामरेड कलंतर, ख़ुदा के लिए माफ़ कीजिये, अध्यक्ष को हस्ताक्षर के लिए काग़ज़ देने की इजाज़त दीजिये !"

कौन-सा शैतान इसे यहां ले आया ! रुस्तम बदतमीज़ कलंतर को यह दिखाने के लिए उठकर चले जाने का फ़ैसला क़रीब-क़रीब कर ही चुका था कि सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्ष भी अलग-अलग तरह के होते हैं : किसी पर कुछ समय तक बिना कोई सज़ा भुगते चिल्लाया जा सकता है, पर रुस्तम के साथ तो उसे ज़रा ज़्यादा ही नरमाई से पेश आना होगा...

"तुम्हारे यहां कहीं क्या आग लगी हुई है ?"

"बैंक का मैनेजर जानेवाला है, जल्दी में है, मैंने बड़ी मुश्किल से उसे थोड़ी देर इंतज़ार करने को मनाया है। देर हो गयी, तो भुगतान का काउंटर बंद हो जायेगा, बिना पैसों के रह जायेंगे," यारमामेद ने ख़ुशामदीभरी निगाहों से कलंतर की ओर देखते हुए समझाया।

जब कि वह सामूहिक फ़ार्म के लेखापाल की तरफ़ उदासीन व अभिमानी दृष्टि से देखता रहा। फिर भी यारमामेद की चापलूसीभरी चेष्टाएं कलंतर-लेलेश को पसंद आयीं और उसने कृपापूर्वक अनुमति दे दी :

"अगर काम फ़ौरी है, तो ज़रूर..."

यारमामेद ने अपने मुड़े-तुड़े पोर्टफ़ोलियों में से काग़ज़ निकालकर रुस्तम के सामने रख दिया और फिर कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की तरफ़ ख़ुशामदाना नज़रों से देखा।

"क्यों हाल कैसे हैं ?" कलंतर ने अनुग्रहपूर्वक पूछा।

"बस आपकी सेहत बनी रहे, कामरेड कलंतर, हमें तो क्या हो सकता है !" यारमामेद ने पेट पर हाथ जोड़कर अटकते हुए कहा और सिर झुकाया। "आपका साया हमारे घरों पर हमेशा रहे।"

रुस्तम बड़ी मुश्किल से यारमामेद को धुतकारने से अपने को रोक पाया।

कलंतर ने कई बार घंटी का बटन दबाकर दरवाज़े की तरफ़ देखा, पर कोई नहीं आया। उसने दुबारा घंटी बजायी, कर्णकटु टन-टन बराबर होती रही, पर उच्चाधिकारी के पास आने की जल्दी किसी को नहीं थी।

"आख़िर यह शैतान ग़ायब कहां हो गया !"

"आपको क्या चाहिए, कामरेड कलंतर ?"

"'कज़बेक' सिगरेट का एक पैकट," कलंतर ने जेब से तीन रूबल का एक मुड़ा-तुड़ा नोट निकालकर मेज़ पर फेंका। "पूरा एक घंटा हो गया बिना सिगरेट के..."

यारमामेद बैंक मैनेजर और भुगतान-काउंटर के बंद होने की चिन्ता छोड़कर कह उठा :

"अरे, अरे, मेरे पास पैसे हैं ! मैं अभी आपको दस पैकट स्टाक में रखने के लिए ला देता हूं !"

रुस्तम ने खांसा, और कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष ऐसे बोला, जैसे उसे कुछ याद आ गया हो : "मैं अभी ख़ुद जाकर उस कामचोर की ख़बर लेता हूं।"

"वा ऽऽ ह रे चापलूस ! चापलूस हो तो ऐसा हो !" रुस्तम ने यारमामेद की तरफ़ देखकर घृणापूर्वक कहा। "लो, उठाओ काग़ज़ात और दफ़ा हो जाओ यहां से। तुझ पर पड़े ख़ुदा की मार !"

"लेकिन मैं तुम्हारे आगे-पीछे भी तो ऐसे ही लगा रहता हूं," यारमामेद ने सोचा और काग़ज़ात उठाकर पलक झपकते ही कक्ष से निकल भागा।

कलंतर सिगरेट का पैकट खोलता हुआ लौट आया, बहुत धीरे-धीरे चलकर अपने कोने में रखे सेफ़ के पास पहुंचा, चाबियां खनकायीं और एक फ़ाइल निकाल ली। उसके फ़ीते खोलने में अनन्त काल लग गया। कलंतर देख रहा था कि रुस्तम कितना खीजा हुआ है और उसने उसे परेशान करने की ठान ली... आख़िर कलंतर ने उसमें से कई बार खोले और बंद किये गये तीन पत्र निकाले, उनके हर वाक्य को पढ़कर अध्यक्ष पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुए सुनाने लगा। पत्रों में शिकायत की गयी थी कि रुस्तम-कीशी पैदावार में वृद्धि के बारे में पार्टी निर्देश का खुले आम उल्लंघन कर रहा है, 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म का लगभग पूरा बंटाधार कर दिया गया है, बोवाई की तैयारी में गड़बड़ की गयी है, और अध्यक्ष पशुपालन फ़ार्म के मवेशियों की चोरी को बढ़ावा दे रहा है...

"हस्ताक्षर हैं ?" रुस्तम ने झट से पूछ लिया।

"हस्ताक्षरों की तुम्हें क्या ज़रूरत है ? जनता की आवाज़ – ख़ुदा की आवाज़," कलंतर ने शांतिपूर्वक कहा।

"यानी अनाम हैं ?"

"मान लिया कि ऐसा ही है। हमारे लिए तो तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं।"

आधे कक्ष को घेर रही लिखने की मेज़ के किनारे पर कोहनियां टिकाकर रुस्तम ने उस व्यक्ति के प्रति वितृष्णा से अपना दम घुटता महसूस कर दृढ़तापूर्वक कहा :

"तीन तो क्या तीन सौ अनाम पत्र भी मुझे चोर फ़रहाद को पशुपालन फ़ार्म में रखने के लिए मजबूर नहीं कर सकते!"

कलंतर ने मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारा।

"इतना जान लो, आदरणीय अध्यक्ष, कि हम उद्दंड लोगों का अरक़ ऐसे निचोड़ते हैं कि आदमी का बस थोथा छिलका ही बच रहता है।"

"तुम्हारी धमकियां थोथी हैं, लेलेश!" इस बार रुस्तम लोगों द्वारा कार्यकारिणी समिति के धरे हुए मज़ाकिया नाम "लेलेश" को खुले तौर पर इस्तेमाल करने में नहीं हिचकिचाया। "मैं मर्द हूं। समझे? और धमकियों का जवाब वैसे ही देता हूं, जैसे मर्द को देना चाहिए।"

कलंतर अंदर से कायर, अत्यन्त निकृष्ट और नीच कायर था, वह मुंहतोड़ जवाब मिलने पर घबरा गया।

"कामरेड असलान बस आने ही वाले हैं," उसके मुंह से निकल गया। "हम बेकार झगड़ेंगे नहीं! .. केरेम की गरदन पकड़कर निकाल दो और पशुपालन फ़ार्म में फ़रहाद को लगा लो – फिर बात ख़तम हो जायेगी। अब तो तुम्हें मालूम हो जाना चाहिए कि कौन तुम्हारा दोस्त है और कौन दुश्मन!"

"तुम्हारे जैसे लोगों के बारे में कहते हैं न: छुड़ा पीछा, ऐ ख़ुदा, दोस्तों से, दुश्मनों से अपना पीछा छुड़ा लेंगे हम ख़ुद!" स्फूर्तिमान् हुए रुस्तम ने ठहाका लगाया।

उसी समय कक्ष में असलान आया।

कलंतर-लेलेश के चेहरे का रंग बदल गया, वह पंजों के बल ज़िला पार्टी समिति के सचिव के पास लपककर पहुंचा और अपने दोनों हाथों में उसका हाथ थामकर दबाने लगा। आकस्मिकता के कारण रुस्तम खड़ा नहीं हो पाया, और असलान ने स्वयं वृद्ध के पास जाकर उसका सादर अभिवादन किया।

असलान हाल ही में ज़िले में आया था। वह कृशकाय, दरमियाने क़द का, गोरा व्यक्ति था और अपनी काली, जीवन्त व मर्मभेदी आंखों के कारण सदा चिन्तनशील व एकाग्रचित्त लगता था। 'नवजीवन' में वह दो बार आया था – पार्टी की चुनाव सभा में और एक बार प्रबंध समिति की

बैठक में। वह और रुस्तम एक दूसरे से भली-भांति परिचित नहीं थे। सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष ने इस समय सोचा कि असलान ने उसके बारे में अपनी राय सरकारी रिपोर्टों और अफ़वाहों के आधार पर बना रखी है, और कौन जाने अनाम पत्रों और कलंतर-लेलेश द्वारा की जानेवाली उसकी झूठी निन्दा के आधार पर भी।

सामूहिक फ़ार्मों में कहा जाता था कि असलान मितभाषी, व विचारशील है, निष्कर्ष निकालने में जल्दबाजी नहीं करता, हर किसी के घर में खाना खाने को तैयार नहीं होता और अगर किसी के साथ चायख़ाने में जाता है, तो अपना बिल हमेशा ख़ुद ही अदा करता है।

मोटा भूरा ओवरकोट और उसी रंग की टोपी उतारकर मेज़ पर बैठते असलान को ध्यानपूर्वक देखते हुए रुस्तम सोच रहा था कि ज़िला पार्टी समिति के सचिव का अनपेक्षित आगमन शुभ है या अशुभ।

"क्या नयी खबर है, कामरेड रुस्तमोव? ज़िले में कैसे आना हुआ?" असलान ने सहृदयता से पूछा।

रुस्तम चुप रहा, उसने केवल मंद-मंद मुस्करा रहे कलंतर की ओर सिर हिला दिया: यही बताये।

"आपकी चिल्लाने की आवाज़ बाहर भी सुनाई दे रही थी। क्या हुआ?" सचिव ने ज़ोर दिया। "मैं आख़िर आपसे पूछ रहा हूं, न कि कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष से।"

कलंतर ने राहत की सांस ली: रुस्तम चुप लगाये हुए है, यानी पोल नहीं खोलेगा। उसके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए अर्थपूर्ण दृष्टि रुस्तम पर डालकर कलंतर ने अनाम पत्र फ़ाइल में रखे और सफ़ाई से फ़ीते बांध दिये।

"हर तरह के काम होते हैं, कामरेड असलान," उसने टालमटूल करते हुए कहा। "आज झगड़ रहे हैं, कल सुलह कर लेंगे। इसके बिना काम थोड़े ही चलता है – हमारी नौकरी ही ऐसी है! क्यों चलें?" कलंतर आंखों से अपनी छज्जेदार टोपी ढूंढ़ने लगा। "देर नहीं होनी चाहिए!"

रुस्तम के दिमाग़ में विचार कौंधा कि कलंतर-लेलेश रास्ते में सचिव को 'नवजीवन' के बारे में हर तरह की झूठी-सच्ची लगा देगा। इसलिए सारी बात साफ़-साफ़ कह देना बेहतर होगा।

"नहीं, हम बेकार की बहस में नहीं उलझे हुए थे," उसने हठपूर्वक अपने सफ़ेद घने बालों को झटका दिया। "कामरेड कलंतर पशुपालन फ़ार्म

के इनचार्ज के पद पर फ़रहाद को, कहना चाहिए, ज़बरदस्ती मेरे माथे थोप रहे हैं। आपने उस आदमी के बारे में सुना है?"

"नहीं।"

"सारी मुग़ान में नामी ठग है। उसके बदन पर दाग़ने को जगह नहीं बची है।"

"और आप?" असलान ने गहरी रुचि दिखाते हुए पूछा।

"और मैं कहता हूं कि 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म के मवेशियों के झुण्ड की संभाल फ़रहाद मेरे मिट्टी हो जाने के बाद ही कर सकेगा।"

कलंतर फ़ाइल के फ़ीते खोलने ही जा रहा था, पर उसका इरादा बदल गया, उसने शायद अनाम पत्र आगे के लिए बचा रखने का निश्चय कर लिया।

"छि-छि, कितनी शर्म की बात है, रुस्तम-कीशी!" उसने उलाहनाभरे कृत्रिम स्वर में कहा। "और पैदावार? क्या भूल गये? मैं तो तुमसे खुले तौर पर कह चुका हूं कि पैदावार से सम्बन्धित प्रश्नों के बारे में तुम्हारा दृष्टिकोण अन्ततः पार्टी के निर्णयों में तुम्हारा अविश्वास प्रकट करता है! और फ़रहाद का इससे क्या वास्ता? अरे, वह इस लायक़ है ही नहीं कि उसके बारे में यहां देर तक बात की जाये!"

रुस्तम को ऐसी मक्कारी पर ग़ुस्सा आ गया, उसने कलंतर पर ख़ूब चिल्लाने के इरादे से ज़ोर से खांसा, पर असलान ने इशारे से उसे रोक दिया।

"ये प्रश्न इतने सरल और मामूली नहीं हैं जैसे कि ऊपर से लगते हैं। पशुपालन फ़ार्म के नये इनचार्ज का चुनाव पूरी तरह सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति पर निर्भर करता है।" असलान कुछ क्षण मौन रहकर आगे बोला: "कभी-कभी ऐसा मामला सामूहिक फ़ार्म की आम सभा के सामने रखना भी उपयुक्त रहता है। अगर फ़रहाद ठग है, तो बेशक उसे पशुपालन फ़ार्म के पास भी नहीं फटकने दिया जा सकता है। इस मामले में, मैं कह दूं, कि मैं रुस्तम-कीशी पर पूरा भरोसा रखता हूं।"

सचिव के इस कथन के समय रुस्तम ने द्वेष के कारण काला स्याह पड़ गये कलंतर पर विजयी दृष्टि डाली।

"अब पैदावार और 'लाल झण्डा' के साथ हुए समझौते पर आता हूं। यह स्पष्ट है कि हम सभी सामूहिक फ़ार्मों से एक-समान मांगें नहीं कर सकते। हमें उनकी मिट्टी को भी, पानी की सप्लाई को भी और ज़मीन की

लवणता को भी ध्यान में रखना चाहिए। हर सामूहिक फ़ार्म की अपनी विशिष्टताएं हैं, आर्थिक भी और मनोवैज्ञानिक भी। इस प्रकार मैं 'नवजीवन' के स्वतंत्र रूप से अपनी उपज की योजना निर्धारित करने के अधिकार को मान्यता देता हूं। लेकिन..." असलान खिन्नता से मुस्कराया, "लेकिन 'लाल झण्डा' में बहस वैसे नहीं हुई जैसे कि होनी चाहिए थी: रुस्तम-कीशी ने सारे सामूहिक किसानों के हितों से सम्बन्धित जटिलतम प्रश्नों का समाधान करने का अधिकार स्वयं ग्रहण कर लिया। उन्होंने जनता पर अपनी राय थोपने की कोशिश की। अंतर्विरोधों की उलझी गुत्थी को अपने आदेश से काट फेंकने की कोशिश की। सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को हुक्म चलाना शोभा नहीं देता, क्योंकि, कामरेड रुस्तम, इससे तुम नेक व पहलक़दमी करनेवाले लोगों, उत्साहशील व्यक्तियों और मेहनतकशों से अलग-थलग पड़ जाओगे। और निपट अकेले रह जाओगे।"

अलग रह जाओगे? अलग-थलग पड़ जाओगे? कैसी अजीब बातें हैं! रुस्तम सचिव का प्रतिवाद करना चाहता था: जब मैं मुलायम बूट पहनकर पहाड़ों और घाटियों में भटक रहा था, कुलकों से लड़ रहा था, तब तुम पोतड़ों में पड़े रहते थे!.. लेकिन वह ये शब्द मुंह से निकाल नहीं सका। असलान के चेहरे पर छाये हितैषिता व नेकी के भावों ने उसे शान्त कर दिया।

"पतझड़ में देखा जायेगा!" उसने सोचा। "जब सारे परिणाम सामने होंगे, जब फ़सल का वितरण होगा, तभी देख लोगे। जब श्रम-दिन के बदले में आठ किलो अनाज और तीस-चालीस रूबल नक़द देंगे, तब समझ जाओगे कि जनता की सेवा कौन और कैसे करता है! कौन दिलोजान से उसका भला चाहता है!.."

"क्यों, भई, चलें?" कलंतर ने दासे से अपनी छज्जेदार टोपी उठा ली।

"ठहरिये!.. हां, तो आंकड़े आंकड़ों की जगह पर रहेंगे और लोग – अपनी पर! अगर यह फ़रहाद शीशे-से साफ़ दिल का होता, तो भी शायद उसे 'नवजीवन' में काम करने के लिए नहीं बुलाना चाहिए, क्यों? क्योंकि तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म में, रुस्तम-कीशी, बहुत से ईमानदार, बुद्धिमान और पशुपालन फ़ार्म चलाने में पूर्णतया सक्षम लोग हैं। उन्हें ध्यान से देखो। उनके गुणों का गम्भीरता से मूल्यांकन करो। उनकी जवानी को देखकर घबराओ नहीं। आख़िर तुमने भी तो सामूहिक फ़ार्म को अपनी जवानी में

ही संभाला था। और उस ज़माने में तो शायद यह और भी ज़्यादा कठिन था। या आसान था?" असलान ने अपने से ही सवाल किया और पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ जवाब दिया: "नहीं, कठिन था!.." उसने उठकर ओवरकोट पहना। "चलो, चलते हैं।"

पोर्च में, अंधेरा छाये, बरसते आकाश तले जब कलंतर मोटर निकाल लाने गैरेज में चला गया, असलान ने दोस्ताना अन्दाज़ में खिन्न रुस्तम के हाथ में हाथ डाला और धीमी आवाज़ में बोला:

"मैं निर्णय तुम पर थोपना नहीं चाहता हूं। सोच लो! लोगों से सलाह कर लो!"

४

'लाल झण्डा' होकर आने के तीन दिन बाद शेरज़ाद शाम को कार्यालय में गया।

लेखा विभाग में यारमामेद चश्मा लगाये गम्भीर व गर्वपूर्ण मुद्रा में अपने सामने मोटे-मोटे रजिस्टर, ढेरों कागज़ात रखे बैठा था और गिनतारे पर खट-खट करता गिन रहा था।

शेरज़ाद को देखकर लेखापाल सुखद मुस्कान के साथ झट से उठा और उसके लिए एक कुरसी रख दी।

"कैसे आना हुआ, कामरेड सचिव?"

"अरे, बैठो, बैठो! मुझे कुछ आंकड़े चाहिएं।"

यारमामेद ने चश्मा उतारकर अपने चिक्कट कोट की आस्तीन से उसे अच्छी तरह पोंछा और शेरज़ाद से आंखें मिलाये बिना बोला कि प्रति टोली व प्रति उपटोली उपज के आंकड़े अभी तैयार नहीं हैं, वह इस समय उन्हें ही एकत्र करने में जुटा हुआ है।

"मेहरबानी करके परेशान मत होओ, मैं ख़ुद उन्हें लेकर तुम्हारे घर आऊंगा," उसने प्रेमपूर्वक कहा।

"तुम अपना निबट लो, मुझे बस पशुपालन फ़ार्मों के रजिस्टर दिखा दो, मैं यहां उन्हें देखकर आंकड़े अलग लिख लूंगा।"

"मेरे सिर की क़सम, बेकार होगा! तुम्हें दिन-भर की मेहनत के बाद आराम करना चाहिए। कितने अरसे से हमने हमारे बुलबुल के गाने नहीं सुने!.. मैं पशुपालन फ़ार्मों के आंकड़े भी आज ही तैयार कर दूंगा,

चाहे मुझे सुबह तक बैठना पड़े, फ़िक्र मत करो, तुम्हारे घर ले आऊंगा। उपज के आंकड़े तैयार करने में देरी अध्यक्ष के कारण हो गयी। पता है, रुस्तम-कोशी कितनी बाल की खाल निकालते हैं!.. वह सारे रजिस्टर और सूचियां अपने घर उठा ले गये। आय में वृद्धि का कोई अतिविशाल कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं।" लेखापाल ने दबी आवाज़ में बोलना शुरू करके डरते हुए अग़ल-बग़ल देखा, हालांकि सारी दोमंज़िला इमारत में कोई नहीं था। "यह समझ लो कि सुबह सारी ज़रूरी जानकारी तुम्हारी जेब में होगी।"

शेरज़ाद भली-भांति जानता था कि यारमामेद के कहे "कल" का क्या मतलब होता है। इसका यह "कल" पूरा एक सप्ताह चल सकता है! उसने नम्रतापूर्वक पर साथ ही संजीदगी से सूचियां मांगीं।

यारमामेद की सांप-छंछूदर की दशा हो गयी। अध्यक्ष की अनुमति के बिना उसे लेखा विभाग के सारे राज़ खोलने का साहस नहीं हो रहा था — क्या पता किसी की पैनी नज़र क्या देख ले... लेकिन पार्टी संगठन के सचिव को इनकार करना भी अनुचित लग रहा था। अब जो हो, सो हो!.. यारमामेद ने अनिच्छापूर्वक आंखें मिचकाते हुए दराज़ में से रिपोर्टों व सूचियों की फ़ाइलें निकाल लीं। वह माथे पर चश्मा चढ़ाये, आशंकित, शेरज़ाद को ध्यानपूर्वक नोटबुक में आराम से एक के बाद एक आंकड़े लिखते हुए देखता रहा। आख़िर इस आदमी को चाहिए क्या?.. बेहतर होता यार-दोस्तों के साथ सैर करने जाता और अपने बुलबुल जैसे गीतों से लड़कियों को मोहता।

"इस वर्ष के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?" शेरज़ाद ने अचानक पूछा।

"किस मामले में?"

"बोवाई की तैयारी कैसी चल रही है? क्या हम योजना पूरी कर लेंगे?"

"ख़ुदा का शुक्र है, जब तुम्हारे जैसे दिलदार काम में जुट गये हैं, तो इसका मतलब है पूरी कर लेंगे, उससे भी ज़्यादा कर लेंगे!" यारमामेद ने बिना सोचे झट से कहा।

"तुम्हारी इच्छा हो, तो ख़ुद को बेवक़ूफ़ बनाते रहो, पर मेरा सिर मत खपाओ!" शेरज़ाद ने जवाब दिया।

"बिलकुल ठीक कहा!" लेखापाल कह उठा। "मुझे तुम पर और नजफ़ पर भी पूरा भरोसा है। मुझे बिलकुल भी शक नहीं है कि तुम लोग हमारे कीशी की नाक में दम कर दोगे।"

शेरज़ाद ने यह बात अनसुनी कर दी।

लेकिन लेखापाल की ज़बान अब खुल गयी थी: वह थूक के छींटे उछटाता, कुरसी से बार-बार उचकता शेरज़ाद को विश्वास दिलाने लगा कि अध्यक्ष की स्वेच्छाचारिता से कब से सबका मन भर चुका है, लेकिन अभी तक किसी को यह कहने का साहस नहीं हुआ है कि उसकी छाछ खट्टी हो चुकी है। अब शेरज़ाद शूरवीर की तरह जान हथेली पर रखे 'लाल झण्डा' में स्वेच्छाचारी अध्यक्ष के विरुद्ध बोला है। इसका यश उसे मिलना चाहिए, उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए! उस दिन से यारमामेद शेरज़ाद को पहले से हज़ारगुना प्यार करने लगा है। कोई गधा भी इतने आरोपों का बोझ नहीं सह सकता, जितने कि शेरज़ाद ने रुस्तम-कीशी पर लगाये, लेकिन वह तो चिकना घड़ा ठहरा! अपना पुराना राग अलापता रहता है। हमारे बड़े-बूढ़ों का कहना ठीक ही है: "लोमड़ी की बग़ल में मत सोना – शेर फाड़ खायेगा, और नमकहराम की देहली पर क़दम न रखना – दोनों पैर गंवा बैठेगा!.."

यारमामेद ने यह आज़रबैजानी कहावत एकसुरे स्वर में सुनायी, शेरज़ाद को हंसी आ गयी, और उसका सारा गुस्सा काफ़ूर हो गया। यारमामेद सरीखे आदमी की बात को कभी गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए! इसलिए शेरज़ाद ने फिर सामूहिक फ़ार्म की चर्चा छेड़ दी। आंकड़े यारमामेद को ज़बानी याद थे, वह एक बार भी नहीं अटका, लेकिन जहां निष्कर्ष निकालने की, तथ्यों के विश्लेषण की आवश्यकता थी, वह मूर्ख की तरह आंखें मिचमिचाने लगता, उसकी ज़बान अटक जाती... लेकिन शेरज़ाद के लिए यह सब कम था। ज्यों-ज्यों बातचीत आगे चलती गयी, त्यों-त्यों शेरज़ाद को यह स्पष्ट होने लगा कि अब वह कपास की प्रति हेक्टेयर पैदावार तीस-पैंतीस क्विंटल तक पहुंचाने का सवाल उठा सकता है। यह हमारे निकट भविष्य का प्रमुखतम लक्ष्य होगा!.. उसे पशुपालन और तरबूज़-खरबूज़ों की खेती में पिछड़ना भी बहुत असह्य लग रहा था। रुस्तम-कीशी वर्ष-प्रतिवर्ष दिन-रात एक करके कपास व अनाज की खेती करता आ रहा है, लेकिन बाक़ी फ़सलों की – ये आंकड़े गवाह हैं! – उसने बिलकुल भी परवाह नहीं की है।

देर रात गये जब यारमामेद की आंखें मुंदने लगीं, शेरज़ाद ने नोटबुक ज़ोर से बंद की और जंभाई लेकर बोला:

"बस! आज के लिए काफ़ी है।"

"आज के लिए?" लेखापाल घबरा उठा। "हमारे यहां राजधानी से शोध-छात्र आया था, अपने शोध-प्रबंध के लिए आंकड़े एकत्र कर रहा था – उसने तो दिन-भर में काम पूरा कर लिया था!"

"इसका मतलब है, मेरा काम ज़्यादा मुश्किल है।"

वे कार्यालय से बाहर निकल आये। खिड़कियों में रोशनी का नाम न था, रात गरम और शान्त थी। गांव के नीचे-नीचे घर अंधेरे में चरवाहों की झोंपड़ियों-से लग रहे थे। भारी नमी से संपृक्त बादल गांव पर घिर आये थे, शेरज़ाद को लगा कि हवा में वर्षा की गंध आ रही है। और वर्षा बहुत ज़रूरी थी। मुग़ान की अपनी ही रीत है: वसन्तकालीन वर्षा का जल जमा हो जाये, तो फ़सल होती है; चूक गये, बोवाई में देर कर दी – सब बरबाद हो जाता है।

शेरज़ाद के मस्तिष्क में साहसपूर्वक योजनाएं कौंध रही थीं, उस समय उसे आंकड़ों में अपने सामूहिक फ़ार्म का भविष्य दिखाई दे गया और वह अतीन्द्रिय उद्वेग में, अपने साथ चल रहे यारमामेद को नहीं, किसी कल्पित सहयात्री को सम्बोधित कर कह उठा:

"वह दिन दूर नहीं है, जब मुग़ान जन्नत का टुकड़ा बन जायेगा! ज़मीन, जितनी चाहो, मिलती है, कूरा और अराक्स में पानी ज़रूरत से ज़्यादा है! साल में दस महीने सूरज चमकता है, भरपूर गरमी देता है। इससे ज़्यादा और क्या चाहिए? कपास होगी, अनाज, सब्ज़ियां, अंगूर, मक्का होंगे, गायों, भेड़ों और घोड़ों के झुण्ड होंगे!.. धूलभरे रास्तों पर डामर बिछा दिया जायेगा, पुल बना दिये जायेंगे, सामूहिक फ़ार्मों को बिजली मिल जायेगी, ताकि मुग़ान रात में तारोंभरे आकाश की तरह जगमगाती रहे!"

यारमामेद ज़ोर से जंभाई लेता हुआ मिमियाया:

"सो तो है..."

"और क्या कमी है?" शेरज़ाद ने पूछा।

"सच पूछो, तो तुम सपने ख़ूब देखते हो! मुग़ान में तो लवणकच्छ ही लवणकच्छ हैं, गरमियों में – धूल, जिससे जानवरों का और आदमियों

का दम घुटता है, सर्दियों में – चिपचिपी लेई। और तुम कहते हो – जन्नत का टुकड़ा होगा!" और यारमामेद ही-ही कर उठा।

"काम मुश्किल है, इसमें कोई शक नहीं," शेरज़ाद ने आपत्ति की। "लेकिन अब हमारे पास मशीनें हैं, विज्ञान है। कितनी शक्ति है उनमें!"

यारमामेद को रुस्तम व शराफ़ोगलू के बीच केरीम के ट्रैक्टर के बारे में रात को हुई बातचीत याद आ गयी और वह मुरझाये स्वर में बुदबुदाया:

"ख़ुदा करे, ऐसा ही हो..."

शेरज़ाद समझ गया कि इस घोंघे को सरकाने से तो रास्ते में पड़ा पत्थर सरकाना कहीं ज़्यादा आसान है, लेकिन ठण्डी हवा में तरंग में आये यारमामेद ने अचानक उसका हाथ छुआ।

"बेशक यह मेरा काम नहीं है, मैं बेकार टांग अड़ा रहा हूं, पर तुम्हें मैं भाई की तरह प्यार करता हूं, इसीलिए कहना चाहता हूं... तुम बेकार इन आंकड़ों में माथा खपा रहे हो। रुस्तम-कीशी जो चाहेगा, वही होगा। तुम्हारे और नजफ़ के हाथ कुछ नहीं आनेवाला। आख़िर में बदनामी तुम्हारी ही होगी। मेरी बात याद रखना।"

"सुनो, हमने अभी-अभी तो सारे आंकड़े और सारी रिपोर्टें ध्यान से देखे हैं। क्या हमारी मांगें अनुचित हैं?"

यारमामेद ने जवाब देने के बजाय मुंह फेरकर पूरे चार बार छींका। वह अपने इस अचूक तरीक़े का उपयोग हर बार उससे कोई सीधा सवाल पूछे जाने पर करता था। वह नाक पर अपना गंदा रूमाल दबाकर कुछ अस्पष्ट बुदबुदाया।

"साफ़-साफ़ कहो, मैं किसी को नहीं बताऊंगा!"

शेरज़ाद पर विश्वास किया जा सकता था, यारमामेद ने युवक के कान तक पहुंचने के लिए पंजों के बल खड़े होकर फुसफुसाते हुए कहा:

"मुसीबत में फंस जाओगे... अध्यक्ष का स्वभाव ऐसा ही है: किसी और के दिमाग़ में उपजे सही विचार से उसके दिल में शक पैदा हो जाता है।"

शेरज़ाद को आश्चर्य हुआ। पहले वह सोचता था कि यारमामेद हर चीज़ को रुस्तम की नज़रों से देखता है, किसी बात को समझने की कोशिश नहीं करता है, लेकिन मालूम पड़ा कि लेखापाल सामूहिक फ़ार्म के मामलों को बाज़ लोगों से ज़्यादा अच्छी तरह समझता है, पर चुप रहता है।

"इसमें शक नहीं है कि मुसीबतें उठानी पड़ेंगी, परेशानियां भी बहुत

होंगी, पर अब क्या करें, यारमामेद, क्या करें? मेरे अपने विचार हैं, अपनी योजना है, शान्तिपूर्ण जीवन के नाम पर मैं उससे इनकार कैसे कर सकता हूं? यह कोई जीवन थोड़े ही होगा, बस ज़िन्दा रहना होगा! निष्क्रिय जीवन! जीवन का सारा आकर्षण संघर्ष में है!" शेरज़ाद ने दृढ़-विश्वास के साथ उत्साहपूर्वक कहा।

लेकिन यारमामेद को फिर ज़ोरदार ऊंघ आने लगी थी, उसने जंभाई ली और जल्दी से जल्दी घर पहुंचने के लिए कूचे में मुड़ने ही वाला था कि शेरज़ाद ने उसे रोक लिया:

"यानी तुम देख रहे हो कि कौन सही है और कौन ग़लत... फिर भी चुप हो? आख़िर तुम कैसे जी रहे हो, अभागे?"

"बस जी रहा हूं!" यारमामेद की शुकनासिका इधर से उधर हिली। "तुम क्या सोचते हो, इस तरह जीना आसान है? ही-ही! मेरे मन में अपने विचार भी आते हैं, पर जैसे ही रुस्तम-कीशी आंखें चमकाते हैं, मूंछें हिलाते हैं, मैं अपना विचार बिलकुल भूल जाता हूं... फिर बाद में ख़ुश भी होता हूं कि उसे भूल गया, – शान्ति महसूस करता हूं... मुझे सब लोग उच्चाधिकारियों जैसे लगते हैं, वे मुझ पर सिर से पैर तक घूरकर देखते हुए-से लगते हैं। आख़िर मैं अपने तुच्छ विचार को लेकर उनके सामने डटा कैसे रह सकता हूं? ऐसी हालत में तो सीने में शेर का दिल होना चाहिए!"

रात में की गयी स्वीकारोक्ति को सुनते हुए, जिसमें पाखण्ड और निष्कपटता तथा भावुकता व स्पष्टवादिता का अत्यन्त विचित्र मेल था, शेरज़ाद ने सोचा कि जीवन उससे कहीं ज़्यादा उलझा हुआ है, जितना कि वह अभी तक समझता आया था। अब उसे पार्टी सचिव के उत्तर-दायित्वों की तुलना में टोली-नायक की ज़िम्मेदारियां बच्चों का खेल-सी लगने लगीं। उसके सामने एक भयभीत, व्यक्तित्वहीन तुच्छ व्यक्ति खड़ा है। और शेरज़ाद को निर्णय करना है कि वह उससे कैसा व्यवहार करे, उसके साथ आज, कल और आगे भविष्य में कैसे पेश आये, – अन्ततः पार्टी सचिव उसके लिए भी तो उत्तरदायी है।

"प्रकृति ने मनुष्य का सृजन करते समय उसमें अक्षय ज्योति जलायी थी," शेरज़ाद ने फिर अपने साथी के बारे में भूलकर कहा, और उसका स्वर न जाने क्यों कांप उठा। "वह ज्योति न होती, तो हम में और पशुओं में कोई अंतर न रहता। वह सूरज के समान है। उस सूरज के बिना लोग

लाखों साल पहले अंधेरी और मनहूस गुफाओं से बाहर नहीं निकल पाते। उसी ज्योति ने हमें विद्युत दी और अणु का भंजन किया। उसका नाम है चेतना, बुद्धि, विचार। जो चिन्तन से डरता है, वह ख़ुद अपने हृदय में उस ज्योति को बुझा देता है। तुम यह समझते हो, यारमामेद?"

"बहुत अच्छी तरह समझता हूं! पर इससे भी ज्यादा अच्छी तरह मैं यह समझता हूं कि पराये बूटों तले रौंदा जाना क्या होता है," यारमामेद ने अत्यन्त क्षीण स्वर में कहा।

यारमामेद को इतनी बुरी तरह किसने डराया है, किसने इसे हथियार डालने को मजबूर किया है? उसने भय के कारण अपनी सिद्धान्तहीनता को ढाल बना लिया है, हर किसी से जो उससे ज़रा ताक़तवर है, सहमत होने को तैयार हो गया है। अपने अगले अधिकारी की कृपापूर्ण मुस्कान हासिल करने के लिए कोई भी अपराध करने को तत्पर है। वह कोई आदमी है? टेढ़ा-मेढ़ा रेंगने, रोशनी से डरने और फूलों के डंठल व घास कुतरनेवाला कीड़ा है। शेरज़ाद ने उसको इसी रूप में देखा और अपने मन में सोचा कि उसे उसका लिहाज़ नहीं करना चाहिए – उसे निर्ममता से कुचल डालना चाहिए, उसे उस पर दया भी आ रही थी, हालांकि वह यह स्वीकार करता था कि ऐसे पर दया भी नहीं करनी चाहिए।

"तुम क्या मुझे बहकाकर अपने पक्ष में करना चाहते हो? चिन्तनहीनता और उदासीनता से जीने को कहते हो?"

"मेरे सिर की क़सम, तुम मेरी बात समझे नहीं! मैं तुम्हारा भला चाहता हूं, सिर्फ़ भला! .. रुस्तम के साथ मत उलझो, मैं विनती करता हूं! वह विद्वेषी है। तुम कहीं ठोकर खा गये, तो गुद्दी पर ऐसी चोट मारेगा कि तुम्हें मरते दम तक होश नहीं आयेगा! यह याद रखो: रुस्तम के दिल में शक घर कर गया है कि तुम उसकी जगह लेना चाहते हो, अध्यक्ष बनने के सपने देख रहे हो।"

शेरज़ाद ने यह सुनकर ज़ोरदार ठहाका लगाया।

"मैं तुम्हें बता दूं कि मैं तुम्हें हमेशा ख़ुशामदी मानता रहा था, कभी-कभी मुझे तुम पर दया भी आती थी और तुमसे घृणा भी होती थी! मैं सोचता था: 'यारमामेद कायर है, पानी में पैर रखते डरता है, इसी लिए किनारे पर ही खड़ा रहता है।' लेकिन अब मैं देखता हूं कि तुम सिर्फ़ ख़ुशामदी ही नहीं शैतान हो! तुम सरीखों के लिए तो मुग़ान की साफ़ हवा में सांस लेना भी पाप है!"

यारमामेद ने ग़ुस्से में दांत पीसे, बेधड़क भागकर रास्ते के बीचोंबीच आ खड़ा हुआ और हाथ फैलाकर शेरज़ाद का रास्ता रोक दिया।

"कहां की जल्दी में हो? ठहरो, जवाब सुन लो... अराक्स भले ही उल्टी बहने लगे, पर मैं फिर कभी तुम्हारे आगे सिर झुकाने नहीं आऊंगा! तुम्हें, छोकरे को, किसने मेरे साथ कुत्ते की तरह बर्ताव करने का अधिकार दिया है? मैं सोवियत नागरिक हूं! ख़ुशामदी नहीं हूं, पर रुस्तम-कीशी को प्यार करता हूं, उनकी इज़्ज़त करता हूं। मेरे प्यारे, तुम सौ बरस तक दंड पेलते रहो, तो भी कभी रुस्तम जैसे नहीं बन सकोगे!"

वह शेरज़ाद से भिड़ गया पर शेरज़ाद ने ज़ोर लगाकर उसके मेढ़क के चिपचिपे पंजे जैसे हाथ को हटा दिया।

"तुम आदमी हो? मर्द हो? तो फिर मर्द की आवाज़ में बोलो, भेड़ की तरह मत मिमियाओ!"

शेरज़ाद ने आसानी से नाली फांद ली, पर उसके पैर डबरे में पड़े, उसने गाली दी, और अंधेरे ने उसे तत्क्षण यारमामेद की नज़रों से छिपा लिया।

५

छोटे-से पक्के घर का पीला दरवाज़ा फटाक से खुला, पुराने, धुले कुरते की आस्तीनें चढ़ाये गिज़ेतार बरामदे में भागी आयी और उसने उबलते समोवार से पाइप हटाकर ढक्कन पर जमा हुई राख फूंक मारकर उड़ा दी, फिर एक बाल्टी-भर पानीवाले समोवार को फूल की तरह उठा लिया।

"वाह, क्या कहने तुम्हारे! हर काम कितनी फुरती से करती हो!" फाटक के आगे रुके शेरज़ाद ने सोचा। "और वह भी सब हंसी-मज़ाक़ करते, चुस्ती से! .." वह बहुत-सी फुरतीली, समझदार लड़कियों को जानता था, जो शादी के बाद गरमी में सूखे चश्मे की तरह शान्त हो गयी थीं। पर नहीं, गिज़ेतार उन जैसी नहीं है!

गिज़ेतार ने उसकी नज़र चुभती महसूस कर सिर उठाकर देखा।

"अहा, शेरज़ाद! वहां क्यों रुक गये! जल्दी से आओ, नजफ़ अभी-अभी खेत से लौटा है, आओ, चाय पियेंगे!"

बरामदे से नाला और कंधों पर सुराहियां रखे हुए लड़कियों की भीड़

नज़र आ रहे थे। गिज़ेतार को पेरशान का रंग-बिरंगा कुरता पहचानने के लिए अपनी आंखों पर ज़ोर नहीं देना पड़ा।

"मैं तो सुबह शाम ख़ुदा से यही दुआ करती हूं कि वह रुस्तम-कीशी का दिल पिघला दे," गिज़ेतार शरारती ढंग से हंसी। "अरे, जल्दी से अंदर आओ!"

आवाज़ें सुनकर बिना बांह की क़मीज़ पहने, बिखरे बाल व रोयेंदार सीनेवाले नजफ़ ने बाहर झांककर पुकारा:

"सुनो, मैंने तुम्हारे लिए सारा आसमान छान मारा, पर तुम मिले ज़मीन पर! आओ, बात करनी है!"

"तुम क्या सोचते हो, मैं तुम्हारे यहां चाय पीने आ रहा था?"

उधर नजफ़ बरामदे में खंभे से लटकी चिलमची में इतने ज़ोर से फुड़-फुड़ करता हाथ-मुंह धो रहा था, इधर शेरज़ाद देख रहा था कि गृहणी कैसे गिलास पोंछ रही है, तश्तरियों में मक्खन, पनीर और रोटी परोस रही है। उसे वहां घर का-सा आराम महसूस हुआ और गिज़ेतार के स्थान पर इसी तरह नाश्ता परोस रही पेरशान की कल्पना करने की इच्छा हुई।

"फ़र्नीचर अच्छा है न? क्यों?" नजफ़ तौलिया लिये अंदर आया। उसने धीरे से हाथ घुमाकर कमरा दिखाया, जिसमें मेज़, घर पर बनायी गयी चार तिपाइयों और दीवारों पर कुछेक फ़ोटोग्राफ़ों के अलावा और कुछ नहीं था। "कोई करे, तो क्या करे! गिज़ेतार-ख़ानम सारा पैसा तो सोने के कमरे की सजावट पर ख़र्च कर रही हैं। कहती हैं अभी खाने के कमरे की बारी नहीं आयी है!.."

शेरज़ाद ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया, उसे याद आ गया कि नवविवाहित इस घर की नींव रखते समय कैसे ख़ुद पत्थर ढो-ढोकर लाते थे, मिट्टी में पानी डाल-डालकर मसाला तैयार करते थे।

"लेकिन मुझे तो तुम्हारा घर ख़ूबसूरत लगता है, किसी ख़ान के महल जैसा! मैं तो बस एक ही सपना देखता हूं – जल्दी से जल्दी सारे सामूहिक किसान भी इतने ही बड़े-बड़े घर बना लें!"

"बहुत-बहुत शुक्रिया!" नजफ़ ने तिपाई मेज़ के पास सरकाते हुए कहा। "सबसे मुख्य बात यही है कि दोस्त की नज़रों में डाह नहीं होनी चाहिए।"

"लेकिन तुम यह मत सोचो कि मैं यहां की हर चीज़ से सन्तुष्ट हूं।"

"आख़िर किस चीज़ से असन्तुष्ट हो? कम-से-कम गृहस्वामी से तो नहीं न?"

"नहीं, गृहस्वामी मुझे पसंद है, गृहणी उससे भी ज़्यादा, लेकिन बुरी बात यह है कि तुम रसोई और ग़ुस्लख़ाना बनाने में आलस कर गये।"

"हम बाकू में नहीं, गांव में रह रहे हैं!" नजफ़ ने तपाक से कहा।

"बिलकुल ठीक है, बिलकुल ठीक!" चाय डाल रही गिज़ेतार ने सिर हिलाया। "मैं आंगन में चूल्हे पर पकाते और परात में नहाते-धोते ऊब चुकी हूं। शेरज़ाद हमेशा की तरह सच कहता है। शरत् में श्रम-दिनों का पैसा मिलते ही बनाना शुरू कर देंगे," उसने रोब से कहा।

"मर गया!" नजफ़ ने माथा पकड़ लिया। "आख़िर कितना पैसा चाहिए? फ़र्नीचर भी तो ज़रूरी है! नहीं, नहीं, मेरे भाई, तुम हमारे घर में फूट के बीज बो रहे हो, मेरी ख़ानम तुम्हारे इशारों पर नाचती है, मैं ऐसे नहीं जी सकता, जहां से आये हो, वहीं जाओ!"

लेकिन शेरज़ाद व गिज़ेतार ने उसकी बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

"लेकिन मुझे तुम्हारे घर में ख़ास तौर से यह अच्छा लगता है," शेरज़ाद ने मुट्ठी पर ठोढ़ी टिकाये आगे कहा, "कि यहां तुम्हारे अलावा कोई और भी रहता है..."

"लिंग कौन-सा है – पुल्लिंग या स्त्रीलिंग है?" गृहस्वामी ने सन्देहभरे स्वर में पूछा और अमंगलसूचक मुद्रा में रसोई के चाकू की ओर हाथ बढ़ाया।

"यह मुझे नहीं मालूम, पर उसे सौभाग्य कहते हैं! सौभाग्य!" शेरज़ाद ने भावुक स्वर में दोहराया। "तुम्हारे घर का दरवाज़ा खोलते ही सबसे पहले वही मेरा स्वागत करता है।"

"शायर! मधुरभाषी शायर!" नजफ़ हर्षावेश में आ गया। "तुम्हें पता है, सौभाग्य हमारे घर में लाया कौन है? यही लायी है, यही!" और उसने अपनी पत्नी को, जिसकी नज़रें लाज से झुक गयी थीं, अपनी ओर खींच लिया।

"चाय पियो न, तुम्हारे पास वक़्त कम है!" गिज़ेतार उसकी पकड़ से निकल गयी और ख़ाली तश्तरी उठाकर बरामदे में भाग गयी।

मित्र जब बाहर निकले, सूरज मटमैले, चिथड़े बादलों की ओट से झांका और चारों ओर आनन्द व्याप्त हो गया। ऐसा शायद लग रहा था, क्योंकि भोर में सुनसान रहनेवाले गांव में जान पड़ गयी थी – छकड़ों व गाड़ियों के पहिये चरमरा रहे थे, सागबाड़ियों में बूढ़े लोग मिट्टी खोदकर उलट-पुलट रहे थे, पत्ते व सूखी घास जला रहे थे। बच्चे चीख़ते-चिल्लाते स्कूल के चौक में फैल गये, वे भाग रहे थे, कूद रहे थे, किसी की फटी टोपी को गेंद की तरह किकें मार रहे थे।

"पैदल चलेंगे क्या?" डटकर नाश्ता करने के बाद अलसाये नजफ़ ने सुझाव दिया।

"अरे, नहीं, ऐसे तो हम दिन भर में वहां नहीं पहुंच सकेंगे। और मेरे ज़िम्मे काम कितने हैं!" शेरज़ाद ने असहमति व्यक्त की। "देखो, तेल्ली चाची गाड़ी में खाद लेकर जा रही हैं, उन्हीं के साथ पहुंच जायेंगे।"

उसने नाली फांदी और हाथ उठाया। दो मोटे-ताज़े घोड़े जुती गाड़ी रुक गयी। चाची ने लगाम खींचकर युवकों पर नज़र डाली।

"हमें ले नहीं चलेंगी?"

चाची ने खाद की बोरियों की तरफ़ इशारा किया – यानी वे आराम से बैठ सकते हैं... मित्र सबसे ऊंची जगह पर चढ़कर आराम से बैठ गये, घोड़े कीचड़ में सुमों से फचफच करते धीरे-धीरे गाड़ी खींचने लगे। गड्ढों में कहीं-कहीं गाड़ी एक ओर इतनी झुक जाती थी कि युवक बोरियां पकड़ने को मजबूर हो जाते थे। तेल्ली चाची गाड़ी हांकने के साथ-साथ बीच-बीच में उन पर नज़र डाल लेती थी: मालूम पड़ गया, बच्चू, कि ये रास्ते कैसे हैं? गड्ढों में ऐसे झटके लगते हैं कि हड्डियां चरमरा उठती हैं।

चाची ने नाले के किनारे घोड़ों को रोककर उनकी लगामें खोल दीं और उनके मुंह पर सूखी घास भरे तोबड़े को बांध दिये – थोड़ा दम ही ले लें! उसने यह सब झटके से, ग़ुस्से में कुछ भुनभुनाते हुए किया।

नजफ़ शेरज़ाद को नाले के उस पार खेत में ले गया, जहां ऊंचे-ऊंचे घने खर-पतवार उगे हुए थे।

"लीजिये देखिये नज़ारा, कामरेड पार्टी सचिव, यह तैयारी की गयी है हमारे सामूहिक फ़ार्म में वसंत की बोवाई की। इतने बड़े ज़मीन के टुकड़े से बीस क्विंटल कपास भी नहीं उठा सकेंगे।"

शेरज़ाद ने केवल सिर हिलाया। वह सपने में भी नहीं सोचता था कि गांव के इतने पास और रुस्तम की बग़ल में ही बिना खूंटियां साफ़ किये हुए ज़मीन के टुकड़े बचे रह सकते हैं।

"लेकिन सारे में यही हाल थोड़े ही है..." शेरज़ाद ने हिचकिचाते हुए बोलना शुरू किया।

"तुम अपने ज़मीन के टुकड़े की डींग मत हांको!" मित्र ने उसे टोक दिया। "तुम्हारी टोली में तेल्ली चाची और मेरी घरवाली जैसी खानमें हैं! वे तुम्हारी हिदायतों के बिना भी सारे काम कर लेंगी! अब इधर चलते हैं..."

और वह दोस्त को झाड़ियों में खींच ले गया। युवक कई मिनट तक कभी झुकते, कभी चेहरे के आगे से टहनियां हटाते, कभी हवा से गिरी टहनियों व शाखाओं के ढेरों को फांदते आगे बढ़ते रहे। अन्त में नजफ़ ने निर्वृक्ष क्षेत्र में रुककर चारों ओर नज़र दौड़ायी और होंठों से उंगली लगाकर फुसफुसाया:

"छू! आधा मेरा, आधा तुम्हारा! सिकंदर महान के ज़माने का अशरफ़ियों का ख़ज़ाना है!"

और उसने सूखे पत्तों के फैले हुए ढेर में लात मार दी। पत्तियां इधर-उधर उड़ गयीं, और शेरज़ाद ने देखा कि उसके सामने ज़मीन में गड़े हुए हल और हेंगा पड़े हैं। धातु पर ज़ंग की मोटी तह जम गयी थी।

शेरज़ाद ने हल्की-सी सीटी मारी। उसे नजफ़ की कारस्तानी पर ग़ुस्सा भी आया। हर चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया जाता है! दिल दहला देनेवाला अपराध है – सामूहिक फ़ार्म के औज़ार बरबाद हो रहे हैं, ज़ंग खा रहे हैं!

"बेशक यह अध्यक्ष के चहेते गूंगे हुसैन की करतूत है!" नजफ़ ने कहा।

वे खेत में आगे बढ़े। कभी उन्हें एक सिरे से दूसरे सिरे तक खर-पतवार से ढके टुकड़े नज़र आते, कभी बिलकुल साफ़ टुकड़े, न कहीं खनिज खाद नज़र आती और न ही पांस। नजफ़ मित्र को हंसाने की कोशिश कर रहा था, पर वह कोई प्रतिक्रिया नहीं कर रहा था और क्षण-प्रतिक्षण खिन्न होता जा रहा था।

"तुम कहां थे? कल, आज से तीन दिन पहले नहीं बता सकते थे?" शेरज़ाद ने अचानक कड़े स्वर में पूछा।

नजफ़ भौचक्का रह गया। अब लगता है सारी ग़लती उसी की है। लेकिन उन दिनों वह वहां काम नहीं कर रहा था, उसे खर-पतवार और हल के बारे में ट्रैक्टर-चालकों ने बताया था...

वे दोपहर बाद गांव वापस लौटे। रुस्तम कार्यालय के पोर्च की सीढ़ियों पर बैठा हुआ था, तम्बाकू के धुएं के कारण नाक-भौं सिकोड़ रहा था और सामूहिक किसानों से बातचीत कर रहा था। उसके पास ही सलमान जमा बैठा था।

अध्यक्ष शेरज़ाद की ओर ध्यान दिये बिना सामूहिक किसानों को समझा रहा था:

"हां, तो लम्बाई तीन सौ मीटर होगी और चौड़ाई – पचास। एक हफ़्ते में नींव रखने का काम निबटा लेंगे। नक़्शा कुछ ही दिनों में बाकू से वास्तुकार संघ भेज देगा। मैंने तार देकर मांगा है। सारी मुग़ान इमारत देखकर दांतों तले उंगली दबा लेगी!.."

सलमान अध्यक्ष की ठकुरसुहाती कहना चाहता था, पर हुआ उसका विपरीत।

"नक़्शा हम कारा केरेमोगलू से ले सकते हैं। उसका संस्कृति-भवन काफ़ी आरामदेह है। और उन्हें ज़्यादा महंगा भी नहीं पड़ा है, मैंने पूछताछ की थी।"

"कारा केरेमोगलू के यहां संस्कृति-भवन नहीं, दरबा है! चिड़ियों का पिंजरा है!" रुस्तम ने हर शब्द पर ज़ोर देकर कहा, और सामूहिक किसानों में से किसी के हंसते ही स्वयं भी बड़े आत्मसन्तोष के साथ ज़ोरदार ठहाका लगाया। "हमारा भवन उनसे ऊंचा और दुगुना बड़ा होगा! गरमियों के लिए खुला बरामदा होगा, फ़िल्मों व नाटकों के लिए हॉल होगा! उनका कोई संस्कृति-भवन है?" रुस्तम ने हैरत में हाथ हिलाये। "नीचा, लम्बोतरा, जैसे मवेशीख़ाना हो! काम शुरू करो!" उसने सलमान को आदेश दिया और कराहता हुआ उठकर अपने कक्ष की ओर मुड़ ही रहा था कि शेरज़ाद ने उसे रोक दिया।

युवक की बात सुनते हुए रुस्तम अधीरता से भौंहें सिकोड़ता रहा।

"सुनो, बेहतर होगा तुम अपने टुकड़े की संभाल करो। मुझे सब मालूम है..."

"तो फिर पार्टी की बंद बैठक बुलवा लेते हैं," शेरज़ाद ने संयत स्वर में कहा।

"शाबाश! ख़ूब मौक़ा निकाला है तुमने बैठक बुलवाने का! तुम्हें जोताई करनी चाहिए, न कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर बहस! पर वह कहां है... वक्ता? क्या नाम है उसका... नजफ़?.."

सामूहिक किसानों की उपस्थिति में पार्टी संगठन के सचिव के साथ इस तरह बात करना हर हालत में अदूरदर्शिता थी, रुस्तम यह समझता था, पर वह अपने को रोक नहीं पाया। वह शेरज़ाद व नजफ़ के साथ आये दिन की तू-तू मैं-मैं से ऊब चुका था। पिछले वर्ष बिना उनकी सलाहों के काम किया था – क्या हुआ? – फ़सल बुरी नहीं उठायी थी। सामूहिक फ़ार्म में पार्टी संगठन पिछले वर्ष भी था, लेकिन उसका सचिव सुलैमान जो ज़िला केन्द्र में तबादला करा चुका है, कभी चूं नहीं करता था।

अध्यक्ष ने मूंछें फुलाते पोर्च पर चढ़कर किवाड़ अपनी ओर खींचा ही था कि कर्णभेदी आवाज़ें सुनाई दीं: "ठहरो, ठहरो!" और अहाते में तेल्ली चाची भागती हुई घुसी।

"ऐ, ऐ, ज़रा ठहरो!" वह भागती-भागती अपने चौखानेदार कुरते की आस्तीनें चढ़ाती हुई बुलंद आवाज़ में चीख़ रही थी, मानो हाथापाई करने की तैयारी कर रही हो। "तुम्हारे वादे का क्या हुआ, मर्द? तुमने मुझे कब ईंटें ढोने के लिए ट्रक देने का वादा किया था? मेरा घर ढह गया है, पोते-पोती स्तेपी में पशुपालन फ़ार्म में रहे हैं। मैंने जाड़े में ईंटें ख़रीदी थीं जो अभी तक ज़िला केंद्र में वैसे ही पड़ी हुई हैं!"

"चुप करो ख़ातून! लोग सुन रहे हैं, लोग, शर्म आनी चाहिए! ट्रकों में पांस और खाद ढोयी जाती है!" अध्यक्ष ने जवाब दिया।

"हाय, कितनी शर्म आती है! शर्म के मारे मर जाऊंगी!" चाची पोर्च पर चढ़कर रुस्तम का पीछा करती हुई और भी ज़ोर से चिल्लायी। "अपने पिट्ठुओं को तो हमेशा ट्रक देते हो, पर मामूली कामगार को नहीं दे सकते। 'पांस और खाद ढोते हैं!'" उसने रुस्तम को चिढ़ाया। "मैं देख रही हूं, तुम्हें शर्म बिलकुल नहीं आती है!.. मैं दिन-भर अकेली घोड़ागाड़ी में खाद ढोती हूं, बिलकुल अकेली! मैं कल ही बाकू में शिकायत लिखकर भेज दूंगी!"

"करो, करो शिकायत! मुंशी बग़ल में ही खड़ा है," रुस्तम-कोशी ने शेरज़ाद की ओर सिर से इशारा किया, "वह तुम्हें पलक झपकते हर तरह की शिकायत गढ़कर दे देगा!"

और वह चाची को धक्का देकर कार्यालय में चला गया।

13—2207

यारमामेद पिछले कई दिनों से शेरज़ाद से मिलते समय षड्यंत्रकारी की तरह आंख मारकर फुसफुसाता था :

"तुम अकेले हो, तुम्हारा कोई सहारा नहीं है, अपना ख़याल रखो। तुम्हें रुस्तम-कीशी रौंद डालेगा, ज़रूर रौंद डालेगा! वह तलवार से तुम्हारी परछाई के काटकर दो टुकड़े कर चुका है!"

अन्त में शेरज़ाद इससे बुरी तरह ऊब उठा और उसने लेखापाल को धमकी दी :

"अगर मैंने तुम्हारे मुंह से एक शब्द भी निकलते सुना, तो मैं तुम्हें रुस्तम के साथ मुंह-दर-मुंह खड़ा करके ये सारी छिछोरी बातें दोहराने को मजबूर कर दूंगा।"

शाम को जब कार्यालय सुनसान हो गया, यारमामेद के लिए यह असह्य हो उठा। उसे शंकाओं ने त्रस्त कर दिया। शेरज़ाद सचमुच रुस्तम को सब बता सकता है, खास तौर से जब उसने दांत उसकी बेटी पर गड़ा रखे हैं... यारमामेद फिर अपने अधिपति से आंखें कैसे मिला पायेगा? तब उसे अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर सामूहिक फ़ार्म से ही नहीं, ज़िले से भी बाहर भाग जाना पड़ जायेगा। और अगर नहीं भाग पाया, तो रुस्तम उसे मथनी में डालकर दही की तरह मथ डालेगा और उसका पनीर बनाकर कुत्तों को खिला देगा। यही हाल होगा!.. वाह, कितना भोला-भाला है तू, यारमामेद! कितना ठीक अंदाज़ लगाया था: मीटिंग में जब शेरज़ाद ने अध्यक्ष की इतनी कटु आलोचना की है, तो इसका मतलब यही हुआ कि वह अब रुस्तम के बारे में हर तरह की अफ़वाहें इकट्ठी करने लगेगा। सलमान यही करता है – वह अध्यक्ष के बारे में हर तरह की बुरी अफ़वाहें जमा करता रहता है, पर साथ ही उसके सामने ठकुरसुहाती भी कहता रहता है, उसकी ख़ुशामद भी करता रहता है। हां, गांव के बुज़ुर्गों ने यह कहकर कोई ग़लती नहीं की थी कि शायर शेरज़ाद की नज़रें सितारों पर ही टिकी रहती हैं, इसीलिए वह अकसर ठोकर खाता रहता है।

यारमामेद ने काग़ज़ात दराज़ में रखकर दरवाज़ा बंद किया, लीर से बंधी चाबी पूर्वनिर्धारित स्थान पर बरामदे में रख दी और पैर घिसटता घर चल दिया।

यह याद आने पर कि शेरज़ाद शायर है, उसका उत्साह कुछ बढ़ गया: शायर चुग़ली खाने का काम नहीं करेगा, उसे ऐसा करते घृणा होगी!.. लेकिन यारमामेद कुछ क़दम ही आगे बढ़ा था कि उसकी तुच्छ आत्मा को फिर आशंकाओं ने आ घेरा। शेरज़ाद अपने लंगोटिया यार नजफ़ के सामने यह बक सकता है, वह अपनी पत्नी के सामने, गिज़ेतार अपनी पक्की सहेली पेरशान को बता सकती है, जब कि अध्यक्ष की बेटी अपने बाप को। फिर सब मिट्टी में मिल जायेगा!..

अपने दांत बजते महसूस करके यारमामेद ने हाथ से ठोढ़ी को थाम लिया। रास्ता सुनसान था, घरों में रोशनी नदारद थी, क़ब्रिस्तान का-सा सन्नाटा छाया था, केवल पैरों तले कीचड़ फच-फच कर रही थी।

क्या भागकर रुस्तम के पास पहुंच रो-रोकर माफ़ी मांगना बेहतर होगा: मुझे माफ़ कर दो, मेरे आक़ा, मैं अनजाने में जोश में आकर फ़ालतू बात कह गया! ज़बान हमेशा तो दिमाग़ का कहा मानती नहीं है। रिश्तेदार तक भी तो एक दूसरे की बुराई करते रहते हैं। मैं सारी ज़िन्दगी तुम्हारा वफ़ादार रखवाला कुत्ता बनकर रहूँगा, – मुझे माफ़ कर दो!.."

अगर रुस्तम को सारी बात मालूम हो गयी हो तो? तो क्या हुआ, इनकार करना पड़ेगा, और कोई चारा नहीं है। यारमामेद झूठी निन्दा, गंदी, कुत्सित निन्दा का शिकार हो गया! उससे इसलिए बदला लिया जा रहा है, क्योंकि वह रुस्तम का वफ़ादार है।

पूर्णतया उलझन में पड़कर यारमामेद बाड़ का सहारा लेकर खड़ा हो गया – उसके पैर जवाब दे गये। उसने सिर उठाकर देखा। गहरे काले, चिथड़े-चिथड़े बादल, तेज़ हवा के बहाव में भेड़ों के झुण्ड की तरह भागे जा रहे थे। अचानक पल भर के लिए गांव के छोटे-छोटे घरों, शेडों, बंजर ज़मीन के टुकड़ों व कीचड़ को चमकाती बिजली से आंखें चौंधिया गयीं, और यह सब इतना आकर्षणहीन और निरानन्द लगा कि यारमामेद निराशा-ग्रस्त हो उठा।

नहीं, रुस्तम के पास जाने की ताक़त उसमें इस समय नहीं है। उसका क्रोधोन्मत्त चेहरा देखने और कड़कती आवाज़ सुनने से तो यहीं, बाड़ के पास लड़खड़ाकर ढेर हो मर जाना आसान होगा। उसे डूबते को तिनके से सहारे की तरह सलमान का दामन कसकर पकड़ लेना चाहिए और उससे सहायता की विनती करनी चाहिए। शायद सलमान की समझ में आ जाये कि यारमामेद आगे उसके कुछ काम आ सकता है। वाह रे, सपाट नाकवाले चालबाज़, तू थोथरे छुरे से अपना रास्ता रोकनेवाले को चीर सकता है!

लेकिन यारमामेद कभी उसकी राह का रोड़ा नहीं बनेगा। सलमान में इतना समझने लायक़ अक़्ल है कि यारमामेद सरीखों से नफ़रत नहीं की जाती है...

काले बादल और नीचे उतर आये, लगा जैसे वे अपने पूरे वज़न से यारमामेद को नीचे, ज़मीन में दबाये जा रहे हैं, उसकी सांस रुकने लगी... उसे लगा कि कोई बाड़ के सहारे-सहारे सूखी घास में सरसराहट करता दबे पांव चल रहा है।

"अरे? कौन है?" यारमामेद ने दबे स्वर में आवाज़ दी।

अचानक रात्रिकालीन अंधकार ने उसे गुंजायमान गरज में आवाज़ दी: वृक्षों की टहनियां सर्र से हवा को चीर रही थीं, सर्र-सर्र-सर्र... नाले में पत्थर गड़गड़ा उठे, मानो बाढ़ उन्हें लुढ़काती ले जा रही हो, ज़मीन, उसका आख़िरी सहारा, उसे पाताल में खींचती डगमगा रही थी।

यारमामेद केवल भीरु ही नहीं था, इसके अलावा अंधविश्वासी भी था। जब उसे लगा कि गांव के कोने-कोने में लैंप जल उठे हैं और भेड़ियों की आंखों की तरह चमक रहे हैं, उसने मन-ही-मन कहा – जिन आ गये... ऐसी घुप्प अंधेरी, तूफ़ानी रातों में जिन ज़मीन से निकलते हैं, रास्ते के किनारे की झाड़ियों में छिपछिपकर सियारों की तरह चीख़ते हैं, उल्लुओं की तरह बोलते हैं, भटके राहियों की तरह आवाज़ें देते हैं। बस अब वे उसे ही आवाज़ देनेवाले हैं:

"यारमामे ऽऽ द! .."

अपना नाम सुनकर वह फ़ौरन झुक गया, उसने कांपते हाथ से अपना मुंह बंद कर लिया: उसे जवाब नहीं देना चाहिए, शायद वे अंधेरे में उसे देख नहीं पायेंगे, उसके पास से भागते गुज़र जायेंगे। क्योंकि जवाब देनेवाले को जिन उठाकर ले जाते हैं, उसे हमेशा के लिए अपना गुलाम बना लेते हैं और अधोलोक में फेंककर बहुत यातनाएं देते हैं...

"यारमामे ऽऽ द!" जिन उदास स्वर में पुकार रहे थे।

वह बेहोश होते-होते बचा, उसके रोंगटे खड़े हो गये, लेकिन किसी तरह हिचकी दबाकर फुसफुसाया:

"बिस्मिल्ला! ख़ुदा के नाम पर, ख़ुदा के नाम पर..."

और चमत्कार हो गया – जिनों की आवाज़ें आनी बंद हो गयीं, ठण्डे पसीने में नहा गये यारमामेद ने राहत की सांस ली और होश में आ गया। अब भागकर सलमान के पास जाना चाहिए! लेकिन उसने क़दम बढ़ाया

ही था कि कोई अंधेरे में उसकी तरफ़ लपका; यारमामेद ठोकरें खाता भागा, और कोई उसके पीछे भारी बूटों से धप-धप करता, लगभग पूरे पैर रखता उसके पीछे भागा।

यारमामेद सिर पर पैर रखकर भाग रहा था, और उसका पीछा करनेवाला भी अपनी गरम-गरम सांसों से उसकी गुद्दी जलाता उसके पीछे-पीछे भाग रहा था।

अन्त में यारमामेद सलमान के अहाते में घुस गया – सौभाग्य से सलमान कुत्ते नहीं पालता था – और पैरों व मुट्ठियों से उसका नीचा व अनगढ़ दरवाज़ा पीटने लगा।

"धीरे, ज़रा धीरे, कॉमरेड, दरवाज़े के पैसे लगे हैं!" गृहस्वामी का उनीन्दा स्वर, नंगे पैरों की धप-धप और कुंडी हटाने की आवाज़ सुनाई दी।

सलमान गले पर सोने के कुरते का कालर पकड़े यारमामेद के विकृत चेहरे के पास मोमबत्ती लाया।

"यह क्या हुलिया बना रखी है? क्या कोई पागल कुत्ता पीछे पड़ गया था?!"

यारमामेद के पूरे खुले मुंह से ख़रगोश की-सी चीख़ निकल गयी। कमरे में घुसकर वह तख़्त पर ढेर हो गया।

"नज़नाज़, जल्दी से पानी लाओ," सलमान ने शान्त स्वर में कहा। "आदमी दम तोड़ रहा है। वाह रे, दोस्त, तुम कितने लापरवाह हो! तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे हज़ारों दुश्मन हैं, फिर भी तुम आधी रात में गलियों में चलने का ख़तरा मोल ले लेते हो!"

"आख़िर हुआ क्या है?" सलमान की बहन नज़नाज़ ने पूछा। वह सोने के कपड़े पहने, गदराये कंधों पर शाल डाले आड़गीर के पीछे से निकली, उसका चेहरा लाल हो रहा था, नीन्द के कारण बदन से तपिश फूटी पड़ रही थी।

"यही तो मुझे मालूम नहीं है," सलमान हंस पड़ा।

जब तक सुबकियां भरते यारमामेद को सलमान ने पानी पिलाया, तसल्ली दिलायी, बहन ने मिट्टी के तेल का लैंप जला लिया।

"शुक्रिया, बहन, तहे दिल से शुक्रिया!" यारमामेद ने मोटी से प्रशंसापूर्ण नज़रें हटाये बिना हकलाते हुए कहा।

"हां, तो इसे देखकर जान में जान ग्रायी है इसकी," तेजनज़र सलमान ने सोचा।

"जाग्रो, कपड़े बदल लो, बहन," उसने कहा," वरना यारमामेद को ग्रल्लाह की ग्रदालत में ग्रपनी सफ़ाई पेश करना मुश्किल हो जायेगा!"

"मेरी हंसी उड़ाना गुनाह है," यारमामेद नज़रें झुकाता हुग्रा बोला। "ग्रादमी मौत के मुंह से निकल ग्राया, ग्रौर तुम हो कि..."

सलमान ग्रचानक सोच में डूब गया ग्रौर मूंछों के बल देकर ग्राड़गीर के पीछे बहन के पास चला गया।

"ग्रभी ख़ुशियां मनाते हैं, लाना ज़रा तुम्हारी पांच तारोंवाली!" उसने धीरे से कहा।

जैसे ही मेज़ पर बोतल, दो जाम ग्रौर लवश* में लिपटा पनीर रख दिये गये, यारमामेद कुछ उत्साहित हो उठा ग्रौर तख़्त पर कुलबुलाने भी लगा, लेकिन उसके मुख पर शोकपूर्ण भाव पूर्ववत् बना रहा।

"गला तर कर लो, होश में ग्राग्रो!" सलमान ने उसे लबालब भरा हुग्रा जाम दिया।

"ग्ररे, नहीं, रहने दो, इसकी जरूरत नहीं है!" यारमामेद ने हाथ हिलाया, पर सलमान ने उसका हाथ हटाकर पीने को मजबूर कर दिया।

"एक मिनट की देर ग्रौर हो जाती, तो वह मुझे पकड़कर मेरा गला पकड़ लेता!" यारमामेद ने बड़ी शान से कहा, जिससे उसके मुँह बनाते हुए लवश में लिपटे पनीर में दांत गड़ाने में कोई बाधा नहीं पड़ी।

"चलो, एक-एक ग्रौर हो जाये," गृहस्वामी ने कहा।

ग्रब यारमामेद का हाथ कांपा नहीं, बल्कि उसने कसकर जाम थाम लिया। जाम एक घूंट में ख़ाली करके उसने ज़ोर से थूका, उसने जैसे ग्रब नज़नाज़ को पहली बार देखा ग्रौर भूखी नज़रों से चमचमाते जुराबों से ढके पैरों ग्रौर कुरते को फाड़े डाल रहे गदराये उरोजों को घूरने लगा।

"ग्राख़िर क्या हुग्रा?" मेहमान के उसके प्रति ध्यान देने से रीझ उठी नज़नाज़ ने नख़रे से पूछा।

"हुग्रा यह, नज़नाज़-ख़ानम, कि मैं कार्यालय से निकला ग्रौर स्कूल के बाग़ के पास – जानती हो न? – मैंने देखा कि ग्रंधेरे में बड़ी-बड़ी तेज़ ग्रांखें चमक रही हैं, तीन टन के ट्रक की हैडलाइटों जैसी। भेड़िया है या

---

*लवश – एक तरह की नान।

कुत्ता? मैंने सीटी मारी, ग्रौर ग्रचानक बड़ा-सा भेड़िया तीन छलांग लगाकर मुझ पर लपका!" यारमामेद बड़ी लगन से झूठ बोल रहा था।

नज़नाज़ ने हाथ पर हाथ मारा:

"ग्रहा, कितना दिलचस्प क़िस्सा है!"

"लेकिन ख़ुदा ने मेरी मदद की, मेरे हाथ ज़मीन पर एक पत्थर ग्रा गया ग्रौर मैंने उठाकर उसे पूरे ज़ोर से उसके सिर पर मारा! भेड़िया चौंककर पीछे हटा ग्रौर बाड़ फांदकर चीख़ मारकर ग्रंधेरे में ग़ायब हो गया!"

"बहादुर हो! तुमने सचमुच भेड़िये का दिल खाया है... ग्रौर तुमने बिलकुल ठीक किया," सलमान ने जंभाई लेते हुए ग्रलसाये स्वर में उसकी प्रशंसा की। "ग्रच्छा, ग्रब बताग्रो कि इतनी रात गये किस काम से ग्राये हो? लेकिन बस झूठ मत बोलना। ग्रौर तुम, नज़नाज़, ज़रा एक गिलास चाय ले ग्राग्रो।"

नज़नाज़ बरामदे में चली गयी, जब कि सलमान पतलून की जेबों में हाथ डाले कभी पंजों के बल खड़ा हो रहा था तो कभी एड़ियों के बल, मानो झूला झूल रहा हो, ग्रपनी मुखमुद्रा से यही प्रकट कर रहा था कि उसे लेखाकार के एक शब्द पर भी विश्वास नहीं होता है।

यारमामेद ने ख़ुशामदी ढंग से मुस्कराकर ग्रांखें बंद कर लीं ग्रौर सोये होने का बहाना करने लगा, पर सलमान पर इसका कोई ग्रसर नहीं हुग्रा। उसने मेहमान को हाथ से ज़ोर से झकझोर दिया ग्रौर कहा:

"सच्ची बात बताग्रो!"

यारमामेद ने चारों ग्रोर नज़र दौड़ायी, कहीं नज़नाज़ तो पास मे नहीं है, फिर उत्साहभरे स्वर में बोला:

"कुत्ते से किसी ने पूछा, तुझे दिन में कितनी बार पीटा जाता है। 'यह इस पर निर्भर करता है,' बेचारे ने जवाब दिया, 'कि कुत्ते के बच्चे से मेरी मुलाक़ात कितनी बार होती है...' ऐसे ही मैं, दोस्त, कुत्ते के बच्चे से एक बार नहीं कई बार मिलकर मुसीबत में फंस गया हूँ!"

"साफ़-साफ़ कहो!" शान्त गृहस्वामी ने कहा। "साफ़-साफ़ ग्रौर दो लफ़्ज़ों में!"

"दो लफ़्ज़ों में कैसे कहूँ! शेरज़ाद को जानते हो? ऐसा ग्रंतर्ध्वंसक इस धरती पर कभी पैदा नहीं हुग्रा था।"

"कहो, बात क्या है?"

"बात यह है कि शेरज़ाद और नजफ़ की, ख़ुदा क़सम, पहले कभी नहीं सुनी गयी शिकायतें हैं! वे सारे सामूहिक फ़ार्म को हथियाने के फ़िराक़ में हैं! शेरज़ाद – अध्यक्ष और नजफ़ उपाध्यक्ष बनना चाहते हैं... यह कहावत सुनी है: अंधों में काना राजा? अपने इर्द-गिर्द रिश्तेदारों और यारों-दोस्तों को जमाकर लेंगे और सामूहिक फ़ार्म को लूटने में जुट जायेंगे। और सामूहिक फ़ार्म के बारे में तो तुम जानते ही हो, हाथी की तरह होता है, मरने पर भी सवा लाख का होता है।"

सलमान के चेहरे पर शिकन भी नहीं आयी, मानो वह इशारा समझा ही नहीं, उसने शुष्कता से कहा:

"ये तथ्य नहीं, अटकलें हैं। अगर तुम्हारे पास तथ्य नहीं हैं, तो टोपी बग़ल में दबाओ और घर भागो। मुझे बड़ी ख़ुशी होगी, अगर तुम्हारी एक बार और भेड़िये से मुठभेड़ हो जाये और वह तुम्हें कच्चा चबा जाये!"

"कैसा ओछा आदमी है!" यारमामेद डर गया और उसने अटक-अटककर बोलते हुए शेरज़ाद के साथ हुई सारी बात बता दी। उसने अपने को मंदबुद्धि बालक कहा और छाति पीट-पीटकर उन पापों का प्रायश्चित्त भी किया, जो अभी उसने नहीं किये थे।

सलमान आंखें तरेरने लगा।

"यानी तुम रुस्तम-कीशी के ख़िलाफ़ बोले? बड़े बहादुर हो, इसमें कोई शक नहीं... और कहते हो कि तुमने भेड़िये का दिल खाया है! अरे रुस्तम गुस्सा आने पर तो पगलाये ऊंट से भी ख़तरनाक हो जाता है!"

यारमामेद ने घुटनों के बल बैठकर हाथ ऊपर उठाये मानो नमाज़ पढ़ रहा हो।

"भाई मेरे, मैं और तुम तो नाख़ून और उंगली की तरह हैं! तुम – उंगली हो, जिधर तुम, उधर ही मैं। और अगर नाख़ून उखाड़ दिया जाये, तो उंगली को, अरे बाप रे! – कितना दर्द होगा! नाख़ून के साथ-साथ मांस भी तो उखाड़ लेते हैं!.. मुझे बरबाद मत करो! तुम्हारी ख़ातिर मैं यातनाएं सहने को तैयार हूँ!"

उसी समय नज़नाज़ वहां आ गयी। घुटनों के बल बैठे मेहमान को देखकर उसके हाथों से चाय के दो गिलासों समेत ट्रे गिरते-गिरते बची।

"अरे, क्या हुआ इन्हें?!"

"ज़्यादा पी गया है। तुम्हारी कोनक बहुत ज़्यादा तेज़ है, अपने पैरों

पर नहीं खड़ा हो पा रहा है," सलमान ने मज़ाक़ में कहा और यारमामेद की गरदन में हाथ डालकर उसे मेज़ की तरफ़ धकेल दिया। "बैठो, कोई तरकीब सोचेंगे।"

८

उल्लू खंडहरों में घोंसला बनाता है, चमगादड़ केवल रात में उड़ने का साहस करता है।

सलमान दो हफ़्तों से रुस्तम व शेरज़ाद से मुलाक़ात होने पर दोनों को ही देखकर मुस्कराता था, पर अपने मुंह से एक भी फ़ालतू शब्द नहीं निकालता था।

केवल यारमामेद से यह मालूम होने पर कि अध्यक्ष की फिर शेरज़ाद के साथ झड़प हुई है, सलमान ने सोच लिया कि उसके लिए स्वर्ण अवसर अब आ गया है।

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि शेरज़ाद इतना नीच निकलेगा," उसने रुस्तम से धीरे से कहा।

वे कार्यालय में बैठे थे, कक्ष के किवाड़ कसकर बंद किये हुए थे, फिर अगल-बग़ल के कमरों में भी कोई नहीं था, केवल यारमामेद को छोड़कर।

सलमान पेट पर हाथ बांधे सविनय मौन बैठा था।

"मेरी समझ में नहीं आता," अन्त में रुस्तम से न रहा गया, "उसे आख़िर चाहिए क्या। चैन से बैठा रहता!"

"तुम्हारे सिर की क़सम, चचा, मेरे ख़ुद भी कुछ समझ में नहीं आता। होने को तो टोली-नायक है, काम करे या न करे, श्रम-दिन उसके नाम लिखे जाते हैं। बदसूरत भी नहीं है, हमारे यहाँ न सही, 'लाल झण्डा' में तो कोई मालदार दुलहन ढूंढ़ ही सकता था। ख़ुद अध्यक्ष ने उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई है, अपने पास बिठाया, सचिव के पद के लिए सिफ़ारिश की!"

सलमान एक मिनट सोच में डूबा रहा और अचानक उसके चेहरे पर विजयी मुस्कान खिल उठी:

"अरे, झगड़े की जड़ तो सचिव के पद में है! तुम्हारी क़सम, चाचा, जिस घड़ी से लड़के को सचिव चुना गया है, तभी से वह बिलकुल बदल

गया है! देखिये तो, वसन्तकालीन बोवाई की तैयारी से वह सन्तुष्ट नहीं है!"

सलमान और भी बहुत-सी मनगढ़ंत बातें कहना चाहता था, पर रुस्तम की भौंहें सिकुड़ी देखकर चुप हो गया।

रुस्तम ने सलमान पर एक उड़ती चुभती नज़र डाली और काग़ज़ात पर झुककर लाल पेंसिल से कुछ टिप्पणियां लिखने लगा।

"बिलकुल अलग बछेड़े की तरह है," सलमान ने सोचा, "जब चाहे लात मार दे! ऐसे को काठी ढोने का आदी बनाने के लिए ज़रा होशियारी से काम लेना होगा!"

"आप नाराज़ न हों, चचा, पर यह कहना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि वसन्तकालीन बोवाई के मामले में शेरज़ाद का कहना ठीक है..." लेखापाल ने चिकनी-चुपड़ी आवाज़ में बोलना शुरू किया।

रुस्तम ने मुँह से पाइप निकालकर सलमान की तरफ़ आंखें सिकोड़कर देखा, होंठ चबाये, पर चुप रहा।

"हाँ, चाचा, इस हुल्लड़बाज़ का कहना सही है," लेखापाल ने बेधड़क कहा। "तुम्हारे लिए किसी टोली-नायक की ख़बर लेना बुरा नहीं होगा। उनके सिर चढ़ गये हैं! ज़िम्मेदारी की भावना उनमें बिलकुल नहीं रही है।"

"ऐ, तुम हथौड़ी से कभी तो कील पर चोट करते हो और कभी नाल पर," अध्यक्ष ने अन्त में सन्देहपूर्वक टिप्पणी की।

"क-भी न-हीं!" सलमान ने, यह महसूस होने पर कि उसका चेहरा फक हो गया है, झल्लाकर कहा। "मैं शुरू से ही कील के सिरे पर चोट कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि सामूहिक फ़ार्म का काम-काज बहुत अच्छे ढंग से चलता रहे और यह भी कि तुम, चाचा, अपना सिर तानकर चल सको। मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं चाहिए।"

"ज़बान चलाने में तो तुम सब उस्ताद हो! तुम मंच पर जाकर कहो न: 'हमारे काम में टाँग मत अड़ाओ, लफ़्फ़ाज़ो, हमें ईमानदारी से मेहनत करने में रोड़े मत अटकाओ!' तब मैं तुम्हें बहादुर समझूँगा।"

"ज़रा देखो तो, मुझे किधर धकेल रहा है..." सलमान डरकर सोचने लगा। "मुझे डण्डा बनाना चाहता है, ताकि सबके सिर फोड़ सके। और फिर कूड़े समेत घूरे पर फेंक देगा। नहीं, यह चाल नहीं चलेगी। ऐसा अभी दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ है, जो सलमान को धोखा दे सके!"

"तुम्हारी बातें बहुत अक़्लमंदी की हैं, रीचा!" उसने दुःखी स्वर में कहा। "बुरा यही लगता है कि तुम मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे हो। मुझे आगे रहना पसंद नहीं है। काश, तुम एक बार भी सुनते कि मैं इन लफ़्फ़ाज़ों की कैसे आलोचना करता हूँ। मेरा कंठ सूखने लगता है–बेशक, मुँह-दर-मुँह,–फिर मेरे बारे में तुम्हारी राय कुछ और ही होती।"

सलमान की उदास मुखमुद्रा अध्यक्ष को अच्छी लगी और उसने फ़ौरन उदारतापूर्वक उसका उत्साह बढ़ाया:

"अगर तुम पर विश्वास न करता, तो तुम्हें चाय पीने नहीं बुलाता। लेखापाल नहीं बनाता। लाखों में खेलते हो–यह भी तो कुछ माने रखता है।"

सलमान ने इतनी सरलता से दीनतापूर्वक बंदगी की जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी हड्डी नहीं, रेशम का धागा हो।

"शुक्रिया, चाचा, शुक्रिया। सलमान नेकी कभी नहीं भूलेगा! मेरे पास हर कोपेक का काग़ज़ात पर हिसाब मौजूद है। चाहे सौ, दो सौ लेखा निरीक्षक आ जायें, तो भी कुछ नहीं ढूंढ़ पायेंगे! आय-व्यय शेष शीशे-सा साफ़ है!"

रुस्तम फिर काग़ज़ात में व्यस्त हो गया और उसने जंभाई लेकर अन्त में अन्यमनस्कता से पूछा:

"हाँ, तो तुम किस बारे में कह रहे थे?"

"कीड़े पड़ें इसके!" सलमान ने मन-ही-मन बददुआ दी। "पूरी बात सुनना ही नहीं चाहता!" उसने फ़ाइल से सफ़ाई से टाइप किया हुआ काग़ज़ निकालकर अध्यक्ष के सामने रख दिया।

"दस्तख़त कर दो।"

"यह क्या है?"

"बैंक से ऋण के लिए प्रार्थनापत्र। संस्कृति-भवन के निर्माण के लिए पांच लाख रूबल का। अवितरित निधि में एक कोपेक भी नहीं है! उधार लेना पड़ेगा!"

किसानों की पुरानी आदत से रुस्तम को उधार लेना पसंद नहीं था। उसका मूड बिगड़ गया, उसने काग़ज़ को हाथों में उलटा-पलटा और सूंघा भी।

"अवितरित निधि, अवितरित निधि..." वह निराश हो बुदबुदाया। "हमारे पास कभी तो पचास-साठ लाख रूबल खुले ख़र्च के लिए होगा?.."

"वह दिन दूर नहीं है, और तुम उसे, ख़ुदा करे, जल्दी ही देख लोगे," लेखापाल के चेहरे पर सुखद मुस्कान खेल गयी। "जब तुम मोर्चे से लौटे थे, सामूहिक फ़ार्म क़र्ज़ से उबर ही नहीं पा रहा था। अब बैंक ख़ुद कहता है: रुस्तम-कोशी को दिया गया ऋण कभी नहीं डूबेगा... ये ख़ुद मैनेजर के शब्द हैं! शरत् में नक़द आय भी होगी और अवितरित निधि में भी पैसा आ जायेगा!"

रुस्तम ने सावधानीपूर्वक क़लम डुबाकर ऐसे मुंह बनाये हस्ताक्षर किये मानो ख़ुद अपने मृत्यु-दण्ड की पुष्टि कर रहा हो और ठण्डी सांस लेकर बोला:

"ओह, बिलकुल पसंद नहीं मुझे उधार लेना! सिक्का-सिक्का माथे को दाग़ता है!.."

उसने घृणापूर्वक काग़ज़ को सरकाया और काग़ज़ चक्कर खाता कबूतर की तरह उड़ने लगा, लेकिन सलमान ने उसे बड़ी चतुराई से पकड़कर फ़ाइल में रख दिया।

"जब टोली-नायक जमा हो जायें, आ जाना," रुस्तम ने कहा और सिर हिलाकर लेखापाल को जाने का संकेत किया।

उसे अपने विचारों में तारतम्य बिठाने के लिए अकेले रहने की ज़रूरत थी। शेरज़ाद द्वारा बोवाई की तैयारी अच्छी न होने की शिकायत से वह हड़बड़ा गया था। चाहे कुछ भी क्यों न हो, पर वह अपनी पिछले वर्ष की ग़लतियों को दोहराना नहीं चाहता था... शेरज़ाद से वह कितना ही खीजा हुआ क्यों न था, पर मन-ही-मन वह उसे उपयुक्त समय पर चेतावनी देने को उचित मानता था। इसीलिए तो रुस्तम ने टोली-नायकों को एकत्र होने का आदेश दिया था – वे यह न भूलें कि अध्यक्ष का हाथ कितना भारी पड़ता है। अध्यक्ष की पैनी नज़रों से मामूली से मामूली बात बच नहीं सकती। रुस्तम पड़ोसी को बागडोर संभलाने का इरादा नहीं रखता।

वह कक्ष में दाख़िल हो रहे टोली-नायकों की तरफ़ देखकर मुस्कराता हुआ इसी तरह अपना हौसला बढ़ा रहा था। वह इस बात से सन्तुष्ट था कि वे उसके साथ आदरपूर्वक पेश आ रहे हैं, हाथों में अपनी टोपियां मसल रहे हैं, मुंह पर हाथ रखकर खांस रहे हैं। "ज़रा ठहरो, बच्चू," वह सोच रहा था। "इज़्ज़त करना बात अच्छी है, पर अकेली इज़्ज़त से मुझे नहीं ख़रीदा जा सकता, काम करना ज़रूरी है! मैं तो तुम्हें दिखा दूंगा कि मैं क्या हूँ!"

शेरज़ाद व टोली-नायक महमूद आत्मविश्वास के साथ सहज चाल से अंदर आये और शान्तिपूर्वक अभिवादन किया।

"वसन्त सिर पर आ गया है," रुस्तम ने एकत्र लोगों पर सख़्त नज़र दौड़ाकर कहा। "हर टोली-नायक संक्षेप में बताये कि बोवाई की तैयारी कैसी चल रही है।"

सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष टोली-नायकों की रिपोर्ट सुनता हुआ लाल पेंसिल से अपनी नोटबुक में टिप्पणी लिखता जा रहा था। नाटे क़द, लम्बे चेहरे और बढ़ी दाढ़ीवाले अहमद ने आदतन यह कहकर कि उसे भाषण देना नहीं आता है, विश्वास दिलाया कि उसकी टोली बोवाई शुरू होने तक पूरी तैयारी कर लेगी, सामूहिक किसान कभी ऐसी नौबत नहीं आने देंगे कि उनके आदरणीय अध्यक्ष को सिर झुकाना पड़े। रुस्तम को चिल्लाकर कहने की इच्छा हुई: "पक्की बात बताओ!" – लेकिन वह चुप कर गया। अगर नोक-झोंक फ़ौरन ही शुरू हो गयी, तो फ़ायदा कम ही होगा। उसके बाद हमेशा उनीन्दा और विषण्ण रहनेवाला हसन बोला, उसने डायरी में नज़रें गड़ायीं और फिर उठायीं ही नहीं। रुस्तम आसानी से भांप गया कि टोली-नायक डायरी में से उपज के आयोजित आंकड़े पढ़-पढ़कर सुना रहा है, पर टोली ने क्या किया है, इसके बारे में कुछ भी नहीं कह रहा है।

"ज़रा ठहरो। तुम्हारी चौथी टोली को अभी कितनी पांस ढोकर पहुंचाना बाक़ी है?" सलमान ने अपनी जगह से पूछा।

"योजनानुसार सत्तर गाड़ियां।"

"और पहुँचायी कितनी हैं?"

"क्या मतलब?" हसन ने न समझने का दिखावा किया।

"मैं पूछता हूँ, कितनी गाड़ियां पहुँचायीं?"

"योजनानुसार सत्तर गाड़ियाँ, मैंने कहा तो है..."

"अरे, योजनानुसार नहीं, कितनी पहुँचायी हैं? कितनी पहुँचा चुके हो? अभी तक?"

हसन ने डायरी के पन्ने पलटे, फिर छत की तरफ़ देखा और अचानक जैसे उसे कुछ ध्यान में आ गया हो, बेपरवाही से बोला:

"तुम्हें इससे क्या मतलब, प्यारे सलमान? जब बोवाई शुरू हो, तब तुम मुझसे खाद पड़ी उर्वर मिट्टी दिखाने को कहना।"

रुस्तम को बस यही बहाना चाहिए था, उसका धैर्य समाप्त हो गया

श्रौर उसने हसन को ऐसी नजरों से देखा कि बाक़ी टोली-नायक एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे। अध्यक्ष ने हसन को याद दिलाया कि पिछले वर्ष भी उसने यही चालबाज़ी की थी श्रौर जब मौसम श्राया, खेत में कल्टीवेटर जुड़े ट्रेक्टर श्राये, तो मालूम पड़ा कि पांस लाने के लिए उसे वक़्त ही नहीं मिला था। तब बेशर्म हसन क्या बुदबुदाया था? "तीन बार श्रतिरिक्त खाद दे देंगे श्रौर मिट्टी को श्रपनी पूरी ख़ुराक मिल जायेगी..." उसके बाद श्रतिरिक्त खाद देने का समय भी नहीं बचा श्रौर टोली के खेतों की उपज सामूहिक फ़ार्म में सबसे कम रही। जब हम श्रभी से समझौते की शर्तों को पूरी न करने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहे हैं तो फिर पतझड़ में कौन-सा मुंह लेकर 'लाल झण्डा' में जायेंगे? ज़िम्मेदारी का एहसास ज़रा-सा भी नहीं है!

"ढुलाई तीन दिन के श्रंदर-श्रंदर ख़तम हो जानी चाहिए!" रुस्तम ने दो टूक कह दिया।

"ठीक है, हो जायेगा। हम दो दिन में भी निबटा लेंगे, मैं विश्वास दिलाता हूँ," हसन ने झट से कहा श्रौर डायरी जेब में रख, सीने पर हाथ श्राड़े बांधकर श्रागे की बात सुनने को तैयार हो गया: क़हर टल गया...

श्रब श्रध्यक्ष की नज़र गूंगे हुसैन पर टिकी। हुसैन समझ गया कि श्रब उसकी बारी श्रा गयी है, उसने बिना खड़े हुए, बिना मुखमुद्रा बदले श्रात्मविश्वास के साथ कहा कि सब ठीक है, टोली बोवाई के लिए तैयार है श्रौर किसी के बारे में न सही, पर हुसैन के बारे में श्रध्यक्ष निश्चिन्त रह सकता है। हुसैन का चेहरा सांवला श्रौर चेचकरू था, श्रांखें बड़ी-बड़ी श्रौर एकाग्र थीं। वह तर्क-वितर्क के समय सम्भाषी से बिना "हाँ" या "नहीं" कहे श्रांखें बराबर करने में कुशल था। विशेष कठिन परिस्थितियों में, जब उस पर मीटिंगों में दबाव डाला जाता, तो वह बहरा होने का बहाना भी कर लेता था। वास्तव में वह दायें कान से कुछ ऊँचा भी सुनता था।

"मुझे माफ़ कीजिये, कामरेड रुस्तमोव," शेरज़ाद ने कहा, "हमारी मीटिंग बहुत श्रव्यवस्थित ढंग से हो रही है। सब विश्वास दिला रहे हैं कि सारे काम पूरे कर लिये गये हैं, पर जायज़ा लेने पर मालूम पड़ता है कि कुछ नहीं किया गया है..."

उसने श्रागे कहा कि 'नवजीवन' में लोग श्ररसे से ज़मीन में खाद न डालने के श्रादी हो चुके हैं। इस समय भी टोली-नायक पांस ढोकर

पहुंचाने में यह मानकर टाल-मटूल कर रहे हैं कि सिंचाई से सब ठीक हो जायेगा। लेकिन सामूहिक फ़ार्म की ज़मीन नियमित सिंचाई के बावजूद श्रपनी उर्वरता खो चुकी है। श्रब उसकी उर्वरता सिर्फ़ उर्वरक पर ही निर्भर करती है।

"नाले के उस पार किसका खेत है? तुम्हारा?" उसने हुसैन से पूछा।

हुसैन ने उसकी तरफ़ घूरकर देखा, पर न "हाँ" की, न ही "नहीं"।

"तुम्हारे खेत से तो पांस की बू बिलकुल भी नहीं श्रा रही है! वहाँ पिछली शरत् से हल श्रौर कल्टीवेटर पड़े हुए जंग खा रहे हैं, ज़मीन में धंस गये हैं! श्रगर ऐसा ही होता रहा, तो हम सारे बोवाई श्रभियान पर पानी फेर देंगे!" शेरज़ाद ने ग़ुस्से में कहा।

"शेरज़ाद हमेशा की तरह बात बढ़ा-चढ़ाकर कह रहा है," सलमान ने हुसैन की तरफ़दारी श्रौर श्रध्यक्ष की ख़ुशामद करने के इरादे से धीरे से पर स्पष्ट स्वर में टिप्पणी की।

रुस्तम को उस समय किसी प्रकार के हस्तक्षेप की श्रावश्यकता नहीं थी श्रौर उसने उपेक्षापूर्वक हाथ झटक दिया।

"जो श्रभियान पर पानी फेरेगा, उसकी श्रांखें फोड़ डालूंगा!" वृद्ध गरज उठा। टोली-नायकों के साथ जब काम के बारे में बात छिड़ती थी, वह शब्द चुनने में कोई लिहाज़ नहीं करता था। "बोवाई श्रभियान पर पानी कैसे फेरा जा सकता है?! जो ठण्डक में पलंग तोड़ना चाहते हैं, क़सूर उन्हीं का माना जायेगा। मैं उनकी पहले की सेवाश्रों का कोई ख़याल नहीं करूँगा।"

"कामरेड श्रध्यक्ष द्वारा बरती जा रही सख़्ती का समर्थन करना चाहिए," शेरज़ाद ने कहा। "ग़लतियां सुधारने के लिए श्रभी समय है।"

रुस्तम ने शेरज़ाद के समर्थन की क़दर करते हुए उत्साहपूर्ण स्वर में श्रागे कहा:

"श्रौर श्रागे कोई ग़लतियाँ नहीं होनी चाहिएं। हमें श्रम-दिन के बदले में पिछले वर्ष की तुलना में दुगुना देना चाहिए।"

"लोग श्रापके बहुत श्राभारी होंगे!"

"बिलकुल ठीक कहा!" महमूद ने हाँ में हाँ मिलायी।

"हमें काम करना चाहिए, न कि थोथे वादे करने चाहिएं। हुसैन श्रौर हसन, लगता है, हमारी श्रांखों पर पट्टियां बांध देना चाहते हैं,"

शेरज़ाद ने कहा, "और सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति को भी बोवाई के प्रति उसके उत्तरदायित्व का स्मरण कराना भी अनुचित नहीं होगा।"

"प्रबंध समिति का इससे क्या वास्ता?" रुस्तम क्षुब्ध हो उठा। "प्रबंध समिति अपनी जगह है और टोली-नायक अपनी।"

"नहीं, हमारे कार्य की सफलता सबसे पहले स्वयं प्रबंध समिति पर निर्भर करती है," शेरज़ाद ने प्रतिवाद किया।

सलमान ने सोचा कि अब उसके हस्तक्षेप करने का समय आ गया है।

"मैं फिर कह रहा हूँ कि शेरज़ाद सब बढ़ा-चढ़ाकर कह रहा है। सबकी तो वह आलोचना कर रहा है, पर अपनी टोली के बारे में चुप लगाये हुए है। आख़िर उसकी भी तो टोली है और वह भी छोटी-मोटी नहीं।"

रुस्तम ने आंखों ही आंखों में उसे धन्यवाद दिया।

"सच कहा जाये, तो तुम्हें टोली के बारे में बताना चाहिए। इसका मतलब यही हुआ कि अकेले तुम्हीं में कोई दोष नहीं है! यह कौन-सा अजूबा हुआ?" शेरज़ाद ने जवाब देना चाहा, पर अध्यक्ष ने उसे रोक दिया। "बस, बस, यहाँ मछलीहट्टा मत बनाओ। अपनी डायरियां निकाल कर लिखो।" और वह प्रत्येक को वसन्तकालीन कृषि कार्यों के पूरा करने की अवधियां लिखवाने लगा।

टोली-नायकों के जाने के बाद अध्यक्ष ने सलमान द्वारा निकालकर रखे गये अत्यावश्यक काग़ज़ातों पर हस्ताक्षर किये, मेज़ की दराज़ें व अलमारी बंद की और पाइप की राख झाड़ी,–यह सारा काम उसने मुंह बनाते हुए, जैसे ज़बरदस्ती कर रहा हो, अपनी सारी मुखमुद्रा से यह प्रकट करते हुए किया कि अध्यक्ष का काम आसान नहीं है।

"तारीफ़ करता हूँ आपकी, चचा। तारीफ़ करता हूँ और इबादत करता हूँ," सलमान ने गद्गद कंठ से कहा। "एक भी भरोसेमंद आदमी नहीं है! और शेरज़ाद के मामले में तो आप आगे भी ख़ता खायेंगे, क़सम से! दिल का काला है..."

"अरे, मैं देख चुका हूँ हर तरह के लोगों को!" रुस्तम ने अब चैन की सांस ली।

टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी। रुस्तम को पार्टी की ज़िला समिति से फ़ोन किया गया था।

"प्यारे कामरेडो!" उसने अत्यधिक सताये हुए आदमी के स्वर में कहा। "तेल्ली चाची आपको ग़लतफ़हमी में डाल रही है... नहीं, मैं यह नहीं कहना चाहता कि वह आलसी है या काम से जी चुराती है। लेकिन वह लफ़्फ़ाज़ है, लाइलाज लफ़्फ़ाज़! सबकी नाक में दम कर रखा है उसने!"

बातचीत में निमग्न रुस्तम ने नहीं देखा कि तेल्ली कब कमरे में आ गयी।

"तुम ख़ुद लफ़्फ़ाज़ हो!" वह अचानक चिल्ला पड़ी। "ट्रक नहीं देना चाहते, तो मत दो, पर झूठी बुराई मत करो!"

"यह कहाँ से आ टपकी?" रुस्तम ने सोचा और माउथपीस पर ज़ोर से हाथ रखा, ताकि तेल्ली की आवाज़ ज़िला समिति में सुनाई न दे।

"ठीक है, ठीक है, दूँगा, फ़ौरन दूँगा!" उसने चोंगे में झट से कहकर उसे रख दिया और तेल्ली की ओर पलटा। "हमें चैन से रहने दो! बाद में आ जाना।"

"अपना क़ौल तोड़नेवाले मर्द को क्या कहकर पुकारा जाये? तीन महीनों से इन्तज़ार कर रही हूँ! घर ढह गया है!"

रुस्तम के पीछे से शान्त सलमान बोल उठा:

"चाची, शान्त हो जाओ, तुमने ख़ुद ही अभी सुना: 'ट्रक दे दूँगा'!"

"बंजारन की तरह मत नाचो, सब की नाक में दम कर दिया, सबके सामने अपनी बदनामी करवा ली!" रुस्तम मंद्र स्वर में बोला।

"ख़ुद तुमने अपनी बदनामी करवायी! जब ज़िला समिति के सचिव से बात कर रहे थे, तो बिल्ली की तरह म्याऊँ-म्याऊँ कर रहे थे, और अब फिर शेर हो उठे हो! हर हालत में लिखूँगी, बाकू लिखूँगी!" चाची शान्त नहीं हुई।

"ट्रक बोवाई के बाद मिल जायेगा। उससे पहले नहीं!" अध्यक्ष ने दृढ़ स्वर में कहा और कक्ष से बाहर चला गया।

६

सलमान ने यारसामेद को शेरज़ाद से अकसर मिलते रहने और उसका प्रत्येक शब्द याद रखने की सलाह दी थी। "तुम्हारे लिए बचने का यही एक रास्ता है!" उसने लेखाकार को सीख दी थी।

यारमामेद शेरजाद व नजफ़ के मजाक़ सहन करता, हर मुलाक़ात के बाद सलमान के यहां भागता, उसे सुनी हुई बातों की पूरी रिपोर्ट देता और इनाम में नजनाज के हाथों से कोनक का एक जाम पीता।

अन्त में सलमान ने फ़ैसला किया कि अब समय आ गया है, और देर करने की ज़रूरत नहीं रही, और वह यारमामेद को अध्यक्ष के पास ले गया। लेखाकार अड़ रहा था, थर-थर कांप रहा था, सलमान से भी और अल्लाह से भी रहम की दुआ करता जा रहा था। सौभाग्य से उन्हें रात को गलियों में कोई नहीं मिला, न ही किसी ने पूछा कि लंगोटिया यार कहां जा रहे हैं। यारमामेद चुपचाप रुस्तम के घर के फाटक में घुस जाना चाहता, पर अलसेशियन कुत्ता मेहमानों की दूर से ही गंध पाकर ज़ोर से भौंक उठा।

"शेर की तरह गरजता है। बहुत घमण्ड है। गला भी अध्यक्ष की तरह ढलवां लोहे का है," सलमान ने कहा।

यारमामेद के काटो तो ख़ून नहीं।

"श ऽऽ! .. ऐसा कोई कहता है!"

"सच ही कहते हैं कि मालिक अपने नौकर से ज़्यादा दयालु होता है," सलमान ने खीसें निपोड़ीं और चरमराते फाटक को धक्का दिया।

बरामदे का दरवाज़ा खुला, तेज़ रोशनी अंधेरे को चीरती चमकी और गराश की आवाज़ आयी:

"कौन है?"

"हम हैं। तुम्हारे अब्बा घर पर हैं?" और यारमामेद की बग़ल में कोहनी से टहोका मारकर सलमान ने उसे अन्तिम निर्देश दिया। "हाँ में हाँ मिलाते जाना, पर ख़ुद बात मत छेड़ना। वरना अपनी 'में-में' से सारा खेल बिगाड़ डालोगे।"

बरामदे में बिना कमरपेटी के फ़ौजी कमीज़ पहने और पैरों में स्लीपर डाले रुस्तम दिखाई दिया – न जाने वह सो रहा था या आराम से बैठा शाम की चाय पी रहा था।

"ख़ैरियत तो है न? आइये।"

"हम एकाध घंटे के लिए आये हैं, उससे ज़्यादा नहीं, चाचा, बहुत ज़रूरी बात करनी है, वरना हम कभी आपके नेक ख़ानदान के आराम में ख़लल नहीं डालते," सलमान ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा। और गृहस्वामी से दुआ-सलाम करके बोला: "क्यों मेरे यहाँ चलें?"

"जैसे मेरा घर ज़रूरी बातों के लिए बिलकुल ठीक है," रुस्तम ने मज़ाक़ किया।

"हमें डर था कि हम दूल्हा-दुलहन को परेशान कर देंगे। शायद..."

"एक सामूहिक फ़ार्म में 'शायद' की बोवाई की गयी थी, पर कुछ नहीं उपजा!" रुस्तम हंस पड़ा। "तशरीफ़ लाइये।"

"नजनाज बाकू से लौट आयी है, कुछ लायी है... बैठकर सलाह-मशविरा करेंगे," सलमान ने फुसफुसाकर गृहस्वामी को फुसलाना चाहा, पर वह सुनने को भी तैयार नहीं हुआ, उसने मेहमानों को खाने के कमरे में धकेल दिया, बेटे से चाय लाने को कहा और मेज पर कोहनियाँ टिकाकर, मुँह में पाइप दबाये पूछा:

"ख़बर अच्छी लेकर आये हो न?"

"ख़बर किसी भी तरह की नहीं लाये हैं," सलमान जल्दी से गृह-स्वामी को शान्त करते हुए कहा, "इसके बजाय चर्चा अरसे से मालूम मामलों के बारे में होगी, बोवाई के बारे में..."

रुस्तम की भौंह कांपकर ऊपर चढ़ी, पर सलमान ने इसको कोई महत्त्व नहीं दिया, वह भांप चुका था कि अध्यक्ष को बातचीत की भूमिका अरुचिकर लगेगी। और उसने सरल मुस्कान के साथ कहा कि रुस्तम-कीशी निस्सन्देह वसन्तकालीन बोवाई को लेकर आये दिन हो रही झड़पों से उकता चुका है, शायद सुनते-सुनते उसके कान पक गये होंगे, पर सलमान का उन बातों को दोहराने का कोई इरादा नहीं है, वह तो केवल रुस्तम-कीशी के अनुमोदन के लिए कुछ ठोस योजनाएं ही पेश करना चाहता है।

यारमामेद उसके हर शब्द पर स्वीकृति में सिर हिला रहा था, अपनी बतख़ जैसी लंबी गरदन हिला रहा था और अपने मित्र की बुद्धिमत्ता पर ख़ुश हो रहा था। बेशक बात काम-काज के मामलों से शुरू करने में ज़्यादा फ़ायदा था, उसके बाद बातों ही बातों में शेरज़ाद की हंसी उड़ाई जा सकती थी।

"'लाल झण्डेवालों' से समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद से," सलमान ने अपनी धूर्त्ततापूर्ण बात छेड़ी, "सामूहिक फ़ार्म में सिर्फ़ पैदावार में वृद्धि करने के बारे में ही बातें हो रही हैं। और पैदावार, आप ख़ुद ही जानते हैं, सामूहिक फ़ार्म के उत्पादन का एक महान कार्य है..."

"तुम मुझे मत सिखाओ, मैं ख़ुद सब समझता हूँ," रुस्तम-कीशी कह उठा।

सलमान ने ज़रा भी बुरा नहीं माना और शान्त व निलिप्त स्वर में बोला कि वह तो केवल आदरणीय अध्यक्ष का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करने की कोशिश कर रहा है कि एक सौ हेक्टेयर के बजाय कपास को और दो सौ हेक्टेयर स्कवायर क्लस्टर बोवाई की जा सकती है, कि साठ हेक्टेयर में मक्का की बोवाई करना 'नवजीवन' जैसे शक्तिशाली सामूहिक फ़ार्म के लिए बहुत कम है, लोग हंसेंगे, परती ज़मीन में बोवाई करके योजना दुगुनी की जा सकती है, कि स्तेपी की घास हर साल बरबाद होती है, अगर और साइलो खत्तियां बनवा दी जायें, तो चारे में भी वृद्धि हो जायेगी।

गराश ट्रे लिये आया और उसने चाय के तीन गिलास और चीनीदान रख दिये।

"पर, चचा, आप यह मत सोचिये कि मैं किसी बात की ज़िद कर रहा हूँ, ख़ुदा बचाये!" सलमान को गराश की तरफ़ देखकर और उसे कमरे से किसी तरह बाहर भेजने की तरकीब सोचते हुए अचानक ख़याल आया। "वरना आप फिर मुझे उलाहना देंगे। हाँ, पर मैं यह क्या ज़बानी बयान करने लगा, जब कि यहां सब लिखा है।"

और उसने रुस्तम की ओर टाइप की हुई योजना बढ़ाई, जिसमें अनेक आंकड़े और आकलन थे, काग़ज़ में नीचे लिखा था: सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष...

"इस पर हस्ताक्षर कर दीजिये–फिर काम ख़तम! तब शेरज़ाद का यह कहने के लिए मुँह भी नहीं खुल सकेगा कि हमने सारी छिपी क्षमता का उपयोग नहीं किया है," सलमान ने आगे कहा और दीवार से पीठ टिकाकर रुस्तम पर विजयमान दृष्टि डाली।

सलमान के सुझाव रुस्तम को आकर्षक लगे। "कभी-कभी बेवक़ूफ़ के मुँह से भी अक़्लमंदी की बात सुनने को मिल जाती है।" उसने सोचा। वास्तव में आजकल सब केवल इसी बारे में बातें करते हैं। और पार्टी के निर्णयों ने तो सचमुच लोगों में हलचल मचा दी है... अगर यही बात है,–वास्तव में है भी,–तो सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष के लिए आम सभा में ऐसे सुझाव पेश करने में कोई बुराई नहीं है, जिनका जनता बड़े उत्साह से स्वागत कर सकती है।

"विचार काम का है..." रुस्तम ने मूँछों की नोकों पर बल दिया और योजना को पढ़ने में तल्लीन हो गया।

गराश चाय रखकर गया नहीं, जैसा कि सलमान चाहता था, बल्कि तख़्त पर अधलेटा होकर ध्यानपूर्वक बात सुनने लगा। उसकी नज़रों से यह छिपा नहीं रह सका कि मेहमान एक दूसरे की तरफ़ देख-देखकर आंख मार रहे हैं।

मिनट-भर मौन का लाभ उठाकर यारमामेद ने चीनी की डली मुंह में डाली और बोला:

"रहमदिल और इन्साफ़पसंद चाचा, कल ये घिनौने लफ़्फ़ाज़, शेरज़ाद और उसके मददगार मोटे नजफ़ ने मेरे गले पर छुरी रख दी और कहने लगे: दिखाओ रजिस्टर, हम जानना चाहते हैं कि अवितरित निधि का और पैसे का क्या हो रहा है..."

"तुमने दिखाये?" अध्यक्ष की मन्द्र स्वर की गरज से यारमामेद झुककर दोहरा होने के लिए मजबूर हो गया।

"कैसे दिखा सकता था! बिना आपकी इजाज़त के? मैं तो उससे पहले मर जाता... वे चिल्लाते रहे, मुझे धमकाते रहे, पर मैं अटल रहा। शेरज़ाद कहने लगा कि सामूहिक फ़ार्म में जनतंत्र नहीं है, सामूहिक नेतृत्व नहीं है, रुस्तम तानाशाह हो गया है, जब कि प्रबंध समिति उसके इशारों पर नाचती है... और कहने लगा... ज़बान पर लाते बुरा लगता है... उस सौ हेक्टेयर के टुकड़े के बारे में! लेकिन सब देख तो चुके हैं कि बीजों से अंकुर फूटे ही नहीं थे, पर शेरज़ाद, काफ़िर, झूठी बुराई करने में नीचता की हद तक गिर गया है। कहता है, अनाज की चोरी कर ली गयी है... किसने की? हुसैन और अध्यक्ष ने!"

यारमामेद कांप रहा था, कभी अत्यन्त धीमे स्वर में फुसफुसा रहा था, तो कभी चीख़ रहा था।

"अनाज चुरा लिया गया है?!" रुस्तम ने कसकर दिल थाम लिया, उसका चेहरा इतना पीला पड़ गया कि बेटा डर गया और पानी का गिलास लेकर उसके पास लपका। "अब मुझे मालूम हो गया कि ज़िला समिति में अनाम शिकायतों की बौछार कौन कर रहा है!" गराश का हाथ झटककर वह बोलता रहा। "और मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में भी उसी बारे में... और बिलकुल वैसे ही शब्दों में!"

"अनाम शिकायत?" सलमान अध्यक्ष के ज़रा नज़दीक आ बैठा। "पर लिखावट किस की है? जहाँ तक मैं समझता हूँ, लिखावट बदली हुई होगी, क्योंकि कोई पागल ही अपनी लिखावट में शिकायत लिखने का काम

कर सकता है... कितने नमकहराम हैं! इसके बाद लोगों पर विश्वास कैसे किया जा सकता है!"

उसने वितृष्णा व्यक्त करने के लिए थूक भी दिया।

"दुश्मन की मैं इज़्ज़त कर सकता हूँ, वह सामने आकर लड़ता है। लेकिन ये चुग़लख़ोर, छछूंदर की तरह दुबके रहते हैं," रुस्तम ने उपेक्षा-पूर्वक कहा। "अरे, प्रार्थनापत्र में अपना नाम लिखो, अपने बाप का नाम लिखो। लेकिन नहीं, अनाम पत्र लिखेंगे!... हालांकि इस तेल्ली चाची ने मेरा मन-भर ख़ून सुखा दिया है, फिर भी उसने ज़िला समिति में चिट्ठी अपने नाम से ही भेजी। और इसके लिए मैं उसकी इज़्ज़त करता हूँ। सलमान कल ही चाची को दिन-भर के लिए एक ट्रक दे देना!" अध्यक्ष ने आदेश दिया।

सलमान व यारमामेद अध्यक्ष के यहाँ लगभग मुर्ग़ों की सुबह की पहली बांग देने तक बैठे रहे; गराश ने उनको गिलासों में तीन बार चाय भरी। वह प्रशंसनीय आज्ञाकारिता के साथ पुरुष के लिए अनुपादेय गृहणी की भूमिका निभाता रहा, लेकिन सलमान ने उसे बातचीत में घसीटने की कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर उसने उसमें भाग नहीं लिया।

अन्त में मेहमान ख़ानदान को कोटि-कोटि धन्यवाद करते, हर प्रकार की शुभकामनाएं व्यक्त करते अपने-अपने घर रवाना हो गये, अलसेशियन भौंक उठा, फाटक खटखटा उठा।

रुस्तम कृपापूर्वक मुस्कराया:

"तुम क्या कह रहे हो? अरे, ये तो मेरा सहारा हैं। वे मेरे पूरे वफ़ादार हैं... तुम क्या देख नहीं रहे हो कि तुम्हारा यार शेरज़ाद कैसे मेरी नींव खोखली करने में जुटा हुआ है?" गराश ने प्रतिवाद करना चाहा, पर पिता ने टोक दिया: "तुम मेरी चिन्ता मत करो, मैं उड़ती चिड़िया को पहचान लेता हूँ... लैम्प चाहिए?"

"हां, थोड़ा पढ़ूँगा।"

"शब-बख़ैर।"

पिता ने लैम्प तख़्त के पास कुरसी पर रख दिया और सोने के कमरे में चला गया। वह थक चुका था और उत्तेजित था, लेकिन उसे भय था कि उसे नीन्द फ़ौरन नहीं आयेगी, विश्वासघाती शेरज़ाद के बारे में सोचते हुए काफ़ी देर तक पलंग पर करवटें बदलते रहना पड़ेगा।

सोने के कमरे में सकीना उसका इंतज़ार कर रही थी–न जाने उसे

नींद नहीं आयी थी या आड़गीर के पीछे ऊंची आवाज़ में हो रही बातचीत से उसकी नीन्द उचट गयी थी।

"मेहमान नहीं हुए, मुसीबत हो गये," उसने कहा। "उनकी वजह से ही तो मेरे सुन्दर सपनों में ज़हर घुल गया है..."

रुस्तम को उसे डांटने की इच्छा हुई: "पराये मामलों में टांग मत अड़ाओ!" लेकिन उसे ख़याल आ गया कि गराश पास ही में है और वह फिर कहीं बहस में न उलझ जाये। लेकिन वह चुप भी नहीं रह सका।

"क्या नीन्द नहीं आ रही है? ज़रा बताओ तो कौन-सा ज़हर घुल गया है तुम्हारे सपनों में?"

"सिर्फ़ सपनों में ही नहीं, सारी ज़िन्दगी में ज़हर घोल दिया है तुम्हारे मददगारों ने–टेढ़ी टांगोंवाले सारस यारमामेद और क़ब्रखोद सलमान ने। लगता है वे इनसान नहीं, जिन हैं!"

"दुआ पढ़ो, बेगम, दुआ, शैतान तुम्हारी नज़रों से ओझल हो जायेगा," रुस्तम ने जवाब दिया और कपड़े उतारने लगा।

"यह मैं नहीं जानती कि हमारे घर में शैतान घुस आया है या नहीं, पर रात को तुम्हारे पास चोरी-छिपे आनेवाले लोगों से भले की आशा मत करो... तुम सलमान और यारमामेद के साथ-साथ सिर के बल नीचे गिर जाओगे!"

"अरे, अगर खाई में भी गिरने लगूँगा, तो भी तुम्हारा दामन नहीं पकड़ूँगा।" पति ने ज़ोर से लम्बी जंभाई ली।

पिछले कुछ अरसे से सकीना कई बार देख चुकी थी कि पति उसके साथ रुखाई से, व्यंग्यपूर्वक बात कर रहा है, उसे बुरा महसूस होता था कि ढलती जवानी के साथ-साथ उनके परिवार से शान्ति व मेल-मिलाप की भावना भी ग़ायब होती जा रही है। क्या सचमुच प्यार नहीं रहा और उसकी जगह आदतों, ज़िम्मेदारियों व झगड़ों ने ले ली? बड़ी-बूढ़ी कभी कहा करती थीं कि बिना प्यार के भी जिया जा सकता है। और आंखों में भर आयी आंसू की बूंद को पोंछकर सकीना ने कहा:

"अगर तुम गिरने भी लगो, तो मैं कभी अपना हाथ तुमसे नहीं छुड़ाऊंगी! लेकिन क्यों अपना घर तबाह कर रहे हो? अगर ज़िन्दगी में तुम्हें सहारे की ज़रूरत है, तो चट्टान को पकड़ो, न कि सूखी मिट्टी को।"

"तुम चट्टान किसे कहती हो?"

"तुम ख़ुद जानते हो किसे–लोगों को! मैंने तुम्हें जो कहना था,

कह दिया। बाक़ी के बारे में ख़ुद सोचो! यह याद रखो कि बच्चे तुम्हारे साथ नहीं हैं, तुम्हारे ख़िलाफ़ हैं।"

रुस्तम को पत्नी पर दया आयी और उसने अपने को चुप न रह पाने के लिए कोसा। उसे अपने बूढ़े पड़ोसी की बात याद हो आयी जो आंखें सिकोड़कर समझाया करता था कि उसकी अपनी पत्नी से क्यों एक बार भी लड़ाई नहीं हुई: "जैसे ही वह झगड़ना शुरू करती, मैं कहता: 'ख़ुदा तुम्हारे ख़ुदापरस्त अब्बा को सुकून दिलाये, तुम्हारी बात ठीक है!' पर वास्तव में अपने मन की ही करता था।" दानिशमंद बुज़ुर्ग की स्मृति से रुस्तम का चित्त प्रसन्न हो उठा और उसने रज़ाई ओढ़ते हुए कहा:

"ख़ुदा तुम्हारे ख़ुदापरस्त अब्बा को सुकून दिलाये, बेगम, हमेशा की तरह तुम्हारा कहना ही ठीक है..."

वह शीघ्र ही खर्राटे लेने लगा, जब कि सकीना पलंग के पास बैठी यह सोचती रोती रही कि वह अपने पति को किस तरह पुराने रास्ते पर वापस लाये, उसे बदक़िस्मती से बचाये। क्या उसमें इतनी ताक़त होगी?

आठवाँ परिच्छेद

१

नीन्द खुलने पर गराश ने माय्या को अपनी बग़ल में लेटे देखा और सोचने लगा कि वह दुनिया में सबसे सुखी व्यक्ति है। पत्नी की सांसें नियमित लगभग अश्रव्य थीं, उसका गोरा मुख शान्त व निर्मल था, सुकोमल गुलाबी हाथ रज़ाई के ऊपर पड़े हुए थे।

पवित्र प्रेम की आभा से आलोकित नारी कितनी पावन होती है! नारी केवल इसी कारण से सुन्दर नहीं होती कि वह जन्मजात सुन्दरी होती है, बल्कि इसलिए कि उसको निहारते, उसकी सांसों की आवाज़ सुनते हुए आपको उदारहृदय बनने, रोते को शान्त कराने, गिरे हुए को उठाने के लिए हाथ बढ़ाने, लोगों का भला करने, स्तेपी में वृक्ष रोपने, मरुस्थल में जल खोज निकालने, पहाड़ों में रास्ता बनाने और नये नगरों के निर्माण

की इच्छा की अनुभूति होती है। अपने घर का जाना-पहचाना, सीधा-सादा छोटा-सा कमरा, उस प्रातःकालीन घड़ी में, जब आप अपनी प्रियतमा को मौन निहारते हैं, स्वच्छन्द पक्षियों के कलरव, पुष्पों की सुगन्ध और बुलंदियों से गिर रहे झरनों के शोर से परिपूर्ण दिव्य वन में परिवर्तित हो जाता है।

इस डर से कि पत्नी की नीन्द कहीं ख़राब न हो जाये गराश निश्चल लेटा कभी छत को ताक रहा था, कभी ऊषाकालीन लालिमा में जाज्वल्यमान हो रही तीन पल्लोंवाली खिड़की को, कभी फिर लौट-लौटकर माय्या को।

कल माय्या बहुत थक गयी थी, दिन-भर बहुत दौड़-धूप करनी पड़ी थी, और उसने जैसे ही पति के चौड़े, रोयेंदार सीने पर सिर रखा, उसे तुरन्त नीन्द आ गयी।

शाम उन्होंने अपने परिवारवालों के बीच गुज़ारी थी। रुस्तम ज़िला समिति में हुई किसी बैठक से बहुत अच्छे मूड में घर लौटा था। जब कभी वह खिन्न या चिड़चिड़ा होता, अपने चारों ओर आंधी की तरह धूल उड़ाने लगता, उसकी आंखों से चिनगारियां छूटती रहतीं। लेकिन काम जब अच्छी तरह चल रहा होता, उच्चाधिकारी उसकी सारी पहलक़दमियों की प्रशंसा करते, तो रुस्तम घर में भी पवन के मंद झोंके से झंकृत हो उठनेवाले सुर सधे तार की तरह झंकृत हो उठता।

कल भी ऐसा ही हुआ, बरामदे में क़दम रखते ही रुस्तम उल्लसित स्वर में कह उठा:

"घरवाली, तुम्हारे बनाये कोफ़्तों की ख़ुशबू से तो मुरदा भी जाग उठे! फ़ौरन लगाओ मेज़ पर खाना!"

सन्तुष्ट सकीना ने बच्चों की तरफ़ आंख मिचकायी:

"बहुत अच्छे मूड में आये हैं... अब चाहे कोफ़्तों में मन-भर नमक डाल दो, तो भी ज़रूर तारीफ़ करेंगे और दुबारा देने को कहेंगे।"

अत्यन्त स्वादिष्ठ खाने के बाद रुस्तम काफ़ी देर तक समोवार के पास बैठा घरवालों से शान्तिपूर्वक बातचीत करता रहा। उसकी बातें सुनते-सुनते माय्या भी बातों ही बातों में अपने बारे में बताये बिना न रह सकी कि वह संस्थान में कैसे पढ़ती रही थी, कैसे गराश के साथ उसका परिचय हुआ... गृहस्वामी बाढ़ के पश्चात् अपने तटों के बीच लौट आनेवाली नदी की तरह शान्त दिख रहा था। वह पाइप व तम्बाकू की थैली के बारे में बेख़बर हुआ जो सदा अच्छा लक्षण माना जाता था, चाय के गिलास के बाद गिलास पीता उस शाम अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की घटनाओं, सामूहिक

फ़ार्म के मामलों के बारे में बात करता रहा, पेरशान व बेटे के बचपन को याद करता रहा... जब "संगम" के ऊपर तारे जगमगाने लगे, सकीना को नौजवानों पर दया आयी: रुस्तम के उठ खड़े होने से पहले कोई भी मेज से नहीं उठ सकता था – यह परिवार के नियमों का उल्लंघन होता। केवल पेरशान इन रिवाजों को नहीं मानती थी, कभी उठकर बरामदे में चली जाती, कभी खिड़की में झांकती, तो कभी माय्या के साथ कानाफूसी करती।

"कोशी, तुम कल के लिए तो कुछ छोड़ोगे या नहीं?" सकीना काफ़ी हल्के हो गये समोवार को उठाते हुए बोली।

"तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है," गृहस्वामी हँस पड़ा। "आदमी को वक़्त रहते ख़याल आ जाना चाहिए!" उसने उठकर सब को शुभरात्रि कहा।

"काश, हमेशा ही ऐसा होता रहे," अपने कमरे में जाते हुए माय्या ने सोचा। "मिल-जुलकर रहनेवाले परिवार से बढ़कर अच्छा और कुछ नहीं हो सकता! .."

गराश ने धीरे से दरवाज़ा बंद किया, लैम्प की बत्ती थोड़ी नीचे की और अत्यन्त अधीरता से पत्नी पर दृष्टि डाली।

"ठण्ड लग रही है!" माय्या रज़ाई ओढ़ते हुए फुसफुसायी।

"अभी बदन में गरमी आ जायेगी!" गराश ने भी फुसफुसाकर कहा और लैम्प बुझा दिया...

दीवार के उस ओर से, माता-पिता के सोने के कमरे से पिता के ज़ोरदार खर्राटों और मां की गहरी सांसों की आवाज़ आ रही थी। पहले रुस्तमोव परिवार के घर में रात होते ही पूर्ण शान्ति छा जाती थी, पर अब लगता है माँ-बाप बुढ़ाने लगे हैं। गराश को अभी तक इस बात का ख़याल नहीं आया था कि जीवन उसके माता-पिता से यौवन छीनने के साथ-साथ उनके लिए अशान्त व बोझिल नीन्द, शक्ति-ह्रास और रोग भी ला रहा है।

इस बारे में पहली बार सोचने पर गराश समझ गया कि वह अक्षम्य रूप से अपने सुखमय जीवन का अभ्यस्त हो गया है, माय्या के प्रेम को पूर्णतया स्वाभाविक, लगभग दैनंदिन भावना समझ बैठा है।

कमरे में किंचित उजाला हो गया। जब उसने पत्नी की तरफ़ एकटक देखा, तो उसे माय्या व अपनी मां में स्पष्ट समानता दिखाई दी। सकीना

गराश के लिए सदा से नारी सौन्दर्य, विशालहृदयता का आदर्श, दया व प्रत्येक इहलौकिक वस्तु के प्रति स्नेह का साकार रूप रही थी।

पत्नी ने ठण्डी सांस लेकर आंखें खोलीं, उंगलियों से उसके बालों का स्पर्श कर पूछा:

"सुखी हो?"

"हाँ! .." गराश ने जवाब नहीं दिया, केवल सांस ली, या शायद उसने केवल यह सोचा ही था, पर माय्या समझ गयी।

"परी-कथाओं में कहा जाता है कि फूल, पत्थर और पक्षी बोलते हैं, पर हर कोई उनकी आवाज़ नहीं सुन सकता," गराश ने कहा। "और मैं इस समय सो नहीं रहा था, फिर भी सारी धरती, सारी मुग़ान मुझसे कह रही थी: अपनी पत्नी को निहारो, वह अतिसुन्दर है!"

"लेकिन तुम मुझ से क्यों कुछ नहीं पूछते हो? क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम्हारे जैसे बांके नौजवान की पत्नी को सुखी होना ही चाहिए?" माय्या ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता," गराश ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। "लेकिन मुझे कभी-कभी डर लगता है। किसी बात से डरता हूँ! तुम और मैं ज़रूरत से ज़्यादा सुखी हैं!"

उसे याद आया कि वह कैसे अनेक परिवारों को जानता है, जिन में जीवन का श्रीगणेश अच्छा हुआ, पति-पत्नी में परस्पर प्रेम था, वे चिन्ताशील थे, पर बाद में एक दूसरे को झिड़कियां देने लगे, झगड़े शुरू हो गये, उबाऊ चुप्पी रहने लगी और कई बार इसका अन्त तलाक़ में हुआ।

"मैं भी किसी बात से डरती हूँ," माय्या ने सोच में डूबे हुए कहा। "शुरू से ही डरती थी। किस बात से डरती थी? पूरी बात समझा पाना मुश्किल है। मैं डरती थी कि मेरा तुम्हारा जोड़ा ठीक नहीं है: तुम मज़बूत, ताक़तवर और कभी-कभी रूखे भी हो, जब कि मैं कमज़ोर हूँ... तुम्हें याद है, हम जब पहली बार प्रिमोर्स्की पार्क में गये थे? मेरे हाथों में लिली का फूल था। पर उसे तुमने मुझे भेंट नहीं किया था!" उसने ठण्डी सांस ली। "गुलाब को फूलों का राजा कहा जाता है। हां, वह सुन्दर होता है, पर उसे तोड़ने की देर है कि उसकी ख़ुशबू ख़तम और गायब होने लगती है। जब कि लिली का फूल तोड़े जाने पर भी और तेज़ ख़ुशबू देता है, – बस गुलदान में पानी डालना मत भूलिये। पर तुमने मुझे फूल भेंट नहीं किये... शायद यह सपना था, मूर्खतापूर्ण और सीधा-

सादा, लेकिन में लिली के गुलदस्ते के सपने देखती रहती थी... हर बार तुमसे मिलने आते समय मैं अपने आप से वादा करती थी कि मैं तुम्हें अलविदा कह दूंगी, तुमसे बिछुड़ जाऊँगी, कहना चाहती थी कि तुम्हें मुझसे ज्यादा तेज़ स्वभाव की, मुगान की तेज़ गरमी और आंधियों में तपी पत्नी की ज़रूरत है... मैं सोचती थी कि तुम्हें मेरा शहरी पहनावा मेरी तरफ़ आकर्षित करता है, हाँ और... मेरा नाक-नक़्श भी, यह भी कि मैं देहाती लड़कियों जैसी नहीं थी, तुम इसके अभी आदी नहीं हो पाये हो और मेरी तरफ़ खिंचे चले आते हो। लेकिन जब थोड़े दिन साथ रह लेंगे, तुम ऊबने लगोगे, और कल तक जो नया और चिरवांछित लगता था, बिलकुल बेकार लगने लगेगा। मैं इसी बात से डरती थी, प्यारे! ... मैं नहीं जानती कि तुम्हारी पत्नी अच्छी है या नहीं, पर हर हालत में, देखते ही हो, स्पष्टवादिनी है।"

"ऐसी बात तुम्हारे दिमाग़ में आयी कैसे?" गराश ने उलाहना दिया।

"तुम नाराज़ मत होओ!" माय्या ने उसके होठों पर उंगली रख दी। "मैंने आख़िर तुमसे शादी कर ली है! यानी ये सब आम स्त्री-सुलभ आशंकाएं थीं!"

"तुमने इस बारे में बात आख़िर क्यों छेड़ी?"

"इसलिए कि अब हम दोनों इस बारे में शान्ति से बात कर सकते हैं। प्रेम, प्रणयोन्माद, युवावस्था-सुलभ ख़ून के जोश के अलावा परिवार भी होता है, और परिवार तब भी रहेगा जब ख़ून का जोश ठण्डा पड़ जायेगा और आसक्ति समाप्त हो जायेगी..."

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।"

"अभी समझ जाओगे... यह बुरी बात है कि तुमने उच्च शिक्षा नहीं पायी, गराश। मशीन-आपरेटरों का स्कूल पास करना – शिक्षा पाना नहीं, प्रशिक्षण प्राप्त करना है। तुम कहोगे कि सुखी परिवार से उपाधियों का कोई सम्बन्ध नहीं होता। हाँ, अभी तो नहीं है, पर बाद में..."

"यानी तुम्हें पहले डर लगता था कि मैं तुम्हारे साथ ऊबने लगूँगा, और अब यह कि तुम ख़ुद ऊबने लगोगी?"

माय्या उसके घुंघराले बालों को सहलाती हुई सोच में डूब गयी और उसका हाथ फिसलकर उसके सेब-से सख़्त गाल पर पहुँच गया।

"नहीं, अब मैं किसी बात से नहीं डरती। तुम बस हमेशा ऐसे रहो...

ऐसे ही नेक और विनम्र... मैं भद्दे शब्द, भद्दा व्यवहार और सर्द नज़र सहन नहीं कर सकती..."

सारे गांव में फिर से मुर्गों ने प्रभात-नमन आरम्भ कर दिया, सूरज की पहली किरण ने खिड़की के ऊपरी शीशों को आलोकित कर दिया।

"उठो, अब सारे घरवाले उठनेवाले हैं।" गराश ने पत्नी को रोक दिया:

"अभी जल्दी है, थोड़ी देर और लेटी रहो... तुम क्यों नहीं पूछती हो कि मैं किस बात से डरता हूँ? अरे, डरता नहीं हूँ, मुझे बस शंका होती है। या तुम सोच बैठीं कि मैं घमण्ड के कारण अपनी शंकाओं को स्वीकार नहीं करता?"

"शंका होने का मतलब कमज़ोर होना नहीं होता है। केवल मूर्खों को ही शंका नहीं होती है," माय्या ने कहा। "मूर्ख को छूट दीजिये, वह सब बरबाद कर बैठेगा – सुख भी, परिवार भी और ख़ुशहाली भी। ऐसी करामात कर दिखायेगा जो आग़ा मोहम्मद ने सपने में भी नहीं देखी होगी!"

आग़ा मोहम्मद कौन है – गराश नहीं जानता था, पर पत्नी से पूछने का साहस उसे नहीं हुआ। हालांकि माय्या का ऐसा इरादा नहीं था, पर उसके ये शब्द गराश को अपने दिल में तीर से लगे।

माय्या ने पलंग से उतरकर घड़ी पर नज़र डाली, शीशे में चेहरा देखकर बाल ठीक किये और बिना गरम किये कमरे में ठण्ड से ठिठुरती हुई फिर रज़ाई में घुस गयी।

"ओह, हमारा बिस्तर कितना गरम है!"

"तुम्हें अच्छा लगता है?"

"पूछो मत!"

"बचपन में मैंने एक बार मां से एक और रज़ाई मांगी, तो न जाने क्यों उन्होंने मुझे जवाब दिया था: 'बेटा, रज़ाइयों से बदन गरम नहीं होता – इसके लिए सांसों की ज़रूरत होती है!' लेकिन किसकी सांसें होनी चाहिएं, यह उन्होंने नहीं बताया। तुम्हें मालूम है, हमारा बिस्तर किसकी सांसों से गरम रहता है?"

"मुझे कहां से मालूम होगा," माय्या ने कंधे उचका दिये, पर उससे रहा न जा सका और वह हंस पड़ी। "ओफ़, कितनी अच्छी लगती हैं मुझे तुम्हारी मां!"

गराश ने उसे चूम लिया।

"मुझे सबसे ज़्यादा डर इसी बात का लगता था कि तुम दोनों में पटेगी नहीं। धन्यवाद, तुमने पहली मुलाक़ात में ही मेरी माँ की क़दर समझ ली। क्योंकि बहुओं और सासों में आये दिन कितने झगड़े होते हैं!"

"तुम्हें अगर इसी बात का डर लगता था, तो तुम्हें तसल्ली दिला सकती हूँ: मेरी सास मुझे पहली नज़र से ही पसंद आ गयीं।"

गराश मौन रहा।

"अरे, क्या अब भी तुम्हारे दिल में डर समाया हुआ है? तुम किस बात से डरते हो?"

"तुम ख़ुद ही कह चुकी हो: मेरी-तुम्हारी जोड़ी ठीक नहीं है," उसके लिए ये शब्द कहना आसान नहीं रहा। "हमारे गांव में हाई स्कूल का प्रमाणपत्र हर दुधमुंहे के पास है, और मैं सयाना लड़का, विवाहित व्यक्ति, ऐसे दुधमुंहे से ज़्यादा नहीं जानता..." वह आगे कहना चाहता था कि एक-दो साल बाद माय्या की मुलाक़ात किसी अध्यापक या डाक्टर या इंजीनियर से हो जायेगी – और सब बदल जायेगा: वह गराश को छोड़कर चली जायेगी और उसे यह याद आने पर शर्म महसूस होगी कि वह किसी अनगढ़ गंवई मशीन-आपरेटर के साथ रही थी।

माय्या समझ गयी और उसे पति पर दया आयी, लेकिन वह बात छेड़ने के लिए पछतायी नहीं। बेहतर होगा कि वे अभी ही हर मामले के बारे में गम्भीरता से बातचीत कर लें, जब तक कि वे एक दूसरे का इतना ख़याल रखते हैं। उसने गराश को अपनी एक सहेली, शिक्षित युवती, सुन्दरी के बारे में बताया जिसने अपने प्रशंसकों में मोटर-चालक को सबसे श्रेष्ठ समझा। वह उसके साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही है, बेटी को पाल-पोस रही है, पति विश्वविद्यालय के पत्रव्यवहार पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहा है। यानी सहजीवन का आरम्भ जोड़ी के अनमेल होने पर भी किया जा सकता है। बुरा तो तब होता है जब पति-पत्नी सारी ज़िन्दगी अनमेल बने रहते हैं और शनैः-शनैः एक दूसरे के लिए पराये होते जाते हैं।

हालांकि गराश को पत्नी की बात बुद्धिमत्तापूर्ण लगी, पर उसने म्लान स्वर में कहा:

"लड़का शायद प्रतिभाशाली है। ऐसे लोग ज़्यादा देर तक ड्राइवरी में ही नहीं अटके रहते हैं..."

"मैं उसे जानती हूँ। तुम में इतनी समझ है," माय्या मुस्करायी। "तुम उससे कहीं जल्दी ऊंची उड़ान भरने लगोगे।"

"लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तो कई वर्ष का समय चाहिए," गराश ने निराशापूर्ण स्वर में कहा।

"तुम्हें और मुझे ऐसी जल्दी नहीं पड़ी है," माय्या ने स्नेहपूर्ण, पर दृढ़ स्वर में कहा, मानो वह ज़िद कर रहे बेटे को मना रही हो। "क्या तुम ज़िले के सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टर-चालक नहीं हो? शराफ़ोगलू ख़ुद कह चुके हैं, और मेरे ख़याल से वह यूं ही कुछ नहीं कहते हैं। और सामूहिक किसानों ने तुम्हारा क्या नाम रख रखा है? 'मशीनों का हकीम!..' लोग ऐसा नाम बेकार ही नहीं रखते हैं, विश्वास रखो।"

"हां, मुझे विश्वास है, और... और मुझे ख़ुशी है कि तुम मुझसे निराश नहीं हुई हो," गराश यह महसूस करते हुए झिझक रहा था कि तपते से तपते दिन लगातार बीस-एक हेक्टेयर ज़मीन की जोताई करना ऐसी बातचीत करने से कहीं ज़्यादा आसान होता है। "तुम्हें याद है, मैंने तुम्हें, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निर्माण की अपनी योजना के बारे में बताया था? तुमने एक ही बार में मुझे सबक़ सिखा दिया, मेरा मज़ाक़ उड़ाया और सिद्ध कर दिया कि मैं अपने नहीं, दूसरे के काम में हाथ डाल रहा हूँ।"

माय्या ज़ोर से हंस पड़ी।

"प्यारे, क़सम से, मैं तुम्हें पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगी हूँ! तुम्हारा मन पवित्र है, और यह सबसे ज़रूरी बात है। बाक़ी सब ठीक हो जाता है..."

उधर "संगम" प्रातःकालीन सूरज को प्रतिबिम्बित करता, आंखें चौंधियाता जाज्वल्यमान हो रहा था, और मुग़ान की स्तेपी क्षण-प्रतिक्षण उत्तरोत्तर आनन्दमय और उज्ज्वल होती जा रही थी।

२

माय्या 'नवजीवन' व दो अन्य पड़ोसी सामूहिक फ़ार्मों की जल व्यवस्था का कार्य संभाल रही थी।

ज़िला निदेशालय में उससे विनोद मिश्रित गम्भीरता से कहा गया था: "हम आपके परिवार में झगड़े नहीं होने देंगे, आप अपने घर से थोड़ी

दूरी पर काम करेंगी!" माय्या को नये सहकर्मियों व युवा इंजीनियरों के बीच अच्छा लगा। वे उसके साथ सरलहृदयता से पेश आते थे, साथियों की तरह उसका ध्यान रखते थे, माय्या इसके लिए उनकी कृतज्ञ थी। यह सच है कि उसे यह बात अखरी कि किसी ने उसके पति के बारे में उससे नहीं पूछा, जब कि रुस्तम-कीशी के पुत्र गराश के बारे में वे सब जानते थे..

माय्या को नालों व नहरों की मरम्मत और सफ़ाई, जल-प्रणाली तथा लवण-कच्छ के विरुद्ध संघर्ष के बारे में ढेरों निर्देश व सुझाव दिये गये थे। उसकी गतिविधियों का पथप्रदर्शन यहीं समाप्त हो गया था। "मुझे अकसर रुस्तम-कीशी से सलाह करनी पड़ा करेगी," उसने फ़ैसला किया।

वसन्त के एक गरम दिन माय्या पैदल घर लौट रही थी। उसके साथ अधेड़ उम्र का, सहृदय पर किंचित् आलसी इंजीनियर कफ़ारोगलू चल रहा था। वह सारे रास्ते शिकायत करता रहा:

"हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि ज़िले की हर कांफ़्रेंस में सामूहिक फ़ार्मवाले शोर मचाते हैं, चिल्लाते हैं: 'पानी!' लेकिन पानी का इस्तेमाल करना वे नहीं जानते हैं। और सीखना भी नहीं चाहते, यही तो सबसे बुरी बात है! अरे, मैं भी क्या समझाने लगा! ख़ुदा तुम्हें सेहत बख़्शे, तुम ख़ुद ही देख लोगी।"

और माय्या धूसर पीली स्तेपी, हाल ही में जोते गये मख़मली काले ज़मीन के टुकड़ों, दूर-दूर तक चली जा रही चौड़ी नहरों, फूली कलियोंवाले वृक्षों का आनन्द लेते हुए कल्पना कर रही थी कि एक सप्ताह बाद हरियाली आ जाने, कलियों के फूटने और टहनियों पर चिपचिपी पत्तियां निकल आने पर वहाँ कितना सुन्दर हो जायेगा...

दोनों ओर झाड़ियां उगायी हुई मुख्य सड़क पर पहुंचकर माय्या रुक गयी। वह जानती थी कि उससे आगे इंजीनियर को उसके साथ नहीं जाना है।

"मैं आपको छोड़ आता हूँ," उसने कहा। "ज़रा देखिये, नाले हैं, चारों ओर झाड़ियां हैं, कहीं भेड़िया आ गया तो..."

"भेड़िया मेरा क्या कर लेगा?" माय्या बेपरवाह हंस पड़ी। "पत्थर उठाकर उसकी थूथनी पर दे मारूँगी।"

"अरे, यह मत कहिये!" इंजीनियर माय्या के साथ हितैषी की तरह व्यवहार कर रहा था। "मैं दोपाये भेड़ियों की बात कर रहा हूँ। चौपायों पर क़ाबू पाना तो इतना मुश्किल नहीं होता है।"

माय्या दृढ़ स्वभाव की थी।

"नहीं, नहीं मैं किसी क़ीमत पर इसके लिये तैयार नहीं होऊँगी! आप थक चुके हैं, घर जाइये।"

इंजीनियर हिचकिचाया: माय्या उसके आग्रह का ग़लत अर्थ लगा सकती थी, लेकिन अनुभवहीन और मुग़ान की अनभ्यस्त युवती को अकेला छोड़ना भी जोखिम भरा काम था। रास्ता लंबा था...

अचानक झाड़ियों के झुरमुट में एक घुड़सवार दिखाई दिया। जब पीले सीने व माथे पर मटमैली रेखावाला शानदार घोड़ा आसानी से खाई फांद गया, तो माय्या काठी पर चतुराई से बैठे सलमान को पहचान गयी।

माय्या को पराये पुरुष के साथ देखकर सलमान ने घोड़ा रोक लिया और कूदकर नीचे उतर आया। वह फ़ौजी ओवरकोट पहने हुआ था और उसके कंधे पर बन्दूक आड़ी लटकी हुई थी।

माय्या की ओर हाथ बढ़ाते हुए सलमान के चेहरे पर हार्दिक मुस्कान व्याप्त हो गयी।

"प्यारी दुलहन, मुग़ान की स्तेपी में घुस आना तो आसान है, पर निकलना बहुऽऽत मुश्किल है!.. देख लेना, जब कपास की फ़सल पक जायेगी, तुम यहाँ की इतनी आदी हो जाओगी कि सारी मुग़ान का चप्पा-चप्पा पहचानने लगोगी! 'संगम' से लेकर हर नहर तक!"

"इन्हें ज़रा घोड़े पर बिठाकर घर छोड़ आओ," इंजीनियर ने, जो सलमान को थोड़ा बहुत जानता था, कहा और माय्या के स्वास्थ्य की कामना करके अपने रास्ते चला गया।

माय्या को बचपन से सवारी के घोड़े अच्छे लगते थे। त्योहारों के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनों के समय परेड से लौट रहे अश्वारोही सैनिकों के सजे-संवरे घोड़ों को शान से पक्की सड़क पर अपने तराशे हुए-से पैर रखकर चलते देखकर उसे कितना आनन्द आता था! घोड़े की सवारी करने में कितना मज़ा आयेगा!.. कितना अच्छा हुआ कि वह गरम स्कीइंग सूट और हल्का नीला ओवरकोट पहने हुए है!

"प्यारी दुलहन, रूमाल ज़रा कसकर बांध लो, जब सवारी करोगी, तो मालूम पड़ेगा, हवा कितनी ताज़ा है," सलमान ने माय्या को घोड़े पर चढ़ने में मदद करते हुए कहा।

15—2207

पैंदल चलने से माय्या का चेहरा लाल हो गया था, उसका रेशमी नीला रूमाल किसी पुराने साफ़े की तरह उसकी मोटी-मोटी चोटियों पर लिपटा हुआ था, – सलमान ने भूखे भेड़िये की तरह उसके सुन्दर कंधों पर नज़र डाली।

वह अपने सपाट और कुरूप नाक-नक़्श से किसी तरह मेल नहीं खाती फुरती से उछलकर काठी पर सवार हो गया।

घोड़ा तेज़ी से भागा और झाड़ियों की तरफ़ मुड़ने ही वाला था कि सलमान ने उसे रास्ते के किनारे की तरफ़ मोड़ दिया, जहां धूल कम थी। उसने लगाम ढीली छोड़ दी और माय्या के चेहरे पर बर्फ़ीली हवा का थपेड़ा लगा... उसे अचानक इंजीनियर का हाथ हिलाकर विदा करने, ख़याल रखने के लिए उसका धन्यवाद करने की इच्छा हुई, वह झटके से मुड़ी, पर लड़खड़ा गयी, और सलमान ने तत्क्षण उसकी कमर में हाथ डालकर उसे चिमटा लिया।

"संभलकर, ज़रा संभलकर, ख़ानम," उसने धीरे से कहा। "घोड़े से गिरना अच्छा नहीं लगता। तुम्हें ऐसी सैर अच्छी लगती है?"

"ओहो, मैं तो बचपन से सपने देखती थी!"

"मैं ख़ुशनसीब हूँ कि तुम्हारा सपना मेरी मदद से साकार हो गया," सलमान ने शिष्टतापूर्वक कहा।

वह धीरे-धीरे कुछ फुसफुसा रहा था, पर माय्या उसकी बातें नहीं सुन रही थी – वह घोड़े की तेज़ सवारी का आनन्द लूट रही थी; हवा कानों में सीटियां बजा रही थी, स्तेपी की नम हवा नयी शराब की तरह मदहोश कर रही थी। शक्तिशाली घोड़ा दो सवारों का वज़न न महसूस करता सरपट दौड़ा जा रहा था।

अचानक हल्की बारिश होने लगी, बारिश नहीं, कहिये हल्की फुहारें पड़ने लगीं, पानी के कण चक्कर खाते हुए घास, वृक्षों व ज़मीन पर नन्हे-नन्हे रुपहले मोतियों की तरह फैल गये। माय्या के बालों, भौंहों व बरौनियों तक पर नन्ही-नन्ही बूंदें झिलमिलाने लगीं।

"तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही है, ख़ानम? ओवरकोट कंधों पर डाल दूं?"

"नहीं, मैं ठीक हूं।"

सलमान ने रास्ते के किनारे नन्ही-नन्ही बूंदों से चमचमाते, परी-कथाओं के से वृक्ष की ओर इशारा किया।

"देखो, कितना सुन्दर है! न ओस है, न बारिश, सिर्फ़ मुग़ान में ही वसन्त में ऐसी उजली फुहारें पड़ती हैं।"

"मैंने ऐसा चमत्कार कभी नहीं देखा था," माय्या ने स्वीकार किया। "कितना अच्छा हुआ कि हमारी मुलाक़ात हो गयी!"

"मैं ख़ुशनसीब हूँ!" सलमान फुसफुसाया। "मैंने तुम्हें दूर से ही देखा था कि मेरा दिल ख़ुशी से बाग़-बाग़ हो उठा... मेरी मरहूम मां मुझसे कई बार कहती थीं: 'बेटा, अपनी क़िस्मत तुम अपनी राह में ढूंढ़ना। अगर गोरे मुख, दरमियाने क़दवाली मोटी औरत मिले, तो सफ़र जारी रखना, कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी। लेकिन अगर धूप में काली पड़ी, दुबली-पतली बुढ़िया मिले, तो फ़ौरन वापस लौट पड़ना – बहुत मुसीबतें भोगनी पड़ेंगी!'.. तुम मुझे बुरा मत कहना, ख़ानम, मुझे ज़रा इन पुराने शकुनों-अपशकुनों से प्यार है: मां और बाप से विरासत में मिला है। तुम्हें भी ऐसी कहावतें पसंद हैं न?"

"आप इस नतीजे पर कैसे पहुंचे?"

"मैं देख रहा हूँ। अरे, ख़ानम, आप शहरी लोग सोचते हैं कि गांवों में असभ्य आदिमानव रहते हैं। आप लोगों के दिमाग़ में यह बात आती ही नहीं कि काराकूल भेड़ की खाल की टोपियाँ उन लोगों की वीरता में चार चांद लगाती हैं, जो बहादुरी में शेरों से बीस पड़ते हैं! हम भी आसमान के तारों को सराहते हैं और रूपसियों की तारों जैसी निर्मल आंखों को भी। हम झाड़ियों में छिपनेवाले तीतरों को ही नहीं ढूंढ़ते हैं, बल्कि जन्नत के फूलों को भी। और हमारे सीनों में भी प्यार और श्रद्धा से भरा दिल धड़कता है।"

सलमान किसी अनुकरणीय स्कूली छात्र की तरह धाराप्रवाह और कृत्रिम घबराहट के साथ बोल रहा था, जिसने कोई कविता कंठस्थ कर रखी हो, जब कि माय्या उसकी बातों की ओर कोई ध्यान दिये बिना सोच रही थी कि शायद लेखापाल को अपनी ज़बान को क़वायद कराने का शौक़ है, पर यों तो सहृदय व विनम्र व्यक्ति है।

घोड़ा किसी चीज़ से डरकर फुफकारा और चमककर दहाना चबाता हुआ, एक ओर लपक टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी पर भागने लगा, जो झाड़ियों के झुरमुट में ओझल हो जाती थी।

माय्या बरबस सलमान से कसकर चिमट गयी।

"क्या हुआ?"

"आस-पास झाड़ियों में भेड़िया है," सलमान ने अनुभवी मुग़ानवासी-सुलभ शान्ति से जवाब दिया। "मेरे इस चहेते की घ्राण-शक्ति शिकारी कुत्ते से भी तेज़ है। यह जंगली बतख़ जैसा संवेदनशील है। ऐसे तेज़ घोड़े को मैं किसी क़ीमत पर नहीं बदलूं!"

घोड़ा उन्हें लिये घने सरकण्डों से निकला और नाला फांद गया, और माय्या को मेमनों का विशाल झुण्ड दिखाई दे गया।

भिन्न-भिन्न रंगों के–पीले, मटमैले, भूरे–स्तेपी में बिखरे हुए थे, कभी वे झुण्ड बना लेते थे, कभी तितर-बितर हो जाते थे, कभी लेट जाते थे और गंदी बर्फ़ के ढेरों जैसे लगने लगते थे। गड़रिया सफ़ेद भेड़ की खाल की टोपी लगाये, कंधों पर पोस्तीन डाले रेवड़ के बीच लाठी हिलाता, सीटी बजाता चल रहा था।

"अहा, मुई, रेंगकर दुबकी हुई है! मैंने तो सोचा था कि भेड़िया होगा!" सलमान कह उठा और उसने कंधे से दुनाली उतार ली। "अब जमकर बैठ जाओ," उसने माय्या से कहा।

धांय-धांय गोली की आवाज़ गूंजी, घोड़ा चमका और डरे हुए मेमने अपने बचाव के लिए चरवाहे की तरफ़ भागे।

घोड़ा सुमों की मार से मिट्टी खोदकर उड़ाता, चारों ओर ढेले उछटाता सीधा झाड़ियों की ओर सरपट भागा, माय्या ने घोड़े से गिरने से बचने के लिए सलमान को और भी कसकर पकड़ लिया।

"संभलके, ख़ानम!" वह पूरे ज़ोर से चिल्ला रहा था। "वह रही मरदूद, बच नहीं पायी!"

ख़ून में लथपथ बड़ी, भूरी लोमड़ी पूंछ पटकती पंजों से ज़मीन खोद रही थी, कराह रही थी और अभी भी जान बचाने की आशा में झाड़ियों की तरफ़ रेंग रही थी, जब घोड़े ने उसके सुम से ठोकर मारी, लोमड़ी ने मृत्युकालीन पीड़ा के कारण अपना पंजा चबा लिया।

"कितनी दर्दनाक मौत है!" माय्या ने अन्तिम बार छटपटाते, तड़पते जंतु को देखते हुए ठण्डी सांस ली।

"कितनी चालाकी से दुबकती हुई आ गयी थी!" सलमान ने हांफते हुए कहा। "एक मिनट की देर होती, तो भाग जाती... ठीक है, मैं मरने में इसकी मदद किये देता हूँ..."

और उसने अड़े हुए घोड़े को उस पर दौड़ा दिया; सुमों ने कड़क की आवाज़ के साथ उसे ज़मीन में दबा दिया; घोड़ा फुफकारकर, दुम ऊंची किये फांदकर झाड़ी से बाहर कूदा, मानो उसे भी निरीह प्राणी को कुचलना घिनौना लगा हो।

"यह आपने क्या किया? शर्म आनी चाहिए!" माय्या ने कहा।

"किया भी क्या जाये," सलमान हंस पड़ा। "अभी तक मेरी एक भी गोली बेकार नहीं गयी है। घोड़ा चमक उठा, इसीलिए गोली सिर में न लगकर पेट में लगी।"

चरवाहा भागा आया, वह लोमड़ी को पूंछ से पकड़कर घास पर ख़ून की लकीर छोड़ता घसीटने लगा, जब कि सलमान शेख़ी बघारता उसे बताने लगा कि उसने कैसे लोमड़ी को दूर से ही देख लिया और अचूक निशाना लगाकर उसे ढेर कर दिया।

३

माय्या घोड़े पर चुप बैठी रही। वह हैरान हो रही थी कि सलमान ने कितनी निर्ममता से घायल लोमड़ी को मार दिया। और सलमान माय्या को अंतर्मुखी हुआ देख अपनी सफ़ाई देने लगा।

"पिछले साल की बात है, मैं सलयानी से लौट रहा था, एक लोमड़ी इसी तरह घात लगाकर टूट पड़ी और एक मेमने का पेट फाड़ डाला। जिसने एक बार भी ऐसा दृश्य देखा हो, वह लोमड़ी पर कभी दया नहीं करेगा, कभी नहीं! अपने हाथों से उसका गला घोट देगा। मैं लोमड़ियों से नफ़रत करता हूँ, क्योंकि मेरा दिल बहुत नरम है, मैं मेमनों को प्यार करता हूँ!" ये शब्द सलमान को इतने अच्छे लगे कि वह फिर विषण्ण स्वर में कह उठा: "मेरा दिल बहुत नरम है, मैं मेमनों को प्यार करता हूँ..."

"लेकिन चरवाहे के पास कुत्ता क्यों नहीं है?"

"कुछ चरवाहों के पास हैं। अकसर चरागाहों में अलसेशियनों को रखते हैं–वहाँ भेड़िये होते हैं। ख़ुदा न करे कभी पहाड़ों में उनसे मुठभेड़ हो!"

"क्या हमारे सामूहिक फ़ार्म में भेड़ें बहुत हैं?" माय्या ने दिलचस्पी दिखायी।

"हाँ, कम नहीं हैं। पर जल्दी ही और ज़्यादा हो जाएंगी। रुस्तम-कीशी अक़्लमंद और मितव्ययी अध्यक्ष हैं।"

अपने वाक्-चातुर्य में डूबे सलमान के लगाम ढीली छोड़ देने का फ़ायदा उठाकर घोड़ा क़दमचाल से छोटी-सी झील के किनारे-किनारे सर्पिल पगडण्डी पर चलने लगा। बीच-बीच में सरकण्डों के झुरमुटों में से अपने पंखों से सर्र से हवा चीरती बतखें और कलहंस उड़ रहे थे। और फिर स्तेपी की झील के समान गहरी निस्तब्धता छा जाती थी।

अचानक घोड़ा कनौतियां खड़ी करके अधीरता से हिनहिना उठा और अपने सुमों से मुटियार रौंदे जाने से सपाट हुई पगडण्डी पर खटखट करता तेज़ दुलकी चाल से भाग चला।

"इसे घोड़ों के झुण्डों की बू आ गयी है," सलमान ने समझाया। "यहाँ हमारी भेड़ों के रेवड़ों और घोड़ों के झुण्डों का जाड़े का पड़ाव है।"

'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म का पड़ाव झील के किनारे-किनारे उगे सरकण्डों के परे था। कूड़े के ढेरों, अलावों की राख और भेड़ों की मेंगनियों से घिरे समतल मैदान पर गूथी हुई सूखी टहनियों के मिट्टी से लिपे शेड, भेड़ों के बाड़े और तीन तम्बू स्थित थे। सरकण्डों की बाड़ से घिरे एक बाड़े में एक दूसरे को धकेलते, मिमियाते नवजात मेमने थे। माय्या को यह शान्तिपूर्ण दृश्य बहुत अच्छा लगा। शेडों के बीच घुटनों पर चमड़े के पट्टे बांधे और कमर पर शाल बांधे औरतें आ जा रही थीं। वहीं मैले-कुचैले, बिखरे बाल, बिलकुल कौओं के बच्चों-से, बच्चे खेल रहे थे। घोड़े पर सवार लोगों को देखकर वे उनकी तरफ़ भागे। स्त्रियाँ भी अपने कोहनियों तक नंगे हाथ शालों से पोंछती हुई काम छोड़कर उनके पीछे-पीछे आने लगीं।

"चलिये, थोड़ा सुस्ता लेते हैं, मैं थक गयी हूं, फिर देखना भी चाहती हूँ कि यहाँ लोग कैसे रहते हैं," माय्या ने कहा।

सलमान ने प्रत्यक्ष अनिच्छा से उसका कहा मान लिया: वह पछता रहा था कि उसने अपने मनमौजी घोड़े पर क़ाबू नहीं रखा और उसे अपनी मर्ज़ी से चलने दिया।

ऊंचे तम्बू के बाहर कोई तेरह साल की काली आंखोंवाली लड़की खड़ी थी; वह अन्य बच्चों से इतनी अलग नज़र आ रही थी कि गेहूं के खेत के बीच में खिले अकेले पोस्ते के फूल जैसी लग रही थी। उसके

घुंघराले काले बाल चमकती, चंचल आंखों और बड़े-बड़े उजले होंठोंवाले छोटे-से लम्बोतरे चेहरे को घेरे कंधों पर बिखरे हुए थे।

बच्चे जब तक एक दूसरे को कोहनी मारते, फुसफुसाते माय्या व सलमान को देखते रहे, लड़की तम्बू के पास गर्वपूर्ण मुद्रा में सिर पीछे किये निश्चल खड़ी रही। फटी कमीज़ पहने तीन बरस का लड़का उसकी स्कर्ट पकड़े चिपका खड़ा था।

माय्या काली आंखोंवाली लड़की के पास गयी। लड़की एक क़दम पीछे हट गयी, जब कि बच्चे माय्या के चारों ओर तंग घेरा बनाकर किंचित् शान्त हो, इन्तज़ार करने लगे कि आगे क्या होता है।

"सलाम, काली आंखोंवाली! क्या नाम है तुम्हारा?"

"यही नाम है – गाराग्योज़!"* लड़की ने बेझिझक उत्तर दिया।

"नाम ठीक ही रखा है। और यह तुम्हारा क्या लगता है?"

"भाई।"

माय्या ने रूमाल निकालकर बच्चे की नाक पोंछनी चाही, पर वह अपनी बहन की स्कर्ट के पीछे छिप गया और अचानक चीख़ मारकर रो पड़ा।

तम्बू में से क्षीण नारी स्वर सुनाई दिया:

"कौन है? बच्चे को यहां ले आ।"

माय्या व सलमान के पास दो चरवाहे आये और उनके साथ-साथ दो बड़े कुत्ते। कुत्ते भौंक रहे थे और अजनबियों पर टूट पड़ने के लिए उछल रहे थे, पर चरवाहों की सख़्त आवाज़ों से वे शीघ्र ही चुप हो गये।

पशुपालन फ़ार्म के इनचार्ज चरवाहे केरेम ने, जिसकी काली दाढ़ी उसकी आंखों तक बढ़ी हुई थी, सलमान से हाथ मिलाकर उसका अभिवादन किया। उसके सहायक किशोर ने, जिसकी मसें भीग रही थीं, शर्माते हुए माय्या पर नज़र डाली और मुंह फेर लिया, शायद सकुचा गया। सलमान ने उन्हें बताया कि माय्या कौन है। तब चरवाहों ने उसे सिर नवाकर अपने भारी, खुरदरे हाथ उसकी ओर बढ़ाये।

गाराग्योज़ अपने भाई के साथ तम्बू में चली गयी। माय्या भी उनके पीछे-पीछे अंदर गयी। कोने में, पुराने और किसी चमत्कारवश वहां पहुंचे हुए तख़्त पर एक स्त्री लेटी थी; उसके खिचड़ी हो रहे बाल कंधों पर

* गाराग्योज़ – आज़रबैजानी में 'काली आंखोंवाली'।

बिखरे हुए थे और पीले पड़े चेहरे पर काले दाने निकले हुए थे। लड़का भागकर उसके धंसे हुए सीने से चिपटकर रोता रहा, मां उसे शान्त कराने की कोशिश में उसके सिर पर हाथ फेरने लगी।

"यहाँ कौन रहता है?" माय्या ने पूछा।

"मैं, मैं रहता हूँ," रो रहे लड़के को पकड़ते हुए काली दाढ़ीवाले चरवाहे ने कहा। "मेरा परिवार है... क्या नाम है? हमारा नाम केरेम है। यह हमारी बीवी है, ये हमारे बच्चे हैं..." और उसने लड़के को गोदी में उठाकर उसकी आंखें पोंछ दीं। "मत रो, हमारे ख़ानदान में रोना मना है!"

अचानक तम्बू के दूर के कोने से बच्चे के रोने की हल्की आवाज़ आयी। माय्या चौंक उठी। आंखें अंधेरे की आदी होने पर उसे बल्ली से बंधा हुआ पालना नज़र आया। बच्चा और ज़ोर से रोने लगा। माय्या ने पास जाकर, पालने पर झुककर देखा कि पालने में पोतड़े में लिपटे दो बच्चे हैं, जिनके सिर विपरीत दिशाओं में करके लिटाया गया था, एक शान्ति से सो रहा था, जब कि दूसरा नन्हा लाल मुंह बनाकर रह-रहकर पूरे ज़ोर से चीख़ रहा था।

माय्या ने रोनेवाले को गोद में ले लिया, वह फ़ौरन चुप हो गया और दूध टटोलने लगा। गारायोज़ ने उसके मुंह में चुसनी दे दी, बच्चा चूसने लगा और आंखें मूंद लीं।

"जुड़वां हैं?"

"हाँ, जुड़वां हैं," केरेम ने सिर हिलाया। "पांच महीने के हो चुके हैं... यह," उसने माय्या की गोद में लेटे बच्चे की ओर इशारा किया, "हूरी है और वह परी है।"

उसने सावधानीपूर्वक माय्या से बच्चे को ले लिया और गोद में झुलाने लगा। केरेम की कमीज़ व पतलून से और दाढ़ी तक से भी भेड़ की चर्बी और कुत्तों के बालों की बू आ रही थी। माय्या को चरवाहा अच्छा लगा: गम्भीर, बुद्धिमान और पहली नज़र में ही सरलहृदय।

हालांकि तम्बू में सफ़ाई थी, पर पैवंद लगा कम्बल ओढ़े लेटी बीमार औरत, पालना, जिसमें जुड़वां बच्चे लेटे थे और धुंधली रोशनी से माय्या को उनके प्रति बरती जा रही उपेक्षा के भाव की ऐसी अनुभूति हुई कि उसका दिल उमड़ आया। उसे शर्म महसूस हो रही थी कि वह ठाठदार नीला ओवरकोट पहने है, रेशमी रूमाल बांधे है और अपने नाख़ूनों को गहरे लाल रंग की नेल-पालिश से रंगे हुए है: यह सब चरवाहे के तम्बू

में कितना बेतुका लग रहा था! "क्या सचमुच ये लोग सारे जाड़े यहीं रहते रहे हैं?" उसने सोचा।

"घर चलना चाहिए, सूरज डूबने ही वाला है," माय्या को वहां लाने पर असन्तुष्ट सलमान ने ज़ोर से कहा।

"हमें कहां की जल्दी है, पहुंच जायेंगे," माय्या ने रुखाई से कहा और रोगिणी के पास बैठकर प्रेमपूर्वक पूछा: "तुम्हें क्या हुआ, बहन?"

बीमार ने माय्या को डाक्टर समझा और उसकी ओर आशाभरी नज़र से देखकर कहा:

"डाक्टर, मैं तुम्हारी उन राहों पर धूल बनकर बिखर जाऊं, जिनसे तुम यहां आयी हो। मेरी मदद करो। गरमी लग रही है, सारा बदन तप रहा है, लगता है जैसे अंगारों पर लेटी हूँ। ताप के मारे जीभ सूज गयी है और होंठ फट गये हैं।"

सलमान ने एक लम्बी सीटी मारी और झट से जूतों की एड़ियों के बल घूमकर वहाँ से दूर हट गया।

"थर्मामीटर है?" माय्या ने केरेम से पूछा। "और दवाओं का डब्बा कहाँ है? आपके पास बुख़ार कम करने की दवाई है?"

"हमारे पास कुछ भी नहीं है," केरेम ने दोषी की तरह कहा।

"क्यों नहीं है? आप लोग स्तेपी में खुले में रह रहे हैं! यहां क्या पशुपालन फ़ार्म है या किसी ज़मींदार का रेवड़? ऐसी बदइन्तज़ामी कोई सहन कैसे कर सकता है?"

"मैं कर ही क्या सकता हूं?" केरेम ने जवाब दिया। "मैं दिन-रात रेवड़ों के साथ कभी पहाड़ों में रहता हूं, तो कभी स्तेपी में। ऐसे में दवाइयों के बारे में सोचने का मौक़ा ही कहां मिलता है..."

"आप लोगों को मांग करनी चाहिए," माय्या ने तपाक से कहा। "प्रबंध समिति से, अध्यक्ष से, पार्टी की ज़िला समिति से!"

केरेम ने सकुचाते हुए मुस्कराकर हाथ हिला दिये: वह ऐसी बातों का आदी नहीं हुआ था। रुस्तम-कौशी से मांग करे! वह तो ऐसे डांटकर भगा देगा कि घिसटते भी नहीं बनेगा...

तम्बू में एक दरमियाने क़द के दुबले-पतले आदमी ने आकर अपना परिचय दिया:

"मेरा नाम गोशातख़ां है।"

माय्या को याद आया कि यह नाम जन-शिक्षा विभाग के अध्यक्ष का

है; रुस्तम-कीशी शाम को अकसर उसका ज़िक्र किया करता था और उसे हठियों का सिरमौर कहता था।

"लीजिये, देखिये नज़ारा," माय्या ने क्रुद्ध स्वर में कहा। "आप तो ज़िले के उच्चाधिकारी हैं!"

"मैं कौन-सा उच्चाधिकारी हूं," गोशातख़ां ने जवाब दिया। "काश मैं उच्चाधिकारी होता... सलमान है असली उच्चाधिकारी तो। ऐ, लेखापाल, ज़रा यहां आओ!"

तम्बू के पास खड़े सलमान ने मुंह बनाकर सिगरेट का टोटा फेंका और उसे जूते से दबाकर उसके पास आया। उसने सारी बात सुनी थी और रुस्तम का पक्ष लेना ज़रूरी समझा।

"अरे, केरेम, शर्म आनी चाहिए, सारा दोष अध्यक्ष के सिर क्यों मढ़ते हो? अध्यक्ष भी तो तुम्हारे जैसा आदमी है: उसके भी दो आंखें, दो पैर और दो हाथ हैं। अध्यक्ष के ज़िम्मे कपास, अनाज, साग-बाड़ियां, निर्माण टोली भी तो हैं, अब संस्कृति-भवन बनाना शुरू किया गया है, उसमें कोई तीस लाख रूबल लग जायेंगे! अगर तुम ख़ुद ही लूले हो, तो इसमें दूसरों का क्या दोष है?.."

"बोलने में तो तुम माहिर हो, पर तुमने कभी यहां की हालत देखी?" केरेम ने दाढ़ी हिलाते हुए प्रतिवाद किया। "मैंने ख़ुद तुमसे कितनी बार शिकायत की है! पर तुमने मदद की, बोलो, की मदद?"

"मैं अपनी ज़िम्मेदारी से इनकार नहीं कर रहा हूँ," सलमान ने दूसरी चाल चली। "हम सभी दोषी हैं। तुम कामरेड गोशातख़ां से पूछ लो।"

"नहीं, नहीं, मुझे इसका गवाह मत बनाओ!" गोशातख़ां ने टोक दिया। "पछताओगे। मैं सारे में कह दूंगा कि रुस्तम और तुम चरवाहों को इनसान ही नहीं मानते हो। आप लोग सोचते हैं कि चरवाहे बर्फ़ पर भी सो सकते हैं और गीली ज़मीन पर भी, सिनेमा की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं है, और उनके बच्चे स्कूल जाये बिना भी रह सकते हैं।"

सलमान ने बिना आवाज़ ऊंची किये गोशातख़ां के कथन से सहमति व्यक्त की:

"और मैं क्या कह रहा हूँ? पशुपालन फ़ार्म के इनचार्ज को चरवाहों के लिए दवाइयों और पोर्टेबल फ़िल्म प्रोजेक्टर की मांग करनी ही चाहिए।"

बाहर से घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ आयी, और सलमान राहत की सांस लेकर फिर ग़ायब हो गया।

बीमार को नीन्द आ गयी। माय्या ने उसे केरेम का लबादा ओढ़ा दिया और उसके गाल पर हाथ फेरा, – वह किसी न किसी तरह अभागी स्त्री की मदद करना चाहती थी।

गाराग्योज़ ने ट्रे में चाय लाकर तम्बू के बीचोंबीच बिछे क़ालीन पर रख दी। गृहस्वामी ने कितना ही आग्रह क्यों न किया, पर न माय्या ही चाय का एक घूंट पी सकी और न ही गोशातख़ां।

"आप सोचते हैं, मैंने इनसे नहीं कहा? मैं कहता रहा: 'अरे, चाचा, हमारे यहां स्कूल जाने की उम्र के पन्द्रह बच्चे हैं', – केरेम ने शिकायत की। – 'सामूहिक फ़ार्म में बोर्डिंग स्कूल बनाने में तुम्हारा क्या जाता है! और कुछ न हो सके, तो चलो, हम पड़ाव में पक्का घर बना लेते हैं, फिर अध्यापिका एक दिन आती रहे'। लेकिन बिलकुल भी ध्यान नहीं रखते..."

"ऊंट से बड़ा कौन? हाथी। और रुस्तम से बड़ा कौन है? पार्टी की ज़िला समिति। तुम्हें वहीं जाना चाहिए था," गोशातख़ां ने कहा और उसके सूखे, बेरंग होंठों पर फिर खिन्न मुस्कान फैल गयी।

"मुझे कौन याद कर रहा है?!" रुस्तम का मंद्र स्वर गूंज उठा। परदा एक ओर हट गया और 'नवजीवन' का अध्यक्ष तम्बू में दाख़िल हुआ।

गोशातख़ां को देखकर उसने अर्थपूर्ण भाव से हुंकार भरी और अपनी वैसे ही फूली घनी मूंछों को और फुला लिया। जब कि गोशातख़ां बिना उसकी ओर ध्यान दिये क़ालीन पर बैठ गया और चाय का गिलास उठा लिया।

४

सलमान अपने घोड़े की हिनहिनाहट से समझ गया कि कहीं पड़ाव के आस-पास रुस्तम-कीशी अपनी भूरी घोड़ी पर आ रहा है।

"भाड़ में जाये, कितनी बेतुकी बात हो गयी है!" सलमान ने कोसा। कम-से-कम उन्हें आगाह तो कर दूं कि यहां गोशातख़ां और माय्या मौजूद हैं!" और वह अध्यक्ष की तरफ़ भागा।

रुस्तम कल शाम रास्ते में सलमान के घर होता गया था और उसने उसे पड़ाव का चक्कर लगा आने का काम सौंपा था। अध्यक्ष के कानों में अफ़वाहें पड़ी थीं कि इनचार्ज भेड़ें चुराता है, हर सप्ताह रजिस्टर में पांच-छः भेड़ों को मरा हुआ या भेड़ियों द्वारा उठा ले गया लिख देता है, जब कि वास्तव में वह उन्हें बड़ी आसानी से बाजार रवाना कर देता है। उसके रजिस्टरों की जांच करनी चाहिए और चरवाहों से बात करनी चाहिए।

"यह काम हो जायेगा, चचा," सलमान ने विश्वास दिलाया और बातों ही बातों में उसकी ओर कोनक का जाम सरका दिया।

नज़नाज़ ने अपने मेहमान की ख़ातिरदारी में कोई क़सर नहीं छोड़ी, वह मुस्करा रही थी, बार-बार उससे आंखें बराबर कर रही थी।

रुस्तम ने आगे बताया कि उसका इरादा ज़िला मुख्यालय जाकर उच्चाधिकारियों द्वारा नयी, परिवर्द्धित योजनाओं का अनुमोदन कराने और लगे हाथों सलमान की नियुक्ति के बारे में बात करने का है। "तुम लेखापाल किसी काम के नहीं रहे, तुमने कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाया, देखना है कि उपाध्यक्ष के पद पर क्या करते हो," रुस्तम ने मज़ाक़ किया और नज़नाज़ को आंख मारी।

"मैं हर तरह की नौकरी में आपका वफ़ादार सेवक रहूँगा। चाहें, तो सिर भी कटवाकर दे सकता हूँ..." सलमान ने बिना आंख उठाये हकलाते हुए कहा।

"अरे, चचा, यह तो आप पर जान देते हैं – दिन-रात आपकी तारीफ़ों के पुल बांधते रहते हैं," नज़नाज़ ने मुस्कराते हुए कहा। "इनकी ज़बान पर हमेशा आप ही का नाम रहता है।" और उसने चेरी के मुरब्बे की छोटी-सी तश्तरी मेहमान के सामने रखते हुए संकोच के साथ स्वीकार किया: "बस एक बात से मैं सहमत नहीं हूं – भैया तुम्हें बूढ़ा कहते हैं!"

"तो फिर मुझे क्या कहना चाहिए?" रुस्तम ने दिलचस्पी दिखाई।

"अरे, कीशी, बुढ़ापे की बू तो आज के नौजवानों से आती है! तुम तो उनसे ज़्यादा जवान हो, चिनार जैसे मज़बूत हो, हाथ तुम्हारे पहलवानों जैसे हैं, सीना फुलाओ, तो चट्टान भी टुकड़े-टुकड़े हो जाये। तुम कौन-से बूढ़े हुए!"

"मेरे बाल कब के झड़ने लगे हैं," रुस्तम ने ठण्डी सांस ली। "झुर्रियां पड़ गयी हैं, बीमारियां लगी हुई हैं... अब नौजवानों के लिए रास्ता छोड़ने का समय आ गया है।"

"मुझसे पूछो, तो मैं तुम्हें सौ नौजवानों के बदले में भी देने को तैयार नहीं होऊं! तुम शेर हो, असली शेर!" नज़नाज़ कह उठी। "किसी क्यारी में उगे खीरे की तरह तरो-ताज़ा हो!"

यह भांपकर कि बहन ने हद कर दी है, सलमान ने उसके चिकोटी काट ली। और सचमुच रुस्तम की भौंहें सिकुड़ गयी थीं: "बुढ़ापे में नौजवान बनते बूढ़ों से बदतर कुछ नहीं हो सकता!" उसने सोचा और काम-काजी बातचीत जारी रखी।

सलमान भोर हुए तक पलक से पलक न लगा सका – वह रात-भर यही ख़याली पुलाव पकाता रहा कि वह उपाध्यक्ष बनने पर क्या-क्या कर दिखायेगा। उसकी नीन्द देर से खुली और वह फ़ौरन सरपट घोड़ा दौड़ाता चरागाहों की तरफ़ रवाना हो गया।

अध्यक्ष की चंचल भूरी घोड़ी की हिनहिनाहट के जवाब में अपने घोड़े का हिनहिनाना सुनकर सलमान कचिया गया। अब रुस्तम सोच लेगा कि वह उसकी बहू पर डोरे डाल रहा है। और फिर – वे एक ही घोड़े पर सवार होकर यहां पहुंचे हैं... निश्चय ही यह सन्देहजनक सैर थी। बचने की कोई तरकीब सोचनी चाहिए।

रुस्तम शान से घोड़ी पर आरूढ़ था। उसका सीना व बग़लें पसीने के कारण काले पड़ गये थे, – ज़ाहिर था, रुस्तम घोड़ी को पूरी रफ़्तार से दौड़ाता आया था। सलमान ने घोड़ी की लगाम पकड़कर आदरपूर्वक अध्यक्ष की उससे उतरने में मदद की।

"कामरेड अध्यक्ष, आप मोटरगाड़ी में क्यों नहीं आये?"

रुस्तम का मूड अच्छा था: स्पष्ट था कि उसकी ज़िला मुख्यालय की यात्रा सफल रही थी।

"कोई ऐसे कीचड़ में मोटर में यहां पहुंच सकता है? अगर कामरेड उपाध्यक्ष, अपने काम की शुरूआत ऐसे शब्दों से कर रहे हैं, तो इसका नतीजा अच्छा नहीं निकलेगा। ख़ैर, मुबारक हो, मुबारक हो!..."

सलमान झुका – न जाने वह बंदगी कर रहा था या रुस्तम का हाथ चूमना चाहता था।

"मैं यह मरते दम तक नहीं भूलूंगा!"

"बड़ी मुश्किल हुई," रुस्तम ने आगे कहा, "बड़ी मुश्किल हुई ज़िला

समितिवालों को क़ायल करने में। अगर ज़िला कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष न होता, तो शायद कुछ न हो पाता।"

"कलंतर भैया?!" सलमान कह उठा और उसने सोचा कि उसे अब भेड़ काटकर एहसान चुकाना पड़ेगा।

"हां, कलंतर ने हद से ज़्यादा अक़्लमंदी से काम लिया," रुस्तम ने पुष्टि की। "उसने झल्लाकर कहा: 'शेरज़ाद की नामज़दगी के मामले में चुप कर गया था, पर इस मामले में मैं आपसे मेरी राय सुनने की प्रार्थना करता हूं।'"

"शुक्रिया, शुक्रिया!"

रुस्तम बिना कोई अपवाद किये सभी को सन्देह की दृष्टि से देखता था और सलमान को भी छूट देने का उसका बिलकुल इरादा नहीं था। "अभी तो यह भोला-भाला मेमना है, पर जैसे ही सत्ता का नशा इस पर चढ़ेगा, यह मेरी ही जड़ खोदने लगेगा। और अगर इसने ज़िला मुख्यालय में कलंतर भैया से सांठ-गांठ कर ली और अपने इर्द-गिर्द प्रबंध समिति के पांच-छः सदस्यों, टोली-नायकों को जमा कर लिया—तो फिर इससे भले की आशा बिलकुल नहीं की जा सकेगी," उसने सोचा।

"सुनो, उपाध्यक्ष, तुम्हें ख़ुदा के वजूद में यक़ीन है?" उसने सख़्ती से पूछा।

सलमान सकपका गया और उसे इस सवाल में किसी चाल की बू महसूस हुई... उसने पूरे दुःसाहस के साथ मज़ाक़ किया:

"घर में तो करता हूं, पर कार्यालय में नहीं करता, कामरेड अध्यक्ष!"

रुस्तम उसकी हाज़िरजवाबी से सन्तुष्ट होकर हंस पड़ा।

"अब तुम्हें घर में भी यक़ीन नहीं करना चाहिए! मुग़ान के अग्रणी, सर्वश्रेष्ठ सामूहिक फ़ार्म के उपाध्यक्ष और हमारे दादा-परदादाओं से विरासत में मिले ख़ुदा में कभी मेल नहीं हो सकता!"

"जो हुक्म..."

सलमान ने जल्दी से घोड़ी को बांध दिया, उसके आगे अंकवार-भर सूखी घास डाल दी और कहा कि पड़ाव में ज़िले से मेहमान आये हुए हैं, क्या नाम है उनका, गोशातख़ां है शायद...

गोशातख़ां का नाम सुनकर अध्यक्ष सन्न रह गया। क्या पशुपालन फ़ार्म में चोरी की अफ़वाह सचमुच ज़िला मुख्यालय तक पहुंच गयी? लेकिन ज़िला जन-शिक्षा विभाग के इनचार्ज को क्यों भेजा गया है? उसे इससे

क्या लेना-देना? कहीं वह ख़ुद ही रुस्तम को खिजाने के लिए तो नहीं चला आया है?

"नहीं, वह अपने काम से आया है: चरवाहों के बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं," सलमान ने अध्यक्ष की उदासी का कारण समझकर उसे तसल्ली दिलायी। "और उसके साथ माय्या भी आयी है," उसने बातों ही बातों में कह दिया।

"पर वह यहां कैसे आ पहुंची?"

"पक्का कारण नहीं बता सकता," सलमान ने कंधे उचकाये। "लगता है कहीं आस-पास नालों की जांच करने आयी थीं।"

यह स्पष्टीकरण पूर्णतया विश्वास-योग्य लगता था।

"पर तुम्हें कुछ पता चला?"

सलमान ने बिना हिचकिचाये झूठ बोल दिया: चरवाहों में यह अफ़वाह पक्की तौर पर फैली हुई है कि पशुपालन फ़ार्म का इनचार्ज केरेम ईमानदार नहीं है।

रुस्तम आग-बबूला हो उठा। उसके बारे में कोई कुछ भी क्यों न कहता हो, पर अपनी स्वार्थसिद्धि के लालच में वह कभी नहीं पड़ा था और वह सहकारी संघ की सम्पत्ति पर दांत गड़ानेवाले के टुकड़े-टुकड़े कर देने को तैयार था।

"मैं उसके हाथ काट डालूंगा!" रुस्तम ने कहा और तम्बू की ओर चल पड़ा।

५

गोशातख़ां को आराम से चाय की चुस्कियां लेते देखकर सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष ने अपनी झल्लाहट पर क़ाबू किया, सबसे दुआ-सलाम की और कालीन पर बैठकर अपना पाइप निकाल लिया। गाराग्योज़ उसके लिए भी चाय का गिलास ले आयी। कोई एक मिनट सभी चुप रहे।

अचानक केरेम की बीमार पत्नी कराह उठी, तो पालने में परी ने चीख-भरे रुदन के साथ उसका प्रत्युत्तर दिया। गाराग्योज़ ने बेकार उसके मुंह में चुसनी दी—बच्चा और भी ज़्यादा ज़ोर से, कर्णभेदी स्वर में रोने लगा।

"ख़ूब जगह ढूंढ़ी है चाय पीने के लिए!" रुस्तम ने मुंह बनाया।

"अभी सर्दी तो पड़ नहीं रही है। खुले में चलते हैं, तुमसे बात करनी है," उसने केरेम को सुझाव दिया।

माय्या उसके पीछे-पीछे बाहर भागी और फुसफुसाकर बोली कि केरेम की पत्नी सख़्त बीमार है, जल्दी से जल्दी डाक्टर बुलाना चाहिए। ससुर का निश्चिन्त स्वर में उत्तर सुनकर कि डाक्टर कल आयेगा, उसने और ज़ोर देकर कहा कि एक भी घंटे की और देर करना उचित नहीं होगा, लगता है बीमार को निमोनिया हो गया है।

"तुम्हारे लिए क्या मैं ज़मीन फाड़कर डाक्टर को निकालूं!" रुस्तम ने उसकी बात काट दी। "उसे कुछ नहीं होगा, तुम उसे अपनी जैसी शहरी मत समझो। ये लोग मज़बूत हैं।"

"मुझे घोड़ा दीजिये, मैं ख़ुद जाऊंगी।"

"कामरेड इंजीनियर, घबराइये नहीं, ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे में डाक्टर यहां आ जायेगा," पीछे से गोशातख़ां का सदा के समान शान्त स्वर सुनाई दिया।

रुस्तम ने पलटकर देखा।

"और तुम यहां किस लिए आये हो?"

"यह मेरा अपना मामला है," गोशातख़ां ने शान्ति से उत्तर दिया।

उसने सो रहे ड्राइवर के पास जाकर उसे जगा दिया।

"जल्दी करो, प्यारे, जल्दी करो... गाड़ी लेकर घर जाओ और मेरी पत्नी को यहां ले आओ। कह देना – यहां एक औरत की तबीयत बहुत ख़राब है, दवाइयां अपने साथ लेती आयें," उसने कहा। "बच्चों को पड़ोसिन के यहां छोड़ आये: हो सकता है, रात यहीं गुज़ारनी पड़े।"

"यह पहला मौक़ा नहीं है," चालक ने कहा और उबासी लेकर सरकण्डों में खड़ी जीप की तरफ़ भागा।

गोशातख़ां की पत्नी ज़िले के अस्पताल में डाक्टर थी और ड्राइवर ऐसी आकस्मिक घटनाओं से अच्छी तरह परिचित था।

गोशातख़ां की ओर कोई ध्यान दिये बिना रुस्तम बाड़े की ओर चला गया। वहां गंदगी थी। अध्यक्ष को यह अच्छा नहीं लगा लेकिन वह चुप रहा और उसने केवल केरेम पर एक ग़ुस्से भरी नज़र डाली। सरकण्डों की बाड़ के ऊपर से अंदर पैर रखकर रुस्तम ने घुंघराले सुनहले-पीले मेमने को उठाकर उसे प्यार से सहलाया, अध्यक्ष का चेहरा फिर सदय हो उठा, स्पष्ट था कि यह व्यक्ति पशुओं को प्यार करता है। उसने शूकर के

बाड़े के दरवाज़े के पास लेटे तीन नन्हे-नन्हे मेमनों को भगा दिया, – दो फ़ुर्ती से उठकर भागे, जब कि तीसरा काफ़ी कोशिश करने पर भी खड़ा नहीं हो सका। रुस्तम ने झुककर उसके पैर व पेट दबाये और मवाद पड़ी आंखों में झांका।

"बीमार है?"

"नहीं, मां इसे पास नहीं फटकने देती है, दूध नहीं पिलाती है," केरेम ने जवाब दिया।

"तो उसके पैर बांधने चाहिएं! तुम्हें क्या यह मालूम नहीं है? पशु-विशेषज्ञ आया था?" अध्यक्ष फ़ौरन जवाब तलब करने लगा। "मेमना तो दो-एक दिन में मर जायेगा! देख लेना, जानवरों के मरने के लिए तुम्हें कड़ी-से-कड़ी सज़ा मिलेगी..."

माय्या आश्चर्यचकित रह गयी। इस आदमी को कोई कैसे समझे? अभी-अभी बीमार स्त्री के प्रति पूर्णतया उपेक्षा का भाव दिखा चुका है, और अब कमज़ोर मेमने को लेकर परेशान हो रहा है। उसने याचनापूर्ण दृष्टि से गोशातख़ां की तरफ़ देखा, पर वह तो रुस्तम का स्वभाव अरसे से जानता था, उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ और वह शान्तिपूर्वक बाड़ के सहारे-सहारे चहलक़दमी करता रहा।

"कितनी गंदगी है!" अध्यक्ष केरेम को डांटने लगा। "हज़ार बार कह चुका हूँ: मेमनों को ऐसी गंदगी में मत रखो!"

"कल इन्हें नये बाड़े में ले जायेंगे।"

"कल, कल..." रुस्तम-कीशी ने नक़्ल उतारी। "तुम लोग बस अपने पेट की फ़िक्र करते हो! यानी आज मेमने घुटने-घुटने मेंगनियों के कीचड़ में घूमते रहेंगे! ऐसी सौ भेड़ों से एक सौ तीस मेमने कहां होंगे – अस्सी भी जिन्दा नहीं रह पायेंगे!" अचानक यह ध्यान आने पर कि यह स्पष्ट बातचीत गोशातख़ां के सामने हो रही है, वह उस पर भी बरस पड़ा: "तुम्हें जो सोचते हो, मुंह पर कहना चाहिए, औरतों की तरह इधर की उधर नहीं लगानी चाहिए!"

"अरे, रुस्तम-कीशी, मुंह पर कहूं या पीठ पीछे, इससे फ़र्क़ क्या पड़ता है! कहता एक-सी बात हूँ। तुम गरम मत होओ!" गोशातख़ां ने बेपरवाही से कहा। "तुम आग तो हो नहीं, जो झुलस डालोगे..."

"ठीक है," रुस्तम ने धीरे से कहा, "तुम्हारे साथ मैं बाद में बात करूंगा।"

"बात करोगे, तो शुक्रिया, चुप लगाओगे, तो भी हर हालत में जवाब देना ही पड़ेगा। बस धमकाने की ज़रूरत नहीं है।"

"मैं समझता हूँ, तुम्हारे जैसों पर धमकियों का कोई असर नहीं होता है! जो नाचने निकला हो, उसे घूंघट निकालने की क्या ज़रूरत! और," – उसने केरेम की ओर उंगली उठायी, "तेल्ली चाची का यह क़ाबिल बेटा भी शर्म खो बैठा है! इसकी भेड़ें, देख रहे हो, हर हफ़्ते मरती रहती हैं... लगता है सामूहिक फ़ार्म की भेड़ों के गोश्त के सींक-कबाब पकाते-पकाते बिगड़ गया है।"

केरेम ऐसे आगे लपका, जैसे उसे बिच्छू ने डंक मारा हो, और माय्या ने सोचा कि वह अभी अध्यक्ष पर टूट पड़ेगा और हाथापाई शुरू हो जायेगी। लेकिन चरवाहे ने संयम से काम लिया और दांत पीसता हुआ बोला:

"सत्ता तुम्हारे हाथ में है, अध्यक्ष, लेकिन ईमानदार लोगों की बेइज़्ज़ती करने की इजाज़त तुम्हें भी नहीं है... जांच समिति भेज दो। अगर झूठे आरोप सच निकलें, सज़ा देना, न निकलें, तो ख़ुद ही को कोसना! फिर तुम्हारी ख़ैर नहीं!"

"जांच करेंगे, ज़रूर करेंगे। अभी एक बात गांठ बांध लो: तुम लोगों में मेरी प्रतिष्ठा को गोशातख़ां की मदद से भी धक्का नहीं पहुंचा सकोगे!"

"तुम ख़ुद अपनी प्रतिष्ठा गँवा बैठे हो," गोशातख़ां ने शान्तिपूर्वक कहा। "तुम्हारी दोनों आंखें अंधी हो चुकी हैं, दोनों कान बहरे हो चुके हैं, तुम अपने सिवा न किसी की इज़्ज़त करते हो, न ही किसी की क़ीमत समझते हो। लेकिन सिरका कैसा भी क्यों न हो, मुंह से उसकी बू ज़रूर आती है!"

"ज़बान तो तुम्हारी कतरनी जैसी चलती है," रुस्तम ने चिढ़कर कहा। "माय्या को घोड़ा दे दो!"

माय्या ख़ुश हो उठी। उसे ससुर की वहां उपस्थित लोगों से कहा-सुनी होते देख शर्म भी महसूस हो रही थी और ऊब भी। अगर रुस्तम न होता, तो वह अवश्य ही बीमार की तीमारदारी करने के लिए रुक गयी होती, जो कुछ उसके सामर्थ्य में था, ज़रूर करती... उसने गारा-ग्योज़ को चूमा और अपने सिर से रेशमी रूमाल उतारकर बालिका के घुंघराले बालों पर डाल दिया। केरेम से विदा लेते समय माय्या ने कहा कि वह उसकी पत्नी का हाल-चाल पूछने ज़रूर आयेगी। उसकी बहुत

इच्छा थी कि गोशातख़ां से हाथ मिलाये, पर वह साहस न कर सकी, केवल उसकी ओर मुस्कराकर ही देख पायी।

रुस्तम-कीशी काठी पर बैठा-बैठा क्षीण मुस्कान के साथ इस विदाई को देख रहा था।

"झूठी ख़बरें जमा करने से तो बेहतर होता कि इन चरवाहों को अख़बार पढ़कर सुनाया करते!" उसने चिल्लाकर गोशातख़ां से कहा और केरेम को सम्बोधित कर बोला: "बहू को एक सीधा-सादा घोड़ा देने को कह दो।"

सलमान ने माय्या की घोड़े पर सवार होने में मदद की, रुस्तम-कीशी के सामने वह उसके साथ विशेष रूप से सावधानी बरत रहा था, जैसे वह मूल्यवान सुरा-पात्र हो, – कहीं टूट न जाये... लेकिन उसके लगाम छोड़ते ही "सीधे-सादे" घोड़े ने चमककर इतने ज़ोर से गहरे डबरे में पैर मारा कि सलमान कीचड़ में सराबोर हो गया और फिर घोड़ा दहाना चबाता हुआ वहीं नाचने लग गया।

माय्या का चेहरा फक हो गया।

"मेढ़े की तरह खड़े क्यों हो?" रुस्तम सलमान पर ग़ुस्सा हो उठा। "दहाना पकड़ो!"

सलमान को तो इसी का इन्तज़ार था। उसने लगाम पकड़कर घोड़े को शान्त कर दिया और अपने घोड़े पर उछलकर सवार हो एड़ लगा दी।

६

रुस्तम अपने बेटे की शादी का ख़याल आने पर हमेशा खीज उठता था।

सारी मुसीबत यह थी कि नम्र, सीधे-सादे और माता-पिता की आज्ञा का कभी उल्लंघन न करनेवाले गराश ने जुझारू और तेज़-ज़बान लड़की को अपनी पत्नी के रूप में चुना था। माय्या जैसी स्त्री अपने पति पर पलक झपकते काठी कसकर उसे जिधर उसका मन करे हांक ले जा सकती है। वाह, कितनी ख़ूबसूरत है!

अगर सुन्दर बहू चिन्ताशील गृहणी बन जाती, पति के लिए खाना पकाती और ससुर के लिए जाड़ों के लिए गरम मोज़े बुनती, तो कोई बुरी बात इसमें न होती। गराश खेत से थका-हारा घर आता और सुन्दर,

सजी-संवरी प्यारी पत्नी शान्तिपूर्वक सुराही से पानी डाल उसके हाथ धुलाती, भाग-भागकर काम करती, उसे मेज़ पर बिठाती...

लेकिन माय्या पर तो जैसे शैतान सवार है, हर चीज़ में दिलचस्पी लेती है, हर काम में टांग अड़ाती है। फिर उसका व्यवसाय भी ऐसा है कि उसे सदा लोगों के बीच में रहना पड़ता है। लेखाकार होती, तो सलमान की निगरानी में बैठी काम करती रहती... ऐसी अथक को तो शीघ्र ही सक्रिय कार्यकर्त्ता बना दिया जायेगा और उसकी आवाज़ हर तरह की पूर्ण बैठकों और सभाओं के मंचों से गूंजने लगेगी। क्या पता इसे कब बाकू भेज दिया जाये, और वहां इसे बेशक प्रशंसक मिल जायेंगे और इसका अन्त क्या होगा, यह केवल ख़ुदा ही जानता है... नहीं, बेकार ऐसा नहीं कहना चाहिए, माय्या शालीन स्त्री है, रुस्तम यह स्वीकार करता है: वह किसी की तरफ़ आंख उठाकर नहीं देखेगी, गराश के प्रति निष्ठावान् है, – लेकिन आख़िर है तो औरत ही, मर्दों का उसकी ओर ध्यान देना उसे पथभ्रष्ट कर सकता है। रुस्तम ने कनखियों से देख लिया कि गोशातख़ां से विदा लेते समय माय्या उसकी तरफ़ देखकर कितनी मृदुता से मुस्करायी थी। नहीं, समय रहते लगाम कड़ी कर लेनी चाहिए। गराश तो मेढ़े की तरह है – आंखें फड़फड़ाता रहता है, पत्नी को निहारते उसका मन ही नहीं भरता। देखते रहिये, कहीं बाद में पछताना न पड़ जाये।

अध्यक्ष भूरी घोड़ी के बाजुओं में एड़ियां दबाता उसे स्तेपी में सरपट दौड़ाता चला जा रहा था और मन-ही-मन गोशातख़ां को कोसता भी जा रहा था। सलमान का कुम्मैत घोड़ा लगभग उसके साथ-साथ दौड़ रहा था। रुस्तम जब भी सलमान के निश्चल, पाषाणवत् चेहरे पर नज़र डालता, उसके दिल को राहत महसूस होती: ऐसा आदमी कभी माय्या की तरफ़ बेकार नज़र उठाकर नहीं देखेगा। सलमान को पेरशान पसंद है, वह रुस्तम के साथ रिश्ता क़ायम करने के सपने देखता है। माय्या को सभी तरह के प्रलोभनों से दूर रखने के लिए उसे सलमान जैसे वफ़ादार दोस्तों से घेरे रखना चाहिए। "फिर दो-तीन साल में," रुस्तम ने सोचा, "बच्चे हो जायेंगे, वह अपने घर की आदी हो जायेगी और ख़ुद भी स्तेपी में भटकने से ऊबकर कार्यालय में काम देने का आग्रह करने लगेगी..."

घोड़ी के सुमों के नीचे से एक भूरी चिड़िया निकलकर उड़ गयी, भयभीत घोड़ी पिछली टांगों पर खड़ी हो गयी, लेकिन रुस्तम ने उसके

कानों के बीच मुक्का मारा और दांत पीसता हुआ चीखा: "मौत आ जाये तुझे!" और घोड़ी एक सार सरपट चाल से दौड़ने लगी।

उधर कुम्मैत घोड़ा आसानी से, बिना टिटकारी के सलमान को लिए खनकती हिनहिनाहट में चुलबुली घोड़ी से कम-से-कम एक नज़र उसकी ओर देख लेने का इसरार करता भागा जा रहा था। सलमान चुप था। रुस्तम का उसकी चिन्ता करना उसके दिल को छू गया था: वह ज़िला मुख्यालय तक पहुंच गया और अपनी ठानी करवाकर रहा, सलमान 'नव-जीवन' सामूहिक फ़ार्म का उपाध्यक्ष बन गया... हां, ऐसे सरपरस्त का दामन कसकर पकड़े रहना चाहिए। अब बस किसी तरह हठीली पेरशान को मनवाकर जल्दी से जल्दी शादी करवा ली जाये। लेकिन क्या सलमान उसे प्यार करता है? उसने कभी भावनाओं को कोई महत्त्व दिये बिना इस बारे में सोचा नहीं था। उसने जब पहली बार पेरशान को देखा था, तब से अब तक उसके दिल में कोई हूक नहीं उठी है; वह पेरशान के सपने देखता कभी रात में गलियों में नहीं भटका; उसने पेरशान से मुलाक़ात न हो पाने के दिनों में कभी अकेलेपन के कारण परेशानी नहीं महसूस की; उसने तारों की जगमगाहट में पेरशान की मुस्कराती आंखें पहचानने के इरादे से कभी आसमान को नहीं ताका; उसने कभी पूनम के चांद में पेरशान का चेहरा नहीं देखा; उसने मुग़ानी स्तेपी की ताज़ा हवा के झोंकों में कभी उसकी सांसों को महसूस नहीं किया। वह सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष की बेटी थी, – इसका मतलब है उससे शादी करना लाभदायक है। रुस्तम-कीशी का परिवार सुप्रसिद्ध और सम्पन्न परिवार है, मुग़ान में उसे सम्मान प्राप्त है, उसके साथ रिश्तेदारी क़ायम करना बहुत फ़ायदेमंद होगा। ऊंची शाखाओंवाले चिनार यानी रुस्तम-कीशी की छाया में स्वच्छंदता से जिया जा सकता है, अपना नाम ऊंचा किया जा सकता है।

सलमान को लेशमात्र भी चिन्ता नहीं थी कि उसके दिल को व्यथित पेरशान नहीं बल्कि माय्या कर रही थी। इस समय जब कि उसके आगे रुस्तम-कीशी की विशाल आकृति हिल-डोल रही थी, सलमान ने मजबूरन अपनी बची-खुची शक्ति जुटा ली, ताकि उसके चेहरे पर निर्लिप्त भाव बना रहे, जब कि मन-ही-मन वह सोच रहा था: "शादी बेटी से कर, दिल बहू के साथ बहला और रुस्तम ख़ानदान का मुखिया बन बैठ! यह कोई इन्साफ़ की बात है कि इतनी मीठी, रसदार नाशपाती गराश जैसे गावदी को मिली है? हिम्मत से काम ले! माय्या ज़रूर आसानी से मान

जानेवाली होनी चाहिए। शहरी लड़कियां हमारी गांव की लड़कियों जैसी सख़्त नहीं होतीं। वह जल्दी ही अपने पति से ऊब उठेगी, और फिर तुम्हारे लिए सुनहरा मौक़ा आ जायेगा..."

७

"कामरेड सलमान, हमारे सामूहिक फ़ार्म में आज तक बिजली क्यों नहीं आयी है?" माय्या अचानक कह उठी। "आख़िर मिंगेचाऊर से आनेवाली लाइन हमारे बहुत पास से गुज़रती है।"

सलमान ने सतर्कतावश लगभग बिना होंठ खोले जवाब दिया, हालांकि आगे रुस्तम-कीशी बिना पीछे मुड़कर देखे चला जा रहा था:

"मोहतरमा, हमारे यहां बहुत-सी चीज़ों की कमी है। बेशक, सारी बातों के लिए हम ख़ुद ही दोषी हैं, और सबसे ज़्यादा मैं। आपके ससुर बुढ़ा रहे हैं, अब उनमें वैसी ताक़त नहीं रही... और बिना बिजली की ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है! निरर्थक जीवन है! मैं वादा करता हूँ कि जाड़ा ख़तम होते-होते बिजली ले आऊंगा।"

"लेकिन आपने पहले इस बारे में क्यों नहीं सोचा?"

"पेड़ अपने आप बड़ा नहीं हो जाता, उसमें पानी देना होता है। यानी बिजली के मामले में भी दौड़-धूप और काम करने की ज़रूरत थी। रुस्तम चचा के दो हाथ हैं, कभी इधर जाना पड़ता है उन्हें, तो कभी उधर, दोनों काम तो एक साथ नहीं कर सकते न, कपास की खेती शुरू की, तो अनाज की फ़सलें बिगड़ने लगीं। ख़ैर, अब सब ठीक हो जायेगा। आपकी पहलक़दमी, ख़ानम, और मेरी मेहनत – फिर हमारा गांव बिजली के सूरज की तरह सारी मुग़ान को रोशन कर देगा।"

"मैं बड़ी ख़ुशी से आपकी मदद करूंगी। आइये, शर्माइयेगा नहीं।"

न जाने रुस्तम को बहू की आवाज़ सुनाई दे गयी, या भूरी घोड़ी भारी सवार के कारण थक गयी, पर रुस्तम मुंह से झाग छोड़ती घोड़ी को क़दमचाल से चलाने लगा।

"किस बारे में बात कर रहे हो?" उसने पूछा।

"आपकी बहू, चाचा, जानना चाहती हैं कि गांव में बिजली क्यों नहीं है," सलमान ने जवाब दिया।

"आयेगी, बिजली भी आ जायेगी," रुस्तम ने विश्वास दिलाया। "सारे काम एक साथ नहीं किये जा सकते। पहले खेती-बारी को मज़बूत करना होगा। जब बैंक में बीस-तीस लाख रूबल जमा हो जायेंगे, तब बिजली का काम छेड़ेंगे। मुझे अकेले को, बेटी, सब कामों का ध्यान रखने में बहुत मुश्किल हुई थी। अल्लाह ताला ने पहाड़ों का सिलसिला बनाया है, तो इसका मतलब है, वह समझता था कि पहाड़ अकेला खड़ा-खड़ा ऊबने लगेगा। और मैं तो अकेला, निपट अकेला हूं।"

"सलमान भी यह कह रहे हैं," माय्या ने सरलहृदयता से कहा।

"मैं ही क्या, सारे लोग मानते हैं कि हमारे सामूहिक फ़ार्म को अकेले रुस्तम-कीशी ने बनाया है," सलमान ने आगे कहा।

"तुम यारमामेद की नक़ल मत करो, मुझे बुढ़ापे में शर्मिंदा मत करो," रुस्तम ने कहा और सलमान को चुप होता देखकर नरमाई से आगे बोला: "कामरेड सलमान को बधाई दो, बेटी – इन्हें मेरा सहायक बना दिया गया है!"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात है!"

"इसमें क्या अच्छी बात है?" सलमान ने बिना नज़रें उठाये ठण्डी सांस ली। "मुझे डर है कि मैं निभा नहीं सकूंगा, रुस्तम चचा के मुझ पर किये विश्वास को सही साबित नहीं कर सकूंगा।"

"ठीक है," रुस्तम बड़बड़ाया। "बेहतर होगा तुम मुझे यह बताओ कि पशुपालन फ़ार्म की जांच करने के लिए कौन-से तेज़-तर्रार आदमी को भेजें? नहीं तो केरेम रात भर में सारे सबूत ग़ायब कर देगा – फिर कोई मीन-मेख नहीं निकाल सकेगा।"

"मुझे तो गूंगे हुसैन से बढ़कर लायक़ कोई नज़र नहीं आता," सलमान ने बिना सोचे कहा। "वह स्तेपी में भी आपको उस मेमने की हड्डी ढूंढ़कर ला देगा, जिसके दो साल पहले सींक-कबाब बनाकर खाये गये थे!"

माय्या की आंखों के सामने तम्बू, पालने में लेटे जुड़वां बच्चे, केरेम की बीमार पत्नी और गाराग्योज घूम गये और उसका दिल दुख उठा।

"केरेम बिलकुल भी धोखेबाज़ नहीं लगता," उसने कहा।

वाचाल बहू की ओर तिरछी नज़र से देखकर रुस्तम ने सख़्ती से सलमान से कहा:

"आज रात को ही हुसैन और लेखा-परीक्षण दल के दो और सदस्य जांच शुरू कर दें। अनाम-पत्र मैं तुम्हें कल दूंगा। काम फ़ौरन शुरू कर दें, मीयाद एक हफ़्ते की है, उससे ज़्यादा नहीं!"

"जो हुक्म," सलमान ने तुरन्त कहा।

रुस्तम-कीशी ने घोड़ी की सख़्त बाज़ू पर चाबुक फटकारा और उसकी गरदन से चिमटकर रास्ते पर उसे सरपट भगाने लगा।

माय्या उसे जाते देखती सोच में डूब गयी। इस समय रुस्तम-कीशी उसे तूफ़ान द्वारा सड़क के बीचोंबीच फेंके गये किसी भीमकाय चट्टान के टुकड़े जैसा लग रहा था। उस टुकड़े से बहुत-से राहगीरों को परेशानी हो रही थी, पर वे चुप थे, उससे दूर से निकल रहे थे, हालांकि परेशानी हो रही थी... न जाने बेचारी सकीना ऐसे टेढ़े आदमी के साथ कैसे सारी ज़िन्दगी जीती रही है। जब रुस्तम-कीशी किसी से बात करता है, तो उसका सम्भाषी हांफने लगता है, जैसे कमरे में घुटन हो। और वह अपने अधीन-स्थों पर कैसे चिल्लाता है! भला मालिक अपने घोड़े के साथ उससे बेहतर ढंग से पेश आता है। केरेम की पत्नी सख़्त बीमार है—पर रुस्तम के चेहरे पर शिकन भी नहीं पड़ी: कहते हैं, मुग़ान की औरतों की सेहत बहुत अच्छी होती है। पर वास्तव में तो इसका अर्थ यह हुआ: मरे तो मर जाये, दुनिया में इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

माय्या को संस्थान के बाग़ में उगा शतवर्षीय वृक्ष याद आ गया। उसकी डालें आंधियों से टूट गयी थीं, पत्तियां शरत् के आरम्भ में झड़ गयी थीं, जब कि उसके अग़ल-बग़ल अभी तक घनी हरियाली छायी हुई थी। बूढ़ा माली आया, उसने उसके गले हुए हिस्सों को खुरच दिया, सूखी हुई टहनियां काट दीं, दरारों में से कीड़ों और इल्लियों को खुरचकर निकाल दिया, छाल पर किसी चीज़ का लेप कर दिया और वृक्ष के शीर्ष की छंटाई कर दी—फिर चमत्कार हो गया: वसन्त में वृक्ष का यौवन फिर लौट आया, उसमें ताज़ा चिपचिपे पत्ते फूट आये।

लेकिन रुस्तम को पुनः जन्म लेने में कौन सहायता कर सकता है? सलमान? माय्या को लगा कि सलमान उसके ससुर का बिलकुल उलटा है—सहृदय, अनुग्रहपूर्ण है और उसका स्वभाव भी नरम है... अगर सल-मान जैसे नौजवानों से मित्रता बढ़ाई जाये, तो रुस्तम-कीशी पर भी कुछ प्रभाव डाला जा सकता है और सामूहिक फ़ार्म में भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

गांव के गंदे रास्ते पर सलमान का थका घोड़ा क़दमचाल से चल रहा था। घरों के पास खड़ी औरतें कानाफूसी करने लगीं:

"ऐ, मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता—सलमान रुस्तम की बहू के रकाब से रकाब सटाये घोड़े पर जा रहा है!"

"यह कोई औरत थोड़े ही है, घर की रौनक़ है।"

"जिस कमरे में ऐसी चांद-सी सुन्दरी दाख़िल हो, उसमें चिराग़ की कोई ज़रूरत नहीं!"

सलमान अपनी चिन्तामग्न, व्यस्त मुखमुद्रा से यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि खेत से लौटते हुए अगर ख़ुद ससुर आगे-आगे चल रहा हो, तो बहू के सामूहिक फ़ार्म के लेखापाल के साथ-साथ घोड़े पर जाने में आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

रुस्तम घोड़े पर अहाते में घुसा और बरामदे में भागकर निकली पेरशान ने मां को आवाज़ दी:

"मां, मां, देखो तो ज़रा घोड़े पर सवार अब्बा हू-बहू केरोगली लग रहे हैं! वैसे तुम्हारे लिए उन्हें निहारना अच्छा नहीं होगा—सिर चकरा जायेगा..."

"चुप करो, नहीं तो जीभ पर छाले ही छाले हो जायेंगे!" सकीना ने ज़िन्दादिली से झूठा ग़ुस्सा करते हुए कहा।

अलसेशियन ज़ंजीर खड़खड़ाता भौंक उठा, और अहाते में सलमान का एड़ लगाया हुआ कुम्मैत घोड़ा सरपट आ पहुंचा।

अब पेरशान सचमुच हर्षित हो उठी।

"भैय्या!" उसने खनकती आवाज़ में पुकारा। "भैय्या! जल्दी आओ, देखो, भाभी घोड़े पर कैसे बैठी हैं! यह कोई लड़की नहीं, बांका घुड़सवार है! और ठिंगना सलमान उनके पीछे दुम-सा लग रहा है!.."

पिता को पेरशान की बेतकल्लुफ़ी अच्छी नहीं लगी। विवाह योग्य युवती को यह शोभा नहीं देता।

माय्या कूदकर घोड़े से उतरी, उसने पेरशान को चूमा और जल्दी से बाग़ से आ रहे पति की ओर बढ़ गयी। गराश उसे उस क्षण अति-सुन्दर लग रहा था—सुडौल, रूईभरी पतलून और पीली क़मीज़ पहने, मिट्टी में सने हुए।

"तुम क्या रोप रहे थे? प्याज़?"

"नहीं, फूल। सफ़ेद लिली।"

माय्या ने पंजों के बल खड़े होकर पति के गले में बांहें डाल दीं और उसे चूम लिया। गराश कितना चिन्ताशील है, कितना ख़याल रखता है उसका! उसे याद रहा कि कभी वह लिली के फूलों के सपने देखा करती थी।

गराश शर्मा गया, उसने प्रेमपूर्वक, पर दृढ़ता से उसके हाथ हटा दिये। माता-पिता और अपरिचितों के सामने पति-पत्नी का परस्पर प्रेम-प्रदर्शन शोभा नहीं देता।

रुस्तम ने घोड़ी की लगाम सलमान को थमा दी और अहाते के बीचों-बीच खड़े, मिट्टी में सने बूट चढ़ाये पैर चौड़े कर उसने बेटे को इशारे से बुलाया। और गराश उसके पास आया, पिता ने सलमान की उपस्थिति की चिन्ता किये बिना क्रुद्ध स्वर में कहा:

"बेटा, तुम मेरी रोटी खाकर और अपनी मां सकीना का दूध पीकर बड़े हुए हो। तुम उनमें से नहीं हो, जिनका कोई ख़ानदान नहीं, कोई क़बीला नहीं और जो नहीं जानते कि वे किसके साये में पले हैं। इसी लिए तुमसे कहता हूँ: वक़्त रहते अपने घर की बाग-डोर ज़रा कसकर संभाल लो।"

और वह बिना किसी की ओर देखे बरामदे पर चढ़ गया।

८

माय्या तख़्त पर पड़े तकियों में मुंह दबाये सिसक-सिसककर रो रही थी। सकीना व पेरशान, जैसे उनसे हो पा रहा था, उसे तसल्ली दिला रही थीं, पर वह आंसू बहाती हुई शिकायत कर रही थी:

"इसमें मेरा क्या क़सूर है कि शादी के दिन मां मेरे चेहरे के पास मोमबत्ती नहीं लायी? अब्बा ने मुझे बरकत नहीं दी? उनकी क़िस्मत ही ऐसी थी... नहीं तो आदमी के ही क्या,—चिड़ियों और जानवरों के भी मां-बाप होते हैं!"

"इसमें तुम्हारा कोई क़सूर नहीं है, बेटी, चुप हो जाओ, अपने आंसू पोंछ लो," सकीना उसे विश्वास दिला रही थी। "मुझे अपनी मां की जगह समझो! मुझे ज़िन्दगी में कभी ख़ुशी नसीब न हो, अगर मैं तुम्हें पेरशान और बेटे से कम प्यार करूँ। तुम बूढ़े की बात पर बिलकुल ध्यान मत दो। उनका काम बहुत मुश्किल है, उन्हें एड़ी-चोटी का ज़ोर

लगाना पड़ता है, इसीलिए जो मुंह में आता है, बक देते हैं। फिर ख़ुद ही पछताने लगते हैं।"

पेरशान माय्या का हाथ सहलाती हुई फुसफुसा रही थी:

"अगर तुम चुप नहीं हुई, तो मुझे मेरे भैया की क़सम, मैं भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगूंगी। और शादी भी नहीं करूंगी। अपने आख़िरी दम तक घर से बाहर क़दम नहीं रखूंगी! और इसका सारा दोष तुम्हारा माना जायेगा!"

गराश अंधेरे गलियारे में दरवाज़े के पास खड़ा सब सुन रहा था, पर महसूस कर रहा था कि उसमें कमरे में जाने की शक्ति नहीं है। उसका दिल दर्द के मारे फटा जा रहा था।

वह सुनता रहा कि कुछ शान्त हो जाने पर माय्या मां और पेरशान को कैसे अपने जीवन की कहानी सुना रही है जिसे गराश भली-भांति जानता था।

...तेरा वर्णन किन शब्दों में किया जाये, ऐ बचपन? शुरू में तो वह माय्या के जीवन में भी उज्ज्वल रहा था।

बर्फ़ीला जाड़ा, छतों से ऊंचे बर्फ़ के ढेर, सारे रास्तों और पगडण्डियों को मिटा देनेवाले बर्फ़ के तूफ़ान; गरमियों की गरजती घटाएं, जब धरती बिजली की कड़क से कांप उठती थी; शरत् की अनवरत वर्षा, हवा की चीख़ें, आंधी से गिरे पेड़ों, दलदलों, बिलबेरी व क्रेनबेरीवाले दुर्गम घने वन... यह सब मास्को के छोटे-से उपनगर में जन्मी आज़रबैजानी बालिका के जीवन के आरम्भ के दिनों में उसके अड़ोस-पड़ोस में था।

उसके पिता शाम हुए घर लौटते, अपने फ़ौजी ओवरकोट से बर्फ़ झाड़ते। ग़ैबत-क़ुली एक सुन्दर व क़द्दावर सैनिक अफ़सर था, लड़की अपनी स्नेह भरी नज़रें उससे हटा नहीं पाती थी, वह धड़कते दिल से उसे खोल में बंद पिस्तौल अलमारी में छिपाते देखती रहती थी। ऐसे पिता के साथ रहने पर माय्या को दुनिया में किसी से डर नहीं लगता था—न फ़ासिस्टों से, न ही भेड़ियों से!... ज़रा पास फटकने की हिमाक़त तो करें!..

उसके पीछे-पीछे थकी-हारी, पर दयालु और स्नेहमयी मां अस्पताल से घर आती, बेटी को सुलाती, उसके पलंग पर झुककर रेशमी बालों में उंगलियां फेरती हुई हृदयग्राही आज़रबैजानी गीत गाती।

फिर वे लेनिनग्राद रवाना हो गये। बालिका को यात्रा शुरू से आख़िर तक त्योहार-सा लगी। पिता सारे रास्ते उसके साथ खेलता रहा, पर मां,

न जाने क्यों, उदास रही : अपने पुराने, आरामदेह आशियाने को छोड़कर जाने का अफ़सोस था या युद्ध के निकट आने की अनुभूति, कोई बता नहीं सकता ...

माय्या को वन के रास्ते से कार में सनोबरों से विदा लेते हुए यात्रा करने में बहुत आनन्द आया : हमें भूलना नहीं, प्यारे सनोबरो! प्लेटफ़ार्म पर पिता को अपने साथियों से विदा लेते हुए देखना भी कितना आनन्ददायक था। सांवला मुग़ानवासी उन लोगों में सबसे लम्बा और सुगठित था। पीछे छूटते जा रहे वनों, खेतों और गाँवों को देखते हुए उसका दिल बाग़-बाग़ हो उठता था।

लेनिनग्राद में भी वे आराम से रहे। माय्या पहली कक्षा में पढ़ती थी और उसे अपने स्कूल की कापियों में पांच में से पांच अंक मिलने पर गर्व होता था। लेकिन एक साल भी न बीता था कि युद्ध छिड़ गया।

युद्ध का आरम्भ भी जैसा कि माय्या को लगा, बहुत ही दिलचस्प था : बालिका को अच्छे कपड़े पहनाये गये, उसके बालों को सुन्दर ढंग से कंघी करके बड़े-से गुलाबी फ़ीते से बांध दिया गया, लेकिन उसे नववर्ष समारोह में या थियेटर में नहीं बल्कि फ़ोटो-स्टूडियो में ले जाया गया। वहां वह अपनी मां की बढ़िया पोशाक को मसोसती उसके घुटनों पर बैठी रही, जब कि पिता चर्रमर्र करती पेटियों में कसी अपनी नयी वर्दी में माय्या का हाथ पकड़े खड़े थे। फ़ोटोग्राफ़र के "मुस्कराइये" कहने पर न पिता के चेहरे पर उल्लासपूर्ण मुस्कान आ सकी, न ही मां के। फिर भी माय्या का चेहरा खिला हुआ था।

पिता वह फ़ोटो बिना देखे उसी शाम को मोर्चे के लिए रवाना हो गये। और शरत् में जब स्कूल में पढ़ाई शुरू हुई, मां को सन्देश मिला, वह रो पड़ी, मुंह के बल सोफ़े पर गिर पड़ी और उसने माय्या को कहा कि उसके पिता नहीं रहे हैं।

"तुम मत रोओ, मां, मत रोओ," माय्या उसको सान्त्वना दिलाने लगी। "पापा जल्दी ही फ़ासिस्टों का ख़ात्मा करके वापस लौट आयेंगे! और अपनी जुर्राबें मैं ख़ुद रफ़ू कर लूंगी, तुम बस रोओ मत..."

लेकिन पिता नहीं लौटे। मां दिन-रात अस्पताल में रहती, शत्रु के वायुयान शहर पर अग्नि-बम बरसाते, शहर में जगह-जगह आग भड़क उठती, ऐसे में एक दिन माय्या को रेल्वे-स्टेशन ले जाया गया। वहां पीठ पर सामान की बोरियां बांधे और हाथों में पोटलियां लिये बहुत-से बच्चे

थे, रो रही माएं बड़ी मुश्किल से मुस्कराकर उनकी तरफ़ देख रही थीं। डब्बे में मां ने माय्या को बर्थ पर बिठाकर उसे वह फ़ोटो दिया और बोली :

"संभालकर रखना, बेटी! यह तुम्हारे लिए मां-बाप की आख़िरी निशानी है।"

गाड़ी चल दी, मां प्लेटफ़ार्म पर रह गयीं, यह इतना भयानक लगा कि रुलाई से माय्या का गला रुंध गया, वह खिड़की के शीशे पर घूंसे मारने लगी। उधर मां डब्बे के पीछे भागती हुई चिल्ला रही थी :

"मत रो, मेरी आंखों के नूर, हम मिलेंगे!"

रेलगाड़ी लेनिनग्राद के बच्चों को लेकर कज़ाख़स्तान पहुंच गयी। माय्या ने वहां पढ़ाई जारी रखी और जब वह छठी कक्षा में थी, युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन लेनिनग्राद से उसे मां का कोई समाचार नहीं मिला।

युद्ध के बाद उसे कीरोवाबाद ले जाया गया, वहां वह अनाथालय में रही, उसने हाई स्कूल पास किया और उसके बाद कृषि संस्थान में प्रवेश ले लिया।

वह फ़ोटोग्राफ़ – मां-बाप की आख़िरी निशानी – उसकी किसी यात्रा में खो गया।

६

गराश सांस लेकर माय्या के पास गया।

"जल्दी आओ, जल्दी!" तख़्त पर माय्या के पास लेटी पेरशान ने उससे कहा। "भाभी कितना दिलचस्प क़िस्सा सुना रही है!"

पेरशान ने गराश को तख़्त पर बिठाकर चारों ओर गुदगुदे तकिये लगा दिये।

"क़िस्सा किस बारे में है?"

"मेरी ज़िन्दगी के बारे में," माय्या ने खिन्न मुस्कान के साथ कहा। "तुम उसे बहुत पहले सुन चुके हो..."

"इस वक़्त बात किसी और ही के बारे में हो रही है," पेरशान ने मुस्कराते हुए उसे टोक दिया। "कि मैं शादी करूं या बुढ़ापे तक बिना ब्याह किये तुम्हारे आसरे बैठी रहूं।"

"शादी, शादी..." सकीना ने किसी तरह माय्या का ध्यान बंटाने के लिए बेटी को चिढ़ाया। "मुझे तो उस ससुर पर रहम आता है, जिसके

घर में ऐसी नटखट बहू जायेगी! अक़्लमंद मर्द तो तुम्हें अपने घर के पास भी नहीं फटकने देगा..."

"भाड़ में जायें सारे दूल्हे!" पेरशान कह उठी। "मैं उनके बिना भी ज़िन्दा रह लूंगी! और अगर मैंने शादी की, तो किसी अकेले से करूंगी, ताकि कोई ससुर मेरी खिल्ली न उड़ा सके!"

माय्या डबडबाती आंखों से मुस्करा दी और गराश की तरफ़ देखकर बोली:

"मेरा कोई भाई होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम्हारी उससे शादी कर देती! तुम अच्छी हो, बहुत अच्छी हो।"

"अरे, भाई नहीं है, तो क्या हुआ, किसी जान-पहचानवाले को ही खोज दो," पेरशान हंस पड़ी। "बस ससुर नहीं होना चाहिए! यह मेरी पहली शर्त है। और शादी जल्दी से जल्दी तय करवाओ!"

"ख़ानम, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" गराश ने आश्चर्य से पूछा। "अभी-अभी तो तुम क़सम खा रही थीं कि बुढ़ापे तक कुंआरी बैठी रहोगी।"

"अरे, हां, तुम्हारे जैसा बुद्धू हो, तो उससे कभी शादी न करूं!" पेरशान ने मज़ाक़ में कहा।

"लगता है, सब ठीक हो गया है," सकीना ने राहत की सांस लेकर सोचा, पल्ले के किनारे से नम आंखें पोंछीं और खाने के कमरे में चली गयी।

मेज़ पर रुस्तम बैठा था, थुलथुल, ग़ुस्से में, जब कि सलमान दरवाज़े के पास खड़ा था।

"यानी कल शाम को टोली-नायकों को जमा करके दुबारा वसन्त की बोवाई की तैयारी की रिपोर्ट सुनेंगे। हां, और यह ध्यान रखना कि लेखा-परीक्षक सुबह ही पशुपालन फ़ार्म के लिए रवाना हो जायें," रुस्तम कह रहा था।

"जो हुक्म। और क्या हुक्म है?"

"अभी बस इतना ही। अब जाओ।"

सलमान ने रुस्तम और सकीना को सिर नवाया—सकीना ने जवाब में बेरुख़ी से सिर हिलाया—और बाहर निकल गया।

रुस्तम ने पत्नी को जैसे देखा ही नहीं, वह एकाग्रचित्त हो, आराम से, बिना आंखें उठाये पाइप साफ़ करने लगा, जब कि सकीना इन्तज़ार

कर रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्वर में बोली:

"वाह, कीशी, तुम्हारे मुंह से ऐसी चुभती बात निकली कैसे!"

"तुम्हें चाहिए था कि बहू को तहज़ीब सिखातीं। तभी ठीक रहेगा। उसे सलीक़े से पेश आना चाहिए। हमारे घर में अपने तौर-तरीक़े हैं। अगर वह उन्हें नहीं मानना चाहती, तो जहां मर्ज़ी हो जा सकती है!"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है बहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"ग़ैर लोगों के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना—तुम्हारे ख़्याल में यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस बरस पहले जवान रुस्तम ने, कीशी ने नहीं, सिर्फ़ रुस्तम ने सागबाड़ी में सब ईमानदार लोगों के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनों की बौछार कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत में कुछ नहीं समझेगा... कीशी!

"वे जवान हैं, उनका ख़ून ज़ोर मारता है, अगर वे ग़लती करते भी हैं, तो उन्हें माफ़ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कीशी, अपनी ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक़्त आया है। हमें किसने हक़ दिया है मामूली-सी बातों के लिए इनकी ज़िन्दगी में ज़हर घोलने का? हमारा फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढ़ों का फ़र्ज़ है, पर कोई क्या करे। अगर हमारे घर में लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये, तो बेटा-बहू हमसे नाता ही तोड़ लेंगे।"

"तोड़ लें—उन्हीं का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्पणी की। "दोज़ख़ ख़ुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं। घोड़ी रास्ते में नाल खो दे, तो चलने में दर्द तो उसी को होगा, रास्ते को इससे क्या!"

१०

गराश की नीन्द सुबह जल्दी खुल गयी। कमरे में धुंधली रोशनी थी, कोहरे में लिपटी मुग़ान के ऊपर पौ फटनी ही शुरू हुई थी।

उसने सिर के पीछे दोनों हाथ रखकर अंगड़ाई ली और सोचा कि आज बड़े खेत में जोताई शुरू हो जायेगी। शराफ़ोगलू ने उसकी टोली को

लगभग सौ हेक्टेयर ज़मीन को दुबारा जोतने का काम सौंपा था। लेकिन उसमें तो जाड़े की फ़सल के अंकुर फूट भी चुके हैं, फिर भी न जाने क्यों उस भूखण्ड को वसन्तकालीन जोताई की योजना में शामिल कर लिया गया है... ख़ैर, शामिल कर ही लिया गया है, तो यही सही, यह तो ऊपरवालों का काम है। ट्रैक्टरचालकों को तो जल्दी योजना, अपना कोटा पूरा करना चाहिए, उसकी अधिपूर्ति करनी चाहिए और पेट्रोल की बचत करनी चाहिए।

उसे बीती शाम, माय्या का क़िस्सा और सकीना के शब्द याद हो आये, जो उसने खड़े-खड़े दरवाज़े की ओट में सुने थे: "दुःखी मत होओ, बेटी, मुझे हमेशा के लिए अपनी मां की जगह समझो!"

लेकिन जब नवविवाहित अकेले रह गये और रुस्तमोव ख़ानदान का घर ही नहीं, सारा गांव रात्रि की नीरवता में डूब गया, माय्या ने व्यथित स्वर में पति से पूछा:

"आख़िर इन सब बातों का नतीजा क्या निकलेगा?"

गराश ने सिर झुका लिया, कोई जवाब नहीं दिया, हालांकि उसे यह स्पष्ट हो चुका था कि पिता से अलग होकर अपना घर बनाने का समय आ गया है।

वह बिना आवाज़ किये कपड़े और जुर्राब पहन, ताकि पत्नी कहीं जाग न जाये, बरामदे में निकल गया, वहां उसने बूट पहने और अलमारी से रोटी, पनीर और मक्खन निकाल लिये। वह यह सोचता हुआ सीढ़ियों से पंजों के बल उतरा कि घर में सब सो रहे हैं, लेकिन अहाते में निकलने पर अचानक पिता को देखकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठा।

उसका पिता नीचे पहनी जानेवाली कमीज़ और मुलायम जूते पहने सोच में डूबा धूसर आकाश को ताकता अहाते के बीचोंबीच खड़ा था, बिना बनी दाढ़ी के सफ़ेद बाल चमक रहे थे।

रुस्तम लगभग पूरी रात नहीं सो पाया। शुरू में तो उसे तकिये पर सिर रखते ही झपकी आ गयी, पर अचानक किसी ने उसका कंधा पकड़ा और झंझोड़कर जगा दिया। रुस्तम करवटें बदलता रहा, उठता, पानी पीता, कमरे में चहलक़दमी करता और फिर लेट जाता, लेकिन उसकी पलकें फिर न लग सकीं।

जिसने उसे जगाया, वह कठोर स्वर में बोला: "तुम्हें सोने का हक़

नहीं है। तुम्हें अपनी ज़िन्दगी और क़िस्मत के बारे में सोचना चाहिए।" "आख़िर मुझे सोने का हक़ क्यों नहीं है?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "मैं ईमानदार आदमी हूँ, मैंने कभी चुराई हुई रोटी नहीं खायी, मेरी सारी ज़िन्दगी मेहनत करते और चिन्ता करते बीती है।" "हां, तुम चोर नहीं हो," उसके अदृश्य सम्भाषी ने उसके साथ सहमति व्यक्त की। "लेकिन यह काफ़ी नहीं है। तुम्हें लोगों से बिलकुल प्यार नहीं है। तुम्हारा दिल पत्थर का-सा हो गया है। लोग तुमसे कतराकर निकल जाने की कोशिश करते हैं।" "नहीं, मुझसे सिर्फ़ वही कतराता है, जिसके मन में मैल है।" "झूठ है। माय्या के मन में ज़रा भी मैल नहीं है। कहीं चरवाहा केरेम तुम्हारा अध्यक्ष का पद तो नहीं संभालना चाहता?" "अगर लेखा-परीक्षण से यह सिद्ध हो गया कि वह निर्दोष है, तो मैं सबसे पहले उससे हाथ मिलाऊंगा। बहू की बात कुछ और ही है..." "लेकिन तुमने ख़ुद देखा था: केरेम की पत्नी बीमार है, बच्चे गंदगी में और ठण्ड में बिना संभाल के जी रहे हैं। आख़िर इसमें उनका क्या दोष है? अगर तुम्हारी पेरशान, तुम्हारी लाड़ली, तम्बू में फटे गद्दे पर ऐसे ही बेहोश पड़ी होती? अब तुम घबराये न?.."

रुस्तम भोर होने तक अदृश्य जासूस से बहस करता रहा, जिसे उसके जीवन की मामूली से मामूली बातें और मन में छिपे गुप्त से गुप्त विचार तक अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से मालूम थे, और जब खिड़कियों में उजाला हुआ, वह रज़ाई एक ओर पटककर अहाते में निकल आया। उसे यह रात भर कौन धिक्कारता रहा है? उसका अन्तःकरण?

काठ की सीढ़ियां चरमराने लगीं, गराश नज़र आया, उसने जाने-पहचाने ढंग से आदरपूर्वक पिता के साथ दुआ-सलाम की।

"मैं तुम्हारा इन्तज़ार ही कर रहा था," रुस्तम ने कहा और सफ़ेद परोंवाले भयभीत चूज़े का पीछा कर रहे रंगबिरंगे मुर्ग़े की ओर इशारा करके बोला: "आज शाम को ही इस लड़ाके को काटकर देग में चढ़ा देना! चूज़ों की नाक में दम कर दिया इसने, छोटे मुर्ग़ों की कलगियों को चोंच मार-मारकर लहू-लुहान कर दिया। पक्का बटमार है।"

बेटे ने संक्षेप में कहा: "जी, ठीक है," उसने बड़ी ख़ुशी से नुकीले पंजों रूपी बरछियों और कलगी रूपी जंगी टोप से लैस योद्धा को शू करके दूर भगा दिया:

"मौत आ जाये तुझे!.."

गराश ने देखा कि पिता कुछ कहना चाहता है। लेकिन पूछने का क़ायदा नहीं है, उसे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

और सचमुच रुस्तम ने यूं ही कह दिया:

"गाड़ी लेकर ज़रा स्तेपी में चले जाओ। केरेम की बीवी बीमार है, उसे अस्पताल पहुंचा दो।"

गराश को चाहिए था कि पिता को याद दिला दे कि एक घंटे में जोताई शुरू होनेवाली है, लेकिन उसने चुपचाप शेड की चाबी ले ली, जिसमें मोटर खड़ी थी।

नौवाँ परिच्छेद

१

"तेल्ली चाची, कुछ गा दो, ऐसा कि दिल ख़ुश हो जाये!" पेरशान ने अनुरोध किया।

चाची ने जवाब भी नहीं दिया, कुरते का किनारा उठाकर स्कर्ट में उड़स लिया और काम-काजी लहजे में गिज़ेतार से पूछा:

"कहां से शुरू करें, उपटोलीनायिका?"

वह अध्यक्ष की बेटी को यह स्पष्ट कर देना चाहती थी कि खेत में वे काम करने आयी हैं, न कि दिल बहलाने।

"जहां उगते सूरज की किरणें पड़ रही हैं, वहीं से शुरू करते हैं!" गिज़ेतार ने क्षितिज से खिसकते आ रहे और अपनी स्वर्णिम, पर अभी तक प्रखर न हुई किरणों से मुग़ान के विशाल वक्ष को आलोकित कर रहे आग्नेय-लोहित सूरज की तरफ़ देखकर कहा।

रंगबिरंगी छींट के कुरते पहने हुई लड़कियों ने बेलचे संभाल लिये और नालियों के किनारे-किनारे ज़मीन खोदने लगीं, जहां से ट्रैक्टर नहीं निकल सकता था।

पेरशान काम करते हुए भी चुप नहीं हुई:

"तेल्ली चाची, तुम्हें ज़मीन खोदना भला शोभा देता है! तुम्हें तो शायर होना चाहिए था – कंधे पर साज़ लटकातीं और गांव-गांव घूमकर गीतों से लोगों का दिल ख़ुश करतीं।"

"मेरा ज़माना तो गुज़र गया," चाची बुदबुदायी। "मैं बुढ़ा गयी हूँ, और दुनिया मुझे चैन से नहीं जीने देती है।"

पेरशान ने बेलचा ज़मीन में गाड़ दिया और भागकर चाची के पास पहुंच उस पर चुम्बनों की बौछार कर दी।

"इनकार मत करो मुझे, गा दो न!"

"छोड़ो भी। मेरा दिल दुख रहा है..."

तेल्ली चाची उपटोली में सबसे बड़ी थी, लड़कियां उसका आदर करती थीं, अपना सुख-दुःख उसके साथ बांटती थीं, वह उन्हें हमेशा बुद्धिमत्तापूर्ण सलाहें दिया करती थी, जो सच कहा जाये, बहुत कम मानी जाती थीं। जब वह प्रसन्न होती, तो लड़कियों को रोचक क़िस्से-कहानियां सुनाकर उनका दिल बहलाती थी और साथ ही यह भी अवश्य जोड़ देती थी कि वह उन्हें मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि नसीहत के तौर पर सुनाती है।

चाची की ज़िन्दगी आसानी से नहीं कटी थी, लेकिन उसे इतना उदास किसी ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। लड़कियों से रहा न जा सका, वे बेलचे पटककर तेल्ली को घेरकर खड़ी हो गयीं और पूछने लगीं कि क्या हुआ।

"बेहतर होगा मत पूछो।" चाची ने रंग उड़े रूमाल के कोने से आंखें पोंछीं। "मेरे बच्चे," वह काली दाढ़ीवाले अपने बेटे केरेम को बच्चा कहती थी, "की हालत बहुत बुरी है: बीवी बीमार है, बच्चों की संभाल नहीं हो पा रही है। छोटी-सी गाराग्योज़ जुड़वां बच्चों को कैसे संभाले?"

"दिल छोटा मत करो, चाची। तुम चाहो, तो अब्बा से कह दूं – वह गाड़ी भिजवा देंगे, बच्चों को गांव ले आयेंगे... चाहो, तो ख़ुद उन्हें लिवाने चली जाओ?" पेरशान ने सुझाव दिया।

तेल्ली चाची भड़क उठी:

"कहते हैं: जिस गांव जाना नहीं, उसका रास्ता क्या पूछना!... मैं तुम्हारे अब्बा से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती! बच्चे पर इतनी मुसीबत आयी है, और उसने पशुपालन फ़ार्म का लेखा-परीक्षण कराना तय किया है। मेरा बेटा कभी सामूहिक फ़ार्म के माल पर दांत नहीं गड़ा-

ता! एक क्या, सौ जांच-समितियां जांच करें, तो भी उन्हें कोई ग़लती नहीं मिल पायेगी!"

चाची के शब्द पेरशान को चुभ गये। वह अपने पिता पर दोषारोपण का साहस नहीं कर सकती थी। उनका पद ही ऐसी ज़िम्मेदारी का है। अपने अधीनस्थ की जांच क्यों न करें? इसका मतलब है, कोई न कोई गम्भीर बात है... पर उसे चाची पर भी दया आ रही थी। और पेरशान भौंहें सिकोड़े काम में जुट गयी। अन्य लड़कियों ने भी अपना-अपना बेलचा उठा लिया।

एक घंटे बाद जब सूरज काफ़ी ऊपर चढ़ गया, थकी हुई लड़कियों ने नाली के किनारे तिरपाल बिछा लिया और उस पर आराम करने लेट गयीं। कोई रोटी चबाती हुई बोतल से दूध के घूंट पी-पीकर गले के नीचे उतार रही थी, कोई झपकी लें रही थी, कोई गीत गुनगुना रही थी... पेरशान ने किनारे पर लेटकर अंगड़ाई ली और हाथ सिर के नीचे रखकर आंखें मूंद लीं। उसे बुरा लगा कि तेल्ली ने उसके पिता के बारे में इतनी द्वेषपूर्ण बातें कहीं। पेरशान, निस्सन्देह, स्वयं भी अकसर पिता से नाख़ुश रहती थी, पर उसका विचार था कि उसकी आलोचना करने का अधिकार केवल उसे अकेली को ही है, वह भी अपने घरवालों के बीच।

दूर से आती मोटरों का शोर सुनाई दिया, खोदी हुई ज़मीन के टुकड़े को क़दमों से नाप रही गिज़ेतार ने हथेली की ओट से स्तेपी की तरफ़ देखा।

"कहीं जांच-समिति हुई तो? उठो, उठो!" तेल्ली चाची चौंक उठी। "नहीं तो शेरज़ाद को झिड़की पड़ जायेगी!" और उसने सबसे पहले उठकर बेलचा संभाल लिया।

हालांकि जांच-समिति के लिए निरीक्षण करने को वहां अभी कुछ नहीं था, लड़कियों ने गिज़ेतार के इशारे पर एक साथ अपने-अपने बेलचे संभाल लिये।

खेत के दूसरे छोर पर, जहां से राजमार्ग निकलता था, दो 'पोब्येदा' व एक 'मस्क्विच' कारें दिखाई दीं। कुछ लोग मोटरों में से निकलकर खोदे हुए टुकड़े के पास आये। गिज़ेतार ने आंखों पर पूरा ज़ोर देकर देखा और उनमें सुगठित शेरज़ाद को पहचानकर ठहाका मारकर हंस पड़ी।

"वहां सचमुच टोली-नायक मौजूद है! तुम, तेल्ली चाची, उसे कैसे पहचान गयीं? लगता है दिल से दिल को ख़बर मिल जाती है!"

लड़कियां मुंह पर रूमाल दबाकर हंस पड़ीं, पर पेरशान ने नटखट मुस्कान के साथ कहा:

"तुमने भी ख़ूब कही! चाची तो बस टोली-नायक का भला करके बोनस पा लेना चाहती हैं..."

चाची ने झल्लाकर थूक दिया – कैसी बातूनी है! – उसने पूरी ताक़त से बेलचा ज़मीन में गड़ाकर मिट्टी का बहुत बड़ा ढेला उलट दिया, उसे हाथों से तोड़ दिया और केवल इसके बाद तनकर बोली:

"हां, भला करना चाहती हूं! मैं नहीं छिपाती। लेकिन तुम्हें इससे क्या? लड़का बहुत भला है, अक़्लमंद है, एक नज़र में लड़कियों के दिल जीत लेता है! अगर मैं दसेक साल छोटी होती, तो तुमसे उसे छीन लेती..."

पेरशान ने तिरस्कारपूर्वक कहा:

"बड़ी ख़ुशी से! ले लो इस हीरे को, कोई आंसू नहीं बहायेगा।"

चाची ने सिर हिला दिया।

"अरी, इससे बेहतर तुम्हें कहां मिलेगा, अंधी ख़ानम? बाप जैसा तो तुम्हारे कोई पल्ले नहीं पड़ेगा। चुनने में नख़रे करोगी, तो कुछ हाथ नहीं आयेगा। वसन्त के फूल जैसा ख़ूबसूरत लड़का है! और उसका स्वभाव कितना अच्छा है! उसका मन शीशे-सा साफ़ है। ऐसे आदमी को प्यार हो जाये, तो बीवी को हाथों में उठाये फिरे..."

लड़कियां लगन से खोदती रहीं, पर धीरे-धीरे हंसती हुई कानाफूसी भी करती रहीं।"

"अरी, चाची, अगर तुम दिल के सारे मामलों में दख़ल रखती हो, तो फिर पन्द्रह बरस से विधवा क्यों बैठी हो?" पेरशान भी पीछे नहीं रही।

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं, बात बदलो मत, अध्यक्ष की बेटी!" चाची ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया। "देखो, कहीं बाप ऐसी नख़रीली बेटी को सपाट सलमान के पल्ले न बांध दे: कहेगा यही तुम्हारा दूल्हा है।"

पेरशान सकपका गयी, वह मुंह बाये खड़ी रह गयी, उधर गिज़ेतार ने भी अपनी सखी को नहीं बख़्शा और आग में घी डाल दिया:

"सलमान आख़िर किस मामले में बुरा है? मर्द तो मर्द ही होता है..."

"जहन्नुम में जाये वह!" तेल्ली चाची ने कराहकर कहा। "मर्द नहीं, राब की मशक है!"

"मैं ग्रापकी बात नहीं मान सकती, चाची। यह सच है कि पहले वह चिकनी-चुपड़ी बातें करता था, पर उपाध्यक्ष के पद पर ग्राकर तो शायद रुस्तम-कीशी से भी ज़्यादा प्रभावशाली हो गया है," गिज़ेतार ने गम्भीरतापूर्वक प्रतिवाद किया, पर उससे रहा न जा सका ग्रौर वह खिल-खिलाकर हंस पड़ी।

जब कि चाची सीने पर मुक्का मारकर ग़ुस्से में कह उठी:

"मैं कभी विश्वास नहीं कर सकती कि कोई टेलीफ़ोन के पास कुरसी रखकर बैठने पर बदल सकता है!.. उसकी मुस्कान भले ही खिले गुलाब-सी रहे, पर मैं पहले भी कहती थी ग्रौर ग्रब भी कहती हूँ: वह ढोंगी है! ग्रौर मर्द की हैसियत से तो वह फूटी कौड़ी का भी नहीं है, इसमें तुम्हें कोई शक नहीं होना चाहिए!"

लड़कियों के हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये, ग्रौर ग्रगर सख़्त गिज़ेतार न होती, तो वे काम छोड़कर बैठ जातीं।

उधर पेरशान ढेले इधर-उधर उछटाती पूरी लगन के साथ ज़मीन खोदे जा रही थी, उसके धूप में सांवले हुए शक्तिशाली हाथों में बेलचा बड़ी तेज़ी से चमक रहा था, माथे से खारे पसीने की धारें बह रही थीं; वह बिना कमर सीधी किये ग्रास्तीन से चेहरा पोंछ रही थी। वह जानती थी कि तेल्ली चाची को ग्ररसे से सलमान फूटी ग्रांख नहीं सुहाता था पर फिर भी उसके बारे में इस तरह की बातें करने का उसे क्या हक़ है! उसका बुद्धिमान पिता कभी किसी कपटी ग्रादमी को ग्रपना सहायक नहीं बना सकते – पेरशान को इसका पूरा विश्वास था।

फिर भी ग्रजीब बात है कि हालांकि सलमान बराबर लोगों का भला करता रहता है – उन्हें ग्रग्रिम राशि दिया करता है, छुट्टी के प्रमाणपत्रों पर भी हस्ताक्षर कर देता है, ताकि कोई गृहणी बाज़ार हो ग्राये, चूल्हों के लिए ईंटें भी दे देता है, फिर भी सामूहिक किसानों में ज़ोरदार ग्रफ़वाहें उड़ती रहती हैं कि लेखापाल चारसौबीसी करता है।

रुस्तम ऐसी बातों के लिए बिना सोचे-विचारे ईर्ष्यालुग्रों को दोषी ठहराता था।

एक उससे ईर्ष्या कर सकता है, दो कर सकते हैं – यह पेरशान स्वीकार करती थी, पर तेल्ली चाची को उससे क्यों ईर्ष्या होने लगी?

उसके हाथों में मेहनत करते-करते घट्ठे पड़ गये हैं, वह हर साल मुग़ान की ज़मीन पर कपास की खेती करती है ग्रौर उसे सलमान के पद को लेने की लालसा भी नहीं है।

पेरशान हर मामले में पिता पर विश्वास करने की ग्रादी हो चुकी थी। वह उससे लड़ लेती थी, ग्रकसर रूठती रहती थी, लेकिन उस पर विश्वास वह ग्रपनी मां से भी ज़्यादा करती थी। पेरशान उन लोगों को प्यार करती थी, जिनका पिता ग्रादर करता था ग्रौर उनसे घृणा करती थी, जिनसे वह दिल से नफ़रत करता था। लेकिन सकीना ग्राख़िर यूं ही तो सलमान को बरदाश्त नहीं कर पाती है, फिर गराश की भौंहें भी उसे ग्रपने घर में देखते ही सिकुड़ जाती हैं...

पेरशान सोच में इस तरह डूब गयी कि उसे फ़ौरन पता न चल सका कि चाची कब बेलचे का सहारा लेकर ग्रपना ग्रभी-ग्रभी रचित गीत गा उठी:

वह उतरता ग्राता है नीचे की तरफ़ रेवड़,
ज़ोर-ज़ोर मिमियाता ग्रा रहा है परवत से।
बेवफ़ा से करती हो दोस्ती ग्रगर तो फिर
बच नहीं सकोगी तुम, जान लो, मुसीबत से!

पेरशान ग़ुस्सा हो उठी:

"ग्ररी, तेल्ली चाची, ग्राख़िर मेरे ग्रब्बा तुम्हें फूटी ग्रांखों भी क्यों नहीं भाते हैं?"

"तुम ख़ुद ग्रंदाज़ लगाग्रो। मेरे पास ग्रोहदा कोई नहीं है, – यानी मुझे हटाकर वह दूसरे को नहीं लगा सकता। मैं धोखाधड़ी नहीं करती, – यानी मुझे ताना वह नहीं दे सकता। केरेम को काम से हटा सकता है? ख़ुदा सेहत बख़्शे तुम्हें, चाचा, हम भूखों नहीं मरेंगे। वह सारी ज़िन्दगी चरवाहा रहा है, चरवाहा ही रहेगा। रुस्तम ने कभी मेरा बुरा नहीं किया है ग्रौर कर भी नहीं सकता। ग्रौर मैं उसे पसंद इसलिए नहीं करती, क्योंकि वह लोगों से दूर हो गया है, उन पर रहम नहीं करता, उनका ख़याल नहीं रखता! ग्रौर सपाट सलमान को उसने बेकार ग्रपना नज़दीकी बना लिया है, यह बात गांठ बांध लेना, लड़की!" ग्रौर तेल्ली ने ग्रर्थपूर्ण मुद्रा में होंठ भींच लिये।

"कौन-सी बात गांठ बांध लूं?" पेरशान ने खीजकर पूछा।

"यही कि सलमान अपने हितकारी की बहू को अपने घोड़े पर सवारी कराता है, उसके सामने इठलाता है... यही बात गांठ बांध लो!"

पेरशान बेलचा ज़मीन पर पटककर द्वेषपूर्ण विनम्रता से बोली:

"छि-छि! पके बालोंवाली औरत, दादी होते हुए भी सारे गांव में अफ़वाहें फैलाती रहती हो! तुम्हारी जैसी औरतों के कारण ही बेचारा शेरज़ाद नृत्य-मण्डली नहीं बना पा रहा है। लड़के और लड़की के घेरे में आकर एक दूसरे का हाथ थामने की देर है कि झूठी-सच्ची बातें फैलना शुरू हो जाती हैं। तुम्हारे ख़याल से लड़की हलवा है क्या, जो कोई उसे झट से गटक जायेगा?.."

सहेलियों ने उत्साहपूर्वक पेरशान का समर्थन किया। अगर वे पहले चाची से सहानुभूति दिखाती थीं और अध्यक्ष की बेटी का मज़ाक़ उड़ाती थीं, तो अब सब पेरशान का पक्ष लेने लगीं:

"बिलकुल ठीक कहा, पेरशान, बिलकुल ठीक!"

"तेल्ली सरीखी औरतों के कारण लड़कियां अपने सगे भाई के साथ गांव में निकलते डरती हैं – फ़ौरन बुराई शुरू हो जाती है!"

"हमारे हाथ-पांव डर की ज़ंजीर में जकड़े हुए हैं!.."

गिज़ेतार भी बोल उठी:

"और तुम अपनी ज़ंजीरें तोड़कर फेंक दो। बनाने दो बातें लोगों को, जब तक उनकी ज़बानें कतरनी-सी चलती हैं! हां, पर और बातों के अलावा अपने काम के बारे में मत भूलो!" उसने ऊंचे स्वर में कहा।

लड़कियां कुछ चुप हो गयीं, पर उनमें से सबसे तेज़ से न रहा गया और वह कटु स्वर में बोली:

"नजफ़, बेशक, किसी की बात सुनने को तैयार नहीं होगा!.. लेकिन ऐसे पति भी हैं, जो पत्नियों को घर में बंद करके सताने लगेंगे: तुमने फ़लां से बात क्यों की, फ़लां को देखकर क्यों मुस्करायी, फ़लां के साथ-साथ क्यों चल रही थीं? और ग़ुस्सा बढ़ जाये, तो बिना किसी वजह पीट ही डाले!"

"तुम भी उसे मुंहतोड़ जवाब दो, मुंहतोड़ जवाब!" गिज़ेतार ने चिल्लाकर कहा। "दांत उखाड़ डालो, फिर काटना ही बंद कर देगा। मुझे कभी ऐसी औरत पर दया नहीं आयेगी, जो मार-पीट सहती रहती है!"

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़ंत बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है: उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से ख़ुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ-साथ घोड़े पर आ रहे थे... फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे ज़ोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन लें, कहा:

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफ़वाहें फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आख़िर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोड़ी पर जा रहे थे!" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफ़वाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली, "मैं तो जिस भाव ख़रीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामेद बता रहा था... तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फ़ार्म से आ रहे थे। लेकिन फ़ार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिज़ेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो ग़ैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से ज़मीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फ़सल के टुकड़े पर घूमते अपरिचित लोगों की ओर भी नज़र उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरज़ाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरज़ाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हाल की हार का बदला लेने के इरादे से कह उठी:

"अध्यक्ष की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूलों जैसे लाल हो उठे हैं। आख़िर किस कारण से?"

"अरी, चाची!" पेरशान ने खीजकर कहा। "तुम्हें ख़ुद तो टोली-नायक से प्यार है, और हम बेचारियों पर छींटे उछाल रही हो!"

तेल्ली चाची सीने पर आड़े हाथ रखकर किसी त्योहार में अपनी रचना सुना रहे शायर की तरह ज़ोर से गा उठी:

बाग़ में सेबों के पेड़ों पर फूल खिलते हैं,
फल इन के सब को ही नया जीवन देते हैं।
कितनी धधकती है यह तेरी चंचल नज़रें,
इन के इशारे दिल को कितना छू लेते हैं!

शेरज़ाद ने चेहरे से ज़ाहिर ही नहीं होने दिया कि उसने वह गीत सुना, ज़िन्दादिली से सबसे दुआ-सलाम करके पूछा कि खाद देने का काम कैसा चल रहा है।

पेरशान ने सहेलियों को आंख मार दी और अबोध बाल-सुलभ स्वर में बोली कि वे खाद के बारे में तो भूल ही गयीं।

टोली-नायक का चेहरा उतर गया।

"बहुत अच्छे!" शेरज़ाद की आवाज़ में खनक गूंज उठी। "आख़िर हम प्रतियोगिता में जीतेंगे कैसे?"

"जीतने की जरूरत ही क्या है? बिना जीते भी तो काम चल सकता है!" पेरशान की आंखें भोली-भाली हो उठीं। "फिर इतने-से टुकड़े का महत्त्व ही क्या है? बिना खाद के भी कुछ न कुछ उग आयेगा! आपको क्या हो गया है, कामरेड टोली-नायक? आपकी भौंहें सिकुड़ी हुई हैं? आपका मूड बिगड़ गया है?"

"शरारत कर रही है यह, इसकी बात पर ध्यान मत दो, सारे जरूरी काम इसने काफ़ी पहले निबटा लिये हैं," उपटोली-नायक ने शेरज़ाद को तसल्ली दिलाई।

"अनुभवी टोली-नायक कभी पूछता नहीं, ख़ुद देख लेता है कि जमीन में खाद ऐसे ठूंस-ठूंसकर भरी हुई है, जैसे कचौरी में क़ीमा।" पेरशान ने कहा।

आश्चर्य की बात थी—शेरज़ाद को उसके हर तरह के अनगढ़ मज़ाक़ों से ख़ुशी का एहसास होता था। उसने युवती की तरफ़ प्यारभरी नज़रों से देखा और सबको सम्बोधित करके गम्भीर स्वर में बोला:

"कल आपके ज़मीन के टुकड़े में हम नमूने की बोवाई करेंगे। आपकी सारी मुसीबतें मुझ पर पड़ें, ज़रा एक बार फिर से पूरी बारीकी से जांच कर लीजिये। हो सकता है, जांच-समिति यहां भी झांक ले।"

"नहीं, बेटा, नहीं, तुम्हारी सारी मुसीबतें बेहतर होगा इसके सिर पर पड़ें," तेल्ली चाची ने पेरशान की ओर इशारा किया।

वह ज़ोर से ठहाका मारकर हंस पड़ी।

"उफ़, लड़के, यह लड़की तो मतवाली हुई जा रही है!" तेल्ली ने ज़िन्दादिली से कहा। "क़ाबू में ही नहीं आती है, सीधी चट्टान पर चढ़ी चली जा रही है। क्या गांव में कोई ऐसा नौजवान नहीं रहा, जो इसे क़ाबू में कर ले?"

शेरज़ाद खेत से जाने ही वाला था, पर दुविधा में पड़कर रुक गया।

"अरे, ज़रा अपने दोस्तों से ही कुछ बहादुरी उधार ले लो," पेरशान ने चुटकी ली।

युवक अचानक हिम्मत कर बैठा और उसने पेरशान को कंधों से पकड़कर अपनी ओर खींच सभी लड़कियों का जाना-पहचाना गीत छेड़ दिया:

मेरी प्यारी, सुनो, फूल मुरझा गया,
ओस इस पर पड़ी और कुम्हला गया।
हँस पड़ी वह, मेरी बुद्धि ही छीन ली,
आह, गूँजी थी कैसी हँसी यह अभी!

गीत का भावार्थ इतना स्पष्ट था कि पेरशान ने अपने दिल की धड़कनें तेज़ होती महसूस कर आंखें झुका लीं। सहेलियां हंस पड़ीं और सबसे ज़्यादा ज़ोर से—तेल्ली चाची। नाली के उस पार से सलमान की परिहासशील आवाज़ आयी:

"बड़ा अच्छा वक़्त ढूंढ़ा है इश्क़ लड़ाने के लिए, कामरेड टोली-नायक!"

शेरज़ाद ने अपने सुशील स्वभाव के अनुसार उसकी बात को मज़ाक़ में लिया, पर सलमान उसके थोड़ा नज़दीक आकर भी अत्यन्त औपचारिक स्वर में बोलता रहा:

"हां, तो रिपोर्ट करो, काम कैसा हो रहा है? खेत बोवाई के लिए तैयार है?"

और उसने जेब से नोट-बुक निकाली। वह लड़कियों को और उनसे भी ज़्यादा पेरशान को यह दिखाना चाहता था कि वह अब शेरज़ाद से अधिक वरिष्ठ और महत्त्वपूर्ण है।

"रिपोर्ट कब पेश करने का हुक्म दे रहे हैं?" शेरज़ाद ने भी औपचारिक स्वर में पूछा। "वैसे कल पार्टी ब्यूरो में हम लोग बोवाई के बारे में अध्यक्ष की रिपोर्ट सुनेंगे। आपको भी, कामरेड उपाध्यक्ष, इसकी तैयारी करनी चाहिए।"

सलमान चौंककर पीछे हट गया, जैसे किसी ने उस पर हाथ उठा दिया हो और लड़कियों की ज़िन्दादिल हंसी के बीच नाली के किनारे-किनारे चला गया।

तेल्ली चाची ने अपनी बग़लों में ज़ोर से हाथ मारे।

"देखो! क्या होता है टेलीफ़ोनवाली मेज़ पर बैठने का मतलब! किसी ने ठीक ही कहा है: ख़ुदा गंजे को नाख़ून न दे, वरना खुजा-खुजाकर लहू-लुहान हो जायेगा।"

२

सूरज की प्रखर किरणों से गरमायी धरती शीतनिद्रा से जाग उठी। दिन निर्मल व गरम थे, न हवा चल रही थी, न बारिश हो रही थी। जाड़े की फ़सलों के खेत झबरे क़ालीन से ढक गये। रास्तों के किनारों पर, नालियों के तटों पर, जहां-जहां पेटू भेड़ों के क़दम नहीं पड़े थे, घास हरी हो उठी थी।

कुछ सामूहिक किसानों के विचार में उस वर्ष वसन्त जल्दी आ गया था, यानी अनाज व मक्का की बोवाई आरम्भ करने का समय आ गया था, ताकि उसे कपास की बोवाई तक निबटा लिया जा सके। कुछ का विचार था कि सर्दी दुबारा पड़ सकती है, इसलिए जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए।

हर वसन्त में ऐसी बहस छिड़ जाती थी, और कहना चाहिए कि शीघ्र बोवाई के पक्षधरों और उसके विरोधियों—दोनों के ही पास ठोस दलीलें होती थीं।

जल्दबाज़ी की गयी, तो बीजों में अंकुर नहीं फूटेंगे, वे ज़मीन में

गल जायेंगे और दोबारा बोवाई करनी पड़ेगी। दोबारा बोवाई करना इतना कठिन नहीं होता, पर प्रति श्रमदिन का वेतन कितना घट जायेगा!

और अगर देर कर दी गयी, तो इससे भी बुरा होगा: बीज सूखी ज़मीन में बहुत धीरे अंकुरित होते हैं, कपास के पौधे दुर्बल होते हैं, समय पर पुष्पित नहीं होते; तेज़ गरमी पड़ने लगती है, पर बोंड़ियां नहीं खुलतीं, वैसी ही हरी रह जाती हैं। तब टोली की मुसीबत: फ़सल बहुत कम और आय भी।

लेकिन समय पर खाद पड़ी हुई पूर्णतया नम ज़मीन में बोवाई की जाये, तो अभी गेहूं और जौ के पौधे पीले पड़ने भी नहीं पाते हैं कि कपास के पौधों पर बोंड़ियां खुलने भी लगती हैं, श्वेत कपोतों सदृश्य हिमधवल कपास के लोमशी गाले नज़र आने लगते हैं। टोली को मेहनत बहुत ज़्यादा नहीं करनी पड़ती, पर फ़सल बहुत बढ़िया होती है।

शेरज़ाद ने शीघ्र बोवाई के विरोधियों और समर्थकों के विचार ध्यानपूर्वक सुन, बुज़ुर्गों से सलाह-मशविरा कर और मौसम की दीर्घकालिक भविष्यवाणी का अध्ययन कर जोखिम उठाने का फ़ैसला कर लिया—गिज़ेतार की उपटोली के टुकड़े में बोवाई शुरू की जाए।

उसने दो दिन पहले कार्यालय में जाकर अध्यक्ष को अपना इरादा बता दिया था। रुस्तम टोली-नायक से बात करते समय प्रायः मुंह बनाया लिया करता था, लम्बे-लम्बे कश खींचा करता था, इस तरह कि उसकी आंखें ही नज़र नहीं आती थीं। इस बार भी वही हुआ। शेरज़ाद जब तक बोलता रहा, वह ध्यानमग्न मुद्रा में धुआं छोड़ता रहा, लेकिन वह टोली-नायक की बात सुन रहा था या नहीं, कहना मुश्किल था।

"ठीक है, शुरू कर दो," रुस्तम ने अनिच्छापूर्वक अनुमति दी और अपने काग़ज़ात में व्यस्त हो गया।

शेरज़ाद को इच्छा हुई कि अध्यक्ष को झकझोरकर साफ़-साफ़ कह दे: "ऐ, चाचा, आंखें खोलो, मेरी बात की गहराई में जाओ और उसके बाद ही उसे मानो!.." लेकिन वह चुप कर गया। उसने बग़ल के कमरे से शराफ़ोगलू को टेलीफ़ोन करके नजफ़ को बीज बोने की मशीन के साथ ट्रैक्टर लेकर भेजने को कहा।

दो दिन में ज़मीन कुछ सूख गयी थी, अस्सी हेक्टेयर का टुकड़ा तैयार था, एक-एक बीज चुना हुआ था।

शाम को सारे सामूहिक फ़ार्म में ख़बर फैल गयी कि सुबह 'लाल

झण्डा' से मेहमान शेरज़ाद के खेत की जांच करने आ रहे हैं कि अनुबंध की शर्तों का पालन किस तरह किया जा रहा है।

सुबह उमस थी, धुंध छायी थी। नजफ़ सदरी व ऊंचे बूट पहने बीज बोने की मशीन के आस-पास चहलक़दमी करता हुआ लड़कियों को जल्दी करने को कह रहा था। शेरज़ाद ने भुरभुरी नरम मिट्टी मुट्ठी में भर ली।

"लगता है जैसे छलनी में छानी गयी हो! बढ़िया क़िस्म के दलिया जैसी लगती है। हां, तो, लड़कियो, शुरू करते हैं, तुम्हारा हाथ बरकती साबित हो!"

उन्होंने बोरी लाकर बीज पहले बाल्टी में डाले, फिर मशीन की बीज की पेटी में। पेरशान भारी बोरी को तिनके की तरह पकड़े हुए थी। शेरज़ाद मुग्ध हुआ उसकी दक्षता व फुरती और लाल हो रहे चेहरे को देखकर सोच रहा था कि इससे सुन्दर लड़की दुनिया में और कोई नहीं है...

ट्रैक्टर चला ही था कि खेत में अधिकारीगण आ पहुंचे – रुस्तम, सलमान, यारमामेद – और मेहमान कारा केरेमोगलू व अभी तक सुन्दर, सुगठित ज़ैनब कुलियेवा।

"बिलकुल परी की तरह आयी है!" पेरशान ने ठण्डी सांस ली। "कोई सोच भी नहीं सकता कि सामूहिक किसान नारी है। बिलकुल डाक्टर-सी लगती है!"

"ऐ, बेटी, अग़ल-बग़ल मत झांक, बीज बिखर जायेंगे," तेल्ली चाची ने उसे याद दिलाया।

उसी समय सलमान ने भागते हुए खेत के बीच में पहुंचकर हाथ उठा दिया। नजफ़ ने, यह सोच कर कि कोई दुर्घटना हो गयी है, ब्रेक लगा दिये, लेकिन बीज ड्रिल पर खड़ी पेरशान व तेल्ली ने उसे इशारे से बताया कि सब ठीक है, उसने हेंडिल अपनी ओर खींचा, और ट्रैक्टर स्टार्ट हो गया।

"रोको, रोको, मैं क्या कह रहा हूँ!" सलमान चिल्लाया और हाथ हिलाने लगा। "किसने इजाज़त दी है बीज बोने की? बीज बिगाड़ रहे हो?"

उसने सोचा कि टोली-नायक अपनी मर्ज़ी से बोवाई शुरू कर रहा है – यह शेरज़ाद को मेहमानों व पेरशान के सामने नीचा दिखाने का और रुस्तम-कीशी को यह दिखाने का उपयुक्त अवसर है कि इस आदमी पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

रुस्तम वास्तव में भूल चुका था कि वह दो दिन हुए बोवाई आरम्भ करने की अनुमति दे चुका है।

"आपने परसों ख़ुद ही ने तो हां की थी," शेरज़ाद ने उलाहनाभरे स्वर में याद दिलाया।

रुस्तम ने ग़ुस्से-भरी नज़रों से एक ओर देखकर कहा:

"दो दिन पहले हालात कुछ और थे, और अब कुछ और हैं। आसमान पर बादल घिर आये हैं।"

"बिलकुल बादल नहीं हैं!" ट्रैक्टर पर बैठा नजफ़ चिल्लाया।

"घटा घिर आये और बौछार पड़ने लगे, तब सब चौपट हो जायेगा," अध्यक्ष आगे बोला। "इसलिए जल्दबाज़ी मत करो।"

अपनी जीत से मन ही मन प्रसन्न हुए सलमान ने ज़रा ऊंची आवाज़ में कहा:

"ज़रा देखिये तो, कैसा स्वेच्छाचार है!.. भला टोली-नायक की ज़िम्मेदारियों के मामले में इतनी लापरवाही बरती जाती है? रात को कहीं पाला पड़ गया तो?"

बीज ड्रिल के पायदान पर खड़ी पेरशान दुविधा में पड़ गयी थी: टोली की प्रतिष्ठा की ख़ातिर शेरज़ाद का और उदास गिज़ेतार का पक्ष लेने की उसे इच्छा हो रही थी, लेकिन मेहमानों के सामने पिता से बहस करने का साहस नहीं कर पा रही थी।

सबकी मुश्किल ज़ैनब कुलियेवा ने आसान कर दी। उसने आगे निकलकर धीरे से, पर स्पष्ट शब्दों में कहा:

"मार्च ख़तम होने जा रहा है, बोवाई करने में कोई हर्ज नहीं है। अब मुग़ान में पाला कहां पड़नेवाला है! थोड़ी बहुत ठण्ड पड़ सकती है, लेकिन ज़मीन तो जम नहीं जायेगी न!"

"फ़सल के लिए मैं जवाबदेह हूँ," शेरज़ाद ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"और अगर पाला पड़ा तो?" रुस्तम ने पूछा।

"अगले दस दिनों में पाला पड़ने के कोई आसार नज़र नहीं आते... मुझे कैसे पता है? मौसम-विभाग की भविष्यवाणी है!"

रुस्तम ने ठहाका लगाया।

"हम जानते हैं इन मौसम-विभागवालों को! कहते हैं: 'धूप खिलेगी' – समझ लो, बारिश होगी; कहते हैं: 'बारिश होगी' – समझ लो,

चिलचिलाती धूप होगी! बेटे, मैं तुम्हारा मौसम-विभाग हूं, बादलों, हवाओं और सूर्यास्तों को देखते-देखते मेरे बाल सफ़ेद हो गये, आंखें धुंधला गयीं।"

"वाह, कितने ख़ुशक़िस्मत हैं हम!" तेल्ली चाची चिल्लायी। "हमें अब रेडियो और अख़बारों की कोई ज़रूरत नहीं है! हमारा अध्यक्ष हर बात की जानकारी रखता है!"

रुस्तम ने उससे बहस में उलझना पुरुष के लिए उचित नहीं समझा, पर उसने सोचा: "ज़रा ठहर, मैं तुझे अपने सिर के रूमाल से मेरे दरवाज़े के आगे का फ़र्श साफ़ करने को मजबूर करके रहूंगा! .."

"अरे, हम तो दो सौ हेक्टेयर में बोवाई कर चुके हैं," कारा केरेमोगलू ने नम्रता से कहा। "और हम बिलकुल नहीं पछताते हैं। सच पूछिये, तो मैं भी हिचकिचाया, पर," उसने ज़ैनब का हाथ पकड़कर कहा, "इसने हमें आगे धकेल दिया..."

"हां, इस साल हमें काम जल्दी करने पड़ेंगे," ज़ैनब ने कहा, कुछ सोचती हुई मौन रही, फिर आगे बोली: "इन्तज़ार करने में कोई तुक नहीं है। हिम्मत करके काम में जुट जाओ, पड़ोसियो, – पछताना नहीं पड़ेगा।"

"हिम्मत के अलावा थोड़ी अक़्ल की भी ज़रूरत है, अगर मैं ग़लती पर नहीं हूँ..." सलमान ने टिप्पणी की और अपनी हाज़िरजवाबी पर ख़ुश होकर ही-ही करने लगा।

"ऐ, चुप करो, ज़ैनब बहन की बात मत काटो!" रुस्तम ने रोबदार आवाज़ में उसे झिड़क दिया।

"बिलकुल ठीक कहा आपने, कामरेड सलमान, बिलकुल ठीक!" ज़ैनब क़ुलियेवा के चेहरे पर काफ़ी थकान झलक रही थी और उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी। "ज़मीन हिम्मती और समझदार किसान की इज़्ज़त करती है। हवा, बर्फ़, बारिश और सूरज कभी हमारे दुश्मन हो जाते हैं, तो कभी दोस्त। मौसम का ठीक समय पर फ़ायदा उठाया जाये, तो वे दोस्त बन जाते हैं। देर कर दें, तो दुश्मन!" उसने गहरा उच्छ्वास लिया। "इसलिए समझ और हिम्मत दोनों से काम कीजिये।"

पेरशान ने पहली बार देखा कि उसका पिता किसी स्त्री के सामने दबक रहा है और उसकी बात काटने का साहस नहीं कर पा रहा है। "ज़रा माय्या इन्हें कोई सलाह देकर देखे! तमाशा खड़ा हो जाता...

पर ज़ैनब कितनी शान्त है, और उसके शब्द कितने बुद्धिमत्तापूर्ण और नपे-तुले हैं..."

पेरशान को अपने पिता के उत्तर से और भी अधिक आश्चर्य हुआ:

"ख़ुश रहो, बेटा! हमारे मेहमान अनुभवी और अक़्लमंद काश्तकार हैं। इनकी दोस्ताना हिदायतों को हम कैसे अनसुनी कर सकते हैं!" उसने नजफ़ की ओर हाथ हिलाया: "चलो, शुरू करो!"

और ट्रैक्टर एकसुरी घरघर के साथ अपने पीछे बीज ड्रिल खींचने लगा।

रुस्तम के झुक जाने से सब हैरत में पड़ गये। पर कारण मामूली था: मेहमानों का विरोध करना अशोभनीय होता... इसके अलावा उसे स्वयं भी पूरा आत्मविश्वास नहीं था कि बोवाई करने का समय आ गया है या अभी बोवाई करना जल्दबाज़ी होगा।

शीघ्र ही ट्रैक्टर दूर जा चुका था, और उसके इंजन का शोर उनकी बातचीत में बाधा नहीं डाल रहा था। पुश्तैनी किसान कारा केरेमोगलू ने, जिसका सोचना सही था कि दुनिया में मुग़ान से बढ़कर सुन्दर और कुछ नहीं है, नम मिट्टी की गंध का आनन्द लेते और स्तेपी को निहारते हुए कहा:

"खेत की जोताई भी अच्छी हुई है और इसमें खाद भी अच्छी तरह दी गयी है। यहाँ आप भरपूर फ़सल काटेंगे।"

"हाँ, शेरज़ाद की टोली से मुक़ाबला करना आसान नहीं होगा," ज़ैनब ने स्वीकार किया।

शेरज़ाद को समस्त जनतंत्र के सुप्रसिद्ध कुशल किसानों के मुख से अपनी प्रशंसा सुनना सुखद लगा, उसने हार्दिक शब्दों के लिए अपनी आंखों से अतिथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

"अब किधर ले चलोगे?" कारा केरेमोगलू ने रुस्तम से पूछा।

"जहां आप लोग चाहें। जिससे कि बाद में शिकायत न करें कि मैंने सिर्फ़ अच्छा ही अच्छा दिखाया और अपनी कमियों पर परदा डाल दिया," वह मुस्कराया।

कारा केरेमोगलू ने क्षितिज पर चमकते एक छोटे-से बिन्दु की ओर संकेत किया।

"ट्रैक्टर है क्या? वहीं चलते हैं।"

"बहुत अच्छा। रास्ते में जाड़े की फ़सलें दिखा दूंगा।"

मेहमानों को आगे निकलने देकर रुस्तम रुक गया और शेरज़ाद से फुसफुसाकर बोला:

"तुम्हें हद से ज़्यादा घमण्ड हो गया है, बेटा! वह ध्यान में रखो कि अगर बोवाई दोबारा करनी पड़ी, तो बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। और लोगों को भी बिना अनाज के छोड़ दोगे..."

और वह हाथ हिलाता जल्दी से कारा केरेमोगलू के पास जा पहुंचा।

"कितना ऊब चुके हैं सब इन बातों से!" शेरज़ाद ने सोचा। "रुस्तम अपनी बात पर ही अड़ा हुआ है, हर आपत्ति पर उसका दिल दुखता है। उफ़, कितनी मुश्किल है!" तुरन्त उसके दिमाग़ में विचार कौंधा: क्या निराश होना चाहिए? अपनी टोली है—ढेरों काम हैं, हमें बढ़िया फ़सल उठानी चाहिए। मैं अलग खड़ा भी देखता रह सकता हूं, बिना किसी मामले में दख़लंदाज़ी किये। क्या उसे औरों से ज़्यादा चाहिए? टोली में सभी उसकी इज़्ज़त करते हैं—गिज़ेतार भी, तेल्ली भी और तेज़ज़बान, पर खेत में लगन से मेहनत करनेवाली पेरशान भी, दूसरी लड़कियां भी हमेशा उसका समर्थन करेंगी, प्रतियोगिता में विजयी होने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देंगी। वह अपनी बातों से नहीं, अपनी मिसाल से सारे सामूहिक फ़ार्म को दिखा देगा कि काम कैसे करना चाहिए।

लेकिन शेरज़ाद अपने टुकड़े में कुछ ही क़दम चला था कि उसे ये विचार अजीब और क्रूर लगने लगे। यह क्या है—समय से पहले की थकान या संघर्ष से कतराना? नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा।

"पीछे क्यों रह गये?" गिज़ेतार ने उसे आवाज़ दी। "तुम्हारे बिना भी काम चला लेंगे। तुम मेहमानों के साथ जाकर देखो कि दूसरी टोलियों में क्या हो रहा है। तुम्हें जब पार्टी सचिव चुना गया है, तो तुम्हें सामूहिक फ़ार्म के सारे मामलों की जानकारी रखनी चाहिए।"

"मान ली तुम्हारी बात!" शेरज़ाद ने जवाब दिया और मेहमानों के पीछे भाग चला।

३

रुस्तम सलमान को मेहमानों को बातचीत में व्यस्त रखने का अवसर देकर सारे रास्ते ज़मीन में नज़रें गड़ाये रहा। वह टेकरियों की दरारों, घाटियों में तेज़ी से सूख रही मिट्टी, खाइयों में व नालियों के किनारे-किनारे उगी हरी-भरी घास को भी देखता जा रहा था। इसके बावजूद पाले का भय उसकी आत्म-शक्ति को जकड़े हुए था।

"वे खड़े क्यों हैं?" कारा केरेमोगलू ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"कौन खड़ा है?" रुस्तम चिन्तन से ध्यान हटाने के लिए चौंक उठा।

उसे मालूम पड़ा कि वे विशाल भूखण्ड के छोर पर निश्चल खड़े तीन ट्रैक्टरों के पास पहुंच भी चुके हैं। सलमान अभी-अभी मेहमानों को बता कर चुका था कि वहां, अस्सी हेक्टेयर के टुकड़े में वसन्तकालीन गेहूं की बोवाई की जायेगी।

"शायद पेट्रोल ख़तम हो गया है। कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हुई?" रुस्तम किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठा।

"अरे, नहीं, ऐसा तो नहीं लगता। ट्रैक्टर-चालक तो नज़र नहीं आ रहे हैं," कारा केरेमोगलू ने प्रतिवाद किया।

"वाह री लोमड़ी!" रुस्तम ने सोचा। "सब एक नज़र में देख लेता है। जब सुहाग-रात की सेज जैसी मुलायम जाड़े की फ़सलों के खेत के पास से गुज़र रहे थे, तब इसे जैसे सांप सूंघ गया था, तारीफ़ ही नहीं की! और यहां चौंक उठा है..." अब उसे सन्देह नहीं रहा कि कारा केरेमोगलू का दिल बांके मर्द का नहीं, ईर्ष्यालु का है। "कुछ भी हो सकता है! आधा टुकड़ा जोतकर वे सुस्ताने लेट गये हों," रुस्तम ने अपने को तसल्ली दिलायी, लेकिन एक मिनट में उसे यह स्पष्ट मालूम पड़ गया कि वहां जोताई शुरू ही नहीं की गयी है। "लगता है वह बगुला यारमामेद फिर ट्रैक्टर-चालकों को पानी और खाना भिजवाना भूल गया है। और सलमान भी कम नहीं है! इन दोनों को ही प्रबंध समिति से निकाल बाहर करना पड़ेगा। कुदालें उठाओ, सूअर के बच्चो, और खेत रवाना हो जाओ!.. टेलीफ़ोनवाली मेज़ पर आराम से सामूहिक फ़ार्म की रोटी खा-खाकर बिगड़ गये हो। बिल्लियां बन गये हो, ख़ान के दरबार की बिल्लियां, जो कोफ़्ते खा-खाकर मोटी हो जाती हैं और जिन्हें अपनी नाक तले चुहिया आंखें खोलकर देखते आलस आता है..."

रुस्तम के गले में ग़ुस्सा वैसे ही अटक के रह गया जैसे मछली का कांटा। तेज़ धूप में सुस्ताते ट्रैक्टर-चालकों के बीच गराश को देखकर वह आग-बबूला हो उठा, उसकी मुट्ठियां भिंच गयीं। "आह, मेरी ही औलाद है और मुझ पर नहीं गया है, आलसी। नाक कटवा दी, सगे बाप की ऐसे दिन नाक कटवा दी!"

"थक गये हो? धूप सेंकने की सोच ली? और कोई वक़्त नहीं मिला?" अध्यक्ष ट्रैक्टर-चालकों पर बरस पड़ा।

वे अनिच्छापूर्वक खड़े हो गये, कपड़े झाड़कर उन्होंने दुआ-सलाम की, पर रुस्तम को जवाब में कुछ नहीं कहा।

"क्यों आंखें मिचमिचा रहे हो? मुंह में ज़बान नहीं है क्या? जोताई क्यों नहीं कर रहे हो?"

"मना कर दिया गया है," गराश ने अन्त में कहा।

"किसने मना किया है? किसने?"

अचानक परिचित ऊंचा स्वर गूंज उठा:

"ऐ, रुस्तम, तुम वहां मेरे ट्रैक्टर-चालकों को क्यों दबा रहे हो? उनका क्या क़सूर है?"

रुस्तम ने एकदम पलटकर देखा और आश्चर्य के मारे उसके गले से चीख़ निकलती-निकलती रह गयी – उसकी तरफ़ धूप में सांवला पड़ा, नंगे सिर शराफ़ोगलू आ रहा था।

"सलाम, कामरेडो, बड़ी ख़ुशी हुई आप लोगों को साथ देखकर।" उसने सबसे हाथ मिलाया, सहृदयतापूर्वक मुस्कराता रहा और हरेक को उसने कुछ न कुछ हार्दिक शब्द कहे।

"हां, तो, पुराने यार, मैं तो तुम्हें जोशीला अध्यक्ष समझता था, पर अब मुझे कुछ शक होने लगा है," शराफ़ोगलू ने रुस्तम से कहा। "क्या तुम ख़ुद नहीं देख रहे हो कि ट्रैक्टर क्यों खड़े हैं?"

शराफ़ोगलू के आने से रुस्तम पूर्णतया किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। कहीं फंस न जाये, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया, केवल होंठ चबाता रहा।

"क्या आप समझ गयीं?" शराफ़ोगलू ने शरारती अंदाज़ में ज़ैनब कुलियेवा से पूछा।

वह सकुचा गयी और कनखियों से रुस्तम की ओर देखकर बोली:

"रुस्तम चाचा तो सिर्फ़ न समझने का दिखावा कर रहे हैं। जोताई करने की जरूरत ही क्या है, जब खाद दी ही नहीं गयी है?"

अध्यक्ष की आंखों से जैसे परदा हट गया। उसने ज़मीन के विशाल टुकड़े पर नज़र दौड़ायी और देखा कि वहां खाद का नाम-निशान भी नहीं है।

उसकी आंखें एक क्षण के लिए शेरज़ाद की आंखों से मिल गयीं।

"मैंने आपको चेतावनी दी थी, पर आपने मेरी बात नहीं मानी, यह सोच लिया कि मैं आपकी अध्यक्ष की कुरसी हथियाने की कोशिश कर रहा हूं। अब ख़ुद ही देख लीजिये कि वास्तव में कौन आपकी पीठ में छुरा भौंक रहा है," युवक मानो कह रहा था। लेकिन रुस्तम नहीं समझा, उसने सोचा कि टोली-नायक मन-ही-मन ख़ुश हो रहा है और वह और भी ज़्यादा बुरा मान गया।

गराश को पिता पर दया आ गयी और वह खोखले, उत्तेजना से व्यथित स्वर में बोला:

"मैंने जैसे ही देखा कि खाद नहीं है, मैं गांव भाग लिया। मुझे बताया गया कि आप चक्की पर हैं। भागा-भागा वहां गया, तो बताया गया कि अब्बा मेहमानों का स्वागत करने गये हैं। इसीलिए कामरेड शराफ़ोगलू को टेलीफ़ोन करना पड़ा।

"हां, रुस्तम, तुम ख़ुद जानते हो कि बिना खाद डाली हुई ज़मीन को जोतना मना है। बहुत सख़्त आदेश हैं! चाहे दो दिन बाद शुरू करिये, पर खाद ज़रूर डालनी चाहिए," शराफ़ोगलू ने कहा। "किसका खेत है?"

"गूंगे हुसैन का," यारसामेद ने तुरन्त बताया।

"अहा! उसी हुसैन का, जिसके यहां सौ हैक्टेयर में अंकुर नहीं फूटे थे?"

"उसी का है," रुस्तम ने पुष्टि की और सोचा कि उसके मोर्चे के दोस्त की याददाश्त बहुत तेज़ है। अफ़सोस, उम्र ने शराफ़ोगलू को शुष्क कर दिया है, वह अपने कर्त्तव्य के अलावा और किसी बात को महत्त्व नहीं देता। क्या इसके बारे में अकेले में बात नहीं की जा सकती थी?

"पर टोली-नायक कहां है?" शराफ़ोगलू पीछा नहीं छोड़ रहा था।

"वह लेखा-परीक्षा करने पशुपालन फ़ार्म गया है।"

"ख़ूब वक़्त ढूंढ़ा!" शराफ़ोगलू को आश्चर्य हुआ और उसने अध्यक्ष को ट्रैक्टर बेकार न खड़े रहने देने के लिए कम-से-कम उन्हें शेरज़ाद के खेत में ही भेज देने की सलाह दी।

"शेरज़ाद के बारे में भी सब जानता है, कैसा आदमी है!" रुस्तम आतंकित हो उठा।

उधर शराफ़ोगलू सिगरेट पीता ज़ैनब व कारा केरेमोगलू से निश्चिन्तता से बातें कर रहा था और अपनी मुखमुद्रा से यही प्रकट कर रहा था कि वह इस अप्रीतिकर घटना को अधिक महत्त्व देने का इच्छुक नहीं है। क्या

वह मित्र का उत्साह बढ़ाना चाहता था? लेकिन रुस्तम ऐसा आदमी नहीं था, जो अपनी नाराज़गी और दिल का दुख छिपाकर ख़ुश दिखाई दे। बहुत हो चुका! अब वह मेहमानों को सबसे अच्छे खेतों में ले जायेगा।

लेकिन परेशानियां ख़तम नहीं हुईं। वे राजमार्ग पर पहुंचे ही थे कि उन्हें तेज़ जीप दिखाई पड़ गयी और उसके पास खड़े गोशातख़ां, गूंगा हुसैन और माय्या भी।

"यह छिपकली हमेशा मेरा रास्ता काटती रहती है," रुस्तम ने गोशातख़ां के बारे में सोचा। "और हुसैन लौट क्यों आया? मैं इसी की खाद बनाकर मिट्टी पर बिखेर दूंगा!"

४

झुटपुटा होने तक गोशातख़ां अधीरता से केरेम के तम्बू के आस-पास चक्कर काटता रास्ते की तरफ़ देखता रहा।

शाम हुए भेड़ों के रेवड़ पड़ाव में लौटने लगे; गोशातख़ां ध्यानपूर्वक देख रहा था कि उनके फूले हुए थन कैसे हिल रहे हैं, मांएं बाड़ों की तरफ़ भागी जा रही थीं, जब कि मेढ़े पीछे-पीछे अकड़ते, अपनी गरिमा में अडिग विश्वास की अनुभूति से इठलाते चले जा रहे थे। जब सारा पड़ाव रेवड़ों से खचाखच भर गया, भेड़ों व मेमनों की मिमियाहट बेसुरी सिम्फ़नी में मिलकर एक हो गयी।

अन्त में सभी भेड़ें व मेढ़े बाड़ों में हांक दिये गये, और चरवाहे टहनियों व सूखी मेंगनियों को जलाकर सुलगाये अलाव पर खाना और चाय तैयार करने में जुट गये। शनैः-शनैः शोर शान्त होने लगा और मुग़ान की स्तेपी पर रात्रिकालीन नीरवता छाने लगी, केवल कहीं-कहीं मूसों के घास में चलने से होती सरसराहट पर रखवाले कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंक उठते थे।

आग की लम्बी-लम्बी लपटें अंधेरे को चाट रही थीं, और जब गोशातख़ां अलाव से उल्टी दिशा में जाता, अंधेरा अचानक अभेद्य हो उठता कि लगता उसे हाथ से छुआ जा सकता है।

लेकिन अचानक क्षितिज पर एक नन्हा तारा टिमटिमाया और तत्क्षण बुझ गया, एक सैकंड बाद वह फिर टिमटिमाया – पहले से प्रखर व उज्ज्वल – मोटर के इंजन का हल्का शोर सुनाई दिया, गोशातख़ां ने राहत की सांस ली: उसकी जीप लौट रही थी।

जीप तम्बू के पीछे आकर रुकी, कुत्ते चारों ओर से भागे आये, केरेम व अन्य चरवाहे उन्हें बड़ी मुश्किल से दुतकार पाये।

गोशातख़ां ने पत्नी को गाड़ी से उतरने में मदद की। मेलेक भी पति की तरह नाटी थी और ओवरकोट में भोंडी लग रही थी।

"कैसा घुप्प अंधेरा है!" उसने पति को बैग देते हुए कहा। "कुत्ते परेशान तो नहीं करेंगे?"

गोशातख़ां पत्नी के हाथ में हाथ डालकर उसे सावधानीपूर्वक आगे ले चला।

"बच्चे कैसे हैं?"

"सेल्मी चाची रात को रुकने को तैयार हो गयी।"

"यानी सेवील आधी रात से पहले नहीं सो पायेगी," गोशातख़ां ने सिर हिलाया।

"नहीं, नहीं, परियों की कहानियां नहीं सुनाई जायेंगी, मैंने नौ बजे के बाद जागते रहने को मना कर दिया है।"

"क्यों नहीं, इतनी दूर से वे तुम्हारा कहना ज़रूर मानेंगे!"

तम्बू के दरवाज़े के बाहर गाराग्योज़ डाक्टर का इन्तज़ार कर रही थी; वह शाम की ठण्ड के कारण कांप रही थी, लेकिन उसे ध्यान भी नहीं आ रहा था कि वह ठिठुर रही है। नाटे क़द का, आकर्षणहीन गोशातख़ां अब बालिका की नज़रों में कुलीनतम व्यक्ति और वीर था: क्योंकि उसने डाक्टर को बुलवाने के लिए अपनी मोटर भेजी थी।

तम्बू में लैम्प क़ालीन पर रखा हुआ था, उसकी बत्ती नीची की हुई थी, तुरन्त देख पाना कठिन था कि बीमार कहां है। मेलेक ने कहा:

"बेटी, तुम कहां हो? ज़रा रोशनी करना!"

गाराग्योज़ ने लैम्प की बत्ती ऊंची की और मेलेक को बेहोशी की हालत में लेटी केरेम की पत्नी और उसके पास गठरी बना लेटा लड़का नज़र आ गये।

मेलेक ने बालक की ओर इशारा किया, केरेम समझ गया, उसने बेटे को गोद में उठा लिया और वह जागा ही नहीं।

"न्यूमोनिया है, दोनों फेफड़ों में सूजन है," मेलेक ने रोगिणी के स्टेथोस्कोप लगाकर सुना, कुछ हिचकिचाहट के बाद कहा और अपना निचला होंठ काट लिया। गोशातख़ां से न रहा गया, उसके मुंह से सीटी निकल गयी – स्थिति गम्भीर है...

केरेम सांस रोके मेलेक की मुखमुद्रा को ध्यान से देख रहा था।

मेलेक ने आला बैग में रखते हुए पति पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली: वह जीवन की सभी परिस्थितियों में पति से सलाह करने की अभ्यस्त हो चुकी थी।

जुड़वाँ बच्चे जाग गये और कर्ण भेदी चीख़ मारकर रोने लगे; गारा-ग्योज़ उनकी ओर लपकी और उन्हें क़ालीन पर लिटाकर उनके पोतड़े बदलने लगी।

"भावी सोवियत नागरिक हैं," केरेम बच्चों की ओर इशारा करके मुस्कराया। "सरकार के लिए लाभ..."

मेलेक को यह पसंद आया कि केरेम निराश नहीं होता और मज़ाक़ से अपना भी हौसला बढ़ा रहा है और अपनी बेटी का भी।

"आप परेशान मत होइये," उसने शान्त स्वर में कहा, "ठीक हो जायेगी, पर जल्दी नहीं। मैं अभी पेनिसिलिन का इंजेक्शन और कप्पिंग ग्लास लगा देती हूं, सुबह तक बुख़ार उतर जायेगा, तब इसे अस्पताल ले जा सकते हैं।" वह सोचने लगी। "और बच्चों को शिशुगृह में भरती करा दो या कुछ और करो।"

आधा घंटे में सब ठीक हो गया।

अचानक कुत्ते घबराकर भौंक उठे। उनका सारा झुण्ड भिन्न-भिन्न आवाज़ों में भौंकने लगा। करेम ने दुनाली उठा ली।

"अलाबाश भेड़ियों की गंध पाकर भौंकता है!" उसने गोशातख़ां को समझाया और एक छलांग में तम्बू से बाहर निकल गया।

"ख़ुदा के वास्ते, मत जाओ, मुझे डर लगता है," मेलेक पति को केरेम के पीछे जाते देख विनती करने लगी।

"तम्बू में डरने की क्या बात है?" गोशातख़ां हैरान हुआ।

"तुम्हें कहीं कुछ न हो जाये, इसलिए डरती हूँ," मेलेक ने जवाब दिया।

गोशातख़ां ने असहमति में सिर हिलाया और माथे पर टोपी खींचकर बाहर चला गया। घुप्प अंधेरा था। कुत्तों के भौंकने का शोर पड़ाव से दूर जाता हुआ अब स्तेपी में कहीं से आ रहा था; चरवाहों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

"दबोच ले, अलाबाश, दबो ऽऽ च ले!.."

"पकड़ ले!.."

आग की कौंध रात के अंधेरे को चीर गयी, सरकण्डों में उसकी प्रति-ध्वनि गूंज उठी, और अंधेरे में नज़र न आ रहे केरेम ने किसी से शान्त व किंचित् भर्रायी आवाज़ में कहा:

"गोली मत चलाओ, बेटा, कुत्ता चपेट में आ जायेगा।"

दर्दनाक चीख़ गूंज उठी, कुत्तों का झुण्ड एक साथ गुर्रा उठा और गोशातख़ां समझ गया कि कुत्ते भेड़िये से भिड़ गये हैं। उनका झुण्ड तम्बुओं की ओर लौटने लगा। कुत्तों के भौंकने और चरवाहों के चिल्लाने से लगता था जैसे सारी स्तेपी कांप रही है; शायद उन्होंने भेड़िये का सरकण्डों में रास्ता काट दिया था और वह पड़ाव की ओर भाग आया था।

"अलाबाश, गला दबोच ले!" केरेम बहरा कर देनेवाली आवाज़ में चीख रहा था।

अन्त में कुत्तों का भौंकना बंद हो गया, थोड़ी देर में चरवाहे भेड़िये को घसीट लाये, लालटेन लाकर रोशनी की गयी – भेड़िये के पेट में से उसकी अंतड़ियां बाहर निकली हुई थीं।

केरेम ने थूका और जवान चरवाहे से कुत्तों को इनाम में दुम्बे की चर्बी देने को कहा – उन्होंने इसके लायक़ काम किया था...

"शाबाश, शाबाश!" वह विशाल अलाबाश की पीठ सहलाते हुए प्यार से कह रहा था। "तूने दूर से ही भेड़िये की बू सूंघ ली, शाबाश!" उसने गोशातख़ां को बताया: "भेड़िया पहाड़ी से उतरकर आया था, भूखा था, सारी शाम दुबकता हुआ रेवड़ों की तरफ़ बढ़ता रहा, अन्त में उसने सोचा कि कुत्ते सो गये हैं और हिम्मत करके बाड़े में लपक पड़ा। लेकिन अलाबाश ऊंघ नहीं रहा था! मुग़ान में इसकी जोड़ का दूसरा रखवाला कुत्ता नहीं है।"

"सुनो, केरेम, तुम बेकार मेहमान को खुली हवा में खड़ा रख रहे हो," अंधेरे में से किसी वृद्ध की खनकती आवाज़ सुनाई दी। "इनकी चाय और सींक-कबाब से ख़ातिरदारी करनी चाहिए।"

"यह हमारे दादा बाबा हैं, बुज़ुर्ग चरवाहों में से हैं," केरेम ने धीमी आवाज़ में कहा। "अगर थके नहीं हों, तो उनके पास चलते हैं। इन्हें बातचीत में मज़ा आता है, बहुत-से क़िस्से याद हैं।"

हवा सरकण्डों में सरसरा रही थी, किसी तम्बू का अधफटा परदा फड़फड़ा रही थी। अलाव बुझ गया था, शोले राख तले लालों की तरह चमक रहे थे। लगता था मुग़ान की स्तेपी में सब नीन्द की आग़ोश में है: भेड़ें व मेढ़े रोयेंदार गठरियां बने सो रहे थे, कुत्ते भी सो चुके थे, पर वे समय-समय पर इस बात का संकेत देते भौंक उठते थे कि वे पहरे पर हैं और अपना कर्त्तव्य जानते हैं... केरेम मेहमान का हाथ पकड़कर उसे एक तम्बू में ले गया, – वे घुप्प अंधेरे में टटोलते हुए चल रहे थे।

"स्तेपी है। तुम हमें माफ़ करना – स्तेपी है," केरेम अपनी सफ़ाई देता बार-बार कह रहा था।

"मेरी बीवी तो शायद माफ़ कर दे, मेलेक का दिल नरम है, लेकिन मेरा माफ़ करने का इरादा नहीं है!" गोशातख़ां ने प्रतिवाद किया। "अब जब बीमार की तबीयत ज़रा सुधी गयी है, संजीदगी से बात करते हैं। दुकानों में सफ़री पलंग भरे पड़े हैं, तुम्हारी आमदनी भी इतनी बुरी नहीं है, क्या दो-तीन ख़रीद नहीं सकते?"

"चरवाहे भेड़ों की मेंगनियों की बू की तरफ़ ध्यान नहीं देते, आदी हो चुके हैं," केरेम ने दबी लम्बी हंसी के साथ कहा।

"अगर एक हफ़्ते बाद मैंने सारे तम्बुओं में सफ़री पलंग नहीं देखे, तो दुआ-सलाम करना बंद कर दूंगा!"

केरेम जानता था कि यह मेहमान मज़ाक़ करना पसंद नहीं करता।

"आपका कहा कर लिया जायेगा! अच्छा, चलें!"

तम्बू में ढिबरी के धुंधले प्रकाश में भेड़ों की खालों पर युवा चरवाहे बैठे थे; उनमें युवतियां भी थीं। मेहमान के आने पर सब खड़े हो गये, जब कि दूसरे कोने में तकिये पर कोहनियां टिकाये बैठे सफ़ेद दाढ़ीवाले वृद्ध ने केवल सिर झुकाया।

"तशरीफ़ लाइये," उसने मेहमानों को अपने पास बैठने का इशारा किया।

गोशातख़ां को क़ालीन पर आलथी-पालथी मारकर बैठने की आदत नहीं रही थी लेकिन कोई और चारा नहीं था, वह कराहता हुआ धीरे से बैठ गया।

गृहस्वामी का बुढ़ापा गरिमापूर्ण था: दाढ़ी, मूंछें, सिर के बाल सब

बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे; गहरी झुर्रियों से भरा चेहरा खेत जैसा लग रहा था। और उसकी आंखें श्वेत भौंहों व बरौनियों के तले पहाड़ों में बर्फ़ के ढेरों के बीच न जमनेवाले चश्मे की तरह चमक रही थीं।

"तुम्हें हमारी ज़िन्दगी कैसी लगी?" वृद्ध ने गोशातख़ां से पूछा। और उसने जवाब का इन्तज़ार किये बिना सबसे छोटे चरवाहे से कहा: "बेटा, तुम्हारे पैर बहुत फुरतीले हैं, जाओ, खाना ले आओ!.. इस साल भेड़ें जल्दी ब्याने लगी हैं," गृहस्वामी ने अपनी बात आगे जारी रखी, "आज तीस भेड़ों ने बच्चे दिये, बारह जुड़वां हैं, ख़ूब तंदुरुस्त।"

"वसंत आपके लिए बरकती साबित हो," गोशातख़ां ने कामना की।

"शुक्रिया, कामरेड, नेक ख़्वाहिशों के लिए। दुनिया में भेड़ से ज़्यादा ख़ूबसूरत और फ़ायदेमंद जानवर कोई नहीं है। सच कहूं, तो वह स्तेपी और पहाड़ों का गहना है। उसकी अच्छी संभाल की जाये, तो गोश्त और ऊन देती है, ऊन, जो रेशम से बारीक होता है, और गोश्त चरबी से तर होता है। भेड़ का दूध प्यास से तड़पते आदमी के लिए चश्मे के पानी जैसा होता है, मीठा, चिकना और ख़ुशबूदार।" वृद्ध क्षण भर के लिए सोच में डूब गया, फिर दाढ़ी पर हाथ फेरकर क्षीण, खनकती पर मधुर आवाज़ में गा उठा:

> यह भेड़ भी कितनी अच्छी है, कितनी प्यारी,
> सफ़ेद है बर्फ़ की तरह से यह भेड़ अपनी...
> पनीर की इस की चकतियाँ बीवी काटती है,
> सफ़ेद, बीवी के चेहरे से भी मलाई इसकी!

जिज्ञासु गोशातख़ां ने ढिबरी अपनी तरफ़ खींचकर अपनी नोट-बुक निकाल ली।

"लिख सकता हूं? जादुई शब्द हैं!"

"कितना भी क्यों न लिखो, मेरे मुंह से ऐसे शब्द फिर नहीं निकलेंगे," बुज़ुर्ग ने भोले-भाले ढंग से डींग हांकी। "शहर में काग़ज़ कम पड़ जायेगा, अगर मेरी सारी कही बातें एक जगह लिखी जायें, बाकू तक में काग़ज़ कम पड़ जायेगा! लोगों के सीनों में, बेटा, इन जादुई गीतों का ऐसा ख़ज़ाना है!"

"फिर भी इन्हें आनेवाली पीढ़ी के लिए संभालकर रखना चाहिए बाबा, आपकी उम्र कितनी है?"

"मझे कहां से मालूम होगा?" बाबा आत्मसन्तोष से हंस पड़ा। "जब हम इस दुनिया में आये शादी के रजिस्ट्री आफ़िस नहीं थे, गांवों में पढ़े-लिखे लोग भी नहीं मिलते थे। अन्दाज़न कहूं, तो नब्बे से ऊपर होगी। लेकिन मैं इन लोगों से ज़्यादा मज़बूत हूं!" उसने युवा चरवाहों की ओर इशारा किया।

"हम इनकी शादी करवाना चाहते हैं, पर यह मानते नहीं हैं," केरेम ने मज़ाक़ किया।

चरवाहे हंस पड़े।

"अरे, केरेम, क्यों जाने-माने मेहमान को धोखा दे रहा है?" वृद्ध ने उलाहना देते हुए सिर हिलाया। "क्या मैंने कभी हूर तेल्ली के लिए इनकार किया? लड़कपन से ही मुझे उससे प्यार था, पर तुम्हारे बाप ने उसे उड़ा लिया, उठाकर ले गया।"

"मेरी मां, बेशक, फ़ार्म की सक्रिय सदस्या है, पर मुसीबत यह है कि वह है लड़ाका। मुझे डर है कि तुम्हारी दाढ़ी में एक भी बाल नहीं बचेगा।"

बाल्टी में खीस मिलाया हुआ गरम दूध और गरम-गरम सींक-कबाब लाये गये।

"बाबा, तुम क्या काफ़ी अरसे से स्तेपी में भेड़ें चराते हो?" गोशातख़ां ने गिलास से स्वादिष्ट गाढ़े पेय का घूंट लेकर पूछा।

"मेरा दादा चरवाहा था, बाप चरवाहा था," गृहस्वामी ने गर्व से कहा। "मैं आठ बरस की उम्र में मेमने चराने लगा और पन्द्रह बरस का होते होते – भेड़ें। मेरी सारी ज़िन्दगी यहां पहाड़ों और स्तेपी में गुज़री है... मैं एक दिन के लिए भी रेवड़ से दूर नहीं हुआ।"

वृद्ध बातों में खो गया, उसने याद किया कि कैसे वह एक बार पहाड़ों में तूफ़ान में फंस गया था और सारी भेड़ें गंवा बैठा था, कैसे उसने भेड़ियों का अपने हाथों से गला घोंटा था।

"चालीस साल पहले केलबाजार* के पहाड़ों में एक बार बाघ से अकेला भिड़ गया था। आख़िरकार उसे मार ही डाला!"

---

*केलबाजार – आज़रबैजान के पश्चिम में स्थित काकेशियाई पर्वत-श्रेणी की एक शाखा।

"ज़रा निशानी तो दिखाओ मेहमान को।" पास बैठे आदमी ने कहा और गोशातख़ां से पूछा: "आप क्या देख नहीं रहे हैं?"

गोशातख़ां ने ध्यान से देखा और वृद्ध की सफ़ेद दाढ़ी के नीचे घाव का निशान देखा, जो घनी बालियां निकले गेहूं के खेत के बीच में से निकलती पगडण्डी जैसा लग रहा था।

चरवाहे गरम-गरम सींक-कबाब के टुकड़े लवश में लपेटकर इतने मज़े से खा रहे थे कि गोशातख़ां को भी तेज़ भूख लग आयी।

"बांसुरी कहां है? और ढोल? ऐ, केरेम, दिल छोटा मत करो!" बाबा ने कहा। "ख़ुशियां मनानी चाहिएं कि डाक्टर आ गयी, तुम्हारी बीवी की उसने जान बचा ली... डाक्टर बहन की और उनके मियां की इज़्ज़त में गाना सुनाओ।" उसके संकेत पर युवक बांसुरी और ढोल ले आये, पर केरेम ने बांसुरी लेने से इनकार कर दिया और सिर झुकाकर उसे वृद्ध को दे दिया...

"ऐ, मेरी सांस फूल जाती है," उसने शिकायत की। "किसी ज़माने में..."

लेकिन आख़िर उसने बांसुरी लेकर अपने ज़र्द होंठों से लगा ली, और तम्बू में दर्दभरे, उदास सुर गूंज उठे, बांसुरी गा उठी। वह चरवाहों का एक प्राचीन गीत था, उसमें भेड़ों के चलने का शोर गूंज रहा था, जलती धूल के ग़ुबार उठ रहे थे, कुत्ते भौंक रहे थे, चालाक भेड़िये सरकण्डों के झुरमुटों में रेंग रहे थे और रात के अलाव धधक रहे थे।

बाबा थक गया, उसने बांसुरी केरेम को दे दी और गोशातख़ां को समझाया:

"चरवाहे के दो वफ़ादार दोस्त होते हैं – कुत्ता और बांसुरी।"

केरेम ने नृत्य की धुन छेड़ दी, जिसके स्वरों से बदन में ख़ून तेज़ी से दौरा करने लगा और पैर अपने आप ताल देने लगे; वृद्ध ने ढोलों की जोड़ी अपने पास सरका ली और संगत देने लगा; युवक ऐसा तेज़ नाच नाचने लगे कि गोशातख़ां को लगा जैसे उसकी उम्र के दसियों साल कम हो गये। तम्बू की दीवारों पर बड़ी-बड़ी छायाएं डोलने लगीं, अथक चरवाहे झूम रहे थे, कूद रहे थे, फिसल रहे थे, ढोल से लयबद्ध ताल में नाच की ऐसी धुन निकाल रहे थे कि देखने-सुननेवाला दंग रह जाये।

अन्त में संगीत रुक गया, थके हुए नर्तक भेड़ की खालों पर ढेर हो

गये। केरेम बड़ी मुश्किल से सांस ले पाया, लेकिन बाबा दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला:

"सुना है, दिन में रुस्तम-कीशी पशुपालन फ़ार्म आया था। काफ़ी अरसे से नहीं आया था। तुम उससे हमारे लिए एक रेडियो ख़रीदने को कह दोगे?" उसने गोशातख़ां को सम्बोधित किया। "बांसुरी और ढोल कहने की जरूरत नहीं, बहुत अच्छी चीजें हैं, लेकिन हम कुछ नहीं जानते कि दुनिया में क्या हो रहा है। स्तेपी में हम जंगली हो गये हैं।" थोड़ी देर सोचकर गृहस्वामी आगे बोला: "रुस्तम-कीशी ईमानदार है, बिलकुल ईमानदार है, लेकिन उसकी चमड़ी कछुए की खाल जैसी मोटी है।"

गोशातख़ां को यह जानने की इच्छा हुई कि वृद्ध अध्यक्ष के बारे में क्या सोचता है, पर उसने पूछना उचित नहीं समझा और कहा:

"बाबा, अपनी लम्बी उम्र का राज़ बता दो न!"

"कोई राज़ नहीं है," वृद्ध ने कंधे उचका दिये। स्तेपी और पहाड़ों में जिया हूं, अपना मालिक ख़ुद रहा, किसी अफ़सर की सूरत कभी नहीं देखी... हां, और क्या? किसी से डाह नहीं की। तकिये पर सिर रखकर कभी अपने को ऐसे विचारों से कुरेदा नहीं कि फ़लां बहुत बड़ा आदमी बन गया है और मैं पिछड़ गया हूं, जैसा था वैसा ही चरवाहा रह गया हूं, या फ़लां दौलतमंद हो गया है, और मैं पहले जैसा ग़रीब रह गया हूं... आंखें मूंदते ही मैं फ़ौरन सो जाता था। डाही नींद का नाम नहीं जानता, उसका दिल नहीं जानता आराम किसे कहते हैं। और क्या? मैंने सींक-कबाब खा-खाकर बदन पर चरबी नहीं चढ़ाई, भूख मिटते ही मेज़ से उठ जाता हूं। पहाड़ी चश्मे के पानी में नहाता हूं, स्तेपी की हवा का सेवन करता हूं। और, आख़िरी बात..." उसने शरारती ढंग से आंखें मीचीं, "और आख़िरी बात यह है कि अब सोने का वक़्त हो गया है, तारे बुझे जा रहे हैं..."

६

भेड़ों के मिमियाने और कुत्तों के भौंकने से जाग उठा गोशातख़ां तम्बू से बाहर निकला। उजाला हो आया था। चरवाहे रेवड़ों को लम्बे डण्डे हिलाते हुए बाड़ों से बाहर हांक रहे थे, भेड़ें एक दूसरे से सटी हुई चल

रही थीं मानो ठिठुर गयी हों, कुत्ते ज़मीन सूंघते जा रहे थे और व्यवस्था बनाये रखने के लिए भौंक रहे थे।

पत्नी का उतरा और पीला पड़ा चेहरा देखकर गोशातख़ां को बुरा महसूस हुआ: वह तो चरवाहों के साथ गम बहलाता रहा और आराम से सो लिया, जब कि बेचारी सारी रात आंखों में काटती रही। मेलेक ने बताया कि केरेम की पत्नी का बुख़ार उतर गया है, दिल की धड़कन नियमित है, फिर भी उसे खुली जीप में लम्बे सफ़र पर ले जाना ख़तरनाक होगा...

"ठीक है, उसको ले जाने के लिए एंबुलेंस भिजवा दूंगा," गोशातख़ां ने कहा।

राजमार्ग पर पशुपालन फ़ार्म से कोई दस किलोमीटर दूर उसे रुस्तम की 'पोब्येदा' कार दिखाई पड़ी, जो कीचड़ से भरे गड्ढे में बुरी तरह फंस गयी थी।

चालक कभी स्टीयरिंग संभालकर इंजन स्टार्ट करता, तो कभी कूदकर पहियों के नीचे अंकवार भर-भरकर सूखी टहनियां और घास डालता, पर पिछले पहिये सर्र से टहनियां व घास उछटाते हुए घूमते जाते।

"गाड़ी रोको!" गोशातख़ां ने अपने चालक को आदेश दिया।

यह सुनकर कि रुस्तम ने केरेम की पत्नी को लिवाने के लिए अपने बेटे को भेजा है, गोशातख़ां ने हाथ हिला दिये। "अजीब मिज़ाज है! कल कुछ था और आज बिलकुल उसका उल्टा। तो यह बात है, कीशी!.." उन तीनों ने मिलकर बड़ी मुश्किल से गाड़ी को बाहर निकाला और मुड़कर फर्राटे से पशुपालन फ़ार्म के लिए रवाना हो गये।

जब रोगिणी को तम्बू से निकालकर 'पोब्येदा' में लिटाया गया, गाराग्योज़ और नन्हा बेटा रो पड़े, जुड़वां बच्चे भी रो पड़े, – शायद इसलिए, क्योंकि उनके रोने का समय हो गया था...

"बच्चों को भी ले चलना चाहिए," मेलेक ने फुसफुसाकर पति से कहा। "इन्हें यहां छोड़ने की सोचने भी नहीं चाहिए।"

शुरू में तो केरेम इसके बारे में सुनने को भी तैयार नहीं हुआ, बाद में मान गया, पर बेटे को उसने फिर भी नहीं छोड़ा: उसे चरवाहे के कठिन जीवन का अभ्यस्त होना चाहिए।

एक घंटे बाद केरेम की पत्नी ज़िला अस्पताल में पहुंचायी गयी थी

श्रौर जुड़वां – शिशुगृह में, गाराग्योज़ ने गोशातख़ां के यहां रहने से इनकार कर दिया श्रौर उसे तेल्ली दादी के यहां भेजने का श्राग्रह किया।

"यानी तुम्हें हमारे यहां श्रच्छा नहीं लगता?" मेलेक ने पूछा।

लड़की उससे चिमटकर सिसकने लगी, पर उसने जवाब में कुछ नहीं कहा...

श्रौरतों की सनक के बारे में बड़बड़ाकर गोशातख़ां ने खिल उठी गाराग्योज़ को पिछली सीट पर बिठा दिया, स्वयं ड्राइवर के साथ बैठ गया।

जल-प्रदाय विभाग की इमारत के बाहर उनकी मुलाक़ात माय्या से हो गयी।

"घर जा रही हो? ठीक है, बैठो!" गोशातख़ां ने कहा।

रास्ते में लगातार पांस व खनिज खाद ढोकर ले जा रही घोड़ागाड़ियां व बीजों से लदे ट्रक नज़र श्रा रहे थे। हर चीज़ में दिलचस्पी ले रही माय्या गोशातख़ां पर सवालों की बौछार कर रही थी, – वह श्रब स्वयं को ठेठ मुग़ानवासिनी महसूस कर रही थी।

"हां, एक-दो हफ़्ते की बात श्रौर है, फिर हमारी सारी स्तेपी हरी-भरी हो उठेगी। कितना सुन्दर हो जायेगा!" गोशातख़ां ने ठण्डी सांस ली।

"श्रापको गांव से प्यार है?"

"पूछो मत! बड़ा श्रजीब प्यार है यह, कष्ट बहुत भोगने पड़ते है।"

"क्यों?"

"इसलिए, क्योंकि संस्कृति के श्रभाव में बिना कष्ट उठाये नहीं रहा जा सकता, वह भी ऐसा श्रभाव, जिसका कोई श्रौचित्य नहीं होता," गोशातख़ां ने उत्तेजित स्वर में कहा। "श्राप पशुपालन फ़ार्म गयी थीं? देखा? तो फिर पूछने की ज़रूरत ही क्या रह गयी?"

माय्या को कष्टकर लगा: घड़ा रुस्तम के सिर पर फोड़ा जा रहा था।

"कुछ भी हो, यहां काफ़ी श्रच्छे लोग हैं। ऐसे लोगों के साथ मिलकर पहाड़ काटे जा सकते हैं।"

"बिलकुल ठीक है। उन्हीं का ख़याल रखने की ज़रूरत है। श्रापके ससुर की समझ में यही बात तो नहीं श्राती है," गोशातख़ां ने ग़ुस्से में कहा।

माय्या ने श्रचानक चालक का कंधा छूकर उससे गाड़ी रोकने का श्रनुरोध किया। चालक ने गाड़ी को रास्ते के किनारे की श्रोर मोड़कर ब्रेक लगा दिया, पहिये कीचड़ में पड़कर शोर कर उठे। माय्या कूदकर जाड़े के गेहूं के प्लाट की तरफ़ लपकी।

"ज़रा, देखिये तो सही, कितने बेशर्म लोग हैं!" उसने गोशातख़ां से शिकायत की। "खेत में पानी छोड़ दिया श्रौर चले गये।"

गोशातख़ां ने श्रनिच्छापूर्वक बाहर निकल उसके पास जाकर बोवाई के पारखी की तरह चारों श्रोर नज़र डाली: सचमुच गंदला श्रौर कीच-कादेवाला पानी पुरानी नाली से खेत में भर रहा था – फूली, लचलची श्रौर ख़ूब पानी पी चुकी मिट्टी श्रब सोख नहीं रही थी।

"सींचनेवाला कहां है? कहां है?" माय्या घबरायी हुई पूछ रही थी। "श्ररे, यहां मिट्टी दलदली हो जायेगी।"

सड़क पर एक काली टोपी लगाये गठीला श्रादमी नज़र श्राया। श्रादमी बतख़ की चाल से धीरे-धीरे पास श्राता जा रहा था, उसने पास श्राकर बिना कुछ बोले माय्या को घूरकर देखा।

"श्राप सेचक हैं?"

वह उसे वैसे ही घूरता रहा फिर गोशातख़ां पर नज़र डाल उसे एकटक देखने लगा, पर जवाब में कुछ नहीं बोला।

"ख़ाला, यह गूंगा हुसैन है," गाराग्योज़ फुसफुसायी।

"श्रहा, टोली-नायक ख़ुद है? खेत में इतना सारा पानी क्यों छोड़ा?"

"पानी से कभी नुक़सान नहीं होता," टोली-नायक ने श्रलसायी श्रावाज़ में जवाब दिया। "बच्चा बिना मां के दूध के बड़ा नहीं होता श्रौर गेहूं – बिना पानी के।"

"बिलकुल ग़लत," माय्या ने प्रतिवाद किया। "दूधपीते बच्चों को श्रगर सिर्फ़ ठूंस-ठूंसकर दूध पिलाया जाये, तो उससे उनका पेट ख़राब हो जाता है। यही मुग़ान की ज़मीन के साथ होता है। पानी की कमी रहे, तो मुसीबत, पानी ज़्यादा रहे, तो दुगुनी मुसीबत।"

हुसैन ने होंठ हिलाये श्रौर मुंह से श्रस्पष्ट टिटकारी भरी।

गोशातख़ां को लगा कि टोली-नायक बहरा होने का दिखावा कर रहा है श्रौर वह ग़ुस्से में बोला:

"टिटकार क्यों रहे हो, ढोर थोड़े ही चरा रहे हो..."

"बेकार श्रौरत के साथ मुंहज़ोरी करने से कोई फ़ायदा नहीं," हुसैन ने श्रशिष्टता से कहा। "ज़रा देखिये, तो पानी से इसे परेशानी हो रही है, बड़ी श्रायी है!"

"ज़रा सोचो तो सही। नीची ज़मीन दलदली हो जाती है श्रौर ढलान पर नमक बढ़ जाता है," गोशातख़ां ने घबराहट में कंधे हिलाये। "श्राप

लोगों को कुछ सिखाया गया है या नहीं? मुग़ान में भूमिगत जल में नमक है और उसका तल ऊंचा है। यानी आवश्यकता से अधिक पानी देने से भूमिगत जल का स्तर ऊंचा उठ जायेगा और मिट्टी में लवण बढ़ जायेगा। समझे?"

"और उसके बाद?"

"और उसके बाद यह कि सींचनेवाले को ढूँढ़ो," माय्या ने आदेश दिया।

"यह मेरा खेत नहीं है।" हुसैन होंठ चबाने लगा।

"लेकिन सामूहिक फ़ार्म तो तुम्हारा है न?" गोशातख़ां ज़ब्त न कर पाया।

"मुझ पर आप लोगों के अलावा भी और बहुत-सी मुसीबतें पड़ी हैं। मेरे खेत में अभी जोताई नहीं हुई है," हुसैन ने जंभाई लेते हुए कहा और नाली के किनारे-किनारे चला गया।

"वाह रे चाचा, तुम्हें शर्म नहीं आती!" गाड़ी में से गाराग्योज़ ज़ोर से चिल्लायी। "वसन्त में तो यह ज़मीन तुम्हारी टोली की ज़मीन में मिला दी गयी है।"

गूंगा हुसैन पलटकर फुफकारा:

"चुप रह, चोर की बेटी! तेरे बाप ने सारे पशुपालन फ़ार्म को लूट लिया।"

लड़की का अपमान के कारण गला रुंध गया, वह सुबकियां भरने लगी और उन्माद में चीख़ी:

"झूठ है, झूठ है, मेरा बाप ईमानदार है! उसके हाथों और पैरों में घट्ठे पड़े हैं! हम अपनी रोटी खाते हैं!"

गोशातख़ां समझ गया कि बातचीत आगे जारी रखना व्यर्थ होगा और उसने माय्या को आगे चलने का सुझाव दिया।

"कामरेड शिक्षा विभागाध्यक्ष, अध्यक्ष से बात कर लीजिये, वह यहां ख़ुद मौजूद हैं!" हुसैन ने चिल्लाकर कहा और हंस पड़ा।

उसकी धृष्टता से गोशातख़ां क्रुद्ध नहीं हुआ, बल्कि वह सोचने के लिए बाध्य हो गया। "नाम का तो गूंगा है, पर देखो चीख़ता कैसे है! शायद जानता है कि मेरी और रुस्तम की नहीं बनती है और इस समय इसे उम्मीद है कि अध्यक्ष इसका पक्ष लेगा। शायद यह जान-बूझकर झगड़ा खड़ा करना चाहता है..."

इस बीच रुस्तम उनके पास पहुंच चुका था और अपनी बहू, गोशातख़ां और गाड़ी में रो रही लड़की को सन्देहभरी दृष्टि से देख रहा था। यहां यह क्या हो रहा है?

"लीजिये, देख लीजिये, कामरेड अध्यक्ष, शिक्षा विभागाध्यक्ष कैसे सामूहिक फ़ार्म के मामलों में दख़लंदाज़ी कर रहे हैं, आपके आदेशों को रद्द कर रहे हैं," हुसैन ने शिकायती स्वर में कहा। "आख़िर यहां हुक्म किसका चलता है? किसका?"

"यह क्या मीटिंग हो रही है?" रुस्तम ने कठोरता से पूछा। "और तुम पशुपालन फ़ार्म क्यों नहीं गये?"

"खाद ढो रहे हैं, इस वक़्त पशुपालन फ़ार्म के लिए फ़ुरसत नहीं है!"

"खाद के बारे में अलग से बात करूंगा," रुस्तम ने दिखावटी धमकी दी। "बताओ, क्या हुआ यहां?"

"काम नहीं करने दे रहे हैं, कामरेड अध्यक्ष... इन अफ़सर से पूछिये कि यह अपनी नाक हमारी नालियों में क्यों ठूंस रहे हैं..."

टोली-नायक की अशिष्टता रुस्तम को अच्छी लगी: आदमी कोशिश करता है, अध्यक्ष के शत्रुओं से, जैसे हो सकता है, मोर्चा लेता है।

उसी समय आकर रुकी मोटरगाड़ी में से मेहमान निकले और उन्होंने माय्या व गोशातख़ां से दुआ-सलाम की।

रुस्तम को प्रत्यक्षदर्शियों के सामने ख़ास तौर से शराफ़ोग्लू की उपस्थिति में गोशातख़ां से झगड़ा करने की इच्छा नहीं हो रही थी, पर उस लफ़्फ़ाज़ के सामने पीछे हटना भी उसके लिए असम्भव था।

"मोटर में सवारी करना और हुक्म चलाना हर किसी को आता है," गूंगा हुसैन चुप नहीं हुआ।

"वाह, हुसैन!" रुस्तम ने कुछ नरम पड़ते हुए सोचा। "जब चुप रहता है, तो सोना हो जाता है और जब बोलता है, तो हीरा!.. इस शिक्षा विभागाध्यक्ष के सिर पर अपनी बातों से लट्ठ की तरह चोट कर। लेकिन खेत में खाद न पहुंचाने के लिए मैं हर हालत में तेरी ख़बर लूंगा।"

"यह क्या मीटिंग हो रही है?" उसने और भी सख़्त आवाज़ में पूछा।

माय्या को लगा कि गोशातख़ां घबरा गया है और समझ नहीं पा रहा है कि कैसे पेश आये। पर गूंगे हुसैन से बहस तो उसने ख़ुद ही छेड़ी थी।

"चाचा, इसे सिंचाई करना कहते हैं? नहीं, यह सिंचाई नहीं, घोर अपराध है!" उसने हुसैन से कांपती आवाज़ में कहा।

कारा केरेमोगलू ने तत्क्षण मामला समझकर अपना पैर पानी में रख दिया और दलदल में उसका बूट फ़ौरन धंस गया।

"ख़ुदा तुम्हारे वालिद की रूह को अमन-चैन से रखे!" वह कृत्रिम भय से कह उठा। "क्या नाव में खेने का इरादा है?"

सब ठहाके लगाकर हंस पड़े।

हुसैन ने लापरवाही से कहा:

"यह हिस्सा ढलान में पड़ता है, देख नहीं रहे हैं? इसीलिए यहां पानी नीचे बह रहा है। थोड़ी देर छोटी-सी जगह में रुका रहा है, पर सारा खेत तो सही-सलामत है।"

रुस्तम को टोली-नायक का ग़लत सिंचाई को उचित ठहराना पसंद नहीं आया।

"तुम हंगामा मत मचाओ," उसने गूंगे को टोका और अपने कोट के पल्ले की ओट से उसे घूंसा दिखाया।

शायद माय्या लोगों के सामने ऐसे पेश नहीं आती, लेकिन हुसैन पूरी तरह नीचता पर उतरकर चुनौती-सी देता हुआ बोला कि इंजीनियर और शिक्षा विभागाध्यक्ष किस बात पर इतना शोर मचा रहे हैं, उसकी समझ में नहीं आ रहा है।

"नहीं, तुम सब समझते हो, बेवक़ूफ़ मत बनो!" माय्या ने कहा। "इस टुकड़े से तो बीज भी वापस नहीं मिलेंगे, फ़सल के तो सपने देखना ही बेकार है... ज़रा नाली पर नज़र तो डालिये!" उसने मेहमानों से अनुरोध किया। "यह तो वह क़ब्र है, जिसमें गूंगे हुसैन जैसे झूठों को दफ़नाया जाना चाहिए!"

"नाली नाली जैसी ही है!" हुसैन ने उपेक्षापूर्वक कहा।

रुस्तम ने विनम्र मुस्कान से बहू से संयम रखने का संकेत दिया। उसने नाली के पास जाकर देखा कि उसकी दीवारें झड़ रही हैं और ऊबड़-खाबड़ तल हरे-से कीचड़ से ढका हुआ है – यानी नाली की इस वसंत में मरम्मत नहीं की गयी थी।

इसके बारे में साफ़-साफ़ कहने की ज़रूरत थी, पर वह जब तक विचारमग्न खड़ा रहा, शराफ़ोगलू चिल्ला उठा।

"कामरेड टोली-नायक, नालियों के लिए जवाबदेह तुम हो! एक-दो हफ़्ते में आप लोगों के यहां पानी नाम को भी नहीं रहेगा!"

"हम मरम्मत कर लेंगे, मरम्मत कर लेंगे," हुसैन ने तुरंत लहजा बदल दिया। "आज-कल खाद का काम निबटा लेंगे और शीघ्र ही नालियों की मरम्मत में जुट जायेंगे..."

अब वह स्पष्ट और सोच-समझकर बोल रहा था।

रुस्तम ने मेहमानों पर गर्वपूर्ण दृष्टि डाली: सामूहिक फ़ार्म सामूहिक फ़ार्म ही होता है, हर चीज़ का पहले से ध्यान नहीं रखा जा सकता, चाहे कोई कितना ही अक़्लमंद क्यों न हो। ख़ुदा का शुक्र है कि टोली-नायक परिस्थितियों के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेकर काम चलाते रहते हैं।

लेकिन शराफ़ोगलू विश्वास न कर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया।

"अगर दो दिन में खाद खेत में नहीं पहुंचाई, तो एक भी ट्रैक्टर नहीं मिलेगा!" उसने हुसैन को थोड़ी धमकी दी और बातों ही बातों में अध्यक्ष से कह दिया: "देखो, दोस्त, अगर आगे भी ऐसा ही हाल रहा, तो प्रतियोगिता में हार जाओगे।"

कारा केरेमोगलू और ज़ैनब चुप रहे, पर रुस्तम ने मज़ाक़ में टाल दिया:

"अभी से छाती ठोककर मत कहो, जल्दबाज़ी होगी। आगे बोवाई, निराई और कटाई भी बाक़ी हैं। तीस गाड़ी पांस खेत में नहीं पहुंचाई, आधे हेक्टेयर में ज़मीन दलदली हो गयी – इससे क्या होता है!.. मुक़ाबला तब होगा, जब फ़सल कोठियों में पहुंच जायेगी!"

जब कि वह आशंका व दुःख के साथ मन में सोच रहा था कि जिस दोस्त के साथ उसकी दांतकाटी रोटी थी, जिसके साथ उसने मोर्चे के कष्ट सहे थे, वही जब तब उसके विरुद्ध बोलता रहता है, न उसका समर्थन करता है, न पक्ष लेता है, जबकि मर्दों की दोस्ती की परम्परा के अनुसार करना चाहिए। इसका परिणाम क्या होगा, सोचते डर लगता है। वह अपने को विश्वास दिलाता रहा कि उनमें झगड़ा होना तो असम्भव है, पर उसका अन्तःकरण कह रहा था कि उनमें मनमुटाव होना अपरिहार्य है।

"आइये, खाने पर तशरीफ़ लाइये," उसने कृत्रिम मुस्कान के साथ कहा।

लेकिन शराफ़ोगलू ने यह कहकर उनसे विदा ले ली कि उसे अनेक फ़ौरी काम करने हैं और शेरज़ाद को सलाह दी कि वह पार्टी ब्यूरो में वसन्तकालीन बोवाई के बारे में बताये।

"हम ख़ुद भी यही चाहते थे..." शेरज़ाद ने जवाब दिया।

"काम करना चाहिए, काम, बेकार लोगों को क्यों खेत से भगाते हो?" रुस्तम की भौंहें तन गयीं।

"उन्हें भगाने की ज़रूरत ही क्या है? खेत में ही बैठक कीजिये," शराफ़ोगलू सहृदयता से हंस पड़ा। "मेहमानों को भी बुलाइये, वे भी अपने विचार बतायें। वैसे, काम यह आपका है..."

७

रुस्तम के कानों में दिन-भर शराफ़ोगलू के शब्द गूंजते रहे: "हार जाओगे, हार जाओगे"। कारा केरेमोगलू नम्र व्यक्ति है, उसने किसी प्रकार के अनुमान नहीं लगाये, लेकिन इस बात की पुष्टि कर दी कि सामूहिक फ़ार्म में बोवाई की तैयारी अच्छी नहीं हो रही है। अकेले शेरज़ाद को ही शाबाशी मिली।

अध्यक्ष अतिथियों को शाम देर गये विदा करके कार्यालय में पहुंचा। सलमान, यारमामेद और गूंगा हुसैन बरामदे में सिगरेट पी रहे थे। अध्यक्ष को देखकर उन्होंने सिगरेटें फेंक दीं और उसके सामने खड़े हो गये।

खिन्न रुस्तम ने अपने परिजनों के पास से निकलकर कमरे का दरवाज़ा खोला, ओवरकोट उतारा और टोपी सोफ़े पर फेंककर बुलंद आवाज़ में चिल्लाया:

"आओ! वहां ठिठुर क्यों रहे हो..."

उसके चहेते अंदर जाकर सोफ़े पर बैठ गये। यारमामेद ने अत्यन्त सावधानीपूर्वक अध्यक्ष की टोपी एक तरफ़ रखी और अपने मेढक के पंजों जैसे हाथ सीने पर आड़े रख लिये; हुसैन ने अध्यक्ष से आंखें बराबर कीं; सलमान ने असन्तुष्ट मुखमुद्रा में मुंह पर मुक्का रखकर जंभाई ली।

चुप्पी काफ़ी देर छायी रही, अन्त में रुस्तम ने कहा:

"शुक्रिया!"

सबने हैरत में एक दूसरे की तरफ़ देखा।

"तहे दिल से शुक्रिया," अध्यक्ष ने दुबारा कहा और अपनी कुरसी से उठे बिना सिर झुकाया।

"क्या हुआ, कीशी?" यारमामेद ने पूछा।

"हुआ यह है, चालाक लोमड़ी, कि तुम सब से, टुकड़खोरो, मैं ऊब

गया हूं, जाड़े में बारिश और गरमी में सूखे से भी ज़्यादा! मैं हज़ार बार कह चुका हूं कि गूंगा हुसैन किसी काम का टोली-नायक साबित नहीं हो सकता – इसमें अक़्ल की कमी है... क्या तुमने इसे नहीं थोपा था मुझ पर?"

रुस्तम जब तक आगबबूला होता रहा, उन पर धमकियों और लानतों की बौछार करता रहा, यारमामेद व हुसैन बीच-बीच में याचनापूर्ण दृष्टि से सलमान की तरफ़ देखते रहे।

जब सलमान ने जवाबी हमला बोल दिया, वे हैरान रह गये।

"अगर हम आपको ख़ुश नहीं कर सके हैं, तो हमें निकाल बाहर करना बेहतर होगा। और वह भी जल्दी से जल्दी। आपने, कामरेड रुस्तमोव, मुझे ऊंचा उठाया, बाप की तरह मेरा ख़याल रखा, इसके लिए मैं मरते दम तक आपका एहसानमंद रहूंगा। लेकिन अब अलग होना बेहतर होगा। मैं कभी ओहदे या तनख़्वाह के पीछे नहीं भागा! मुझे जाने दीजिये – बाकू चला जाऊंगा, किसी न किसी तरह दो जून रोटी कमाकर गुज़र-बसर कर लूंगा!"

"यह क्या कह रहा है? यह क्या कह रहा है?" रुस्तम भौचक रह गया।

सलमान ने धीरे-धीरे रूमाल निकालकर उसमें ज़ोर से नाक साफ़ की और उससे भी ज़्यादा दुःखी स्वर में आगे बोला:

"शेरज़ाद हिदायतें देता है, नजफ़ हुक्म चलाता है, सक्रिय सदस्या तेल्ली चाची क़दम-क़दम पर गालियां देती है। यह भी कोई ज़िन्दगी है?"

"ओफ़, कितना अक़्लमंद है, शैतान, कितना अक़्लमंद है!" यारमामेद ने सोचा।

"और फिर ऊपर से शिक्षा विभागाध्यक्ष आकर आलोचना और आत्मालोचना के बहाने सस्ती लफ़्फ़ाज़ी करने लगता है! ..हां, हम तुम्हारी तरफ़दारी भी करते हैं, रुस्तम चाचा, और सामूहिक फ़ार्म की इज़्ज़त के लिए भी लड़ते हैं। लेकिन नतीजा क्या निकलता है? हमें तुम्हारी ही आंखों में नफ़रत झलकती दिखाई देती है!"

"अरे, अरे, अरे..." रुस्तम बुदबुदाया। "तुम्हारी कथनी और करनी में अन्तर है।"

"अन्तर कैसे है?" सलमान पूरी तरह रूठ गया। "वैसे हुआ क्या? हुसैन के खेत में पांस नहीं पहुंचायी गयी? आधा हेक्टेयर ज़मीन दलदली

हो गयी? क्या मुसीबत आ गयी!.. मुझे एक दिन के लिए 'लाल झण्डा' में भेजिये, क़सम खाकर कहता हूं, मैं इससे दस गुना ज़्यादा ख़ामियां ढूंढ़कर ले आऊंगा!.. ऐसा कोई सामूहिक फ़ार्म नहीं है, जिसमें कमियां न हों। सबसे मुख्य बात यह है कि मेहमान किस चीज़ को तिरछी नज़रों से देखता है – अच्छे को या ख़राब को। अगर हम मामूली बातों के कारण घबरा गये, तो सारी मुग़ान में हमारी खिल्ली उड़ायी जायेगी!"

यारमामेद समझ गया कि अब उसके साज़ का तार छेड़ने की बारी है।

"मोहतरम रुस्तम चाचा!" उसने सलमान के चुप होते ही बोलना शुरू कर दिया। "अगर तुम्हें मेरे ख़ून से कुछ फ़ायदा हो, तो, मेहरबानी करके, बड़ी ख़ुशी से पियो, बूंद-बूंद करके गिलास भर-भरके... तुम असली अध्यक्ष हो! और कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं है। हम जनता को ख़ुश करने के लिए हर सम्भव कोशिश करते हैं। और जो कमियां नज़र आयी हैं, उन्हें दूर कर देंगे, इसका मैं वादा करता हूं। और प्रतियोगिता का झण्डा पतझड़ में तुम्हारे हाथों में थमा दिया जायेगा।"

गूंगे हुसैन ने वफ़ादार की तरह वृद्ध से आंखें बराबर कीं और मुंह से टिटकारी मारी।

"दुश्मन गंदगी फैला रहे हैं, दुश्मन," सलमान ने आगे कहा। "अनाम पत्र लगातार आये जा रहे हैं।"

यह शब्द सुनते ही रुस्तम चौंक उठा। सचमुच, दिन में शराफ़ोगलू ने उसे बताया था कि फिर कोई चिट्ठी आयी है... दुश्मन, चारों तरफ़ दुश्मन हैं! लफ़्फ़ाज़ गोशातख़ां को भी शायद ख़बर पहुंचायी गयी है, इसीलिए वह यहां सूंघने भागा आया कि जलने की बू आ रही है या नहीं। बेशक, रुस्तम के पास अपने अधीनस्थों पर क्रुद्ध होने का आधार था। लेकिन उसे इतनी आसानी से कहना माननेवाले सहायक कहां मिलेंगे? वे सारी झिड़कियां डाक्टर की लिखी गयी कड़वी गोलियों की तरह निगल गये। इसकी क़ीमत समझनी चाहिए! सब बिना चूं किये सह लेते हैं। अभी रुस्तम ने उनके कान अच्छी तरह उमेठ दिये हैं, एक साल के लिए काफ़ी होगा, कभी भूलेंगे नहीं...

उस समय उसने केवल व्यवस्था स्थापित करने के लिए दिखावटी ग़ुस्से में कहा कि वह आलसियों और टुकड़ख़ोरों पर रहम नहीं करेगा, कि उन्हें आस्तीनें चढ़ाकर काम में जुट जाना चाहिए और यह भी कि ज़रूरत पड़ने पर वह किसी भी टोली-नायक के साथ ख़ौफ़नाक ढंग से पेश आ सकता

है। और पशुपालन फ़ार्म की जांच का काम अभी टाला जा सकता है। सचमुच यह समय इसके लिए उपयुक्त नहीं है – बोवाई करनी है, वसन्त की बोवाई!

८

रुस्तम ने उसी शाम को अपने घर में भी व्यवस्था स्थापित करने की ठान ली। पहले तो वह ग़ुस्से से उफनता बरामदे में चहलक़दमी करता रहा, फिर पत्नी से बच्चों को बुलाने को कहा। सकीना ने व्यर्थ उसे मनाने की कोशिश की कि बहुत रात हो चुकी है और वह ख़ुद भी थक गया है, पर वह अपनी पर अड़ा रहा।

गराश व माय्या अनिच्छापूर्वक अपने कमरे से निकलकर आये। पेरशान को किसी ने नहीं बुलाया, पर वह स्वयं आ पहुंची और सोफ़े पर पैर ऊपर रख, माय्या के कंधे पर सिर टिकाकर बैठ गयी।

"अब्बा को युद्ध के बारे में कुछ सुनाना चाहिए," उसने अनुरोध किया। "घर में कुछ ऊब-सी लगने लगी है..."

और उसने अंगड़ाई लेते हुए जंभाई ली।

पिता उसके इन शब्दों के लिए उसे बड़ी ख़ुशी से डांट-डपट देता, पर उसने उसे केवल आंखें दिखाने तक सीमित रखा और अपनी बायीं मूंछ पर कई बार बल दिये।

बेटी ने इसको कोई महत्त्व नहीं दिया...

पिता ने गराश से कठोर शब्दों में कहा कि अच्छे बेटे बाप का बोझ कम करने के लिए अपना कंधा लगा देते हैं, जबकि उसके बेटे ने उसके सिर पर एक फालतू पत्थर डाल दिया है।

"आख़िर मैंने समझा तो दिया कि मामला क्या था!" गराश भड़क उठा।

"तुम्हारी बात पिता के घावों पर नमक छिड़कने जैसी है।"

बहू के साथ रुस्तम की बात लम्बी हुई। वह माय्या को कई बार आगाह कर चुका था कि वह जवान है, ज़िन्दगी के बारे में कुछ नहीं जानती, इसलिए उसे बहुत सावधान रहना चाहिए। वह आख़िर उस मनहूस लफ़्फ़ाज़ गोशातख़ां की गाड़ी में क्यों बैठी? अच्छा, उसने उसे छोड़ आने को कहा था? और अगर रेस्तरां चलने को कहता, तो भी क्या तैयार हो जाती?

आख़िर माय्या को गोशातख़ां के नीच, ओछे स्वभाव के बारे में रुस्तम के विचार मालूम हैं। आख़िर वह ससुर की हिदायतें नहीं मानती है? माय्या केवल इंजीनियर नहीं है, बल्कि रुस्तमोव परिवार की सदस्या भी है, इसका मतलब यह है कि उसे हर मामले में और हमेशा रुस्तम की तरफ़ रहना चाहिए और उसे नज़र आयी सारी कमियों के बारे में केवल उसे ही बताना चाहिए।

"मेरा परिवार ऐसा होना चाहिए," और रुस्तम ने मुट्ठी कसकर हवा में हिलाई, "ताकि कोई एक उंगली को दूसरी से अलग न कर सके। और जो उंगली ख़ुद अलग होगी, उसे मैं काटकर फेंक दूंगा।"

"कुछ समझ में नहीं आता मेरी, कुछ समझ में नहीं आता..." माय्या जवाब में केवल इतना ही कह पायी।

"तुम तो तेल्ली चाची के साथ मिलकर मेरे ख़िलाफ़ अनाम पत्र भी लिखने लगतीं!" रुस्तम चिल्लाया। "तुम मेरे पास, सिर्फ़ मेरे पास आकर कहतीं कि नाली ख़राब हो गयी है या गूंगा हुसैन गेहूं की फ़सल में ठीक से पानी नहीं दे रहा है। मीटिंग करने की क्या ज़रूरत थी?"

रुस्तम मेज़ से उठ खड़ा हुआ।

"मैंने जो कहा, उस पर सोच-विचार कर लो! शब-बख़ैर!.."

और वह सोने के कमरे में चला गया।

सकीना व परेशान माय्या को ससुर की बात पर ध्यान न देने के लिए मनाती रहीं... लेकिन उसे जैसे सान्त्वना की ज़रूरत ही नहीं थी, वह पूर्णतया शान्त रही और सिर-दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गयी।

जब गराश आया, वह शाल लपेटे चुप रही, मानो ठिठुर गयी हो। पति को भी कहने को कोई उपयुक्त बात नहीं सूझ पायी।

अन्त में माय्या ने कहा:

"सुनते हो, चलो हम बड़ों से अलग रहने लगते हैं। दूसरा रास्ता मुझे नज़र नहीं आता।"

गराश स्वयं भी अनेक बार ऐसा निर्णय लेने के बारे में सोच चुका था, लेकिन इस समय उसे बहुत बुरा लगा, आश्चर्य भी हुआ कि पत्नी ने ऐसे शब्द इतनी शांति से कह दिये। इसे क्या, परायी जो ठहरी!.. लेकिन उसे तो बाप, मां और बहन को छोड़कर जाना पड़ जायेगा। और लोग क्या कहेंगे? पारिवारिक जीवन शुरू से तो हमेशा ठीक से नहीं

चलता, पुश्तैनी घर छोड़कर चला जाना सबसे आसान होता है। बुज़ुर्ग का कुछ लिहाज़ करना ज़रूरी होता है।

"लेकिन रात में तो हम यहां से जायेंगे नहीं। लेट जाओ," वह म्लान स्वर में बड़बड़ाया।

अपमान के कारण माय्या का दिल उचटने लगा। क्या गराश नहीं देखता है कि वह घर में शान्ति बनाये रखने के लिए सब सह रही है। पर सहनशीलता की भी एक सीमा होती है।

उस रात उन्हें अपना बिस्तर ठण्डा लगा।

दसवाँ परिच्छेद

१

हल अछूती धरती के भारी-भारी ढेले उलट-पुलट रहे थे, ट्रैक्टरों के पीछे गहरी हलरेखाएं खिंचती जा रही थीं। गराश चालक की सीट पर बैठा ध्यानपूर्वक अग़ल-बग़ल देखता जा रहा था। अनजुती ज़मीन पर खुरंड की तरह जमी सूखी घास का हर क्षण कम होता जाते और ट्रैक्टर के पीछे-पीछे भेड़ के ऊन जैसी मुलायम, नम, गहरी काली मिट्टी को बिखरती देखकर बहुत सुखद लग रहा था... उसे जोताई करना अच्छा लगता था, हर मौसम में स्तेपी में दिन भी और रात भी गुज़ारना अच्छा लगता था— अच्छे मौसम में भी, बरसात में भी,—जवानी में सब अच्छा लगता है!

वसन्तकालीन फ़सल के खेत के दूसरे हिस्से पर नजफ़ का ट्रैक्टर काम कर रहा था; दूरी के कारण भ्रम हो रहा था, लगता था जैसे उसका ट्रैक्टर एक ही स्थान पर रुका हुआ है।

उन्होंने जोताई भोर में शुरू की थी और खेत के बीचोंबीच एक दूसरे से मिलने और पिछड़नेवाले द्वारा जीतनेवाले को पुलाव खिलाने की शर्त तय की थी।

"मेरी गिज़ेतार को या तुम्हारी माय्या को, दोनों में से एक को खाना पकाना पड़ेगा," नजफ़ ने कहा।

"हां, तुम्हारी जैसी बीवी के साथ आसान होता है," गराश सोच

रहा था, "वह सीधी-सादी है।" उसे घर के झगड़े याद हो आये और मन खट्टा हो गया। "क्या वह पत्नी को पुलाव पकाने के लिए कह सकेगा? नजफ़ क़िस्मतवाला है, वह ऐसे सवाल के बारे में सोच-विचार भी नहीं करेगा।"

कुछ बातें इससे और भी बुरी हुई थीं, जिसके कारण गराश दिन-प्रतिदिन खिन्न होता जा रहा था। लोग कहते हैं कि माय्या पराये मर्दों के साथ आवश्यकता से अधिक मिलनसार है।

एक हफ़्ता हुए गराश ने यूं ही बातों ही बातों में उससे पूछ लिया था:

"तुम्हारा क्या ख़याल है, कोई लड़का शादी करके कुंवारे की तरह रह सकता है?"

"अगर कुंवारपन में ढंग से जिया हो, तो रह सकता है।"

"तुम्हें क्या अच्छा लगेगा, अगर मैं परायी औरतों के साथ मीठी-मीठी बातें करने लगूं?"

"तुम अपने अब्बा की तरह सोचते हो।"

"अब्बा अक़्लमंद और इंसाफ़पसंद हैं," गराश ने कुछ बुरा-सा मानते हुए कहा।

"हमेशा नहीं। पारिवारिक जीवन के बारे में उनके विचार... जानते हो, मैं उन्हें नहीं स्वीकार कर सकती। मैं चाहूंगी कि मेरा पति स्वतंत्र हो, चिन्तन में भी और काम में भी। सच कहूं, तो तुम्हारे अब्बा कुछ अरसे से मुझ पर थोड़ा खीज रहे हैं, और उन्हें देख-देखकर तुम भी खीजने लगे हो।"

"तुम्हें तो कुछ भी कहना मना है—फ़ौरन जवाब में पूरा भाषण दे देती हो!"

"कहां भाषण देती हूं!"

इस मन कड़वा कर देनेवाली बातचीत के बाद गराश ने फ़ैसला किया कि वह पूरा एक सप्ताह दूरस्थ खेत में काम करेगा, इसलिए रात में भी खेत-कैंप में रहेगा।

"ठीक है!" माय्या का चेहरा उतर गया, उसने सांस रोक ली और फिर गहरी सांस छोड़ी।

गराश के लिए समय पहाड़ हो गया था, मानो वह ट्रैक्टर पर नहीं, किसी बैलजुती, चर्र-चूं करती गाड़ी पर बैठा हो। शाम को वह खेत-कैंप में ऊबता और घुटता रहता, लड़कों के गीतों व मज़ाक़ों से उसका मन नहीं

बहलता, मन करता सब यूं ही छोड़कर गांव में अपनी पत्नी के पास चला जाये...

उसने ट्रैक्टर नाली के पास खड़ा करके लोहे के टुकड़े से हलों पर लगी गुंधे आटे-सी चिपचिपी मिट्टी साफ़ की और देखा कि नजफ़ कहां है। मालूम पड़ा कि वह उसके बराबर-बराबर चल रहा था।

"सलाम, कामरेड, सलाम!" शराफ़ोगलू का प्रसन्न स्वर सुनाई दिया।

गराश ने काले पेट्रोल में सने अपने दस्ताने उतारकर उससे हाथ मिलाया।

"ज़मीन कैसी है, ज़रूरत से ज़्यादा नम तो नहीं है?"

"बिलकुल ठीक है। हल के छूते ही आप ही बिखर जाती है। कह सकते हैं कि ज़मीन मुस्कराकर हमारी और आपकी ओर देख रही है, कामरेड उपनिदेशक।"

"अरे, रफ़्तार बढ़ाओ, रफ़्तार बढ़ाओ, बहादुरो! रुस्तम को जल्दी से जल्दी ख़ुश करना चाहिए: मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन ने उससे किये अपने वादे पूरे कर लिये हैं।"

खेत फिर ट्रैक्टर की घरघर से गूंज उठा। गराश ने पलटकर देखा और शराफ़ोगलू को हलरेखा पर डग भर-भरकर चलते जोताई की गहराई जांचते हुए पाया। "सारी ज़िन्दगी इन्होंने खेत में बिताई है!" गराश ने उसके बारे में सोचा। पिछले कुछ समय से उसे शराफ़ोगलू से लगाव हो गया था: उसे उसका लोगों से काम लेने का ढंग अच्छा लगता था—न उन पर चिल्लाता था, न हुक्म चलाता था, बल्कि उन पर विश्वास करता था और उन्हें बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह देता था। शराफ़ोगलू से बात करना भी प्रीतिकर लगता था। ऐसी बातचीत के बाद गराश अपने को हमेशा समृद्ध अनुभव करता था। उसे आश्चर्य था कि उसके पिता को लोगों से उसी तरह सहजता से व बिना परेशान किये बात करना क्यों नहीं आता?

उसके पास के टुकड़े में गिज़ेतार की उपटोली मिट्टी में वसंतकालीन नमी रोके रखने के लिए हेंगा चला रही थी; ट्रैक्टर-चालक ने गराश की तरफ़ देखकर अपनी टोपी उतारकर सौजन्यतापूर्वक हिलाई, मानो पूछ रहा हो: "क्या हाल है?" गराश ने भी हाथ हिलाया: "सब ठीक चल रहा है!"

दोपहर के खाने के समय स्पष्ट हो गया कि नजफ़ पिछड़ गया है: मामूली-सी गड़बड़ हो गयी और उसे ट्रैक्टर रोकना पड़ गया। उसने विजेता को बधाई देकर पहले से तैयार किया हुआ वाक्य कहा:

"मेहनत के मामले में रुस्तमोव ख़ानदान के क्या बूढ़े और क्या जवान, सभी साह बन जाते हैं!"

नजफ़ मन-ही-मन अपनी हार पर ख़ुश हो रहा था, क्योंकि वह खाने का शौक़ीन था और जानता था कि अगर उसकी पत्नी ने पुलाव पकाया तो सब उंगलियां चाटते रह जायेंगे।

ट्रैक्टर-चालक गिज़ेतार के खेत की ओर मुड़ गये।

"ख़बर बहुत ख़राब है, भाभी," गराश ने सिर हिलाया। "अपने मियां को ज़रा दबाकर रखो, वरना आमदनी में से एक कोपेक भी नहीं बचेगा!" और उसने पुलाव खिलाने की शर्त के बारे में बता दिया।

"अगर मैं न होती, तो इनका कभी का बेड़ा ग़र्क़ हो गया होता," गिज़ेतार ने ठण्डी सांस लेकर कहा और पति की तरफ़ प्यारभरी नज़रों से देखा। "पर पुलाव बोवाई के बाद मिलेगा – मिनट-भर की फ़ुरसत नहीं है।"

नजफ़ आदतन पत्नी के तारीफ़ के पुल बांधने लगा:

"मुझे इस पर गर्व है, यह मेरी शान है! लेकिन पुलाव फिर भी बनाना ही चाहिए, कम-से-कम आज शाम को ही सही।"

"तो फिर ख़ुद ही पका लो," गिज़ेतार ने उदारतापूर्वक अनुमति दे दी और तेल्ली चाची की उसे दी गयी आवाज़ सुनकर भाग गयी।

मालूम पड़ा कि जवान ट्रैक्टर-चालक के इंजन में कुछ खराबी हो गयी थी। नजफ़ उसकी मदद करने रुक गया, जब कि गराश सीटी बजाता अपनी टोली के खेत-कैंप की ओर रवाना हो गया। खेत-कैंप पत्थर की बनी, कच्चे फ़र्शवाली साकल्या (काकेशियाई लोगों की झोंपड़ी) में था, चारों ओर घास पर खनिज खाद की बोरियां, पेट्रोल के ड्रम पड़े थे, घोड़ागाड़ियां खड़ी थीं। खूंटे से बंधा घोड़ा बड़े मज़े से सूखी घास खा रहा था।

गराश उस मामूली-से सुख-सुविधारहित घर में पूरे एक सप्ताह रात को सोता रहा। अंगड़ाई लेने पर उसे अपनी पत्नी की गरम-गरम गुदगुदी सेज याद आने लगी और उसका रह-रहकर तेज़ी से धड़क उठनेवाला दिल माय्या के लिए और भी ज़ोर से तड़प उठा। आख़िर हमें क्या ज़रूरत है झगड़ने की, क्या ज़रूरत है? ग़लतफ़हमियों के सारे कारण अब उसे बहुत मामूली और व्यर्थ प्रतीत होने लगे...

घर में दाख़िल होने पर गराश आश्चर्य के कारण जड़वत रह गया: लकड़ी के फ़र्श का जिस पर रात में ट्रैक्टर-चालक एक दूसरे से सटे सोया करते थे और जहां भेड़ की खालों, मैली खोलियोंवाले तकियों का ढेर लगा

रहता था, कायापलट हो गया था, सूखी घास भरे गद्दों पर सलीक़े से कम्बल बिछाये हुए थे, सफ़ेद-झक तकियों का हमवार अम्बार लगा हुआ था।

"बड़ी दिलचस्प बात है, यह किसने किया?"

"कुछ भले लोग मिल गये, कामरेड!" उसे पीछे से खनकती आवाज़ सुनाई दी।

उसने मुड़कर देखा। रेशमी कुरते पर सफ़ेद एप्रन पहने, कमरे को इत्र की ख़ुशबू से महकाती, मुस्कराती नज़नाज़ दरवाज़े में खड़ी थी।

"ऐसे टकटकी बांधे क्यों देख रहे हो? क्या पहचाने नहीं?"

गराश को उससे मिले अरसा हो चुका था। उसे वह बेडौल, सूखी युवती के रूप में याद थी, पर अब वह सुन्दर, गदरायी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण स्त्री हो चुकी थी।

"पहचानता हूं, पर तुम यहां कैसे आ गयीं?" गराश घबरा गया।

"भैया ने भेजा है। उन्होंने कहा कि सारे लोग खेत में हैं, उनका ख़याल रखना चाहिए, दुर्घटना होने पर उनकी प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए। उन्होंने मुझे दवाइयों का बैग और दवाइयां दीं..."

"ऐसे काम की ख़ातिर तो श्रमदिनों की भी परवाह नहीं होती," गराश खुरचकर साफ़ की हुई मेज़ पर बैठते हुए ख़ुश हुआ।

"मैंने तो जहां भी काम किया, किसी ने शिकायत नहीं की," नज़नाज़ नख़रीली अदा से मुस्करायी।

"पट्टी बदलोगी?" और गराश ने जल्दबाज़ी में तेल में चिकटी लीर बंधी उंगली उसे दिखायी।

नज़नाज़ भारी कूल्हे मटकाती बाहर गयी, बैग लेकर आयी, उसके इत्र की सुगन्ध के साथ टिंचर की गंध मिली और एक मिनट में गराश की स्पिरिट से साफ़ की हुई उंगली पर साफ़ पट्टी बांध दी गयी। नज़नाज़ के झुकने से उसके गदराये उरोज युवक के कंधों का स्पर्श कर रहे थे और रबड़ की गेंदों जैसे लचीले घुटने गराश के पैरों से सटे हुए थे।

"देखो, यह कितनी स्नेहमयी और चिन्ताशील है!" उसने कृतज्ञतापूर्वक सोचा।

किवाड़ चरमराया और कमरे में नजफ़ व सलमान घुस आये।

"वाह, कितनी अच्छी कंपनी है!" नजफ़ चिल्ला उठा। "हम मशीन-आपरेटरों के लिए अच्छी सुविधाएं जुटायेंगे! समाचारपत्रों के लिए फ़ोटो खींचने का यही समय है। ज़रूर छापेंगे। तुम गयीं नहीं, नज़नाज़? तुम्हारी

छुट्टी तो ख़तम भी हो चुकी है। जरूर बाकू में तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे होंगे न?"

"छुट्टी मैंने बिना वेतन बढ़वा ली है। सलमान ने नहीं जाने दिया, आप लोगों का ख़याल रखने को कहा," नज़नाज़ हंस पड़ी।

"देखती रहो, पतझड़ में सामूहिक फ़ार्म में अस्पताल खोल देंगे, फिर हम तुम्हें हमेशा के लिए अपने पास बुला लेंगे," सलमान ने कहा।

"नहीं, नहीं, मैं सुसंस्कृत जीवन की आदी हो चुकी हूं, यहां तो बोरियत के मारे मर जाऊंगी," नज़नाज़ प्यारभरी नज़र गराश पर डालकर शिकायतभरे स्वर में हकलाती हुई बोली।

नज़नाज़ की कल्पना में शहर में सुसंस्कृत जीवन का अर्थ भड़कीले रंगबिरंगे कपड़े पहनकर, ख़ूब पाउडर पोतकर, इत्र लगाकर सहेलियों के साथ बाकू की चौड़ी सड़कों पर घूमना, शाम को नाच-पार्टियों में जाना और गम्भीर प्रकृति के पुरुषों से परिचय बढ़ाना था।

"बस सलमान की शादी करवा दूं। उसके फ़ौरन बाद चली जाऊंगी," उसने आगे कहा और फिर चंचल तिरछी नज़रों से गराश की तरफ़ देखा।

"बहुत अच्छी बात है," नजफ़ ने अनुमोदन किया और फ़र्शी तख़्तों के नीचे से खाने के सामान की टोकरी निकालकर मेज़ पर रोटी, अण्डे, गोश्त और प्याज़ रख दिये। "आइये, खाइये, नहीं तो फिर थोड़ी देर में काम संभालना होगा!"

"अभी हाथ धो आती हूं," नज़नाज़ ने कहा और दरवाज़े में खड़े-खड़े गराश को आवाज़ दी: "अरे, पानी डालो न मेरे हाथों पर! कैसे बुद्धू हो!"

"जाओ, जाओ, उसका कहा करो!" नजफ़ ने डपटा। गराश ने ग़ुस्से में घूरा, पर उसका कहा कर दिया।

खाने के बाद नज़नाज़ ट्रैक्टर-चालकों के पीछे-पीछे खेत में चली गयी। उसका एप्रन मख़मली काली मिट्टी की पृष्ठभूमि में श्वेत गुलाब-सी खिल रही थी। नजफ़ ने झाड़ियों में से बनफ़्शे के कुछ फूल तोड़कर एक गुलदस्ता बनाया और मज़ाकिया अंदाज़ में सिर झुका, सीने पर हाथ रख उसे पेश किया।

नज़नाज़ ने उसे धन्यवाद देकर फूलों को सूंघा और गुलदस्ता गराश की ओर बढ़ा दिया।

"निशानी के तौर पर।"

उसने अग़ल-बग़ल देखकर कि कहीं आस-पास गिज़ेतार तो नहीं है, वरना वह फ़ौरन पेरशान को या माय्या के कानों में कह देगी, गुलदस्ता ले लिया। वह महसूस कर रहा था कि नज़नाज़ अपने चुनौतीभरे नख़रों के कारण एक प्रकार से उसे मदहोश कर रही है और उस प्रलोभन से छुटकारा पाने के लिए उसने व्यावहारिक स्वर में मित्र से कहा:

"शुरू करें।"

"हां, वक़्त हो गया है," सलमान ने जोशीले स्वर में कहा; जब तक उसकी बहन गराश पर "हमला" बोलती रही, वह एक ओर खड़ा देखता रहा था। "इस टुकड़े पर बोवाई हम वर्ग-गुच्छ पद्धति से करेंगे। कम-से-कम एक हेक्टेयर से तीस क्विंटल ऊंची क़िस्म की कपास मिलनी चाहिए। किसी न किसी तरह पूरी कोशिश कीजिये, दोस्तो। बोनस की मैं गारंटी देता हूं।"

"हम 'किसी न किसी तरह' नहीं, सचमुच पूरी कोशिश करेंगे!" नजफ़ ने उसे आश्वासन दिया और ट्रैक्टर शीघ्र ही घरघरा उठे, अपने हलों से मुग़ान की अछूती धरती की उर्वर मिट्टी को जोतते तैरते-से आगे बढ़ने लगे।

२

माय्या दिन-प्रतिदिन उदास होती जा रही थी। पहले उसे लगता था कि पारिवारिक जीवन का अर्थ प्रेम, प्रसन्नता, आनन्द, दुनिया में एकमात्र प्रिय व अभिलषित व्यक्ति – पति के निकटत्व का हर्षावेष होता है; गराश का घर उसकी कल्पना में संगीत, नाच व समोवार के इर्द-गिर्द हार्दिक बातचीत से परिपूर्ण घर था और उसे कभी शंका नहीं हुई थी कि एक के बाद एक सप्ताह एकरस ढंग से बीतने लगेगा और उसके ऊपर ख़ुशियों से कहीं ज़्यादा ज़िम्मेदारियां आ पड़ेंगी।

जब स्त्री अकेली होती है, सब काम आसानी से और सीधे-सादे ढंग से हो जाते हैं। किसी ने उसे अपने घर बुलाया – चली जाती है। किसी मित्र को अपने यहां बुलाने को दिल हुआ – बुला लिया, कोई बुरा नहीं कहता। जैसा मन करे, वैसे कपड़े पहन लिये, कपड़े टांगने में आलस

आया – सोफ़े पर पटक दिये। अवकाश के दिन दोपहर तक बिस्तर में पड़ा रहना अच्छा लगता है – लेटी रही। संगीत सुनने की इच्छा हुई – रेडियो पूरे ज़ोर से खोल दिया।

लेकिन जब स्त्री भाग्य की डोरी किसी पराये के साथ बांधती है, तो दूसरों की पसंद, इच्छाओं और मन:स्थिति का ध्यान रखना पड़ता है; अगर वह चाहती है कि कोई उसकी बात माने, – ख़ुद को भी दूसरों के आगे झुकने को तत्पर रहना होता है; धैर्य, संवेदनशीलता और बुद्धि की सहायता लेनी होती है और छिपाने से क्या फ़ायदा – कभी-कभी चालाकी से भी काम लेना होता है।

यह सब कठिन होता है, पर और भी कठिन हो जाता है, जब नवविवाहित ऐसे परिवार में रहने लगते हैं, जहां अपना पुराना ढर्रा होता है, ऐसे परिवार में, जहां सम्बन्धी उनके जीवन में हस्तक्षेप करना अपना कर्त्तव्य मानते हैं।

रुस्तमोव ख़ानदान में माय्या के लिए ससुर की निरंकुशता असह्य हो उठी थी। उसे पति के अपने माता-पिता से अलग होकर अपना घर बसाने के विचार से भयभीत हो उठने और इनकार करने से आश्चर्य हुआ। गराश जैसे बदल गया था, रूखा और लापरवाह हो गया था। शायद उसे वास्तव मे दूसरी तरह की पत्नी की ज़रूरत है, जो आंगन झाड़-बुहार दे, गोशाला साफ़ कर दे और कलह के बाद पति का इस प्रकार आलिंगन करे, जैसे कुछ हुआ ही ने हो। क्या पता, शायद गराश का उससे प्रेम हुआ ही न हो, बस फ़िदा हो गया और शादी कर ली...

माय्या को कभी-कभी इतना भय लगता कि वह चौंककर पलंग से उठ खड़ी होती, खिड़की के पास जा बैठती और अपने से निरंतर पूछती, खोद-खोदकर पूछती : क्या वह गराश के बिना जी सकती है? अगर वह लगातार कई रातों तक उसी के बारे में सोचती रहती है, इसका मतलब है कि वह उससे कभी बिछुड़ना नहीं चाहेगी। "मैं उसे प्यार करती हूं, प्यार करती हूं," वह बार-बार कहती, "खीजती हूं, निराश हो उठती हूं, रोती हूं, केवल इसीलिए, क्योंकि वह मेरे पास नहीं है।"

अचानक किवाड़ बेआवाज़ खुला और माय्या के सामने मुस्कराता और धूप में बिलकुल काला स्याह पड़ा गराश आ खड़ा हुआ।

पति के अनपेक्षित आगमन से हड़बड़ा उठी माय्या अपने विषण्ण विचारों से तुरन्त मुक्ति न पा सकी और खोयी-खोयी मुस्कान के साथ उसे देखती

रही। जब कि अपना स्वागत प्रेममय प्रगाढ़ आलिंगनों से किये जाने के प्रति आश्वस्त पति की भौंहें तन गयीं।

"इतनी देर आये कैसे?" अंत में पत्नी ने पूछा।

"इधर आनेवाले ट्रक का इन्तज़ार करता रहा। पर तुम क्यों नहीं सो रही हो? क्या चिन्ता है तुम्हें?"

"सब ठीक है, जैसे चलना चाहिए, चल रही है," माय्या ने उदास स्वर में मज़ाक़ किया। "तुम्हारे अब्बा लड़ते हैं..."

गराश ने खीजकर मुंह बनाया। फिर वही पुराना राग...

"और सब मामूली-सी बातों के कारण। तुम तो जानते ही हो कि मैं सुबह व्यायाम करने की आदी हूं। मुझे अपने घर में छुटपन से ही यह सिखा दिया गया था। खुले बरामदे में निकलना अच्छा नहीं लगता। मैंने मां से सलाह की, बढ़ई को हमारे कमरे के आगे के एक कोने में आड़ लगाने के लिए बुलाया गया, पर अब्बा आये और उसे डांटकर भगा दिया... मुझसे तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, जो और भी बुरा लगा। एक न एक दिन आख़िर मेरे धैर्य का बांध टूट जायेगा, कलह शुरू हो जायेगी..."

गराश महसूस कर रहा था कि वह माय्या की आये दिन की शिकायतें सुनते-सुनते थक चुका है। उसने बरबस नज़नाज़ के साथ उसकी तुलना की : वह तो हमेशा हर चीज़ से ख़ुश रहती है, झींखती नहीं है, दु:खी नहीं होती है, मामूली बातों के कारण निराश नहीं होती है, पुरुषों को पसंद आने की, उन्हें ख़ुश करने की कोशिश करती है...

"ठीक है, ठीऽऽक है, पर अब्बा का स्वभाव बदलने की ताक़त मुझ में नहीं है। तुम्हारे पास अपना कमरा है, उसी में नंगी नख़रे करती रहो, जो मन में आये करो।"

"तुम इतने झल्लाकर क्यों बोलते हो?"

"और कैसे बोलूं? आख़िर मैं कोई पत्थर तो हूं नहीं! हफ़्ते भर खेत भटकता रहा हूं, ट्रैक्टर के पास ज़मीन पर सोता रहा हूं, घर भागकर आया और मेरा झींख-झींखकर स्वागत किया जा रहा है। बड़ा अच्छा लगता है न!"

माय्या ने आंसू पोंछ लिये।

"ठीक है, गराश, आगे मेरे मुंह से एक शब्द नहीं सुनोगे।" उसकी आवाज़ भावहीन थी। "लेटोगे?"

"नहीं, खाना दो, खेत लौटना है," गराश झूठ बोला।

उसे आशा थी कि पत्नी रात को रहने के लिए उसकी चिरौरी करेगी, लेकिन माय्या पति के काम को आदर की दृष्टि से देखने की आदी हो गयी थी और उसने बहस नहीं की। गुस्से में आये गराश ने जल्दी-जल्दी सूप खाया और धीरे-धीरे चलता कोई मोटर पकड़ने राजमार्ग पर पहुंच गया।

वह खेत-कैंप में लगभग पौ फटे पहुंचा। उसके आने से जागे ट्रैक्टर-चालकों ने चुभते मज़ाकों से टोली-नायक का स्वागत किया।

"जवान बीवी को घर छोड़कर आना गुनाह है!"

"कहीं काली बिल्ली तो रास्ता नहीं काट गयी थी! लड़ाई हो गयी क्या?"

सुबह नज़नाज़ उनीन्दे और उदास गराश के लिए चाय लेकर आयी। उसकी चेष्टाएं मंद थीं और मुस्कान प्यार भरी। उसने नाश्ते के बाद उसकी उंगली की पट्टी बदल दी और जब गराश के कंधों व गालों पर उसके गदराये उरोजों का फिर स्पर्श हुआ, उसकी सांस फिर रुक गयी।

ट्रैक्टर-चालक जा चुके थे, वह अकेली थी और उसके गहरे रंगे होंठ गराश के चेहरे के बहुत निकट धधक रहे थे, निमंत्रण देते मुस्करा रहे थे, लुभा रहे थे...

"दोपहर के खाने में पुलाव होगा," नज़नाज़ ने कहा।

"इतनी तकलीफ़ उठाने की क्या ज़रूरत है?"

"बस इसलिए कि तुम्हें अच्छा लगे।"

३

शीशा लगे बरामदे में से होकर आती सूरज की प्रखर किरणें खिड़की के पास बैठे शराफ़ोगलू को प्यार से दुलार रही थीं, उसका बदन गरमा रही थीं; वह हाथ में पढ़ा हुआ समाचारपत्र पकड़े उदास बैठा जंभाइयां ले रहा था। उसकी गोदी में बैठा झबरा बिलौटा ऊंघ रहा था; दो महीने हुए वह शराफ़ोगलू को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के फाटक पर भूखा और ठिठुरता मिला था और वह उसे उठा लाया था।

"अंदर आ सकता हूं?" किसी ने बाहर से पूछा।

"मना क्यों करूंगा? आओ।" शराफ़ोगलू ने बिलौटे को सावधानी से

लिखने की मेज़ के पास बिछाये हुए गलीचे के ऊपर रख दिया और अंदर आये नजफ़ की ओर मुस्कराकर देखा: "आओ, आओ..."

अपनी आदत के अनुसार विनम्र, विनोदी नजफ़ ने उपनिदेशक की ओर कोई कागज़ बढ़ाया।

"यह क्या है? अरे, बैठो, बैठो।"

"कपास चुनने की मशीनों की धुरियों के लिए प्रार्थनापत्र है। उनकी मरम्मत करने का वक़्त आ गया है। बोवाई का काम ठीक चल रहा है, हमारे बारे में चिन्ता मत कीजिये, हम कार्यक्रम के अनुसार सामान्य गति से काम कर रहे हैं। छोटी-मोटी टूट-फूट होती रहती है, सो तो होता ही है, हम ख़ुद ही ठीक कर लेते हैं। मशीनें अभी बेकार खड़ी नज़र नहीं आतीं," नजफ़ गूंजते और स्फूर्त्त स्वर में बोल रहा था, उसे शराफ़ोगलू को ख़ुश करना अच्छा लगता था।

"और तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म के क्या हाल हैं?"

नजफ़ की आवाज़ का जोश जाता रहा:

"आप कल ख़ुद गये तो थे, देख लिया..."

शराफ़ोगलू ने हठ नहीं किया और मेज़ पर झुककर प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

"बहुत अच्छा काम छेड़ा है!" उसने प्रशंसा की। "हम तो हर साल अपने को यही तसल्ली दिलाते रहे कि अगस्त से पहले कपास चुनने की मशीनों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और मरम्मत करने की जल्दी नहीं है। लेकिन जब कपास की बोंड़ियां खुलने लगती हैं, तो मालूम पड़ता है कि वे मशीनें पुराने छकड़ों से भी बुरी हैं: कर नहीं पाये, ध्यान नहीं रखा, भूल गये..." शराफ़ोगलू ने दिखावा किया मानो कोम्सोमोलों को स्वयं ही वसंत में उनकी मरम्मत में जुट जाने की सूझी हो, न कि उसने उन्हें मजबूर किया हो। "तुम्हें कपास चुनने की मशीन पसंद है?" उसने चलते-चलते पूछ लिया।

नजफ़ इतने जोश में उचका कि कुरसी खड़खड़ा कर उलट गयी।

"कामरेड उपनिदेशक!" उसने तीन बार छाती ठोककर कहा। "मुझे उस मशीन से प्यार है, ईमान से प्यार है! तीन साल हुए, जब गिज़ेतार अभी मेरी मंगेतर ही थी, मैंने उस बेचारी को खेत में देखा था। पसीने में तर-बतर हुई, तपती धूप में वह कपास हाथों से चुन रही थी। और भोर से शाम ढले तक कोई सोलह घंटे काम होता था... मैंने सोचा था: हमारी

वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं? आखिर हमारे यहां विज्ञान अकादमी है, प्रोफ़ेसर हैं, सहायक प्रोफ़ेसर हैं..." वह कुछ नहीं जानता था कि प्रोफ़ेसर क्या होता है, पर शब्द अत्याधिक प्रभावशाली था। "'ऐ, कामरेड वैज्ञानिको, फ़ौरन कोई ऐसी मशीन बनाइये, जो इन सुन्दरियों को गुलामाना मेहनत से छुटकारा दिला दे! ..' मैंने चिल्लाकर यही कहा। क्या ग़लत कहा?"

"ठीक, बिलकुल ठीक कहा," शराफ़ोगलू ने नजफ़ की व्याकुलता पर मुग्ध होते हुए कहा। "लेकिन अब मशीन तो तैयार कर ली गयी है, फिर भी ऐसे लोग मौजूद हैं, जो उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, उसे काम में लेना नहीं चाहते हैं।"

"उन्हें डर है कि सामूहिक किसान की आय कम हो जायेगी। हम हमारे रुस्तम को दिखा देंगे कि मशीन स्वीकार न करने का क्या मतलब होता है! .. इसीलिए हमने वसंत में ही मरम्मत शुरू कर दी है। मुग़ान है ही ऐसी जगह कि अगर चिलचिलाती धूप पड़ने तक मशीनों की मरम्मत न की जाये, तो कुछ नहीं किया जा सकता है। धूप में तेज़ी आते ही सब उबलने, तपने लगता है, मरम्मत करने में देर हो जाती है।"

मूल मुग़ानवासी शराफ़ोगलू यह नजफ़ के बताये बिना भी जानता था, पर उसकी बात वह अत्यंत ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

"लेकिन, कामरेड उपनिदेशक, मशीन तो मशीन होती है, फिर भी कुदाल तो रह ही गया है! मिट्टी ढीली करने और कपास के पौधों के इर्द-गिर्द मिट्टी के ढूहे बनाने के काम तो हाथ से ही करने पड़ते हैं।" नजफ़ ने अर्थपूर्ण मुद्रा में अपने मोटे होंठ बाहर निकाले।

"इसे खतम करना मुश्किल नहीं है," शराफ़ोगलू ने कहा। "कहने का मतलब है, मुश्किल है," उसने जल्दी से अपनी बात ठीक की, "लेकिन सम्भव है। हम सारे सामूहिक किसानों को क़ायल कर देंगे कि कपास की बोवाई वर्ग-गुच्छ पद्धति से करनी चाहिए, मशीनों को हम सुधारेंगे – फिर कुदाल की ज़रूरत ही ख़तम हो जायेगी!"

"ज़रा हमारे उनको... कोई मजबूर करके तो देखे..."

"आप लोग तो उस पर थूकना चाहते हैं!" शराफ़ोगलू हंस पड़ा।

नजफ़ सकपका गया।

"इतने माननीय कार्यकर्त्ता पर थूकना बेशक ठीक नहीं है," शराफ़ोगलू ने गम्भीर स्वर में कहा। "यह अनुचित है। लेकिन उसके इशारों पर नाचना भी नहीं चाहिए। तय रहा न? बहुत ही अच्छी बात है। जाओ..."

शराफ़ोगलू फिर खिड़की के पास बैठ गया, उसने अंगड़ाई ली और म्याऊं-म्याऊं कर उठे बिलौटे को फ़र्श से उठा लिया। यानी मक्का का काम निबटा दिया गया है और तिपतिया की बोवाई भी पूरी की जा चुकी है। अब सबसे व्यस्त और कठिन समय आ गया था – कपास की बोवाई का समय। अभी तक क्षेत्र के सभी सामूहिक फ़ार्मों में काम समान गति से चल रहा था, कोई पिछड़ता हुआ नज़र नहीं आ रहा था, फिर भी 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म ने शराफ़ोगलू को वास्तव में चिन्ता में डाल दिया था।

जाड़े में उसे इस बात पर ख़ुशी हुई थी कि रुस्तम उससे यदा-कदा ही सहायता मांगता रहा था। शराफ़ोगलू को ऐसे सामूहिक फ़ार्म के कार्यकर्त्ता अच्छे नहीं लगते थे, जो अपने हितों की पूर्त्ति के लिए उच्च सरकारी पदों पर आसीन अपने मित्रों का उपयोग करते थे। लेकिन अब बोवाई अभियान शुरू हो चुका था और रुस्तम पहले की तरह अपने बारे में कुछ जानकारी नहीं दे रहा था। अनाम पत्रों का एक के बाद एक पहुंचना बंद नहीं हुआ था। शराफ़ोगलू 'नवजीवन' में केवल एक दिन ही रहा था, पर उसने वहां बहुत-सी कमियां देखी थीं।

इस बारे में रुस्तम से साफ़-साफ़ बात करना ज़रूरी था और शराफ़ोगलू ने उसे सुबह से ही अपने यहां बुलवा भेजा था।

अहाते में मोटर के बुलंद हार्न की आवाज़ गूंजी। रुस्तम 'पोब्येदा' में से उतर रहा था।

अध्यक्ष को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के अहाते में नजफ़ से मुलाक़ात होने की बिलकुल भी आशा नहीं थी। उसके मन में सदा की तरह सन्देह जाग उठा। "तो शराफ़ ने मुझे इसलिए बुलवाया है!" उसके दिमाग़ में विचार कौंधा।

वह विषण्ण मुखमुद्रा में शराफ़ोगलू के कक्ष में दाख़िल हुआ।

"पाइप पियो, आराम कर लो, बेवफ़ा दोस्त, उसके बाद सुनाओ कि सामूहिक फ़ार्म के क्या हाल हैं," शराफ़ ने नम्रतापूर्वक कहा।

"बेवफ़ा?" क्यों नहीं, बेशक नजफ़ रुस्तम को शराफ़ोगलू की नज़रों में गिरा चुका होगा। रुस्तम ने भौंहें सिकोड़कर तम्बाकू की थैली निकाली। उसकी उंगलियां कांप रही थीं और शराफ़ोगलू ने देख लिया कि इस वसंत के दौरान मित्र के सिर के कितने सारे बाल पक चुके हैं। लेकिन रुस्तम की कठोर व साहसपूर्ण मुखमुद्रा बता रही थी कि वह उम्र को अपने

पर हावी नहीं होने देना चाहता और दृढ़ इच्छाशक्ति से वृद्धावस्था पर विजय पाने की आशा करता है।

"तुम आख़िर पूछते क्यों नहीं हो कि मैं तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म से ख़ुश हूं या नहीं?"

रुस्तम ने अप्रसन्नता से कंधे उचकाये।

"पूछने की ज़रूरत ही नहीं है। फ़ौरन ज़ाहिर हो गया था, जब तुमने खाना खाने से इनकार कर दिया था।" उसने एक कश लगाकर धुएं का एक घना बादल छत की ओर छोड़ा। "तुम सारे ज़िला कर्मचारी एक-से हो। पूरे व्यवहारवादी!"

"मैं तुम से एक दोस्त की तरह मोर्चे के साथी होने के नाते बात कर रहा हूं," शराफ़ोगलू ने उलाहना दिया।

"कैसे भी बात करो, मतलब तो एक ही है!"

"यानी तुम सामूहिक फ़ार्म के हाल से सन्तुष्ट हो?"

तम्बाकू के धुएं का बादल छत की ओर बढ़ा। रुस्तम मौन रहा।

"तुम क्या यह मानते हो कि सारे ज़िला कर्मचारी प्राणहीन मशीनें हैं? क्या यही बात है? हमारे बीच में कुछ ऐसे भी हैं, पर हैं बहुत कम। हम पूरी केशिश करते हैं कि ऐसे लोग बिलकुल ही न रहें... ज़िला कार्यकर्ता होना कोई आसान काम नहीं है, इतना विश्वास रखो। तुम भी तो नेतृत्वकारी कर्मचारी हो, चाहे ज़िला स्तर के न सही। सामूहिक किसान शायद तुम पर भी व्यवहारवादी, बेरहम होने का आरोप लगाते होंगे, क्यों?"

"मुझमें ऐसा दोष नहीं है!" रुस्तम के स्वर में ईमानदारी झलकी।

"बात जैसे ही तुम पर आयी, मालूम पड़ा कि तुम में कोई कमी नहीं है," शराफ़ोगलू ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"अरे, दोस्त, बाल की खाल मत निकालो। हर आदमी में कुछ न कुछ कमी होती ही है। और रुस्तम भी बेदाग़ नहीं है। अगर रुस्तम टेढ़े मिज़ाज का है, तो यह उसका अपना मामला है, इसका वसंतकालीन बोवाई से कोई वास्ता नहीं है।"

"मैं नहीं मानता!" शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया। "कुछ ऐसी कमियां तुम में हैं, जिनसे सैकड़ों लोग परेशान होते हैं। मैं तुम्हें कई बार आगाह कर चुका हूं। सामूहिक फ़ार्म अब विशाल और जटिल उद्योग है, उसका संचालन आंखों पर पट्टी बांधकर और केवल अपने अनुभव और अपनी बुद्धि पर भरोसा करके नहीं किया जा सकता। जब-जब मैं तुम्हें देखता हूं तो

सोच में पड़ जाता हूं: तुम में अपने काम के प्रति उत्साह नहीं है, तुम्हारा जोश कुछ ठण्डा पड़ गया है! और तुम्हारे मातहतों में भी लगन नहीं दिखाई देती।"

"क्या बहुत सारे अनाम पत्र पढ़ लिये हैं?" रुस्तम ने द्वेषभाव से कहा।

"अनाम पत्र भी पढ़ता हूं। क्या तुम्हें भी उनमें दिलचस्पी है?" शराफ़ोगलू ने सेफ़ खोलकर मुड़े-तुड़े लिफ़ाफ़ों में रखे चार पत्र निकाले। "लेकिन मैं इन पर ख़ास ध्यान नहीं देता हूं," उसने पत्र सरसरी तौर से देख रहे रुस्तम की तरफ़ कनखियों से देखा कि उसका चेहरा कैसे बदल रहा है और आगे कहा: "लेकिन मुझ पर पड़े प्रभाव को बेशक ध्यान में रखना पड़ता है।" वह हंस पड़ा। "मैं सोचता था कि तुम अपने काम की कमियों के कारण उदास हो गये हो, पर मालूम पड़ा, दोषी मैं हूं, क्योंकि खाना खाने नहीं रुका। और तुम मुझसे नाराज़ हो!"

"किसी ने ठीक ही कहा है: 'गुस्सा अपनों पर ही आता है'," रुस्तम बड़बड़ाया। शराफ़ोगलू उसे अभी ठीक से नहीं जानता है। बात नाराज़ होने की नहीं है, न ही यह कि उसे उसकी कमियां गिनाई जा रही हैं, सबसे बुरी बात तो यह है कि शराफ़ोगलू रुस्तम का बुरा चाहनेवालों पर विश्वास करता है! किस पर? जैसे नजफ़, जो अभी-अभी उसके कक्ष से निकला था। और अनाम पत्र भी नजफ़ की ही कारिस्तानी है।

शराफ़ोगलू के स्वर में कुछ नरमाई झलकने लगी, मानो उसे ग़ुस्से में अंधे हो रहे रुस्तम पर दया आ गयी हो।

"तुम्हें ग़लतफ़हमी हुई है! नजफ़ ने तो तुम्हारा नाम तक नहीं लिया। हमने सिर्फ़ काम के बारे में बातें की थीं। लोगों के बारे में इतना बुरा नहीं सोचना चाहिए। क्योंकि यह भी अपनी तरह का एक रोग है: आदमी में संदेह का कीड़ा पनपने लगता है और उसे सब अपने दुश्मन नज़र आने लगते हैं।"

रुस्तम ने तुरंत विश्वास कर लिया कि नजफ़ उसके समक्ष दोषी नहीं है, लेकिन उसने फिर भी शिकायत ज़रूर की है।

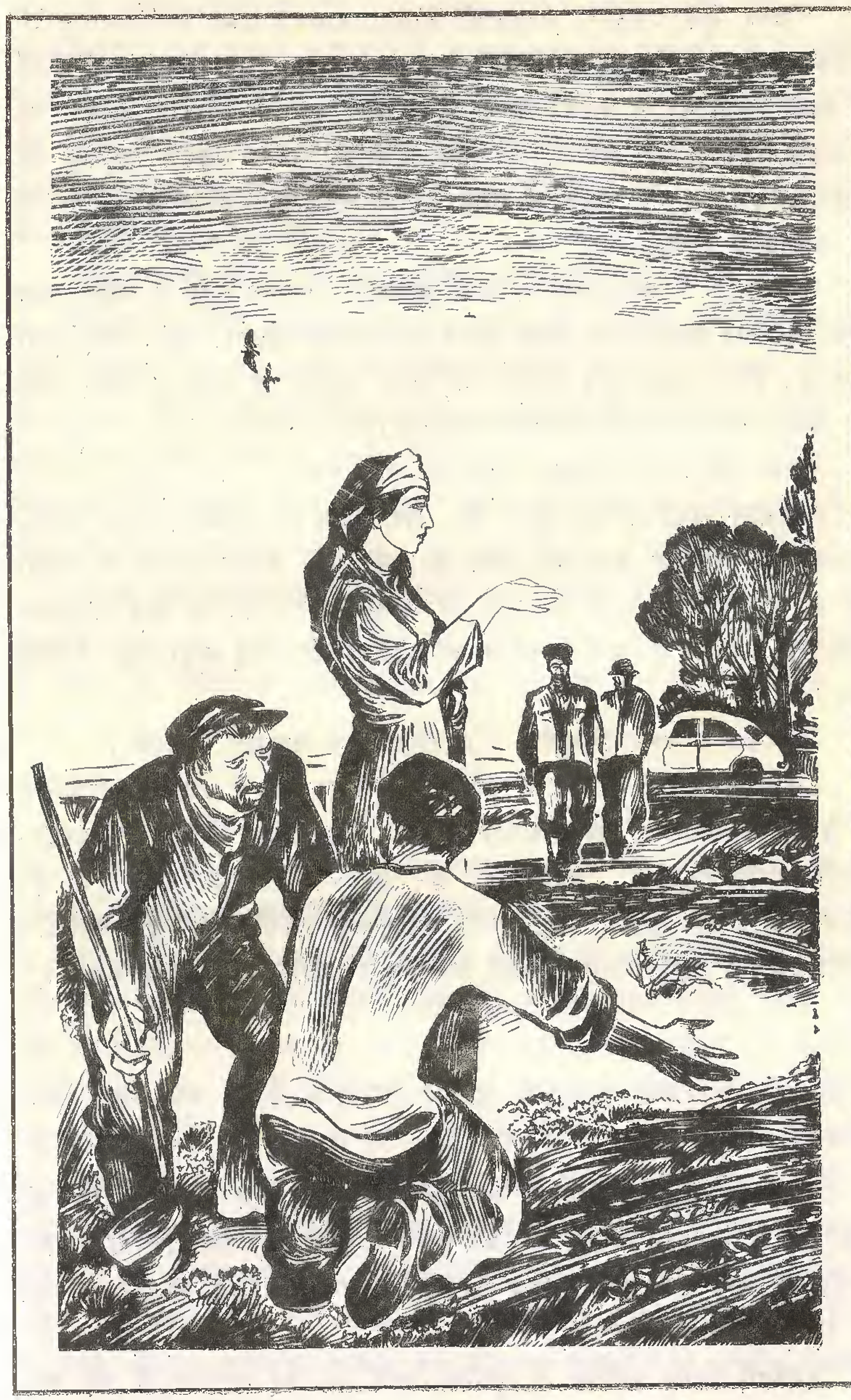
"काश, तुम जानते कि मुझे कितनी मुश्किल हो रही है! मेरे अंदर सब फुंका जा रहा है! दिन-रात दौड़-धूप करता रहता हूं, जी-जान से कोशिश करता रहता हूं, लेकिन शुक्रिया के बजाय नुकताचीनी ही सुनने को मिलती है! नहीं, बेहतर होगा, मैं यहां से छोड़कर चला जाऊं, प्रार्थनापत्र लिख दूंगा, मामूली टोली-नायक बन जाऊंगा। आशा करता हूं, तुम भी

पार्टी की ज़िला समिति से मुझे इससे मुक्ति दिलाने की सिफ़ारिश कर दोगे।"

अगले ही क्षण रुस्तम अपने मुंह से अचानक निकले इन शब्दों के लिए पछताने लगा, पर शराफ़ोगलू ने शायद उन पर कोई ध्यान नहीं दिया था।

"याद है, दोस्त, कैसे सोवियत सत्ता के ऊषाकाल में लेनिन के सीधे निर्देश पर मुग़ान में महत्त्वपूर्ण कार्यों का श्रीगणेश हुआ था?" उसने धीरे से पूछा और पीछे सिर कर, आंखें मूंदकर, मानो इस प्रकार वह अतीत में भली-भांति झांक सकता हो, आगे बोला: "लेनिन ने आज़रबैजान के कम्युनिस्टों को भेड़ों के रेवड़ों द्वारा रौंदी गयी मुग़ान की लवणकच्छ स्तेपी को उसकी उर्वरता वापस लौटाने की सलाह दी थी। निर्माताओं की प्रथम टोलियों के साथ क़सूम केन्गेरली और सेर्गेई बगदात्येव यहां आये थे। हम तब जवान थे, लेकिन तुम सेर्गेई को तो नहीं भूले हो न? दुबला-पतला, कमज़ोर, छोटी-सी नुकीली ठोढ़ी – बिलकुल किशोर था। सब सोचते थे कि ऐसा आदमी मुग़ान की गरमी कैसे सह सकेगा? लेकिन स्थिति तो गम्भीर थी। खाद्य-पदार्थों की कमी थी, मुद्रा का अवमूल्यन हो चुका था, केवल वर्ग-शत्रु ही नहीं, सभी हमारा विरोध कर रहे थे: अज्ञान, संस्कृति का अभाव, धर्मान्धता। लोग बीसियों किलोमीटर से सीमेंट, आटे व चावल की बोरियां पीठ पर ढोकर लाते थे। हमारे आगे बढ़ाये हर क़दम पर हमें अपने दोस्तों को क़ब्रों में दफ़नाना पड़ रहा था। उसके बाद मलेरिया फैल गया, बगदात्येव और केन्गेरली बीमार पड़ गये। वे तेज़ बुख़ार में, फटे होंठ तख़्तों के पलंग पर पीठ के बल लेटे रहते, पर निर्माणकार्य का संचालन करते रहते। निर्माताओं में से कोई छोड़कर नहीं भागा, किसी ने इस्तीफ़ा नहीं दिया। हमारे पिता, हमारे बड़ी उम्र के दोस्त भविष्य की तरफ़ देखते रहे और कभी थकान की शिकायत नहीं की। तो फिर आख़िर तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारा हौसला क्यों पस्त हो गया है? क्या थक गये? मंत्रालय में बात करके तुम्हें स्वास्थ्य-स्थल का पास दिलवा देते हैं, आराम करना, इलाज करवाना... किसी तरह एक महीना तुम्हारे बिना काम चला लेंगे। उसके बाद फिर क़ाम संभाल लेना। दिखा देना तुम्हारे जवानों के से हाथों की पकड़ कैसी है।"

रुस्तम दुःसाहसपूर्ण कार्यों से परिपूर्ण अपनी युवावस्था को स्मरण करता, व्याकुल होता, अपने मित्र की बात सुनता रहा, पर शराफ़ के "तुम्हारे बिना काम चला लेंगे" कहने की देर थी कि रोष के कारण अन्य सारे विचार लुप्त हो गये।



"अभी मुझे दफ़नाना जल्दबाज़ी होगा, दोस्त, अभी मैं ज़िन्दा हूं!" उसने कहा। "मुझे दस दिन की मुहलत दो, अगर सामूहिक फ़ार्म ज़िले में प्रथम स्थान पर न पहुंचे, तो मैं तुम्हें अपने नाम से त्यागपत्र लिखने की इजाज़त देता हूं... अब मैं जा सकता हूं?" उसने उठकर तम्बाकू की थैली लपेट ली, उसे पाइप के साथ जेब में ठूंसा और हथेलियों से तम्बाकू के कण झाड़ लिये।

"ठीक है," शराफ़ोगलू ने कंधे उचकाकर क्लान्त स्वर में कहा। उसे जैसे कुछ याद आया और उसने रुस्तम को रोककर कहा: "हां, याद दिला रहा हूं, दोस्त, अब तुम्हें कपास की चुनाई मशीनों से करने के लिए खेतों को तैयार करने के बारे में सोचना चाहिए।"

रुस्तम इन शब्दों में छिपा उलाहना भांप गया।

"मशीन तभी अच्छी होती है, मेरे दोस्त," उसने जवाब दिया, "जब वह सामूहिक फ़ार्म की आय में कमी नहीं करती। मंत्री से कहना कि वह इस बारे में सोच ले और हमें अच्छी मशीनें दे, जो खेत से फ़सल सफ़ाई से उठाती हैं और आजकल की मशीनों की तरह कूड़ा नहीं फैलाती हैं।"

"लिखूंगा, जरूर लिखूंगा," शराफ़ोगलू ने सहमति दिखायी।

टेलीफ़ोन सुरीली आवाज़ में बज उठा। चोंगा कान से लगाकर शराफ़ोगलू ने अदृश्य सम्भाषी की बात ध्यानपूर्वक सुनी और जवाब में कहा कि रुस्तम-कीशी अभी वहीं हैं, गया नहीं है; हां, उनकी बात हो चुकी है, 'नवजीवन' का अध्यक्ष अभी पार्टी की ज़िला समिति में पहुंच जायेगा। चोंगा रखकर उसने रुस्तम से कहा कि असलान उससे बात करना चाहता है।

४

रुस्तम ख़ुद को कितनी भी तसल्ली क्यों न दिलाता रहा, पर मन को एक अस्पष्ट आशंका कचोट रही थी कि इस वसंत में उसकी स्थिति जीतने-वालों की नहीं है और सामूहिक फ़ार्म के हाल-चाल उतने आशाजनक नहीं हैं, जितने कि उसे लगते हैं...

इसलिए ज़िला समिति से बुलावा आने पर वह पसोपेश में पड़ गया और उसके दिल में हलचल मच गयी।

उसे आंखें चुराते हुए मित्र से पूछना पड़ा: सचिव आख़िर किस बारे में रुस्तम से बात करना चाहता है? मालूम पड़ा कि असलान ने सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को केवल यों ही बुलाया है। लेकिन उसे कैसे मालूम हुआ कि रुस्तम शराफ़ोगलू के पास है? पर रुस्तम के उसके यहां आने में क्या राज़ हो सकता है? शराफ़ोगलू सुबह ज़िला समिति में गया था, वहां उसने बता दिया था...

रुस्तम दुःखी दिल से ज़िला समिति रवाना हो गया।

कलंतर के यहां असलान से मुलाक़ात होने के बाद उस पर पहला असर अच्छा पड़ा था। वह प्रसन्नचित्त सामूहिक फ़ार्म लौटा था: "भले आदमी को फ़ौरन पहचान लिया जाता है। ऐसा आदमी दफ़्तरशाहियों के इशारे पर नहीं नाचेगा। उसके लिए न्याय, ईमानदारी और सार्वजनिक कार्य के हित सर्वोपरि हैं। वह ज़रूर अपनी ठानी करके रहेगा – सामूहिक फ़ार्मों में जान फूंक देगा।"

लेकिन एक सप्ताह बाद ही रुस्तम को परेशानी में डाल देनेवाली एक मामूली घटना हो गयी। और अब वह सोचने लगा था कि ज़िला समिति के सचिव के स्वभाव में बहुत शुष्कता और औपचारिकता है।

भोर में, जब रुस्तम एक दूरस्थ खेत जा रहा था, जहां पहली बार कपास बोयी गयी थी, धुंध आच्छादित निःसीम स्तेपी में उसकी घोड़ी अचानक भयभीत हो कनौतियां खड़ी करके फुफकार उठी। रुस्तम ने रकाबों में खड़े हो आंखें सिकोड़कर देखा। कहीं भेड़िया तो नहीं है? नहीं, थोड़ी दूरी पर, घाटी में पतली-पतली टांगोंवाली मादा चीतल बच्चों सहित चर रही थी। ऐसी मुलाक़ात की कोई सोच सकता है! मुग़ान के प्राचीन वासी चीतल अब ट्रैक्टरों व मोटरों के शोर से डरकर बिखर गये थे, इधर-उधर भाग गये थे। तू कहां से आ टपकी, चंचल सुन्दरी?.. रुस्तम के सीने में अनुभवी शिकारी का दिल कांप उठा, उसने घोड़ी पर चाबुक फटकारा। हिरनी ने छलांग लगायी और पलक झपकते झाड़ी में एक शावक को अपने बदन से ढके ग़ायब हो गयी, लेकिन दूसरा छौना, जो थोड़ा कमज़ोर था, ठोकर खा गया, रुस्तम ने काठी से नीचे झुककर उसे अपने मज़बूत हाथ से पकड़ लिया। भयभीत शावक को ज़ोरदार झुरझुरी हो आयी, उसका दिल बड़ी तेज़ी से धड़कने लगा।

"अहा, दोस्त के लिए कितना अच्छा तोहफ़ा है!" अपनी फुरती से कृश हुआ रुस्तम मुस्कराया।

खेत-कैंप में पहुंचकर उसने चौकीदार को छौने को छकड़े से बांधने और उसे पानी व घास देने को कह दिया। "अहा, कितना अच्छा तोहफ़ा है!" रुस्तम मनोहर, पतली-पतली टांगों व उभरी हुई नम आंखोंवाले शावक को मंत्रमुग्ध-सा देखता रहा।

एक घंटे बाद असलान मोटर में वहां आ पहुंचा। जैसा कि दिख रहा था वह जोत में काफ़ी चलकर आया था – उसके बूट ही नहीं, पतलून भी गीली मिट्टी में सनी हुई थी।

"वाह, रुस्तम-कीशी, यहां जोताई और बोवाई भी बहुत ही बढ़िया की है!" सचिव ने प्रशंसा की। "बहुत क़ाबिले तारीफ़ मेहनत की है! अगर काम आगे भी इसी तरह होता रहे, तो आप लोग कारा केरेमोगलू को कपास की पैदावार में पीछे छोड़ देंगे और आपको ज़िले में प्रथम स्थान मिलना निश्चित हो जायेगा।"

इसकी अपेक्षा न कर रहा रुस्तम आत्मसंतोष से मुस्करा पड़ा, साथ ही उनके चारों ओर जमा हुए सामूहिक किसानों के चेहरे भी खिल उठे।

"पूरा विश्वास रखिये, कामरेड असलान, हम जो कहते हैं, कर दिखाते हैं," रुस्तम-कीशी ने बड़प्पन से कहा। "प्रति हेक्टेयर उपज के बारे में भी चिन्ता मत कीजिये: 'लाल झण्डा' वाले की योजना पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर की है, जब कि हमने प्रबंध समिति में प्रति हेक्टेयर सत्ताईस क्विंटल पैदा करने की ठानी है!"

"इस बारे में मैं क्षेत्रीय समाचारपत्र में पढ़ चुका हूं," असलान रुस्तम को और सामूहिक किसानों को भी यह स्पष्ट करते हुए मुस्कराया कि वह प्रतियोगिता की पूरी जानकारी रखता है। "लिखना तो आसान होता है, पर उसे कर दिखाना मुश्किल होता है।"

"इसीलिए तो मैंने तब 'लाल झण्डा' में बहस की थी," रुस्तम ने याद दिलायी। "जनता की सहमति के बिना एक क़दम भी नहीं चलेंगे। जैसी जनता की इच्छा, वैसी ही मेरी!"

"यह बिलकुल सही बात है," ज़िला समिति के सचिव ने सहमति प्रकट की और मृगशावक को देखने झुका और उसके माथे के गंजे भाग तथा रेशमी और स्पर्श से सिहर उठी भूरी मटमैली खाल पर सहला दिया।

"कितना सुन्दर है! कितना सुन्दर है! बच्चों के लिए जीता-जागता खिलौना है!" असलान ने प्रशंसा की।

"इसे आपके प्रति सम्मान के प्रतीक में स्वीकार कीजिये! सच्चे दिल से है!" रुस्तम ने कहा और तुरंत छौने को खोलकर ड्राइवर को आवाज़ दी: "ले, बेटा, गाड़ी में रख दे इसे!"

ज़िला समिति के ड्राइवर ने असलान की तरफ़ प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"आपको यह क्या सूझी, रुस्तम-कीशी?" असलान ने धीरे से पूछा, पर सामूहिक किसानों व रुस्तम को उसका कठोर स्वर किसी भी चीख से कम न लगा। "इस तरह तो स्तेपी के हिरनों को कोई भी सामूहिक फ़ार्म की भेड़ें समझ बैठ सकता है।" और ड्राइवर की ओर मुड़कर शुष्क स्वर में बोला: "इसे वापस बांध दो।"

रुस्तम का चेहरा खीज के मारे तमतमा उठा। जैसा कि दिख रहा था असलान लोगों के मध्य केवल औपचारिक सम्बंधों को ही मान्यता देता था, अतिथि-सत्कार की परम्पराओं की उपेक्षा करता था...

पार्टी की ज़िला समिति नये बाग़ से घिरे एक दोमंज़िला इमारत में स्थित थी। एक तरफ़, घोड़े बांधने के खूंटों के पास दो ऊंची बांधी हुई पूंछोंवाले घोड़े काठी कसे खड़े थे। वहीं कीचड़ में सनी जीप और एक अभी-अभी गराज से निकली; साफ़-सुथरी कार खड़ी थी।

स्वागतकक्ष में बांके कट की काली मूंछोंवाला युवा सहायक टाइप कर रहा था; उसने रुस्तम को देखकर सिर हिलाया:

"अंदर जाइये, अभी-अभी आप ही के बारे में पूछ रहे थे।"

असलान मेज़ पर हाथ पर गाल रखे बैठा था और एकाग्रचित्तता से अपने सम्भाषी की बात सुन रहा था। गोशातखां? बस इसी की क़सर रह गयी थी! ज़रूर, हफ़्ते-भर की जमा की हुई ताज़ा चुग़लियां जमा करके लाया होगा।

"क्या हाल हैं, कामरेड रुस्तमोव?" सचिव आगंतुक की ओर अपना छोटा-सा ताक़तवर हाथ बढ़ाकर उठ खड़ा हुआ।

रुस्तम घबराहट के कारण हड़बड़ा गया और अटक-अटककर बोलता हुआ वसंतकालीन बोवाई का ब्योरा बताने लगा, पर असलान ने उसे टोक दिया:

"यह हमें बोवाई की रिपोर्ट से मालूम है।" उसने अपने सामने रखे

काग़ज़ पर हथेली मारी। "हमें यह भी मालूम है कि सामूहिक फ़ार्म पिछड़ रहा है। शायद कामरेड शराफ़ोगलू आप से इस बारे में बात कर चुके हैं। मैं पहले ही बता दूं कि पार्टी की ज़िला समिति को विश्वास है कि 'नवजीवन' के सामूहिक किसान कठिनाइयों पर क़ाबू पा लेंगे... लेकिन इस समय ज़िला समिति को बिलकुल दूसरे ही सवाल में दिलचस्पी है।"

असलान जब तक बोलता रहा, रुस्तम उसके लहजे से यह अंदाज़ लगाने की कोशिश करता रहा कि गोशालखां ने अपना नीच काम किया है या नहीं। लेकिन सचिव अभेद्य था।

"पार्टी, कामरेड रुस्तमोव," असलान ने आगे कहा, "स्थानीय पहलक़दमी, मेहनतकशों की पहलक़दमी को बहुत बड़ा महत्त्व देती है। इस पर काफ़ी अरसे से ध्यान नहीं दिया जा रहा था, केन्द्र सामूहिक फ़ार्मों को फ़सलों की अदला-बदली, बीजों की किस्मों और कृषि कार्यों की अवधियों के बारे में निर्देश देता रहा। अब यह समाप्त कर दिया गया है। अब, जैसा कि आप जानते हैं, पार्टी आशा करती है कि सामूहिक किसान स्वयं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप समृद्धि के अधिकतम विश्वसनीय और तीव्र रास्ते खोज निकालेंगे। आप बताइये कि क्या आपने इस पर विचार किया है?"

रुस्तम को आशा थी कि बोवाई, सिंचाई के बारे में आम बातचीत शुरू होगी और उसे संदेह नहीं था कि असलान अपने पूर्वाधिकारियों की तरह ही उसे उपदेश देने लगेगा, झिड़की देने व हर प्रकार की अन्य विपत्तियों की चेतावनी देगा। पर बातचीत कुछ असाधारण ढंग से शुरू हुई और इसके लिए वह तैयारी करके नहीं आया था। समय पाने और अपने विचारों में तारतम्य बिठाने के इरादे से उसने तम्बाकू की थैली की ओर हाथ बढ़ाया।

"पाइप पी सकता हूं?"

असलान ने "कृपया धूम्रपान न करें" की तख़्ती की ओर देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा:

"अगर रहा नहीं जा रहा है, तो पीजिये।"

"रहा क्यों नहीं जा सकता? सबर कर लूंगा।" रुस्तम ने तम्बाकू की थैली वापस जेब में रख ली और याद कर-करके मक्का और साग़बाड़ियों के बारे में अपने विचार बताने लगा: असलान दिलचस्पी के साथ सुनता रहा, लिखता रहा, पर उसने फिर अध्यक्ष की बात बीच में ही काट दी।

"आपके विचार आकर्षक और दूरगामी महत्त्व के हैं। मैं इनका अनुमोदन करता हूँ। लेकिन ये विचार अकेले रुस्तम-कौशी के हैं या फिर कम से कम कार्यालय के हैं। आख़िर सामूहिक किसानों के ख़ुद के सुझाव क्या हैं?"

रुस्तम सकपका गया। उसके लिए यह स्वीकार करना कठिन था कि उसने लोगों से सलाह नहीं की थी, क्योंकि अगर सच कहा जाये, तो उसे इसकी ज़रूरत ही महसूस नहीं हुई थी और उसने आम शब्दों में जवाब दिया कि साधारण मेहनतकशों के मूल्यवान सुझावों को कार्यालय ध्यान में रखता है।

"ठोस बात बताइये!" असलान ने अनुरोध किया।

रुस्तम ने कितना ही ज़ोर क्यों न लगाया, पर वह सलमान के साथ रात में हुई बातचीत के अलावा और कोई ठोस बात याद नहीं कर सका।

"देख लिया," सचिव ने कष्टकारी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "बुरी बात हुई न?.. आख़िर क्यों? इसलिए कि आपकी योजनाओं में जनता की इच्छाओं की अभिव्यक्ति नहीं होती। जब कि पार्टी हमसे कहती है: सर्वप्रथम जनता की पहलक़दमी का समर्थन कीजिये। हमारी सारी जनता प्रतिभाशाली है और हम, नेता लोग, केवल उसकी बुद्धि और प्रतिभा के कारण शक्तिशाली हैं। एक ज़माना था, जब एक ही नेता का मत क़ानून का रूप ले लेता था, ज़िले के लिए भी और जनतंत्र के लिए भी। इसके परिणाम बुरे निकले, तुम ख़ुद ही जानते हो। कहावत है: 'एक और एक ग्यारह होते हैं'। कुछ नेतागण बुज़ुर्गों की यह सीख भूल गये, अपने को जनता से ऊपर समझने लगे, जनता को तुच्छ मान बैठे। उन्होंने ज़मीन जोतनेवालों को, मशीनें बनानेवालों को, पेट्रोल निकालनेवालों को और स्कूली बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखानेवालों को भी सिखाया। उसके अलावा वे यह भी मांग करते रहते थे कि उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाये, 'हुर्रा' चिल्लाया जाये, तालियां बजाई जायें... इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि ऐसे नेताओं के दिमाग़ चढ़ गये थे, वे मूर्खतापूर्ण और क़ानून-विरोधी काम करते थे, उन्होंने लोगों को दुःख पहुंचाया और अंत में ख़ुद ही अपनी बदनामी करवायी।"

रुस्तम सुन रहा था पर किसी तरह समझ नहीं पा रहा था कि असलान क्यों उसे इतने उत्साह के साथ जनता से अलग हुए नेताओं के बारे में बता रहा है। इस तरह के भाषण उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को

सुनाना अधिक उपयुक्त रहता, न कि सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को, जो जनता के मध्य रहता है।

अभी तक उदास, मौन बैठे गोशातख़ां ने अचानक रुस्तम की ओर मुड़कर कहा :

"बुरा मत मानिये, कामरेड रुस्तम, मैं आपके मुंह पर कहे देता हूं : जहां भेड़ें और मेढ़े लोगों से ज़्यादा क़ीमती समझे जाते हों, वहां कितना भी माथा क्यों न पटकें, कभी काम ठीक से नहीं हो सकता।"

रुस्तम ने जवाब देना चाहा, पर सचिव ने हाथ के इशारे से उसे रोक दिया और बोलना जारी रखा :

"सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष का पद महत्त्वपूर्ण और ऊंचे दर्जे का है। उसके अधीन सैकड़ों लोग मेहनत करते हैं। हर सामूहिक किसान के श्रम के परिणाम काफ़ी सीमा तक अध्यक्ष की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करते हैं। और सबसे पहली मांग, जो मैं सामूहिक फ़ार्म के नेता से करना चाहूंगा, वह यह है : व्यक्ति का आदर करना, उसे प्यार करना, उसका मूल्य समझना और उसका ख़याल रखना।"

"हां, कामरेड अध्यक्ष," गोशातख़ां से फिर न रहा गया, "तुम लोगों की इज़्ज़त नहीं करते हो। अपने पशुपालन फ़ार्म को ही लीजिये – क्या वहां चरवाहों के लिए रहन-सहन की साधारण सुविधाएं प्रदान की गयी हैं?"

रुस्तम मुस्करा दिया।

"केरेम मैला-कुचैला और आलसी है। वह कोई गम्भीर व्यक्ति है? अपने परिवार के लिए साफ़ बिस्तर भी नहीं जुटा सकता। वसंतकालीन बोवाई पूरी कर लूं, फिर पशुपालन फ़ार्म को संभालूंगा, वहां सब ठीक कर दूंगा।"

वह बोलते समय असलान की चुभती नज़र महसूस कर रहा था – असलान एक प्रकार से रुस्तम को समझने की कोशिश कर रहा था, वह उसकी भौंहों की हर हरकत और उसकी मुस्कान पर नज़र रख रहा था। इसके कारण रुस्तम अंततः फट पड़ा।

"कामरेड सचिव, दर्शकों को हमेशा इस बात का पूरा विश्वास होता है कि पहलवानों के लिए कुश्ती लड़ना आसान होता है। आये, सूंघा, तरह-तरह के ढेरों क़िस्से और चुग़लियां सुनीं और बोरिया-बिस्तर उठाकर चलते बने। लेकिन मैं जब तक एक भेड़ को पाल-पोसकर बड़ा कर पाता हूं ख़ुद मेढ़ा बन जाता हूं – थककर निढाल हो जाता हूं! .. आपसे प्रार्थना

करता हूं कि मेरे सामने ज़िला जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष से पूछिये : वह मुझसे क्या चाहते हैं? हां, एक बार हम दोनों में कहा-सुनी हो गयी थी, मैं इनकार नहीं करता : इन्होंने दो फालतू बातें कहीं, मैंने – चार ... यही दोष है मेरा।" रुस्तम ने हाथ पूरे फैला दिये। "लेकिन अब, अब यह क्यों मेरे पीछे पड़े हुए हैं? कभी पशुपालन फ़ार्म भागे आते हैं, असंतुष्ट लोगों को जमा कर लेते हैं, तो कभी खेतों की ख़ाक छानते हैं, मीटिंगें करते हैं! ऊब चुका हूं मैं इस सब से, इतना कि बस पूछिये मत!"

गोशातख़ां की गरदन तमतमा उठी, नुकीली नाक हिलने लगी, लेकिन असलान ने हाथ उठाकर एक तरह से उसे रोक दिया।

"मैं देख रहा हूं कि हम एक दूसरे को समझ नहीं पा रहे हैं, रुस्तम-कीशी," सचिव ने नम्रतापूर्वक कहा। "मैंने तुम्हें यहां भेड़ें पालने और कपास बोने के तरीक़े सिखाने के लिए नहीं बुलाया है। यह तो तुम्हें हममें से किसी से भी ज़्यादा अच्छी तरह आता है। लेकिन कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन्हें मैं ज़्यादा अच्छी तरह समझता हूं, इसलिए मुझे तुमसे साफ़-साफ़ बात करने का अधिकार है। पार्टी हमें यही शिक्षा देती है। और पार्टी कम्युनिस्ट के लिए सर्वोपरि है। यही बात है न?"

"पार्टी मुझे अपना सीना ठोक-ठोककर दावा करनेवालों से सौ गुना ज़्यादा प्यारी है!"

"यह तो बहुत अच्छी बात है, कामरेड रुस्तम! यानी तुम मानते हो कि भेड़पालन और फ़सल काटने से भी कुछ ज़्यादा महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। दुनियादारी के सब से मुश्किल कामों से भी मुश्किल ... मैं, जैसा कि तुम शायद अंदाज़ लगा चुके होगे, लोगों के प्रति व्यवहार की बात कर रहा हूं। ज़रा सोचो तो सही – क्या सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष, कारख़ाने का प्रबंधक, पार्टी कार्यकर्त्ता पार्टी के निर्णयों को कार्यान्वित कर सकता, अगर वह लोगों को एकजुट नहीं कर सकता, उन्हें प्रेरणा नहीं दे सकता? मैंने तुम्हारे साथ आम पहलक़दमी और साधारण सामूहिक किसानों की रचनात्मक पहलक़दमियों के समर्थन की बात यूं ही नहीं छेड़ी थी।"

"और मैं, आपके ख़याल से, क्या करता हूं?" रुस्तम ने हथियार नहीं डाले। "दिन में भी और रात में भी खेत में मौजूद रहता हूं। आराम की जगह में बैठकर वक़्त नहीं काटता हूं, कुछ लोगों की तरह आठ से पांच बजे तक काम नहीं करता हूं। मुझे चिंता रहती है – केवल सामूहिक फ़ार्म की।"

हमेशा की तरह वह इस बार भी सच्ची बात कह रहा था, लेकिन उसके शब्दों से असलान प्रभावित नहीं हुआ।

"तुम बेकार, बिलकुल बेकार ऐसा सोचते हो, रुस्तम-कीशी, कि तुम्हारे सिवा और कोई सार्वजनिक कार्य में इतना दिल लगाकर काम नहीं करता। क्या तुम अपने ऊपर जरूरत से ज़्यादा ज़िम्मेदारी नहीं ले रहे हो, क्यों?.. गोशातख़ां को ही लो। चाहे तो कल ही शहर में तबादला करवा ले, वहां आराम का काम ढूंढ़ ले। वेतन भी उसे यहां से ज़्यादा मिले। इसे तबादला करवाने का सुझाव भी दिया गया था, पर किसी कारणवश यहीं रुक गया। और मैं ज़िला कर्मचारी कैसे बना? मुझे तो जीवन में कभी सामूहिक फ़ार्मों का काम नहीं संभालना पड़ा था।"

"इसी लिए तो गोशातख़ां को अपना सहायक बना रखा है!" रुस्तम ने खीजकर सोचा। "ख़ुद तो सामूहिक फ़ार्मों के मामलों में अनाड़ी है ही और भरोसा करता है लफ़्फ़ाज़ पर।"

असलान समझ गया कि रुस्तम की आंखों में उदासी की चमक क्यों आयी, पर वह बिना आवाज़ ऊंची किये शांतिपूर्वक बोलता रहा:

"मैं विज्ञान अकादमी में काम करता था। जहां तक मेरा ख़याल है, वहां मेरी इज़्ज़त की जाती थी। पत्नी हाई स्कूल में पढ़ाती थी, बच्चे पढ़ रहे थे। पर मैं सब छोड़कर यहां आ गया... और यह मत सोचो कि मुझ पर दबाव डाला गया, मुझे मजबूर किया गया, – नहीं, अपनी मर्ज़ी से आया। क्यों? इसलिए, क्योंकि जिस विज्ञान को मैंने अपना जीवन समर्पित किया है, उसके भाग्य का निर्णय यहां, मुग़ान में हो रहा है! और पार्टी भी कृषि के उत्थान में अत्यंत एकाग्रचित्तता से जुट गयी है। ऐसे समय में कम्युनिस्ट के लिए अपने व्यक्तिगत लाभ की सोचना अपमानकारक होगा।"

"यह क्या कृषिविद है? या अर्थशास्त्री है?" रुस्तम ने सोचा।

"मुझे यहां यानी मुग़ान में संघर्ष की उत्कट इच्छा खींच लायी," असलान ने आगे कहा। "संघर्ष केवल फ़सल या केवल कपास के लिए नहीं, बल्कि जनता की ख़ुशहाली के लिए भी किया जा रहा है..."

रुस्तम को फिर इस शहरी बुद्धिजीवी के प्रति अपने मन में आदर के भाव की अनुभूति हुई, जो उन ज़िला अधिकारियों जैसा नहीं था, जिनका वह आदी हो चुका था, कभी उनसे लड़ता था, तो कभी सुलह कर लेता था, पर किसी हालत में उनकी कोई ज़्यादा परवाह नहीं करता था।

"और मैं भी यही कोशिश करता हूं कि सारे लोग ख़ुशहाली की ज़िंदगी बसर करें, कामरेड असलान," सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष ने कहा और सारी बातचीत के दौरान पहली बार मुस्कराया।

असलान का सहायक कई बार दरवाज़ा थोड़ा-थोड़ा खोलकर खांस चुका था – वह स्मरण करा रहा था कि स्वागतकक्ष में मुलाक़ाती प्रतीक्षा कर रहे हैं...

शायद यह मुलाक़ात वैसे ही शांतिपूर्वक समाप्त हो गयी होती, पर हठीला गोशातख़ां रुस्तम के साथ मुठभेड़ से बाज़ नहीं आया।

"बातचीत अपनी जगह होती है, पर सामूहिक फ़ार्म की हालत के बारे में ज़िला समिति के ब्यूरो में विचार करना ज़रूरी है," कहकर गोशातख़ां ने कुछ सोचा और आगे बोला: "सामूहिक फ़ार्म के सक्रिय सदस्यों की पूर्ण सभा में।"

"धमकी मत दो!" रुस्तम तत्क्षण कह पड़ा। "मैं डरनेवालों में से नहीं हूं। चाहे सौ बार जांच करो – मुझे कोई डर नहीं।"

असलान ने मेज़ पर पेंसिल से खटखटाया और कहा कि गोशातख़ां का सुझाव पूर्णतया उचित है और आदरणीय रुस्तम-कीशी को धमकाने का इरादा किसी का नहीं है। साथ ही रुस्तम को चाहिए कि वह फ़ौरन ज़िला कार्यकारिणी समिति जाकर पशुपालन फ़ार्म के लिए दवाइयों का बक्सा, पलंग, रेडियो सेट और चल-पुस्तकालय ले ले। असलान को संदेह नहीं है कि रुस्तम-कीशी अपनी स्वाभाविक सक्रियता दिखायेगा और पशुपालन फ़ार्म को सलीक़े से रखेगा। और आज की बातचीत के बारे में वह गम्भीरता से सोचेगा और समझ लेगा कि हर काल की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं और बुद्धिमान व्यक्ति उन्हें ध्यान में रखते हैं। अंत में यह कि सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को यह याद रखना चाहिए: पार्टी उसे मेहनतकशों के प्रति निष्ठुरता के लिए कभी क्षमा नहीं करेगी।

"काम हम पूरा कर लेंगे, मैं वादा करता हूं!" रुस्तम उठ खड़ा हुआ। "बस बुरा चाहनेवालों के मुंह बंद रखे जायें! मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन और शायद समाचारपत्र में लगातार अनाम पत्र भेजते रहते हैं।"

असलान सोच में पड़ गया।

"मैं अनाम पत्रों को महत्त्व नहीं देता, लेकिन तुम्हें अगर वे परेशान करते हैं... ठीक है, देखूंगा, पता लगा लेंगे कि उन्हें किसने लिखा है।"

इन शब्दों से, बड़ी अजीब बात थी, रुस्तम तुरंत शांत हो गया और

दिल हल्का हुश्रा महसूस करता ज़िला समिति से बाहर निकल श्राया। यह कहना पड़ेगा कि जाते समय वह दुविधा में पड़ गया था कि विदा लेते समय वह गोशातख़ां से हाथ मिलाये या नहीं, फिर भी उसने उससे हाथ मिलाया, हालांकि सीढ़ियों पर हाथ को रूमाल से रगड़-रगड़कर साफ़ कर लिया, जैसे उसने किसी मेंढक को छू लिया हो...

उसने पास की दुकान से गुलक़ंद का एक मरतबान व शरबत का एक डिब्बा ख़रीदा श्रौर श्रस्पताल में जाकर नर्स से पोटली केरेम की पत्नी को देने का श्रनुरोध किया। कारिडर में मेलेक से श्रचानक मुलाक़ात हो जाने पर उसने गोशातख़ां के प्रति श्रपनी भावनाश्रों को प्रकट किये बिना रोगिणी का ख़याल रखने के लिए उसे धन्यवाद दिया।

शाम हुए जब वह श्रपने घर के श्रहाते में दाख़िल हुश्रा, उसने खाने की उत्कट इच्छा के साथ चूल्हे पर चढ़े चिख़िर्त्मा की सौंधी-सौंधी ख़ुशबू में सांस ली, ख़ुशी-ख़ुशी पत्नी से दुश्रा-सलाम की श्रौर शांतिपूर्वक चाय-पान के श्रानंद के पूर्वाभास की श्रनुभूति के साथ बरामदे में चढ़ गया। बग़ीचे के श्रंदर उसे एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले टहल रहीं माय्या व पेरशान नज़र श्रा गयीं। रुस्तम ने धीरे से सकीना से पूछा:

"वे वहां क्या कानाफूसी कर रही हैं?"

"श्ररे, कीशी, हमें तो ख़ुशी होनी चाहिए कि उनमें इतनी श्रच्छी पट रही है..."

"मैं इसके बिलकुल ख़िलाफ़ नहीं हूं, पर फिर भी इन पर नज़र रखना। कुंश्रारी लड़की को धोखा देना मुश्किल नहीं होता। श्रगर भाग गयी, तो मुझे श्रौर तुम्हें दुःख भोगना पड़ेगा। एक ही श्रस्तबल में बांधे जानेवाली दो घोड़ियां मिज़ाज की एक-सी हो जाती हैं। तुम्हें क्या नज़र नहीं श्राया?"

"तुम बहू को चैन से रहने दो न," सकीना ने ठण्डी सांस ली। "वह श्रपनी ठानी करके रहेगी, तुम्हारी एक बात के जवाब में वह हज़ार बातें सुना देगी..."

शाम शांत थी, हवा नहीं चल रही थी। माय्या ने बरामदे में हो रही यह बातचीत सुन ली। वह चाय पीने नहीं श्रायी श्रौर जल्दी ही श्रपने पिछली कई रातों से ठण्डे पड़े बिस्तर में श्रकेली लेट गयी, श्रौर जब श्रचानक गराश खेत से भागा श्राया, उसने श्रपने पर क़ाबू कर श्रालिंगन में कसकर उसका स्वागत किया। उसे बहुत डर लग रहा था कि कहीं उनके

इस मिलन का श्रंत भी झगड़े में न हो जाये, जिससे गराश फिर रात में घर छोड़कर चला जाये।

सुबह उसने इच्छा न होते हुए भी दुःखी स्वर में गराश से पूछ ही लिया:

"सुनो, सुख क्या होता है?"

गराश ने बिना सोचे, जैसे उसे पहले से पता हो कि उससे क्या पूछा जायेगा, जवाब दिया:

"पारिवारिक जीवन का सुख इसी में है कि पति का सदा नम्रतापूर्वक स्वागत किया जाये, उसका दिल बहलाया जाये श्रौर उसे तसल्ली दिलायी जाये।"

"कितने भोले हो तुम..." माय्या के चेहरे पर कटु मुस्कान फैल गयी।

"मुझे इसी तरह सोचने का तरीक़ा श्राता है। श्रपनी श्रक़्ल से दूर की तो नहीं सोच सकता।"

"ज़िंदगी में ऐसा क्यों होता है: पहले सब बहुत सुंदर लगता है, देखते देखते – निराशा होने लगती है..." माय्या ने प्रकट में सोचते हुए कहा।

"श्ररे, यह दर्शन हम मशीन-श्रापरेटरों के लिए नहीं है... माय्या, ख़ुदा के वास्ते छोड़ो इसे! .. मुझे श्राख़िर काम करना है, दिन-भर ट्रैक्टर चलाता रहता हूं," गराश ने दुःखी स्वर में कहा श्रौर पलंग से कूदकर जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा। "यह भी कोई ज़िंदगी है! बड़ी मुश्किल से भागकर घर श्राता हूं श्रौर यहां उपदेश झाड़ना बंद ही नहीं होता... नाश्ता ही बना देतीं..."

श्राधा घंटे बाद वह चला गया।

५

गराश ने फिर पूरा एक सप्ताह बिना कहीं गये खेत में गुज़ारा, उसे मिनट-भर की भी फ़ुरसत नहीं मिल पायी, शाम को वह तख़्त पर ढेर होकर घोड़े बेचकर सोता रहा।

मशीन-श्रापरेटर पौ फटे से दिन ढले तक मेहनत करके बोवाई कर रहे थे, हेंगा फेर रहे थे, ज़मीन में खाद डाल रहे थे, वे किसी भी क्षण मौसम बिगड़ जाने, बारिश की झड़ी लग जाने की श्राशंका से जल्दी कर

रहे थे। हर मुग़ानवासी यही सपना देखा करता है कि वह मौसम बिगड़ने से पहले बोवाई पूरी कर ले।

नजफ़ मेहनत करने में भी गराश से उन्नीस नहीं पड़ रहा था और वह किसी न किसी तरह समय निकालकर घर भी हो आता था, कभी-कभी तो रात को बारह किलोमीटर पैदल चलकर भी। और पौ फटे जैसे ही ट्रैक्टर घरघराते – वह फिर खेत में मौजूद।

एक बार उसने मित्र को शर्मिन्दा किया :

"यहां कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, जा बेशर्म, अपनी बीवी से मिल आ, मैं यहां सब संभाल लूंगा।"

गराश घर चला गया। जब वह एक ट्रक में लिफ़्ट लेकर पहुंचा, गांव की गलियां अंधेरी और सुनसान पड़ी थीं। कितना अच्छा हो अगर माय्या आज उससे बिना मुंह फुलाये मिले और अपनी शिकायतों से उबाये नहीं। शादी के बाद के पहले दिनों में वह बिलकुल ही दूसरी थी। क्या उसका कहना सचमुच सही है, क्या विवाहित जीवन में अवश्य ही उदासीनता और विरक्ति के दिन आते हैं?

गृहणियां गोशालाओं में गायें दुह रही थीं, धारोष्ण दूध की मधुर सुगन्ध चूल्हों के धुएं के साथ मिलकर घास पर फैल रही थी। कहीं-कहीं बचे-खुचे अलाव सुलग रहे थे। भेड़ें और मेढ़े उदास मिमियाहट के साथ सोने की तैयारी करते एक दूसरे को धकेल रहे थे।

अचानक किसी का हाथ गराश के कंधे पर पड़ा और वह चौंक उठा।

"पकड़ा गया! अब नहीं छोड़ूंगा, चाहे 'बचाओ! बचाओ!' चिल्लाओ! चलो, जल्दी से!" सलमान ने जोशभरी आवाज में कहा और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये गराश को गली पार अपने घर के फाटक की तरफ़ खींच ले गया। "ज़रा ठहरो तो, छूटने की कोशिश मत करो! .. हमें ट्रैक्टर-चालकों की टोलियों के लिए नये आदेश मिले हैं। क्या हर महीने नये आदेश मिलने के आदी नहीं हुए? पांच मिनट बैठते हैं, एक-एक गिलास चाय पीते हैं, फिर आदेश दूंगा और तुम घर लपक लेना। सुबह के लिए थोड़े ही छोड़ा जा सकता है! जब कि मैं कुछ ही दिन में, शायद कल ही मंत्रालय में संस्कृति-भवन के लिए सीमेंट का आर्डर लेने बाकू रवाना होनेवाला हूं!"

अहाते में नज़नाज़ चूल्हे के पास कुछ खटर-पटर कर रही थी, उसके गाल लाल हो रहे थे, उसके ललछौहाँ भूरे बालों की एक लट आंखों पर

आ पड़ी थी, वह गराश की तरफ़ देखकर इतने प्यार से मुस्करायी कि गराश का दिल धड़क उठा।

"कमरे में चलिये, चिख़िर्त्मा तैयार है! ऐ, सलमान, मेहमान के ज़रा हाथ-मुंह धुला दो!"

"तुम अपना काम करो, औरत," सलमान ने सहृदय रुखाई से कहा और पानी भरे तांबे के लोटे की ओर हाथ बढ़ाया।

सलमान जब मेहमान को मेज़ पर लेकर आया, चिख़िर्त्मा और दोलमा* परोस दिये गये थे और रकाबी की ओट से कोनक की बोतल लजाती हुई झांक रही थी। नज़नाज़ गराश की ख़ातिरदारी करने लगी। उसने बिना ना-नुकर किये मेहमान के लिए जामे-सेहत पी डाला, गराश को उसकी आंखों में इतना स्पष्ट प्रेम-निवेदन मिला कि उसे झुरझुरी हो आयी...

गराश ने एक जाम पी लिया, दूसरा पीने से उसने साफ़ इनकार कर दिया पर सलमान बिना ज़ोर दिये एक के बाद एक जाम पिये जा रहा था और साथ ही अचरज भी करता जा रहा था: "मुझे बिलकुल नशा नहीं चढ़ रहा है!" उसने अचानक हंसकर कहा :

"यह जाम हमारे अब्बा रुस्तम-कीशी के नाम पर! मैं रुस्तम-कीशी को अपने सगे पिता और हितकारी की तरह मानता हूं। पियो!"

"अपने अब्बा का जामे-सेहत पीने से इनकार करना ठीक नहीं होता," नज़नाज़ ने मृदु स्वर में कहा और भरा हुआ जाम गराश की ओर बढ़ा दिया।

"कोनक मुझे अच्छी नहीं लगती, बू भी इसकी बुरी लगती है," गराश ने म्लान स्वर में कहा।

वह सचमुच मद्यत्यागी था, कभी-कभार, त्योहार के मौकों पर, मेज़बान के साथ अंगूरी शराब का एक जाम पी लेता था। पुराने आज़रबैजानी गांवों में तेज़ शराबों को कोई सहन नहीं करता था और वास्तव में यह हर दृष्टि से बहुत अच्छा रिवाज है।

"बू की तरफ़ ध्यान मत दो। बेशक कोनक गुलाब नहीं होती, पियो, असली मर्द बनो, बाप की ख़ातिर पीने से कोई कभी इनकार करता है?" नज़नाज़ मनुहार कर रही थी।

---

*दोलमा – क़ीमे के कोफ़ते को बंदगोभी या अंगूर के पत्ते में लपेटकर पकाया गया खाना।

गराश ने पी लिया, उसे सिर चकराने की सुखद अनुभूति हुई, सीने में गरमी महसूस होने लगी और जब उसके सामने फिर जाम आया, तो वह इनकार करने की हालत में नहीं था। उधर सलमान रुस्तम-कीशी की तारीफ़ करता नहीं अघा रहा था, वह क़सम खाकर कह रहा था कि 'नवजीवन' पैदावार के मामले में ज़िले में प्रथम स्थान ग्रहण करेगा और रुस्तमोव का यश शुक्र तारे की तरह जगमगा उठेगा।

नज़नाज़ खुले दिल से गराश के जाम भर रही थी, शीघ्र ही वह भूल गया कि उसने कितनी पी है और उसे अपनी आंखें मुंदती महसूस होने लगीं।

वह सौगंध खाकर कहने को तैयार था कि नज़नाज़ कमरा छोड़कर नहीं गयी, लेकिन न जाने कैसे उसके बदन पर ब्लाउज़ व स्कर्ट के बजाय हर हरकत पर सरसरानेवाला रेशमी गाउन आ गया।

"तुम्हारी सेहत के नाम पर!" गराश ने अत्यधिक साहस करके कोनक छलकाते हुए जाम पी डाला। नज़नाज़ ने नैपकिन से उसकी ठोढ़ी पोंछ दी। "तुम यह मत सोचना कि मैं नशे में हूं, मैं पूरे होश में हूं! घर चलता हूं..." गराश बुदबुदाया, पर सलमान कमरे से नदारद था और नज़नाज़ ने सोफ़े पर तकिया रखकर फूंक मारकर लैम्प बुझा दिया।

जब गराश की आंख खुली, आधी रात हो चुकी थी, कमरे में घुप्प अंधेरा छाया था। वह शुरू में नहीं समझ पाया कि वह कहां है, लेकिन जब उसने लम्बा साया पहने नज़नाज़ को और उसकी नंगी बांहें देखीं, तो वह सब समझ गया और बोला:

"बत्ती जला दो।"

"क्या हुआ तुम्हें? सिर चकरा गया?"

गराश अंधे की तरह हाथ आगे किये टटोलता-टटोलता दरवाज़े तक पहुंचा, उसने किवाड़ खोल दिया, ताज़ा हवा में सांस ली और उसके दिमाग़ में ताज़गी आ गयी; उसने घृणापूर्वक आज रात की यादों को अपने दिल से दूर भगा दिया।

"जब कभी ऊब होने लगे, आ जाया करना," कमरे से नज़नाज़ की शान्त, अत्यधिक शान्त आवाज़ आयी।

गराश गली में निकल गया।

पूर्व में आकाश उजला होने लगा था, पर भोर में अभी काफ़ी देर थी। घर जाऊं?.. लेकिन माय्या पूछेगी: "कहां थे?" गराश झूठ नहीं

बोल सकेगा, सब सच-सच बता देगा। परिवार में वैसे ही नहीं बन रही है...

और गराश खेत चल पड़ा। सारे रास्ते वह अपने को तसल्ली दिलाता रहा: "इसमें ऐसा हुआ ही क्या है? पी ली, डटकर पी ली, मर्दों में ऐसा कौन है जो नहीं पीता? अरे, कुछ नहीं हुआ!" लेकिन उसके दिल में धुंध छायी हुई थी।

६

माय्या जल्दी जाग गयी। उसकी सास ने शाम को ही उसके लिए उबले हुए अण्डों, सेंडविचों व रोटी की पोटली बांध रखी थी।

"यह कोई भारी थोड़े ही है," सकीना उसे रवाना करते समय सदा यही कहती थी। आज भी उसने बहू को प्यार से गले लगाया और उसे सब तरह की मंगल कामनाएं कीं।

दोपहर तक माय्या को एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं मिल पायी: उसने सारे खेतों का चक्कर लगाया, नालियों की मरम्मत की जांच की, पानी देनेवालों को सलाह दी और जब वे कुदालें पटककर खाना खाने के लिए रवाना हो गये, तो उसे महसूस हुआ कि वह कितनी थक गयी है और उसे कितनी तेज़ भूख लगी है।

वह टेकरी पर मुख्य नहर के मुहाने के पास बैठ गयी, जहां नरम कुंचित हरियाली फैली हुई थी। वहां इतनी शान्ति थी कि उसे मूस के सर्र से निकल जाने से सूखी मिट्टी का ढेला नाली में उछटकर गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे गयी। ख़ामोश स्तेपी धूप में तप रही थी।

माय्या थैले का तकिया बनाकर घास पर पैर पसारकर लेट गयी और आंखें मूंद लीं। स्तेपी में व्याप्त निस्तब्धता गीत की तरह गूंज रही थी। तपती सूखी चमक माय्या को लोरी-सी सुनाती सुला रही थी। उसका मन कर रहा था कि वह इस धुपहली नीरवता में सारे कष्टों को भूलकर, जिनके कारण उसे रात-रात भर नीन्द नहीं आती थी, वैसे ही अनन्त काल तक लेटी रहे। और शान्ति उसे निरन्तर प्रगाढ़ निद्रा के सागर में ग़ोते खिलाने लगी।

नाली के पास से गुज़र रहे घुड़सवार की नज़र निद्रामग्न माय्या पर पड़ गयी, और उसने मानो मोहित होकर अपने थके घोड़े की लगाम खींच

उसे रोक दिया। उसने निःशब्द घोड़े से कूदकर, उसकी लगाम खोल घास चरने छोड़ दिया और दबे पांव चलता, मानो धरती की नीन्द ख़राब करते डर रहा हो, माय्या के पास आकर बैठ गया।

वह उसके सुगठित, आज़ादी से पसरे शरीर को एकटक देखता मौन बैठा रहा।

माय्या ने अचानक चौंककर आंखें खोलीं और सलमान को देखकर स्कर्ट से अपनी टांगें ढक लीं, अधबैठी हो गयी और शर्माती हुई हंस पड़ी।

"मुझ पर नीन्द ऐसी हावी हुई कि कुछ सुनाई नहीं दिया..."

"मैं वसन्त की बोवाईवाले खेत से लौट रहा था," सलमान सहृदय मुस्कान के साथ बोला, "अचानक दिव्य प्रकाश देखा, मानो इन्द्र-धनुष हो, मेरी आंखें चौंधिया गयीं और घास पर लेटी ख़ानम दिखाई दे गयी... सच मानिये, मैं तो डर गया था, कहीं बेहोश तो नहीं हो गयीं, या लू तो नहीं लग गयी, पर फिर नियमित, धारोष्ण दूध जैसी मधुर सांस सुनकर चैन आ गया। मैंने तुम्हारी रखवाली करने की सोची, ख़ानम।"

माय्या ने झट-से उठकर अपने कपड़ों से धूल और सूखे तिनके झाड़े और थैला उठा लिया।

"तुमसे खेत में दूसरी बार मुलाक़ात हुई है और हर बार मुझे अचरज होता है कि तुम मेरा कितना ध्यान रखते हो।"

"हुक्म करो–जब चाहो, तुम्हारे लिए जान देने को तैयार हूं!" सलमान जोश में कह उठा, पर जब माय्या ने असन्तोष से भौंहें सिकोड़ीं, तो भोले-भाले अंदाज़ में कहने लगा: "लेकिन सुनसान खेत में अकेले सोना फिर भी लापरवाही है..."

"कहां सुनसान है?" माय्या ने स्तेपी की तरफ़ इशारा किया: सिंचाई करनेवाले खाना खाकर लौट रहे थे, रास्ते पर पांस ढोती घोड़ागाड़ियां अपने पीछे धूल के गुबार उड़ाती चली जा रही थीं, पास के खेत में सामूहिक किसान खर-पतवार जला रहे थे। "वैसे भी यहां के लोग सीधे-सादे और ख़ुशमिज़ाज हैं, उनके बारे में बुरा सोचना पाप है।"

"तुम्हारी पाकीज़गी के आगे सिर झुकाता हूं, ख़ानम। मैं अकसर ख़ुद से पूछा करता हूं: दुनिया में कोई और एक भी ऐसी दिलकश औरत है? और अब इस नतीजे पर पहुंचा हूं–नहीं, नहीं है... गराश कितना ख़ुशनसीब है!" और सलमान ने चुप होकर एक गहरी सांस ली।

माय्या ने खीज के बावजूद महसूस किया कि सलमान के शब्द उसे प्रीतिकर लगे।

और वह बोलता रहा:

"बड़ी अजीब बात है, ख़ानम! कुछ ऐसे लोग हैं, जिनकी तुलना, मैं बिना पछताये, जानवरों से कर सकता हूं: काम करते हैं, सोते हैं, पेट भर खाते हैं, फिर सो जाते हैं, फिर उठकर खाने बैठ जाते हैं। और ज़रा सोचिये, जीवन सारी सुविधाएं उन पर लुटाता है। जिसे कहते हैं न खरसैला बकरा साफ़ चश्मे का पानी पीकर प्यास बुझाता है। लेकिन ऐसे भी लोग हैं–यह सच है कि वे बहुत कम हैं,–जिनको शंकाएं कचोटती रहती हैं, भले काम करने की कोशिशों में जुटे रहते हैं, लेकिन कभी सुख नहीं पाते। संसार को हताश होकर छोड़ जाते हैं। लेकिन अगर उनका भाग्य खुल जाये और ज़िन्दगी के जंगल में वे चश्मे पर पहुंच जायें, तो वे अपने प्यासे होंठ उससे छुआने से पहले जीवनदायी जल के सामने श्रद्धा के साथ घुटनों के बल बैठ जायेंगे..."

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?" माय्या को आश्चर्य हुआ। "क्या तुम्हें शिकायत करने की ज़रूरत है? क्या तुम अपनी इच्छाएं पूरी न होने के कारण तड़प रहे हो?"

"हां, हां, ख़ानम, मेरा दिल तड़पता है, उसमें टीस उठती है।"

"कहीं पेरशान के लिए तो नहीं?"

सलमान चुप हो गया, उसकी आंखें चलने लगीं और माय्या ने सोच लिया कि उसने बिलकुल सही अंदाज़ लगाया।

"क्या तुमने उससे बात की? उससे प्यार का इज़हार किया?"

"इस बारे में क्या बात करनी है?" सलमान ने दुःखी स्वर में पूछा। "पतझड़ में अगुओं को भेज दूंगा–या 'हां' या 'नहीं'। उसने अंगूठी स्वीकार कर ली, तो इसका मतलब है, उसे क़बूल है। इसके लिए भी उसका एहसान मानूंगा। इनकार कर देगी, तब भी। आह, ख़ानम!" उसने निराशापूर्ण मुद्रा में सिर को झटका। "मेरी मुसीबत यह है कि मैं एक ऐसी औरत को प्यार करता हूं, जिसके सामने मुझे उससे प्यार का इज़हार करने की हिम्मत कभी नहीं हो सकती।"

"मुझे तो नहीं लगता कि तुम ऐसे बेबस हो।" माय्या ने सन्देहभरी दृष्टि से सलमान की तरफ़ देखा। "संघर्ष करो! प्रियतमा के लिए संघर्ष करो, जीवन में बिना संघर्ष के कुछ हासिल नहीं होता!"

लेकिन सलमान चेहरा ऐसे विकृत कर, मानो उसे असह्य पीड़ा हो रही हो, हताशापूर्ण स्वर में रट लगाने लगा :

"नहीं, ख़ानम, मैं तो अब जिन्दा मुरदा बन चुका हूं, मेरे लिए आशाओं के सारे दरवाज़े बन्द हैं।"

माय्या ने कंधे उचका दिये और पगडण्डी से नाली की ओर चल पड़ी। सलमान घोड़े की लगाम थामे उसके पीछे-पीछे चल दिया।

"क्या तुम अपने ट्रैक्टर-चालक से ख़ुश हो?" वह अचानक पूछ बैठा।

हां, माय्या ख़ुश है। यह बात सलमान हमेशा याद रखे और दूसरों को भी बताये : माय्या सुखी है। गराश और वह एक दूसरे को प्यार करते हैं।

"क्यों नहीं!" सलमान ने दांत निपोड़ दिये। "उसकी जगह कोई और होता, तो तुम्हारे हाथ और पैर चूमता। तुम्हें कभी अकेली नहीं छोड़ देता..."

उसने यह बात किस इरादे से छेड़ी है? गराश रात को घर पर नहीं सोता, तो इस कारण से कि सबको जल्दी से जल्दी काम निबटाना है। रुस्तम-कीशी सारे टोली-नायकों और ट्रैक्टर-चालकों को दम नहीं लेने दे रहा है। ख़ुद भी कमरतोड़ मेहनत करता है और दूसरों से भी यही अपेक्षा करता है। क्या माय्या पति से यह हठ करे कि वह अपना काम छोड़कर उसके पास भागा आये? लेकिन उसे बस गराश को एक पल के लिए, चाहे दूर से ही देखने की इच्छा हो उठी...

"तुम कहां जा रहे हो?" उसने सलमान से पूछा।

"जहां का हुक्म दो। सुबह से दौड़-धूप कर रहा हूं, पर अभी थका नहीं हूं। सिर्फ़ काम ही है, जो मुझे ग़म से बचाये रखता है। पर तुम कहां जा रही हो?"

माय्या को यह कहने में शर्म महसूस हुई कि वह पति को देखना चाहती है और उसने सलमान से उसे गूंगे हुसैन के खेत में ले चलने का अनुरोध किया।

"जो हुक्म, ख़ानम।"

सलमान ने क़ुम्मैत के पुट्ठे पर चढ़कर काठी के पीछे बैठने में उसकी मदद की। सलमान के कंधे पकड़े और उसकी पीठ का स्पर्श न करने की कोशिश करती हुई माय्या मन-ही-मन अपने को सान्त्वना देती रही कि उसके प्रति सलमान के व्यवहार में कुछ भी सन्देहजनक नहीं है, केवल सामान्य

शिष्टता है। वह तो बस पेरशान की भाभी को ख़ुश करना चाहता है, ताकि वह उसके बारे में कुछ कहे और घमण्डी सुन्दरी पर थोड़ा प्रभाव डाल सके।

माय्या अपने को तसल्ली दिलाकर खेत में नज़र दौड़ाते बड़ी अधीरता से गराश को खोजने लगी। उसे ट्रैक्टर-चालक का पेशा रोमानी लगता था। यह अनुभव कर कितने सुख की अनुभूति होती है कि सूरज की प्रखर किरणों में जमकर पत्थर-सी हुई स्तेपी की मिट्टी को हल्के-फुल्के रोयें में बदल डालनेवाली भीमकाय मशीन तुम्हारे इशारों पर चलती है... शीघ्र ही उसके गराश द्वारा डाले गये बीज उग आयेंगे और खेत को हरे-भरे, लोमशी क़ालीन से ढक देंगे। मुग़ानवासी ट्रैक्टर-चालक की मुसीबत है : वह झुलसती गरमी में, ठण्ड में, बारिश में और बर्फ़ीली हवा में भी अपने फ़ौलादी घोड़े को छोड़कर नहीं जाता। लेकिन कितनी प्रसन्नता होती है अपनी उगायी हुई घनी फ़सल देखकर : उस क्षण वह अपने घर से, अपनी प्रियतमा से दूर आंखों में काटी रातों की थकान भूल जाता है।

सूरज अस्ताचलगामी हो चला था। क़ुम्मैत घोड़ा सिर झुकाये, पगडण्डी के सहारे उगी घास को मुंह में दबाने की कोशिश करता धीरे-धीरे चला जा रहा था। माय्या व सलमान मौन सवारी कर रहे थे। अन्त में उन्हें आगे खेत के बीच रेंगता ट्रैक्टर नज़र आ गया; उसके एक तरफ़ अस्त होने जा रहे सूरज की किरणों में फीका पड़ा अलाव जल रहा था, उसके इर्द-गिर्द लड़के बैठे थे।

स्तेपी में तो पथिक भी दूर से नज़र आ जाता है। जैसे ही थका, पसीने में तर, दो सवारों को ढो रहा घोड़ा खेत में पहुंचा, सब जल्दी से उठकर उनकी तरफ़ लपके। ट्रैक्टर-चालक ने ट्रैक्टर का इंजन बंद कर दिया और वहां छाये सन्नाटे में माय्या का स्वर स्तेपी में पक्षी की तरह उड़ चला :

"गराश!"

गराश खुशी से फूला न समाता कूदकर भागा। "ख़ुद आ गयी, ख़ुद आ गयी, समझ गयी, बिछोह सहा न जा सका, कितनी समझदार है, मैं कितना क़सूरवार हूं इसके सामने!.."

भागते-भागते उसे किसी का व्यंग्यपूर्ण स्वर सुनाई दे गया :

"सलमान कभी पीछे नहीं रहता..."

माय्या ने फिसलकर घोड़े से उतर, पंजों के बल खड़े हो पति के गले में अपनी गरम-गरम बांहें डाल दीं, आंखें तक बंद कर लीं – उसके मन में

इतना प्यार उमड़ रहा था, लेकिन गराश ने गुस्से में उसके आलिंगन से अपने को छुड़ाकर रुखाई से उसे अलग कर दिया।

उसके पिता चेतावनी दे तो चुके हैं कि विवाहिता नारी के लिए स्तेपी में किसी पुरुष के साथ एक घोड़े पर सवारी करना शर्म की बात है। इसने उनका कहना नहीं माना, अपने ढंग से जीना चाहती है। क्यों नहीं, पढ़ी-लिखी औरत के लिए किसी किसान की सलाहें क्या माने रखती हैं। शहर के अपने तौर-तरीक़े होते हैं, लेकिन गराश ऐसे भ्रष्ट तौर-तरीक़ों को कभी नहीं मानेगा।

"कैसे हो? कितने दिनों से घर नहीं आये हो!"

"हम मक्खियां नहीं मारते हैं, काम करते हैं," गराश ने इस प्रकार की मुलाक़ात से डरी हुई पत्नी को घूरते हुए एकदम से कह दिया।

ट्रैक्टर-चालकों ने उन्हें अलाव के पास बुला लिया। अख़बार के टुकड़े पर नमक डाला हुआ था और वे सिके हुए आलुओं को लोहे की सलाख़ से गरम राख में से कुरेद-कुरेदकर निकाल रहे थे। गराश व माय्या को उन्होंने अपने पास घास तर फैलायी फतूही पर बिठा दिया। वे सलमान को भी नहीं भूले, उसे भी अपने साथ रूखा-सूखा खाने का निमंत्रण दिया।

गराश ने नाटे और किशोर-से लगनेवाले लड़के से सख़्ती से पूछा:

"स्टार्ट होता है?"

"बिलकुल स्टार्ट नहीं हो रहा है," उसने रोनी-सी आवाज़ में जवाब दिया।

ख़ुदा के शुक्र से कोई तो ऐसा था, जिस पर गुस्सा उतारा जा सकता था... और गराश ने उसे इतना डांटा कि बेचारे की आंखों में आंसू आ गये और उससे फ़ौरन सड़क पर जाकर मोटर पकड़ने या पैदल चलकर मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन पहुंचने को कहा: कुछ भी हो, सुबह तक इंजन ठीक हो जाना चाहिए।

माय्या को अभागे ट्रैक्टर-चालक पर दया आयी, वह उसे ऊंचे क़द व चौड़े कंधोंवाले गराश के आगे इतना असहाय लग रहा था। उसने फुसफुसाकर पति से कहा कि शायद लड़के को सलमान के साथ उसके घोड़े पर रवाना कर देना बेहतर रहेगा, जब कि वह ख़ुद रात को यहीं रह जायेगी।

"इसके पैर टूट नहीं जायेंगे," गराश ने निष्ठुरता से कहा। "आगे के लिए सबक़ मिल जायेगा।" और उसके चेहरे पर बिलकुल वैसा ही भाव

था, जैसा कि केरेम की बीमार पत्नी के बारे में बात करते समय रुस्तम-कीशी के चेहरे पर था।

"मैं शराफ़ोगलू को टेलीफ़ोन कर देता हूं, वह पुर्ज़े भेज देंगे," सलमान ने अचानक हतोत्साह हुए युवक के पक्ष में कहा। उसका निशाना ठीक लगा था: सचमुच उसकी सहृदयता माय्या को अच्छी लगी।

गराश ने कोई जवाब नहीं दिया, घास पर आलू का छिलका फेंक दिया, चिक्कट पतलून से हाथ पोंछे और उठकर बतख़ की सी चाल से ट्रैक्टर की तरफ़ चल दिया; न उसने मुड़कर देखा और न ही पत्नी को आवाज़ दी...

माय्या को यह इतना बुरा लगा कि उसका दिल बैठ गया, लेकिन वह किसी तरह साहस करके पति के पीछे गयी।

अलाव तक गराश का क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया:

"काम निबटा लें, फिर मैं आ जाऊंगा। कहीं भागा नहीं जा रहा, डरो मत!"

"किसका घोड़ा है?" माय्या ने नाली के किनारे बूढ़े चिनार से बंधे मुश्की घोड़े की तरफ़ इशारा करके ट्रैक्टर-चालकों से पूछा।

दो ट्रैक्टर-चालक अलाव के पास से उठकर घोड़ा लाने भागे। सलमान ने बिना झिझके काठी पर बिठाने में माय्या की मदद की और ख़ुद उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसका क़ुम्मैत राजमार्ग पर पहुंचते ही दुलकी चाल से घर की ओर दौड़ पड़ा। कुछ ही क्षणों में अलाव, ट्रैक्टर, हंसमुख युवक और चिड़चिड़ा गंवार गराश सभी रात के अंधकार में विलीन हो गये। सलमान ने माय्या के बराबर आकर अपने घोड़े को क़दमचाल से चलाते हुए सावधानीपूर्वक कहा:

"ख़ानम, हीरे की परख जौहरी को ही होती है, न कि सूअर चरानेवाले को।"

"नहीं, आप उसे नहीं जानते, वह दिल का भला है!" और माय्या अपना ही प्रतिवाद करती सुबकियां भरने लगी।

"मैं उसे नहीं जानता हूं?" सलमान हंस पड़ा। "उसके दिल में तो मैंने घुसकर नहीं देखा, पर वह अनगढ़, बदतमीज़ और वैर रखनेवाला है, यह मैं स्कूल से ही जानता हूं। न वह सुसंस्कृत है, न ही बुद्धिमान। जिसे कहते हैं न, देखने में तो भोला-भाला है, पर अंदर से... तुम ख़ुद ही समझती हो, उसके मन में क्या है! जब तक उसका ख़ून जोश मारता

है, वह अपने को कुछ क़ाबू में रखता है, तुम से चिमटता है, पर जैसे ही ठण्डा पड़ा – पैरों तले रौंद डालें, चाहे तुम फ़रिश्ता ही क्यों न हो। सोच-सोचकर बुरा लगता है – शादी के दो-तीन महीने बाद ही... और तब क्या होगा, जब बच्चे हो जायेंगे..."

"ख़बरदार, जो मेरे पति के बारे में बुरा कहा!" माय्या चिल्लायी। "यह नीचता है!"

"ओह, ख़ानम ज़बान की बड़ी तेज़ है!" सलमान ने सोचा और क्षमायाचना करने लगा।

"मुझे नफ़रत है उन लोगों से, जो मुझ पर दया दिखाते हैं! मैं ख़ुद जानती हूं कि कैसे जीना चाहिए!.."

"मैं समझता हूं, लेकिन मैं तो ख़ुद पर दया कर रहा हूं, न कि तुम पर," सलमान हर मिनट बाद ठण्डी सांस लेता बराबर बोलता रहा। "यह परेशान-वेरशान मेरे लिए क्या क़ीमत रखती है, मैं तो बस तुम्हें प्यार करता हूं! और पवित्र प्रेम का निवेदन करने में शर्म नहीं महसूस होनी चाहिए, तुम ख़ुद ही कह चुकी हो। तुम्हें देखते ही मेरा दिल ज्वाला की तरह धधक उठा! यह गंवार तुम्हारी क़दर नहीं करता, बिलकुल क़दर नहीं करता। बस तुम्हारे 'हां' कहने की देर है, हम दुनिया के दूसरे छोर पर चले जायेंगे। अपने आख़िरी दम तक तुम्हारा ग़ुलाम बनकर रहूंगा!"

"शर्म आनी चाहिए!" माय्या ने उसे टोक दिया। "अगर आप चुप नहीं होते, तो मैं फ़ौरन वापस चली जाऊंगी!"

"चुप करना मुश्किल थोड़े ही होता है!" सलमान ने कृत्रिम दुःसाहस के साथ कहा और वास्तव में वह गांव के छोर तक चुप रहा। जब अपने घर के फाटक के सामने माय्या घोड़े से उतर गयी, सलमान ने दहाना पकड़ लिया और खोखले, निःशब्द रोदन से रुंधे कंठ से बोला: "अगर सारी दुनिया तुम से मुंह फेर ले, तो याद रखना, एक ऐसा मर्द है, जो माय्या को हमेशा अपने घर में शरण दे सकता है..."

वह तो भली-भांति जानता था कि रुस्तमोव परिवार में क्या हो रहा है।

७

रुस्तम-कीशी की हंसी से सकीना की नीन्द खुल गयी; उसके खर्राटों की वह वर्षों से आदी हो चुकी थी, उसे पति के तालबद्ध एकसार खर्राटों

से कोई चिन्ता नहीं होती थी, जैसे कि वर्षा के एकरस शोर से, शरत्कालीन हवाओं की चीख़ से, बाग़ में पत्तियों की सरसराहट से। लेकिन इस समय उसके हंसने से उसका सारा बदन हिल रहा था।

"जिन परेशान कर रहे हैं," सकीना ने अटकल लगायी। "बेड़ा ग़रक़ हो इन्हें रात में परेशान करनेवालों का!.."

"ऐ, कीशी, दायीं करवट लेट जाओ!"

"क्या हुआ?" रुस्तम ने सफ़ेद सिर थोड़ा उठाया।

"हुआ यह है कि तुम्हें दिन कम पड़ता है, रातों में हंसते हो और किसी से बातें करते हो... मैं हज़ार बार कह चुकी हूं: अपने काम-काज और चिन्ताएं घर की देहलीज़ के बाहर छोड़कर आया करो।"

"कितने बजे हैं?"

"क्या पता। अभी रात है..."

"गराश नहीं आया था? अजीब लड़का है! जब तक ग़श खाकर नहीं गिर पड़ेगा, काम से दूर रखना मुश्किल है उसे... और बहू? देर से आयी थी? उसे ज़िला मुख्यालय क्यों बुलाया गया था?" रुस्तम की नीन्द पूरी तरह खुल गयी और उसने पत्नी पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

"देर से लौटी थी शाम को। कह रही थी कि जल व्यवस्था के बारे में मीटिंग थी। उसने भी भाषण दिया था। बहुत तारीफ़ की गयी उसकी। ख़ुदा का शुक्र है, अक़्लमंद है।"

"हुसैन के खेत में हुए दलदल के बारे में भी नहीं भूली होगी, क्यों?" रुस्तम ने हुंकार भरी। "सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया!.. उसे ज़िले से कौन लेकर आया?"

"कहती थी, कुछ ज़िला कर्मचारी सामूहिक फ़ार्म आ रहे थे, वे ही उसे अपनी गाड़ी में ले आये।"

"कौन?"

"याद नहीं... कोई प्रशिक्षक था, न जाने ज़िला पार्टी समिति का या ज़िला कार्यकारिणी समिति का और शिक्षा विभागाध्यक्ष..."

पति जल्दी से बिस्तर से उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"गाड़ी में? गोशातख़ां के साथ?.. उसके क्या मां-बाप हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़नाये हुए हैं? आये दिन आने लगा! ततैया कहीं का!.."

"अरे, तसल्ली रखो; वह यहां से होकर 'लाल झण्डा' जा रहा था! अगर वह ज़िले का चक्कर काटता है, तो इसका मतलब है, उसे इसकी

ज़रूरत है। और लोग तो अधिकारी को किसी तरह अपने यहां बुलाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाते हैं! तुम क्यों घबराते हो?"

"इसलिए कि बहू दूसरों के मामले में टांग अड़ाने लगी है और ग़ैरों की गाड़ियों में बैठने लगी है!" रुस्तम ने गुस्से में बक दिया।

उसने टटोलकर मेज़ पर ठण्डी चाय का गिलास उठा लिया और पीकर कानों तक रज़ाई ओढ़ फिर लेट गया। लेकिन नीन्द नहीं आ रही थी, दिमाग़ में फिर बिनबुलाये विचार कौंध रहे थे: कभी गूंगा हुसैन याद आ जाता, जो कुछ अरसे से बड़ी बेहयाई के साथ कामचोरी कर रहा था, कभी ढीठ लफ़्फ़ाज़ गोशातख़ां, तो कभी शेरज़ाद। और उनमें से हरेक से रुस्तम मन-ही-मन में बहस कर रहा था या झगड़ रहा था। धीरे-धीरे उसे झपकी आने लगी, जो नीन्द जैसी नहीं, बल्कि कल के कष्टप्रद, अपमान व व्याकुलता से परिपूर्ण दिन की पुनरावृत्ति थी।

रुस्तम को फिर सामूहिक किसानों से खचाखच भरा हॉल दिखाई दिया; लोग क़तारों के बीच में खड़े थे, खुली खिड़कियों के पास जमा थे। लगता था सामूहिक फ़ार्म की स्थापना से अब तक इतनी विशाल जन-सभा कभी नहीं हुई थी।

रुस्तम आरम्भ से ही इस बात पर बावला हो रहा था कि सभा का अध्यक्ष तेल्ली चाची को चुना गया था। इतनी उत्तरदायित्वपूर्ण बैठक का संचालन एक स्त्री को सौंपा गया है – यह छिछोरापन नहीं तो और क्या है? उसे बस चुना ही नहीं गया है, बल्कि उसका करतल-ध्वनि से स्वागत भी किया गया है, मानो वह अच्छी फ़सल पैदा करनेवाली नामी किसान हो।

"बस करो, बस करो, यह मीटिंग नहीं है, बल्कि पूर्ण सभा है!" रुस्तम से न रहा गया और वह खीजकर कह उठा।

"सोओ, चैन से सोओ," सकीना फुसफुसायी, जब कि रुस्तम को लगा जैसे तेल्ली चाची ने उस पर झुककर बड़े ख़याल से उसके सिर व आंखों पर आये बालों को ठीक करके कुछ कहा हो।

"शुरू भी करो, देर मत करो!" रुस्तम ने चिरौरी की।

अन्त में चाची ने उसे बोलने का अवसर दिया। रुस्तम-कीशी सभा की कार्रवाई शान्तिपूर्वक, बिना किसी विवाद के पूरी करने की इच्छा से कमियों के बारे में विस्तार में, स्पष्ट शब्दों में बोला, लेकिन किसी को ठेस न पहुंचाने की कोशिश करता रहा, ताकि सम्बन्ध न बिगड़ें और शत्रु न पैदा हो जायें, जो वैसे ही काफ़ी थे।

...सकीना रुस्तम की सांस नियमित चलते सुन शान्त हो गयी और ख़ुद भी सो गयी, जब कि रुस्तम अपना बहुत सोच-समझकर तैयार किया हुआ भाषण ऐसे देता रहा जैसे जाग रहा हो:

"पांचवीं टोली ने नहर से पानी निकालने का बीस मीटर लम्बा नाला खोदने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन से बुलडोज़र मंगवाया; मशीन ने कुल दो घंटे काम किया, जब कि इस मामूली-से काम के लिए किराया देना पड़ा – आधे टन दूध के बराबर..."

उसे फिर किसी के स्नेहपूर्ण हाथ का स्पर्श अनुभव हुआ और उसने फिर उसे झटककर कंधे से हटा दिया। आख़िर कौन है, जो अपने वास्तव में मां-सदृश स्पर्श से उसे कष्टों से मुक्त करना चाहता है? तेल्ली चाची तो नहीं हो सकती!..

"इस आधे टन दूध की क़ीमत आपकी जेब से निकाली गयी है, कामरेड सामूहिक किसानो!" रुस्तम-कीशी ने जोश में कहा। "अगर सहकारी संघ का पैसा इस तरह फ़िज़ूल ख़र्च किया जाता रहा, तो दिवाला निकलने में ज़्यादा देर नहीं लगेगी: श्रम-दिनों के भुगतान के लिए एक कोपेक भी नहीं बचेगा।"

"ठीक कहा, बिलकुल ठीक कहा!" भीड़ में से अनुमोदनकारी आवाज़ें आयीं, लेकिन अचानक रुस्तम-कीशी के कानों को सुखद लग रही आवाज़ें ऊंचे, कंठ्य स्वर, मुर्ग़े की खनकती-सी बांग में दबकर रह गयीं...

अन्त में 'नवजीवन' के अध्यक्ष ने विश्वास व्यक्त किया कि सारे सामूहिक किसान सहकारी संघ की जोतों पर आस्तीनें चढ़ाकर उत्साहपूर्वक मेहनत में जुट जायेंगे, असहनीय दोषों को दूर कर देंगे और सामूहिक फ़ार्म को ज़िले में ही नहीं, बल्कि सारी मुग़ान में प्रथम स्थान पर पहुंचा देंगे।

"हम भरी-पूरी, बहुत ही बढ़िया फ़सल उठायेंगे, हर परिवार को श्रम-दिनों के बदले में पिछले वर्ष की तुलना में बहुत ज़्यादा मिलेगा! कोठियां अनाज और हर तरह के खाद्य पदार्थों से अटाटूट भर जायेंगी। हम बाकू के डिपार्टमेंट स्टोर में ख़रीदारी करने ट्रकों में जायेंगे। फिर हमारा सुखी जीवन शुरू हो जायेगा!.. और श्रम-दिन ठोस और भारी हों, इसके लिए हम सबको उत्साही और मितव्ययी स्वामी बनना होगा! हां, सच्चे स्वामी बनना होगा!" रुस्तम-कीशी ने समाप्त करते हुए दृढ़ स्वर में कहा और इस आत्मविश्वास के साथ मंच से उतर आया कि उसके भाषण के अन्त में तालियों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट होगी।

लेकिन क्लब में शान्ति छायी रही, लोग निराशा से एक दूसरे की तरफ़ देख रहे थे, कंधे उचका रहे थे, व्यंग्यपूर्वक दांत निपोड़ रहे थे।

अध्यक्ष का उत्साह ठण्डा पड़ गया, उसके बदन पर तेज़, कंटीली-सी चींटियां रेंगने लगीं, हड्डियां चरमराने लगीं।

"तुमने रज़ाई गिरा दी," सकीना नीन्द में बड़बड़ायी। "तुम्हें यह क्या हो गया है? क्यों छटपटा रहे हो? ठीक से ओढ़ लो..."

रुस्तम-कीशी ने जैसे ही रज़ाई कानों तक ओढ़ी, वैसे ही पत्नी का मधुर स्वर अलाव के धुएं की तरह कहीं दूर होकर विलीन हो गया और पास ही कोई अपरिचित, कटु व आग्रहपूर्ण स्वर सुनाई दिया...

यह तेल्ली चाची तीसरी बार सभा को सम्बोधित करके कह रही थी कि कौन भाषण देना चाहता है, पर सब चुप लगाये बैठे थे।

"कृपा करके, साथियो," चाची आग्रह कर रही थी, "केवल दोषों के बारे में ही नहीं, उन लोगों के बारे में भी बोलिये, जो इन कमियों के लिए दोषी हैं! और समाजवादी प्रतियोगिता में अपनी की हुई प्रतिज्ञाओं का उल्लेख करना भी मत भूलिये। समझ गये?"

समझने को तो शायद सब ही समझ गये थे, पर बोलने को इच्छुक फिर भी कोई नहीं मिला। चाची ने आख़िर नजफ़ को मंच पर बुलाया।

और निस्संदेह वह घबराया नहीं, फ़ौरन बेधड़क आ पहुंचा – यह तुरन्त स्पष्ट हो गया कि एक दिन पहले शेरज़ाद ने उसके ख़ूब अच्छी तरह कान भर दिये थे और उसे सस्ती लफ़्फ़ाज़ी के लिए उकसा दिया था।

रुस्तम-कीशी की पहले तो इच्छा हुई कि रिपोर्ट पेश किये जाने के बाद सलमान बुद्धिमत्तापूर्ण भाषण दे, लेकिन फिर सोचा कि अपने विश्वस्त सहायक को वाद-विवाद के ज़ोरों पर होने पर मैदान में उतारना समझदारी का काम होगा, ताकि वह तथ्यों और केवल तथ्यों के द्वारा आलोचकों और विद्रोहियों को मुंह की खिला दे।

रुस्तम-कीशी वह बात पकड़ने की पूरी कोशिश कर रहा था, जिस पर ज़ोर देने के लिए नजफ़ मंच पर अपना एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। नजफ़ ने कहा था: "मैं हमारे अध्यक्ष को समझ नहीं पा रहा हूं, ख़ुदा गवाह है, बिलकुल समझ नहीं पा रहा हूं!.." और वह फुरती से, गेंद की तरह मंच से नीचे लुढ़क-सा आया।

उसका स्थान टोली-नायक महमूद ने लिया, जो अनुभवी, ईमानदार मेहनतकश था, कई वर्षों से रुस्तम-कीशी से दूर रहा था और कभी-कभी

तो कई-कई हफ़्तों तक कार्यालय में नहीं झांकता था। उसने स्पष्ट व संयत भाषण में अपनी टोली की स्थिति के बारे में बताया और रुस्तम के मितव्ययिता के हर सम्भव प्रयत्नों के आह्वान का समर्थन किया।

"साथियो, बेशक, अध्यक्ष में अपनी कुछ कमियां हैं, मैं इससे इनकार नहीं करता," टोली-नायक ने कहा, "और उसने ग़लतियां भी की हैं। लेकिन वह सहकारी संघ के हितों का सदा ध्यान रखता है और सामूहिक किसानों की आय के बारे में भी नहीं भूलता है। और इन सब बातों के लिए हमें हमारे रुस्तम की क़दर करनी चाहिए!.."

महमूद अपना मुंह बंद भी न कर पाया था कि गिज़ेतार मंच पर चिड़िया की तरह फुर्र से आ पहुंची और उसने माननीय अधेड़ पुरुष पर उलाहनों की बौछार कर दी:

"पिछले वर्ष लगभग सारी आय श्रम-दिनों के भुगतान पर ख़र्च कर दी गयी थी, और सारा अवितरित कोष ख़ाली कर दिया गया था! और अब नये संस्कृति-भवन के निर्माण के लिए हमने अपने सिर क़र्ज़ चढ़ा लिया है। क्या यह सामूहिक किसानों के हित में है? नहीं, हरगिज़, नहीं!.."

गिज़ेतार ने आत्मविश्वासपूर्ण स्वर में एकत्र लोगों को बताया कि वह बचपन से ही रुस्तम चाचा का आदर करती आयी है, पर आदर अपने स्थान पर है और काम – अपने।

"एक मिनट के लिए कल्पना कीजिये, कामरेडो, कि रुस्तम-कीशी हम सबको नाव में सवार कराके पतवार संभाले बैठे हैं और इतने ज़ोर-ज़ोर से खे रहे हैं कि नाव बस किसी भी क्षण उलट सकती है। ऐसी हालत में क्या हमें उनसे नहीं कहना चाहिए: चाचा, ज़रा धीरे, संभल के, हम में से कोई भी कूरा नदी में डूबना नहीं चाहता!.." समवेत हंसी के बीच गिज़ेतार ने कहा।

"वाह, क्या कहने, ख़ूब सूझी! यह है औरत की अक़्ल – मुर्ग़ी की अक़्ल से भी गयी-गुज़री... सामूहिक फ़ार्म की तुलना किसी टूटी-फूटी नाव से कर रही है, और अध्यक्ष की – माझी से। मुझे इसमें कोई अक़्लमंदी की बात नज़र नहीं आती।"

इसके बावजूद नजफ़ व शेरज़ाद द्वारा उत्साहित युवक हर्षित हो उठे, तालियां बजाने लगे, चिल्लाने लगे, उत्तेजित हो उठे:

"बि ऽऽ ल कु ऽऽ ल ठीक!.. शाबाश, ख़ानम!"

हॉल में उपटोली-नायक मुरादख़ां के भाषण के प्रति भी ऐसी ही उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया दिखाई गयी।

नहीं, रुस्तम-कीशी न्यायशील है, वह स्वीकार करता है कि मुरादख़ां ने सारगर्भित व तर्कपूर्ण भाषण दिया, पर उसने उसमें अत्यन्त चुभती बातें कहीं और अनुभवी व पके बालोंवाले टोली-नायकों पर प्रायः अपमानकारी आक्षेप किये, जिनकी वह दुधमुंहा पैर की धूल के बराबर भी नहीं है।

अहा, मंच पर सलमान आ गया... कुछ भी हो, है वफ़ादार कुत्ता, भले ही कुछ मामलों में स्वेच्छाचारी है, लेकिन वह दग़ा नहीं देगा! संभलकर रहो, लफ़्फ़ाज़ो और ईर्ष्यालुओ, वह अभी तुम्हारी ख़बर लेता है!...

लेकिन रुस्तम-कीशी के लिए दुःख की बात थी कि उसका सहायक बिना आत्मविश्वास के, अटक-अटककर और एक दिन पहले अपने विशाल-हृदय हितकारी की सहमति से तैयार किये नोट्स हर मिनट देखकर बोल रहा था। क्या वह अपना भाषण ज़बानी याद नहीं कर सकता था, घर पर शीशे के आगे उसका अभ्यास नहीं कर सकता था? अरे, टुकड़तोड़ो, अरे, आलसियो!.. हर कोई रुस्तम के संरक्षण का उपयोग केवल अपने लिए करने की कोशिश करता है, और जब उसको सहायता की ज़रूरत होती है, तो पीठ दिखा देता है।

सलमान के लिए भी तालियां बजायी गयीं, पर अलग-अलग, इक्की-दुक्की और वह मंच से घबराया हुआ उतर आया।

लेकिन शेरज़ाद को बोलने का अवसर जैसे ही दिया गया, हॉल में व्याकुलता व गहन उत्कंठा से परिपूर्ण शान्ति व्याप्त हो गयी।

यही बात रुस्तम-कीशी के हृदय में ईर्ष्या से मिलता-जुलता एक अजीब भाव जगाती चुभ गयी।

"कपास-उत्पादन के मामले में हमारा और, मैं कहूंगा, हमारे सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति का, पार्टी का प्रमुख उद्देश्य यही है: लोगों के, सर्वप्रथम स्त्रियों व युवतियों के शारीरिक श्रम को हल्का करना," शेरज़ाद ने आरम्भ में कहा। "यही तो वह बात है, जिसके बारे में कामरेड रुस्तमोव सोचना भी नहीं चाहते..."

"मैं हर चीज़ के बारे में सोचता हूं!" रुस्तम-कीशी ने ग़ुस्से में उसे टोक दिया और झल्लाहट में हाथ से माथे का पसीना पोंछ दिया।

"क्या शैतान से लड़ रहे थे? छटपटा रहे हो, पसीने में तर हुए," उनीन्दी सकीना ने मुश्किल से सांस ले पा रहे पति के विकृत चेहरे को चिन्तापूर्वक देखते हुए कहा।

फिर भी रुस्तम-कीशी को उसकी दूर से आती-सी आवाज़ सुनाई नहीं दी – शेरज़ाद, अकेला शेरज़ाद उसे दुनिया की हर चीज़ को देखने में बाधा डाल रहा था... उसने पार्टी संगठन के सचिव की बात काटने की व्यर्थ कोशिश की, कभी व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों से, तो कभी उपहासात्मक मुस्कान से, दो बार तो उसने सहन न होने पर बड़ी बहादुरी से अपना सीना उसके आरोपों के आगे कर दिया। पर सब बेकार!.. लगता था जैसे लोग बिलकुल बदल गये हैं – वही सामूहिक किसान, जो कुछ समय पूर्व तक रुस्तम-कीशी की ख़ुशामद किया करते थे, उसके सद्गुणों की प्रशंसा करते नहीं अघाते थे, उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करने में लगे रहते थे, अब समवेत स्वर में शेरज़ाद के प्रत्येक शब्द की प्रशंसा कर रहे थे, केवल उसी के लिए तालियां बजा रहे थे, सहमतिसूचक उद्घोषों से उसका अभिनंदन कर रहे थे।

पर यह क्या हुआ? मंच पर अब शेरज़ाद नहीं, बल्कि आग्नेय लाल कलगीवाला तेज, मोटा-ताज़ा मुर्ग़ा खड़ा है... उसने पंख फड़फड़ाये, बदन फुलाया और पूरा गला फाड़कर बांग मारी और अपने प्रभात-गीत से सारा वातावरण गुंजा दिया।

गांव भर के अहातों में तुरन्त दूसरे पंखदार समय के प्रहरियों ने उसका प्रत्युत्तर दिया और अनेकानेक मुर्ग़ों ने बुलंद आवाज़ों में लोगों को याद दिला दिया कि रात बीत चुकी है।

सकीना ने रुस्तम का कंधा पकड़कर हिलाया:

"तुम तो सारे पसीने में नहा गये हो। फिर छटपटाने लगे थे। उठो, कीशी, दिन निकल आया, उठो..."

८

रुस्तम ने ना-नुकर नहीं की, जल्दी से कपड़े पहने, पुराने, मुलायम बूट पैरों पर चढ़ाये, अंजलि भर-भर नाली का गंदला पानी छिड़ककर मुंह धोया और वहीं अहाते में चूल्हे के पास खड़े-खड़े नाश्ता किया।

न जाने दाढ़ी न बनाने के कारण – उसके गाल सफ़ेद कांटों से ढके

हुए थे, – या नीन्द पूरी न हो पाने के कारण उसके चेहरे पर थकान व उदासी छायी थी। सकीना का दिल दया के कारण पिघल उठा।

"ऐ, कीशी, मोटर में जाओ, काठी पर तकलीफ़ होगी," उसने पति को अस्तबल से भूरी घोड़ी निकालते देखकर कहा।

रुस्तम ने हठपूर्वक सिर हिलाया, कराहता हुआ काठी पर सवार हुआ और घोड़ी को एड़ मारकर नौजवानों की तरह हवा से बातें करता फाटक से बाहर निकल गया।

आदमी मोटर के कारण पक्की सड़कों से बंधकर रह जाता है, जब कि वफ़ादार घोड़े पर अपने सामूहिक फ़ार्म के दूरस्थ कोनों में जा सकता है, ख़ुद जाकर देख सकता है कि काम कैसा चल रहा है।

रुस्तम-कीशी ने सबसे पहले टोली-नायकों व उपटोली-नायकों से मिलने की ठानी, – उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनमें से कुछ अभी तक पलंग तोड़ रहे होंगे, या फिर आराम से सुबह की चाय की चुस्कियां ले रहे होंगे।

घोड़ी को गूंगे हुसैन के घर के बाहर छोड़कर उसने बरामदे में भागकर निकली अस्त-व्यस्त बालों व बहती नाकवाली लड़की से चिल्लाकर कहा:

"ज़रा अब्बा को जगाना!"

लड़की ने भौंहें सिकोड़कर गुस्से में भयावह अध्यक्ष की तरफ़ देखा।

"वह तो कब के खेत जा चुके हैं! .."

हुसैन आलसी था, बड़ी मुश्किल से अपने पहलुओं से चिक्कट हुए तख़्त से उतरता था। रुस्तम-कीशी गूंगे की इस कमज़ोरी को जानता था, लेकिन वह उसकी वफ़ादारी और सहनशक्ति के बारे में भी नहीं भूलता था। ज़रूरत पड़ने पर हुसैन पर काम ऐसे लादा जा सकता था, जैसे ऊंट पर ख़ुरजीं, और ख़ुद भी उसकी पीठ पर सवार हुआ जा सकता था, – वह ढो लेगा, हफ़्ते भर बिना चारा-पानी मांगे रेगिस्तानों व पहाड़ों को पार करता रहेगा।

रुस्तम को बरबस याद हो आया कि हाल ही में जब कूरा व अरावस नदियों ने वसन्तकालीन बाढ़ से उन्मत्त होकर बांध को तोड़ दिया था और प्रचण्ड, उफनता प्रवाह कपास के लिए तैयार किये गये खेत की तरफ़ बढ़ने लगा था, गूंगा सबसे पहले उससे जूझने कूद पड़ा था, सारी रात अपनी परवाह किये बिना मेहनत करता रहा था, बेधड़क भंवरों में कूदता रहा था और थकने का नाम लिये बिना अपने कंधों पर मिट्टी की बोरियां ढोता रहा था।

गूंगे की टोली भी उससे पीछे नहीं रही थी और एक मिनट बाद ही गांववाले मदद करने भागे आ पहुंचे थे।

यहां तक कि ज़हरीली ज़बानवाली तेल्ली चाची ने भी भोर होते-होते हुसैन के साहस की प्रशंसा की थी:

"गूंगा बस ठान ले, तो पहाड़ भी सरका सकता है!"

अध्यक्ष को तो लोगों में आयी ऐसी आत्मत्यागी उमंग देखकर ख़ुश होना चाहिए... खेतों में मिल-जुलकर तेज़ी से काम हो रहा है। कौन-सा जादू हो गया न? यानी सभा ने लोगों को हिला दिया है, सामूहिक किसानों के हृदयों में उत्साह भर दिया है? लेकिन रुस्तम-कीशी को निराशापूर्ण विचार व्यथित कर रहे थे: आख़िर किसने लोगों को प्रभावित कर इतना सक्रिय बना दिया है – उसने अपने भाषण, मितव्ययिता के आह्वान और श्रम-दिन के ऊंची दर के भुगतान के वादे से या शेरज़ाद ने अपने जोशीले भाषण से?

रुस्तम को सलमान, नजफ़, उसके बाद शेरज़ाद व अन्य टोली-नायकों के घर हो आने के बाद मालूम पड़ा कि उनमें से कोई घर पर नहीं है, सब पौ फटते ही खेत रवाना हो चुके हैं।

केवल एक घर में उसने एक उनीन्दे मर्द को, अध्यक्ष की घोड़ी की चंचल हिनहिनाहट सुनकर सूखी घास में जा छिपने की आशा में लपककर शेड में घुसते देखा।

वृद्ध को काठी से उतरकर घोड़ी को फाटक की ज़ंजीर से बांधना पड़ा और आलसी को निकालकर उसकी पत्नी और बच्चों के सामने शर्मिंदा करना पड़ा:

"बीमार होने का बहाना कर रहा है! देखो, पेट तो कैसा निकल रहा है! .. पतझड़ में अनाज और पैसा लेने सबसे पहले आ पहुंचेगा, क्यों? चल, फ़ौरन खेत में! .. देख, पूर्ण सभा के सामने घसीट ले जाऊंगा। अपने चायख़ानों में बैठे रहनेवाले दोस्तों से कह देना कि उनकी भी ख़ैर नहीं है! .."

गांव से बाहर पहुंचकर रुस्तम की अड़ियल घोड़ी उसके लगाम ढीली छोड़ते ही लीकों में रात भर में जमा हुई धूल उड़ाती, नथुने फड़फड़ाती, खेतों की ठण्डक को सांसों के साथ जल्दी-जल्दी खींचती सरपट दौड़ने लगी।

रुस्तम ने खेत-कैंप की ओर जा रही सामूहिक किसान स्त्रियों व पास

व बीज ढोकर ले जा रही घोड़ागाड़ियों को पीछे छोड़ दिया। सबने उसका सादर अभिवादन किया और उसने भी उनके आदरपूर्वक सिर झुकाने के प्रत्युत्तर में वैसे ही सिर झुकाया।

सूरज अभी क्षितिज की अरुणिम रेखा पर नीचा लटका हुआ था। रुस्तम ने नाली के पास घोड़ी को रोका और अपने पास भागकर आये सलमान को लगाम संभला दी।

ऊंचे बूट व सीने पर जेबोंवाली फ़ौजी क़मीज़ में सलमान चुस्त, अनुशासित सैनिक जैसा लग रहा था और स्पष्ट था कि यह उसे अच्छा लगता था। अध्यक्ष के प्रश्नों का उत्तर उसने अत्यन्त संक्षेप में दिया।

यह अत्यधिक नाटकीयता कुछ विशेष कारणों का परिणाम थी।

परसों नजफ़ ने कार्यालय जा रहे रुस्तम-कीशी व उपाध्यक्ष को रास्ते में रोककर बताया था कि अनुभवी कपास-उत्पादक, सामूहिक फ़ार्म का भूतपूर्व मोटर-चालक आयाज़ अलीयेव यंत्रीकरण की शक्ति में विश्वास न करनेवालों को दिखा देने के इरादे से अकेला ही बीस हेक्टेयर के टुकड़े में जोताई, बोवाई करके फ़सल की संभाल और कटाई भी करना चाहता है।

"ऐसे दुःसाहसी का तो हमें पूरा समर्थन करना चाहिए, जब कि लोग उसके काम में बाधा डाल रहे हैं!"

"कौन?"

"तुम्हारा उपाध्यक्ष।"

अध्यक्ष ने सलमान की तरफ़ घूरकर देखा।

"हवाई क़िले बनाते हैं!" सलमान झिझका नहीं। "बीस हेक्टेयर का खेत अकेले किसी को संभालते किसी ने देखा है? बकवास है!.."

नजफ़ ने शान्तिपूर्वक – वह हर हालत में चिल्ला-चिल्लाकर सारे गांव को सिर पर नहीं उठाना चाहता था – स्पष्ट किया कि युवाओं ने आयाज़ की योजना पर विस्तारपूर्वक विचार किया है और उसके औचित्य को स्वीकार किया है। उन्हें मालूम पड़ा कि सारा मामला वर्ग-गुच्छ पद्धति से सही ढंग से बोवाई करने के लिए नपे हुए तार को जगह-जगह रखने के यांत्रिक तरीक़े पर निर्भर करता है। इसके अलावा अलीयेव ने कल्टीवेटर में कर्तकों की जगह भी बदल दी है – अब कुदाल के बारे में भूलकर सारे खर-पतवार का मशीन से पूरी तरह सफ़ाया किया जा सकता है।

"कितना अजीब विचार है!" रुस्तम ने सोचा। "लोगों की कल्पना-

शक्ति कितनी सजग है! हमारी मुग़ान में, जहां प्रति व्यक्ति इतनी ज़मीन है, ऐसी योजना अनमोल है। अगर सफलता मिल गयी, तो आयाज़ को स्वर्ण-पदक दिलवायेंगे! कारा केरेमोगलू तो इस नयी ईजाद के बारे में सुनकर जलन के मारे मर ही जायेगा।"

सलमान यह अंदाज़ लगाये बिना ही कि अध्यक्ष किस कारण इतने गहन चिन्तन में डूब गया है, अशिष्टता से कह उठा:

"मुझे तो इसमें गड़बड़ नज़र आती है!.."

इस बार सलमान बात का मतलब समझने में ग़लती कर बैठा और रुस्तम-कीशी ने नजफ़ और उन्हें घेरे खड़े खड़े सामूहिक किसानों के सामने उसे अच्छी तरह झाड़ लगायी।

"प्रबन्ध समिति से सलाह करनी चाहिए, यानी मुझसे!... हम अनाड़ी को उक़ाब के पर हरगिज़ नहीं काटने देंगे! शेरज़ाद को मालूम है?" उसने नजफ़ से पूछा, जिसका चेहरा सन्तुष्टि की मुस्कान से खिल उठा था।

"ज़ाहिर है।"

"इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए।"

"हमारा भी यही ख़याल है।"

सलमान अपनी इतनी शर्मनाक हार के साक्षियों की घृणापूर्ण नज़रों की परवाह किये बिना चापलूसी करने लगा:

"चाचा, ख़ुदा गवाह है; भला मैं आपके बिना... मैं तो आज ही आपको बताकर हिदायतें ले लेना चाहता था..."

शाम को जब वह अध्यक्ष के पास अत्यावश्यक काग़ज़ात हस्ताक्षर कराने के लिए लेकर आया, रुस्तम-कीशी ने फिर उसे धमकाया:

"जुमे जुमे आठ दिन हुए उपाध्यक्ष की कुरसी संभाले और अपनी चलाने लगे! बहुत घमण्ड हो गया है, अपने को नेता ही मान बैठे?.."

सलमान ने वफ़ादारी की क़समें खायीं, अपनी ग़लतियों पर पश्चात्ताप किया, रुस्तम की दयालुता की तारीफ़ों के पुल बांधे। वह वृद्ध को उस दिन से फिर कभी अध्यक्ष से सलाह किये बिना एक भी शब्द मुंह से न निकालने, एक भी क़दम न उठाने का आश्वासन देकर बड़ी कठिनाई से शान्त कर पाया।

...ट्रैक्टर-चालकों ने बीज ड्रिलें ट्रैक्टरों से जोड़ लीं, उनमें बीज भर लिये और ट्रैक्टर घरघरा उठे।

शेरज़ाद के खेत में बोवाई समाप्त कर ली गयी थी, केवल किनारों की ज़मीन में, जहां ट्रैक्टर नहीं चल सकता था, हाथ से बोवाई की जा रही थी।

महमूद को बीज ड्रिल पर खड़े होकर स्वयं बीज डालने का नियंत्रण करते देख अध्यक्ष ने उसे आवाज़ दी :

"तुम्हारी टोली कहां है? कुल पांच-छ: औरतें ही काम कर रही हैं!"

महमूद ने चमकती निर्दोष आंखों से अध्यक्ष को एकटक देखते हुए हाथ से गांव की ओर इशारा किया – अभी आ जाती हैं।

"क्या दोपहर के खाने के वक़्त आयेंगी? और आते ही ढकोसने बैठ जायेंगी?" रुस्तम-कीशी की बुलंद आवाज़ मोटर के हॉर्न की तरह खेत में गूंज उठी। "उन्हें ज़रा जल्दी उठना चाहिए! सुनते हो? इस पर भी अपने को अनुभवी टोली-नायक कहते हो!"

शेरज़ाद के खेत से पल्ले से हाथ पोंछती तेल्ली चाची भागी आ पहुंची।

"ज़रा हिसाब लगाओ, – गांव यहां से आठ किलोमीटर दूर है!" उसने कहा। "शुक्र तारा निकलते ही हम उठ खड़ी होती हैं। फिर घर भी झाड़ना-बुहारना पड़ता है। यहां पहुंचती हैं, तो सूरज तो वहां चढ़ा होता है, हाथ उस तक नहीं पहुंच सकता। औरतें बची-खुची ताक़त लगाकर काम कर रही हैं, कुछ तो बच्चों को खेत में लेकर आती हैं..."

"मैं क्या तुम्हारे लिए ट्राम चला दूं?"

"इतने दूर की क्यों सोचते हो। ख़ुदा के शुक्र से सामूहिक फ़ार्म में सौ घोड़ागाड़ियां और छ: ट्रक हैं। आराम से हमें काम पर ला सकते हैं, ले जा सकते हैं। मैंने अपनी आंखों से देखा है – शामख़ोर ज़िले में हर टोली की अपनी मोटर है।"

"वह शामख़ोर है और यह मुग़ान है! तुम क्यों हमारा शामख़ोरवालों से मुक़ाबला कर रही हो?" रुस्तम तिरस्कारपूर्वक हंस पड़ा।

"शामख़ोरवालों की क्या दो के बजाय चार आंखें हैं? वैसे ही सामूहिक किसान हैं, जैसे कि हम! किसने कहा है कि शामख़ोर के सामूहिक फ़ार्म मुग़ान के सामूहिक फ़ार्मों से बेहतर होने चाहिएं? किसने कहा है?"

"सुना आप लोगों ने, यह क्या चाहती है?" रुस्तम ने पूरा हाथ

उठाकर अपने इर्द-गिर्द खड़ी किसान औरतों को तेल्ली चाची की हंसी उड़ाने का इशारा किया, पर किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया।

तब अध्यक्ष ने पूरे ज़ोर से महमूद के कंधे पर हाथ मारा :

"काम करो! लफ़्फ़ाज औरत पर कोई कभी पार नहीं पा सकता..."

लेकिन चाची ज़रा भी नहीं घबरायी। वह रुस्तम का हाथ पकड़कर उसे राजमार्ग के बायीं ओर स्थित खेत की तरफ़ ले गयी। वहां उसने झुककर मिट्टी का ढेला उठा लिया, उसे उंगलियों से मसला, न जाने क्यों सूंघा और चिल्ला उठी :

"तुम्हारे आंखें हैं? मिट्टी नहीं, पत्थर है! यहां हेंगा किसने फेरा है? ऐसी सख़्त ज़मीन पर बीज कैसे डाले जा सकते हैं? ज़रा देखो, शेरज़ाद के खेत में कैसी मिट्टी है, – हंस के परों-सी!.."

"जाकर अपना काम करो," रुस्तम ने बड़ी मुश्किल से अपने पर क़ाबू करके कहा। "मानता हूं कि मिट्टी तैयार नहीं है, पर अभी निराई, सिंचाई होनी है, अतिरिक्त खाद भी दी जायेगी। समुद्र किनारे बैठकर मौसम सुधरने का इंतज़ार करते रहे, तो सारी मुग़ान में हमारी बदनामी हो जायेगी।"

चाची ने जाते-जाते पार्टी की ज़िला समिति को सूचित करने का वादा करके सिर हिलाया और चली गयी।

...चार बजने तक रुस्तम ने सारे खेतों का दौरा पूरा कर लिया, टोली व उपटोली-नायकों को हिदायतें दे दीं और आत्मसन्तोष के साथ कार्यालय लौट आया। अध्यक्ष के भारी क़दमों तले लकड़ीवाली फ़र्श के चरमराते ही लेखा विभाग से यारमामेद ने बाहर झांका और उसे ख़बर दी कि कलंतर भैया ने टेलीफ़ोन पर बोवाई अभियान की रिपोर्ट मांगी है।

"इन्हें बस प्रतिशत ही बताते रहो!" रुस्तम क्रुद्ध हो उठा। "आज हमारे यहां कितने प्रतिशत बोवाई हुई है?"

"आज तो सत्तर..."

"तो बता दो उन्हें कि सत्तर प्रतिशत हुई है। बढ़ा-चढ़ाकर बताने की मत सोचना, गला क़लम कर दूंगा। हमारी क़ीमत फ़सल के आधार पर आंकी जायेगी।"

रुस्तम को एक बार फिर सामूहिक फ़ार्म के संस्कृति-भवन के डिज़ाइन पर नज़र डालने की इच्छा हुई। वह अपनी कल्पना में उस भव्य भवन का स्पष्ट रूप देख रहा था, आंखें आधी मूंदे मन-ही-मन इसका आनन्द

ले रहा था कि कैसे सामूहिक फ़ार्म के श्रेष्ठ संस्कृति भवन की धूम सारे जनतंत्र में मचेगी, कैसे फ़िल्म कैमरामेन, पत्रकार, कलाकार, लेखक 'नवजीवन' में भागे आयेंगे... डिज़ाइन ध्यानपूर्वक देखते हुए रुस्तम दरवाज़ों से सन्तुष्ट नहीं हुआ: नीचे हैं, छोटे हैं, जैसे गोशाला के हों।

"मुझे भी ये कुछ अजीब-से लग रहे हैं," यारमामेद ने हां में हां मिलायी।

"अगर ज़रा बड़े बनाये जायें और लकड़ी पर मोज़ेक के काम के किवाड़ लगा दिये जायें, तो बहुत बढ़िया रहे।"

"सचमुच बहुत बढ़िया रहे!" यारमामेद ने सिर झुकाकर पुष्टि की।

"पर बिजली का क्या करेंगे?"

यारमामेद ने घुमा-फिराकर बात छेड़ी: उसने कृषि मंत्रालय का उत्तर बताया, जिसमें कहा गया था कि उन्हें जनतंत्र के जल आपूर्त्ति मंत्रालय से प्रार्थना करनी चाहिए और साथ ही सामूहिक फ़ार्म के ख़र्च पर कृषि विद्युतीकरण अधिकरण को डिज़ाइन तैयार करने का आर्डर भी दे देना चाहिए... अन्त में वह गड़बड़ा गया और उसने रुस्तम-कीशी को स्वयं बाकू जाकर सारे रास्ते ढूंढ़ निकालने की सलाह दी।

"सलाह के लिए शुक्रिया!" रुस्तम ने व्यंग्य से कहा। "वह ज़माना गुज़र गया, जब मैं स्वागतकक्षों में एड़ियां रगड़ा करता था। सलमान को भेज देंगे।"

"ज़रूर, ज़रूर, सलमान को भेज देंगे! इसके अलावा उसने तुम्हारी बहू को गांव में बिजली लाने का वचन दिया है," यारमामेद ने भोलेपन से कहा और रुस्तम की चौड़ी भौंहें गुस्से में जुड़ती देख मन-ही-मन ख़ुश हुआ: ताज़े घावों पर नमक छिड़कने में उसे सबसे ज़्यादा आनन्द आता था।

अध्यक्ष ने जाना चाहा, पर यारमामेद ने उसे बताया कि चरवाहों का पत्र आया है: डेयरी में दूध का उत्पादन घट रहा है, सरकार को दूध बेचने का कोटा पूरा नहीं किया जा रहा है।

रुस्तम ने मन-ही-मन कोसा: लेखा परीक्षण पूरा नहीं किया गया, अब जो मालूम पड़ा है, उसी पर सबर करना पड़ेगा... ख़ैर, शाम को देख लेंगे, ज़रूरी क़दम उठायेंगे।

वृक्षों की छायाएं सड़क पार कर गयीं थीं, वे लोगों को यह याद दिलाती हुई कि शाम नज़दीक है, देखते-देखते चौड़ी होती जा रही थीं।

रुस्तम ने महसूस किया कि उसे तेज़ भूख लगी है और उसने अपनी चाल तेज़ कर दी। अलसेशियन ने ख़ुशी की हल्की गुर्राहट के साथ पूंछ हिलाते और उसके चेहरे की ओर देखते हुए उसका स्वागत किया। स्वामी ने कुत्ते को पुचकारा। घर पर कोई नहीं था। रुस्तम ने बरामदे में गलीचे के नीचे से चाबी निकालकर दरवाज़े का ताला खोला। मेज़ पर तश्तरियां, चाकू, चम्मच और रोटी सलीक़े से रखे हुए थे – सकीना ने खेत जाने से पहले सब तैयार करके रख दिया था। बोज़बाश की देगची प्लाइवुड की तख़्ती से ढकी थी। रुस्तम ने चूल्हा नहीं सुलगाया, तेल का स्टोव जला लिया। उसने बड़े आनन्द के साथ धूल से सनी फौजी क़मीज़ व बूट उतार दिये, चुस्त* व घर का कुरता पहन लिये, उधर देगची में बोज़बाश भूख जगाती सौंधी ख़ुशबू छोड़ता फदक रहा था।

खाने के बाद रुस्तम ने अंगड़ाई ली, जी चाहा कि चाय पी ले, पर समोवार सुलगाने का आलस कर गया। उसका मन किया कि थोड़ी देर तख़्त पर लेट आराम ले, पर यह उसे अनुचित लगा – अभी केवल छः ही बजे हैं। गराश ने हाल ही में किसी नयी किताब 'आज़रबैजान के अग्रणी सामूहिक फ़ार्म' की चर्चा की थी। रुस्तम ने उसे किताबों की अलमारी में ढूंढ़ा, लेकिन उसके हाथ, जैसे उसे खिजाने के लिए, पन्ने फटे, बेटी के बार-बार पढ़ने से चिथड़े हुए उपन्यास और शायरों के दीवान ही लगे।

वह हाथ में आया सबसे पहला उपन्यास उठाकर मेज़ पर लौट आया, बुदबुदाता हुआ धीरे-धीरे पढ़ने लगा, पर एक मिनट बाद ही सिर हाथों पर टिकाकर सो गया।

६

"अहा, कितनी मीठी नीन्द सो रहे हैं!" कमरे में भागकर घुसी पेरशान ने कहा और पलटकर बरामदे में खड़े किसी को उंगली से धमकाकर फुसफुसायी: "ठहरो, ठहरो..."

वह दासे से मुर्ग़े का इन्द्रधनुषी रंगोंवाली क़लम उठाकर दबे पांव मेज़ के पास आयी और पिता के कानों के पीछे उससे गुदगुदी करने लगी। रुस्तम ने होंठ चटकारे, गुस्से में बड़बड़ाया और बिना जागे पेरशान करने-

---

*चुस्त – घर में पहना जानेवाला चमड़े का मुलायम जूता।

वाली मक्खी को उड़ा दिया। पेरशान ने हंसी के मारे दोहरी होती हुई पिता की झुर्रीदार गरदन पर क़लम फेर दी। रुस्तम कुलमुलाया, हिला और खुली हुई किताब धप्प से फ़र्श पर गिर पड़ी। तब जाकर उसकी नीन्द पूरी तरह खुली।

"यह उपन्यास किसी भी क़िस्म की नीन्द की गोली से भी ज़्यादा असरदार है!" बेटी ने उपन्यास उठाते हुए खिलखिलाकर कहा।

"चलो, चुप करो!" रुस्तम ने मुंह फुलाते हुए कहा। "बड़ी फ़ुरसत है न मुझे उपन्यासों के बारे में सोचने की! तुम मुझे उस हालत तक पहुंचा दोगी कि मैं तुम्हारी शादी दरवाज़े में घुसे पहले आदमी से करवा दूंगा।"

पेरशान ने नख़रे से मुंह बनाया: डरा ही दिया मुझे, – तभी बरामदे से सलमान की शान्त व संयत आवाज़ आयी:

"चाचा, किस की शादी करवाने का इरादा है दरवाज़े में घुसे पहले आदमी से?"

"अरे, इस नटखट लड़की की... आओ, आओ!"

चलते-चलते बंदगी बजाता हुआ सलमान तुरन्त भांप गया कि अध्यक्ष की नज़रें क्या ढूंढ़ रही हैं। उसने रुस्तम को पाइप, तम्बाकू की थैली और माचिस दे दिये।

"लगता है काम धीरे-धीरे जमता जा रहा है, क्यों?" गृहस्वामी ने नीले धुएं के आवरण की ओट से कहा।

"जम रहा है? यह शब्द ठीक नहीं है, रुस्तम चाचा: सब अपने ढंग से हो रहा है। तीन दिन में बोवाई ख़तम कर लेंगे। अगर पतझड़ तक यही रफ़्तार क़ायम रख सकें, तो तुम्हारा फ़ोटो 'प्रावदा' में ज़रूर छप जायेगा।"

काम-काज की बातों से पेरशान ऊब उठी और वह मुंह बनाये अपने कमरे में चली गयी।

"मैं न ही सम्मान पाने के लिए, न ही पुरस्कार पाने के लिए काम करता हूं," रुस्तम ने दृढ़तापूर्वक विरोध किया, और इस मामले में उसने शत-प्रतिशत सच कहा।

"कृषि योजना से कम-से-कम दोगुना उत्पादन कर लेंगे, भव्य संस्कृति-भवन बना लेंगे, बिजली ले आयेंगे – देखते-देखते पांच कोनोंवाला सोने का तारा सीने पर जगमगा उठेगा!..." सलमान वही राग अलापता रहा।

"नींव का काम कैसा चल रहा है?" रुस्तम ने टोक दिया।

सलमान ने कंधे पर आड़ा डाला फ़ील्ड-बैग खोलकर बीजक व रसीदों की गड्डी निकाली।

"ज़रा तीस हज़ार के ट्रांसफ़र पर दस्तख़त कीजिये। वैगन मुझे मिल गये हैं, दो-एक दिन में संस्कृति-भवन की नींव के लिए पत्थर ले आयेंगे। काश, आपको मालूम होता, चाचा, कि वैगनों की ख़ातिर मैं लोगों के आगे-पीछे घूमता कितना थक गया हूं! न जाने कितने दरवाज़ों के क़ब्ज़ों में तेल डालना पड़ा है मुझे!"

"कौन-सा तेल?" रुस्तम समझ नहीं पाया।

"ऐसा तेल," सलमान ने ही-ही करके अंगूठे व तर्जनी को आपस में रगड़ते हुए इशारा किया।

अध्यक्ष की भौंहें सिकुड़ गयीं।

"अपनी ज़बान बंद रखो, वरना वही तेल खौलाकर तुम्हारे गले में उंडेल दिया जायेगा।"

सलमान लापरवाही से मुस्कराया।

"चिन्ता मत कीजिये, मैं अपना काम अच्छी तरह जानता हूं: किसी को महंगी सिगरेट पिला देता हूं, किसी को पहले झुककर सलाम बजा देता हूं, उसके बीवी-बच्चों की सेहत का हाल पूछ लेता हूं, किसी को अपने यहां चाय पर बुला लेता हूं। और कोई चारा नहीं है," उसने कंधे उचकाये, "हर आदमी के साथ अलग-अलग ढंग से पेश आना पड़ता है!"

किसी ने हौले से दरवाज़ा खटखटाया, कमरे में यारमामेद तिरछा होकर घुसा।

"मैं पशुपालन फ़ार्म की याद दिलाने आया हूं," उसने कहा।

"हूं, पशुपालन फ़ार्म हमारे लिए कम मुसीबतें नहीं खड़ा करेगा," सलमान ने समर्थन किया। "मुझे डर है कि यह तेल्ली चाची की औलाद सामूहिक फ़ार्म के माल को पूरे ज़ोर से हड़पे जा रही है। ज़रा सोचिये तो, कीशी, मैं और मेरी बहन भी काम करते हैं, पर हम उतना ख़र्च नहीं कर सकते, जितना कि वे लोग करते हैं। बेशक, उनका सारा झुण्ड सामूहिक फ़ार्म की भेड़ों को चट किये जा रहा है। इसके अलावा वे नया घर भी बना रहे हैं। ज़रूर दाल में कुछ काला है, क़सम से! हमने तब बेकार उनकी जांच रुकवा दी..."

"हां, बेकार रुकवा दी," रुस्तम धीरे-धीरे, प्रत्येक शब्द तौलता बोल रहा था, "अब तो हमें शेरज़ाद से भी पूछना पड़ेगा।"

इस अप्रत्याशित बात से यारमामेद और सलमान दोनों भौचक्के रह गये।

"कुछ भी हो, आख़िर वह पार्टी संगठन का सचिव है," रुस्तम ने कहा, "वही जांच समिति का अध्यक्ष बने।"

"शेरज़ाद नीचे है," यारमामेद ने गरदन तानकर बताया। "बुलाऊं?"

शेरज़ाद यहां किसलिए आया था, यह यारमामेद नहीं जानता था, उसने केवल अहाते से होकर आते समय शेरज़ाद को माय्या, पेरशान व गिज़ेतार के साथ खड़ा और उनको ज़मीन पर कोई नक़्शा-सा बनाता देखा था, जैसे वे कोई घर या शेड बनाने जा रहे हों।

"चलो, देखते हैं, उनका वहां क्या करने का इरादा है," रुस्तम ने सुझाया और बरामदे में निकल गया।

सचमुच शेरज़ाद, माय्या व गिज़ेतार ज़मीन में खूंटियां गाड़कर रस्सियां तान रहे थे और उनके बीच की दूरी क़दमों से नाप रहे थे।

"ऐ, पार्टी सचिव!" रुस्तम ने रेलिंग पर झुककर आवाज़ दी। "हमारे पशुपालन फ़ार्म से फिर धुएं की बू आ रही है, और धुआं बिना आग के नहीं उठता। हम जांच करवाना चाहते हैं। तुम्हारी क्या राय है इस बारे में?"

शेरज़ाद ने हाथ से माथे का पसीना पोंछा और कुछ सोचकर दृढ़ स्वर में बोला:

"केरेम बहुत भला आदमी है, मैं उसकी ज़मानत देता हूं। जांच बेशक, ईमानदार कर्मचारियों की भी करनी चाहिए। लेकिन जांच के पहले से ही लोगों पर छींटाकशी नहीं करनी चाहिए, कुछ ठीक नहीं लगता।"

रुस्तम ने जवाब दिया कि अगर तेल्ली चाची हर वक़्त लफ़्फ़ाज़ी करती रहती है, शिकायतें लिखती रहती है, तो इसकी पूरी सम्भावना है कि उसका बेटा भी उसके चरण-चिह्नों पर चल रहा है और पूरा का पूरा ख़ानदान ही दोषी है। शेरज़ाद को चरवाहों का प्रार्थना-पत्र देख लेना चाहिए।

उसे मालूम पड़ा कि शेरज़ाद प्रार्थना-पत्र पढ़ चुका है – लिखावट बदली हुई है, जानबूझकर अनपढ़ों की तरह टेढ़ा-मेढ़ा लिखा गया है, नाम कल्पित

हैं, उन नामों के चरवाहे सामूहिक फ़ार्म में हैं ही नहीं। ज़ाहिर था यह एक असली अनाम पत्र है।

"हमें शक करने का रोग नहीं है यह सभी जानते हैं," सलमान ने शान्त स्वर में टिप्पणी की, "लेकिन किसी को पहले से ही अपने संरक्षण में ले लेना भी ठीक नहीं होता। बड़ी अजीब बात है – तेल्ली और उसका बेटा चाहे जो भी न कहें, लेकिन तुम ज़रूर उनकी रक्षा करने लगते हो।"

इन शब्दों ने, जैसा कि सलमान का अनुमान था, रुस्तम की सारी शंकाएं दूर कर दीं।

"मुझे पूरा यक़ीन है कि केरेम बेईमान है। फ़ौरन जांच समिति भेजो। किसे भेजा जाये? गूंगे हुसैन को, यारमामेद को या और साधारण सामूहिक किसानों में से किसी को... फ़ौरन काम शुरू करो!" उसने तत्क्षण सलमान को आदेश दिया, बरामदे से नीचे उतरा और माय्या से सख़्ती से पूछा कि वे वहां क्यों खोद रहे हैं।

माय्या का चेहरा लाल हो उठा और उसने घबराहट के कारण कांपती आवाज़ में बताया कि युवाओं ने गरमियों में हर घर में बावरचीख़ाना, हम्माम और शौचालय बनाने का निर्णय किया है। यह युवाओं का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने का अभियान होगा; इसीलिए वे इस समय अंदाज़ लगा रहे हैं कि उन्हें किस तरह जल्दी से जल्दी और सस्ते में बना पायेंगे।

"क्या शिष्टता तुम लोगों के ख़याल से जीवन-स्तर के सुधार में शामिल नहीं है?" रुस्तम ने पूछा। "मुझे यहां श्रम-दान करवाने की ज़रूरत नहीं है। मैं ख़ुद जानता हूं कि मुझे अपने घर में क्या बनाना है।"

माय्या का चेहरा उतर गया, वह बेलचा ज़मीन पर पटककर झटके से मुड़ी और बाग़ीचे में चली गयी।

पर पेरशान ने न जाने क्यों हर बात के लिए शेरज़ाद को दोषी ठहराया:

"तुम घमण्ड के मारे फूले जा रहे हो, इसीलिए तुम हमें अपने बड़ों के ख़िलाफ़ भड़का रहे हो।"

केवल सलमान के सपाट चेहरे पर विजयी मुस्कान खिली हुई थी।

१०

माय्या अपने पर नियंत्रण रखने की और प्रसन्न नज़र आने की कितनी ही कोशिश क्यों न करे, पर सकीना की पैनी नज़रों से उसकी मार्मिक पीड़ा छिपी न रह सकी।

माय्या काम पर ज़रा जल्दी जाने की कोशिश करती, शाम गये घर लौटती, थककर चूर हो जाने तक खेतों में पैदल चलती, अधिकरण में अपने लिए अतिरिक्त काम ढूंढ़ निकालती, पर दुःख था कि बराबर उसका पीछा कर रहा था, एक क्षण के लिए भी उसे अकेला नहीं छोड़ रहा था। जब तक माय्या लोगों के बीच में, बाग़ों में, कपास के हरे-भरे खेतों में, नालियों पर रहती, वह अपना दुःख भूल जाती, पर कमरे में अकेली रहते ही उसके दिल में मर्मभेदी टीस उठने लगती।

बुज़ुर्गों का कहना है कि वक़्त सबसे बड़ा हकीम होता है। लेकिन वह भी हर किसी को शान्ति नहीं दिला सकता।

"आख़िर मेरा क़सूर क्या है?" वह पलंग पर लेटकर गराश के तकिये को बांहों में भरते हुए अपने से पूछती।

एक मिनट बाद ही यह समझकर कि उसे नीन्द नहीं आयेगी, वह उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगती, खिड़की के पास खड़ी रहती, फिर लेट जाती। कमरे में हर चीज़: शीशा, फूलदान में रखे फूल, तांबे के मोमबत्तीदान में लगी अधजली मोमबत्तियां – उसे अपनी सुहाग-रात की याद दिलातीं, जब उसने दिल में अस्पष्ट आशाएं संजोये अपने से कहा था: "यहां तुम अपने पति के साथ सुखी रहोगी!"

माय्या अकसर अपने को तसल्ली दिलाती कि सारे कष्ट और पीड़ाएं उसका वहम हैं, सामान्य स्त्री-सुलभ उत्तेजना की उपज हैं, पति दिन-रात खेत में काम करता है, सारे ट्रैक्टर-चालक बिलकुल वैसे ही जीते हैं, जैसे कि उसका गराश। ज़िन्दगी में क्या नहीं होता, – आदमी थक जाता है, ज़रूरत से ज़्यादा चिड़चिड़ा हो जाता है, हो सकता है, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में कुछ कहा-सुनी हो गयी हो – इसीलिए पत्नी के साथ बदतमीज़ी से पेश आया, बुरा-भला बोला। हर बात का इस तरह बुरा नहीं मानना चाहिए। अगले वसन्त में भी गराश अन्य ट्रैक्टर-चालकों के साथ फिर स्तेपी में ख़ाना-बदोशों की तरह रहेगा, अपनी गुदगुदी सेज पर सोने के बजाय सख़्त तख़्तों पर सोयेगा और हो सकता है खेत में हलरेखा पर ही।

माय्या गाउन पहने नंगे पैर खिड़की के पास गयी, गांव में छायी निस्तब्धता को कान लगाकर सुनने लगी, उसका दिल धक-धक कर रहा था, वह हर मामूली-सी सरसराहट पर चौंक रही थी, आशा लगाये थी कि अभी दरवाज़े पर खटखटाहट होगी और देहलीज़ पर गराश नज़र आ आयेगा। उसे कितना अरसा हो चुका है रात को घर में रहे। कभी-कभी तो वह सुबह केवल खाना लेने भागे-भागे आता, हड़बड़ाकर पत्नी से बात करता और चला जाता: "गली में ट्रक मेरे इंतज़ार में खड़ा है!.."

गांव में बहुत से लोग गराश के लंबे अरसे से घर पर न रहने की तरफ़ ध्यान दे रहे थे। वे फुसफुसाते, कानाफूसी करते, सिर हिलाते। माय्या भी समझती थी कि यह अजीब-सी स्थिति देर तक नहीं चल सकती, इसका कुछ न कुछ अन्त अवश्य ही होना है!

आख़िर उनमें कभी तो प्रेम था, अवश्य था!.. माय्या की कल्पना में प्रेम मनुष्य के हृदय में जन्मा दीप्तिमान तारा था, जो पर्वतीय निर्झर सदृश पवित्र होता है और उसकी दीप्ति कभी लुप्त न होनेवाली थी।

माय्या जानती थी कि कभी-कभी युवक और युवती प्रथम भेंट से ही एक दूसरे के प्रति प्रेम में पागल हो उठते हैं, पर दो-तीन महीने के वैवाहिक जीवन के बाद उनका उत्साह ठण्डा पड़ जाता है, वे झगड़ने लगते हैं। लेकिन वे अशिष्ट और मोटी चमड़ीवाले लोग होते हैं। उनसे क्या आशा की जा सकती है? ऐसे परिवारों में पति व पत्नी एक दूसरे के आगे किसी मामले में नहीं झुकते हैं, दया नहीं करते हैं, मामूली से मामूली बातों पर बहस करते हैं, झगड़ते हैं और इस तरह अपने प्यार को दफ़ना देते हैं। और प्रेम के अभाव में परिवार भी बिखर जाता है।

उसने गराश को क्यों चुना? माय्या ने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था, लेकिन मन-ही-मन वह अनुभव करती थी कि गराश साहसी, बुद्धिमान और अपने वचन का पक्का है... क्या माय्या ने धोखा खाया है? नहीं, गराश को अवश्य लौट आना चाहिए, वह अपनी पत्नी को धोखा नहीं दे सकता।

अचानक उसे बाहर एक छाया की झलक दिखाई दी, कोई बिना आवाज़ किये उसकी खिड़कियों तले से गुज़र गया। अलसेशियन बहुत धीमी आवाज़ में भौंका, मानो वह उसका जाना-पहचाना आदमी हो... माय्या कंधों पर गाउन डालकर नंगे पैर बरामदे में निकल आयी। रुस्तम के तूफ़ानी, रह-रहकर लिये जा रहे खर्राटे घर के कोने-कोने में गूंज रहे थे।

कुत्ता जंजीर खड़खड़ाता हुआ एक बार फिर धीरे से भौंका और दुम हिलाने लगा, मानो माय्या से कह रहा हो : अपना आदमी है, अपना, डरो मत, फाटक खोल दो... माय्या ख़ुशी के मारे उड़ती हुई फाटक के पास पहुंची, हंस पड़ी।

"गराश, तुम हो?!"

वह सलमान की चापलूसी-भरी आवाज़ सुनकर सन्न रह गयी :

"मैं हूं, ख़ानम, मैं... पागल की तरह गली में भटक रहा हूं, नीन्द मेरे पास नहीं फटकती। फाटक खोल दो, बस एक नज़र देखकर चुपचाप चला जाऊंगा..."

माय्या के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, वह फ़ौरन घर में भागी और सीढ़ियां चढ़कर अपने पलंग पर उछलकर जा पड़ी। उसे इतना डर लग रहा था कि उसके दांत बजने लगे।

अलसेशियन अहाते में ज़ोर से भौंक उठा, रुस्तम की नीन्द खुल गयी :

"बीवी! यह कुत्ता क्यों पागल की तरह भौंक रहा है?"

"कोई राहगीर है... सोओ, सोओ..."

"गराश रात को घर में नहीं सोया क्या? मुझे अच्छा नहीं लगता कि बेटा घर से दूर रहने लगा है।"

सकीना स्वयं भी देख रही थी कि हालात कुछ ठीक नहीं हैं, लेकिन उसने गराश का पक्ष लेने का फ़ैसला किया :

"हर वसन्त में ऐसा ही होता है। लड़का काम करता है..."

"लेकिन जवान बहू तो सेज पर अकेली घुटती रहती है। ख़ुद भी समझ सकता है, मिलने आ सकता है। मैं कैसे तुम्हारे पास चरागाहों से हर रात को भागकर आता था।"

सकीना ने ठण्डी सांस ली।

"हम हम थे, और वे वे हैं... क्या फ़ायदा याद करने से? तुम बहू के साथ ज़रा प्यार से पेश आया करो। हर वक़्त चिल्लाते रहते हो... यह कोई अच्छी बात है? अब ख़ुद ने हम्माम बनाने की ठान ली है। आख़िर यह क्या बात हुई? और अब जल्दी भी मचाने लगे हो, ताकि रुस्तम के घर में हम्माम दूसरों से पहले तैयार हो जाये।"

रुस्तम को ये बातें बिलकुल भी पसंद नहीं आयीं, वह पत्नी की ओर पीठ कर तकिये में मुंह दबाकर लेट गया।

उधर माय्या कच्ची नीन्द में आंसू पीती लेटी थी। उसे सपने में कोई

अनजाना बाग़ नज़र आ रहा था, जिसमें बादशाह के ताज जैसा एक बड़ा लाला खिला हुआ था। उसने फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, पर वह उस तक पहुंचा नहीं : लाला उससे धीरे-धीरे दूर सरकता घास में गायब हो गया। माय्या ने दोनों हाथ बढ़ाये, आगे को झुकी और...

किसी ने उसे पकड़ लिया और माय्या ने बिना आंखें खोले ही गराश के हाथों का स्पर्श महसूस किया, उसकी तरफ़ बढ़ी और फुसफुसायी :

"तुम? तुम हो?"

उसे तुरन्त आंखों में काटी रातें, इंतज़ार की घड़ियां और आंसू याद हो आये... उसने पति के आलिंगन से मुक्त होकर पूछा :

"तुम सारे हफ़्ते कहां ग़ायब रहे?"

गराश पीछे हट गया और आंखें चुराता हुआ कृत्रिम शान्ति के साथ बोला :

"जैसे नहीं जानती हो! खेत में था।"

"चाय पियोगे?"

"शुक्रिया। मां सोयी नहीं थीं, उन्होंने खाना भी खिला दिया और चाय भी पिला दी। सो जाओ, बहुत रात हो चुकी है।"

हालांकि उस रात वे साथ सोये, पर माय्या को अपनी एक अभागी सहेली के शब्द याद हो आये :

"क़ब्र फूलों की ठण्डी सेज से ज़्यादा गरम होती है..."

उसकी नीन्द काफ़ी भोर में खुल गयी। मांसल, धूप में काली पड़ी रोयेंदार त्वचावाला गराश पीठ के बल लेटा था, रज़ाई के ऊपर रखा उसका हाथ युवा सनोबर के तने जैसा लग रहा था... उसकी मुट्ठी कसी हुई थी, मानो उसने भेड़िये के बच्चे का गला दबोच रखा हो।

माय्या को किनारे पर लेटे पति को उलांघने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह कंधों पर गाउन डालकर बरामदे में निकल आयी। सूरज निकल चुका था, अधिक प्रखर नहीं, धुंधला। माय्या को लगा कि आकाश की नीलिमा दिन-प्रतिदिन उजली होती जा रही है। वह कोहनियां रेलिंग पर टिकाये मौन खड़ी बाग़ को देखती रही। ख़ूबानी के वृक्षों ने ज़मीन को फूलों की पंखड़ियों से ढक दिया था, कहीं-कहीं पत्तियों के बीच नन्हे-नन्हे, सख़्त और रोयों से ढके फल छिपे हुए थे। शाखाओं पर पक्षी सकुचाते हुए गा रहे थे, मानो रात-भर में अपनी रागिनियां भूल गये हों और इस

समय केवल अपना स्वर साध रहे हों। माय्या बाग़ में उतरकर लालों की क्यारी के पास गयी और उसने खर-पतवार उखाड़कर फूलों के इर्द-गिर्द की गीली व नमी की बू छोड़ रही मिट्टी ढीली कर दी। "कुछ ही दिनों में लाले खिल उठेंगे और मेरे कमरे में बड़े-बड़े गुलदस्तों की ख़ुशबू फैली रहा करेगी," उसने सोचा और उसे कुछ चैन आ गया, दिल ख़ुश हो उठा। वह वहीं किनारे-किनारे झाड़ियां लगे लॉन पर प्रातःकालीन स्वच्छ हवा में गहरी सांसें लेती हुई व्यायाम करने लगी।

उबा देनेवाले अपने कमरे में उसे वापस लौटने की इच्छा नहीं हुई, वह ख़ूबानी के वृक्ष तले बैंच पर बालकनी की ओर पीठ करके बैठ गयी। वहां बरामदे से पति के क़दमों की आहट सुनाई दे रही थी, उसने अहाते में उतरकर ज़ोर-ज़ोर से फूत्कार करते और छपाके मार-मारकर हाथ-मुंह धोये और फिर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया...

आख़िरकार गराश बाग़ में आ गया। माय्या ने मुड़कर देखा और उसे लगा जैसे उसका पति दबे पांव चल रहा है – इस तरह केवल क़सूरवार ही चलते हैं। उसने न उसका चुम्बन लिया और न ही दुआ-सलाम की, बल्कि व्यावहारिक ढंग से बोला:

"अच्छा, मैं चलता हूं। शायद शाम को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन जाऊंगा। मेरा इंतज़ार मत करना।"

"क्या अब तुम्हारा अपना घर नहीं रहा?"

"मैंने कहा तो कि मेरे सिर ढेरों काम हैं," गराश बिना उससे नज़रें मिलाये बुदबुदाया।

"क्या हो गया तुम्हें? साफ़-साफ़ कहो न, मैं चिन्ताओं के मारे मरी जा रही हूं," माय्या ने पति के कंधों पर हाथ रखकर पूछा।

"कुछ नहीं हुआ, मेरा पीछा छोड़ो!" गराश चिल्लाया और उसने ज़ोर से कंधे झटककर उसके हाथ हटा दिये।

"मैं यह सहन नहीं कर सकती, यह याद रखो!"

"अच्छा, सहन नहीं कर सकतीं?!"

आश्चर्यचकित माय्या को लगा जैसे उसने उन दोनों को बांधे रखनेवाले सारे धागों को एक ही वार से काट डालने के इरादे से तेज़ धारवाली छुरी उसके सिर पर उठा ली हो, पर ऐसा न कर पाकर हाथ को रोक लिया हो।

गराश कंधे झुकाकर बिना मुड़कर देखे चला गया।

माय्या को अपने पैर कांपते महसूस हुए और उसने पेड़ के तने का सहारा ले लिया।

उससे दो क़दम की दूरी पर ही गराश के लगाये हुए लिली के पौधे जल्दी से जल्दी मज़बूत होकर अपनी पूरी ऊंचाई तक बढ़ने और ओस से भीगे चारु व सुगंधित, श्वेत संगमरमर से तराशे पुष्प के रूप में खिल उठने के इरादे से सूर्य-किरणों का पान कर रहे थे।

ये फूलों के पौधे भी कुछ दिन हुए क्या उसी के गराश ने ही लगाये हैं?!

ग्यारहवाँ परिच्छेद

१

अगर सुबह बरामदे से गांव के स्लेट व खपड़ों की छतोंवाले घरों के ऊपर से नज़र डाली जाये, तो आंखों के सामने दूर क्षितिज तक फैले घने हरे-भरे खेत, खड्ड, टेकरियां, पटरी रखकर खींची गयी-सी सीधी नहरें, नालियां और आगे फिर असीम खेत ही खेत दिखाई देते हैं...

मुग़ान का सूरज दिन-प्रतिदिन प्रखर व शुष्क होता जाता है, उसकी किरणों तले उपजाऊ रसों से फूली ज़मीन फैली रहती है, हम्माम की तरह भाप उठती रहती है, मिट्टी में डाला गया हर बीज अंकुरित होकर सूरज की तरफ़ अपना तना बढ़ाने लगता है, कलियां आती हैं और ठोस बालियां बन जाती हैं... रुस्तम का इन सब को देखते हुए कभी जी ही नहीं भरता था। वह काफ़ी देर तक सुनहले होते जा रहे और बालियां आये गेहूं, कपास की एकसार क़तारों व तेज़ी से बढ़ती जा रही मक्का के खेतों को देखता रहता था। उसके इस नयनाभिराम दृश्य से नज़र हटाने और तरोताज़ा महसूस कर काम पर रवाना हो जाने तक सकीना को बार-बार उसे याद दिलाना पड़ता था कि कार्यालय से उसे कोई बुलाने आया था, कि काठी कसी हुई घोड़ी सवार के इन्तज़ार में थक गयी है।

उधर काम और भी बढ़ गया था: पौधों का अतिरिक्त पोषण करना,

सिंचाई व निराई पर ध्यान देना ज़रूरी था, क्योंकि इन्हीं कुछ दिनों में फ़सल के भाग्य का निर्णय होनेवाला था। रुस्तम न ख़ुद चैन से बैठ रहा था और न ही दूसरों को चैन से बैठने दे रहा था।

वह सुबह थोड़ी देर के लिए कार्यालय में जाकर यारमामेद द्वारा ज़िले की संस्थाओं के लिए तैयार की हुई रिपोर्टों पर बिना उन्हें दुबारा पढ़े हस्ताक्षर करता, फिर खेत रवाना हो जाता और अंधेरा होने तक वहां रुका रहता। जब वह गांव लौटता, उसकी घोड़ी धूल पर घने, लसलसे झाग गिराती लड़खड़ाती हुई चलती।

आज भी वैसा ही हुआ – उसने जल्दी-जल्दी में लेखा विभाग की दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किये, टोली-नायक हसन को राजमार्ग के दोराहे पर स्थित कपास के खेत को अतिरिक्त पोषण देने को कहा, सलमान की संस्कृति-भवन के निर्माण की रिपोर्ट सुनी और बरामदे में उसकी प्रतीक्षा कर रही दो बूढ़ियों से जल्दी में "फ़ुरसत नहीं है, बिलकुल फ़ुरसत नहीं है!" कहकर अहाते में निकल घोड़ी की लगाम संभाल ली। उसी समय बाड़ की उस ओर से गिज़ेतार की आवाज़ सुनाई दी:

"चाची, तुम्हारी बालों की सफ़ेदी में कभी दाग़ न लगे, जाओ, ज़रा ख़ुद ही उसे बता दो!"

"नहीं, बेटी, तुम भी चलो, एक और एक ग्यारह होते हैं!" तेल्ली चाची ने जवाब दिया।

रुस्तम ने खीज के मारे थूक दिया और ख़ुद ही हमला बोलने का फ़ैसला कर चिल्लाया:

"क्या तकलीफ़ है आप लोगों को? आप लोगों को काम करना चाहिए, पर आप बाड़ की छाया में छिपी खड़ी हैं!"

"अरे, अरे, मेरे सफ़ेद बालों का बिलकुल भी लिहाज़ नहीं! इस मर्द के चार कान हैं, यह घास को बढ़ते हुए भी सुन लेता है!.." चाची आने में आनाकानी कर रही गिज़ेतार को खींचती हुई अहाते में आ गयी। "खाने का समय है और हमारा खेत पास ही में है," उसने रुस्तम को समझाया और आगे बोली: "काम फ़ौरी है और इसका वास्ता ख़ुद तुमसे ही है।"

रुस्तम ने स्त्रियों को अपने कक्ष में बुलाया। तेल्ली कमरे के बीच में पेट पर हाथ बांध रुक गयी। उसके चेहरे पर वैसा ही भाव व्याप्त हो गया जैसा कि चूहे को दबोच लेनेवाली बिल्ली के चेहरे पर होता है। जब

कि गिज़ेतार घबराहट में नज़रें झुकाये, गालों को एप्रिन से छुपाती दहलीज़ पर जड़वत् खड़ी रह गयी।

"जल्दी कहो, नहीं तो मुझे कहीं जाना है," रुस्तम ने अनुरोध किया।

"तुम्हें जाना है, तो एक बात कहे देती हूं: अपने बेटे पर नज़र रखो, चचा!" चाची बिना झिझके कह उठी।

ये शब्द सुनकर गिज़ेतार के मुंह से दबी हुई चीख़ निकल गयी और उसका चेहरा इतना लाल हो उठा कि उसकी आंखों में आंसू आ गये। रुस्तम को भी अपना चेहरा तमतमाता महसूस हुआ और उसके लिए सांस लेना मुश्किल हो उठा।

उसे हर बात की अपेक्षा थी – केरेम की हिमायत किये जाने की भी, पराश द्वारा कपास की बोवाई ग़लत ढंग से करने की जाने की शिकायत की भी, – लेकिन तेल्ली चाची का स्वर और गिज़ेतार की घबराहट से उसे आभास हो गया कि क़िस्सा कुछ और ही है और कहीं ज़्यादा भयानक भी।

रुस्तम ने, इस भय से कि कहीं उसकी बात बग़ल के कमरे में कोई सुन न ले, दबी आवाज़ में कहा:

"चीख़ो मत! ज़रा ढंग से बताओ। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है..."

"इसमें समझना क्या है?" तेल्ली ने कंधे उचकाये। "तुम्हारे बेटे ने सारे गांव की बदनामी करवा दी। अगर लड़की बाहर की हो, अनाथ हो, अनाथालय में पली हो, तो इसका मतलब क्या यह है कि उसे पैरों तले रौंदा जाये? ज़रा सोचो तो, चचा, क्या इन सब बातों के बाद कोई शहरी लड़की हमारे गांव के लड़के से शादी करने को तैयार होगी? तुमने उसे फूल-सी सुन्दर लड़की की ज़िन्दगी बरबाद क्यों करने दी?"

रुस्तम ने ऐसे हाथ झटकारे जैसे किसी मुर्ग़ी को भगा रहा हो।

"लगता है आज तुम्हें लू लग गयी है, बुरी तरह गरम हो रही है!.. बेटी, कम-से-कम तुम्हीं बताओ," वह गिज़ेतार की ओर मुड़ा, "इसे मुझ से आख़िर क्या चाहिए? इसने कितनी बार अनाम पत्र लिखकर मेरी नाक में दम कर रखा है!"

"आप ग़लत कह रहे हैं, रुस्तम चाचा," गिज़ेतार ने विरोध किया। "तेल्ली स्पष्टवादी व्यक्ति है: इसके जो दिल में है, वही ज़बान पर!

अगर ज़रूरत पड़ जाये, तो यह ख़ुद अपना नाम लिखकर शिकायत कर सकती है। हम आये इसलिए हैं, क्योंकि हमारा दिल माय्या के लिए दुखता है। तुम्हारे लाड़ले ने अपनी क़ानूनी पत्नी को छोड़कर किससे रिश्ता क़ायम किया है? किससे? सलमान ने जान-बूझकर तो अपनी बहन उसके मत्थे नहीं मढ़ी है?"

"श-श ऽऽ! निकलो यहां से! .." रुस्तम मुक्के दिखाता हुआ फुस-फुसाया। "मेरे ख़ानदान पर कीचड़ उछालने की सोच ली? यह कभी नहीं होने दूंगा!"

तेल्ली चाची अचानक शान्त हो उठी और गिज़ेतार का हाथ पकड़कर बोली:

"चलो, चलो... यह सुनना ही नहीं चाहता – फिर ख़ुद ही पछताये‌गा..."

बरामदे में स्त्रियों की मुलाक़ात सलमान, गूंगे हुसैन और यारमामेद से हो गयी, जो अध्यक्ष के पास जा रहे थे। तेल्ली का तमतमाया चेहरा देखकर वे समझ गये कि अध्यक्ष और उसमें ज़ोरदार झड़प हुई है, और उन्होंने आशंकित हो एक दूसरे की तरफ़ देखा: "बड़े अच्छे मौक़े पर पहुंचे हैं! .. उस पर अगर भूत सवार हो जाये, तो अपने सगे बेटे को भी नहीं बख़्शे, मार डाले!"

कक्ष में अकेला रह गया रुस्तम अपनी मूंछों पर बल देता चहलक़दमी कर रहा था। उसका पिता का हृदय उसे बता रहा था कि तेल्ली ने सच्ची बात कही है।

उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी। वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि यह बुरी ख़बर तेल्ली चाची लायी है, जिससे उसे नफ़रत हो चुकी थी।

"झूठ है, सरासर झूठ! घटिया क़िस्म का झूठ!" रुस्तम अपने को तसल्ली दिला रहा था। "उसने जान-बूझकर अपने बेटे को बदनामी से बचवाने के इरादे से गराश पर कीचड़ उछाली है।"

"अंदर आ सकते हैं, चचा?" सलमान का शान्त स्वर सुनाई दिया।

"आओ, आओ! पशुपालन फ़ार्म में क्या हो रहा है? चाची अभी क़सम खाकर कह रही थी कि उसका बेटा इनसान नहीं, फ़रिश्ता है," रुस्तम ने कहा।

सलमान ने आंख के इशारे से यारों को सोफ़े पर बैठने को कहा और

ख़ुद ने मेज़ के पास खड़े-खड़े फ़ील्ड-बैग में से काग़ज़ों की गड्डी निकाल जांच की रिपोर्ट में नज़रें गड़ा लीं।

"अगर उसके बेटे की मानी जाये, तो इस बात पर विश्वास करना होगा कि पशुपालन फ़ार्म में भेड़िये और भेड़ें एक घाट पानी पीते हैं। वह और कह भी क्या सकती है? क्या यह मान ले कि उसका लाड़ला पक्का चोर है?"

"परेशान मत करो!" अध्यक्ष ने चिरौरी की। "वहां चोरी की गयी है?"

"चोरी!" सलमान ने घृणापूर्वक हुंकार भरी। "लूट हुई है, दिन-दहाड़े लूट... तुम लोग चुप क्यों हो?" उसने एकाएक हुसैन व यारमामेद की ओर पलटकर कहा: "बताओ, जो तुम्हें मालूम हुआ है।"

गूंगे हुसैन ने सकुचाते हुए अध्यक्ष की ओर घूरकर देखा और ज़बान से "टच्च" करके चुप रह गया।

उसके बजाय यारमामेद बोला। वह छाती ठोक-ठोककर, थूक के छींटे उड़ाता कभी चीख़ रहा था, तो कभी थकावट के मारे बुदबुदा रहा था। उसका सारा सूखा बदन ग़ुस्से के मारे कांप रहा था। वह अपने आदरणीय रुस्तम-कीशी की क़सम खा-खाकर कह रहा था कि सारे चरवाहों को आश्चर्य हो रहा था कि केरेम को इतना लालच कैसे हो गया – ठूंस-ठूंसकर खाता रहता है, पर उसका पेट ही नहीं भरता... यारमामेद ने रुस्तम के सामने रिपोर्टें हिलाईं: ये मेमने ठिठुर कर मर गये, ये तीन भेड़े खड़ा किनारा ढहने से नदी में गिर गये, यह रेवड़ में प्लेग फैल गयी। सिर्फ़ जनवरी में अस्सी मेमने मर गये। ये सारी रिपोर्टें केरेम के ज़बानी कहे पर लिखी गयी हैं, चरवाहों ने एक भी खाल अपनी आंखों नहीं देखी... पचास मेमने गोया ठण्ड से मर गये और केरेम को लम्बी उम्र जीने को कह गये। यारमामेद के पतले, टेढ़े-मेढ़े होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गयी।

उसे देखकर रुस्तम भड़क उठा:

"अरे, बेशर्म, यह कोई मज़ाक़ करने का वक़्त है? रोना चाहिए..."

यारमामेद ने चेहरे पर उदासी लाकर एक ठण्डी सांस ली।

"आपकी बात हमेशा की तरह सही है। सचमुच ऐसी सरे आम लूट देखकर दिल रोने को चाहता है... इस हद तक पहुंच गये हैं कि उन्होंने तीस किलोग्राम का एक मेढ़ा काटकर शिक्षाविभागाध्यक्ष को दावत भी दी।"

"गोशातख़ां को?" रुस्तम ने पूछा।

"और क्या," सलमान बोल उठा। "और ढीठों ने रिपोर्ट में लिख दिया कि भेड़िया बाड़े में घुसकर उस दुम्बे की दुम उखाड़कर ले गया... है न मजेदार बात? और अब चरवाहे सफ़ाई पेश कर रहे हैं: हमने केरेम पर विश्वास करके दस्तख़त कर दिये थे..."

गूंगे हुसैन ने ये शब्द सुनकर फिर ज़बान से "टच्च" की और वह भी इतनी ज़ोर से कि सब चौंक उठे।

"मैंने केरेम से कहा: 'तू किसके भरोसे था, करमफूटे? गोशातख़ां तो ठूंसकर चलता बना, पर अब तुझे सींक पर चढ़ाकर कबाब की तरह पकाया जायेगा,'" सलमान बोलता रहा। "अगर हमारी राय मानना चाहो, चाचा, तो हम एक ही बात कहेंगे – यह आगे नहीं चलता रह सकता है। केरेम को फ़ौरन काम से हटाकर पशुपालन फ़ार्म पर किसी भरोसेमंद आदमी को भेजना चाहिए, जिस पर हम वैसा ही विश्वास कर सकें, जैसे ख़ुद पर।"

"किसे?" रुस्तम ने यारमामेद की थमायी रिपोर्टें देखते हुए पूछा।

"बेशक, हुसैन को," सलमान ने कुछ हिचकिचाकर सुझाव दिया और कनखियों से अध्यक्ष की तरफ़ देखा।

रुस्तम ने भेड़ों के रेवड़ पर भेड़िये के हमले की मुड़ी-तुड़ी, चबायी हुई-सी रिपोर्ट पर किसी के हस्ताक्षर पर उंगली रखकर कहा:

"ठहरो, ठहरो... यह किसने दस्तख़त किये हैं? बूढ़े बाबा ने? मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं, वह कभी झूठ बोलकर अपनी सफ़ेदी पर दाग़ नहीं लगने देगा।"

"हमने जांच जो की थी।" सलमान बुरा मान गया। "उस भेड़िये का क्या दिमाग़ ख़राब हुआ था, जो शाम को बाड़े में घुसता? कुत्ते बहुत हैं।"

"अक़्लमंद मत बनो। भूखा भेड़िया आदमी पर भी हमला कर सकता है," रुस्तम ने ऊंची आवाज़ में कहा और रिपोर्ट को दोबारा पढ़ा। उसके चेहरे पर अविश्वास का भाव झलकने लगा।

अध्यक्ष को दुविधा में पड़ा देखकर सलमान ने हुसैन को आंख मारी और हुसैन "टच्च" करके याचनापूर्ण स्वर में बोला:

"चचा, अगर तुम हुक्म दो: 'मर जाओ!' तो मर जाऊंगा, पर बुढ़ापे में मैं पशुपालन फ़ार्म का काम नहीं संभाल पाऊंगा। मुझे तो इस समय भी बस एक ही चिन्ता रहती है – शाम को किसी तरह घर पहुंचूं और चैन से सो जाऊं।"

"तुम अपने बारे में नहीं, सामूहिक फ़ार्म के बारे में सोचा करो," सलमान ने उलाहनाभरे स्वर में कहा। "अजीब लोग हैं!" उसने रुस्तम से शिकायती अंदाज़ में कहा। "सवाल हज़ारों जानवरों का है, पर इस आलसी को यह कहते शर्म नहीं महसूस होती कि यह चैन से सोना चाहता है। ज़रा ठहरो, चचा, अभी तुम्हें पशुपालन फ़ार्म रवाना कर देंगे, ताकि चरागाहों में तुम्हारी चर्बी उतर जाये..."

"सच्ची बात है, हुसैन, तुम्हें शर्म नहीं आती!" रुस्तम ने कहा और टोली-नायक को बुझा हुआ पाइप दिखाकर धमकी दी। "सब के सब बस अपने आराम की सोचते हो, बस ख़ुद किसी तरह चैन से सो लें। कल ही पशुपालन फ़ार्म का चार्ज संभाल लो!" उसने अचानक आदेश दिया।

रुस्तम ने ध्यान नहीं दिया कि सलमान ने कितने आत्मसंतोष के साथ अपने मित्रों की तरफ़ देखा।

"गिज़ेतार की तरक़्क़ी कर टोली-नायक बना देंगे और उसकी उपटोली तेल्ली को संभला देंगे," सलमान ने सुझाव दिया। "इस तरह हम इन आलोचकों के मुंह बंद कर देंगे। अगर नहीं संभाल पाये, तो ख़ुद ही दोषी रहेंगे। ज़िला समिति में भी स्त्रियों को उत्तरदायित्वपूर्ण पद दिये जाने पर संतोष प्रकट किया जायेगा," उसने चलते-चलते कह दिया।

यह सुझाव रुस्तम को पसंद आ गया।

गूंगा हुसैन दयनीय ढंग से आंखें मिचमिचाता हुआ बोला:

"तुम्हारे लिए, चचा, मैं जान देने को तैयार हूं, लेकिन जब मुझे पशुपालन फ़ार्म संभालना ही पड़ रहा है, तो केरेम को वहां से हटा लो। वह चोर का बच्चा मेरी जड़ें खोदने लगेगा। चोरी ख़ुद करेगा और जवाब मुझे देना पड़ेगा। नहीं, मैं इसके लिए तैयार नहीं हूं।"

"तुमसे कोई नहीं पूछ रहा है कि तुम तैयार हो या नहीं!" रुस्तम चिल्लाया, पर उसे तुरन्त रहम आ गया। "ठीक है, केरेम को कपास की खेती पर भेज देंगे, ज़रा कुदाल चलाकर पसीना बहाये। वहां उसे पता चल जायेगा कि सामूहिक फ़ार्म का माल हड़पने का क्या नतीजा होता है," और वह जांच रिपोर्ट लोक अभियोजक को भेजने का आदेश देकर, बिना उनसे विदा लिये कार्यालय से चला गया।

एक मिनट बाद ही वह भूरी घोड़ी को सरपट दौड़ाता खेत की तरफ़ जा रहा था।

२

बाहर से रुस्तम के घर में कुछ बदला नज़र नहीं आता था। सब पूर्ववत् चमचमाता, साफ़-सुथरा दिखाई देता था, शाम को भाप छोड़ते समोवार के इर्द-गिर्द बैठ देर तक शान्तिपूर्वक चायपान किया जाता, उसके बाद सब एक दूसरे को शिष्टतापूर्वक शुभरात्रि कहकर अपने-अपने कमरों में चले जाते। पर वास्तव में परिवार में एक कष्टदायक उदासी ने घर कर लिया था, सब दब-से गये थे, यहां तक कि पेरशान भी चुप-चुप रहने लगी थी, उसके प्रफुल्ल गीत अब सुनाई नहीं देते थे। बाहर काफ़ी गरमी थी, लेकिन कमरों में जैसे ठण्डी हवा के झोंके आ रहे थे, सब ठिठुरते, सिकुड़ते, सिरदर्द की शिकायत करते, जब कि माय्या को बुख़ार चढ़ जाता।

काफ़ी सोच-विचार और आंखों में काटी कई रातों के बाद वह समझ गयी कि पिता के तेज़ मिजाज़ का गराश पर कोई असर नहीं हो पाया है, कि उसकी मां और बहन यथासामर्थ्य माय्या के साथ उसके सम्बन्ध सुधारने की कोशिश कर रही हैं, और सारा दोष उसके लिए अज्ञात किसी स्त्री का है, जिसमें उसके पति को आसक्ति हो गयी है। माय्या देख रही थी कि उससे मुलाक़ात होने पर गराश कुछ घबराया रहता है, मानो उसकी आत्मा उसे कचोट रही हो, वह पत्नी और मां से आंखें मिलाते डरता है, मौक़ा मिलते ही घर से चले जाने की कोशिश करता है।

वसन्त में सूरज की जीवनदायी किरणों तले भरे-भरे रंगबिरंगे सुन्दर गुलाब पवन को अपनी सुमधुर सुगन्ध से संतृप्त करने के लिए खिल उठते हैं। वे स्त्रियां भी बिलकुल ऐसे ही खिल उठती हैं, जिनके लिए प्रेम का वसन्त आ जाता है, जो अनुभव करती हैं कि उन्हें कोई प्रेम करता है, उन्हें चाहता है, जो अपने को सौभाग्यवती महसूस करती हैं। वे वसन्त में दिन-प्रतिदिन सुन्दर, आकर्षक और हृष्ट-पुष्ट होती जाती हैं।

खिले हुए गुलाब की पंखड़ियां झाड़ देना क्या मुश्किल होता है? इसके लिए ज़्यादा समय की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। उत्तरी हवा के तेज़ झोंके आने की देर है कि पलक झपकते भड़कीली पंखड़ियां द्रुतगामी व्याधपतंगों की तरह उड़ जाती हैं, दिव्य सौन्दर्य नष्ट हो जाता है।

माय्या मन-ही-मन में सिकुड़ गयी, मुरझा गयी, अपने को तिरस्कृत और कुरूप अनुभव करने लगी। वह गराश से कुछ नहीं पूछती, उससे बातचीत करना उसने लगभग बंद कर दिया, पति जब घर आता, वह अपनी रिपोर्टें तैयार करने बैठ जाती, हालांकि उसके लिए कोई दूसरा समय चुन सकती थी।

गराश भी चुप रहता। केवल एक बार जाते समय वह पत्नी का हाथ थामकर फ़ुसफ़ुसाया: "माय्या! .." लेकिन तुरन्त ही चुप हो गया और निराशा में हाथ झटकार कर भाग चला।

गराश अपने आप को तसल्ली दिलाता रहता: "न मैं ऐसा करनेवाला पहला मर्द हूं, न ही आख़िरी।" उसके परिचित युवकों में ऐसे भी थे, जो पत्नी के पास से प्रेमिका के पास जाते और उन्हें ज़रा भी खेद नहीं होता। लेकिन गराश का दिल दुखता, वह समझता जो था कि उसे माय्या के समान सच्चा और निष्ठावान मित्र कभी नहीं मिल सकेगा। उसकी तुलना नज़नाज़ के साथ करना पाप होता। तुलना गराश करता भी नहीं था, वह नज़नाज़ के साथ अपने को सहज व स्वतंत्र अनुभव करता था, वह उसका स्वामी, अधिपति था, वह उससे कुछ नहीं पूछती थी, न कुछ मांगती थी और न ही अपनी आरज़ुओं से उबाती थी।

उस वसन्त में रुस्तम के घर में जीवन माय्या के लिए ही नहीं, सकीना के लिए भी दूभर रहा। जब उसके कानों में गांव की औरतों की खुसुर-फ़ुसुर पड़ी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, बेटे को घर से दूर रहते, अपनी पत्नी से कतराते और बहू को मुरझाते व घुलते देख सकीना समझ गयी कि दोषी वास्तव में गराश है।

क्या उसे रुस्तम से बात करनी चाहिए, उससे मदद मांगनी चाहिए? ऐसा तूफ़ान मचेगा, आसमान टूट पड़ेगा, वह फ़ौरन कोड़ा उठाकर बेटे के पीछे भागेगा। पिछले कुछ दिनों से रुस्तम वैसे ही ग़ुस्से में घूम रहा है, मुंह से पाइप निकालता ही नहीं है, मूंछों, चमड़ी और क़मीज़ से भी तम्बाकू की बू आने लगी है।

वास्तव में पूरे एक हफ़्ते से रुस्तम चैन से नहीं बैठ पा रहा था। वह खेतों में गेहूं, कपास, मक्का के घने पौधों को निहारता, टोली-नायकों से झगड़ता दुनिया से बेख़बर रह रहा था, केवल फ़सल के बारे में सोचता जी रहा था। लेकिन जैसे ही वह मोटर में या घोड़े पर अकेला रह जाता, उसके दिमाग़ में तेल्ली चाची व गिज़ेतार के साथ हुई बात कौंधने लगती।

अगर वे उसका बुरा चाहती होतीं, तो चुप लगा जातीं, उसके पीठ पीछे अफ़वाहें फैलातीं, उसके सफ़ेद बालों का मज़ाक़ उड़ातीं। नहीं, चाची ने सच्ची बात कही है!

एक बार वह घर जल्दी लौट आया और धूलभरे, पसीने से तर कपड़े उतार फेंक बरामदे में खाने की मेज़ के पास रखे सोफ़े पर बैठ गया। बग़ीचे में शान्ति छायी थी, एक भी पत्ती नहीं सरसरा रही थी, निस्सीम स्तेपी से हवा के झोंके वहां तक नहीं पहुंच रहे थे। रसों से परिपूर्ण होती चेरी सुर्ख़ हो रही थी। लेकिन रुस्तम को बाग़ में आनन्द नहीं आया, वह वृक्षों से कहीं ऊपर की तरफ़ देखता मूंछों को बल दे रहा था और मेज़ पर उंगलियों से धीरे-धीरे पटपटा रहा था।

सकीना तश्तरियां, रकाबियां लिये आयी।

"बच्चे कहां हैं?"

"माय्या आराम कर रही है, बेटी अभी खेत से नहीं लौटी है, और गराश..." मां का गला रुंध गया। "गराश भी नहीं आया..."

"जब वह बदमाश तशरीफ़ लाये, तो उसे अपने सामने बिठाकर ज़रा शर्मिंदा करना!" रुस्तम ने रोटी के दो बराबर टुकड़े करते हुए कहा। "नहीं तो इसकी नौबत आ जायेगी कि मैं उसकी गरदन पकड़कर घर से बाहर फेंक दूंगा," उसने आगे कहा।

"तुम्हीं बात करना, कीशी, उससे," सकीना ने ठण्डी सांस ली। "शादीशुदा बेटे को क़ाबू में रख पाना मेरे बस की बात नहीं है।"

"और कैसे क़ाबू में रखोगी? कहां है बहू?"

"कहां होगी? अपने कमरे में। बैठी रिपोर्ट लिख रही होगी या रो रही होगी, जैसे ऐसी विधवा हो, जिसे चुप नहीं कराया जा सकता हो।"

"अब रोने से कोई फ़ायदा नहीं," रुस्तम ने दृढ़ स्वर में एकदम कह दिया।

"लेकिन उसका आख़िर क्या क़सूर है? तुम भी उसे परेशान करते रहते हो, उस बेचारी के अपने ग़म ही क्या कम हैं," सकीना ने एप्रन का पल्ला लाल हुई आंखों से लगा लिया।

रुस्तम सोच में पड़ गया और फिर बग़ीचे की तरफ़ देखता हुआ खोखली आवाज़ में बोला:

"तुम बेकार सोचती हो कि मुझे उस पर रहम नहीं आता। मुझे

दुःख भी होता है और गुस्सा भी आता है। बहू को आवाज़ दो, हम्माम बनायेंगे। उसी ने छेड़ा है यह काम, उसे मदद भी करनी चाहिए।"

रुस्तम खाना खाकर बग़ीचे में चला गया, जहाँ हम्माम की पत्थर की दीवारें ज़मीन से कोई दो मीटर ऊंची की जा चुकी थीं। शीघ्र ही माय्या सलवार व गहरे रंग का कुरता पहने आ पहुंची, – उसे इस बात की बहुत ख़ुशी हुई कि आख़िरकार ससुर ने स्वयं उसे बुलाया। अहाते में खेत से लौटकर आयी पेरशान की हंसी गूंज उठी, मिनट भर में वह भी हम्माम बनाने में मदद करने आ पहुंची।

माय्या पिछले कुछ दिनों में कमज़ोर हो गयी थी, उसकी आंखों के नीचे नीली झाइयां पड़ी हुई थीं। रुस्तम अपने दया-भाव से उसे ठेस न पहुंचाने के इरादे से आवश्यकता से अधिक ज़िन्दादिली से बात करने लगा:

"चलो, मेरी बेटियो, काम शुरू करें! जब हमने रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाने की ठानी ही है, तो पूरी कोशिश करें ताकि रुस्तम का घर गांव में सबसे अच्छा बन जाये। यह हम्माम बहू की तरफ़ से हम बूढ़ों के लिए एक तोहफ़ा होगा।"

काम ज़ोर-शोर से शुरू हो गया। माय्या रुस्तम को पत्थर पकड़ा रही थी, और पेरशान बाल्टी में चूने का घोल तैयार कर रही थी। रुस्तम मसाला फैलाकर पत्थर जमाता हुआ लगातार बोले जा रहा था। सकीना उसके पास आयी तो आश्चर्यचकित रह गयी; कीशी इतना बातूनी कैसे हो गया?..

"दीवारें एक मीटर और ऊंची करके पाइप डाल देंगे और इतवार को, अगर ज़िन्दा रहे, तो छत का काम शुरू कर देंगे..."

माय्या की उदासी ससुर की असाधारण शिष्टता के कारण और अधिक बढ़ गयी। उसे चाहिए था कि वह मुस्कराये, रुस्तम-कीशी की ही तरह मज़ाक़िया लहजे में जवाब दे, पर उसने कितनी ही कोशिश क्यों न की उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका।

अंधेरा हो जाने पर जब काम मजबूरन बंद करना पड़ा, माय्या सिर-दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गयी, और बिना बत्ती जलाये सोफ़े पर लेटकर ऊंघने लगी या न जाने उसे झपकी आ गयी।

उसकी आंख सीढ़ियों की चरमराहट से खुल गयी। पति बरामदे में बढ़ रहा था, इसमें माय्या को कोई सन्देह नहीं हो सकता था... गराश ने क़मीज़ व बूट उतारकर हाथ-मुंह धोये – उसके लिए बरतन में पानी व

चिलमची बहन ले आयी थी। वह कुरसी ज़ोर से रेलिंग के पास सरकाकर सुस्ताता, सिगरेट पीता और शान्त रात की शीतलता का आनन्द लेता देर तक बरामदे में बैठा रहा।

माय्या को ख़ुशी हुई कि पति उसके कमरे में नहीं आया। वे बात किस बारे में करते? एक दूसरे से नज़रें कैसे मिलाते? और झूठी निश्चिन्तता दिखाना, कुछ न जानने का दिखावा करना, यह अब उसके लिए असम्भव था।

थोड़ी देर के बाद सकीना बरामदे में निकली। उसने कुरसी पर बैठे बिना सीने पर हाथ आड़े रख बेटे की तरफ़ सख़्ती से देखा।

"तुम अच्छा नहीं कर रहे हो, बेटे, बिलकुल अच्छा नहीं कर रहे हो!" उसने रुंधे गले से कहा। "तुम्हारी बीवी फूल जैसी है। जब उसे शहर से लाये हो, तो उसका ख़याल रखो... तुम्हें हो क्या गया है? बताओ। मिलकर सोचेंगे कि क्या किया जाये।"

माय्या सांस रोके सुन रही थी, उसका दिल इतने ज़ोर से धक-धक करने लगा था कि उसे सीने पर हाथ रखना पड़ा, – लगता था कि वह अभी निकल ही पड़ेगा। गराश मां को आख़िर क्या जवाब देता है? उसे कह देना चाहिए कि उसे किसी और से प्यार हो गया है... यह सुनना अत्यन्त असह्य होता, पर निर्मम सत्य कपटपूर्ण असत्य से अच्छा होता है। अब सन्देहों को दूर कर डालने का समय आ गया है। गराश का ईमानदारी से दिया जवाब दोनों को स्वतंत्र कर देता: फिर दोनों अपना-अपना रास्ता संभालें और अपनी-अपनी क़िस्मत आज़मायें! लेकिन शायद गराश हंसकर कह दे: "ऐसा शक आख़िर किस लिए? मैं थक गया, काम में सब भूल गया – बस यही कारण था!"

लेकिन पति हठपूर्वक मौन साधे हुए था।

"ऐसा कोई घर नहीं, जिसमें कलह नहीं होता हो," सकीना ने प्यार से कहा। "अनबन और झगड़े भी होते हैं। पर तुम उसे माफ़ कर दो, दूसरी बार वह तुम्हें माफ़ कर देगी... तुम्हें कौन-सी बात खटक रही है? छिपाओ मत। क्या मां-बाप मदद कर सकते हैं?"

"मां, आप हमारी क्या मदद कर सकती हैं?" गराश ने ग़ुस्से में कहा। "मुझे चैन से रहने दीजिये। सच कहूं, तो मेरा घर न आना ही बेहतर होगा: बीवी ताने दे-देकर उबा देती है, और अब तुम मेरे पीछे पड़ गयी हो..."

उसकी कृत्रिम हंसी से मां के सन्देह की पुष्टि हो गयी: उसका अन्तःकरण शुद्ध नहीं है। सकीना बेटे को सब माफ़ कर सकती थी, शायद तुरन्त नहीं, पर उसके सारे पाप क्षमा कर सकती थी, केवल उसके झूठ को छोड़कर। और जब गराश ने अनजाने ही पिता की नक़ल करते हुए उठकर चले जाने के इरादे से बात एकदम बंद कर दी, तो उसने उसे रोक लिया:

"मैं तुमसे इसीलिए कह रही हूं – हमारे पवित्र घर में गंदगी मत लाओ! परायी औरत की मुस्कान तुम्हें क्या अपनी बीवी की मुस्कान से ज़्यादा मीठी लगती है? इसलिए यह जान लो कि इस शहद में ज़हर मिला है, – इसीलिए तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है। लेकिन तुम्हें इस मीठे की बहुत भयानक क़ीमत चुकानी पड़ेगी... तुम्हारे अब्बा और मैं दोनों बूढ़ा गये हैं। अगर तुमने रात को खुलनेवाले मनहूस दरवाज़े से मुंह नहीं फेरा, तो हम तुम्हें बददुआ देंगे! तुम्हारे अब्बा और तुम्हारी मां हरगिज़ तुम्हें बुढ़ापे में अपनी बेइज़्ज़ती नहीं करने देंगे!"

गराश इस बार भी चुप लगा गया, माय्या समझ गयी कि मां ने ग़लती नहीं की है, गराश दोषी हैं, पर उसमें अपना दोष स्वीकार करने का साहस नहीं है। उसे बरामदे में लपककर निकल: "मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं, ढोंगी!" कहकर चिल्लाने और हमेशा के लिए घर छोड़कर चले जाने की इच्छा हुई, पर उसे कोई चीज़ रोक रही थी, और उसने मुंह में शाल की किनारी दबा ली, ताकि उसके मुंह से आह न निकल पाये और लेटी रही...

लेकिन मां के दिल से और न रहा गया, वह पिघल गया, और सकीना आंसू पीती हुई बोली:

"लेकिन ज़रा तो सोचो आख़िर वह अनाथ है... उसे तुमसे उम्मीद थी, वह तुम्हारे साथ परदेस आयी, और तुमने उसे सता डाला। लोग क्या कहेंगे?"

"मुझे भीख नहीं चाहिए," माय्या ने दुःख के साथ सोचा।

बरामदे में निस्तब्धता छा गयी। सकीना मुलायम जूतियों से सपड़-सपड़ करती चली गयी। गराश रेलिंग पर सिर टिकाकर शान्त बैठा रहा। वह पछता रहा था कि उसने मां को बिना यह कहे जाने दिया कि वह ख़ुद तड़प रहा है, पर अब रोने-पीटने से क्या फ़ायदा... "आख़िर मैं इस चक्कर में फंसा कैसे?" – वह अपने से पूछने लगता, पर उसका जवाब

उसे नहीं सूझता। वह अपने कमरे के किवाड़ों के पास आया, थोड़ी देर खड़ा रहा, फिर धीरे से सीढ़ियों से अहाते में उतर गया।

काश, अंदर आ जाता – माय्या उसे क्षमा कर देती, धक्का देकर निकाल नहीं देती...

"वह मुझे प्यार नहीं करता, नहीं करता!" वह एक दूसरी से फँसाई उंगलियों को और ज़ोर से भींचकर बार-बार कहने लगी। "अगर वह फाटक खोलकर बैरिन के पास चला जाये, तो क्या मैं इसे सह लूं, चुप लगा जाऊँ या पति को हमेशा के लिए छोड़कर चली जाऊं?" सौभाग्यवश उसे पति के बग़ीचे में जाकर वसन्त में खूबानी के घने वृक्ष के नीचे रखे पुरानी, चरमरा उठनेवाली स्प्रिंगोंवाले तख़्ते पर लेटने की आवाज़ सुनाई दे गयी।

आकाश पर गोल, प्राचीन शूरवीर की ढाल-सा चांद निकल आया, जगमगा उठा, "संगम" की सतह पर चांदनी छिटक उठी। माय्या को वह रात याद आ गयी, जब वह पहली बार इस कमरे में आयी थी...

उसे अपने कुंवारपन की सुख की कामनाएं भोले-भाले स्वप्न-से, दिवास्वप्न-से लगने लगे। क्या सचमुच न तो वह सुहाग-रात ही कभी हुई थी और न ही वे मधुर सपने उसने कभी देखे थे?..

वह पलंगपोश हटाकर दोनों हाथों में तकिये को कसे लेट गयी, जब उसकी आंख खुली, पौ फट रही थी, पर गराश वहां नहीं था – वह खेत जा चुका था। माय्या ने कपड़े पहने और सामान सूटकेस में लगा लिया। लेकिन कमरे की दीवारें जैसे उसे रोक रही थीं, उसने अपने आप से कहा कि उसे शान्ति से काम लेना चाहिए, अन्तिम बार गराश से बात किये बिना चला जाना उसके लिए अनुचित होगा।

३

गराश जब मोड़ पर ट्रक से नीचे कूदकर गांव के धूलभरे रास्ते पर लम्बे-लम्बे डग भरता बढ़ रहा था, आधी रात हो चुकी थी। घरों की रोशनियां बुझ चुकी थीं, अंधेरा छाया था, गांव सुनसान था। नज़नाज़ के घर को जानेवाली पगडण्डी खर-पतवार उगे ऊसर ज़मीन के टुकड़े में से होकर निकलती थी। गराश अनिश्चय में रुक गया। वह पूरे एक सप्ताह से घर नहीं गया था, यहां तक कि पिता व बहन से भी खेत में

नहीं मिला था। वह पगडण्डी पर मुड़ा ही था कि अंधेरे में अचानक उत्तेजित व तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। गराश नहीं चाहता था कि कोई उसे खुले मैदान में देखे, इसलिए वह झुककर खर-पतवार में छिप गया।

दो मर्द लड़खड़ाते हुए किनारे-किनारे जा रहे थे।

"अगर माय्या ख़ानम इसी तरह उस गंदे ट्रैक्टर-चालक की बनी रही, तो मैं चमत्कारों में विश्वास करने लगूंगा," किसी का अपरिचित स्वर सुनाई दिया।

"कलंतर भैया, तुम्हारे सिर की क़सम," अंधेरे में नज़र न आ रहे सलमान ने कहा, "मुग़ान ने ऐसी सुन्दरी कभी नहीं देखी है। वह तो इनसान की शक्ल में फ़रिश्ता भी है और दानिशमंद भी।"

"देख चुका हूं, खुद देख चुका हूं, दोस्त। अहा, कितना अच्छा नाची थी वह – देखते ही रह जाओ! शायद..."

कलंतर के अंतिम शब्द गराश सुन नहीं पाया। उसने झाड़ी में से झांककर देखा, ज़िला कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष और सलमान एक दूसरे के गले में बांहें डाले गली में मुड़ गये।

एक मिनट बाद फिर सन्नाटा छा गया। रास्ते पर पहुंचने पर बूटों के तले रेत की चर्र-मर्र ही उसके कान पड़ने लगी। यानी आज क्लब में ग़ैरपेशेवर कलाकारों का रंगारंग कार्यक्रम हुआ था, और माय्या पति की अनुमति लिये बिना पराये मर्दों को, इस शराबी कलंतर को घुटनों से ऊपर अपनी नंगी टांगें दिखाती हुई नाचती रही... पूछिये मत, बड़ा सुन्दर दृश्य रहा होगा! चलिये, यह माना कि उसे धोखा माय्या ने नहीं दिया होगा, लेकिन किसी और पर उसका दिल आ तो सकता है न? "तुम भी तो नज़नाज़ के साथ फंसे हुए हो, वह क्या पाकीज़ा है?" गराश ने अपने आप से पूछा, लेकिन इससे उसे बिलकुल भी शान्ति नहीं मिली। माय्या कभी किसी परायी मोटर में फर्राटे से घूमती है, तो कभी किसी और की काठी पर बैठकर घोड़े पर खेतों में घूमती है। वह यह ज़रूर जान-बूझकर करती है... ज़ाहिर है, उसे ढोंग रचना ख़ूब आता है: हमेशा पति को ताने देती रहती है, जब कि ख़ुद कई बार तलाक़ का संकेत दे चुकी है। हां, अब्बा ने ठीक ही कहा था, वह हमेशा ठीक ही कहते हैं, गराश को शुरू से ही लगाम ज़रा कसकर रखनी चाहिए थी।

इस प्रकार गराश अपने को उचित ठहराकर और पत्नी पर बुरी तरह ग़ुस्सा होकर अपने घर के नज़दीक पहुंच गया। सारे कमरों में अंधेरा था,

उसने निःशब्द बरामदे में चढ़कर सोने के कमरे का दरवाज़ा ठेला – वहां भी अंधेरा था, सन्नाटा था। दियासलाई जलाकर गराश ने देखा कि बिस्तर पर सलवटें नहीं हैं और खिड़की बंद है, – यानी पत्नी अभी वापस नहीं लौटी है। वह गुस्से के मारे अंधा हो गया।

"बिलकुल ही बिगड़ गयी है!"

कमरे में घुटन थी। गराश ने फ़ौजी क़मीज़ का कॉलर ज़ोर से खींचा, टूटा हुआ बटन खन्न से बजा। अब वह बेझिझक बूटों से धप्प-धप्प करता बग़ीचे में चला गया। न जाने मां क्यों नहीं जागी, उनकी नीन्द तो ज़रा-सी आहट से खुल जाती है...

अंधकार में पेड़ों के पत्तों पर मच्छरों के झुण्ड उड़ रहे थे, कहीं दूर उल्लू कर्णभेदी स्वर में चीख़ा, उसकी चीख़ इतनी भयावह थी कि गराश के रोंगटे खड़े हो गये। अचानक एक गुबरैला उड़ता हुआ उसके माथे से टकरा गया। गराश ने कोसा:

"मरदूद!"

"गराश, बग़ीचे में तुम हो? किस से बात कर रहे हो?" माय्या ने फाटक के उस ओर से पूछा, उसका स्वर इतना शान्त, स्पष्ट व मृदु था कि गराश किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया, उसने बड़ी मुश्किल से सांस ली। "तुम क्यों नहीं आये? क्या गिज़ेतार ने तुम्हें नहीं बताया कि आज कंसर्ट है?" पत्नी ने और निकट आकर पूछा। "कितना सफल रहा! ढेरों आदमी जमा थे। वे तालियां बजा रहे थे, दिल से बधाई दे रहे थे। यानी सिर्फ़ गलियों में चलते-चलते ही बैतें नहीं गायी जा सकती हैं... कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष ने भाषण दिया, सब कलाकारों से हाथ मिलाकर उनका धन्यवाद किया।"

"और उसने तुमसे भी हाथ मिलाया?"

"क्यों नहीं!"

"अभी तक सिर्फ़ कलंतर भैया ने मेरी पत्नी से हाथ नहीं मिलाया था, अब उसे भी यह इज़्ज़त मिल ही गयी! तो अब तुम उसकी मोटर में भी सैर किया करोगी?"

और गराश हंस पड़ा। पत्नी ने शान्तचित्त से उत्तर देकर उसे आश्चर्यचकित कर दिया:

"जानते हो, हमें हमेशा के लिए समझौता कर लेना चाहिए... तुम किसी बात से नाख़ुश हो, मैं भी बहुत-सी बातों से नाख़ुश हूं। इतना ही

नहीं, गुस्सा भी हूं! अगर मेरा कोई दोष हो, तो बताओ। लेकिन मैं भी बता दूंगी कि तुम्हारा क्या दोष है। कमरे में चलो।"

"वहां गरमी और घुटन है," गराश ने अपनी घबराहट छिपाने के इरादे से कहा।

"नहीं, वहां अच्छा रहेगा। कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके बारे में तुम्हारी मां को भी मालूम नहीं होना चाहिए। गांव में लोग वैसे ही हमारे बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं।"

माय्या को खेत में काम करनेवाली स्त्रियों की सहानुभूतिपूर्ण और कुछ की द्वेषपूर्ण नज़रें, उनके सवाल याद आ गये। "कैसा है गराश? रात को घर में रहता है? और ससुर के क्या हाल हैं? ससुर को तो दया आती है न? पति से झगड़ा होता है?"

गराश ने माय्या का हाथ कसकर पकड़ उसे ज़बरदस्ती ख़ूबानी के नीचे रखे तख़्त पर बिठा दिया।

"मैंने कह तो दिया, घुटन के मारे मेरा सांस लेना मुश्किल हो रहा है। हां, तो बताओ तुम्हारे मन में क्या घुट रहा है। वैसे ही मतली आती है!"

उसकी अशिष्टता माय्या के दिल में चुभ गयी।

"नहीं, तुम पहले बताओ कि तुम घर से अलग क्यों हो गये हो?"

गराश ने दांत निकाल दिये।

"लो सुनो!.. मेरा एक हैदर-कुली नाम का परिचित है। कुछ दिन पहले उसका पत्नी से तलाक़ हो गया है, उनके तीन बच्चे हैं। क्यों? क्योंकि जब भी हैदर-कुली घर लौटता, पत्नी का कुछ अता-पता नहीं होता। 'मैं क्लब गयी थी... ज़िले में गयी थी... मीटिंग में देर हो गयी... मुझे एक और सार्वजनिक काम सौंप दिया गया!' ऐसे ही और बहाने। हैदर-कुली ने देखा कि उसकी पत्नी पत्नी नहीं है, ख़ुदा ही जाने क्या है, उसने उस पर थूक दिया और तलाक़ ले लिया।"

"कैसा ओछापन है!" माय्या के मुंह से निकल गया और वह घृणा के मारे पति से दूर हट गयी।

"कोई क्या करे, मैंने और हैदर-कुली ने उच्च शिक्षा नहीं पायी, मामूली ट्रैक्टर-चालक हैं। अब तुम्हारे लिए यह समझ लेने का वक़्त आ गया है कि मर्द शादी इसलिए करता है, ताकि उसे घरवाली मिले, ख़याल

रखनेवाली, प्यार करनेवाली, जो मुस्कराकर उसका स्वागत करे, फ़ौरन चाय का गिलास लाकर दे।"

"अच्छा!".. माय्या ने व्यंग्यमिश्रित स्वर में कहा। "यानी बीवी को घर में बैठा रहना चाहिए? परदानशीं बन जाना चाहिए? क्या यही होना चाहिए? अगर तुम्हारे यही इरादे थे, तो मैं तुम्हें बता दूं कि तुमने सचमुच ग़लती की है। न मैं काम छोड़ूंगी और न ही आज़ाद ज़िन्दगी। पर परिवार और घर से मेरा वैसे ही गहरा लगाव है..."

"घर पर तो बैठती ही नहीं हो, ख़ुदा जाने कहां-कहां जाती रहती हो, ऐसे पेश आती हो, जैसे..." गराश हंस पड़ा, उसे ज़बान पर आया शब्द कहने का साहस नहीं हुआ।

"कैसे पेश आती हूं मैं?"

"घूमा ज़रा कम करो, ग़ैरों की मोटरों में, ग़ैरों के घोड़ों पर एक काठी पर रोज़ मत बैठा करो।"

पति का उलाहना इतना बेतुका था कि माय्या को हंसी आ गयी, हालांकि उसके लिए फूट-फूटकर रो पड़ना ज़्यादा आसान था।

दोनों चुप रहे।

"याद करो, गराश, हमारी शादी के बाद तुमने अब्बा से क्या कहा था," उसने अपना गरम हाथ पति के कांप उठे, छालों से खुरदुरे हुए हाथ पर रखकर धीरे से कहा। "मुझे कैसे मालूम हुआ? पेरशान ने बताया था। बहन को तुम पर गर्व था, वह तुम्हारी तारीफ़ करती थी। मुझे भी उस सुबह पति पर गर्व हुआ था।"

गराश ने कंधे उचका दिये। उस समय उसके लिए सब स्पष्ट और सरल था, लेकिन अब उसके मन में इतनी अन्तर्विरोधी भावनाएं जमा हो गयी थीं कि कोई सफ़ेद दाढ़ीवाला दानिशमंद भी उनमें उलझकर रह जाये।

"मान लो कि मैंने ग़लती की थी," उसने बिना आत्मविश्वास के कहा।

"नहीं, नहीं," माय्या ने जोश में विरोध किया, "तुम्हारी हर बात सही थी। लेकिन मुसीबत यह है कि ज़बानी तौर पर किसी भी सत्य पर बल देना आसान होता है, लेकिन जीवन में उसका अनुसरण करने के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति का और दयालु हृदय का होना ज़रूरी है और बेशक विवेक का भी।"

"ख़ुदा के वास्ते उपदेश देना बंद करो!" गराश भड़क उठा। "मुझे पत्नी की ज़रूरत है न कि अध्यापिका की!"

माय्या ने उसकी बात अनसुनी करने का बहाना किया और हठपूर्ण आत्मविश्वास के साथ बोलती रही:

"तुम्हारी पत्नी बनने को तैयार होते समय मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारे रूप में मित्र, साथी पा लूंगी। मुझे विश्वास था कि तुम कम-से-कम किसी सीमा तक मेरे लिए पिता और माता का स्थान ले लोगे।"

"मित्र, साथी!" गराश ने अशिष्टता से उसकी नक़ल उतारी। "सबसे पहले पति की इज़्ज़त बनाये रखने का ख़याल रखना चाहिए था, न कि..."

उसने बात पूरी नहीं की, अपने विचार से स्वयं ही भयभीत हो उठा।

माय्या के काटो तो ख़ून नहीं – उसका चेहरा बिलकुल फक हो गया। उसे यह स्पष्ट हो गया कि गराश उससे कहीं दूर, बहुत दूर चला गया है और अब कभी वापस लौटकर नहीं आयेगा।

उसकी आंखों में आंसू आ गये और वह घर के अंदर चली गयी।

गराश अनचाहे उसके पीछे कुछ क़दम बढ़ा, पर बरामदे में रुक गया। उलाहने, आंसू, पश्चाताप – क्या उसे इन पर ध्यान देना चाहिए? क्या इस समय निःस्वार्थ भली स्त्री दूसरे घर के दरवाज़े की ओट में खड़ी गली से आते क़दमों की आहट सुनती अपने प्रियतम की बाट जोह रही है? वह गराश का आलिंगन कर हृदय से लगा लेगी। उसे लोगों की नुकताचीनी और बददुआओं की क्या परवाह! वह हर कष्ट सहने को तैयार है, बस उसका गराश उसके साथ रहे...

उस घर की औरत झिड़कियों, तिरस्कार, ग़ुस्से से फूले मुंह के बारे में कुछ नहीं जानती थी – वह सदा स्नेहपूर्ण, प्रिय और आतिथ्यशील रहती थी।

गराश को लगा जैसे किसी ने उसे धकेल दिया हो, वह दबे पांव दरवाज़े की ओर बढ़ा, पर बरामदे से मां की सर्द आवाज़ आयी:

"कहां जा रहे हो?"

"टोली में काम है।"

"लौट आओ! वक़्त रहते संभल जाओ। ऐसा कोई गिला नहीं रहेगा, जिसका तुमसे बदला न लिया जाये, यह याद रखना। घर में बीवी के पास जाओ।"

"पीछे ही पड़ गयी हैं!" युवक ने आंसू रोक रखने से कांप रही मां

से नज़रें मिलाने से डरते हुए खिन्न मन से सोचा। "यह क्या ज़िन्दगी है! ज़रा भी आज़ादी नहीं!"

"मां, ख़ुदा के वास्ते, आप तो मुझे परेशान मत कीजिये। मेरा वैसा ही दम घुटता है!"

मां का दिल कांप उठा: बेटे ने इतनी अशिष्टता से उससे कभी बात नहीं की थी। ऐसे अवसर आये थे, जब मां बेटे पर नाराज़ होती, रूठ जाती, पर यह थोड़ी ही देर रह पाता: मां स्वयं किसी तरह गराश को उचित ठहराने की कोशिश करती, इसीलिए क्षमा भी कर देती। इस समय उसका पहला बच्चा उसके सामने केवल अशिष्ट ही नहीं, बल्कि बिलकुल पराये की तरह, अत्यन्त दूर का जैसा खड़ा था...

गराश सिटकनी खोलने लगा था, पर अचानक उसके सामने पिता आ खड़ा हुआ – वह सोने के कपड़ों में था, पैर नंगे थे। उसकी मूंछें बिखर रही थीं, सफ़ेद बाल हिल रहे थे, क्योंकि क्रोध के मारे रुस्तम का बल-शाली शरीर कांप रहा था।

"क्या अपने और हमारे ख़ानदान का नाम नीचा करके तुम्हें सबर नहीं हुआ?" क्रुद्ध पिता का स्वर रुँध गया। "क्या अनाथ की खिल्ली उड़ाकर सबर नहीं हुआ, जो अब मां से बदतमीज़ी कर रहे हो?!"

और उसने बेटे के इतने ज़ोर से थप्पड़ जड़ा कि गराश लड़खड़ा गया।

सकीना डर के मारे चीख़ पड़ी।

गराश भागकर फाटक से निकला, स्तेपी की ओर मुड़ा और धुंध में नज़रों से ओझल हो गया।

नज़नाज़ उस रात अपने प्रियतम की बाट जोहती रह गयी...

४

जब माय्या पीला चेहरा लिये, जैसे लम्बी बीमारी के बाद उठी हो, हाथ में सूटकेस पकड़े नीचे आयी, सकीना व पेरशान बरामदे में नाश्ते की तैयारी कर रही थीं, जबकि रुस्तम शेड से 'पोब्येदा' कार निकालकर उसकी जांच कर रहा था।

उसने अप्रत्याशित सहृदयता से बहू के साथ दुआ-सलाम की, हालांकि ससुर अगर माय्या की तरफ़ वैसे ही तिरछी नज़रों से देखता, जैसा कि पहले अनेक बार हो चुका था, तो उसे ज़रा राहत मिलती।

"मां," माय्या ने सकीना से कहा, "मुझे लगभग एक सप्ताह 'लाल झण्डा' में रहना होगा। वहाँ के लोगों ने अछूती धरती के एक टुकड़े में बोवाई की, लेकिन मिट्टी की बिलकुल जांच नहीं की, ग़लत सिंचाई के कारण कई हेक्टयर ज़मीन में नमक बढ़ गया है। मुझे दिन-रात उसकी संभाल करनी होगी।"

वह सच्ची बात नहीं कह सकी। हालांकि वह सारी रात इस बातचीत की तैयारी करती रही थी, लेकिन सास की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि देखकर और रुस्तम-कीशी का स्नेहपूर्ण अभिवादन सुनकर वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी और झूठ बोल गयी। लेकिन अब इरादा बदलने का अवसर निकल चुका था। पति के साथ सुलह का रास्ता बंद हो चुका था।

सकीना ने केवल तब छोटा-सा नीला पर्स, सफ़ेद खोल चढ़ा सूटकेस और माय्या के हाथ पर आड़ा पड़ा चौड़ा भूरा कोट देखा और उसे याद हो आया कि यही चीज़ें लेकर माय्या उनके घर में बहू बनकर आयी थी और वह सब समझ गयी।

"तुमसे विनती करती हूं, बेटी, मत जाओ," उसने बड़ी मुश्किल से कहा। "हालात चाहे जैसे हों, तुम्हारे ससुर तुम्हें मोटर में 'लाल झण्डा' पहुंचाते रहेंगे और लेते आयेंगे। आख़िर हमने 'पोब्येदा' ख़रीदी किसलिए है?" उसने समर्थन की इच्छा से पेरशान की तरफ़ देखा, पर वह पूर्णतया अपने पर क़ाबू नहीं रख पा रही थी: कभी वह मेज़ से प्लेटें उठा लेती, कभी फिर वहीं रख देती, कभी कांपती उंगलियों से सीने पर पड़ी रूमाली को मसलने लगती।

माय्या ने आंसू पीते हुए जवाब दिया:

"नहीं, मां, यही बेहतर रहेगा, मेरे लिए भी और आपके लिए भी।"

सब समझ चुके, पर चेहरे से ज़ाहिर नहीं होने दे रहे रुस्तम ने बरामदे में आकर सूटकेस ले लिया।

"काम, घरवाली, दुनिया में सबसे ज़रूरी होता है," उसने प्रभा-वोत्पादक तरीक़े से सकीना से कहा। "तुम इसे मनाने की कोशिश मत करो, जाने दो। मैं कारा केरेमोगलू को इसका ख़याल रखने की ज़िम्मेदारी सौंप दूंगा। अगर नमक की तह जमी ज़मीन को साफ़ करना है, सही ढंग से सिंचाई का इन्तज़ाम करना है, तो इसका मतलब है, ज़रूर ही..."

माय्या ने अपने बर्फ़ हुए होठों से जड़वत् खड़ी सकीना को चूमा, रो रही पेरशान को गले लगाया और इस भय से कि यदि वह एक मिनट

श्रौर खड़ी रही, तो ख़ुद फूट-फूटकर रो पड़ेगी, कार की तरफ़ लपकी।

"कम-से-कम नाश्ता तो कर लेते!" सकीना ने पुकारा, पर माय्या ने सिर हिला दिया, रुस्तम ने अप्रत्याशित चिन्ताशीलता के कारण कहा कि उसे ढेरों काम करने हैं: पहले वह बहू को 'लाल झण्डा' छोड़ने जायेगा, फिर फ़ौरी काम से ज़िला मुख्यालय जायेगा, वहीं नाश्ता कर लेगा। परेशान ने यह कहकर कि उसके गले में गस्सा नहीं उतरेगा, तौलिया कुरसी पर फेंक दिया, गीली तश्तरियां मेज़ पर पटक दीं और खेत रवाना हो गयी।

अकेली रह जाने पर सकीना दिल खोल कर रोयी। उसके बाद होश आने पर उसने सारा नाश्ता कुत्ते को डाल दिया, साफ़ बरतन उठाकर अलमारी में रख दिये, दरवाज़े पर ताला लगाया, चाबी बरामदे में गलीचे के नीचे छिपा दी (सारा गांव इस गुप्त स्थान के बारे में जानता था) और कपास के खेत रवाना हो गयी: काम में लगे रहने पर सारे दुःख और अप्रिय बातें भूल जाती हैं।

शाम को वह बिना अपने घर में झांके शेरज़ाद के यहां गयी। उसकी बहन कुछ दिनों से बीमार थी और उसकी मां उसे ज़िले के चिकित्सालय ले गयी थी। जाने से पहले उसने सकीना को अपने पास बुलाकर अनुरोध किया था:

"तुम पर क़ुरबान जाऊं, बहन, शेरज़ाद का ख़याल रखना। घर के काम-काज की उसे बिलकुल समझ नहीं है, उसे याद नहीं रहता कि तश्तरी कहां पड़ी है, गिलास कहां रखा है..."

शेरज़ाद के अलावा उसे दो वर्ष पूर्व यारोस्लाव्ल प्रान्त से लायी गयी बढ़िया नसल की गाय जैरान की भी संभाल करनी थी। निस्संदेह सकीना इस काम को भी नहीं टाल सकती थी।

रुस्तम इस बात पर झल्ला उठा था कि उसकी पत्नी शेरज़ाद का ख़याल रख रही है, जिससे उसे घृणा थी, लेकिन आज़रबैजानी गांव की परम्पराओं—पड़ोसी को मुसीबत में अकेले नहीं छोड़ना चाहिए,—का पालन करते हुए उसने कुछ नहीं कहा।

अब सकीना कभी शाम को, तो कभी दिन में एकाध घंटे का समय निकालकर शेरज़ाद के यहां जाती, आंगन झाड़ती-बुहारती, गाय के लिए चारा तैयार करती, सूप पकाती।

"सूना घर, भिड़ों का राज," वह वहां सफ़ाई करते समय सोच रही थी।

शेरज़ाद के आने का इन्तज़ार किये बिना सकीना ने बुझते चूल्हे में सूखी टहनियां डाल दीं और सागबाड़ियों से होती हुई घर रवाना हो गयी।

अहाते के बीचों-बीच धूल से सराबोर 'पोब्येदा' खड़ी थी। रुस्तम कुल्ला करता और हांफता हाथ-मुंह धो रहा था; उसने वहां पहुंची सकीना से साफ़ तौलिया लेते हुए कहा कि वह सुबह बाकू जा रहा है। सलमान को भेजना चाहता था, पर इरादा बदल गया।

"बिजलीघर के निर्माण के अनुबंधों का काम तो लड़का निबटा लेता, इसमें कोई शक नहीं," रुस्तम ने कहा, "पर मुझे आज़रइत्तिफ़ाक़* में इमारती लकड़ी और छत के लिए स्लेट के चौकों के लिए पैसा मंज़ूर करवाने जाना है, पार्टी की ज़िला समिति ने इजाज़त दे दी है।"

"अगर ज़िला समिति ने इजाज़त दे दी है, तो मेरी सारी दुआएं तुम्हारे साथ हैं," सकीना ने ठण्डी सांस लेकर कहा और पति के सफ़र की तैयारी करने लगी।

उसे पहली बार इस बात की ख़ुशी हुई कि पति कम-से-कम एक सप्ताह के लिए घर में नहीं रहेगा,—यह भावना उसके लिए अप्रत्याशित थी, इसलिए कष्टप्रद भी थी।

५

धूल के ललछौहां पीले, दमघोंटू ग़ुबार में पशुओं का झुण्ड धीरे-धीरे रेंगता-सा गांव की ओर बढ़ रहा था, चरवाहा अनिच्छापूर्वक चल रही गायों को हांकता बीच-बीच में कोड़ा फटकार रहा था, पर गायों को जल्दी नहीं थी, वे गड्ढों में उगी ऊंची, रसदार घास को चरती जा रही थीं।

सकीना ने फाटक खोला और नज़रों से ख़ूबसूरत गाय जैरान को ढूंढ़ने लगी।

"सलाम, सकीना चाची!" चरवाहे ने पुकारा; उसके हवा व धूप से काले पड़े चेहरे पर केवल आंखें चौंधिया देनेवाले सफ़ेद दांत ही चमकते

* आज़रइत्तिफ़ाक़—आज़रबैजानी उपभोक्ता संघ।

नज़र आ रहे थे। "इस मेहमाननवाज़ घर की मालकिन की क्या ख़बर है?"

"सलाम, बेटा! अभी तक हालत सुधरने के कोई लक्षण नज़र नहीं आते। आज तुम क्यों इतनी देर से लौटे?"

"स्तेपी में घास बहुत घनी उगी है, गायों को घास से हटाना मुश्किल हो जाता है," चरवाहे ने बताया।

भीमकाय, चौड़ी, सुनहले रंग की गाय भारी क़दम रखती हुई झुण्ड से अलग हो गयी और फाटक की ओर जाने लगी।

"बेटा, तुम्हारा क्या ख़याल है, इसके ब्याने में अभी काफ़ी देर है?"

"इस हफ़्ते में ब्या जायेगी, मेरे अंदाज़ से बछिया ही होगी। सारे लक्षण उसी के दिखाई देते हैं।"

"ख़ुशख़बरी के लिए शुक्रिया।"

जैरान ने अलसाये ढंग से सकीना के कंधे पर अपना माथा रगड़ा, सकीना ने उसकी गरदन में हाथ डाल दिये और उसे सफ़ाई से सफ़ेदी की हुई कच्ची गोशाला में ले गयी। जैरान की मख़मल-सी मुलायम खाल सहलाती हुई कहने लगी:

"ओफ़, कितने भारी लगते हैं ये आख़िरी दिन! लेट जा जल्दी से, सुस्ता ले..."

गाय ने मानो सकीना की बात समझ ली, उसने अपनी गरम, खुरदुरी जीभ से उसका हाथ चाट लिया।

गाय को अंकवारभर ख़ुशबूदार सूखी घास डालकर सकीना शाख़ी शहतूत के तले लट्ठे पर बैठ गयी। शाम का झुटपुटा तरह-तरह के कष्ट-दायक विचार पैदा कर रहा था। दिन में खेत में लोगों के बीच समय न जाने कब बीत जाता था, शाम को घर पर कोई न कोई काम निकल ही आता था, पर अकेले शेरज़ाद के घर का सारा काम सकीना ने बहुत जल्दी निबटा लिया। खाना पक चुका था, समोवार में पानी खदक रहा था, बस गाय के लिए पानी लाना बाक़ी रह गया था; पूरी बाल्टी पानी उठाने की ताक़त सकीना में अब नहीं रह गयी थी – दम फूल जाता था... बेहतर होगा शेरज़ाद के आने का इंतज़ार करे, उसे याद दिलाये।

पराये घर में बेकार बैठे रहने पर मन में बरबस विषादपूर्ण विचार आने लगते हैं। अपने को और धोखा देना और आशा रखना अब व्यर्थ है कि माय्या लौट आयेगी। पहली नज़र में ही स्पष्ट हो गया था कि बहू हमेशा के लिए रुस्तम ख़ानदान का घर छोड़ गयी है। अब गराश का क्या

होगा? क्या उस लुच्ची ने उस पर जादू कर दिया है? पहले पड़ोसिनें कुछ तो झिझकती थीं, मुंह पर कुछ नहीं कहती थीं, लेकिन अब माय्या के जाने के बाद से तेल्ली चाची हर चौराहे पर चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि रुस्तम के घरवालों ने अभागी अनाथ की बेइज़्ज़ती कर दी...

सकीना ने शेरज़ाद से अकसर मिलते समय देखा था कि उसे और नजफ़ को रुस्तम-कीशी से कोई लगाव नहीं रह गया है, वे उससे दूर-दूर रहने लगे हैं। अध्यक्ष के सलाहकार अब चालबाज़ यारमामेद और ढीठ सपाट सलमान रह गये हैं। उफ़, उसके सामने वे कितने ख़ुशामदी ढंग से मुस्कराते हैं, जब कि पीठ पीछे ज़रूर अपनी काली करतूतें करते रहते हैं। कहीं पति को किसी मुसीबत में न फंसा दें...

सामूहिक फ़ार्म में वसन्तकालीन बोवाई का काम पूरा कर लिया गया था, निराई शुरू हो गयी थी, ज़िले में रुस्तम-कीशी से अधिकारी बहुत ख़ुश थे, कुछ भी हो, हाल ही में कलंतर भैया रुस्तम के घर आया था, उसने चिख़िर्त्मा खाया, वोदका पी और गृहस्वामी की तारीफ़ के पुल बांधे। रुस्तम फिर घमण्ड से फूल उठा, सिर ऊंचा उठाकर चलने लगा और केवल उन्हीं लोगों पर ध्यान देने लगा, जो उसके सामने सिर झुकाते, जब कि अवज्ञाकारियों को वह मरखने बैल की तरह सींगों से टक्कर मारने को तैयार रहता... इसका अन्त अच्छा नहीं होनेवाला...

सकीना को होनेवाला अनर्थ अवश्यंभावी लगने लगा।

वह क्या करे? पति से बात करने पर हमेशा की तरह झगड़ा होगा। ज़िला समिति में शिकायत करे? नहीं, उसमें ऐसा करने का साहस नहीं है! न जाने कौन मामले की जांच करे। अगर वह रुस्तम का दुश्मन निकला तो? वह मौक़े का फ़ायदा उठाकर उसकी मदद करने के बजाय सकीना और उसके पति की बदनामी करवा दे, बूढ़े के हाथ-पैर मोड़कर गिरा उसके सीने पर घुटना दबाकर बैठ जाये। नहीं, इस तरह के विचारों से आदमी पागल हो जाये। बेहतर होगा, जल्दी से जल्दी घर चली जाये...

"शेरज़ाद आख़िर कहां ग़ायब हो गया? गाय को पानी पिलाने का वक़्त हो गया है!" सकीना ने प्रकट में कहते हुए सोचा।

"मां, तुम्हें पानी चाहिए क्या? अभी लायी!"

सकीना ने आंखें उठायीं और पेरशान को सामने खड़े देखा।

"तुम दबे पांव कैसे आ पहुंचीं? क्या कुछ हो गया है? अब्बा का तार आया है?"

"नहीं, मैं ऐसे ही आ गयी," पेरशान को अपना स्पष्टीकरण पूर्णतया विश्वासोत्पादक नहीं लगा, इसलिए उसने आगे कहा: "शेरज़ाद से एक किताब लेनी है। वह अभी नहीं लौटा?"

"नहीं, नहीं लौटा अभी। घर में जाकर लैम्प जला दो, नहीं तो बहुत अंधेरा हो रहा है।"

लेकिन युवती शेरज़ाद के घर के अंदर जाने के नाम पर शरमा गयी और बाल्टी उठाकर तालाब पर भागी।

"देखो, कितनी दौड़-धूप करती है," सकीना ने सोचा। "जैसे इस घर में इसकी सगाई की अंगूठी खो गयी हो। तो क्या हुआ, शेरज़ाद अच्छा लड़का है, अगर इनके सितारे मेल खा जायें, तो मैं बहुत ख़ुशनसीब होऊंगी..."

पेरशान ने इस बीच गाय को पानी पिला दिया, उसकी नांद में सूखी घास और चूल्हे में सूखी टहनियां डाल दीं, – यह सब उसने बड़ी जल्दी और सफ़ाई से किया।

"तुम अपने अब्बा की तरह उदार हो!" सकीना ने तारीफ़ की। "कुछ भी हो, रुस्तम-कीशी दिल का भला है, तोहफ़े देने में उसे आनन्द आता है।"

"इस दुनिया का क़ायदा ही ऐसा है, मां," पेरशान ने शहतूत तले उसके पास बैठते हुए विवेकपूर्वक कहा।

अचानक उसकी नज़र फाटक पर परेशानी में जड़वत् खड़े रह गये शेरज़ाद पर पड़ गयी, उसने जल्दी से अपना रंगबिरंगी किनारीवाला कुरता, जो उसके सुगठित शरीर पर वैसे ही ठीक बैठा हुआ था, ठीक किया।

"सलाम, चाची!" युवक ने सकुचाते हुए कहा। "या तो मेरी आंखें मुझे धोखा दे रही हैं, पर आपके पास..."

सकीना शेरज़ाद से कुछ ज़्यादा ही घबरा गयी। क्या पेरशान को नहीं आना चाहिए था?

लेकिन पेरशान हंस पड़ी:

"टोली-नायक क्या अपनी टोली की सदस्याओं को नहीं पहचानता? वाह, क्या कहने!.."

शेरज़ाद को लगा उसके अहाते में और ज़्यादा उजाला हो गया, चारों ओर की हर चीज़ सुन्दर हो उठी, जैसे अद्भुत गुलाबों की झाड़ी खिल उठी हो।

"कितना अच्छा हुआ, जो तुम आ गयीं!" उसके मुंह से निकल गया। "घर में चलो..."

लेकिन पेरशान ने ख़ुश्क लहजे में कहा कि वह केवल एक किताब लेने आयी है, उसका नाम क्या है, उसे याद नहीं रहा: शायद आज़रबैजान के सामूहिक फ़ार्मों के अग्रणी किसानों के बारे में है। पुस्तक रुस्तम-कीशी को चाहिए।

"'नयी समस्याएं – नयी आकांक्षाएं' – यही नाम है न?" शेरज़ाद ने यह याद करके कहा कि अध्यक्ष कई बार इस पुस्तक को पढ़ने की डींग हांक चुका है, पर ज़ाहिर है उसने उसके पन्ने भी नहीं उलटे हैं। ख़ैर, देर आये दुरुस्त आये... "बस यह मत बताना कि तुमने यह किताब मुझसे ली है, नहीं तो वह इसे देखने को भी तैयार नहीं होंगे।"

"तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि मैं अपने प्यारे अब्बा से कुछ नहीं छिपाती हूं। तुम क्या मुझे अपने मां-बाप को धोखा देना सिखा रहे हो? मां, सुना तुमने?!"

"चुप कर, लड़की!" सकीना चिल्लायी।

"किताब के लिए शुक्रिया, घर जाने का वक़्त हो गया," पेरशान ने औपचारिकता से कहा और फाटक पर पहुंचकर आगे बोली: "उम्मीद है, मां, तुम इस नौजवान से बातें करते समय यह नहीं भूलोगी कि तुम्हारा अपना परिवार भी है?"

और वह ठहाका लगाकर अंधेरी गली से घर भाग ली।

सकीना ने केवल हाथ झटकारे और ठण्डी सांस ली, जब कि शेरज़ाद उल्लसित किन्तु किंचित् उदास मुस्कान के साथ जहां खड़ा था, वहीं बरामदे की सीढ़ी पर कैनवस के धूल में सराबोर बूट पहने हुए ही थकान के मारे झन्ना रहे पैर फैलाकर बैठ गया।

देर कैसे हुई? काम हमेशा की तरह ढेरों हैं, ज़िले से जांच समिति ने आकर कपास की और निराई की जांच की। क्या वे सन्तुष्ट थे? युवक सकुचा गया और इधर-उधर देखने लगा... वह जानता था कि सकीना का दिल पति की सारी असफलताओं के कारण बहुत दुख रहा है, लेकिन वह उससे झूठ बोलने का साहस न कर सका।

"नहीं, चाची, लोग ख़ुश नहीं हैं। बहुत से खेतों में पौधे काफ़ी छीदे हैं, उनकी ऊंचाई कम है..." शेरज़ाद ने जान-बूझकर "बहुत से खेतों में" कहा, न कि "कुछेक टोलियों में" ताकि सकीना कहीं यह न

सोचें कि वह शेख़ी बघार रहा है। उसकी टोली के टुकड़े में, जांच समिति के मतानुसार, कपास बहुत अच्छी हालत में थी।

"तुम लोग आख़िर क्या करते रहते हो?" सकीना ने उलाहनाभरे स्वर में कहा।

"बुरा मत मानो, चाची, पर यह सवाल किसी और आदमी से करना बेहतर होगा।"

"मैं उसी आदमी से तो पूछ रही हूं। तुम और रुस्तम एक ही तवे की रोटी जो हो, क्या छोटी, क्या मोटी, इसलिए उसकी तरफ़ से तुम्हीं जवाब दो," सकीना ने प्रतिवाद किया।

शेरज़ाद ने कंधे उचका दिये। क्या वह ज़िम्मेदारी से कतराता है? क्या वह अध्यक्ष की मदद नहीं करना चाहता था? लेकिन जब शेरज़ाद का हर शब्द रुस्तम को जामे से बाहर कर देता हो, तो कोई क्या कर सकता है...

सकीना ने बरामदे में गद्दा लाकर उसे तख़्त पर बिछा दिया; तकिया और रज़ाई रख दिये। फिर वह लौटकर शेरज़ाद के पास आ बैठी और ठण्डी सांस लेकर सोच में डूबी बोली:

"मैं तुम्हारे लिए खाना बना रही थी और डूबते सूरज की तरफ़ देखती जा रही थी... वह झुलसा रहा था, आंखें चौंधिया रहा था, फिर डूबने की जल्दी में नहीं था। लेकिन वक़्त आ गया और वह क्षितिज के पीछे ओझल हो गया। वह चाहे आज डूब गया है, पर हम तो जानते हैं कि सूरज कल फिर निकलेगा और अपना सुखद प्रकाश हमें सौग़ात में देगा। और हम, इनसान क्या करेंगे? क्या हम अपना सूर्यास्त सह सकेंगे, जवान और बलशाली होकर पुनर्जन्म ले सकेंगे? नहीं ऐसा अभी इस दुनिया में नहीं हुआ है। हममें से हरेक की सुबह हुई थी, दोपहर हुई थी और सूर्यास्त भी होगा। वे लोग ख़ुशक़िस्मत हैं, जिन्हें उनके सूर्यास्त की घड़ी में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाता है। उनकी बदक़िस्मती है, जिन्हें उनकी आख़िरी घड़ी में लोग बददुआएं देते हैं... तुम जवान हो, बेटे, बहुत जवान, ज़िन्दगी में तुम बहुत सी बातों को मुझ बुढ़िया से अलग नज़रों से देखते हो। रुस्तम मेरे पति हैं, मुझसे बेहतर उन्हें कौन जान सकता है? हम दसियों बरसों से एक ही तकिये पर सिर रखते रहे हैं। वह ज़िद्दी हैं, इसमें कोई शक नहीं, पर ईमानदार हैं। मेरी इस बात का

तुम विश्वास रखो। तुम कोशिश करो कि उन्हें गुस्सा न आये, ढंग से पेश आओ, इस तरह कि उन्हें शक न हो, तब सब ठीक हो जायेगा।"

शेरज़ाद ने सोचा कि उसकी भी अपनी प्रतिष्ठा है: अगर सामूहिक फ़ार्म के कम्युनिस्टों ने उसे सचिव चुना है, तो रुस्तम को भी इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए। लेकिन चाची के दिल को ठेस न पहुंचाने की इच्छा से उसने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा:

"तुम्हारी बात सही है, हमारे बाद बस हमारा नेकनाम और नेक काम ही रह जायेंगे। तुम जानती हो, चाची, मेरी ज़िन्दगी फूलों की सेज नहीं रही है। शायद मैं किसी और ही ढंग से जीता..."

"तुम्हें ज़री के कपड़े पहनकर भी कभी घमण्ड नहीं होगा," सकीना ने उसे टोक दिया।

"कह नहीं सकता, कह नहीं सकता..." शेरज़ाद ने आंखें झुका लीं। "बुज़ुर्ग कहते हैं कि किसी आदमी को दौलत अंधा कर देती है, किसी को यश और किसी को सत्ता। तुम्हें साफ़-साफ़ बता दूं, चाची, कि पिछले कुछ दिनों से रुस्तम-कीशी को बहुत घमण्ड हो गया है। वह सोचते हैं कि उनसे ज़्यादा अक़्लमंद ज़िले में और कोई है ही नहीं!"

"मैं मानती हूं, बेटा, मानती हूं, लेकिन अब क्या किया जाये? क्या सब उनसे मुंह फेर लें? या तो क्या उनकी आंखें खोलना और भूल से बचाना बेहतर नहीं होगा? क्या उन्हें बुढ़ापे में सही रास्ते से न भटकने देना बेहतर नहीं होगा?"

शेरज़ाद सोच में डूब गया। उसे देखते हुए सकीना को अफ़सोस होने लगा कि उसने अपने सारे कष्ट युवक के कंधों पर लाद दिये हैं, जब कि उसके ये सुख से जीने के दिन हैं। बचपन में उसे बहुत कम ख़ुशियां नसीब हो पायी थीं...

"जाकर तुम्हारे लिए चाय ले आती हूं..."

६

सकीना चूल्हे के पास रुक गयी, जब कि शेरज़ाद उसकी कही बात के बारे में सोचता रहा। बात कितनी सही है – जीवन-पथ केवल सूर्यास्त, क्षीणता और वृद्धावस्था की ओर ले जाता है। उस पर रुकना असम्भव

है, युवावस्था की ओर वापस मुड़ना असम्भव है, उस पथ को दोबारा पार करना असम्भव है।

शेरज़ाद ने चाची के हाथों से चाय का गिलास लेकर कहा :

"अगर इनसान पहले से जान ले कि उसे कैसे जीना चाहिए, भ्रम में पड़कर पछताये नहीं, आत्मविश्वासपूर्वक सीधा आगे बढ़ता जाये... लेकिन यह असम्भव है। चाची, क्या तुम्हें कभी कोई ऐसा काम करना पड़ा है, जिसके लिए तुम कभी अपने को माफ़ नहीं कर सकती हो?"

सकीना की आंखें सिकुड़ गयीं, मानो वह अपने अतीत में झांक रही हो।

"ज़रूर, बेटा... कोई बीस साल पहले मेरी पड़ोसिन से झगड़ा हुआ था और मैंने उसे इतनी बुरी बातें कह दी थीं कि बेचारी अपमान के कारण फूट-फूटकर रो पड़ी थी। और तीन दिन बाद उसे मौत का फ़रिश्ता ले गया। मुझे लगता है, यह ग़म मैं क़ब्र में अपने साथ ले जाऊंगी। सबसे भयानक बात होती है बेटा, अपने किये अन्याय पर पछताना।"

शेरज़ाद सकीना चाची की, जिसका वह सगों की तरह आदर करता था, स्पष्टवादिता से प्रभावित हो अपने पाप भी याद करने लगा। उसे लगा जैसे उसने उसकी जेब से तम्बाकू के टुकड़े झड़ते देखने से साक्षात् मां का निराशाग्रस्त हुआ चेहरा देख लिया हो।

"तुम पर क़ुरबान जाऊं, बेटा, पर तुम यह ख़राब नशा छोड़ दो," माँ ने कहा था, लेकिन अपने जीवन की पहली सिगरेट पीनेवाले बहादुर दसवीं कक्षा के छात्र ने बदतमीज़ी से चिल्लाकर कहा था :

"क्यों मेरे पीछे पड़े गयी हो! मैं ख़ुद जानता हूं कि क्या कर रहा हूं, दुधमुंहा तो हूं नहीं!" और भड़ाक से दरवाज़ा बंद कर मां को रोती छोड़ता चला गया था।

एक हफ़्ते बाद दोनों इस घटना को भूल चुके थे। शेरज़ाद को धूम्रपान अच्छा नहीं लगा – उसका जी मिचलाने लगता था – लेकिन इस समय उसे लगा कि मां के आंसू अभी सूखे नहीं हैं और उसके चेहरे पर टप-टप गिर रहे हैं।

"मुझे डर लगता है, चाची, कि मेरे हाथ ख़ून में रंगे हैं और मेरी सगी मां मुझे कभी माफ़ नहीं करेगी," उसने दबे स्वर में सकीना के सामने स्वीकार किया।

अंधेरा था, सकीना युवक को ठेस पहुंचाने के डर के बिना दयापूर्वक मुस्करा दी।

"हां, बेटा, तुम हो सनकी," उसने कहा। "ऐसी मामूली बातें तुम्हें परेशान करती हैं, तुम्हारी मां का दूध तुम्हारे लिए हमेशा बरकती हो! लेकिन तुम जब जन्म से ही रहमदिल हो, तो लोगों को बेकार ठेस मत पहुंचाओ। लोगों का खुले दिल से भला करो... लोग यूं ही तो नहीं कहते हैं न : नेकी ही रह जाती है। लेकिन बुरे लोगों से होशियार रहो, हर राह चलते पर विश्वास मत करो। लोगों पर जल्दी विश्वास करना भी अच्छा नहीं होता, यह मैं रुस्तम-कीशी को भुगतते देख चुकी हूं।"

शेरज़ाद समझ नहीं पाया कि इस बातचीत से रुस्तम का क्या सम्बन्ध है। सकीना एक मिनट के लिए हिचकिचायी, पर फिर उसने यह सोचकर कि जब बात कहनी ही है, तो दो टूक कहनी चाहिए, हाथ झटका और कहा कि यारमामेद शेरज़ाद से दोस्ती गांठना चाहता है, उसका विश्वासपात्र बनना चाहता है।

"ख़ुदा न करे, उसे पास मत फटकने देना! सारे लोग यारमामेद के ख़िलाफ़ हैं, और लोगों के मुंह से कभी झूठी बात नहीं निकलती।"

पहले शेरज़ाद अपने को मनाता रहता था कि उसे यारमामेद और सलमान का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, पर वह अब अपने भोलेपन पर ख़ुद पछता रहा था। ये चापलूस रुस्तम-कीशी के साये में ज़बरदस्ती आने की कोशिश यूं ही नहीं कर रहे हैं... शेरज़ाद की आंखों के आगे कपास के पौधे के पास उगे मोटे-मोटे और मज़बूत परजीवी पौधे घूम गये, जो उसका सारा रस चूस लेते हैं। उस खर-पतवार को जड़ से उखाड़ना आसान नहीं है! थककर चूर हो जाने तक कुदाल चलाकर उसके चारों ओर की ज़मीन खोद डालनी पड़ती है। कभी-कभी आस-पास के पौधों को छूत से बचाने के लिए उस पौधे को जला डालना पड़ता है। लेकिन खर-पतवार की जड़ों को ज़मीन के नीचे आपस में गुथने का मौक़ा दिया, तो सब बरबाद हो जायेगा, सारा खेत बेकार हो जायेगा।

"चाची," शेरज़ाद ने भोलेपन से पूछा, "क्या तुमने इस बारे में रुस्तम-कीशी से बात करने की कोशिश की?"

"तुम क्या सोचते हो, बेटा, कि मैं अंधी भी हूं और गूंगी भी हूं?" सकीना रूठती हुई मुस्करायी। "मैं रोज़ यही कहती हूं : लोगों का सहारा लो, ठोकर भी खाओगे, तो गिरोगे नहीं।"

"लोगों का सहारा न मिलने पर हर कोई गिर सकता है," शेरज़ाद ने स्वीकार किया।

"एक हाथ से तो ताली भी नहीं बज सकती," सकीना आगे बोली।

यह सच भी है, अकेला हाथ संदेह के कारण कांप उठता है... उसने खर-पतवार को पकड़ा है या वह कोई लाभदायक पौधा है? ऐसी स्थिति में हज़ारों हाथोंवाली, बुद्धिमत्तापूर्ण, जीवन के अनुभव के आधार पर सत्यता में विश्वास से परिपूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है। यह हर कोई जानता है कि जो भेंगी आंख नहीं देख पाती, उसे हज़ारों आंखें तुरन्त देख लेती हैं। यह सत्य साधारण सामूहिक किसान के लिए स्पष्ट होता है जबकि काफ़ी समय तक कई सत्ताधारियों की समझ में नहीं आता।

"चाची," शेरज़ाद इतनी ईमानदार सम्भाषिणी मिलने की ख़ुशी से चुप न रह सका, "दुनिया में आदमी से बढ़कर पेचीदा प्राणी कोई नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी आदमी को बिलकुल गया-गुज़रा, पक्का बदमाश समझ लिया जाता है, पर मालूम पड़ता है कि वह नेक है। जब कि दूसरा, जो देखने में अक़्लमंद और हरफ़न-मौला लगता है, नज़दीक से देखने पर पता चलता है, वह बिलकुल नीच है।"

"ज़ाहिर है, इसीलिए तो सिर्फ़ अपने ख़यालों पर ही भरोसा नहीं करना चाहिए, अलग-थलग नहीं रहना चाहिए," सकीना ने सोचकर कहा। "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता..."

शेरज़ाद को उसकी बातों में मेहनत की ज़िन्दगी जी चुकी आज़रबैजानी किसान नारी की बुद्धिमत्ता दिखाई दी, जिसने कभी झूठ नहीं बोला, छल-कपट नहीं किया, पराये माल पर दांत नहीं गड़ाये, अपने कुछ परिचितों की आज़ाद ज़िन्दगी से कभी ईर्ष्या नहीं की और केवल अपनी मेहनत के फल पर ही भरोसा रखा। हां, उसे सकीना के शब्दों में पति, परिवार व अपनी सन्तान के सुख में अपना सुख देखनेवाली अभिजात नारी-हृदय का स्पंदन सुनाई दे गया।

सकीना ने उदास स्वर में कहा कि रुस्तम बूढ़ा हो चुका है, पांच साल और काम करेगा और फिर अलग हटकर नौजवानों के लिए रास्ता छोड़ देगा। शेरज़ाद के जैसों को खेती-बारी संभालनी होगी, लोगों का नेतृत्व करना होगा। अब शेरज़ाद पर भारी ज़िम्मेदारी आ चुकी है, अगर वह और रुस्तम एक दूसरे की मदद करें, तब सारे सामूहिक किसान उनके पीछे चल पड़ेंगे, तब पहाड़ काटना भी आसान हो जायेगा। अगर जनता

की पैनी नज़र व्यवस्था का ध्यान रखेगी, तो बुरी नीयतवालों की चूं करने की भी हिम्मत नहीं हो सकेगी। अध्यक्ष और सचिव को परेशान नहीं होना पड़ेगा: स्तेपी में मेमनों का क्या हो रहा है? कहीं अनाज चुरा तो नहीं लिया गया है? लोगों की नज़रों से भूसे में पड़ी सूई भी छिपी नहीं रह सकेगी।

"अच्छा, अब घर जाने का वक़्त हो गया है, अपने बच्चों को खिला-पिलाकर सुलाना है।" सकीना ने मज़ाक़ किया। "मेरी तुमसे एक विनती है, शेरज़ाद..."

उसका चेहरा अचानक लाल हो उठा।

"कहो, कहो, चाची, तुम तो आख़िर मेरे लिए दूसरी मां की तरह हो।"

"अगर तुम्हारा कभी 'लाल झण्डा' जाना हो, तो बहू से कहना कि परेशान और मेरा दिल दुःख के मारे टूटा जा रहा है। कम-से-कम एक घंटे के लिए ही मिल जाये," सकीना ने अनुरोध किया।

शेरज़ाद उसे बता सकता था कि हाल ही में नजफ़, गिज़ेतार और उसने कैसे लापरवाही के लिए गराश को आड़े हाथों लिया था, लेकिन वह शर्मा गया और उसने केवल वादा किया:

"कल उधर जाऊंगा और ज़रूर कह दूंगा।"

सकीना चली गयी, पर उस बातचीत व अपने विचारों से व्याकुल युवक बिना लैम्प जलाये काफ़ी देर तक बरामदे की सीढ़ियों पर बैठा रहा। उसके दिल को अच्छा लग रहा था, वह ख़ुश था।

पौ फटे जैसे ही सूरज की पहली किरण हीरे सदृश निर्मल क्षितिज पर रक्ताभ रेखा-सी खिंच गयी, शेरज़ाद ने क़ुम्मैत घोड़े पर काठी कसी और ताज़गी से पुष्पित, सुगंधित खेतों की ओर उसे सरपट दौड़ा ले चला: युवक के हृदय में उमड़ रही उदात्त भावनाएं अब कुछ कर दिखाने, संघर्ष करने की उत्कट इच्छा में परिवर्तित हो चुकी थीं।

रंगबिरंगे फूलों व गेहूं की थोड़ी बालियों से सुसज्जित मुग़ान भद्र, स्नेहमयी मां के समान शेरज़ाद को अपने पास बुला रही थी।

उसने रकाबों में खड़े होकर पैनी नज़र निस्सीम समतल प्रदेश पर दौड़ायी, काम पर निकले सामूहिक किसानों को देखा और युवक का हृदय सन्तोष से परिपूर्ण हो उठा कि वह भी उनके साथ है... और जब उसने धूप से काली स्याह हुई विनोदी व ज़िन्दादिल स्त्रियों व युवतियों के बीच

सकीना को पहचान लिया, तो उसे कल रात उसके साथ हुई बातें याद हो आयीं, उसने मन-ही-मन उसे उसकी स्पष्टवादिता और बुद्धिमत्ता के लिए हृदय से धन्यवाद दिया और एक मिनट बाद ही उस शुद्ध-हृदया नारी के बारे में उत्पन्न हुए विचार अत्यन्त अद्भुत ढंग से जनता के बारे में आये विचारों के साथ घुल-मिल गये।

"ऐ मेरी जनता, तुम ही मेरा आसरा हो, आशा हो!" ये दिव्य शब्द युवक के हृदय में गीत के समान गूंज उठे। "तुम मेरा जीवन हो, मेरा सुख हो! जीवन के दुर्गम मोड़ों पर तुम मेरा हाथ पकड़कर सहारा देती हो, फिसलकर गिरने से बचाती हो। मेरे हृदय में उत्साह तुम्हारी ही कृपा से है! तुम्हारे आदेश पर ही मैंने आज़रबैजान का यश बढ़ानेवाले ये प्रासाद खड़े किये हैं! तुम्हारी इच्छा से ही मैं ये नहरें और सड़कें बना रहा हूं, नगरों का निर्माण कर रहा हूं, मरुभूमि में वनरोपण कर रहा हूं, पृथ्वी के गर्भ में छिपी अक्षय सम्पदाओं तक पहुंचने का मार्ग बना रहा हूं। तुम्हीं ने, मेरी जनता, मुझे समृद्धि के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। जीवन के कटु क्षणों में तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा। उन क्षणों में जब कायरों, भीरुओं ने मुझसे मुंह फेर लिया, तुम ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। मैं सदा तुम्हारे प्रति निष्ठावान रहूंगा, तुम्हारी आकांक्षाओं को सर्वोपरि रखूंगा, तुम्हारे आगे सदा नतमस्तक रहूंगा, अहंकार को कभी धोखे से भी अपने हृदय में नहीं आने दूंगा – यही मेरा धर्म है! .."

७

घास बहुत अच्छी हुई, कमर से ऊंची उग आयी, तिस पर रसदार और ख़ुशबूदार थी। घसियारे घासस्थली में लम्बी-लम्बी हंसियाएं चलाते, अपने पीछे घास के ढेर छोड़ते एक क़तार में आगे बढ़ते जा रहे थे। हवा घास की तीव्र गंध से संपृक्त थी। शेरज़ाद ने जब स्तेपी में पहुंचकर देखा कि सुबह के समय में कितनी घास काट ली गयी है, उसे सुखद लगा, लेकिन एक मिनट बाद ही एक ओर बेकार खड़ी घास काटने की मशीन पर नज़र पड़ते ही वह उदास हो गया।

"मशीन काम क्यों नहीं कर रही है?" उसने एक घसियारे से पूछा।

उसने आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछकर कंधे उचका दिये।

"कुछ ख़राबी हो गयी है। आपरेटर नदी की तरफ़ उतरा है, कह गया है कि अभी आता हूं।"

"कैसे लोग हैं!" शेरज़ाद क्रुद्ध हो उठा और तेज़ क़दमों से नदी की ओर चल दिया। "काम ज़ोरों पर है और मशीन छोड़ गया! मशीन से हम दो-तीन दिन में काम निबटा लेते!"

ऊंची कंटीली झाड़ियां घुटनों में चुभी जा रही थीं, जैसे उसे रोक रही हों: जल्दबाज़ी मत कर, भाई... घासस्थली और नदी के बीच एक छोटे-से घास के टुकड़े पर भेड़ें चर रही थीं; शेरज़ाद ने आज़ादी से इधर-उधर चर रही भेड़ों व उनकी लटकी हुई मोटी-मोटी दुमों पर स्वामी की तरह नज़र डाली। दाढ़ीवाले चरवाहे ने पार्टी संगठन के सचिव का अभिवादन किया।

"तुम्हारी दौलत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े!" शेरज़ाद ने कामना की। "नया इनचार्ज कैसा है? पसंद आया?"

चरवाहे ने टोपी उतारकर गुद्दी खुजलायी और अपनी बिखरी दाढ़ी हिलायी।

"यह तो अफ़सर ही जानें..."

शेरज़ाद को चरवाहे के शब्दों में उलाहने का पुट महसूस हुआ, उसने अपने को इस बात का दोषी अनुभव किया कि उसने समय रहते केरेम का पक्ष नहीं लिया।

"तुम ने यहां आपरेटर को तो नहीं देखा?"

"नजफ़ को? वह रहा बाल्टी लिये," चरवाहे ने लम्बा कोड़ा फटकारा और एक तरफ़ हट गया।

नजफ़ बाल्टी लिये ढालवां किनारे पर बनी टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी से ऊपर चढ़ रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, बीच-बीच में बाल्टी ज़मीन पर रख देता था, सांस लेता था और पसीने से तर चेहरा पोंछ लेता था।

"ऐ, ज़रा रफ़्तार बढ़ाओ!" शेरज़ाद चिल्लाया। "अगर तुम्हें हांकना पड़ गया, तो काम बिलकुल ही रुक जायेगा।"

नजफ़ ने फिर बाल्टी रखकर ठण्डी सांस ली, उसके भरे-भरे गाल सुर्ख़ हो उठे थे।

"क्या तुम लोग, शैतानो, इतना भी नहीं कर सकते कि मशीनें ख़राब होने की नौबत ही नहीं आये?" शेरज़ाद उस पर बरस पड़ा। "हर मिनट

बेशक़ीमती है। तुम तो कोम्सोमोलों के नेता हो, सारे युवा तुम्हारा अनुसरण करते हैं।"

एक गिज़ेतार ही थी, जो नजफ़ को गुस्सा दिला सकती थी, वह भी हमेशा नहीं। टोली-नायक की बात का उस पर कोई असर नहीं हुआ।

"जहां मैं रहता हूं, सब ठीक रहता है," नजफ़ निश्चिन्तता से मुस्करा दिया। "माय्या को देखा? वह रही वहां साइलो के पास।"

मित्र की बात पूरी सुने बिना ही शेरज़ाद टेकरी पर बने साइलो की ओर मुड़ गया, नजफ़ बाल्टी उठाकर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। "इसमें गुस्सा करने की बात ही क्या है?" उसने सोचा। "दिन लम्बा है, सूरज अभी सिर के ऊपर है, ट्रैक्टर घड़ी की तरह ठीक काम कर रहा है, कोटे से ज़्यादा काम कर लेंगे, गिज़ेतार ने शाम को चिख़िर्त्मा पकाने का वादा किया है,–कहने का मतलब है, ज़िन्दगी मज़े में कट रही है..."

इस बीच शेरज़ाद हाल ही में निर्मित साइलो के निकट पहुंचता जा रहा था, जहां औरतें डांड़ियों व टोकरियों में रूखी दलदली घास, नरकट, खर-पतवार आदि रखकर ला रही थीं। उसने दूर से माय्या को देखकर उसकी ओर हाथ हिलाया।

पीली पड़ी, मुरझायी माय्या मुस्कराकर सकुचाती हुई पास आयी।

"आपने कारा केरेमोगलू चाचा को टेलीफ़ोन किया था? क्या हुआ?"

"यही कि आपको नहीं भूलना चाहिए: आप का नाम अभी तक हमारे कोम्सोमोल संगठन में दर्ज है," शेरज़ाद ने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा। "हालांकि नजफ़ सुस्त है, पर देर-सवेर वह आप तक पहुंच ही जायेगा।"

स्पष्ट था कि माय्या मज़ाक़ के मूड में नहीं थी, वह बरबस मुस्करायी। शेरज़ाद ने बिना घुमा-फिराकर बात किये उसे उसकी सास का अनुरोध बता दिया।

माय्या सोच में पड़ गयी, उसने उदासी से नज़रें कहीं स्तेपी में गड़ा लीं, फिर दृढ़तापूर्वक घुंघराले बालों को झटका दिया:

"मैं उनसे खेत में मिलने जाऊंगी, वहीं बात कर लेंगे। आपका उधर जाने का इरादा है?"

"हां, मैं भी उधर ही जा रहा हूं," शेरज़ाद ने, यह भांपकर कि उसकी उपस्थिति में माय्या के लिए सास से मिलना आसान होगा, झूठ बोला।

वे साइलोकटर के पास से गुज़र और कपास का खेत पार करके

कच्चे रास्ते पर पहुंच गये। वहां धूल, काले तेल, भेड़ों की मेंगनियों की बू आ रही थी... दूर एक ट्रक दिखाई दिया, जिसमें पीछे एक स्त्री चौड़ा स्ट्रा-हैट लगाये खड़ी थी। ट्रक के पहियों से लगकर धूल के ग़ुबार उड़ रहे थे, धूल गड्ढों व रास्ते के किनारे की झाड़ियों पर जम रही थी। शेरज़ाद और माय्या एक तरफ़ लपके, पर ट्रक अचानक रुक गया। गिज़ेतार स्ट्रा-हैट गुद्दी पर खिसकाकर खनकती आवाज़ में चिल्लायी:

"आओ, बैठो, बैठो!.."

उसने माय्या की तरफ़ हाथ बढ़ाया, जब कि शेरज़ाद इस बीच बड़ी फुर्ती से उछलकर ट्रक के पीछे रसायनों के सिलिंडरों पर बैठ गया।

"ओह, माय्या बहन," गिज़ेतार बड़ी बेतकल्लुफ़ी से जल्दी-जल्दी बोली, जैसे वे एक घंटे पहले ही एक दूसरे से अलग हुई हों, "कितनी मुश्किल हो रही है मुझे! मैंने कितना ही मना क्यों न किया मुझे गूंगे हुसैन के स्थान पर टोली-नायक बना दिया गया है। और इस जोंक ने भी मुझे नियुक्त करवाने में उनका साथ दिया," उसने मुस्करा रहे शेरज़ाद की ओर इशारा किया। "हुसैन के खेतों की जोताई देर से हुई, बोवाई लापरवाही से की गयी, अंकुर बहुत कम निकले हैं। मैं तो तंग आ गयी: कभी अतिरिक्त खाद दो, कभी निराई करो, कभी कीटनाशकों का छिड़काव, तो कभी पानी दो..."

"लेकिन जीने में मज़ा भी तो आ रहा है," शेरज़ाद ने उसे तसल्ली दिलायी।

"सच्ची बात है, बहन, सब ठीक हो जायेगा," माय्या ने अपने हृदय में उमड़ती सहानुभूति की भावना के साथ उसे गले लगा लिया। "ऐसा कोई काम नहीं, जो तुम्हारे फुरतीले नन्हे हाथ चट-पट न कर सकें।"

"नन्हे हाथ!" प्रशंसा से पुलकित गिज़ेतार कह उठी। "कितने चौड़े हाथ हैं! पंजे!" उसने अपने खुरदरे घट्ठे व खरोंचे पड़े, धूप में भूरे पड़े ताक़तवर हाथ दिखाये। शेरज़ाद ने सोचा कि पेरशान के भी हाथ ऐसे ही हैं और सचमुच वे उसे शहरी कामचोर लड़कियों के गदराये, पालिश से लाल नाख़ूनों से ज़्यादा प्यारे लगते हैं।

ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर ट्रक बुरी तरह धचके खा रहा था, गिज़ेतार माय्या को अपने गरम बग़ल से सटाये सहारा दे रही थी। अचानक उसने माय्या

को शेरज़ाद की बांहों में धक्का दे दिया और पूरी ताक़त से चालक की केबिन की छत पर घूंसे मारने लगी।

"क्या हुआ?" शेरज़ाद कुछ समझ नहीं पाया।

"तुम क्या देख नहीं रहे हो, कितनी पीली पड़ गयी है? इसकी तबीयत ख़राब है, बहुत ख़राब!" गिज़ेतार चिल्लाती रही और उसने इतने ज़ोर से केबिन पर मुक्का मारा कि ट्रक वहीं का वहीं रुक गया और डरा हुआ चालक केबिन से बाहर कूद पड़ा।

एक मिनट बाद केबिन से शाही अंदाज़ में तेल्ली चाची निकलकर आयी। माय्या को क्या हुआ, यह समझने के लिए उस पर एक उड़ती नज़र डालना ही काफ़ी था।

"चक्कर आ गया था," गिज़ेतार ने समझाया।

"तुम्हारे यार गराश की तो आंखें निकाल देनी चाहिएं!" तेल्ली ने शेरज़ाद से कहा। "अगर मुझे ग़लतफ़हमी नहीं है, तो क्या अध्यक्ष का बेटा अभी तक कोम्सोमोल में है न?"

"हां, चाची, आपको बिलकुल ग़लतफ़हमी नहीं हुई है!" शेरज़ाद ने खोखली आवाज़ में जवाब दिया और झल्लाकर गराश के बारे में सोचने लगा।

उन्होंने माय्या को सहारा देकर ट्रक से उतार लिया और घास पर लिटा दिया। उसकी आंखें बंद थीं, सूखे होंठ भिंचे हुए थे। संयोगवश चालक के पास बोतल में ठण्डा पानी मिल गया। गिज़ेतार ने रूमाल पानी से तर करके उसके माथे पर रख दिया। मिनट-भर बाद माय्या ने आंखें खोलीं और कुछ हिली-डोली।

"लेटी रहो, लेटी रहो!" गिज़ेतार थोड़ी रुखाई से चिल्लायी।

"नहीं, अब ठीक हूं।" माय्या ने उठने की कोशिश की। "मेरी तबीयत अब ठीक है।"

"माना ठीक है, पर ज़्यादा नहीं," तेल्ली चाची शेरज़ाद को खा जानेवाली नज़रों से देखती हुई बड़बड़ाने लगी। "केबिन में बैठो और ड्राइवर से कहो कि तुम्हें सीधे 'लाल झण्डा' ले जाये। सिलिंडर हम यहीं उतारकर ख़ुद ढो ले जायेंगे।"

उन्होंने ऐसा ही किया और माय्या को सहारा देकर ट्रक के पास ले गये। तेल्ली चाची ने आंखें तरेरकर चालक को रास्ते के हर गड्ढे से बचकर निकलने की हिदायत दी, ताकि बेचारी को झटके न लगें और कहा कि

अगर उसने इस आदेश का पालन नहीं किया, तो फिर न उसकी ख़ैर है, न उसकी मां की, बाप की, बहनों की और भाइयों की भी।

ड्राइवर तेल्ली के हर शब्द पर स्वीकृति में सिर हिलाता रहा, प्रतिवाद करने का साहस उसे नहीं रहा।

"अच्छी तरह आराम कर लो, नहीं तो तुम बिलकुल घुल गयी हो," गिज़ेतार ने चिरौरी की।

"रविवार को हम तुमसे मिलने आयेंगे," चाची ने चलते-चलते माय्या से कहा। "ज़ैनब बहन और कारा केरेमोगलू चाचा से हमारा सलाम कहना।"

ट्रक चल पड़ा।

प्यास के मारे शेरज़ाद के होंठ व गला फटे जा रहे थे। वह गिज़ेतार व तेल्ली से विदा लेकर खेत-कैंप की ओर रवाना हो गया।

वहां फट्टों को जोड़कर बनायी मेज़ पर सलमान बैठा चाय की चुस्कियां ले रहा था। शेरज़ाद ने उसके पास बैठकर थर्मस उठाया और अपने लिए चाय डाल ली। वे काफ़ी देर तक चुप रहे, अन्त में सलमान से न रहा गया और पूछा:

"कहो, क्या नयी ख़बरें हैं?"

सचिव ने सवाल के जवाब में सवाल किया:

"तुम्हारी बहन क्या जल्दी ही चली जायेगी? उसकी छुट्टियां तो लगता है काफ़ी पहले ही ख़तम हो चुकी हैं।"

"तुम्हें मेरी बहन से क्या मतलब है?" सलमान ने लड़ाकू मुर्ग़े की तरह सिर को झटका दिया।

"यही कि नज़नाज़ नर्स है और अस्पताल की कर्मचारी है। वह या तो यहां से दफ़ा हो जाये या सामूहिक फ़ार्म में शामिल होकर कल ही कपास की निराई करने हाज़िर हो जाये। उसे यहां मंडराने की कोई ज़रूरत नहीं है। किसी की उंगली पर पट्टी बांधी और पूरे दिन आह-ऊह करती रहती है। छः महीने की छुट्टी नहीं हुआ करती, — कम-से-कम मैंने तो ऐसी छुट्टी के बारे में नहीं सुना।"

सलमान भांप गया कि शेरज़ाद ने यह बात यूं ही नहीं छेड़ी है।

"बहन तो तुम्हारे याद दिलाये बिना ही खेत में काम करने जा रही थी। इस हफ़्ते मेरी तबीयत ठीक नहीं रही, इसीलिए मैंने उसे घर में रहकर मेरी देख-भाल करने को कहा था। मेहरबानी करके, ग़ुस्सा न

करो ... और यह याद रखो," सलमान ने धमकी भरे स्वर में कहा, "मैं, जिसे कहते हैं, तुम्हारी ख़ुशामद किसी हालत में नहीं करूंगा।"

शेरज़ाद का चेहरा फक हो उठा, उसने उचककर टुटियल मेज़ को धक्का मार दिया।

"पर तुम भी याद रखना, उपाध्यक्ष, कि अब तुम्हारे लिए अपनी बहन को क़ाबू में रखने और अपने ईमान का ख़याल रखने का वक़्त आ गया है!"

इसके बाद उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा, पर दोनों को ही इतना स्पष्ट हो गया था कि चुप रहने का समय निकल गया है और खुल्लम-खुली मुठभेड़ शुरू हो गयी है।

८

अगली सुबह नजफ़ ने शेरज़ाद के यहां पहुंचकर उसे निद्रा से जगा दिया। बड़े भोर का समय था, निचले इलाक़ों में धुंध छायी थी। शेरज़ाद ने कुतूहलवश मित्र की तरफ़ देखा: यह कैसे आ धमका है, न पौ फटी है, न दिन निकला है? उसे मालूम पड़ा कि कल युवाओं ने गांव की सड़कों पर पटरियां बनाने का निर्णय किया है, यानी रोज़ाना खेत से लौटकर एक-दो घंटे काम करने का।

"मेहनत करिये, आपकी मेहनत सफल हो! यह ख़बर ज़रा देर से भी दी जा सकती थी," शेरज़ाद ने सोचा। "अभी समझ में नहीं आ रहा है कि माय्या और गराश की गुत्थी कैसे सुलझाऊं, नज़नाज़ को सामूहिक फ़ार्म से कैसे निकालूं..."

लेकिन नजफ़ पटरियों के बारे में इतने उत्साह से बोल रहा था कि शेरज़ाद को शर्म महसूस हुई और उसने हृदय से अपने साथी का उत्साह बढ़ाया:

"हम अपने कानों तक गंदगी में रहने के आदी हो चुके हैं। शहर में क्या दूसरी तरह के लोग रहते हैं? उनके लिए अस्फ़ाल्ट ज़रूरी है, और हमें क्या उसकी ज़रूरत नहीं है? जब पेड़ लगाये जा रहे थे, बहुतों ने भविष्यवाणी की थी: 'सूख जायेंगे...' पर कुछ नहीं हुआ, नहीं सूखे, इतने हरे-भरे हैं, तीन साल में आसमान नज़र नहीं आयेगा, ख़ूब छाया रहेगी, ठण्डक और साफ़ हवा..."

"यानी तुम सहमत हो न?" नजफ़ हर्षित हो उठा।

"सहमत क्यों न होऊंगा!"

"गोशातख़ां तुमसे मिलना चाहता था, वह रात को हमारे गांव में रहा था। क्या उसका अकसर आना भलाई की निशानी है?"

शेरज़ाद मित्र के सन्देहों से सहमत नहीं था।

"परीक्षाएं सिर पर आ पहुंची हैं, सत्र समाप्त होने जा रहा है। मुझे उसके आने में कुछ अजीब नज़र नहीं आता।"

नाश्ते के बाद नजफ़ खेत रवाना हो गया, जब कि शेरज़ाद यह सोचकर कि गोशातखां रात को मुख्याध्यापक के यहां ठहरा है, स्कूल चला गया।

स्कूल की चौड़ी खिड़कियों और नीला पेंट किये हुए दरवाज़ोंवाली एकमंज़िला सफ़ेद रंग की इमारत सजी-धजी लग रही थी। शेरज़ाद मुग्ध हुआ उसे देख सोचने लगा कि रुस्तम अगर किसी काम को संभाल ले, तो बहुत ही अच्छी तरह करेगा। ऐसे सुनियोजित स्कूल पर तो किसी भी शहर को गर्व हो सकता है। थोड़ी दूरी पर, जहां समतल निर्माण-स्थल पर तराशे हुए पत्थरों का ढेर लगा हुआ था, सामूहिक फ़ार्म के संस्कृति-भवन का निर्माण-कार्य चल रहा था। रुस्तम ने कारा केरेमोगलू और साथ ही मुग़ान के सारे सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्षों को मात देने के इरादे से भव्य भवन खड़ा कर डालने की ठानी थी। बाकू में उसने किसी तरह मंत्रियों तक पहुंचकर उनके सामने भावी संस्कृति भवन के सौन्दर्य का इतना भावविभोर होकर बखान किया कि उसे बिना किसी कठिनाई के सारा इमारती सामान मिल गया – सामूहिक फ़ार्म को सीमेंट, स्लेट के चौकों, केन्द्रीय तापन व पानी के पाइपों के वैगन पर वैगन भेजे जा रहे थे।

सोच में डूबे शेरज़ाद को पता भी न चला कि कब गोशातख़ां उसके पास आ पहुंचा। उसने सचिव से हाथ मिलाया। शेरज़ाद ने आश्चर्य व्यक्त किया:

"आप क्या रात को स्कूल में ही सोये थे?"

"गांव में भी मेरे बहुत से दोस्त हैं। जैसे तेल्ली चाची..." गोशातख़ां मुस्कराया।

शेरज़ाद सतर्क हो गया: "यानी, यह हमारे अध्यक्ष के बारे में काफ़ी क़िस्से सुन चुका है। चाची बेलाग कहने की आदी थी। बिलकुल ठीक ही करती है! अगर सड़े-गले को संभालकर रखा जाये, तो सड़ांयध सारे में

फैल जायेगा ! समझदार गृहस्थिन अरसे से संदूक में बंद रखे पोस्तीन को झटकारकर धूप दिखाती है, हवा देती है, डण्डे से पीट-पीटकर धूल निकाल देती है, ताकि उसमें कीड़े न लगें।"

"इतनी जल्दी कैसे उठ गये?" उसने पूछा।

"मैं हमेशा भोर में उठता हूं," गोशातख़ां ने बताया। "मैं सारी ज़िन्दगी ग्राम-शिक्षक रहा हूं और किसानों से अक़्लमंदी का नियम सीख चुका हूं : सांझ ढले सो जाना, पौ फटे उठ जाना। यहां और कई तरह के विचार परेशान कर रहे हैं।"

शेरज़ाद ने सतर्कतापूर्वक पूछा :

"क्या आप हमारे सामूहिक फ़ार्म के हालात से परेशान हैं?"

"तुम क्या सारी बातों से सन्तुष्ट हो? ऐसा कुछ दिखता तो नहीं है," गोशातख़ां के पतले होंठों पर नटखट मुस्कान फैल गयी। "मैं तुम से एक मामले के बारे में बात करना चाहता था," उसने आगे गम्भीरतापूर्वक कहा। "क्या शिक्षक तुम्हारी मदद कर रहे हैं?"

शेरज़ाद को हर तरह की बात कहे जाने की आशा थी : गूंगे हुसैन के खेत में कपास के पौधे कम होने के लिए झिड़कियों की, निराई आदि को जल्दी निबटाये जाने के तक़ाज़े की, — केवल स्कूल के ज़िक्र को छोड़कर।

"हमारे यहां शिक्षक बुरे नहीं हैं," उसने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। "लेकिन कुछ अलग-अलग रहते हैं। युवा कोम्सोमोल अध्यापिकाएं नियम से मीटिंगों में आती हैं, सदस्य-शुल्क देती हैं, लेकिन इसके अलावा शायद और कुछ नहीं करती हैं। मुख्याध्यापक सभी बातों के बारे में कोई उत्साह नहीं दिखाता। वह पार्टी का सदस्य नहीं है, मैं उस पर दबाव कैसे डाल सकता हूं?"

"यह तो बड़ा आसान काम है... चलो, स्कूल चलते हैं," गोशातख़ां ने सुझाव दिया।

पाठ आरम्भ होने में अभी पूरा आधा घंटा बाक़ी था, स्कूल ख़ाली पड़ा था, केवल सागबाड़ी में मिट्टी में सने दो लड़के टमाटर के पौधों के पास कुछ कर रहे थे। उदास व चिन्तित मुख्याध्यापक मुसे हुए कोट का कॉलर उठाये अहाते में मौन चहलक़दमी कर रहा था। उसने सर्दमिजाज़ी से गोशातख़ां व शेरज़ाद का अभिवादन किया : यह साफ़ नज़र आ रहा था कि उसे इस मुलाक़ात से किसी अच्छे परिणाम की आशा नहीं थी।

"क्या कर रहे हैं?" गोशातख़ां ने पूछा।

"फूलों के पौधे लगा रहा हूं," मुख्याध्यापक ने छिपे व्यंग्य के साथ उत्तर दिया।

लड़कों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा।

गोशातख़ां ने कंधे उचका दिये और एकाएक बेतक़ल्लुफ़ी से हैडमास्टर के कोट के कॉलर को मोड़ दिया और नाख़ून से धूल झाड़ दी।

"ऐसी कड़ाके की ठण्ड तो पड़ नहीं रही है! तुमने क्या मुझे बुद्धू बनाने की सोची है? सोचते हो मैं टमाटर के पौधों को गुलदाउदी के पौधे समझ लूंगा? शर्म आनी चाहिए! कक्षा में चलिये!"

बाहर से सजा-धजा स्कूल अंदर से उपेक्षित और गंदा निकला। गलियारों के कोनों पर कूड़े के ढेर लगे हुए थे, दीवारों पर धूल जमे चित्र व पोस्टर टंगे हुए थे। मुख्याध्यापक जंभाइयां ले रहा था, सिकुड़ रहा था, मानो उसे आर-पार बहती ठण्डी हवा के झोंके लग रहे हों, और गोशातख़ां को बहुत अनिच्छापूर्वक उत्तर दे रहा था। और दीवारी समाचारपत्र? क्यों नहीं, वह नियमित रूप से प्रकाशित होता है, लेकिन पुराना अंक कल ही हटाया गया है और ताज़ा अभी तैयार नहीं है : उस पर एक भी नोट नहीं था... मुख्याध्यापक के कक्ष में फटे हुए सोफ़े से कतरनें निकली हुई थीं, खिड़कियों के दासे समाचारपत्रों की फ़ाइलों, रजिस्टरों व कापियों के ढेर से अटे पड़े थे। छत पर टेढ़ा-मेढ़ा धब्बा गुमटे की तरह उभरा हुआ था।

"छत चूने लगी है," मुख्याध्यापक ने शान्ति से कहा। "दो हफ़्ते हुए मैंने सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष को औपचारिक प्रार्थनापत्र भेजा था। छत की मरम्मत करनेवालों को अभी तक नहीं भेजा गया है।"

"आप बड़ी कक्षाओं के कोम्सोमोल छात्रों को बुलाते और उनके साथ मिलकर मरम्मत कर लेते," गोशातख़ां ने लयात्मक आवाज़ में शिष्टतापूर्ण व्यंग्य के साथ सलाह दी।

"आपके निर्देशों को ध्यान में रखकर उनका पालन करूंगा," मुख्याध्यापक ने आदरपूर्वक सिर नवाया।

"क्या कामरेड शेरज़ाद छत के लिए स्लेट के चौके दिलवा सकते हैं?" गोशातख़ां ने वैसे ही व्यंग्यपूर्ण स्वर में पूछा।

शेरज़ाद घबरा गया।

जब छात्रों के अंकों तथा उपस्थिति की बात छिड़ी तो हैडमास्टर सक्रिय हो उठा, फटी बोरी में से गिरते चनों की तरह एक के बाद एक आंकड़े बताये जाने लगे, लेकिन गोशातख़ां अन्यमनस्कता से सुन रहा था।

"यानी स्कूल जाने की उम्र के सभी बच्चे पढते हैं?"

"ज़ाहिर है! शत प्रतिशत। आपके आदेश के अनुसार!" मुख्याध्यापक उत्साह के साथ कह उठा।

"और चरवाहों के बच्चे?"

मुख्याध्यापक बुत हो गया, उसे स्वीकार करना पड़ा कि वसन्त में चरवाहों के बच्चों ने स्कूल आना वास्तव में बंद कर दिया।

"वे जाड़े में भी नहीं आते थे," गोशातख़ां ने ठण्डी सांस लेकर कहा।

ज़ंग लगे क़ब्ज़े चरमराकर किवाड़ पूरे खुल गये, दो युवा अध्यापिकाएं और सलीक़े से कंघी की हुई सफ़ेदझक दाढ़ीवाला बूढ़ा अध्यापक दाख़िल हुए और उन्होंने एक दूसरे का अभिवादन किया।

"आप ने हसनबेक ज़रदाबी* के बारे में ज़रूर सुना होगा?" गोशातख़ां ने पूछा।

"वही जो 'किसान' नामक सामूहिक फ़ार्म से है?" मुख्याध्यापक ने माथे पर बल डाल अपनी याददाश्त पर ज़ोर दिया।

"हां, वही! आज से अस्सी साल पहले हसनबेक ज़रदाबी ने कहा था कि ग्राम-शिक्षक को मशाल की तरह जलते हुए किसानों को नये जीवन का मार्ग दिखाना चाहिए... लेकिन यह तो पिछली शताब्दी में कहा गया था। सोवियत शिक्षक से तो इससे भी अधिक की अपेक्षा की जानी चाहिए। उसे आदर्श, अनुकरणीय और जनता का नेता होना चाहिए!" गोशातख़ां बिना आवाज़ ऊंची किये बोल रहा था, केवल शेरज़ाद ही देख पा रहा था कि उसे अपना क्रोध रोकने में कितनी कठिनाई हो रही है। "आप बिना उत्साह के काम कर रहे हैं, कामरेडो, सुस्ती से, उदासीनता से..."

"मेहरबानी करके सबको एक-सा मत समझिये!" मुख्याध्यापक एकाएक क्रुद्ध हो उठा, उसका चेहरा तमतमा उठा। "इक्के-दुक्के तथ्यों के कारण आपको सारे अध्यापकों पर छींटाकशी करने का अधिकार नहीं है।"

"माफ़ी चाहता हूं, ख़ुदा के वास्ते, माफ़ कीजिये!" गोशातख़ां ने हाथ पूरे फैलाये। "मैं तो बस यह याद दिलाना चाहता था कि उदासीनता भयानक रोग है। उदासीन, आलसी शिक्षक उस बदक़िस्मत फ़क़ीर की

---

* हसनबेक ज़रदाबी – १० वीं शताब्दी के महान लोक-कवि।

तरह होता है, जिसके बारे में किसी शायर ने बिलकुल ठीक कहा है: "भीख मिल जाये, तो भी ख़ुश, गाली नहीं मिलीं, तो भी ख़ुश।"

बूढ़ा अध्यापक काफ़ी पहले बातचीत में भाग लेना चाहता था, पर प्राचीन शिष्टाचार के नियमों में पालन-पोषण होने के कारण गोशातख़ां को टोक न सका।

"कामरेड गोशातख़ां, आप ठीक कहते हैं," उसने अन्त में कह दिया, "मछली का ख़ून ठण्डा होता है, पर उदासीन व्यक्ति की नसों में – पानी... लेकिन यह ध्यान में रखिये कि सामूहिक फ़ार्म की सरगर्म ज़िन्दगी से अलग रहने के लिए केवल हम ही दोषी नहीं है, बल्कि यह नौजवान, मेरा शिष्य भी कुछ हद तक दोषी है," और वृद्ध ने शेरज़ाद की ओर इशारा किया। "यह एक बार भी हमारे पास नहीं आया, और अगर मैं ग़लती पर नहीं हूं, तो आज भी आप इसे ज़बरदस्ती यहां खींच लाये हैं। यही तो कारण है कि हम स्कूल की इमारत की चहारदीवारी में बंद पड़े हैं और हमारे ऊपर मकड़ी का जाला-सा बुन दिया गया है।"

गोल चेहरों व कपोलों पर लाली और भोली-भाली आंखोंवाली युवा अध्यापिकाएं वृद्ध के हर शब्द पर स्वीकृति में सिर हिला रही थीं।

"पर आप मुख्याध्यापक को बेकार डांट रहे है," वृद्ध अध्यापक बोलता रहा। "शहरी हैं, हाल ही में संस्थान की शिक्षा समाप्त की है, ग्राम-जीवन की जानकारी इन्हें नहीं है, अपने को पराया महसूस करते हैं। मुझे यह बात खुले आम कहने का अधिकार है, क्योंकि मेरी इनके साथ रोज़ाना नहीं, तो हर दूसरे दिन तो ज़रूर ही कहा-सुनी होती है। रूसी और जर्मन भाषाओं का अध्यापक हमारे यहां से भाग चुका है: वह सह न सका, साल भर परदेस में भटकता रहा, घर की याद उसे सताती रही और दोस्त वह बना न सका... लेकिन दोषी कौन है? मैं रुस्तम को ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं करता, लेकिन यह नौजवान भी," वृद्ध ने फिर शेरज़ाद की तरफ़ उंगली उठायी, "तो यह सब समझ सकता था, अपने दोस्तों में युवा अध्यापक को शामिल कर सकता था।"

शेरज़ाद की समझ में नहीं आ रहा था कि शर्म के मारे कहां मुंह छिपाये।

किसी ने दरवाज़े को हौले से खटखटाया, और कक्ष में तेल्ली चाची अपने पीछे रुआंसी गाराग्योज़ को खींचती दाख़िल हुई। चाची ने मुख्याध्यापक के सामने मुंह पर कपड़ा बंधी हुई सुराही रखकर युयुत्सु मुद्रा में कहा:

"तुम्हारी सारी बीमारियां मुझे लगें, पर इस बच्ची को किसी कक्षा में भेज दो, और अगर अंक-गणित में लड़खड़ाये, तो अभी बिलकुल ध्यान मत देना। यह होशियार है, सब बहुत जल्दी समझ लेती है।"

गोशातख़ां मुस्करा दिया, शेरज़ाद समझ गया कि सुबह तेल्ली चाची के घर पर विस्तार में बातचीत हो चुकी है।

गलियारे में घंटी बजी, अध्यापिकाएं और वृद्ध अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गये।

"वाह, चाची, वाह!" अध्यापकों के पीछे दरवाज़ा बंद हो जाने पर गोशातख़ां ने कृत्रिम निराशा के साथ कहा। "उपटोली नायक हो, पार्टी की सक्रिय सदस्या हो और हैडमास्टर के लिए तोहफ़ा लेकर आयी हो। ऐसा कभी किया जाता है? अफ़वाहें फैलने लगेंगी, इस बेचारे को मुसीबत उठानी पड़ जायेगी।"

"दादी, मैंने कहा था न – नहीं लेंगे," गाराग्योज़ ने तेल्ली चाची के विशाल स्कर्ट की झालरों में मुंह छिपाते हुए रुआंसी आवाज़ में कहा।

मुख्याध्यापक पूर्णत: किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया।

"कैसे नहीं लेगा? ज़रा हिम्मत तो करके देखे!" चाची क्रुद्ध हो उठी और उसने आस्तीनें भी चढ़ा लीं। "अरे, यह क्या मेरे तोहफ़े को ठुकरा सकता है?! और अफ़वाहें तो, दोस्त," वह गोशातख़ां की ओर मुड़ी, "किसी हालत में कम नहीं होंगी, यह तुम गांठ बांध लो।"

गोशातख़ां ने ठहाका लगाया।

"लेना पड़ेगा," उसने मुख्याध्यापक को सलाह दी। "इस काली आंखोंवाली सुन्दरी को भी भरती करना पड़ेगा, अगर छठी कक्षा में नहीं तो पांचवीं में तो ज़रूर ही करना पड़ेगा।"

मुख्याध्यापक ने ठण्डी सांस लेकर, मानो उसके सिर से बोझ उतर गया हो, लड़की से कहा:

"भागो कक्षा में, मैं भी अभी आता हूं।"

गाराग्योज़ ख़ुशी से चिल्ला उठी, कूदी और भाग ली, उसके गहरे नीले फ़ाक के पल्ले की दरवाज़े में केवल चमक ही दिखाई दी।

"ख़ुश रहो," गोशातख़ां ने उसे आशीर्वाद दिया। "अब मुझे भी चलना चाहिए।"

तेल्ली चाची ने शेरज़ाद को इशारे से कारिडर में बुलाया और फुसफुसायी:

"खेत में जा रही हूं। तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, क्या हुक्म है?"

"तुम क्या ख़ुद नहीं जानती हो? निराई पूरी रफ़्तार से करो।"

अधर कक्ष में गोशातख़ां मुख्याध्यापक से कह रहा था कि शाम को शेरज़ाद, नजफ़ और सभी अध्यापकों को बुलाकर सलाह करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह की जड़ता से आदमी पागल हो सकता है... मुख्याध्यापक का चेहरा लाल हो उठा, उसने आश्वासन पर आश्वासन दिये कि वह सारे निर्देशों को ध्यान में रखेगा, जबकि गोशातख़ां स्पष्ट देख रहा था कि शेरज़ाद की नियमित मदद के बिना यहां कुछ नहीं हो सकता।

बाहर निकलकर उसने शेरज़ाद से पूछा कि क्या कुछ दिनों में पार्टी मीटिंग बुलवाना सम्भव है। सचिव ने कहा कि वे कल शाम एकत्रित होना चाहते थे, पर रुस्तम ने बैठक शनिवार को करने का अनुरोध किया।

"रुस्तम को मैं जानता हूं।" गोशातख़ां शरारती ढंग से मुस्कराया। "बेशक, दो-तीन दिन में टोलियों की स्थिति जल्दी-से-जल्दी अच्छी हो जायेगी, तब वह कम्युनिस्टों के सामने अपना श्रेष्ठ पक्ष प्रस्तुत करेगा... ख़ैर, शनिवार को ही सही, काम कहीं भागा नहीं जा रहा है," उसने सोचकर सहमति प्रकट की। "शाम को तुम्हारे साथ अध्यापकों के पास चलेंगे। उनमें उत्साह फूंकना चाहिए, वे तुम्हारे ही मददगार बन जायेंगे। नजफ़ को भी बुलाना।"

संस्कृति-भवन की नींव रख रहे राजगीरों में रुस्तम की भीमकाय आकृति नज़र आयी। दूसरे ही क्षण उसका मंद्र स्वर गूंज उठा – किसी की शामत आ गयी थी... गोशातख़ां व सचिव को देखकर रुस्तम ने अपनी जगह खड़े-खड़े चिल्लाकर कहा:

"शिक्षाविभागाध्यक्ष को तो सचमुच हमारे सामूहिक फ़ार्म से प्यार हो गया है! शैतान तुम्हें यहां ले कैसे आता है? कपास ठीक-ठाक है, अनाज की फ़सल में भी बालियां आने लगी हैं, तरबूज़ों और ख़रबूज़ों में फूल आ रहे हैं... कौन-सा ठप्पा लगाने का इरादा है?"

"तीखे मज़ाक़ मत करो, कहीं तुम्हें ही न चुभ जायें," गोशातख़ां ने अध्यक्ष के पास आते हुए शान्त स्वर में कहा।

"मैं तुमसे पूछ रहा हूं," अपने पूरे क़द से नाटे गोशातख़ां को ताकते हुए रुस्तम ने स्पष्ट स्वर में पूछा, "कौन-सा ठप्पा बचा रखा है हमारे लिए?"

"तुम्हें गूंगे हुसैन की विरासत के बारे में नहीं भूलना चाहिए। वहां पौधे पूरे नहीं निकले हैं," गोशातखां ने याद दिलाया।

"क्या सारी रात जागते रहे, तेल्ली चाची से पूछताछ करते रहे? उस मामूली-सी मुई दस हेक्टेयर ज़मीन के पीछे पड़ गये हो? अब उसमें वही अतिरिक्त खाद देती रहे," रुस्तम-कीशी ने दोनों हाथों की उंगलियां अपनी तोंद कसकर लिपटी चौड़ी पेटी में ठूंस लीं। उसे इस बात का सन्तोष था कि उसने राजगीरों के सामने गोशातखां को नीचा दिखा दिया है, पर वह जोश में यह नहीं देख पाया कि गोशातखां को वे आदर व सहानुभूति के भाव से देखते हैं।

अध्यक्ष ने अचानक अत्यन्त हताश मुद्रा में गली में आ रहे केरेम को देख लिया और टर्की की तरह पर फुला लिये।

"ऐ, बेकार क्यों मटरगश्ती कर रहे हो?"

केरेम बुरी तरह अपमानित व्यक्ति को होनेवाले दु:साहस के साथ कह उठा:

"मसख़री मत करो, कामरेड रुस्तमोव, लोगों को हंसाओ मत। मैं जन्म से भेड़-पालक हूं, पशुपालन फ़ार्म में ही मेरी ज़िन्दगी कटी है। मैं कभी ओहदों के पीछे नहीं भागा, मैं एक मामूली चरवाहे का काम कर सकता हूं..."

रुस्तम ने पोस्तीन की टोपी उतारकर उंगली से अपनी गुद्दी दिखाकर कहा:

"जब शीशे में देखे बिना तुम्हें अपनी गुद्दी नज़र आ जाये, तभी पशुपालन फ़ार्म पर लौटोगे। तब तक ज़रा कुदाल चलाते रहो!"

"मैं तुमसे विनती करता हूं – मसख़री मत करो..."

सलमान और यारमामेद न जाने कहां से आ धमके और केरेम पर बरस पड़े:

"तुम्हें रुस्तम चचा ने भेजा है, तो काम करो। हर मामले में हमारे अब्बा हमारे अक़्साक़ाल* का कहना मानो।"

"वह तो अक़्साक़ाल है, यह मैंने माना, पर तुम कौन हो? मेंगनियाँ लगी भेड़ों की दुम... मैं कहीं नहीं जाऊंगा!" केरेम निराशा में चिल्ला पड़ा। "या तो मैं इंसाफ करवाऊंगा या जान दे दूंगा। कामरेड गोशातखां,

---

* आक़्साक़ाल – बुज़ुर्ग।

भाई शेरज़ाद, आप लोग यह बेइंसाफ़ी होते कैसे देख रहे हैं? तुम्हारे ख़याल से मैं इनसान हूं या जानवर?"

रुस्तम ने अपेक्षा करते हुए आवाज़ दी: "ऐ ऽऽ!" और यारमामेद को घूरकर देखा। यारमामेद समझ गया, पैर घिसटता घोड़ों के खूंटों की तरफ़ गया, जहां भूरी घोड़ी खड़ी ऊब रही थी।

शेरज़ाद को अन्तिम क्षण तक आशा थी कि रुस्तम चरवाहे की प्रार्थना स्वीकार कर लेगा, – क्योंकि मामला बिलकुल साफ़ था, बहस करना निरर्थक था, लेकिन रुस्तम को उछलकर काठी पर बैठते देखा, तो वह एक क़दम आगे लपका।

"आख़िर सामूहिक फ़ार्म की प्रबन्ध समिति है, उसी में केरेम की शिकायत पर विचार करना चाहिए। काम में सामूहिक नेतृत्व को अभी तक किसी ने समाप्त नहीं किया है। आप इस प्रकार के प्रश्नों का निर्णय ऐसे चलते-चलते क्यों करते हैं?" युवक ने अपने स्वभाव के प्रतिकूल सख़्ती से पूछा।

अध्यक्ष पल भर के लिए घबरा गया, पर तत्क्षण कह उठा:

"मुझे ऐसे वक़्त में, जब काम ज़ोरों पर है, बैठक करने की फ़ुरसत नहीं है! अगर हर शिकायत पर बैठक बुलाई जाये, तो बेहतर होगा कि फ़ौरन किसी मुल्ला को बुला लो, ताकि वह फ़सल पर फ़ातिहा पढ़ दे।"

उसने घोड़े को चाबुक मारा, पर शेरज़ाद ने लगाम पकड़ ली।

"यह आपका आख़िरी जवाब है?"

"वह पशुपालन फ़ार्म वैसे ही कभी नहीं देखेगा, जैसे अपने कान बिना शीशे के। लगाम छोड़ दो!" रुस्तम ने हुक्म दिया।

"देखिये, कहीं बाद में पछताना न पड़े," शेरज़ाद ने धीरे से कहा।

रुस्तम लोगों के सामने सचिव से बहस नहीं करना चाहता था, लेकिन इस समय वह गुस्से में अपने पर क़ाबू न रख सका और यारमामेद को आंख मारकर बोला:

"हद हो गयी... कल के दुधमुंहे मुझे धमकी दे रहे हैं," और वह पोस्तीन की टोपी माथे पर खींचकर स्तेपी की तरफ़ घोड़ा दौड़ाता चला गया।

स्तेपी में, हरे-भरे खेतों पर नज़र डालते हुए और यह हिसाब लगाते हुए कि शरत् में वह कितनी कपास चुन लेगा और कितना अनाज उठायेगा, वह शान्त हो गया।

डांड़े-मेंड़े पर घास ऊंची और रसदार थी, रुस्तम ने लगाम छोड़, रकाबों में खड़ा होकर अपने सामने फैले कपास के विशाल खेत पर ध्यानपूर्वक नज़र दौड़ायी। वहां ज़मीन की ढंग से गोड़ाई की गयी थी, खर-पतवार पूरी तरह उखाड़ दिये गये थे। थोड़ी दूरी पर कुदालें पटककर सामूहिक किसान नारियां किसी बात पर बहस कर रही थीं। अध्यक्ष की भौंहें सिकुड़ गयीं: "औरतें इधर-उधर की लगा रही हैं, अब सारे गांव का कच्चा चिट्ठा बखान डालेंगी!" लेकिन स्त्रियों में सकीना को देखकर उसे शर्म महसूस हुई।

"जहां मेरी बीवी हो, वहां सब ठीक रहता है," रुस्तम ने अपने आप से कहा और घोड़े को सड़क की ओर मोड़ दिया।

अगर वह उस क्षण पलटकर नज़र डालता, तो देख लेता कि स्त्रियां हाथ और रूमाल हिला-हिलाकर उसे बुला रही हैं और सकीना की पुकार सुन लेता:

"रुस्तम, जल्दी से यहां आओ! मुसीबत आ गयी है!"

लेकिन रुस्तम तब तक दूर पहुंच चुका था। तेल्ली चाची ने सकीना का मज़ाक़ उड़ाया:

"तुम्हारा मर्द तो घोड़े पर सवार सूरमा लगता है। खिला-पिलाकर मोटा कर दिया है। कहीं चर्बी चढ़ने से पागल न हो जाये! संभलकर रहना, कहीं किसी जवान औरत के पास न चला जाये!"

स्त्रियां हंस पड़ीं, पर सकीना चुप रही। उसे ऐसी बातें कभी पसंद नहीं आती थीं, फिर मानसिक परेशानी की इस हालत में तो और भी ज़्यादा। वह उकड़ूं बैठकर कपास की मोटी-मोटी कलियोंवाले घने पौधे को ध्यान से देख रही थी।

"कितना सुन्दर है, लेकिन इसकी हालत देखकर दिल दुखता है!" वह पत्ती से काली बुंदकियां पेटू किलनी के निशान खुरचती हुई शिकायत कर रही थी। सकीना ने पत्ती को उलटकर हथेली से पेटू किलनी के घने जाले को पोंछ दिया। "एक-दो दिन की ढील हुई और यह सारे पौधे खा डालेगी।"

"सकीना ख़ाला!" गोल चेहरेवाली लड़की रुआंसी आवाज़ में चिल्लायी। "यहां इस पेटू ने पौधों को बिलकुल बरबाद कर दिया है..."

सकीना ने जल्दी से उसके पास जाकर देखा कि चौड़े पत्तों पर कहीं-

कहीं फफोलों जैसे काकरेजी दाग़ हो गये हैं, पत्ते हल्के-से स्पर्श से पौधों को नंगा कर झड़ जाते थे।

सकीना का दिल दुःख के मारे टूटने लगा, वह पौधों को ध्यानपूर्वक देखती हुई हलरेखा पर चलने लगी। उस क्षण वह अपने को अनुभवी डाक्टर जैसा महसूस कर रही थी, जो रोगी के प्रफुल्ल चेहरे पर विश्वास न करने का आदी हो जाता है। किलनियाँ शुरू के दिनों में अंधेरे में पत्तियों के निचले, छायादार हिस्से में छिपी रहती हैं, और उन्हें अगर समय रहते नष्ट न किया जाये, तो सारी फ़सल बरबाद हो जाती है।

आधे घंटे में सकीना और तेल्ली चाची ने यह पता लगा लिया कि बीमारी कोई पांच हेक्टेयर ज़मीन में फैल गयी है। देर नहीं की जा सकती थी, उन्होंने एक फुर्तीली लड़की को खेत-कैंप भेज दिया, ताकि वह टेलीफ़ोन पर शेरज़ाद को इस ख़तरे के बारे में सूचित कर दे। टोली-नायक तुरन्त ट्रक में चूने और गंधक के घोल के सिलिंडर ले आया और उसने सकीना को हार्दिक धन्यवाद दिया।

"पांचेक दिन की देर हो जाती, तो सारी फ़सल बरबाद हो जाती।"

पौधों की जड़ों और सबसे नीचे की पत्तियों पर छिड़काव करना ज़रूरी था। ऊंचे क़द के शेरज़ाद को कितनी ही मुश्किल क्यों न हुई, घुटनों के बल ही क्यों न रेंगना पड़ा, पर उसने पीठ पर सिलिंडर बांध लिया और तब तक खेत छोड़कर नहीं गया, जब तक उसने सारे खेत में दवाई न छिड़क ली।

जब शेरज़ाद ने ख़ाली सिलिंडर हलरेखा पर डालकर कमर सीधी की, तो अंधेरा हो चुका था। उसने अपना सारा बदन दुख रहा महसूस किया। लेकिन लड़कियां और औरतें, ख़ास तौर से सकीना व तेल्ली चाची थकान के मारे लड़खड़ा रही थीं, इसके बावजूद वे काम छोड़कर नहीं गयीं, किसी ने शिकायत नहीं की, जबकि उनमें से हरेक को घर पर अभी ढेरों काम करने बाक़ी थे।

चूंकि शेरज़ाद ने ड्राइवर को पहले से आगाह कर दिया था, ट्रक सड़क पर उनके इंतज़ार में था। स्त्रियों को ट्रक में गांव तक पहुंचाकर उसने सबको हार्दिक धन्यवाद दिया।

पेरशान अभी खेत से नहीं लौटी थी। सकीना घर में क़दम रखते ही रुस्तम का मूड ख़राब देखकर फ़ौरन समझ गयी कि वह भूखा है और बस फट ही पड़नेवाला है। लेकिन पत्नी का उदास चेहरा, अंदर को धंसी

ग्रांखें ग्रौर हाथों की उभरी हुई नसों को देखकर रुस्तम घबरा गया।

"सकीना ख़ानम, तुम ग्राख़िर कहां गयी थीं?" उसने रुंधे स्वर में पूछा।

किलनियों के हमले के बारे में सुनकर रुस्तम ने भागकर कार्यालय में जा सारे लोगों को सतर्क करना चाहा। पत्नी ने उसे तसल्ली दिलायी: शेरज़ाद ने टोली-नायकों को कह दिया है, सारे खेतों में छिड़काव किया जा रहा है, कल भोर में फिर दवाई छिड़कनी शुरू कर दी जायेगी।

"शुक्रिया, घरवाली," ग्रध्यक्ष ने कहा। "शेरज़ाद को भी शाबाशी देनी चाहिए, वह घबराया नहीं।"

"तुम्हें बड़ी ज़ोर की भूख लगी है न, क्यों?"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, ग्रभी सब मिलकर बैठ कोफ़्ते खायेंगे। याद है, बुज़ुर्ग कहते थे: ख़रबूज़ा ताज़ा ग्रच्छा होता है ग्रौर कोफ़्ते–उबले।"

६

ग्रपनी नम्र व स्वप्निल प्रकृति के कारण शेरज़ाद को किसी भी क़ीमत पर ग्रपनी बात पर ग्रड़े रहने ग्रौर बात-बात पर ग्रध्यक्ष से उलझने के लिए ग्रपने को बड़ी मुश्किल से तैयार करना पड़ा।

उसने काफ़ी देर तक रुस्तम के व्यवहार पर विचार किया ग्रौर इस निर्णय पर पहुंचा कि ग्रब ग्रौर देर नहीं की जा सकती है। घमण्डी ग्रध्यक्ष किसी भी पहलक़दमी करनेवाले व्यक्ति को उसके कार्य के प्रति पूर्णतः उदासीनता की स्थिति तक पहुंचा सकता है। ग्रगर लोग मनोयोग से काम नहीं करें, तो कोई भी काम ज़रा भी ग्रागे नहीं बढ़ सकेगा। ग्रौर ग्रन्त में 'नवजीवन' सामूहिक फ़ार्म मुग़ान के सबसे पिछड़े सामूहिक फ़ार्मों में से एक हो जायेगा।

शेरज़ाद को जनता के हितार्थ ग्रपने हृदय पर पत्थर रखकर ग्रनम्य बनना ही होगा। कम्युनिस्ट ग्रौर पार्टी ब्यूरो के सचिव के लिए ग्रौर कोई विकल्प नहीं रहा है।

शेरज़ाद ने पार्टी की ज़िला समिति में जाकर सहायता व सलाह मांगने का फ़ैसला किया। "साफ़-साफ़ कह दूंगा" उसने सोचा, "मैं ग्रकेला ग्रध्यक्ष को क़ाबू में रखने में ग्रसमर्थ हूँ।"

ज़िला समिति में बांका नौजवान ग्रसलान को हठधर्मी रुस्तम के बारे में बताते समय इतना घबरा गया कि सचिव ने मुस्कराते हुए उसे पानी का गिलास दिया।

"मेहरबानी करके तसल्ली रखें।"

"ग्राप यह मत सोचिये कि मैं शिकायत कर रहा हूं," शेरज़ाद ने, गिलास कसकर पकड़े ग्रौर हैरान होते कि उसे खनिज जल क्यों पीना चाहिए, ग्रटकते-ग्रटकते कहा: "कहने का मतलब है, शिकायत तो कर रहा हूं, लेकिन धैर्य का बांध ग्राख़िर कभी न कभी तो टूट ही जाता है, मेरी बात समझिये..."

"मैं तुम्हारी बात समझता हूं," ग्रसलान ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"रुस्तम-कीशी लगता है ग्रंधे हो गये हैं। ग्रगर ग्रापको मुझ पर विश्वास न हो तो कामरेड गोशातख़ां से पूछ लीजिये, उन्होंने सब ग्रपनी ग्रांखों से देखा है..."

"नहीं क्यों नहीं होगा? मैं हर मामले में तुम पर विश्वास करता हूं।"

ज़िला केंद्र जाते समय शेरज़ाद रास्ते में सोच रहा था कि उसकी बात सुनकर ग्रसलान सामूहिक फ़ार्म में जांच समिति भेज देगा, फिर रुस्तम को ग्रौर उसे भी ज़िला समिति के ब्यूरो की बैठक में बुलाकर उन्हें एक दूसरे से नाराज़ी के कारण साफ़-साफ़ बताने, जांच समिति के निष्कर्षों से ग्रवगत होने के लिए मजबूर करेगा, प्रस्ताव पढ़कर सुनायेगा। हमेशा ऐसा ही किया जाता रहा था, लेकिन जैसा कि दिखता था, ग्रसलान की ग्रपनी ही ग्रादतें थीं।

"शर्म ग्रानी चाहिये!" उसने झल्लाकर कहा। "शिकायत नहीं करना चाहता था, पर सारी बातचीत निराशाजनक शिकायतों तक ही सीमित रही। ग्राख़िर तुम हो कौन? सामूहिक फ़ार्म के पार्टी संगठन का सचिव, जब कि रुस्तम इस संगठन का सदस्य है, ग्रौर तुम चाहते हो कि पार्टी की ज़िला समिति सामूहिक फ़ार्म के कम्युनिस्टों की उपेक्षा करके, उन्हें ग्रलग रखकर तुम्हारे यहां की ग्रव्यवस्थाग्रों की जांच करे? रुस्तम समुदाय की परवाह नहीं करता है! लेकिन तुम ख़ुद भी तो यही करते हो। तुमने रुस्तम को क़ाबू में करने की ठानी थी, जब सफलता नहीं मिली, तो ज़िला समिति में लपके। ग्राख़िर यह क्या हुग्रा? समुदाय पर भरोसा करने का ग्रर्थ है – उसकी शक्ति, उसके प्रभाव का कुशलतापूर्वक उपयोग करना। ग्रगर ग्रध्यक्ष की ग्रालोचना पार्टी संगठन करता, तो ग्राज ज़िला समिति में रुस्तम ग्राया होता, न कि तुम। कहता कि कम्युनिस्टों ने उसके व्यवहार

की सही निन्दा की है और अब वह पार्टी से क्षमा-याचना कर रहा है। या फिर ऐसा भी हो सकता था – अन्याय के विरुद्ध शिकायत करता, पार्टी संगठन के निर्णय को बदलने की मांग करता। तब जिला समिति तुम्हारे आपसी मामलों में हस्तक्षेप करती, अपनी वजनी बात कहती।"

शेरज़ाद सिर झुकाये सुनता रहा, हालांकि उसे शर्म महसूस हो रही थी, पर उसे वहां आने का पछतावा नहीं हुआ। इस बातचीत के न होने पर वह काफ़ी देर तक अंधेरे में ही भटकता रहता। इस समय वह अपने को अधिक शक्तिशाली, आत्मविश्वास से परिपूर्ण और शान्त अनुभव कर रहा था।

घर लौटने पर उसे पार्टी ब्यूरो की बैठक बुलाने और उसके बाद कम्युनिस्टों की पूर्ण सभा आयोजित करने की इच्छा हुई। लेकिन थोड़ा सोच-विचारकर उसने यह विचार छोड़ दिया: बहुत नौकरशाहाना लगता है... बेहतर होगा रुस्तम और दो-तीन सक्रिय सदस्यों को दोस्ताना बातचीत के लिए बुलाया जाये। उसे रुस्तम से न तो बदला ही लेना है, न ही उसका ऐसा इरादा है, वह तो केवल वृद्ध की आंखें खोल देना चाहता है।

यह मालूम पड़ने पर कि कुछ कम्युनिस्ट शाम को उससे बातचीत करना चाहते हैं, रुस्तम ने पहले तो इसकी उपेक्षा की, फिर सोचा कि उसे लोग कायर समझ सकते हैं, और वह ठीक आठ बजे क्लब में पहुंच गया, जहां शेरज़ाद, तेल्ली चाची व सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा अहत उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"अच्छा हुआ कि उस दुधमुंहे नजफ़ को नहीं बुलाया," रुस्तम ने सोचा और पाइप में तम्बाकू भरते हुए व्यंग्यपूर्वक पूछा:

"ऐसे कौन-से महत्त्वपूर्ण काम हैं, जिनके लिए हम यहां इकट्ठे हुए हैं?"

"काम ढेरों हैं, और सचमुच सभी महत्त्वपूर्ण हैं, फ़ौरी हैं। वसन्त में तो कहते हैं न कि किसान को सिर खुजलाने की भी फ़ुरसत नहीं होती है। इसलिए हमें मिल-जुलकर काम करना चाहिए ताकि ज़्यादा से ज़्यादा निबटा सकें। मुसीबत यह है कि पार्टी ब्यूरो और न केवल पार्टी ब्यूरो बल्कि हमारे कुल संगठन के अध्यक्ष के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं, यानी एकजुटता के बजाय फूट फैल रही है। इसीलिए हमारी इच्छा है कि हम रुस्तम-कीशी के साथ दोस्ताना ढंग से बात करें, ताकि सारी ग़लतफ़हमियां साफ़ हो जायें..." शेरज़ाद ने कहा।

"आप लोग मेरा क़ीमती वक़्त बेकार बरबाद न कीजिये," रुस्तम

की आवाज़ गूंजी। "दम लेने की फ़ुरसत नहीं है! अपनी नाराज़ी का कारण साफ़-साफ़ बताइये, और अगर कारण नहीं हैं, तो मैं उठकर जाता हूं, – मेरे बग़ैर आप चाहे सुबह तक बैठे रहिये।"

शेरज़ाद ने ठण्डी सांस ली।

"हम भी खेत में दिन-भर काम करते रहे हैं और हम भी थक गये हैं," उसने कहा। "सुबह तक यहां बैठे रहने की हमें इच्छा नहीं है। आपको सलाह देता हूं, कामरेड रुस्तम, यह मत भूलिये कि आप कम्युनिस्ट हैं। कृपा करके हमसे उसी ढंग से बात करिये, जैसे कि पार्टी-सदस्य को करनी चाहिए।"

"बड़ी अजीब बात है, मैंने किसके मुंह का कौर छीन लिया है?" रुस्तम ने उपेक्षापूर्वक कहा। "मैंने किसका व्यर्थ अपमान किया है? आप लोग बेकार अपने पड़ोसी पर कीचड़ उछाल रहे हैं।"

और ग़ुस्से से लाल रुस्तम ने यह अनुमान लगाते हुए तिरछी नज़रों से तेल्ली चाची की तरफ़ देखा कि वह अपने दिल की भड़ास निकालने के लिए बेताब हो रही है। उसने ग़लत नहीं किया: चाची ने अपनी बात कह डालने में देर नहीं लगायी:

"कौन कीचड़ उछाल रहा है तुम पर, चाचा, कौन? तुम्हें शान्ति से कह रहे हैं कि अगर तुम कम्युनिस्ट हो, तो सोवियतों की ज़मीन पर घमण्डी ज़मींदारों की तरह मत चलो, – कहीं ऐसा न हो कि फिसल जाओ और आपने हाथ-पैर तुड़वा बैठो..."

"अरी, ख़ानम, मुझे आपे से बाहर होने को मजबूर मत करो। तुम चाहे जितना ग़ुस्सा क्यों न करो, पर मैं तुम्हारे बेटे को पशुपालन फ़ार्म के पास फटकने नहीं दूंगा। यह समझ लो अच्छी तरह। मैं उसकी ख़ातिर दो-तीन महीने कलंतर से बेकार बहस करता रहा, अब सारी बात ख़तम! कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने जब सलाह दी: 'केरेम को पशुपालन फ़ार्म से निकाल बाहर करो', तो बेशक उसे कोई बात मालूम थी।"

इस प्रकार स्पष्टवादी रुस्तम ने सच्ची बात छिपा ली, और यह सब समझ गये।

"तुम किसकी तरफ़दारी कर रहे हो? कलंतर लेलेश की?" तेल्ली भयभीत हो कह उठी। "बहुत अच्छा आदमी ढूंढ़ा है!.."

रुस्तम ने चाची को थोड़ा डराने की सोची।

"अगर इतनी बेधड़क हो, तो पार्टी की ज़िला समिति में जाओ।"

"ज़रूर जाऊंगी! आख़िर क्यों न जाऊं? बाकू जाऊंगी, केन्द्रीय समिति में। मेरे आगे हर दरवाज़ा खुला है। तुम्हारा कलंतर बस एक ही बात के लिए मर-पच रहा है: किसी तरह ठग फ़रहाद को हमारे यहां पशुपालन फ़ार्म में लगवा दिया जाये!"

"क्या फ़रहाद, क्या केरेम, दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं!" रुस्तम ने घृणा से मुंह बनाकर कहा। "एक बात याद रखो, चाची: तुम्हारे बेटे को पशुपालन फ़ार्म में हरगिज़ काम नहीं करने दूंगा।"

"बेटे की बात मैंने पहले नहीं छेड़ी है," तेल्ली चाची रुस्तम की रुखाई की आदी हो चुकी थी, इसलिए वह शान्त रही। "केरेम हमारे सामूहिक फ़ार्म का सदस्य है, इसलिए सामूहिक फ़ार्म ही निर्णय ले: उसे चरवाहा बनना चाहिए या कपास-उत्पादक। लोग अगर कहें: 'जाओ, ज़मीन जोतो' तो वह जोतने जायेगा। लेकिन मैं यहां अपने बेटे की ख़ातिर नहीं आयी हूं।"

"उसी की ख़ातिर आयी हो," रुस्तम ने कहा। "सारा तहलका तुम्हीं ने मचाया है। तुम्हारी ज़बान ने ही ये फ़साद खड़े किये हैं। हमें यहां तुम्हारे अलावा और किसने इकट्ठा किया है, तेल्ली चाची?"

"छि, कीशी, निर्दोष पर झूठा आरोप लगाना कितनी ख़राब बात है!" और तेल्ली ने उकताने के अंदाज़ में मुंह फेर लिया।

शेरज़ाद समझ गया कि उसे उनकी नोक-झोंक में हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा।

"चाची को और तुम्हें भी, कीशी, मैंने, पार्टी ब्यूरो के सचिव ने यहां बुलाया है। और इसलिए नहीं बुलाया है कि आप यहां झगड़ें, क्योंकि हमारे यहां झगड़े वैसे ही बहुत होते हैं। हम खुले दिल से बात करना चाहते थे। ऐसा नहीं होगा? तो फिर दोष ख़ुद को ही देना: हम पार्टी-ब्यूरो की बैठक बुलवाएंगे और उसके बाद सभा भी।"

"मैं तुम्हारे निर्णयों से नहीं डरता हूं, ज़िला समिति का रास्ता मैं ख़ुद ढूंढ़ लूंगा।" रुस्तम यह दिखाते हुए खड़ा हो गया कि उसे निरर्थक बातचीत से घृणा हो गयी है।

बूढ़ा अहत अचानक चौंक पड़ा और उसने रुस्तम का हाथ पकड़ लिया।

"तुम्हें हो क्या गया है, दोस्त? हम तुम्हें अपना साथी मानते हैं, तुम्हें यहां हमने इसलिए बुलाया है, ताकि हम तुम्हारी ग़लतियों और भ्रमों के बारे में तुम्हीं को बतायें। हम आख़िर तुम्हारा बुरा तो नहीं चाहते! न हमने तुमसे बदला लेने के लिए बुलाया है। कम्युनिस्ट कम्युनिस्ट के साथ हमेशा मिलकर सब तय कर सकते हैं। कर सकते हैं न? तुम क्या चाहते हो कि हम यह सवाल ग्राम सभा में उठायें, ताकि हमारे विवादों के बारे में सामूहिक फ़ार्म को ही नहीं, सारे ज़िले को भी मालूम हो जाये?"

"यही चाहता हूं!" रुस्तम बिना सोचे-समझे बोल उठा। "आप लोग ग्राम सभा का नाम लेकर मुझे मत डराइये! अगर मेरी बात सही है, तो सही ही है। चाहे कल ही कम्युनिस्टों को जमा कर लीजिये। बूढ़ा रुस्तम जानता है कि उसे लोगों को क्या बताना है।"

"तो ठीक है, कल पार्टी-ब्यूरो की बैठक बुलवा लेंगे। आप जा सकते हैं, कामरेड रुस्तम," शेरज़ाद ने कहा।

"काम बना नहीं! सभा में भी कम्युनिस्ट मेरा ही साथ देंगे, न कि शेरज़ाद का," रुस्तम ने सोचा और विजयी मुद्रा में घर चला गया।

उसकी आशाएं पूरी नहीं हुईं: पार्टी-ब्यूरो की बैठक तीन घंटे चली, बहुत तूफ़ानी रही और किसी ने रुस्तम का पक्ष नहीं लिया।

जब शेरज़ाद ने पार्टी-सदस्य रुस्तमोव को घमण्ड, आत्मालोचना के दमन और सामूहिक किसानों से अलगाव के लिए झिड़की देने का प्रस्ताव किया, सभी ने उससे सहमति व्यक्त की।

लेकिन रुस्तम को इससे भी अक़्ल नहीं आयी।

"ज़िला समिति आपका निर्णय बदल देगी," उसने धमकी दी। "देख लीजिये! मैंने ऐसा कई बार होते देखा है: ग़लतफ़हमी केवल नेताओं को ही नहीं होती है, कभी-कभी पूरी की पूरी संस्थाएं लफ़्फ़ाज़ों के इशारों पर चलती हैं। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता।"

१०

शाम देर गये सकीना बरामदे में बैठी कपड़े रफ़ू कर रही थी। उसका दिल कुम्हला रहा था: घर में अव्यवस्था व्याप्त थी – रुस्तम को झिड़की दी गयी, गराश का पत्नी के साथ मेल-मिलाप नहीं हुआ... रुस्तम पिछले कुछ दिनों से परेशान रहता था, रेगिस्तान में रास्ता भटके कारवां के हंकवा की तरह दौड़-धूप करता रहता था। कभी-कभी सकीना को अपनी नज़रों में पति को सही ठहराने की इच्छा होती थी, पर वह इसमें असमर्थ रहती

थी और खिन्न मन से सोचती रहती थी कि रुस्तम को तोड़ा जा सकता है, पर बदला नहीं जा सकता। उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा है।

सकीना को मन-ही-मन रुस्तम की निर्भीकता पर गर्व होता था, उसे अच्छा लगता था कि वह कभी निराशाग्रस्त नहीं होता है, हर ख़तरे का बहादुरी से सामना करता है।

वैसे इस बात की प्रशंसा केवल सकीना ही नहीं करती थी, – बहुत से गांववाले रुस्तम के दृढ़ स्वभाव की डींग हांकते थे।

लेकिन इन सब बातों से रुस्तम के परिवार में सुख-शान्ति स्थापित न हो सकी।

अकेली पेरशान ही थी, जिससे मां को कुछ ख़ुशी होती थी। बेटी बुद्धिमान थी, कठिन परिस्थितियों में किंकर्त्तव्यविमूढ़ नहीं होती थी और उसे लोगों की पहचान थी। हां, कभी-कभी चंचल हो उठती थी, लेकिन चंचल किशोरीपन में न होती, तो आख़िर कब होती?..

सकीना ने मेज़ पर हिसाब-किताब की सूचियां तैयार कर रही बेटी की तरफ़ मुस्कराते हुए नज़र डालकर धीरे से कहा:

"ज़रा अब्बा को आवाज़ देना। बहुत देर हो गयी उन्हें घोड़ी की संभाल करते हुए। उनसे बात करनी है। और तुम भी ग़ायब मत हो जाना, मुझे तुम्हारी भी ज़रूरत है।"

पेरशान अपने स्थान से हटे बिना ड्योढ़ी की तरफ़ मुड़कर ज़ोर से आवाज़ देने लगी:

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ!.."

सकीना की भौंहें सिकुड़ गयीं।

"चिल्लाना तो मुझे भी आता है। क्या उतरकर नीचे जाते आलस आता है? जाकर आवाज़ दो!"

बेटी और ज़्यादा दुःखी स्वर में पुकारने लगी:

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ, आ ऽऽ ओ ऽऽ!.."

अस्तबल के दरवाज़े में बिखरे बाल रुस्तम हाथ में खुर्रा लिये नज़र आया, उसकी आस्तीनें चढ़ी हुई थीं, मूंछों में भूसे के कण अटके हुए थे।

"प्रधान सेनापति का आदेश है: मां कहती हैं कि आप फ़ौरन ऊपर आ जायें!" पेरशान ने हरेक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

रुस्तम की स्थिति जितनी ख़राब होती, वह उतना ही अधिक आत्मवि-

श्वास दिखाता था। इस समय भी वह हाथ-मुंह धोकर अपने को पूरी तरह ठीक-ठाक कर चुका था और मूंछों पर हाथ फेरता बरामदे में आ पहुंचा।

"क्या हुक्म है, बीवी? मैं सुन रहा हूं।"

सकीना चुप रही; उसने आंखें सिकोड़कर सूई के छेद में सफ़ेद धागा पिरोया, गांठ लगाकर बाक़ी बचा धागा दांत से काट दिया, पर सूईवाला हाथ अचानक कांप उठा...

"तुम्हें झिड़की कैसे मिली?" सकीना ने आंसू रोकते हुए पूछा। "यह सब हुआ कैसे? सुनो, ज़िला समिति में जाकर उनसे प्रार्थना करो कि वे तुम्हें मुक्त कर दें। तुम्हें वे कोई हल्का काम दे दें, तुम बुढ़ा गये हो, मैं भी जवान नहीं हो रही हूं। कम-से-कम बचे-खुचे दिन तो चैन से जी लें!"

पेरशान सूचियां समेटकर जाने लगी, लेकिन मां ने उसे सख़्ती से रोक दिया: "बैठो! तुम सयानी हो चुकी हो..."

रुस्तम देर तक शाम के धुंधलके में लिपटे बाग़ की तरफ़ देखता रहा।

"तुम्हें यह क्या सूझी है!" उसने हांफते हुए कहा। "मैं क्या आधे रास्ते में रुक जाऊं, जब इतने बड़े काम अपने हाथ में ले चुका हूं? मेरा तो दिल टूट जायेगा!"

"तुमने काम शुरू किया – ख़तम नौजवान करेंगे," सकीना ने शान्त स्वर में बोलने की कोशिश करते हुए उत्तर दिया। "सदियों से यही होता आया है: एक किसान ज़मीन में बीज बोता है, दूसरा फ़सल काटता है।"

रुस्तम ने कड़वाहट भरा ठहाका लगाया।

"तुम डरो मत, बीवी, मत डरो। मैं जैसा इस दुनिया में आया हूं, वैसा ही मरूंगा। मैं निडर होकर जिया हूं और मरूंगा भी निडर होकर। मैं अपना पके बालोंवाला सिर किसी के आगे नहीं झुकाऊंगा। मैं एक हफ़्ते के अंदर लफ़्फ़ाज़ों और बलवाइयों को ख़ुद ही झिड़की वापस लेने को मजबूर कर दूंगा। मौत आ जाये इन्हें। मैं कल ही ज़िला समिति में जाऊंगा।"

"पर तुम्हें क्या पक्का भरोसा है कि ज़िला समिति में वे तुम्हारा पक्ष लेंगे?" पेरशान दुःसाहस करके बीच में बोल पड़ी।

"तुम्हें चुप रहना चाहिए," रुस्तम ने खिन्न स्वर में उससे कहा। "तुम वही पेड़ काटो, जो तुम्हारे बस का हो!"

"तुम्हारी क़सम, अब्बा, कुल्हाड़ा पकड़ना मैं तुम्हीं से तो सीखी हूं! लेकिन एक शर्त है: उस पर विश्वास नहीं किया जायेगा, जो दलदल में ले जाकर फंसा दे।"

रुस्तम चाहता, तो ज़ोर से चिल्लाकर बेटी का मुंह बंद कर देता, पर उसने संयम बरता, जब कि सकीना ने बेटी की ओर उलाहना भरी दृष्टि से देखा।

"छोड़िये, छोड़िये, इसका मुझ पर कोई असर नहीं होता," पेरशान ने अति शान्तचित्तता से कहा। "अगर ज़िला समिति में अब्बा का काम हो जाये, तो, मां, मुझे रेशमी रूमाल ख़रीद देना।"

"और अगर मैं तुम्हारे कान उखाड़ लूं?" रुस्तम ने कहा।

पेरशान रसोई में भाग गयी और हंसती हुई वहां से झांककर देखने लगी, रुस्तम को उसकी आंखों में इतना स्नेह और निष्ठा नज़र आयी कि उसका दिल भर आया।

"घबराओ नहीं, मेरे प्यारो। सब ठीक हो जायेगा। जल्दी ही बाकू जाकर मां के लिए और इस बकरी के लिए भी सबसे अच्छे रूमाल लेकर आऊंगा..."

अगले दिन सुबह रुस्तम ज़िला समिति के लिए रवाना हो गया। वह असलान को झिड़की के बारे में सबसे पहले बता देना चाहता था। सच्ची से सच्ची बात दूसरों के मुंह से सुनने पर अपना प्रारम्भिक अर्थ खो बैठती है, घाटी में गिरकर रेतीले तल पर बहनेवाले पहाड़ी चश्मे के पानी की तरह गंदली हो जाती है... ज़रा-सी देर हुई नहीं कि ख़ुदा ही जाने, लोग कैसी-कैसी झूठी बातें गढ़ डालते हैं।

लेकिन चालबाज़ सलमान वृद्ध से काफ़ी पहले यह काम कर चुका था। पार्टी मीटिंग के बाद उसने कलंतर को टेलीफ़ोन किया।

"मुबारक हो, गागा! रुस्तम को फ़र्श साफ़ करने के पोंछे की तरह रगड़ दिया गया। सारी मुग़ान में बदनाम कर दिया गया! क़िस्मत अच्छी थी, जो सिर्फ़ झिड़की पाकर छूट गया, नहीं तो उसे पार्टी से भी निकाला जा सकता था। बहुत आसान..."

कलंतर-लेलेश अत्यधिक निर्ममता के लिए कुख्यात था, पर इस तरह की मक्कारी की बात सुनकर वह भी सिहर उठा।

"लेकिन तुम तो किस बात पर ख़ुश हो रहे हो? क्या अध्यक्ष बनने की ठान ली है?"

"क़सम खाकर कहता हूं, मेरे लिए तो इतना ही काफ़ी है कि आप मुझ पर मेहरबान हैं। इससे ज़्यादा की मैं सपने में भी नहीं सोचता," सलमान बात टाल गया। "कह तो रहा हूं, अभागे बुड्ढे पर खौलता पानी

डाल दिया गया है। अब याद रखेगा कि कलंतर-लेलेश की सलाहों को न मानने का क्या नतीजा होता है।"

कैसा मनहूस बातून है! अगर कोई यह बात सुन ले तो? कलंतर झल्लाकर फुफकारा:

"शुक्रिया, दोस्त, तसल्ली रखो, – मुझे तुम्हारी याद है, याद है... सारी बातें ध्यान में रखूंगा। कभी भी फ़ोन करते रहना, शर्माना नहीं।"

रुस्तम अभी अपने घर में हाथ-मुंह ही धो रहा था, जबकि कलंतर भागा-भागा असलान के कक्ष में पहुंच चुका था।

"सुना आपने? 'नवजीवन' में कैसी कुत्ताघसीटी हुई है, लोग एक दूसरे का गला दबोच रहे हैं।"

असलान किसी कारण से उदास था और गहन चिन्तन में डूबा बैठा था। उसे कलंतर का दूसरों का बुरा होने पर ख़ुश होना अच्छा नहीं लगा।

"वहां क्या हुआ?" उसने अनिच्छापूर्वक पूछा।

"रुस्तम ने अपने इर्द-गिर्द कुछ सामूहिक किसानों को जमा कर लिया था, और शेरज़ाद, उस आत्मविश्वासी दुधमुंहे ने अपने यार-दोस्तों को एक कर लिया, – बस झगड़ा-फ़साद मच गया। वे एक दूसरे को ज़िन्दा चबा रहे हैं!.. मुझे तो अब विश्वास नहीं रहा कि हमें उनसे कपास मिल सकेगी, सच कहता हूं। ज़िले का सर्वश्रेष्ठ सामूहिक फ़ार्म बरबाद हुआ जा रहा है।"

असलान ने भौंहें सिकोड़कर हथेली से कनपटी सहलाई।

"पर तुम क्या सुझाव देते हो?"

"इसका निष्कर्ष स्वतःस्पष्ट है: दोनों को ज़िला समिति ने ब्यूरो की बैठक में बुलाकर कड़ी चेतावनी दे दी जाये और ज़ाहिर है, दोनों को ही पदच्युत कर दिया जाये। दोनों को!" कलंतर मेज़ पर कोहनियां टिका और असलान के निकट अपना पसीने से तर चेहरा लाकर फुसफुसाया। "मुझे उनमें से एक पर भी रत्ती-भर विश्वास नहीं रहा है।"

उसकी बात सुनते हुए ज़िला समिति का सचिव सोच रहा था कि कलंतर अपने यार को 'नवजीवन' के पशुपालन फ़ार्म में जमाने की कोशिश केवल यूं ही नहीं कर रहा था। उस घटना में रुस्तम-कीशी ने उससे सहमत न होकर बहुत सराहनीय काम किया था।

असलान चुप रहा और उसने एक बार फिर दर्द करती कनपटी मलकर रुखाई से कहा:

"'नवजीवन' की स्थिति के बारे में मुझे मालूम है। यह मानना

अनुचित होगा कि वहां कोई अनर्थ विवाद छिड़ा हुआ है। अगर हम यह दृष्टिकोण अपना लें, तो रुस्तम-कीशी और शायद शेरज़ाद की गलतियों को और गम्भीर बना देंगे। निस्सन्देह मैं इस बात से कभी सहमत नहीं होऊंगा कि उनकी ईमानदारी और निष्ठा में सन्देह किया जा सके।"

कलंतर को पूरा विश्वास था कि असलान को 'नवजीवन' की घटनाओं के बारे में कुछ ज्ञात नहीं है। लेकिन मालूम पड़ा कि उसे उनकी पूरी जानकारी है। देखने में तो चुप्पा लगता है, पर वास्तव में है बड़ा तेज़! ..

"पर आप अध्यक्ष और पार्टी संगठन के बीच हुए विवाद का क्या अर्थ लगाते हैं?" कलंतर ने सतर्कतापूर्वक पूछा।

"सोचना पड़ेगा। जल्दबाज़ी में उचित निष्कर्ष निकाला नहीं जा सकता। मुझे लगता है, आपको रुस्तम से कुछ चिढ़ है। ठीक है न? याद है, पशुपालन फ़ार्म के इनचार्ज के बारे में हुई वह बहस? शुरुआत कहीं वहीं से तो नहीं हुई है? सोवियत अधिकारी को विद्वेषी होना शोभा नहीं देता।"

कलंतर ने मुंह बनाया। उसपर ऐसे मिथ्यारोपण की क्या ज़रूरत है? वह तो केवल इस मौसम की फ़सल के बारे में चिन्तित है। रुस्तम-कीशी और शेरज़ाद के बीच पड़ी फूट सामूहिक फ़ार्म को बरबादी के कगार पर पहुंचा देगी। कलंतर-लेलेश ने ख़ुशामदाना अंदाज़ में बात जारी रखी:

"चलिये, मौकों का फ़ायदा उठाकर रुस्तम को प्रबन्ध समिति से हटा दें।"

"हटाना तो आसान है, लेकिन उसके स्थान पर किसकी सिफ़ारिश की जाये?"

"सलमान की," कलंतर ने बेझिझक कहा। "बहुत अच्छा अध्यक्ष साबित होगा। हमेशा और हर मामले में तुम्हें ख़ुश रखेगा।"

"यही तो बात है, जिससे मैं डरता हूं।"

कलंतर-लेलेश सन्देहजनक जल्दबाज़ी में बोला:

"सवाल सलमान का नहीं है, मैं उस पर ज़ोर नहीं दे रहा हूं। किसी की भी सिफ़ारिश कीजिये, लेकिन हमेशा तो ऐसी हालत नहीं बनी रह सकती।"

असलान स्वयं भी पिछले कुछ दिनों से हिचकिचा रहा था, सोच रहा था कि शायद रुस्तम की जगह दूसरे को रखना उचित ही हो। लेकिन कलंतर क्यों इतनी सरगर्मी दिखा रहा है? असलान देख चुका था कि कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर अपने मित्रों को

नियुक्त करवाने की कोशिश में रहता है, कि वह स्वतंत्र रूप से काम करनेवाले और अपने मत पर ज़ोर देनेवाले लोगों को बिलकुल बर्दाश्त नहीं करता है। तो क्या सलमान कलंतर-लेलेश के निकटतम सहविचारकों में से एक है? यह याद रखना चाहिए। युद्ध के बाद रुस्तम अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में काम करता रहा था और उसने सामूहिक फ़ार्म के लिए बहुत कुछ किया है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए।

"ब्यूरो की बैठक में सलाह करेंगे," असलान ने संक्षेप में कहा और कलंतर को जाने दिया।

जब रुस्तम के आने की सूचना दी गयी, असलान ने किसी और मुलाक़ाती को उसके पास न भेजने का आदेश दे दिया: वृद्ध के साथ एकान्त में, बिना प्रत्यक्षदर्शियों के बात करना ज़रूरी है: आज रुस्तम को वास्तव में बूढ़ा कहा जा सकता था, — उसके कंधे झुक गये थे, रंग काला पड़ गया था और उसकी अंदर धंसी आंखों में पहले जैसी चमक नहीं रही थी।

"बैठिये, कामरेड रुस्तमोव," असलान ने नम्रतापूर्वक कहा।

रुस्तम धीरे-धीरे मेज़ के पास आया: वह इस बात का अंदाज़ लगाना चाहता था कि सचिव के कानों में झिड़की के बारे में अफ़वाहें पड़ी हैं या नहीं। लेकिन असलान का चेहरा भावहीन था और रुस्तम ने हताशा में पूछ लिया:

"सुना आपने?"

"बात तेज़ से तेज़ चिड़िया से भी पहले हर जगह पहुंच जाती है!" असलान मुस्करा दिया। "ज़रूर, सुना है। अगर मैं न जानूं कि हर पार्टी संगठन में क्या हो रहा है, तो फिर मैं किस काम का सचिव हुआ? बस मैं इतना जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी राय में मेरा जानकारी रखना गुण है या दोष, क्यों?"

"ब्यूरो का निर्णय अन्यायपूर्ण है," अपने मानमर्दन पर लज्जित रुस्तम ने फ़ौरन कहा। "इसे फ़ौरन बदल दीजिये! मेरे सारे बाल सफ़ेद हो गये हैं," उसने कांपता हाथ गालों व ठोढ़ी के बालों पर फेरा। "अगर मेरे बाल दावतों और ऐयाशी में सफ़ेद हुए होते, तो यहां क़दम नहीं रखता। मुझ पर विश्वास करते हैं? मैंने पार्टी के लिए संघर्ष किया, मुग़ान की स्तेपी में नहरें बनाईं, मैं मोर्चे पर लड़ा। इसके अलावा मैंने सामूहिक फ़ार्म को भी संभाला। और इस सबके बदले में इनाम में झिड़की मिली है। मैं

अपनी जिन्दगी में पहली और आखिरी बार विनती कर रहा हूं: इन दुधमुंहों के कान उमेठ दीजिये, इन्हें सबक़ सिखाइये, इन्हें मालूम हो जाये कि हर बात की हद होती है, पर और ज़्यादा न गिरें!.."

असलान को रुस्तम पर दया भी आयी और ग़ुस्सा भी कि वृद्ध घबराहट में यह समझने लायक़ नहीं रहा है कि जीवन कैसे बदल रहा है। क्या वह कलंतर के साथ सहमत होकर रुस्तम को उसके पद से हटा दे? लेकिन उसमें अभी भी साहस और दृढ़निश्चयता भरी पड़ी है, वह संघर्ष के लिए लालायित है, अभावों से नहीं घबराता है, शक्तिशाली और फुरतीला है। ऐसे आदमी को पेंशन पर कैसे भेजा जा सकता है?

"निर्णय दुधमुंहों ने नहीं, पार्टी-ब्यूरो के सदस्यों ने लिया है, जिन्हें समस्त पार्टी संगठन का विश्वास प्राप्त है," असलान ने नरमाई से कहा।

"लेकिन मतदान तो दुधमुंहों ने किया है, क्यों?"

"मतदान तेल्ली चाची और बुज़ुर्ग अहत ने भी किया है। लेकिन उन लोगों ने भी तुम्हारा पक्ष नहीं लिया! तुमने इस बारे में सोचा? हमें प्राथमिक पार्टी संगठन के निर्णय की उपेक्षा करने का कोई अधिकार नहीं है।"

"यानी आप इसकी पुष्टि करते हैं?" रुस्तम ने दबी आवाज़ में पूछा।

"ज़िला समिति के ब्यूरो के मत की मुझे अभी जानकारी नहीं है। मैं समझता हूं, सामूहिक फ़ार्म के पार्टी संगठन ने ठीक किया है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि ज़िला समिति का ब्यूरो मुझसे सहमत होगा," असलान ने कहा।

"कब होगी ब्यूरो की बैठक?"

"हम जल्दबाज़ी नहीं करेंगे। तुम काम करते रहो। काम करो! क्योंकि ऐसा भी तो हो सकता है कि एक महीने में ख़ुद पार्टी संगठन ही अपना निर्णय बदल दे। अब सब तुम्हारे हाथ में है!"

रुस्तम का हौसला कुछ बढ़ गया।

"मैं मर्द हूं। मैं झिड़की मिलने के बावजूद काम करता रहूंगा, आपको इसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिए, कामरेड असलान। बूढ़ऊ में हठ की अभी कमी नहीं है। लेकिन आप इन लफ़्फ़ाज़ों को कम-से-कम थोड़ा डरा तो दीजिये!"

असलान के चेहरे पर अत्यन्त अस्पष्ट मुस्कान खेली: रुस्तम के भोलेपन पर उसे हंसी भी आयी और ग़ुस्सा भी।

"तुम यह किस की बात कर रहे हो? अनाम पत्र लिखनेवालों के बारे में?"

"उन्हीं के बारे में सही!.."

"उन्हें हम सज़ा देंगे," असलान ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"लेकिन आप सामूहिक फ़ार्म में फूट के बीज बोनेवाले दुधमुंहों पर भी दया मत कीजिये।"

"बस यही वादा मैं तुमसे नहीं करूंगा। ज़रा सोच लो, मुझे तुम्हारे वे दुधमुंहे काफ़ी अच्छे लगे," असलान फिर मुस्कराया।

"उनमें अच्छा है ही क्या?" रुस्तम नाराज़ हो उठा। "क्योंकि मामला इस हद तक पहुंच गया है कि मुझे, अध्यक्ष को, चोरी करनेवाले केरेम को नौकरी से निकालने का कोई अधिकार नहीं है। मेरे नेक काम केरेम और तेल्ली चाची के बदन में फोड़े बन कर फूटें... बस एक विनती है, कामरेड असलान, अगर केरेम यहां आये, तो उसे गरदन पकड़कर निकाल भगाइये!"

"ऐसा करने की क्षमता मुझमें नहीं है," असलान ने क़सूरवार की तरह हाथ फैला दिये। "जब तक अदालती कार्रवाई नहीं होती, केरेम मेरे लिए उतना ही ईमानदार है, जितने कि और सब।"

"लेकिन कलंतर-लेलेश ने ख़ुद..."

"तुम कब से कलंतर के इशारों पर नाचने लगे हो?" असलान ने उसे टोक दिया। "शर्म आनी चाहिए!.. मुझे तुम पर इतना गर्व था, सबसे कहता था: देखिये, रुस्तम-कीशी की अपनी धारणाएं हैं; अगर सामूहिक फ़ार्म के किसी सक्रिय सदस्य को बचाना हो, तो वह किसी भी अधिकारी को झाड़ सकता है। हर अध्यक्ष को ऐसा ही होना चाहिए।"

रुस्तम ने सिर झुका लिया।

"घर लौट जाओ," असलान ने नरमी से कहा। "पशुपालन फ़ार्म के काम-काज पर हम भी नज़र रखते हैं। तुम भी काम करो और सच्चाई मत छुपाओ... तुम इसमें ज़्यादा माहिर नहीं हो।"

...दिन-भर रुस्तम का मूड अच्छा रहा। सामूहिक फ़ार्म जाते समय वह रास्ते में युयुत्सु भाव से मूंछों पर ताव देता रहा और पुरजोश अंदाज़ से आंखें मीचता रहा। लेकिन झिड़की तो वहीं की वहीं रही... लेकिन पहले की तरह उसे इसका कोई दुःख नहीं हुआ।

बारहवाँ परिच्छेद

१

मुग़ान का तपता सूरज दिन-प्रतिदिन अत्यन्त निर्ममतापूर्वक झुलस रहा था; प्यास से तड़पती ज़मीन टेढ़ी-मेढ़ी दरारों से भर गयी; बाग़ों में बेरियां और फल पक रहे थे; घास की कटाई निबटा ली गयी थी, जौ की फ़सल उठा ली गयी थी और कहीं-कहीं गेहूं की कटाई शुरू की जा रही थी।

ऐसे समय में, जब काम ज़ोरों पर होता है, सामूहिक किसानों का मुख्य सहारा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन होता है। लोग उपजाऊ जुती ज़मीन को मंत्रमुग्ध-से देखते आशा संजो रहे थे: "शराफ़ोगलू दग़ा नहीं देगा, हमारी मदद करेगा!"

शराफ़ोगलू को आम तौर पर घर पर सरकारी कामों को लेकर परेशान किया जाना पसंद नहीं था: उसका विचार था कि अगर उसके सहायक अपने काम के प्रति उत्तरदायी हैं, अगर उनके श्रम की व्यवस्था सही तरीक़े से की गयी है, तो सारी समस्याएं मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन और खेतों में हल की जा सकती हैं।

पिछले कुछ दिनों से सब बदल गया था: शराफ़ोगलू मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में नहीं होता – उसे सामूहिक फ़ार्म में ढूंढ़ लिया जाता, कार्यालय में नहीं मिलता – लोग उसे स्तेपी में ढूंढ़ने चल देते। और देर रात गये उसे थके-हारे को बार-बार टेलीफ़ोन की घंटियों से बिस्तर से उठा दिया जाता। कभी कम्बाइन-चालक फ़ोन करता: पुर्ज़ा टूटने से मशीन रुक गयी है, मरम्मत की गाड़ी भेजिये। कभी किसी सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष अपना रोना रोने लगता कि उसका गेहूं बरबाद हुआ जा रहा है: "कम-से-कम एकाध दिन के लिए एक कम्बाइन भेज दीजिये! .."

जब सामूहिक फ़ार्मों से टेलीफ़ोन आते, विशेषतः दूरस्थ सामूहिक फ़ार्मों के, टेलीफ़ोन-आपरेटर सीधे शराफ़ोगलू के घर के नम्बर से मिला देतीं। और कार्यकुशल, संयत शराफ़ोगलू तब ज़रा भी नहीं बड़बड़ाता: हर आदमी की बात ध्यानपूर्वक सुनता और प्रीतिकर ढंग से मुस्कराने की भी कोशिश करता।

असलान इससे असन्तुष्ट था।

"तुम लोगों की आदत बिगाड़ रहे हो, कामरेड शराफ़। यह तो सचमुच बहुत ख़राब बात है, हर मामूली-से काम के लिए लोग तुम्हारे पास भागे आते हैं।"

"फ़िक्र मत करो," शराफ़ोगलू अपनी सफ़ाई देता, "मैं दूसरों का बोझ अपने कंधों पर नहीं लादूंगा। वक़्त ही ऐसा है! .. ज़रा सोचो तो, अगर टेलीफ़ोन देर तक नहीं घनघनाता है, तो मैं घबरा उठता हूं। सोचता हूं: कहीं कोई दुर्घटना हो गयी है और लोग मुझसे छिपा रहे हैं। और जब रात को टेलीफ़ोन की घंटियों के मारे चैन नहीं मिलता, तो दिल कुछ ख़ुश हो उठता है। बेशक कुछ ऐसे लोग भी है, जो बेकार मेरे मत्थे आ पड़ते हैं, पर उनकी वजह से आम लोगों के लिए दरवाज़ा बंद तो नहीं कर सकता।"

शराफ़ोगलू मुग़ान की स्तेपी के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मुग़ान का भविष्य फ़सल पर निर्भर करता था, और शराफ़ पूर्णतः फ़सल उठाने की चिन्ताओं में ही डूबा रहता था।

उसका जन्म और पालन-पोषण पचास से भी अधिक वर्षों तक ग्राम-पाठशाला में पढ़ानेवाले शिक्षक के परिवार में हुआ था। क्रान्तिपूर्व के वर्षों में ही शराफ़ के पिता गांव-गांव जाकर प्रतिभाशाली लड़कों को बड़े ध्यान से चुनने लगे थे और उनके माता-पिताओं की सहमति से उन्हें शिक्षा प्राप्ति के लिए बाकू और गंजा भेजने लगे थे।

वृद्ध अध्यापक के शिष्यों में से अनेक सोवियत आज़रबैजान के महत्त्वपूर्ण नेता बने और उन्होंने सदा के लिए अपने भाग्य की डोर कम्युनिस्ट पार्टी के साथ बांध ली। अध्यापक ने अपने एकमात्र पुत्र को अपनी जनता, सोवियत सत्ता से प्रेम करना सिखाया, उसमें धीरज, दृढ़निश्चयता व कर्मनिष्ठा जैसे गुणों का पोषण किया।

जब शराफ़ कोम्सोमोल का सदस्य बना, उसने पिता से कहा:

"मैं गांव जा रहा हूं। आपका काम आगे जारी रखना चाहता हूं।"

वृद्ध बहुत ख़ुश हुआ।

"तुम अध्यापक बनना चाहते हो, बेटा? अज्ञान और पिछड़ेपन – तुम्हारी जनता के चिर शत्रुओं से संघर्ष करना चाहते हो?"

"नहीं, अब्बा, आप मेरी बात नहीं समझे। मैं ग़रीबी से संघर्ष करना चाहता हूं। यह बुराई अंधविश्वास से भी अधिक भयानक है। मैं गहरे पानी की नहरें खोदूंगा, प्यास के मारे तड़प रही मुग़ान की स्तेपी को साफ़ पानी पिलाऊंगा।"

वृद्ध ने बेटे को आशीर्वाद दिया और शराफ़ नयी मुग़ान का निर्माता बन गया।

उसने स्तेपी में नहरें व सड़कें बनाईं, बस्तियां बसाईं, बाग़ व वन लगाये और कृषि संस्थान के पत्राचार-पाठ्यक्रम में शिक्षा प्राप्त करता रहा। पिता ने, यह जानते हुए कि उसका पुत्र सच्चे मार्ग पर चल रहा है, सदा के लिए आंखें मूंद लीं। उसी समय शराफ़ कम्युनिस्ट बन गया।

शराफ़ोगलू ने युवा अध्यापिका से विवाह किया; उसकी पत्नी सुन्दर, सुशील और स्नेहमयी थी। तीन वर्ष बाद उनके यहां उजली आंखों व खनकदार आवाज़वाली बेटी प्यारी गेयारचिक का जन्म हुआ। शराफ़ोगलू अपनी पत्नी और पुत्री को बहुत प्यार करता था, पर अचानक उन पर घोर विपदा टूट पड़ी: उसकी पत्नी बीमार पड़ी और उसकी मृत्यु हो गयी। उसे बेटी को पालन-पोषण के लिए अपनी सास के पास छोड़ना पड़ा।

शराफ़ोगलू जब मज़ाक़ करता या हंसता, तो कोई अंदाज़ नहीं लगा पाता कि उसे यह ख़ुशी ज़ाहिर करने में कितनी मुश्किल होती है, उसका एकाकी विधुर जीवन कितना कष्टमय है।

कटाई के दिनों में शराफ़ सुबह से पहले तारे निकलने तक लोगों के बीच, कम्बाइनों व ट्रैक्टरों के पास, खलिहान में रहता था।

रिपोर्टें सदा शराफ़ोगलू को 'नवजीवन' की याद दिलाती रहती थीं, लेकिन वह रुस्तम के बारे में न सोचने की कोशिश करता था। आये दिन की नोक-झोंक और झगड़ों के बाद वह बड़े धैर्य से रुस्तम के टेलीफ़ोन करने की प्रतीक्षा करता रहता था।

लेकिन दोस्त चुप लगाये हुए था...

रुस्तम ने अपनी ही शक्ति से फ़सल उठाने की ठान ली और सौगंध खायी कि वह शराफ़ोगलू से कम्बाइनें भिजवाने के लिए नहीं कहेगा। "वह मर्द मर्द नहीं, जो सिर्फ़ मुश्किल में अपने दोस्त की सिर्फ़ सख़्त ज़रूरत पड़ने पर याद करे," रुस्तम ने सोचा और उसने टोली-नायकों को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन से अतिरिक्त सहायता मांगने का ज़िक्र करने तक के लिए मना कर दिया।

फिर भी एक बार जब रुस्तम और टोली-नायक सिर खपा रहे थे कि खेतों में दस और रीपर कहां से लाये जायें, सलमान से रहा न जा सका:

"चाचा, आप इतने क्यों अड़े हुए हैं? हम परेशान हो गये हैं, अपने पसीने में नहा रहे हैं। टेलीफ़ोन का चोंगा उठाकर शराफ़ोगलू से दो कम्बाइनें भिजवाने को कहने में आपका क्या जाता है?"

रुस्तम उपेक्षापूर्वक हंस पड़ा:

"वाह रे, सपाट माथेवाले!" उसने कहा, और सारे टोली-नायक एक साथ हंस पड़े। "तुम यह समझ लो कि सरकार ने हमें ज़रूरत से ज़्यादा मशीनें दी हैं। हमें उन्हें ढंग से काम में लेना नहीं आता – यही हमारी मुसीबत है। मेरी और शराफ़ोगलू की मोर्चे पर दांतकाटी रोटी रही, लेकिन अब, तुम सोचते हो कि मैं उसके पास भागा जाऊं और कहूं: मदद करो! .. ऐसा काम तुम और गंगू हुसैन जैसे ही कर सकते हैं, मुझ, बुड्ढे ने अभी अपना ईमान नहीं गंवाया है। मैं इतना बता दूं कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में काम करना हमारे सामूहिक फ़ार्म के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा मुश्किल है। हर तरफ़ से हाथ बढ़ाये जाते हैं: यह दे दो, वह दे दो। कुछ ऐसे सामूहिक फ़ार्म हैं, जिनकी अगर समय रहते मदद न की जाये, तो फ़सल का नाम-निशान भी न बचे। आख़िर मैं, कम्युनिस्ट, पिछड़नेवाले सामूहिक फ़ार्मों को नहीं भूल सकता। मैं 'बस अपना काम बन जाये, दूसरों की क्या परवाह' जैसे नियम का पालन करके नहीं जी सकता – यह नीचता है। यह व्यक्तिवाद है! स्वार्थ है! समझे?"

सलमान ने कुछ नहीं समझा और सोचा: "कंगाल हुए ज़मींदार की तरह झूठी शान दिखाने को ठाठदार कपड़े पहन रहा है! जब कि हसन के खेत में अनाज बिखर रहा है।" लेकिन अपने स्वाभाविक पाखण्ड से बोले:

"तुम्हारी शराफ़त के आगे सिर झुकाता हूं। मेरी ठोट खोपड़ी में इतनी बारीक बातें कहां समा सकती हैं। बस पेंसिल उठाकर तुम्हारे मुंह से निकली बातें लिखकर दानिशमंदी की किताब लिख डालनी चाहिए।"

"हर कुत्ते की अपनी नांद होती है। बाकू में लेखक संघ है, उसी के सदस्य किताबें लिखा करें, पर तुम सब रात की पाली में काम करने खेत में पहुंचो," रुस्तम ने जवाब दिया।

बात यहीं ख़तम हो गयी।

लेकिन वृद्ध व्यर्थ बहादुरी दिखा रहा था: मुग़ान के लिए भी अत्यधिक भीषण गरमी पड़ रही थी, सारी फ़सलें तेजी से पक रही थीं, इसका अर्थ था कि फ़सलें भी फ़ौरन उठाना जरूरी था, न कि बारी-बारी से, जिसके वे अभ्यस्त हो चुके थे। रुस्तम ने कपास चुननेवाली उपटोलियों और पशु-पालन फ़ार्म से कई दूध दुहनेवालियों को हटाकर वहां भेजा, पर इसके बावजूद फ़सल उठाने की सूची में सामूहिक फ़ार्म तीसरे स्थान से खिसककर सातवें स्थान पर पहुंच गया।

यह देखकर शराफ़ोगलू ने रुस्तम के स्वाभिमान की चिन्ता किये बिना टेलीफ़ोन का चोंगा उठा लिया।

लेकिन 'नवजीवन' के अध्यक्ष से सम्पर्क स्थापित कर पाने में वह असफल रहा। शराफ़ोगलू को केवल इतना सूचित किया गया कि रुस्तम रात को खेत-कैम्प में सोया था।

"न तो ख़ुद सोता है, न दूसरों को सोने देता है। मैं जानता हूं अपने दोस्त को। थककर चूर हो गया है," शराफ़ोगलू ने खीजकर सोचा और 'ऊषा' सामूहिक फ़ार्म से दो कम्बइनें हटाकर अविलम्ब उन्हें 'नवजीवन' भेजने का आदेश दे दिया, कम्बाइन-चालकों को चेतावनी भी दे दी कि मशीनें चौबीस घंटे बिना टूट-फूट के चलनी चाहिएं।

फिर भी उसे चिन्ता लगी रही और उसने फ़ौरी दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करके रुस्तम के यहां जाने का फ़ैसला किया।

उसी समय कारिडर में परिचित स्त्री स्वर सुनाई दिया। शराफ़ोगलू ने कक्ष में से झांककर देखा। उसके सामने माय्या खड़ी थी।

वह ठाठदार सफ़ेद पोशाक पहने हुई थी, सुडौल व सुन्दर दिख रही थी, लेकिन घबराहट के मारे उसकी नज़रें ही टिक नहीं पा रही थीं, शराफ़ को लगा जैसे माय्या वहां आने पर पछता रही है।

उसने शिष्टतापूर्वक उसका अभिवादन किया और उसे कक्ष में बुलाकर आराम-कुरसी पर बिठाया।

"क्या हाल हैं, बेटी?" और माय्या के पति से तलाक़ लेने के बारे में फैली अफ़वाहों को याद कर पूछा: "तुम्हारा हमारी मुग़ान छोड़कर जाने का इरादा तो नहीं है?"

माय्या ने दृढ़तापूर्वक सिर पीछे किया, उसके स्वर में आत्मविश्वास झलक रहा था:

"आप भी क्या... मुझे तो उल्टे दिन-प्रतिदिन मुग़ान से गहरा लगाव होता जा रहा है। मुझे तो उससे जिन्दगी भर के लिए प्यार हो गया है। मेरी इतनी इच्छा होती है कि कोई बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम करूं..."

"क्या करना चाहती हो?" शराफ़ोगलू ने, इस बात से प्रसन्न होकर कि दुःख देखने में कोमल इस नारी को तोड़ने में असमर्थ रहा है, सतर्कतापूर्वक पूछा।

"यह व्यक्त कर पाना कठिन है..." माय्या सोचने लगी। "आप यह मुझसे बेहतर जानते हैं कि हर गांव, हर सामूहिक फ़ार्म की अपनी विशेषताएं, अपनी चिन्ताएं और अपने दुःख होते हैं। इसीलिए लोगों का भला करने को दिल करता है—पानी की व्यवस्था करने को, बिजली लाने को, सुनियोजित घर बनाने को, पुस्तकालय और क्लब खोलने, वाद्यवृंद स्थापित करने को, ओह, कोई अपने सपनों के बारे में सिलसिलेवार ढंग से बता सकता है!"

"पर मैं सब समझ गया," शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया।

माय्या उसे पहले परिचय से ही पसंद आ गयी थी, लेकिन इस समय जब उसने देखा कि वह सृजन, निर्माण के लिए उत्कंठित है, तो वह फिर रुस्तम का ख़याल आने पर खीज उठा, जो इस स्त्री की प्रतिभा की तरफ़ ध्यान भी नहीं देना चाहता था। दुःख की सबसे अच्छी दवा होती है: अनुप्राणित श्रम। शराफ़ोगलू यह अपने अनुभव से जानता था... माय्या के शब्दों से विह्वल होकर उसने उसे अपनी युवावस्था और मुग़ान की स्तेपी में अपने जीवन के बारे में बताया।

"अब जब मैं दूर-दूर क्षितिज पर जगमगाती बिजली की बत्तियां देखता हूं, नहर में पानी का कलकल स्वर और छपाके सुनता हूं, मुझे इतनी ख़ुशी होती है, मानो दुनिया की सारी दौलत मेरे पांव तले है। क्योंकि इस सब में मेरी अपनी आत्मा का और मेरे योगदान का अंश भी है," शराफ़ ने कहा। "ऐसे क्षणों में दिल पच्चीस बरस पहले जवानी के अल्हड़ दिनों की तरह धड़कने लगता है और विश्वास होने लगता है कि बुढ़ापा तुम्हारे पास कभी नहीं फटकेगा..."

माय्या सोच में डूबकर चुप रही।

"बताओ, बेटी," शराफ़ोगलू ने मिनट-भर बाद पूछा, "तुम क्या मेरे पास किसी काम से आयी हो?"

उसने तुरन्त उत्तर नहीं दिया, कहीं दूर नज़र डाली, रूमाल से होंठ पोंछे और सांस ली।

"जानते हैं, कामरेड शराफ़, मेरा काम आपको अजीब लग सकता है... लेकिन मैं जानती हूं कि आप रुस्तम-कीशी के दोस्त हैं, उनका आदर करते हैं। 'नवजीवन' में बहुत बढ़िया फ़सल हुई है, लेकिन वे उसे समेट नहीं पायेंगे। नुक़सान हो जायेगा! पर रुस्तम-कीशी अड़े हुए हैं, आपसे मदद नहीं मांगना चाहते, यह मुझसे सभी कह रहे हैं।"

शराफ़ोगलू मुस्करा उठा, मानो उसे किसी कष्टप्रद विचार से छुटकारा मिल गया हो।

"अच्छा किया कि तुम आयीं। रुस्तम भूल गया है कि बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती है। मदद करेंगे, ज़रूर करेंगे..."

माय्या उठ खड़ी हुई, लेकिन शराफ़ ने उसे रोक लिया: अचानक उसे लगा जैसे माय्या नहीं, उसकी सगी बेटी गेयारचिक मुसीबत में फंस गयी है। क्या वह उसे पिता की तरह तसल्ली दिलाये बिना जाने दे सकता है? और उसने नरमी से पूछ लिया:

"और गराश के क्या हाल हैं? तुम्हारा पति अपना काम बहुत अच्छी तरह करता है।" माय्या मौन साधे रही, और शराफ़ोगलू को भी उससे उत्तर की आशा नहीं थी! "मैंने सुना है कि तुम्हारे सम्बंध... बिगड़ गये हैं।"

"मेरा इसमें कोई दोष नहीं है," माय्या ने बड़ी मुश्किल से आंसू रोककर कहा, लेकिन शराफ़ की तरफ़ वह गर्वपूर्वक देखती रही।

"मुझे यह भी मालूम है," शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया, उसे फिर लगा कि वह अपने गेयारचिक से बात कर रहा है। "मेरी तुमसे एक ही विनती है... हमारे बाप और दादे दुनिया में धीरज के साथ जिन्दगी बसर करते रहे थे, उन्होंने सुख-दुःख भोगे, दानिशमंदी हासिल की और हमें हमेशा यह याद रखने की नसीहत दे गये कि ऐसा कोई घर नहीं, जिसमें झगड़े न होते हों, वैसे ही जैसे कि कोई अंधा कभी सुखी नहीं हो सकता। अपना आख़िरी फ़ैसला करने में जल्दबाज़ी से काम मत लो।"

माय्या का गला रुंध गया, उसे शराफ़ोगलू की ईमानदारी का एहसास हो गया, पर दिल खोलकर बात करने और अपनी पूरी बात कहने से उसे कुछ रोक रहा था।

शराफ़ोगलू उसे छोड़ने गया और विदा लेते समय उसने याद दिला दिया:

"तुम किसी भी दिन, किसी भी समय मेरे पास आ सकती हो, बेटी! अपना दुःख और सुख लेकर आ सकती हो।"

२

असलान अकसर सामूहिक फ़ार्मों को देखने जाया करता था। लोगों के साथ बातचीत करने और उनके साथ मिलकर लवणकच्छों और सूखे के विरुद्ध संघर्ष करने से उसने अपने मन में उदात्त आत्मिक उत्थान अनुभव किया, जिसको कवि प्रेरणा का नाम देते हैं। इस मामले में उसे भ्रम नहीं हुआ था।

अपनी यात्राओं में उसे सृजन के सुख की तीव्र अनुभूति हुई, उसने स्वयं अपने श्रम और निर्माता जनता की शक्ति को भी देखा।

अनेक सामूहिक किसानों से उसकी घनिष्ठ मित्रता हो गयी। असलान को उद्धत और देखने में हठीले लगनेवाले लोग पसंद थे, जो अपनी धारणाओं के लिए डटकर संघर्ष कर सकते थे। वह चापलूस लोगों को बर्दाश्त नहीं कर पाता था, जो ज़िला समिति के सचिव के हर शब्द पर कहा करते थे:

"वाह, वाह! बिलकुल बजा फ़रमाया!"

भेड़ों की तरह मिमियानेवाले तुच्छ लोग उसके सारे निर्देशों को बिना चूं किये स्वीकार कर लेते थे, पर बिना उत्साह के उबाऊ ढंग से काम करते थे, हमेशा तरह-तरह की दस्तावेज़ों और स्मरणपत्रों से अपने को सुरक्षित रखकर ज़िम्मेदारी से बचने की कोशिश करते रहते थे।

असलान जानता था कि वे लोग, जिनके साथ बहस करते-करते उसका गला बैठ जाता था, जिनके आगे उसे कुछ मामलों में झुकना पड़ जाता था, जो न ख़ुदा से ख़ौफ़ खाते थे, न शैतान से, जो ज़िला पार्टी समिति और ज़िला कार्यकारिणी समिति की ग़लतियों की बेधड़क आलोचना किया करते थे, केवल वे ही उसकी सहायता करते थे, स्वेच्छा से उसके साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करते थे।

अगर असलान किसी की प्रशंसा करना चाहता, तो प्रायः कहता:

"वह सच्चा कम्युनिस्ट है।"

असलान के विचार में ऐसे सच्चे कम्युनिस्ट – मन से, दृढ़ विश्वास और शुद्ध हृदय से – शराफ़ोगलू, गोशातखां, शेरज़ाद और कारा केरेमोगलू थे।

रुस्तम का मूल्यांकन कैसे किया जाये, असलान अभी तक नहीं जानता था...

उसे सबसे ज़्यादा जो बात खिजलाती थी और चौंकाती थी, वह थी 'नवजीवन' के अध्यक्ष का सलमान और यारमामेद जैसे चापलूसों से घिरे रहना।

कोई भी कह सकता है कि ज़िला समिति के सचिव को यारमामेद जैसे तुच्छ व्यक्ति के बारे में सोचने की क्या ज़रूरत पड़ गयी? दुनिया में क्या ऐसे मामूली, संकोची लोगों की कमी है, जो सूचियों पर सिर झुकाये बैठे रहते हैं, महीने में दो बार वेतन पाते हैं, किसी प्रकार की महत्त्वाकांक्षा नहीं रखते हैं, किसी चीज़ में रुचि नहीं लेते हैं, कुछ नहीं जानते हैं...

इसके बावजूद असलान को बार-बार यारमामेद का ख़याल आ जाता था। तेज चापलूस पर नज़र रखते हुए उसकी मांद का पता लगाया जा सकता था, जहां उससे भी कहीं ज़्यादा ख़ूंख़्वार जानवर छिपे हुए थे।

असलान संयत व शान्त रहता था, उसे आपे से बाहर कर पाना मुश्किल था, लेकिन ख़ूंख़्वार जानवरों की मांद की ओर जानेवाली पगडण्डी पर एक बार कलंतर की परछाईं देखकर वह भी चौंक उठा।

नहीं, यह असम्भव है, कलंतर बहुत ऊंचे पद पर आसीन है, उस पर बहुत ज़्यादा उत्तरदायित्व है; यारमामेद से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति या तो मूर्ख होना चाहिए या बिलकुल नीच।

विशेषज्ञ इस निर्णय पर पहुंचे कि 'नवजीवन' से ज़िले की संस्थाओं को भेजे गये सभी बारह अनाम पत्र यारमामेद के द्वारा लिखे गये थे। उनकी जांच का परिणाम मिलने पर असलान ने यारमामेद को ज़िला समिति में बुलवाया।

जब तक पीला पड़ा, कांपता यारमामेद अपनी पतली गरदन निकाले याचना-भरी नज़रों से ज़िला समिति के सचिव के स्वागतकक्ष में हर आने-जानेवाले का अभिवादन और उसे विदा करता रहा, असलान कलंतर, शराफ़ोगलू और गोशातख़ां के साथ अनाज की फ़सलें अलग-अलग काटने के बारे में बातचीत करता रहा।

कक्ष में सचिव का सहायक आया, दरवाज़ा खुला रह गया। असलान ने देख लिया कि यारमामेद स्वागतकक्ष में बैठा है।

"जानते हैं 'नवजीवन' से हम पर अनाम पत्रों की बौछार किसने की थी?" असलान ने पूछा।

शराफ़ोगलू और गोशातख़ां ने हैरत-भरी नज़रों से एक दूसरे की तरफ़ देखा – प्रश्न अत्याधिक अप्रत्याशित था, जब कि कलंतर-लेलेश ने व्यंग्यमिश्रित स्वर में दांत भींचकर कहा:

"ऐसी ज़िम्मेदारी के मौक़े पर हमें बेकार के कामों में पड़ने की क्या ज़रूरत पड़ी है?"

असलान ने कुछ नहीं कहा और सहायक से यारमामेद को कक्ष में बुलाने को कहा।

यारमामेद अपने को जहन्नुम में पड़ा महसूस कर रहा था और उसने हताश होकर ख़ुदा से दुआ करनी भी बंद कर दी थी।

असलान के कक्ष में यारमामेद चलकर नहीं, रेंगकर आया, – उसके पैर जैसे मन-मन-भर के हो गये थे, कमर झुक गयी थी, होंठ फड़क रहे थे।

"बैठिये," ज़िला समिति के सचिव ने रुखाई से कहा।

"इतने बड़े लोगों के सामने बैठना मुझे बेअदबी लगती है," यारमामेद हकलाते हुए बोला।

कलंतर ने उसका कोट पकड़कर खींचा।

"बैठो, बैठो, सुनो, कामरेड असलान क्या कहते हैं।"

"ज़िला समिति के आदरणीय सचिव ने कुछ भी क्यों न कहा हो, मैं उनसे सहमत हूं," यारमामेद ने कहा।

असलान ने मेज़ की दराज़ से कुछ काग़ज़ातों की फ़ाइल निकाली, पर उसे खोला नहीं और अपने सामने रखकर पूछा:

"आप रुस्तम को अच्छी तरह जानते हैं?"

"क्यों नहीं, आख़िर वह अध्यक्ष हैं!.."

"उसके बारे में आपकी क्या राय है?"

यारमामेद भयभीत हो उठा। उसे सुबह सलमान के साथ हुई बातें याद हो आयीं। "डरो मत, तुम्हें कोई काल-कोठरी में बंद करने नहीं जा रहा है, ऐसे पेटू को मुफ़्त में खिलाना सरकार के बस का काम नहीं है। यह तो आम काम-काजी बुलावा है," उसके यार ने उसे तसल्ली दिलायी थी। सलमान के लिए अपने घर बैठे इस तरह सोचना आसान है, पर यारमामेद के लिए ज़िला समिति में घिघिआना कितना मुश्किल है! अगर ये रुस्तम को हटाना चाहते हैं, तो इसका मतलब हैं, उसे बड़ी बेरहमी

से बदनाम करना होगा। लेकिन अगर रुस्तम को ज़िला स्तर के किसी उच्च पद पर नियुक्त करना तय कर लिया गया हो तो?

"आपको इस बारे में ज़्यादा जानकारी है," यारमामेद सचिव से आंख न मिलाने की कोशिश करता हुआ बुदबुदाया। "मेरा कुंद दिमाग़ इस तरह के सवाल हल नहीं कर सकता। तेज़ अलाव के पास बैठे आदमी की आंखें चौंधिया जाती हैं। दूर से कहीं ज़्यादा नज़र आता है।"

शराफ़ोगलू भी और गोशातखां भी असलान की शान्तचित्तता और सहनशक्ति से आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत कुछ देखा था, पर यारमामेद जैसा आदमी शायद वे पहली बार देख रहे थे।

"कामरेड यारमामेद, हम पुराने कम्युनिस्ट रुस्तम-कीशी को काफ़ी अच्छा और ईमानदार व्यक्ति मानते हैं," असलान ने शान्त स्वर में कहा। "ऐसा आदमी सार्वजनिक सम्पत्ति पर दांत नहीं गड़ा सकता। लेकिन क्या हम ग़लती पर हैं? हमारी मदद करिये।"

"सचमुच ऐसा ही है," यारमामेद ने स्वीकृति में सिर हिलाया, "सारे ज़िले में रुस्तम-कीशी की जोड़ का आदमी नहीं मिलेगा – निहायत ईमानदार आदमी है, उसका दिल शीशे-सा साफ़ है।"

"देखा! .. लेकिन हमें अनाम पत्र मिला है, जिसमें लिखा है कि रुस्तम सामूहिक फ़ार्म के तीन मेढ़े ले गया और उन्हें बाज़ार में बेचकर अपनी पत्नी और बेटी के लिए नयी चीज़ें ख़रीद लाया। ज़रा पढ़िये तो! .." असलान ने फ़ाइल खोलकर यारमामेद को पत्र दिया।

वक़्त निकालने और साहस जुटाने के इरादे से यारमामेद ने नाक पर धागों से बंधा चश्मा चढ़ाया, काग़ज़ आंखों के पास लाकर दुःख से सिर हिलाया।

"कितनी घसीट लिखावट है। लानत है उसकी मां पर, जिसने ऐसे पढ़े-लिखे को पैदा किया!"

"क्या इसमें सच लिखा है?" असलान ने ऊंची आवाज़ में उसे टोक दिया।

"इसका हर अक्षर झूठी निन्दा से भरा है!" यारमामेद कह उठा। "हाथ सूख जाये ऐसी भद्दी बातें गढ़नेवाले का! .."

"यारमामेद, हमें पक्का पता है कि यह पत्र तुमने गढ़ा है। तुमने!" असलान ने घृणापूर्वक कहा।

"तुम्हारी क़सम, मैंने नहीं लिखा!" यारमामेद ने दोनों हाथ फैलाये।

"मैं कोई पागल हूं, जो अपने उपकारी रुस्तम-कीशी पर छींटा-कशी करूं। क्या मुझे मालूम नहीं है कि पार्टी की ज़िला समिति रुस्तम पर विश्वास करती है? फिर क्या ज़रूरत पड़ी है मुझे लिखने की? .."

कलंतर निर्लिप्त मुद्रा में पेंसिल छीलने के चाकू से अपने नाख़ून साफ़ कर रहा था।

"अरे, आप इस बेचारे को चैन से जीने दीजिये," उसने अलसायी आवाज़ में सलाह दी। "जब यह अपने कहे पर इतना अड़ा हुआ है, तो इसका मतलब है, इसका अनाम पत्रों से कोई सम्बंध नहीं है।"

यारमामेद का हौसला तुरन्त बढ़ गया:

"वल्लाह, नेक लोगो, मेरा इसमें कोई हाथ नहीं है, बिलकुल हाथ नहीं है, मेरे दुश्मन बहुत हैं, उन्होंने ही मुझे डुबोने की ठान रखी है।"

"बारह अनाम पत्र हैं। और सब तुम्हारे हाथ के लिखे हुए हैं। मैं मामला अभियोजक को सौंप रहा हूं!" असलान ने मेज़ से फ़ाइल उठा ली।

यारमामेद घुटनों के बल गिर पड़ा और हाथ ऊपर उठाकर दया की भीख मांगने लगा।

"कामरेड असलान, आप मेरे नेता और गुरू हैं! मैं कसूरवार हूं, मैंने, मैंने लिखे थे, और बारह नहीं सत्तरह। बाक़ी शायद डाक में खो गये। ख़ुद मुझे सज़ा दें, जान से मार डालें, पर अभियोजक को न सौंपें। मुझे लाइलाज बीमारी है, कामरेड असलान, शिकायतें गढ़ने की। किसी अभागे को नशे में बकवास करने की हालत में पहुंचने तक पीने की लत होती है, किसी को लापरवाही से जूए में हारते जाने की, किसी को... आप तो ख़ुद समझते हैं, – औरतों के साथ तफ़रीह करने की। पर मुझ ग़रीब के हाथ खुजलाते हैं – बड़े-बड़े कार्यालयों में पत्र भेजने को। मैं अपने लिए नहीं, सार्वजनिक कार्य के भले के लिए पचता हूं। मैं सोचता हूं, उस आदमी की एक बार और जांच कर लें, उसकी ईमानदारी के बारे में पूरा यक़ीन कर लें," यारमामेद ने ऐसे हिलते और रोते हुए कहा, मानो वह किसी के यहां ग़मी में आया हो। "और अगर पुष्टि हो जाये? तो इसका मतलब है मैंने अपराधी को निहत्था कर दिया, यह भी मैंने जनता की भलाई के लिए ही किया।"

शराफ़ोगलू और गोशातखां दोनों ही मौन उसको देखते रहे, उन्हें लगा

जैसे फ़र्श पर कोई बिच्छू छटपटा रहा है, जो ख़ुद अपने ही ज़हरीले डंक से मर रहा हो।

"दफ़ा हो जाओ," असलान ने आदेश दिया।

यारमामेद उछल पड़ा और अपनी मुक्ति पर विश्वास न कर पाकर अग़ल-बग़ल देखने लगा।

"जा रहा हूं, जा रहा हूं, रहमदिल कामरेड," यारमामेद तुतराया। "मुझे बीमारी है, बहुत बुरी बीमारी... क्या मुझे सामूहिक फ़ार्म में रहने दिया जायेगा?"

"इसका फ़ैसला ख़ुद सामूहिक किसान ही करें," असलान ने जवाब दिया, और जब चुग़लख़ोर के पीछे दरवाज़ा बंद हो गया, उसने गहरी सांस ली। उसे लगा मानो वह अंधेरी रात में भटककर घूरे पर पहुंच गया हो और घिनौनी बदबू में सांस ली हो। "कौन ऐसे कमीने को घूरे से उठा लाया है और किसने उसे अपनी बदबूदार सांसों से दुनिया में ज़हर फैलाना सिखाया है?" असलान ने सोचा।

"मेरी समझ में किसी तरह नहीं आया कि तुमने उसे माफ़ कैसे कर दिया," शराफ़ोगलू ने खुले झरोखे के पास आकर ताज़ा हवा में गहरी सांस लेते हुए कहा।

"जानते हो, कामरेड शराफ़, यह आदमी उस चाण्डाल-चौकड़ी में सबसे मामूली है। हमें इस सरगना तक पहुंचना है," असलान ने समझाया। "आइये अब फ़सल अलग-अलग उठाने के बारे में सलाह-मशविरा करें।"

"इनका सरदार तो सलमान है," गोशातख़ां अचानक कह उठा। "वही है, जिसमें अभियोजक को और दूसरे कुछ लोगों को दिलचस्पी लेनी चाहिए।"

अचानक कलंतर-लेलेश चीख़ पड़ा और पेंसिल छीलने का चाकू, जिससे वह नाख़ून साफ़ कर रहा था, फिसलकर उसकी खाल में धंस गया। सबने मुड़कर देखा। कलंतर मुंह में उंगली डालकर ख़ुशामदाना ढंग से मुस्करा पड़ा।

३

महत्त्वाकांक्षी, चालबाज़ और कमीने आदमी के किसी तरह बस किसी उच्च सरकारी पद तक पहुंचने की देर है कि वह तत्क्षण पुरजोशी दिखाने लगता है, अपने उच्चाधिकारी की ख़ुशामद करने लगता है और इसके

साथ-साथ उसे हटाने, बदनाम करने और उसका स्थान लेने की भी चेष्टा करता है। उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचानेवाला हर साधन जायज़ होता है: सच और झूठ, ईमानदारी और ठगी, सज्जनता और नीचता। रेशम का कीड़ा ख़ुद अथक अपना कफ़न बुनता रहता है, जब कि स्वार्थजीवी अत्यधिक हठपूर्वक अपनी क़ब्र ख़ुद खोदता रहता है।

सामूहिक फ़ार्म का उपाध्यक्ष बन जाने के बाद सलमान ने महसूस किया कि उसके मन में ऐसी लालसा जाग उठी है, जो जुआरी के जोश और स्त्रियों व सुरापान के व्यसनों से भी अधिक प्रचण्ड है; सत्ता व ख्याति की भूख ने उसकी बुद्धि कुंद कर दी, उसके मन में अत्यन्त असाध्य और दुःसाहसपूर्ण सपने जगा दिये। वह अपना रुस्तम का सहायक चुना जाना केवल स्वाभाविक ही नहीं मानता था, बल्कि बुरा भी मानता था कि उसकी पदोन्नति करने में देर कर दी गयी है, उसकी प्रतिभाओं का समय पर मूल्यांकन नहीं किया गया है। अब उसे शीघ्रातिशीघ्र अध्यक्ष बनकर अपने विलम्ब की क्षतिपूर्त्ति करनी है। इसके लिए अपने इर्द-गिर्द ऐसे विश्वसनीय लोगों को जमा करना ज़रूरी था, जो किसी भी तरह के कारनामे और अपराध के लिए तैयार हों। आरम्भ में उसे कभी चालाकी से, कभी ख़ुशामद से, कभी धमकियों से अपने नेतृत्व में पिछलग्गुओं की एक टुकड़ी तैयार करने में सफलता मिली। ढुल-मुल और भीरुओं के साथ वह हठधर्मी और कठोरता से पेश आता, गर्वीले और दुर्दांत लोगों को ख़ुद कुछ रिआयतें देता, उनकी ठकुरसुहाती करता। लालची लोगों को वह चुपड़ी रोटी का लालच देकर ऐसे खेतों में भेजता, जहां वे आसानी से ज़रा ज्यादा श्रम-दिन का काम दिखा सकते। धूर्तों को यह साफ़ बता देता कि वह उनकी सारी काली करतूतें जानता है, लेकिन अगर वे उसका कहना मानेंगे, तो वह चुप रहने को तैयार है।

पिछलग्गू उसकी तारीफ़ के पुल बांधने लगे, घर-घर जाकर कहने लगे कि ख़ुद अल्लाह ने सलमान को ऊंचे पद पर आसीन होने का आशीर्वाद दिया है...

सलमान यह देखने लगा कि कुछ सामूहिक किसान उसका आदर करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं। इसका मतलब है कुछ ही दिनों में वह पूरा सामूहिक फ़ार्म ही अपने हाथों में ले सकता है। इसके लिए यह ज़रूरी था कि ज़िला केन्द्र में उसके अपने मित्र और गुरु हों जब कि वहां अभी तक कलंतर भैया को छोड़कर सलमान का और कोई सहारा नहीं था।

पिछले कुछ दिनों से सलमान आशंकित था, क्योंकि कुछ खेतों में गेहूं की फ़सल उठाने का काम ढंग से नहीं चल रहा था, शराफ़ोगलू सामूहिक फ़ार्म से भौंहें सिकोड़े असन्तुष्ट चला गया था। पशुपालन फ़ार्म में स्थिति ख़राब थी। "इस गूंगे कामचोर और चालाक लोमड़ी यारमामेद को थोड़ी ढील देने की देर है, कि ये ख़ुद भी कुएं में जा गिरेंगे और मुझे भी साथ घसीट ले जायेंगे," सलमान सोचता। उसने उन्हें अपने पास बुलाकर इतनी बुरी तरह झाड़ लगायी कि उसके वफ़ादार मददगार केवल आश्चर्य से आंखें मलते रह गये।

कुछ दिनों तक हुसैन और यारमामेद ने ईमानदारी से काम किया, फिर उनका जोश ठण्डा पड़ गया, और फिर पहले की तरह ढील पड़ गयी। जब पशुपालन फ़ार्म में दुहे गये दूध की मात्रा घट गयी, तो सलमान घबरा गया। वह अपने सहायकों पर विश्वास नहीं करता था, वैसे ही जैसे वह दुनिया में किसी आदमी पर विश्वास नहीं करता था, सबको बेईमान मानने के कारण। यारमामेद गूंगे हुसैन को बचा रहा था, फ़ाइल में रिपोर्ट पर रिपोर्ट लगाये जा रहा था: कभी दूध फट गया, कभी अनाड़ी चरवाहे भेड़ों को धूप में झुलसी घासवाले मैदान में चराने गये। "अगर उनमें सांठ-गांठ हो चुकी है, तो मैं मारा गया!" सलमान ने अपने आप से कहा। पशुपालन फ़ार्म के लिए हुसैन की सिफ़ारिश करते समय उसकी योजना सामूहिक फ़ार्म के मांस व दूध का अपनी बपौती की तरह उपयोग करने की थी। पशुपालन फ़ार्म के इनचार्ज और लेखाकार की सांठ-गांठ ख़तरनाक थी: अगर वे रंगे हाथों पकड़े गये और उन्हें अभियुक्तों के कठघरे में खड़ा कर दिया गया, तो सलमान की भी ख़ैर नहीं होगी। सब जानते हैं कि हुसैन की सिफ़ारिश उसी ने की थी।

नहीं, उसे शीघ्रातिशीघ्र कारगर क़दम उठाने चाहिएं।

रुस्तम के शाम को ज़िला केन्द्र जाने का फ़ायदा उठाकर सलमान यारमामेद के साथ हुसैन के पास गया।

बिनबुलाये मेहमानों को देखकर गृहस्वामी का मुंह उतर गया।

शान्तचित्त सलमान ने गृहणी से शिष्टतापूर्वक अहाते में चूल्हे के पास बैठने का अनुरोध कर किवाड़ अंदर से बंद कर लिये और हुसैन के सामने सीने पर आड़े हाथ रख उसे खा जानेवाली नज़रों से देखता खड़ा हो गया।

"तुमने क्या ठान ली है, जोंक?"

गूंगे हुसैन ने हथेली कान से लगाकर बड़ी भोली नज़रों से सलमान पर नज़र डाली और ज़बान से "टच्च" की आवाज़ की।

"ठीक है, ठीक है, तुम्हारी ये चालें मैं जानता हूं: जब तुम्हें फ़ायदा होता हो, तो तुम बहरे बन जाते हो, असल में घास के बढ़ने की आवाज़ तक सुन लेते हो!" क्रुद्ध सलमान ने आगे कहा।

यारमामेद उसके लहजे से समझ गया कि बातचीत बिना किसी लाग-लपेट के होनेवाली है और उसने फ़ौरन अपनी स्थिति निश्चित कर ली:

"हां, हां, तुम ठीक कहते हो, सलमान, पशुपालन फ़ार्म में गड़बड़ चल रही है, फ़ौरी क़दम उठाने चाहिएं..."

हुसैन एकाएक हंस पड़ा।

"अरे, तुम कितने डरपोक हो, जितना मैं देखता हूं," उसने सलमान से कहा। "ज़रा-सी बात हुई नहीं कि तुम बुत हो जाओगे।"

उसकी बेतकल्लुफ़ी से सलमान का सबर का बांध आख़िर टूट गया। चालबाज़ का भला किया, और अब वह जिस दरख़्त की छाया में बैठा है, उसी की जड़ काट रहा है। रुस्तम के सामने तो वे उसके क़दमों की धूल चाटने को तैयार रहते हैं, पर उसके आगे ढीठ हो गये हैं। लेकिन तुम्हारा पाला किसी ऐसे-वैसे से नहीं पड़ा है...

सलमान पूरे ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारकर हंस पड़ा और नेकदिली से बोला:

"तो सुनो, दोस्तो! हमारे बीच में पहले जो कुछ हुआ था सब ख़तम हो चुका। हमने अपने-अपने घरों के इर्द-गिर्द दीवारें खड़ी कर ली हैं।" उसने मेज़पोश पर उंगली से तीन वृत्त खींचे: यानी अब हरेक का अपना घर है। "आपस का सारा हिसाब-किताब चुकता हो चुका है। दोस्ती की क़ीमत नहीं समझनेवाले लोगों की मुझे ज़रूरत नहीं है। मुझे ज़िन्दगी एक ही बार मिली है, मैं उसकी क़ीमत समझता हूं, वह मुझे सड़क पर तो मिली नहीं है। अपने यार सलमान को भूल जाओ। पर मेहरबानी करके डरो मत, डरने की कोई बात नहीं, तुम्हारी करतूतें राज़ ही रहेंगी। लेकिन आगे जो होगा, वह अभियोजक जाने, मैं कुछ नहीं जानता।"

यारमामेद ने महसूस किया कि उसके दांत बजने लगे हैं और हड्डियां तक कांप उठी हैं। अभी वह अनाम पत्रों से तो बरी भी नहीं हो पाया और फिर "अभियोजक" आ गया।

गूंगा हुसैन व्यर्थ अपने को यक़ीन दिला रहा था कि सलमान बन रहा है,

जैसे सामूहिक फ़ार्म के क्लब के मंच पर अभिनय कर रहा है, लेकिन मिनट-भर बाद ही उसे भी कंपकंपी छूटने लगी। मालूम पड़ता है, कछुआ अड़ियल है... यह तो अपने सगे भाई का सिर काटते भी नहीं हिचकिचाये। ऐसे आदमी के साथ बहुत होशियारी और चालाकी से काम लेना चाहिए... और हुसैन ने ठण्डी सांस लेकर दुःखी स्वर में कहा :

"भाई मेरे, ऐसा क्या हो गया? अगर तुम्हारी प्रतिष्ठा की बात है, तो मैं अपने बच्चों की क़सम खाकर कहता हूं, भले ही तुम उम्र में मुझसे छोटे हो, पर मैं तुम्हें बड़ा मानता हूं। पर जहां तक करतूतों का सवाल है, पहली बात तो यह है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ, दूसरी यह कि..."

"कैसे नहीं हुआ?!" सलमान मेज़ पर उसकी तरफ़ झुककर फुसफुसाया : "पन्द्रह टन बीजों का क्या हुआ? और फटा हुआ दूध?"

"मैं कह तो रहा हूं : दूसरी बात यह कि..." गूंगा हुसैन बच्चों की तरह भोली अदा से आंख मिचका रहा था। "दूसरी बात यह है कि हमने चोरी मिलकर की थी, यानी उसका जवाब भी मिलकर देंगे। हमारी शर्त ही ऐसी थी... और तुम्हें, भई, गरम होने की, जामे से बाहर होने और फालतू बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। सब कुछ, जो हुआ और नहीं हुआ, हम तीनों ने किया : तुमने, तुमने," उसने सलमान और यारमामेद की तरफ़ उंगली उठायी, फिर सादगी से आंखें झुकाकर अन्त में अत्यन्त दबी आवाज़ में कहा : "और मैंने। साथ मिलकर!"

सलमान ग़ुस्से से पागल हो, मुट्ठियां कसे कमरे में तेज़ी से चहलक़दमी करने लगा।

"पर तुम मेरे सिर पर क्यों चढ़ रहे हो? मैं उपाध्यक्ष हूं, या तो बिना चूं किये मेरे आदेशों का पालन करो, या... नऽऽहीं, दोस्ती दोस्ती ही है, लेकिन मेरे आते ही तुम दोनों खड़े होगे; बिना खटखटाये मेरे कमरे में अपना सिर नहीं ठूंसोगे; छींकने से पहले मुझ से इजाज़त मांगोगे!"

"मांगेंगे, मांगेंगे!" गृहस्वामी और यारमामेद एक दूसरे की तरफ़ बदख़्वाह नज़रें डालते हुए सहर्ष एक स्वर में कह उठे।

"और मेहरबानी करके सरकारी कोटा रोज़ाना पूरा करोगे," सलमान ने धमकी दी। "चाहे अपनी जेब से दूध ख़रीदो। पतझड़ तक पशुपालन फ़ार्म ज़िले में प्रथम स्थान पर पहुंच जाना चाहिए।"

"मुझे मेरे बच्चों की क़सम, कल से ही कोटे से एक टन ज़्यादा दूध सप्लाई करना शुरू कर दूंगा!"

"यानी, इन्होंने दस दिन में दस टन दूध चुरा लिया!" सलमान समझ गया और उसने उलाहना भरे अंदाज़ में सिर हिलाया।

"छि, छि! मेरे पीछे से मुनाफ़ा बांटने की सोच ली! कैसे यार हो!"

गूंगे हुसैन के काटो तो ख़ून नहीं।

"अरे, अभी कोई मुनाफ़ा-वुनाफ़ा नहीं हुआ है। जब होगा, बता दूंगा। जानते हो, भाई, व्यापार में कभी-कभी साझीदारों को किश्तों में भुगतान करने की सहूलियत भी देनी पड़ जाती है। इसके बग़ैर काम नहीं चलता।" हौसला बढ़ जाने पर उसने कृपापूर्वक कहा : "क्यों थोड़ी कोनक हो जाये?"

सलमान ने ख़ातिरदारी से इनकार कर दिया और पूर्णतया निराश हुए यारमामेद को अपने साथ लेकर चल दिया।

अंधेरी गली में सलमान ने लेखाकार को चहारदीवारी के सहारे सटाकर कहा :

"देखा इस गूंगे बदमाश को? उसने पंद्रह टन बढ़िया क़िस्म के बीज चुरा लिये और अब मुझे अपना हिस्सेदार बनाना चाहता है। कैसा आदमी है! .. मेरे पैरों में लोटता था, रोता था : 'मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, मुझ पर रहम करो!' और जब रहम करके रिपोर्ट में पाला मारे हुए अंकुर दर्ज कर दिये, तो अब वह हम दोनों को बोनस दे रहा है : 'सबने मिलकर किया! ..' नहीं ऐसे आदमी पर भरोसा नहीं किया जा सकता, संभलकर रहना!"

यारमामेद उसकी बात सुनता हुआ सोच रहा था : "यह पाजी मुझे आज़मा रहा है या झूठ बोल रहा है? अगर यह हुसैन के साथ मिल गया, तो काम से गया।" और वह प्यारभरी मुस्कान के साथ बोला :

"तुम घबराओ मत, वह गूंगा – तुम्हारा दरबारी गूंगा..."

सलमान को विश्वास नहीं हुआ और उसने उसे घूरते हुए पूछा :

"तुमने उसके साथ सांठ-गांठ तो नहीं की है?"

यारमामेद को इतना बुरा लगा कि वह बस रो ही नहीं पड़ा।

"तुम्हीं ने तो मुझे उससे मिलाया है! अगर तुम न चाहते होते, तो मैं गूंगे के साथ एक दस्तरख़ान पर बैठता भी नहीं।"

कुछ उगलवा पाने की आशा न रहने पर सलमान ने हाथ झटकार दिया।

"जाओ, सोने जाओ... लेकिन अगर..." और उसने अपने गले पर आड़ा हाथ फेरकर ज़बान चटकारी।

"तेरे बारे में भी अनाम पत्र लिखना पड़ेगा, लेकिन अब ज़िला केन्द्र नहीं, बाकू लिखना पड़ेगा," यारमामेद ने अंधेरे में घर की तरफ़ जाते हुए फ़ैसला किया।

उसने सलमान से ज़िला समिति में जो हुआ, सब छिपा लिया: वित्तीय मामलों के बारे में बुलाया गया था, इसमें घबराने की कोई बात नहीं। लगता है उसने विश्वास कर लिया है। और अगर विश्वास नहीं किया हो, बन रहा हो तो?

"मुझे टाइपराइटर ख़रीदकर उस पर प्रार्थनापत्र टाइप करने चाहिएं" यारमामेद के मस्तिष्क में जीवनरक्षी विचार कौंधा।

४

काम के थका डालनेवाले लम्बे दिन के बाद, जब सूरज का लाल गोला धुंधला पड़कर धूसर कोहरे से ढंक गया, गिज़ेतार की टोली की स्त्रियां व युवतियां अपने-अपने घर लौटने लगीं। वे अपने कुदाल हिलाती मौन चल रही थीं, चलते-चलते उनके चेहरे लाल हो रहे थे। युवतियां सहर्ष अपनी रफ़्तार धीमी कर देतीं, पर स्त्रियां जल्दी मचा रही थीं: घर पर ढेरों काम करने थे – नाली से पानी लाना था, चूल्हा सुलगाना था, खाना पकाना था और बच्चों को नहला-धुलाकर सुलाना था।

अन्त में पेरशान चुप्पी से ऊब उठी।

"अरी, तेल्ली चाची, तुम कलहंसिनी की तरह क्यों कूद रही हो? यह कौन-सी चाल है?" पेरशान ने बड़े भोलेपन से पूछा।

चाची ने अपने अनगिनत झालरोंवाले स्कर्ट को झटकाकर रुक गयी।

"मुझे तो जितना कूदना था, कूद चुकी हूं, अब तुम कूदो, अध्यक्ष की बेटी!" पेरशान को उसने नेकदिल रुखाई के साथ सलाह दी।

लड़कियां मुंह दबाकर हंस पड़ीं।

"सचमुच, चाची," गिज़ेतार ने गम्भीर स्वर में कहा, "तुम ऐसे चल कैसे लेती हो? गरदन भी कलहंसिनी की तरह निकाले रहती हो और कूल्हे मटकाती चलती हो, जैसे नदी में कोई बतख़ तैर रही हो।"

अब युवतियां खुलकर हंस पड़ीं, लेकिन तेल्ली चाची को शर्मिंदा कर पाना बड़ा मुश्किल था। उसने नख़रीली अदा के साथ अपना स्कर्ट एक तरफ़ से थोड़ा ऊपर उठाया और मंथर गति से कंधे और कूल्हे मटकाती सड़क पर चल पड़ी।

"ऐसी होनी चाहिए चाल असली ख़ानम की!" उसने हंसी के मारे दोहरी हुई जा रही युवतियों को समझाया। "जब कि तुम हमेशा ऐसे सिर पर पैर रखकर भागती हो, जैसे आग बुझाने भाग रही हो।" चाची ने पेरशान के आड़ू जैसे रोयेंदार गुलाबी कपोलों पर चिकोटी भर ली। "जब तुम्हारी चाल ऐसी हो जायेगी, गांव के सारे लड़के तुम्हारे मजनूं हो जायेंगे। मेरे अगर कुंआरा बेटा होता, तो मैं उसे सिखा देती कि तुम्हें कैसे उड़ाकर ले जाये।"

"और मैं तुम्हारे बेटे का सिर मूँड़कर गले में रस्सी बांध वापस उसकी मां के घर भेज देती," पेरशान ने भी मज़ाक़ किया।

"बहादुरी तो तुम अभी दिखा रही हो और अगर किसी अड़ियल लड़के के पंजे में फंस गयीं, तो दूसरे ही सुर में गाने लगोगी।"

"अरी, चाची, क्या ज़रूरत है ऐसी मनहूस भविष्यवाणियां करने की?" गिज़ेतार ने सहेली का पक्ष लिया। "तुम ख़ुद ही न जाने कितनी बार कह चुकी हो कि प्यार शरबत-सा मीठा होता है।"

"शरबत-सा!.." तेल्ली चाची वितृष्णा से फुफकारी। "मेरी ज़िन्दगी जी कर देखो, इस शरबत का स्वाद जान जाओगी।" कुछ सोचकर वह आगे बोली: "बेशक, अगर अध्यक्ष की बेटी की मुलाक़ात ऐसे लड़के से हो गयी है, जो लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीला है, तो शुरू में यह ज़रूर शरबत लगेगा!.."

"किसी से नहीं हुई मेरी मुलाक़ात," पेरशान ने मुंह फेर लिया।

वे थोड़ी देर तक मौन चलती रहीं, पर तेल्ली चाची से अब चुप रहना मुश्किल हो गया। उसने पेरशान पर विजयी दृष्टि डालकर कहा:

"इनकार मत करो, वरना बहुत बुरी बददुआ दूंगी।"

"कौन-सी बददुआ?" गिज़ेतार ने दिलचस्पी दिखाई।

"ज़िन्दगी भर कुंआरी बैठी रहने की!"

"लड़ाका सास मिलने की!"

सब अपनी-अपनी अटकलें और अनुमान बताने लगीं।

"क्या कभी अच्छी सासें मिलती हैं?" सबसे छोटी उम्र की लड़की ने जो लगभग किशोरी ही थी, आश्चर्य से पूछा।

पेरशान ने इस बात से ख़ुश होकर कि कोई उस पर ध्यान नहीं दे रहा है, सोचा कि उसकी मां ने तो ख़ुशी-ख़ुशी बहू का अपने घर में स्वागत किया था।

लेकिन तेल्ली चाची पेरशान के बारे में नहीं भूली और चुपके से उसके पास आकर फुसफुसायी:

"तुझे ऐसी सास नसीब होगी कि हर कुरसी में कील निकली होगी, पलंग पर–पांचा, तेरी लच्छी बनायेगी और बुहारी से समेटकर कोने में पटक देगी... और तेरे पति को तब तक भड़कायेगी, जब तक कि तुम में झगड़ा न करा देगी। तभी लगेगा तुम्हें प्यार शरबत-सा।" और चाची कमर पर हाथ रख, अपने लम्बे स्कर्ट से धूल बुहारती, नाचती हुई सड़क पर चलती गाने लगी:

घर में हो फुरतीली तुम ही, मेरी सास,
मालकिन हो तेज़ घर की, मेरी सास।
बेटा आ जाता है तब हर काम को,
फिरती हो तुम दौड़ी-दौड़ी, मेरी सास।

पेरशान ताली बजाने लगी।

"वाह, चाची, वाह शाबाश! क्या तुम सचमुच मेरी होनेवाली सास को बहुत अच्छी तरह जानती हो? देख लेना, तुम दांतों तले उंगली दबा लोगी, ऐसे लड़के से शादी करूंगी, जिसकी मां टेढ़े मिजाज़ की होगी, और एक महीने में वह मेरे हाथों मेमने में बदल जायेगी।"

चाची का तांबे के थाल जैसा गोल चेहरा गम्भीर हो उठा।

"और तुम्हारा क्या ख़याल है, लड़कियो? यही होगा। अध्यक्ष की बेटी से हर सास दूर भागेगी। इसे तो फ़ौज में भरती होकर तोप चलानी चाहिए। यह ख़ानम नहीं, तोपची है।"

उन्हें इसी तरह बतियाते चलते पता भी नहीं चला कि वे कब गांव में पहुंच गयीं, –धूलभरा, तपता रास्ता बहुत छोटा लगा। गांव के छोर पर सब थोड़ी चुप हो गयीं और अपने-अपने घर चली गयीं, जब कि गिज़ेतार अधढहे कच्चे घर की तरफ़ चल दी, जिसके पास शहतूत का अकेला लम्बा पेड़ खड़ा था। यहां विधवा बादाम रहती थी। उसका पति युद्ध से अपंग होकर लौटा था, बीमार रहता था और कुछ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो

चुकी थी। बादाम चाची के तीन बच्चे थे। जब तक वह काम करती रही, जैसे-तैसे जीती रही, पर बदक़िस्मती से इसी वसंत में बीमार पड़ गयी...

गिज़ेतार ने सागबाड़ी का चक्कर लगाकर देखा कि क्यारियों में पानी नहीं दिया गया है, उनमें घना खर-पतवार उग आया है और पौद पीली पड़ चुकी है। काम शाम तक के लिए काफ़ी था, पर उसके अपने घर के भी ढेरों काम बाक़ी थे: जल्दी ही खेत से भूखा नजफ़ आयेगा, उसके लिए खाना पकाना होगा। गिज़ेतार लपककर एक मिनट के लिए रोगिणी के पास गयी और बोली कि वह थोड़ी देर बाद कोम्सोमोल लड़कियों के साथ आयेगी: बच्चों को भी नहला-धुला देगी और सागबाड़ी को भी ठीक-ठाक कर देगी। "बहुत-बहुत शुक्रिया तुम्हारा, सुन्दरी!" बादाम चाची की आंखों में आंसू भर आये।

बाहर आकर गिज़ेतार ने देखा कि पेरशान और तेल्ली अभी गयी नहीं हैं, उनकी बात अभी पूरी नहीं हुई है।

"अरे, ज़रा ठहरना!" गिज़ेतार ने उन्हें पुकारा। "हमें आज शाम को ही बादाम चाची की मदद करने आना होगा।"

"वल्लाह, कैसा दिल है–ख़ुदा की देन है!" तेल्ली ने कहा। "अगर दुनिया में अभी इंसाफ़ बाक़ी है, तो तुम्हीं सामूहिक फ़ार्म की अध्यक्ष बनोगी... सच है न?" उसने पेरशान से पूछा।

पेरशान समझ गयी कि चाची का इशारा किस ओर है और उसने तपाक से जवाब दिया:

"इस में अचरज की बात ही क्या है? मुग़ान में बहुत से सामूहिक फ़ार्म हैं, गिज़ेतार उन में से एक की अध्यक्ष बन जायेगी। यह तो बड़ा आसान है।"

तेल्ली चाची हंस पड़ी।

"बच निकली, अध्यक्ष की बेटी। बड़ी अक़्लमंद है!"

५

रुस्तम को कृषि मंत्रालय में बाकू बुलवा लिया गया था, सलमान पशुपालन फ़ार्म में गूंगे हुसैन के पास गया था और वहीं अटका हुआ था, – टोली व उपटोली-नायकों से कपास की खेती की संभाल जल्दी-जल्दी करने

को कोई नहीं कह रहा था: काफ़ी कामचोर खेत छोड़कर शीतल चायख़ानों में पहुंच गये, बाज़ारों में मटरगश्ती करने लगे।

यह देखकर शेरज़ाद समझ गया कि अब विलम्ब नहीं किया जा सकता। हर दिन, हर क्षण क़ीमती था। उसने कम्युनिस्टों व कोम्सोमोलों को इकट्ठा करके उन्हें याद दिलाया कि वे केवल अपने काम के लिए ही नहीं, बल्कि सारी फ़सल के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने तय किया कि हर टोली में रोज़ाना ताज़ा दीवार-पत्र निकाले जायेंगे, कोटे से अधिक काम करनेवालों को बोनस दिया जायेगा, अवकाश केवल गृहणियों को दिया जायेगा जब कि पुरुष, लड़के और युवतियां बिना विश्राम के लगातार काम करेंगे, रात को खेत-कैम्पों में सोयेंगे।

लगता था काम ठीक से चलने लगा है, पर शेरज़ाद असन्तुष्ट था। यह क्या हो रहा है? रुस्तम चला गया और अनुशासन बिगड़ गया। तो क्या सब चिल्लाने, डांटने-फटकारने और अध्यक्ष के डर के कारण होता है? नहीं, यह ठीक नहीं है। विशाल, बहुउद्योगी सामूहिक फ़ार्म में हर सामूहिक किसान को अपना कर्त्तव्य जानना चाहिए, उसे डर के कारण नहीं, आत्मसन्तोष की ख़ातिर मेहनत करनी चाहिए।

एक बार भोर में तेल्ली चाची के ज़मीन में धंसे हुए-से घर के सामने से गुज़रते समय शेरज़ाद ने उसका हाल-चाल पूछ चलने की सोची। चाची अहाते में चूल्हे के आगे कुछ खटर-पटर कर रही थी। पार्टी-संगठनकर्त्ता को देखकर उसने शिष्टतापूर्वक कहा:

"तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, आओ, मैं अभी बच्चों के लिए दलिया पका देती हूं, फिर साथ चलेंगे।"

शेरज़ाद दोहरा होकर कच्चे घर में घुसा। कमरे में धुंधली रोशनी थी, छोटी-छोटी खिड़कियों में से प्रकाश बड़ी मुश्किल से आ रहा था, कच्चे फ़र्श पर दरी बिछी थी और गद्दों व दीवारों पर जाजमें ढकी थीं, – चाची चिथड़ों से ही अपने घर की बदहाली छिपाना चाहती थी। पालने में जुड़वां बच्चे सो रहे थे, फ़र्श पर, आंखों तक बढ़ आयी घनी दाढ़ीवाला केरेम और उसका बेटा आलथी-पालथी मारे बैठे नाश्ते का इंतज़ार कर रहे थे, गाराग्योज़ दरी पर बरतन रख रही थी।

शेरज़ाद ने दुआ-सलाम करके सब तरह की शुभकामनाएं व्यक्त कीं और मन-ही-मन गुस्से और लाचारी में सोचने लगा: "कैसे रीति-रिवाज हैं! घरवाली अस्पताल में पड़ी है, पर तेल्ली और केरेम को बच्चों को

शिशुशाला में छोड़ते शर्म आती है! क्यों न आये! पड़ोसी कहेंगे: 'सगी दादी और सगे बाप ने बच्चों को पराये लोगों को सौंप दिया, ख़ुद उनकी संभाल नहीं कर सकते।'"

तेल्ली चाची भाप छोड़ती देगची लेकर कमरे में आयी और उलाहनेभरे स्वर में शेरज़ाद से बोली:

"तुम बैठ क्यों नहीं रहे हो? कुछ नहीं किया जा सकता, बेटा, हमारी यही जायदाद है: घर में कुरसियां नहीं हैं। काश, ट्रक मिल जाता, दो दिन में पत्थर ढो लाते और देखते-देखते पतझड़ तक नया घर तैयार हो जाता..."

"चिन्ता मत कीजिये, चाची," शेरज़ाद ने कहा और दरी पर केरेम के पास बैठ गया।

फाटक के सामने ट्रक आकर रुका और केबिन में से सलमान उतरा – रुस्तम की अनुपस्थिति में उसने ट्रक का इस्तेमाल अपनी सैर के लिए करने की ठानी। पशुपालन फ़ार्म में ही शेरज़ाद के अनुशासन सुधारने में जुट जाने की ख़बर पाकर उपाध्यक्ष फ़ौरन गांव आ पहुंचा, ताकि ऐसा मौक़ा कहीं उसके हाथ से न निकल जाये।

सलमान को आशा नहीं थी कि पार्टी सचिव तेल्ली के यहां मिलने आया हुआ है, वह दरवाज़े के बाहर से ही रूखी आवाज़ में चिल्लाया:

"ऐ, चाची काम पर जाने का वक़्त हो चुका है। आराम से बैठे रहने की फ़ुरसत नहीं है! कपास बरबाद हुई जा रही है। और अपने आलसी बेटे को भी जल्दी से खेत रवाना करो..."

केरेम की आंखों में ख़ून उतर आया, लेकिन उसने अपने पर नियंत्रण रखा और केवल ठण्डी सांस ली।

दरवाज़े को ज़ोर से धक्का मारकर सलमान घर में घुस आया। शेरज़ाद को देखकर वह चुप हो गया और घबराहट में हंसकर समझाने लगा:

"देख लो, क्या-क्या काम करने पड़ते हैं, दोस्त – लोगों को काम पर हांकना पड़ता है।"

"तुम ग़लत जगह तो नहीं आ गये हो?" शेरज़ाद ने पूछा। "लगता है तेल्ली चाची ही तुम्हारे हमबोतल दोस्त हुसैन की कपास को बरबाद होने से बचा रही हैं।"

चाची हाथ गाल पर रखकर कर्णभेदी स्वर में चिल्लाने लगी:

"वाह, भई, वाह, क्या कहने, हमारा सलमान कपास की कितनी

फ़िक्र करता है! देखकर दिल ख़ुश हो जाता है। तुम पहले अपनी थुलथुल बहन को तो खेत में भेजो। उसे बिनब्याई गाय की तरह गोशाला में क्यों बांध रखा है?"

"मेहरबानी करके मेरी बहन को कुछ मत कहिये!" सलमान भड़क उठा और बिना सलाम कहे चला गया।

शेरज़ाद ने भागकर उसे फाटक के पास पकड़ लिया।

"चाची को फ़ौरन एक ट्रक भेज दो," उसने तीखी आवाज़ में सलमान से कहा।

सलमान किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया, उसे रुस्तम-कीशी का आदेश याद था: किसी भी हालत में "लफ़्फ़ाज़ औरत" को ट्रक मत देना।

"मैं तो बड़ी ख़ुशी से दे देता, लेकिन तुम मेरी मजबूरी समझो। गाड़ियां सब काम आ रही हैं, और फिर चाची को भी काम से छुट्टी देना मुश्किल है। मेरे इस तरह के स्वेच्छाचार के लिए तारीफ़ न करनेवाले तुम पहले आदमी होगे।"

"देखते रहो, कैसी तारीफ़ करता हूं!" शेरज़ाद ने उसे विश्वास दिलाया। "गाड़ियां तुम्हारे पास रिज़र्व में हैं, जब कि पत्थर लड़के ले आयेंगे, हम श्रम-दान करेंगे।" और वह सलमान की तरफ़ पीठ करके खुली खिड़की से चिल्लाया: "चाची, तुम्हारा घर बनाना शुरू कर रहे हैं! चिख़िर्त्मा पकाने में लग जाओ! कोई बीसेक लोगों के लिए..."

तेल्ली चाची ने शुक्रगुज़ारी की झड़ी लगा दी।

उसी समय कार्यालय का चौकीदार भागा आया और बोला कि शेरज़ाद को फ़ौरन टेलीफ़ोन पर बुलाया है,—पार्टी की ज़िला समिति से फ़ोन आया है।

युवक का दिल धड़क उठा, जब उसने असलान की दूर से आने के कारण किंचित् बदली हुई, पर सामान्य रूप से सौजन्यपूर्ण आवाज़ सुनी।

"क्या हाल हैं, कामरेड सचिव? अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अनुशासन ढीला तो नहीं पड़ गया है? अपने आंख-कान खुले रखना, अब तुमसे जवाब तलब किया जायेगा!.. बहुत शाबाशी का काम किया, जो किलनी को नष्ट कर दिया, मुझे सब मालूम है... अब अपने पड़ोसियों के खेतों पर नज़र रखना।"

कुरसी पर बैठकर शेरज़ाद उत्साहित होकर ज़ोर से बोला:

"मैंने कल शाम को सारे टोली-नायकों को फिर कड़ी चेतावनी दे दी

है। आप चिन्ता मत कीजिये, मैं रोज़ाना खेतों का चक्कर लगा रहा हूं।"

"बहुत ही अच्छी बात है। इधर हमारे यहां रविवार को सामूहिक फ़ार्मों के पार्टी संगठनों के सचिवों की एकदिवसीय सेमीनार आयोजित की गयी है। वक्ता बाकू से आयेगा। तुम्हारा पक्का इंतज़ार करेंगे, कोई दस बजे के क़रीब।"

"निमंत्रण और याद रखने के लिए धन्यवाद। ज़रूर आऊंगा!"

रिसीवर रखकर शेरज़ाद अपने में शक्ति व दृढ़संकल्पता अनुभव करता हुआ कार्यालय से बाहर निकला। आधे घंटे बाद वह तेज़ क़दमबाज़ पर सवार हो 'लाल झण्डे' के खेतों से लगनेवाले दूरस्थ खेत देखने जा रहा था। हर जगह रंगबिरंगी पोशाकें पहने स्त्रियां व युवतियां लगन से, बिना हड़बड़ी के काम कर रही थीं: दूर तक फैले और पुष्पित कपास की पृष्ठ-भूमि में वे हरी-भरी घासस्थली पर खिले पहाड़ी पोस्ते के फूलों की याद दिला रही थीं।

६

रुस्तम बाकू से उत्साहित और प्रसन्नचित्त लौटा, उसने बताया कि वह ओपेरा थियेटर में गया था, ओपेरा 'केर-ओगली' सुना और सब के लिए उपहार लेकर आया है: दो जोड़ी पेटेन्ट चमड़े के जूते, दो रंगीन पोशाकें और दो रेशमी रूमाली।

"बहू के साथ आधा-आधा बांट लेना," उसने बेटी से कहा, और पेरशान ख़ुशी के मारे उछलती अपने कमरे में उन्हें पहनकर देखने भाग गयी।

पत्नी को रुस्तम ने केलागाई* दी, लेकिन सकीना बहू की याद आने से इतनी उदास हो गयी थी कि उसने धन्यवाद देकर उपहार को सन्दूक में रख दिया, उसे खोलकर भी नहीं देखा।

पेरशान खाने के कमरे में लौटकर पिता के पास आयी और उसके कंधे पर सिर रखकर बोली:

"राजधानी से और क्या लाये?"

"मेरा सबसे अच्छा उपहार सामूहिक फ़ार्म के लिए है: रूसी व जर्मन

---

* केलागाई — बड़ा रेशमी रूमाल।

भाषाओं का नया अध्यापक," रुस्तम ने उल्लसित स्वर में कहा। "मैं सीधा शिक्षा मंत्री के पास गया। बिना शेखी बघारे बता दूं कि वह, मेरे आने की ख़बर मिलते ही, मुझसे फ़ौरन, बिना लाइन के मिला... लेकिन उसने मुझ पर संदेहभरी नज़र डाली: 'बुढ़ऊ किसे विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाना चाहता है, – बेटी को या बेटे को?' और मैंने उससे कहा: मेरे बच्चे मुझ पर गये हैं – स्कूल पास करने के बाद वे सामूहिक फ़ार्म में काम करते हैं। फिर कहने को कुछ नहीं रहा: मंत्री ख़ुश हो गया, उसने मुझे एक गिलास चाय देने को कहा। जब उसे पता चला कि मुझे अध्यापक की ज़रूरत है, तो उसने मेरे साथ सारी सूचियां देखीं। देखते रहे, देखते रहे और हमने काराबाख़ के लड़के को चुन लिया। उक़ाब है! संस्थान में पढ़ाई के पांच सालों में उसने एक बार भी पांच में से तीन अंक नहीं पाये। हमेशा श्रेष्ठ अंकों से पास हुआ। मेहनतकशों के बीच प्रचार कार्य कर चुका है। किसान का बेटा है, यानी सामूहिक फ़ार्म के कामों की भी अच्छी जानकारी रखता है," रुस्तम नये अध्यापक की तारीफ़ के पुल बांध रहा था। "जब यह समस्या हल हो गयी, मंत्री ने पूछा: 'और क्या सेवा है मेरे योग्य?' बेशक मुझे इच्छा हुई कि मैं उस लफ़्फ़ाज़ गोशातख़ां को सबक़ सिखवा दूं..."

सकीना ने हाथ पर हाथ मारा और घबराकर कह उठी:

"छि, कीशी, तुम क्या कह रहे हो? कितनी शर्म की बात है! तुम्हें क्या यह शोभा देता है..."

"लेकिन मैंने कुछ भी तो नहीं कहा," रुस्तम ने सफ़ाई दी। "मैंने ज़बान काट ली और मन में कहा: मैं अपने बारे में बुरी राय नहीं बनाने दूंगा। घर लौटकर ख़ुद ही किसी तरह इस बदमाश लफ़्फ़ाज़ से निबट लूंगा।"

"अब्बा," पेरशान ने अधीरता से कहा, "तुम्हारे लिए तो सभी लफ़्फ़ाज़ हैं और सभी दुश्मन हैं..."

"हां, हां, और तुम भी..."

उसी समय सलमान आ पहुंचा, उसने गृहस्वामी को कुशलपूर्वक लौट आने पर बधाई दी और दोनों ने एक दूसरे को चूमा। जब तक सलमान फ़सल उठाने के काम के बारे में बताता रहा, सकीना ने अपने पर क़ाबू रखा, लेकिन जैसे ही उसने तेल्ली चाची को ट्रक देने के बारे में पार्टी सचिव

के अन्यायपूर्ण आदेश का ज़िक्र किया, तो गृहस्वामिनी ने बेझिझक उसे टोक दिया:

"अब बस करो। आदमी सफ़र से लौटा है, थका हुआ है, अभी होश भी नहीं संभाल पाया है... कल कार्यालय में आयेगा, वहीं सारा कच्चा चिट्ठा सुना देना।"

"ठीक है, सलमान, अब तुम घर जाओ," रुस्तम ने हाथ हिलाया। "मेरे पसीने से तर चेहरे को ज़रा सूख जाने दो, उसके बाद उस पर ठण्डे पानी के छींटे मारना।"

सलमान ने कंधे उचकाये और अपने चेहरे पर आया असन्तोष का भाव छिपाकर अहाते से चला गया।

डटकर भोजन करने और देर तक चाय की चुस्कियां लेने के बाद रुस्तम सोने के लिए लेट गया और मिनट-भर बाद ही उसके प्रचण्ड खर्राटों से सारे घर में आड़गीर कांप उठे।

सकीना मेज़ साफ़ करके अहाते में चली गयी। केवल पेरशान के कमरे में जल रहे लैम्प का प्रकाश ज़मीन पर रंगबिरंगे धब्बे की तरह पड़ रहा था। अचानक वह शहतूत के वृक्ष के तले सफ़ेद क़मीज़ और कैन्वस की पतलून पहने आदमी को देखकर चौंक उठी। मां अंधेरे में गराश को पहली नज़र में नहीं पहचान पायी।

"किस का इंतज़ार कर रहे हो?"

"मैं एक मिनट के लिए आया हूं, मुझे टोली में और काम करना है," गराश ने आंखें चुराते हुए कहा।

"और मुझे तुमसे काम है, बैठो!" सकीना ने गराश के लिए अप्रत्याशित सख़्ती से कहा और बरामदे की ओर मुड़कर आवाज़ दी: "पेरशान, ज़रा लैम्प यहां लाना!"

पेरशान मिट्टी के तेल का लैम्प टुटियल मेज़ पर रखकर चुपचाप जाने लगी, जैसा कि शिष्ट कन्या को करना चाहिए, पर मां ने उसे रोक दिया:

"और तुम भी बैठो, बच्ची तो हो नहीं, अपने घर का दुःख भी बांटना सीखो, शायद अपनी सलाह से मां की ही मदद कर दो।"

पेरशान एड़ियों तक की सोने की सफ़ेद पोशाक पहने थी और कंधों पर शाल डाले थी। उसने सिर पीछे झटककर धृष्टतापूर्वक कहा:

"मैं ऐसे बेशर्म के साथ बैठना भी नहीं चाहती।"

गराश चौंककर पीछे हटा, उसके गालों की नसें फड़क उठीं, पर उसने बहन के साथ तू-तू मैं-मैं नहीं की और सकुचाते हुए कहा :

"मां, फिर कभी सही, अभी मुझे जाने दो।"

"बैठो!" सकीना ने ऊंची आवाज़ में कहा। "आख़िर हम कब बात करेंगे? क्या जब हमारा घर ढह जाये तब?"

अचानक अंधेरे में से सलमान की चिन्ताकुल आवाज़ आयी :

"गराश को देखा? उफ़, कितना अच्छा हुआ कि तुम मिल गये। जल्दी से कार्यालय चलते हैं, कामरेड कलंतर आये हैं, मशीन-आपरेटरों से ज़रूरी बात करनी है। वह तो रुस्तम-कीशी को भी बिस्तर से उठा देना चाहते थे, पर मैंने मना लिया, कहा : 'अच्छा नहीं लगता, बुज़ुर्ग आदमी हैं, अभी-अभी सफ़र से लौटे हैं...'"

गराश को हमेशा, अपनी चहेती नज़नाज़ की उपस्थिति में भी, सलमान से वितृष्णा होती थी, लेकिन इस समय वह उसे आकाश से उतरकर आया अपना उद्धारक फ़रिश्ता लगा।

सकीना ने बेटे को रोकना ठीक नहीं समझा, और गराश जल्दी से फाटक की तरफ़ चला गया।

बाहर अंधेरे में सलमान उसका आलिंगन कर कान में फुसफुसाया कि सामूहिक फ़ार्मों का दिन-भर दौरा करने से थका-हारा कलंतर-लेलेश सलमान के यहां बग़ीचे में उनका इंतज़ार कर रहा है, और नज़नाज़ खाना पकाने में जुटी हुई है...

गराश जानता था कि सलमान के दोस्त छंटे हुए चरित्रहीन और लोभी लोग हैं, लेकिन उस समय उसे यह सोचने की इच्छा नहीं हुई कि सलमान ने कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को "कलंतर-लेलेश" क्यों कहा, यानी इस प्रकार उसके साथ अपने अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्धों पर क्यों ज़ोर दिया। अपनी मां और बहन से गराश बचकर निकल आया था, उनमें खुलकर बात नहीं हो पायी थी, इसका मतलब है, अब उसे सुबह तक कुछ सोचने या तड़पने की कोई ज़रूरत नहीं है...

घने शहतूत के वृक्ष के साये में यारमामेद शाखा पर टंगे लैम्प के चारों ओर मंडरा रहे पतंगों को तौलिये से उड़ा रहा था।

"आइये, आइये, पधारिये," उसने गराश का स्वागत किया, तौलिये से कुरसी की धूल झाड़ी और उसे उसकी ओर सरका दिया। "कलंतर-लेलेश अभी आ जाते हैं, हाथ-मुंह धो रहे हैं... ख़ुदा क़सम, मुझे अगर सौ ज़िन्दगियां मिलतीं, तो भी उन पर क़ुरबान करते कभी दिल नहीं दुखता!" यारमामेद ने ऐन गराश की नाक के आगे भनभना रहे कीड़े को फूंक मारकर उड़ा दिया : "मरदूद, पीछे ही पड़ गया..."

"किसके लिए तुम सौ ज़िन्दगियां क़ुरबान करने को तैयार हो?" कलंतर ने अंधेरे से निकलकर हंसते हुए पूछा। उसकी कोहनियों तक चढ़ायी हुई आस्तीनों से मांसल गोरे हाथ दिख रहे थे और खुले कालर से – बेबाल थुलथुल सीना। उसका उभरी आंखों और नाक के बांसे पर जुड़ी घनी भौंहोंवाला चेहरा सुन्दर था, पर कलंतर छोटे-छोटे पैरों और लटके हुए पेट के कारण बदसूरत लगता था। वह रंगबिरंगे गाउन में सजी-धजी सुन्दरी नज़नाज़ की कोहनी थामे हुए था।

यारमामेद ने बड़ी सावधानी से कलंतर के कंधे से गीला तौलिया उतार लिया।

"अगर तुम कहते कि निनानवे ज़िन्दगियां क़ुरबान करते तुम्हरा दिल नहीं दुखता, तो मैं विश्वास कर लेता," कलंतर बोलता रहा। "बेशक, परायी! पर सौवीं यानी अपनी ख़ुद की ज़िन्दगी के बारे में मुझे शक होता है," और उसने अपनी हाज़िरजवाबी पर ख़ुश होकर ज़ोरदार क़हक़हा लगाया। उसने एक बार भी यारमामेद को असलान के कक्ष में हुई बातचीत का इशारा नहीं किया : उसका मत था कि आड़े वक़्त के लिए ऐसे ख़िदमत-गुज़ार और किसी भी प्रकार की नीचता के लिए तत्पर ओछे आदमी के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना लाभदायक होगा।

कलंतर के धृष्टतापूर्ण मज़ाक़ गराश को अच्छे नहीं लगे और जब उसने उससे पूछा : "क्या हाल हैं, रुस्तम-कीशी के वंशज?" युवक की भौंहें तन गयीं, पर वह चुप लगा गया।

लेकिन कलंतर उससे जवाब की उम्मीद भी नहीं करता था : वह बेतक़ल्लुफ़ी के सवाल करना, बात करते-करते प्रति क्षण विषय बदलना, अपने ही मज़ाक़ों पर ज़ोरदार ठहाके लगाना उच्चपदाधिकारियों की विशिष्टता मानता था, जो साधारण लोगों की पहुंच से बाहर होती है।

"मैंने सुना है, रुस्तम के घरवाले नर्द* खेलने में बहुत माहिर हैं," कलंतर ने कहा। "ज़रा खेलकर देखें..."

---

* नर्द – आज़रबैजान व ईरान में लोकप्रिय एक प्रकार का पांसों व गोटियों से खेला जानेवाला खेल।

यारमामेद लपककर घर में नर्द लेने गया, जब कि अध्यक्ष बिना इस बात का पता लगायें कि गराश उसके साथ खेलना चाहता है या नहीं, नज़नाज़ में दिलचस्पी लेने लगा और उसे अपने पास बिठाकर उसकी कमर में हाथ डाल दिया।

"तुम ठिठुर तो नहीं रही हो, मेरी जान, शाम काफ़ी ठण्डी है?"

"क्या सचमुच यह बौना इसे अच्छा लगता है?" गराश ने अत्यन्त कष्टदायी आश्चर्य के साथ नज़नाज़ की तरफ़ देखते हुए सोचा, जिसने अपना सिर मेहमान के कंधे पर टिका रखा था।

जब यारमामेद नर्द ले आया, कलंतर ने हुक्म दिया:

"शुरू करो, टैक्टर-चालक!"

"मुझे खेलना नहीं आता," गराश ने जवाब दिया।

"झूठ बोलता है यह, झूठ बोलता है," नज़नाज़ चिल्लायी। "तुम कितनी बार मुझसे जीत चुके हो?"

कलंतर ने ज़ोर नहीं दिया और गराश की तरफ़ ऐसे हाथ झटकारा जैसे वह कोई चेहरे पर चिपकनेवाला कोई पतंगा हो।

"तो फिर हट जाओ मेज़ से, अपनी इज़्ज़त की क़ीमत नहीं जाननेवाले! यारमामेद, उतरो मैदान में!.."

"मैं आपकी बराबरी करने की जुरअत कर सकता हूं, लेलेश?" यारमामेद गिड़गिड़ाया, पर फ़ौरन पांसे लेकर उसके सामने आ बैठा।

नज़नाज़ हंसती रही, दोनों खिलाड़ियों का जोश बढ़ाती रही, जब कि कलंतर बड़ी तेज़ रफ़्तार से खेलता रहा और अपनी हर चाल की तारीफ़ करता रहा। गराश देख रहा था कि कार्यकारिणी का अध्यक्ष बेवक़ूफ़ी से, बिना सोचे-समझे खेल रहा है, इसके बावजूद सारे इलाक़े के श्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध यारमामेद देखते-देखते मात खा गया।

कलंतर भांप गया था कि उसे जान-बूझकर जिता दिया गया है, पर उसने अपने चेहरे से ज़ाहिर नहीं होने दिया। वह सदा विजयी होने का अभ्यस्त हो चुका था। वह न तो बुद्धिमान ही था और न ही मूर्ख, पर सारी ज़िन्दगी अपनी पांचों उंगलियां घी में रखता आया था। अध्यक्ष के पद पर उसकी तरक़्क़ी भी संयोगवश ही हुई थी: किसी ने उसकी सिफ़ारिश की, पर किसी आदमी ने उससे बातचीत करने में दिलचस्पी तक नहीं दिखायी, उसकी तरफ़ ध्यान से देखा भी नहीं... कृषि से सम्बन्धित गम्भीर प्रश्नों पर विचार-विमर्श होते समय वह अपना मत न प्रकट करने

की कोशिश करता था, केवल अनिश्चित टिप्पणियां किया करता था: "हां, हां, बेशक! सन्देह करने का सवाल ही नहीं उठता!" वह हर बैठक में पक्ष में मत देता था, अगर अल्पमत में रह जाता, तो गला फाड़कर चिल्लाता कि उसे ग़लतफ़हमी में डाल दिया गया था। कलंतर के पास शिक्षा-शास्त्री की उपाधि भी थी, पर वह न आज़रबैजानी भाषा में ढंग से लिख सकता था और न ही रूसी में, वह किसी काग़ज़ पर तब तक हस्ताक्षर नहीं करता था, जब तक कि उसका सहायक उस पर अपने हस्ताक्षर नहीं कर देता था।

बुरी तरह हारे यारमामेद की घबराहट और नज़नाज़ की ख़ुशामदाना तारीफ़ों का आनन्द लेकर कलंतर ने सलमान के साथ मुक़ाबला करना चाहा, जो कहीं ग़ायब हो चुका था। गराश उसकी यह आदत कई बार देख चुका था: मेहमानों के आने पर सारी ज़िम्मेदारी बहन के कंधों पर डाल देना और ख़ुद कहीं ग़ायब हो जाना।

आख़िर सलमान को ढूंढ़ लिया गया, वह खेलने लगा, और बेशक कुछ ही मिनट में उसने अपने को हारा मान लिया, खीजकर पांसे फेंक दिये और ख़ुद को कोसा भी।

"अब तुम्हारे साथ खेलते हैं, सुन्दरी?"

नज़नाज़ ने नख़रे नहीं किये, उसने पांसों की तरफ़ हाथ बढ़ाया, यह गराश सहन न कर सका और वह अंधेरे से बाहर निकल आया।

"अहा, ट्रैक्टर-चालक ने हिम्मत जुटा ही ली!" कलंतर हंस पड़ा। "सावधान, सावधान, मैं चाल चलता हूं... पांच!"

"ज़रा बताना तो, कामरेड, तुम्हें मशीन-आपरेटरों से क्या काम है, फिर मैं जाऊं!" गराश झल्लाहट से कांपती आवाज़ में बोला।

"ज़रा देखिये तो, यह मज़ाक़ तक नहीं समझता!" नज़नाज़ कह उठी।

"तुम्हें क्या हुआ है, लड़के, ज़रा चैन से बैठो!" सलमान ऐसे उचका, जैसे उसे किसी स्प्रिंग ने उछाला हो, और उसने गराश का आलिंगन करने की कोशिश की।

इस पर कलंतर नाराज़ हो गया।

"यह गरम क्यों हो रहा है? खेलना नहीं चाहता, तो न खेले, अपने झोंपड़े में जाये। ज़्यादा डींग मत हांको। एक ही आदेश से तुम्हारे अब्बाजान को पदच्युत कर सकता हूँ। उसके उत्तराधिकारी बहुत मिल जायेंगे।"

गराश ने गुस्से से पागल हो, यह न समझते हुए कि वह क्या कर रहा है, पांसे उठाये और कलंतर के दम्भी चेहरे पर फेंक मारे।

"जंगली कहीं का!" नज़नाज़ चीख़ी, आकस्मिकता से कलंतर लड़खड़ाकर पीछे हटा और नज़नाज़ की कोहनी पकड़कर उसे अपनी तरफ़ खींच लिया। उसकी बांहों में गिरती हुई नज़नाज़ कर्णभेदी स्वर में चीखती रही: "पाजी! गंवार!"

लेकिन गराश कुछ नहीं सुन रहा था। जिस आदमी के कपड़े आग की लपटों में घिर गये हों वह अपने आप से दूर भागता है... गराश उस क्षण अंधेरी, सुनसान स्तेपी में भागा जा रहा था, ताकि अपने आप से, अपनी कचोटती आत्मा से, शर्म से बच कर दूर भाग सके।

तेरहवाँ परिच्छेद

१

घनी घास से ढकी नाली कपास के खेतों के चारों ओर हरी झालर की तरह लग रही थी। कलकल करता पानी लोगों को याद दिला रहा था कि नाली अभी ज़िन्दा है। शेरज़ाद किनारे पर रुककर झरने के कलकल का आनन्द लेने लगा।

कपास के पौधे दो बालिश्त ऊंचे हो चुके थे और उनमें घने पत्ते आ चुके थे। थोड़ी दूरी पर ट्रैक्टर काम कर रहा था, उसके पीछे-पीछे रंगबिरंगी पोशाकें पहने औरतें चल रही थीं और कुदालों से बचे हुए खर-पतवार उखाड़ रही थीं। नाली के पास हरे फ़ीतेवाला स्ट्रा-हैट लगाये एक युवती खनिज खाद पांस में मिलाकर खेत में बह रहे पानी में डाल रही थी।

वह पेरशान थी।

"तुम्हें कभी थकान न हो," शेरज़ाद ने उसके पास आकर कामना की।

पेरशान ने पलटकर भी नहीं देखा: न जाने वह अपने कोहनियों तक

नंगे हाथ पांस में सने होने के कारण शर्मा गयी थी या फिर काम में तल्लीन थी।

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा: 'ख़ुश रहो'।"

"इससे ज़्यादा अक़्लमंदी की बात नहीं सूझी?" युवती बड़बड़ायी।

युवक ने नाली फांदकर ज़मीन पर पड़ा बेलचा उठा लिया और पांस पानी में फेंकने लगा। ज़िद्दी पेरशान से यह बर्दाश्त न किया जा सका, उसने आंखें चमकायीं और शेरज़ाद से बेलचा छीनकर उसे ज़ोर से पटक दिया।

"कामरेड टोली-नायक, जाकर अपना काम कीजिये। मैं आपके साथ अपने श्रम-दिन नहीं बांटना चाहती।"

"मैं तो तुम्हें बस पांस के छोटे-छोटे टुकड़े करना सिखाना चाहता था।"

"मैं बहुत पहले सीख चुकी हूं। आप फ़िक्र मत कीजिये। और अगर करने को कुछ नहीं रहा है, तो कुदाल उठाकर औरतों की मदद कीजिये, थकान के मारे शायद उनकी कमर टूटी जा रही है," लड़की ने गुस्से में कह दिया।

शेरज़ाद ने आंख दबाकर देखा कि टेढ़ी-मेढ़ी क़तारों में उगे कपास के छीदे पौधों के बीच गिज़ेतार ज़ोर-ज़ोर से कुदाल चला रही है।

"अपनी सहेली पर रहम आ गया क्या? उसका पति मशीन-आपरेटर है, वही मुक्ति दिलाये अपनी पत्नी को कुदाल से।"

"और तुम खड़े देखते रहना चाहते हो?" पेरशान उपेक्षापूर्वक हँस पड़ी। "ठूंठ की तरह क्यों खड़े हो? अगर ख़ाली हो, तो कोई गाना या ग़ज़ल सुनाओ,—दिल ख़ुश हो जायेगा।"

वह नाली से नीचे की ओर फैले खेत में बह रहे पानी में बराबर पांस मिला रही थी, पर इस एकरस काम से उसे ज़रा भी तसल्ली नहीं मिल रही थी। शेरज़ाद नाली के किनारे एक तरफ़ खड़ा, युवती को निहारता सोचने लगा कि पेरशान के सीने में मां का नेक दिल धड़कता है, पर उसका स्वभाव पिता की तरह हठीला, कठोर और दृढ़ है। अगर ऐसी लड़की प्यार करने लगे, तो जीवन भर के लिए करेगी। हमेशा वफ़ादार रहेगी—जुदाई में भी और मुसीबतों में भी...

"तुमने यह दिल ख़ुश करने वाली बात क्यों छेड़ी? ज़िन्दगी बुरी कट रही है क्या?" उसने नम्र मित्रतापूर्ण स्वर में पूछा।

पेरशान फुफकारी, उसने नाली के किनारे उतरकर हाथ धोये और दुःखी स्वर में बोली:

"गराश ने हमारी बदनामी करवा दी, कैसी मुसीबत है। मां रात भर सो नहीं पाती हैं, वह माय्या को मुझसे भी ज़्यादा प्यार करने लगी थीं।" और उसने अचानक तीखे स्वर में बात ख़त्म कर दी: "अब करें कोई विश्वास इन मर्दों पर!"

"सब तो एक-से होते नहीं हैं..."

"मेरा गराश सबसे अच्छा, सबसे ईमानदार और नेक है", पेरशान ने ज़ोर से कहा। "लेकिन जब वही अपनी पत्नी के साथ ऐसे पेश आया है, तो क्या दूसरों से कोई आशा की जा सकती है?"

शेरज़ाद यह समझ गया कि इस समय पुरुषों की प्रतिष्ठा की रक्षा करना हानिकर और व्यर्थ होगा। वह कह सकता था: वह उसे प्यार करता है, अपनी सांस तक से उसे कष्ट नहीं पहुंचाना चाहता, वह उसके लिए सदा सबसे सुन्दर और प्रिय रहेगी, पर शेरज़ाद चुप रहा और ऊपर चढ़कर स्तेपी की तरफ़ देखने लगा। ट्रैक्टर रुक चुका था; स्त्रियां बन्दूकों की तरह कुदाल कंधों पर रखे बतख़ों की-सी क़तार में खेत-कैम्प की तरफ़ जा रही थीं।

"मेरी आंखों से फ़ौरन दूर हो जाओ, मेरा नाश्ता करने का समय हो गया है," पेरशान ने कहा, रूमाली से झाँक रही अपनी लटें ठीक कीं, कुरते से धूल झाड़ी और चल पड़ी, पर नाली के उस पार अचानक रुक गयी और शेरज़ाद की तरफ़ देखे बिना आवाज़ दी: "चलो, बहुत घूम लिए ख़ाली पेट तपती धूप में, जो अल्लाह ने दिया है, तुम्हें खिलायेंगे..."

खेत-कैम्प में शोर हो रहा था: औरतों ने शीतल, हवादार बरामदे में घर से लाये हुए मेज़पोश बिछा दिये और उन पर रोटियां, अण्डों की ढेरियां लगा दीं, मक्खन व पनीर रख दिये। पेरशान व टोली-नायक का स्वागत उन्होंने ज़िन्दादिल हंसी-मज़ाक़ से किया।

तेल्ली चाची, जो अपने विशाल झालरदार स्कर्ट में बंदगोभी-सी लग रही थीं, अण्डे के छिलके उतारती अचानक गिज़ेतार से कह उठी:

"नमक तो भूल ही आयी!.. ज़रा देना तो, प्यारी।"

"अरी, चाची, तुम्हारी याददाश्त को क्या हो गया है? तुम्हें उपटोलीनायक बनाया गया और तुम बिलकुल ही भुलक्कड़ हो गयीं," पेरशान हंस पड़ी।

"मैं ने तो अपनी याददाश्त रूमाल में लपेटकर एक ऐसे आदमी को भेंट देने के लिए रख दी है, जो परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य भूल गया है," तेल्ली ने मीठी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

सब तत्क्षण चुप हो गयीं: गराश बराबर के कमरे में नाश्ता कर रहा था और दरवाज़ा पूरा खुला हुआ था...

पेरशान ने रोटी की तरफ़ बढ़ाया हाथ खींच लिया। वह अपने भाई से नाराज़ ज़रूर थी, पर लोगों के सामने उसका पक्ष लेना उसने उचित समझा:

"अरी, चाची, बैत सुनाते वक़्त तुम्हारी ज़बान कितनी मीठी थी, लेकिन अब तुम्हारे मुंह से मिर्च जैसे तीखे शब्द निकल रहे हैं।"

"अपनी मीठी ज़बान मैं तुम्हें सौग़ात में दे रही हूं, बेटी, तुम इस्तेमाल करो उसे... तुम सभी को ठीक ठहराती हो, किसी के मुंह पर कड़वी बात, चाहे वह सच्ची क्यों न हो, नहीं कहती हो..."

सरकस के पहलवान जैसे भुजदण्डोंवाली मोटी औरत बीच में बोल उठी:

"कल खेत में पानी देते वक़्त मैंने तुम्हारे घर की बहू को देखा था। बेचारी पतझड़ के पत्ते जैसी पीली पड़ गयी है। कहीं बीमार तो नहीं है?"

"वह तो ईद के चांद की तरह दिखाई ही नहीं देती है," पड़ोसन ने हां में हां मिलाई। "कहीं हमेशा के लिए 'लाल झण्डा' में तो नहीं बस गयी है?"

"वहां अध्यक्ष ज़्यादा भला है!" एक लड़की ने अपनी पड़ोसन के पीछे छिपकर द्वेषभाव से कहा।

पेरशान के गालों पर लाली आने और ग़ायब होने लगी। गिज़ेतार ने सहेली पर दया करके सख़्ती से कहा:

"बड़ी ज़बान चलाती हो! शर्म नहीं आती! अगर माय्या का काम ही ऐसा हो तो? क्या सुना नहीं कि कारा केरेममोगलू के यहाँ ज़मीन में नमक बढ़ गया है? कई हेक्टेयर में। कैसी मुसीबत है यह!.. ज़्यादा अच्छा होता, उपाध्यक्ष को अपनी ज़रूरतों के बारे में बताती," और उसने क़ुम्मैत घोड़े पर सवार होकर आये सलमान की तरफ़ इशारा किया।

उसने घोड़े से उतरकर लगाम चौकीदार को पकड़ा दी और बांकी चाल से बरामदे में आकर सबको स्वाद से भरपेट भोजन करने की कामना की।

"शुक्रिया!" गिज़ेतार ने सब की तरफ़ से जवाब दिया। "आओ,

हमारे साथ दस्तरख़ान पर बैठो, पर मुसीबत यह है कि हमारे पास गरम कुछ नहीं है। हम तो गरमियों में ऐसे ही खाती रहेंगी, पर तुम्हें आदत न होने से कौर गले के नीचे नहीं उतरेगा..."

"कैसी मनहूस औरत है! तेल्ली चाची से भी बुरी," सोचते-सोचते सलमान ने मुंह बनाया, पर उसे बात सूझ गयी, उसने शेरज़ाद की तरफ़ इशारा किया, जो पेरशान के पास बैठा था और उसके मेजपोश पर से मक्खन और रोटी उठाकर खा रहा था: बरामदे में घिच-पिच थी, वे क़रीब-क़रीब एक दूसरे से सटे हुए बैठे थे। सलमान को बहुत अखरा, पर उसने जाहिर नहीं होने दिया और मुस्कराकर दोबारा बोला:

"आप लोग पार्टी संगठनकर्त्ता से पूछिये। इसका सर्वप्रथम कर्त्तव्य है—लोगों का ध्यान रखना। मुझे तो संस्कृति-भवन के निर्माण और बिजली लाने के काम निबटाने हैं।"

गराश सलमान की आवाज़ सुन कर कमरे से निकला और अपने ट्रैक्टर के पास चला गया।

"हां, खेत-कैम्पों में अब दोपहर का गरम खाना तैयार करने का समय आ गया है," शेरज़ाद ने स्वीकार किया। "बेशक, इसमें दोष मेरा है, मैं इनकार नहीं करता। हम लोगों ने हमारी औरतों और लड़कियों के कंधों पर इतना भारी बोझ डाल दिया है कि आश्चर्य होता है कि वे अभी तक खड़ी कैसे रह पा रही हैं..."

पेरशान को यह अनुभव कर आश्चर्य हुआ कि सलमान से घृणा के कारण उसे सांस लेने में भी मुश्किल हो रही है। उसे उसकी हर आदत से वितृष्णा होती थी: उस की विनीत मुस्कान से, सुराही से निकलती शराब की धार जैसी चापलूसी भरी आवाज़ से, कंधे पर आड़े डाले गये फ़ौजी अफ़सर के फ़ील्ड बैग से और उसके असीमित आत्मविश्वास से भी। उसने जान-बूझकर उसे चिढ़ाने के लिए हक्के-बक्के हुए शेरज़ाद के हाथों में छिला और नमक बुरका हुआ अण्डा और मक्खन लगाया हुआ रोटी का टुकड़ा रख दिये।

"खाओ, खाओ, बिना मां के बिलकुल सूखे जा रहे हो," पेरशान ने उसी तरह अशिष्टता से कहा, जिस तरह ग्रामीण बालाएं अपरिचितों के सामने अपने प्रेमियों से बात करती हैं। "सलमान से उम्मीद रखनेवाले तो उम्मीद करता-करता मर ही जाये... हमारे सामूहिक फ़ार्म में क्या नहीं है: गोश्त भी है, हरी सब्जियां, तरकारियां और तेल सभी कुछ तो है... एक रकाबी सूप की लागत ज़्यादा से ज़्यादा साठ कोपेक या

आधा रूबल पड़ सकती है। पैसा महीने के अन्त में श्रम-दिनों के लिए मिलनेवाली एडवांस की रक़म से काटा जा सकता है। कितना आसान है!"

चारों ओर से इसके समर्थन की आवाज़ें आने लगीं:

"बिलकुल ठीक है!"

"बहुत अच्छा सुझाव है!"

"वादा करो, सलमान, कि इसका इंतज़ाम कर दोगे!"

सलमान ने शान्त मुद्रा में सिर नवाया।

"तुम्हारी बातों से तो, ख़ानम, लगता है कि तुम्हें लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य बना देना चाहिए। सर्दियों में, चुनावों के समय मैं तुम्हारे नाम की सिफ़ारिश ज़िला सोवियत में प्रतिनिधि बनाये जाने के लिए करूंगा... दोपहर का गरम खाने का इंतज़ाम होगा, ज़रूर होगा," उसने अचानक बात ख़त्म कर दी: "कल तक तो नहीं हो सकेगा, पर परसों ज़रूर हो जाएगा।"

ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़क पर हल्के-हल्के हचकोले खाती, झाड़ियों पर धूल के गुबार उड़ाती कार जा रही थी। सलमान ने रुस्तम की 'पोब्येदा' कार को पहचानकर फ़ौरन तेल्ली चाची के खेत रवाना होने का निर्णय किया।

वहां वह क़तारों के बीचे घूम-घूमकर आदेश पर आदेश देने लगा, कहने का मतलब है, वह पूरी तरह काम में जुटा हुआ था।

स्त्रियां कपास के बौने कमज़ोर पौधों के इर्द-गिर्द की ज़मीन कुदालों से नरम कर रही थीं, खर-पतवार उखाड़ रही थीं। वे फुरती से, सुव्यवस्थित ढंग से, पर मौन काम कर रही थीं: पौधे इतने कमज़ोर थे कि सबके दिल दुःख रहे थे।

"काम बहुत धीरे चल रहा है, बहुत धीरे," रुस्तम ने दूर से ही असन्तुष्ट स्वर में कहा। "ज़रा रफ़्तार बढ़ाओ। पौधे कमज़ोर हैं, इन्हें अतिरिक्त पोषण नहीं मिला है।"

रुस्तम के स्वर में कुछ असामान्यता झलक रही थी, थकान महसूस हो रही थी, लेकिन उसका उलाहना अनुचित था, और तेल्ली चाची बर्दाश्त नहीं कर पायी।

"हम एड़ी-चोटी का पसीना एक करके काम कर रहे हैं, इसके बावजूद हम ही दोषी ठहराये जायेंगे क्या? शुक्रिया चाचा... क्या यह तुम्हारे चहेते गूंगे हुसैन का खेत नहीं है? क्या मैंने तुम्हें टोका और समझाया

30—2207

नहीं था कि तुम्हारा खुशामदी बीज बरबाद कर रहा है? और अब तुम मेरा गरेबान पकड़ रहे हो।"

अध्यक्ष ने टोपी उतारकर रूमाल से अपना गरमाया चेहरा पोंछा।

"तुम हो आख़िर लड़ाका ही!" उसने ताना दिया।

उनके पास आये शेरज़ाद ने बूट की नोक ठोस पपड़ी जमी ज़मीन पर मारकर कहा कि वास्तव में तेल्ली चाची को बहुत ख़राब खेत मिला है, लेकिन अगर इसमें पांस मिला हुआ पानी दिया जाये, तो पौधे बच जायेंगे, मज़बूत हो जायेंगे।

"समझीं?" रुस्तम ने उपेक्षापूर्वक पूछा।

"मैं तो समझ गयी, पर तुम समझे या नहीं कि अब लोगों के हाथों से कुदाल छूटे जा रहे हैं?" तेल्ली चाची चिल्लायी। "कहां हैं वे मशीनें, जिनसे मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन का अहाता खचाखच भरा पड़ा है?"

अध्यक्ष ने मूंछ पर हाथ फेरा और बड़ी मुश्किल से अपने को गाली देने से रोककर चुपचाप कार की तरफ़ चला गया।

२

शाम हो चली थी, आकाश अब हल्का नीला नहीं रहा, गहरा हरा हो चुका था, मानो उसमें खेत और बाग़ प्रतिबिम्बित हो रहे हों। पश्चिम में सूर्यास्त की काकरेज़ी पट्टियां गहरी हलरेखाओं की तरह खिंच गयी थीं।

शेरज़ाद गेहूं के ऊंचे पौधों के बीच से निकल रही बल खाती पगडण्डी पर लम्बे-लम्बे डग भरता चला जा रहा था। उसने सारा दिन ख़रबूज़ों व तरबूज़ों के खेतों, साग़बाड़ियों और मक्का के खेतों में बिताया था। उसे बड़े होते और रस से भरते फलों तथा अनाज के पौधों को देखकर ख़ुशी तो हो रही थी, पर न जाने क्यों उसका दिल पूरी तरह संतुष्ट नहीं था। हर खेत में लापरवाही से काम करने के निशान नज़र आते थे। लगता है लोग यही आस लगाये रहे कि मुग़ान की ज़मीन और मुग़ान का सूरज उनकी मदद करेंगे। वे वास्तव में कुछ समय तक मदद करते हैं, मगर सामूहिक फ़ार्म में श्रमशक्ति फ़ालतू जा रही है, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की पूरी क्षमता का उपयोग नहीं हो पा रहा है, टोली-नायक अकसर कृषि तकनीक के नियमों का पालन नहीं करते हैं। सच कहा जाये, तो ख़ुशी मनाने का कोई कारण ही नहीं था।

पगडण्डी वसन्त के खेत से निकलकर झुरमुटों में घुस गयी, थोड़ी दूरी से गुज़रते कच्ची सड़क से धूल की बू आने लगी; शेरज़ाद की रफ़्तार बराबर धीमी होती जा रही थी...

केवल अब जब उसकी मां ज़िले से लौट आयी, तब शेरज़ाद की समझ में आया कि उन दिनों उसे मां के प्यार की कितनी कमी महसूस हुई। सकीना चाची उसका बहुत ख़याल रखती थी, पर फिर भी वह ग़ैर थीं, उसके हाथ भी... अचानक न जाने क्यों उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा, मानो नाली के किनारे उगे हुए पुदीने के कारण। बहुत हो गया, क्या उसे केवल मां ही याद की सता रही थी, क्या वह अब उसी के पास जा रहा है? उसने दबी आवाज़ में, बहुत धीरे-धीरे, मानो कोई उसकी आवाज़ सुन लेगा, बैत गाना शुरू कर दिया, पर एक मिनट बाद ही अनचाहे उनमें खो गया, निरन्तर ऊंची आवाज़ में गाने लगा, एकसार लहलहाते गेहूं के खेत केस्मा-शिकस्ते* राग के मधुर गान से मंत्रमुग्ध हुए शान्त हो गये:

ऐ दोस्त, ख़ूब भर के प्याला शराब दो,
यारो, उँडेलो, अपने प्यालों को तुम भरो।
चाहो जो दोस्त बनना, बनो मेरे अच्छे दोस्त,
होगी नहीं तो तुम से लड़ाई, यह जान लो!

एकाएक किसी ने झाड़ी से बाहर लपककर शेरज़ाद के कंधे पकड़ लिये और ज़ोर से पीछे खींचकर चिल्लाया: "होप!" जंगली फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध, अपनी गरदन पर महसूस हुई गरम-गरम सांसों और खनकदार हंसी ने उसे बता दिया कि दुबकनेवाला कौन था। शेरज़ाद ने विरोध नहीं किया और जैसे गिर रहा हो, झुका और पेरशान का आलिंगन कर उसे उठा लिया।

उसके गले में पोस्ते के फूलों से गूथी माला पड़ी हुई थी, स्ट्रा-हैट की किनारी पर लाल फूल चमक रहे थे।

वह अशक्त और थककर निढाल हुई-सी उसके हाथों पर लेटी हुई थी।

दूर से मोटर के भोंपू की आवाज़ आयी, पेरशान चौंक पड़ी। शेरज़ाद ने युवती को हौले से ज़मीन पर रख दिया। पेरशान ने अपना कुरता और हैट ठीक करके सांस ली और आंख दबायी:

---

* केस्मा-शिकस्ता – एक आज़रबैजानी राग।

"डर गये थे?"

"डरूंगा किस से? सारी शाम किसी चमत्कार का इंतज़ार कर रहा था।"

"झूठ मत बोलो, झूठ मत बोलो!" युवती चिल्लायी और जब शेरज़ाद ने उसका आलिंगन करने की चेष्टा की, तो वह दूर हट गयी।

"ज़रा ठहरो तो सही," शेरज़ाद ने चिरौरी की।

लेकिन युवती रास्ता भागकर पार करके तंग घाटी की ढलान से नीचे उतर गयी। शेरज़ाद उसके पीछे भागा...

रास्ते के मोड़ पर धूल जमी 'पोब्येदा' कार खड़ी थी। रुस्तम सलमान को अन्तिम निर्देश दे रहा था: उसने उसे रात को खेत-कैंप में सोने को और वहां दोपहर में न आने को कहा, जैसा कि कई बार हो चुका था। इसमें कोई शक नहीं था कि सलमान को रात-भर सख़्त तख़्त पर करवटें बदलने की कोई विशेष इच्छा नहीं थी, पर वह समझ गया कि वह वहां से चुपचाप पशुपालन फ़ार्म में गूंगे हुसैन के पास हो आ सकता है...

रुस्तम ने खोई-खोई नज़रों से परछाइयों की तरह नज़र आये बेटी व शेरज़ाद को विदा करके कहा:

"नहीं, लड़की को सोलहवां साल लगा नहीं कि उसकी पहले नज़र आये कुत्ते के बच्चे से शादी कर देनी चाहिए।"

सलमान ख़ुशी के मारे नाच उठा, पर रुस्तम को नाराज़ कर देने के डर से उसने बात घुमा-फिराकर शुरू की:

"चाचा, मेरा तो मेरी प्यारी बहन के अलावा दुनिया में और कोई नहीं है।"

"तो इसका क्या मतलब हुआ?"

सलमान ने शर्म से नज़रें झुकाकर, ठण्डी सांसें लेते हुए, जैसे उसके दिल में दर्द पड़ रहा हो, फुसफुसाकर कहा कि वह रुस्तम का चहेता दामाद बनने के सपने देखता है, उसकी बेटी को गोदी में उठाकर चलेगा, उसके इज़्ज़तदार मां-बाप को बुढ़ापे में आराम देगा।

रुस्तम से किसी भी बात की आशा की जा सकती थी: वह केवल डांट-फटकार ही नहीं सकता था, घूंसे भी मार सकता था। बुद्धिमान सलमान, कहीं ऐसा कुछ न हो जाये, इसलिए एक तरफ़ हट गया। लेकिन रुस्तम शान्तचित्तता से सुनता रहा। वह दो नौजवानों की तुलना कर रहा था: शेरज़ाद हठी है, अपने सगे बाप के आगे भी नहीं झुके, और पार्टी

संगठनकर्त्ता बनने के बाद तो वह बौरा ही गया है। ऐसे ज़िद्दी से रिश्ता क़ायम करना सगी बेटी को आग में झोंकने के बराबर होगा... सलमान नम्र, आज्ञाकारी है, जीवन में अपना स्थान जानता है, बड़ों का आदर करना भी उसे आता है और अधीनस्थों से काम लेना भी। वह परेशान और रुस्तम का सेवक हो जायेगा। लेकिन क्या द्वेषी लोग यह नहीं कहेंगे कि रुस्तम-कीशी ने अपने दामाद को उपाध्यक्ष बनाकर सामूहिक फ़ार्म को अपने बाप की जायदाद बना लिया है? कोई बात नहीं, उसे किसी दूसरे काम पर लगाया जा सकता है। वैसे इसमें ख़तरे की बात ही क्या है, अगर दामाद अपने पुराने पद पर ही रहे? शोर मचानेवालों और लफ़्फ़ाज़ों को तो किसी भी हालत में ख़ुश नहीं किया जा सकता है...

"ख़ैर, तुम्हें क्या उसकी 'हां' कहने की उम्मीद है?" रुस्तम ने अप्रत्याशित नरमाई से पूछा।

"अल्लाह क़सम, मुझे तो सिर्फ़ आपकी 'हां' की ज़रूरत है," सलमान ने जवाब दिया और उसे स्वयं भी अपनी दृढ़निश्चयता पर आश्चर्य हुआ।

रुस्तम फिर सोच में डूब गया।

"तुमने सब सोच-समझ लिया है या यह सनक तुम्हारे दिमाग़ में अभी ही आयी है? ख़बरदार रहना, अगर एक महीने बाद ही तुमने उसे आंसू बहाने को मजबूर कर दिया, तो अपने को मरा समझ लेना। मैं यह सहन नहीं करूंगा।"

"आप भी क्या कह रहे हैं, चाचा? क्या आप मुझे पहली बार देख रहे हैं? आपने कभी मेरे बारे में कोई बुरी बात सुनी? तुम बाप हो, सरपरस्त हो, मैं तुम्हारी बेटी का गुलाम बनकर रहूंगा।"

"नहीं, बेटा, ऐसा नहीं चलेगा," परिवर्तनशील रुस्तम ने अचानक सलमान को निराश कर दिया। "जो मर्द बीवी का गुलाम बनने को तैयार हो, मैं उसे फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा। बीवी की क़ीमत समझो, उसका ख़याल रखो, लेकिन हमेशा मालिक और बादशाह बने रहो।"

"मैं यही तो कह रहा हूं, चाचा," युवक हाथ सीने पर दबाकर कह उठा। "मैं तुम्हारा गुलाम बन जाऊंगा, मैं ज़रा घबराहट में कह गया था," उसने अपनी भूल स्पष्ट की, "जो मुंह में आता है, बक देता हूं..."

रुस्तम गहरे सोच में डूबा अपनी बायीं मूंछ पर हाथ फेरने लगा, जब कि सलमान निःशब्द होंठ हिलाता र_ा।

"ठीक है, अगुओं को भेज देना, सगाई कर देंगे, और पतझड़ में अपने घर विदा करा ले जाना," रुस्तम ने कहा और शुक्रगुज़ारी अनसुनी कर कार में बैठ गया।

३

माय्या किसी के सामने अपना दुखड़ा नहीं रोयी, न उसने अपने भाग्य को कोसा और न ही किसी से शिकायत की। वह मुस्कराने और सबके सामने शान्त व संयत रहने का पर्याप्त साहस जुटा लेती थी। लेकिन अकेले रहने की देर होती कि उसके आंसू झरने लगते। उसे रात भर कष्टदायी सपने दिखाई देते थे: गराश के साथ हुई पहली मुलाक़ातें, अपना मुग़ान में आगमन – उसे सब ऐसा लगता, जैसे वह यह जागते में देख रही हो। और माय्या नीन्द खुलने पर मुंह रज़ाई से ढके लगभग निःशब्द रोती, ताकि ज़ैनब न सुन ले...

जब कि माय्या को अपने घर में शरण देनेवाली ज़ैनब को सब मालूम था, पर वह कुछ नहीं कहती थी। वह स्वयं भी निराशापूर्ण दुःख भोग चुकी थी और समझती थी कि मुसीबत में अकेला रह जाना कितना मुश्किल होता है। लेकिन वह एक और बात जानती थी, यह उसे कारा केरेमोगलू ने सिखाया था: केवल श्रम में शान्ति प्राप्त हो सकती है, स्नेहपूर्ण शब्दों से किसी और का दुःख दूर नहीं होता।

एक बार खेत से लौटने पर ज़ैनब ने माय्या को तख़्त पर मुंह के बल लेटे रोती पाया।

"अरे, यह क्या, न दिन है, न रात और सोने लेट गयीं?" उसने ज़िन्दादिली से पूछा, हालांकि ख़ुद उसका दिल दुःख रहा था। "चलो, सागबाड़ी में चलते हैं, क्यारियों में पानी देने में मेरी मदद करना।"

माय्या उचककर उठ खड़ी हुई और शर्माती हुई हंस पड़ी।

सागबाड़ी में वे झुटपुटा होने तक सब्ज़ियों की निराई और सिंचाई करती रहीं, उसके बाद ज़ैनब ने माय्या से प्याज़ जलकुंभी, धनिया, खीरे और मूली तोड़ने को और खाना पकाने को कहा।

"बड़ी फुर्ती से काम करती हो!" उसने प्रशंसा की। "कोई सोच सकता है कि तुम पुश्तैनी किसान हो। थोड़ा पुदीना और तोड़ना चाहिए, उस से खाने में बहुत अच्छी ख़ुशबू आती है... रहीम, खाना खाने आओ!"

लड़के ने हालांकि आवाज़ का जवाब दे दिया, पर आया नहीं। वह दिन-भर सूखी टहनियों को गूथकर बनाई गयी और सरकण्डे की छाजन-वाली गोशाला में हाल ही में ब्याई गाय के पास मंडराता सुनहले रंग और गरदन पर सफ़ेद हार-से निशानवाले बछड़े को निहारता रहा था।

ज़ैनब और माय्या को गोशाला में जाना पड़ा। वे चुपचाप खड़ी गाय को अपने बच्चे को चाटते देखती रहीं, जब कि बछड़ा, लगता था, जैसे उनके देखते-देखते बड़ा हो रहा है, वह अपने खपच्चियों जैसे पांवों पर खड़े होने की चेष्टा कर रहा था।

"बछिया है," ज़ैनब ने गर्व से कहा। "बढ़िया नसल की है! अगर मां पर गयी, तो दुधारू गाय बनेगी।" उसे अचानक याद आया और वह चिल्ला उठी: "चलो, खाना खाओ, अभी कारा चाचा माय्या को लेने आयेंगे। तुम्हें आज सिंचाई करनेवालों के साथ काम करना है।"

"अभी काफ़ी समय है," माय्या ने कहा।

"मेरे अब्बा हमेशा कहा करते थे: काम जल्दी-जल्दी करना चाहिए और खाना धीरे-धीरे खाना चाहिए। अगर मैं जल्दी करती हूँ, तो कौर गले से नीचे नहीं उतरता।"

बेटा गोशाला से निकलकर भागा, उसने जल्दी से नाली में हाथ-मुंह धोये और एक मिनट बाद ही वह शान्ति से बरामदे में बैठा था।

उन्होंने खाना शुरू ही किया था कि कारा केरेमोगलू की प्रीतिकर आवाज़ सुनाई दी:

"ज़ैनब, माय्या, कहां हो तुम लोग? लोग इकट्ठे हो गये हैं।"

ज़ैनब ने मेहमान से सोआ पड़ा पुलाव खाने का अनुरोध किया: बहुत स्वादिष्ट बना है!

कारा केरेमोगलू ने इनकार कर दिया: उसने अभी-अभी खाना खाया है, हां, अगर पीने को कुछ खट्टी और ठण्डी चीज़ हो, तो दूसरी बात है। पर ज़ैनब और माय्या को जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं: श्रोता इंतज़ार कर लेंगे, सिगरेट पियेंगे, गपशप करेंगे, और वह भी शहतूत के नीचे बेंच पर बैठकर सुस्ता लेगा।

माय्या अध्यक्ष के लिए ओवदुग* की एक प्याली लायी। कारा केरेमोगलू ने उसे पीकर आस्तीन से होंठ पोंछे और कह उठा:

---

*ओवदुग – खट्टी छाछ जैसा पेय।

"सचमुच आबे हयात है। शुक्रिया बेटी, बुड्ढे की तमन्ना पूरी कर दी। पर, ख़ुदा के वास्ते जल्दबाज़ी मत करो, सिंचाई करनेवाले कहीं नहीं भागेंगे, काम का भाषण सुनने के लिए वे अंधेरा हो जाने तक बैठने को तैयार हैं।" फिर वह जंभाई लेकर बोला: "काश, ये लवणकच्छ न होते, फिर तू अनमोल होती, मेरी प्यारी मुग़ान की धरती! .."

सिंचाई करनेवाले सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय की इमारत के पास ज़मीन पर बैठे वक्ता की प्रतीक्षा कर रहे थे। माय्या का भाषण वे इतने ध्यान से सुन रहे थे कि उसे शर्म आने लगी: आपकी इस लगन के लिए मैं आपको क्या इनाम दूं, प्रिय मित्रो? ख़ुद मुझको बहुत कम अनुभव है, और किताबी ज्ञान मुग़ान में हमेशा काम नहीं आ सकता है... धीरे-धीरे आम बातचीत शुरू हो गयी। माय्या को मिट्टी और सिंचाई के नियमों के बारे में ही नहीं, बल्कि आणविक शक्ति, विदेशी साम्राज्यवादियों की काली करतूतों, समुद्र से तेल निकालने आदि के बारे में भी प्रश्नों के उत्तर देने पड़े... वह जानती थी कि ये लोग दिन भर चिलचिलाती धूप में काम करते रहने के बावजूद अपने-अपने घर नहीं गये और उससे नये, अनपेक्षित प्रश्न पूछ रहे हैं। माय्या अपने को सौभाग्यशाली अनुभव कर रही थी कि वह उन लोगों में ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा जागृत करने में सफल हो गयी है। उसकी आवाज़ सशक्त हो उठी, उसमें आत्मविश्वास झलकने लगा, और उन क्षणों में वह इतनी सुन्दर लगने लगी कि चहारदीवारी से, जहां युवक बैठे थे, जब तब ठण्डी सांसों की आवाजें आ रही थीं।

जब वह लौटकर आयी, घर में शान्ति व्याप्त थी। चांद ने फ़र्श पर अपनी चांदनी का हल्का नीला क़ालीन बिछा रखा था, निद्रा-मग्न बालक की एक समान सांसों की आवाज़ आ रही थी। माय्या बिस्तर पर लेट गयी और उस रात्रिकालीन निस्तब्धता में उसे इतना अकेलापन महसूस हुआ कि वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

नंगे पैरों की आवाज़ आयी, ज़ैनब ने सोने के लम्बे कुरते में तख़्त के किनारे बैठकर माय्या को अपने सीने से लगा लिया।

"नहीं, नहीं, मुझे तसल्ली मत दिलाओ... मुझे मालूम है कि तुम अच्छी हो, पर मुझे तसल्ली मत दिलाओ," माय्या फुसफुसायी। "किसे ज़रूरत है मेरी अब? अगर मेरा पति मोर्चे से अपंग होकर लौटता, तो भी मैं अपने को सौभाग्यशाली समझ लेती..." उसने मुंह पर हथेली रख

ली, उसका दम घुटने लगा। "अगर उसके पास न घर होता, न पैसा, न खाने को रोटी, तब भी मैं अपने को सौभाग्यशाली समझ लेती। पर अब मैं कौन हूं? बिना घरवालों के, बिना रिश्तेदारों के परदेस में पड़ी हूं, मेरा दिल दूसरी औरत के पैरों तले रोंदा जा रहा है। ऐसे जीने का क्या मतलब हो सकता है?"

"माय्या, सुनो, तुम जवान हो, पढ़ी-लिखी हो, दुनिया देख चुकी हो और तुममें अक़ल भी मुझ गंवाई औरत से ज़्यादा है," ज़ैनब ने कहा। "लेकिन मैं कष्टों की राह से गुज़र चुकी हूं। विश्वास करो, यह रास्ता काले फाटक की तरफ़ जाता है और अगर वह तुम्हारे पीछे बंद हो गया, तो तुम फिर कभी न सूरज को देख सकोगी, न चांद को और न ही किसी आदमी को। तुम ख़ुद कई बार कह चुकी हो कि प्रेम ही जीवन होता है। लेकिन क्या केवल पुरुष का प्रेम ही होता है? क्या श्रम के प्रति प्रेम से लोग सुखी नहीं होते? ज़रा ध्यान से सुनो, नाली कलकल करती क्या कहती है: भूलो मत, तुम्हारी हमें ज़रूरत है! और जन्मभूमि के प्रति प्रेम? तुम्हें और मुझे चांद से भी प्यार है, आकाश से भी, बाग़ में फूल खिले पेड़ों से भी और खेतों से भी, – हमें उनसे भी सुख मिलता है..."

ज़ैनब माय्या को कभी विवेकपूर्ण युक्तियों से, तो कभी स्नेहपूर्ण बातों से सान्त्वना दिलाने लगी, माय्या कुछ शान्त हो गयी। ज़ैनब तभी गयी, जब उसे प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न माय्या की एक समान सांसें सुनाई देने लगीं।

प्रभात धुपहला हुआ। ज़ैनब अहाते में चिंतामग्न घूमती-फिरती माय्या के साथ ऐसे बातें कर रही थी, जैसे कुछ हुआ ही न हो – ज़िन्दादिली और काम-काजी ढंग से।

खेत में अपने बारे में सोचने की फ़ुरसत बिलकुल नहीं मिली – माय्या बिना थकान महसूस किये डग भरती एक खेत से दूसरे में, एक नाली से दूसरी पर जाती रही।

वह काफ़ी देर गये घर लौटी, उसे वहां कोई नहीं मिला – शायद ज़ैनब बेटे के साथ संस्कृति-भवन चली गयी थी। माय्या के अपने कमरे में क़दम रखते ही उसे फूलों की अत्यन्त मादक सुगन्ध आयी, उसने बत्ती जलायी और देखा कि मेज़ पर लालों का, तड़ित-झंझा के बाद स्तेपी पर तने

इन्द्रधनुष जैसा, रंगबिरंगा विशाल गुलदस्ता रखा है। उसने फूलों को चेहरे के पास लाकर अपनी आंखें मूंद लीं।

यानी कोई माय्या को याद करता है, उसे प्यार करता है!..

४

सकीना के दो बच्चे हुए थे, लेकिन अगर उसके दस बच्चे होते, तो वह और भी अधिक सुखी होती। बच्चे को अपनी कोख में संभालना, उसे जन्म देना और अपना दूध पिलाना, – भला इससे बढ़कर सुख कोई हो सकता है?

सकीना कहती थी कि हर मां पर जनता को गर्व होता है, वह धरती का आभूषण होती है। बच्चे की आवाज़ से – चाहे वह अपना हो या पराया – उसका हृदय वात्सल्य से ओत-प्रोत हो उठता था... बुढ़ा जाने पर सकीना पोते खिलाने के सपने देखती रहती थी। आज़रबैजानी लोकोक्ति में भी यही कहा गया है: "बच्चे तो मीठे होते ही हैं, पर बच्चों के बच्चे उनसे भी ज़्यादा मीठे होते हैं।" गराश के विवाह करते ही वह उस घड़ी का इंतज़ार करने लगी, जब वह पोते को पालने में झुलाने का सुख प्राप्त करेगी। वह अकसर कल्पना करती कि तब वह पति से कहेगी: "ऐ, कीशी, अब मिठाई खिलाओ, आज नहीं तो कल तुम दादा कहलाने लगोगे।"

रुस्तम ख़ानदान का घर छोड़कर जाते समय माय्या सकीना की आशाएँ भी अपने साथ ले गयी।

अगर बहू नालायक़ होती, तो उसे घर से जाने देते समय सकीना का दिल नहीं दुखता। उसे माय्या से बहुत लगाव हो गया था, और उसे जितनी ज़्यादा बहू की याद आती, दिल में उतने ही ज़ोर से हूक उठती।

अन्त में सकीना ने पति से दृढ़तापूर्वक कह ही दिया कि वह बहू से मिलना चाहती है।

रुस्तम का इरादा शाम की चाय आराम से पीने का था: घरवाली ने यह बात बहुत बेवक़्त छेड़ी है।

"मैं वैसे ही नहीं जानता कि इस क़िस्से का अन्त कैसा होगा, और इधर तुम मेरे कान खाये जा रही हो!" उसने ग़ुस्से में जवाब दिया।

"मैं तो, कीशी, अभी कहे दे रही हूं कि इस सबका नतीजा कैसा निकलेगा। बदचलन औरत कभी वफ़ादार नहीं होती। कोई दूसरा पसंद

आ जायेगा, फ़ौरन हमारे बेटे को छोड़ जायेगी। इसका और कोई अंजाम नहीं होगा। लेकिन अगर गराश दूसरी बीवी के साथ घर बसा ले, तो भी मैं माय्या को नहीं भूलूंगी। उसे हमेशा अपना समझती रहूंगी।"

रुस्तम ने अत्यन्त दुःख से मुंह बनाते हुए कहा कि वह केवल कपास के खेत से जल्दी खर-पतवार को साफ़ कर डालने की चिन्ता में ही डूबा रहता है। इस समय केवल एक कम्बाइन काम कर रही है, तीन खड़ी हैं: ख़राब हो गयी हैं। आम बात है। लोगों को गेहूं की कटाई के लिए भेजा, तो कपास बरबाद होने लगती है, उन्हें वापस कपास चुनने भेजा, तो तरबूज़-ख़रबूज़े सूखने लगते हैं। अध्यक्ष को हज़ारों चिन्ताएं होती हैं, जब कि उसकी बीवी उसे शायर ग़रीब* का क़िस्सा सुनाने बैठ गयी है...

"मेरा दिल ग़म के मारे टूटा जा रहा है, गला रुंधा जा रहा है," सकीना ने दर्दभरी आवाज़ में कहा। "आख़िर मैं तुम्हारे साथ अपना दुःख न बांटूं, तो और किसके साथ बांटूंगी?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, इसके अलावा बच्चों के सारे दुःख भी मेरे ही मत्थे मढ़ोगी।" रुस्तम ने ग़ुस्से में चाय मेज़पोश पर छलका दी। "मैंने सोचा था, वे बड़े होकर बाप के लिए सहारा बनेंगे। मुझे बस यही नसीब हुआ है... इसका कभी अन्त नहीं होना।"

"पर, कीशी, तुम ऐसे ख़याल मन में लाकर अपने को तड़पाओ मत," पत्नी ने सलाह दी। "सब ठीक हो जायेगा।"

पत्नी की शान्तचित्तता से रुस्तम अपना धीरज बिलकुल खो बैठा।

"कभी रोती हो, कभी सीख देती हो। साफ़-साफ़ कहो, तुम चाहती क्या हो?"

"कार निकालो और मुझे 'लाल झण्डा' छोड़ आओ, बहू को देखकर लौट आऊँगी।"

पत्नी ने चांद की तरफ़ इशारा किया, जो अपना क्षीण प्रकाश वृक्षों के शिखर पर बिखेर रहा था।

"आजकल चांद जल्दी सिर पर आ जाता है," सकीना ने बेफ़िक्री से कहा। "रात होने में अभी बहुत देर है... सब से अच्छा मौक़ा है। माय्या घर पर होगी, दिन में उससे घर पर मिलना मुश्किल होगा..."

---

* शायर ग़रीब – दो प्रेमियों के बारे में प्रचलित दंत-कथा 'ग़रीब और सनम' का नायक।

यह समझकर कि पत्नी का इरादा पक्का है, रुस्तम ने कहा कि वह भी 'लाल झण्डा' जायेगा: उसे कारा केरेमोगलू से मिलना है, उसका गरेबान पकड़कर कहना है: "कितनी बार कह चुका हूं, अपने सामूहिक किसानों को चेतावनी दे दो कि वे नाली के निकास पर कूड़ा-कचरा न डाला करें!"

"अरे, कीशी, अगर डण्डा लेकर जा रहे हो, तो मेरा घर पर रहना बेहतर होगा!" सकीना ने ठण्डी सांस लेकर कहा।

रुस्तम ने सिर थाम लिया। कैसी बेवक़ूफ़ औरत है! अब सिखाने लगी कि लोगों के साथ कैसे पेश आना चाहिए... उसने कुछ सोचकर पत्नी को शान्त किया: उसका झगड़ा करने का कोई इरादा नहीं है, फिर कारा केरेमोगलू ऐसा आदमी नहीं है, जिसके साथ झगड़ा किया जाये, — वह तो यह सब मज़ाक़ में कहेगा... पेरशान ने, यह सुनकर कि माता-पिता कहां जा रहे हैं, कहा कि वे उसे भी माय्या के पास ले चलें। उसकी चुटिया पकड़कर उसे सोने भेज देना कहीं ज़्यादा उचित होता, पर पिता न जाने क्यों गुस्से में हांफता हुआ कार निकालने शेड में चला गया।

उधर बेटी बग़ीचे में घूमघूमकर ओस सिक्त लाले चुन रही थी।

किसी ने ज़ोर से गली का फाटक खटखटाया।

"ख़ुदा करे कुछ ख़ुशख़बरी हो," रुस्तम ने कहा और अलसेशियन को चुप रहने को कहकर बुड्ढों की तरह पैर घिसटता फाटक की तरफ़ बढ़ा।

बाहर केरेम खड़ा था।

"बस तुम्हारी ही क़सर रह गयी थी," गृहस्वामी बड़बड़ाया, पर उसे अपनी परम्परा तोड़ने का साहस नहीं हुआ और उसने एक ओर हटकर मेहमान को अंदर आने दिया।

केरेम ने कार, सजी-धजी सकीना और पेरशान के हाथों में शानदार गुलदस्ते पर सन्देहपूर्ण नज़र डाली।

"लगता है मैं बेवक़्त आया हूं, चाचा, पर मैं थोड़ी वक़्त ही लूंगा... मेरे बच्चे हैं, उन्हें खिलाना-पिलाना और पाल-पोसकर बड़ा करना है। मुझे पशुपालन फ़ार्म में काम करने की इजाज़त दे दो।"

"तुम्हें अक़्ल नहीं आयी क्या? फिर वही पुराना राग अलापने लगे?" रुस्तम ने धमकी भरे स्वर में पूछा।

"मैंने शाम के वक़्त इस उम्मीद से तुम्हारा दरवाज़ा खटखटाया है कि

ठण्डक से तुम्हारा गुस्सा कुछ कम हो गया होगा। मैं जानना चाहता हूं: तुम्हें इंसाफ़ में विश्वास है या नहीं? मेरी ज़िन्दगी चरागाहों में बीती है, मैं वहीं मरना चाहता हूं।"

रुस्तम ने सिर झुका लिया, उसे दिन में ज़िला समिति के सचिव के साथ टेलीफ़ोन पर हुई बात याद आ गयी। असलान ने पूछा था कि खेती का काम कैसा चल रहा है और चेतावनी दी थी कि कुछ दिनों में भयंकर सूखा पड़नेवाला है, — उन्हें मिनट-मिनट की क़ीमत समझनी चाहिए, सिंचाई ढंग से करनी चाहिए और पानी की बूंद-बूंद की बचत करनी चाहिए। अन्त में उसने उसे पशुपालन फ़ार्म की समस्याओं का समाधान करने और साथ ही चरवाहे केरेम को वापस वहां लगाने की सलाह भी दी थी। रुस्तम ने सफ़ाई देने की कोशिश की थी: इनचार्ज को इसलिए हटाया गया, क्योंकि वे गम्भीरता से पशुपालन फ़ार्म की समस्याओं का समाधान करने में जुट गये हैं और उसके संचालन को सुदृढ़ बना रहे हैं... खड़खड़ाहट के बीच उसे असलान की अविश्वासपूर्ण हंसी सुनाई दी थी: सचिव को अभी इन परिवर्तनों की आवश्यकता का विश्वास नहीं हुआ, अभी कुछ और बातें स्पष्ट करनी हैं, उनका गहराई में जाकर अध्ययन करना है। "वहां गहराई में अध्ययन करने की ज़रूरत क्या है?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "सब कुछ स्पष्ट है!" और उसने सोच लिया कि फिर अनाम पत्रों की बौछार होने लगी है... जब तक वह मौन रहा, केरेम मुट्ठी में दाढ़ी मसलता रुस्तम के सिर के ऊपर से चांदनी में नहायी स्तेपी में कहीं देखता रहा।

"अरे, कीशी, ज़िद मत करो," सकीना फुसफुसायी, "क्यों दुश्मनी मोल लेते हो? सिर्फ़ नेक कामों से ही नाम होता है।"

रुस्तम जैसे नीन्द से जाग उठा, उसने तीखी आवाज़ में पूछा:

"अच्छा, बताओ, तुम ईमानदारी से काम करोगे या फिर पहले की तरह अपनी चाल चलाने लगोगे?"

"तुम्हारी बात मेरे दिल में तीर-सी चुभ गयी है, कीशी," केरेम ने ठण्डी सांस ली। "मैं जवाब देता, पर तुम्हारी उम्र का ख़याल आ जाता है। लेकिन एक न एक दिन तुम्हारी आंखें खुल ही जायेंगी। तुम ख़ुद देख लोगे कि तुमने कितना बुरा काम किया है।"

रुस्तम कृपापूर्वक हंसकर बोला:

"अगर मेरी आंखों पर पट्टी बंधी होती, तो मैं कैसे देखता कि तुम कैसे पशुपालन फ़ार्म को उजाड़ रहे हो।"

"तुम, चाचा, आदमी ईमानदार हो, पर न जाने किसने तुम्हारे कान भर दिये हैं। तुम बेकार मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हो, मुझ पर ठप्पा लगा रहे हो! मेरे बच्चों के आंसुओं से तुम भी अछूते नहीं रहोगे।"

"ठीक है, ठीक है, गूंगे हुसैन के पास जाओ," रुस्तम ने उसे टोक दिया, "उससे कहना, वह तुम्हें काम पर लगा ले। लेकिन," उसने क्रूर मुद्रा बनाई, "अगर लफ़्फ़ाज़ी में फंसे, तो फिर ख़ुद ही को दोष देना। तुम्हारे ख़ानदान की यह कमज़ोरी है–पराये मामलों में टांग अड़ाने और झूठी शिकायतें लिखने की।"

चरवाहे ने मिनट भर अध्यक्ष की तरफ़ एकटक देखा, पर कहा कुछ नहीं, माथे पर टोपी खींची और धीरे-धीरे बाहर चला गया।

फाटक के पास उसे भागकर पहुँची पेरशान ने रोक लिया और उसकी ओर कुछ लाले के फूल बढ़ाये।

"ये गाराग्योज़ के लिए हैं, चाचा!"

केरेम के होंठों पर मुस्कान खेल गयी।

"तुम बहुत अच्छी लड़की हो, शुक्रिया!"

आधा घंटे बाद 'पोब्येदा' कार ज़ैनब क़ुलियेवा के घर के बाहर रुकी। गांव में सन्नाटा छाया हुआ था, चांदनी घास पर छिटक रही थी, लगता था जैसे वे नीली बर्फ़ से ढके डबरे हों।

"हम बहुत अच्छे वक़्त पहुंचे हैं," रुस्तम गाड़ी से निकलता हुआ फुफकारा। "कारा घोड़े बेचकर सो रहा है, उसे शहनाई भी नहीं जगा सकती।" उसने हथेलियां मुंह से लगाकर आवाज़ दी: "प्यारी बहन, तुम्हारे मेहमान आये हैं!"

आवाज़ बग़ीचों में गूंज उठी, पर किसी ने जवाब नहीं दिया। कार के पास खड़ी पत्नी और पेरशान की तरफ़ मुड़कर रुस्तम ने हाथ हिला दिये। उसी समय खिड़की खुली और नीन्द से भरी आंखें मलते हुए रहीम ने झांककर देखा।

"आपको किससे मिलना है? मां से? अभी वह खेत में हैं, कटाई पर..."

"कारा भाई अपना नाम अख़बार में छपाने की ख़ातिर मरे जा रहा है," रुस्तम ने मज़ाक़ किया। "मुन्ने, पर माय्या कहां है?"

"उन्हें कहां होना चाहिए? सिंचाई के काम पर," रहीम ने समझदारी से जवाब दिया, जंभाई ली और खिड़की बंद कर ली।

५

माय्या लालों का गुलदस्ता अपने होंठों पर दबाये बरामदे में खड़ी थी। अचानक सीढ़ियां चरमरायीं, पेरशान बरामदे में भागी आयी और बवण्डर की तरह माय्या पर टूट पड़ी।

"कितनी तड़प गयी हूं तुम्हारी याद में! लगता है तुम तो मुझे और मां को बिलकुल ही भूल गयी हो।" वह जवाब का इंतज़ार किये बिना बोलती रही। "अब्बा और मां कारा केरेमोगलू को ढूंढ़ने खेत में गये हैं, पर मैं बग़ीचे में तुम्हारा इंतज़ार करती रही। मैंने ठान ली थी कि चाहे सुबह तक बैठना पड़े, पर मिलूंगी ज़रूर। कैसी हो? क्या सचमुच अभी तक यहां ऊबी नहीं?"

माय्या मुस्करा भर दी। उसे पेरशान के साथ अच्छा लग रहा था, इस मुलाक़ात से काफ़ी ख़ुशी हुई, पर उसकी परों सदृश बरौनियोंवाली आंखों में उदासी की छाया झलक रही थी।

रुस्तम व सकीना जब खेत से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि माय्या व पेरशान बरामदे की सीढ़ियों पर एक शाल ओढ़े बैठी हैं और फुसफुसाकर बातें कर रही हैं।

"बेटी!" सकीना आह भरकर बहू की तरफ़ लपकी, माय्या के गाल पर आंसू की गरम बूंद गिरते ही वह चौंक उठी।

रुस्तम ने बहू के साथ शिष्टतापूर्वक दुआ-सलाम की और तुरन्त कारा केरेमोगलू पर बरस पड़ा: ज़रा देखिये तो, इनके बताने से पहले जैसे रात को कटाई का पता ही नहीं था... इसके अलावा भाषण देने की और सूझी: हमारे पड़दादा सौ बरस पहले रात में गेहूं की कटाई करते थे। हां, काटते थे, पर इससे क्या होगा? अपने प्रचारात्मक भाषणों से रुस्तम के कान खाने के बजाय बेहतर होता कि अपने लोगों से कूड़ा-कचरा नाली में न डालने को कहते। पर इस लफ़्फ़ाज़ ने रुस्तम को क्या जवाब दिया? खीसें निपोड़ दीं: "तुम्हें बहुत पहले फ़िल्टर लगवा लेना चाहिए था।" जैसे बिना कारा केरेमोगलू के बताये रुस्तम नहीं जानता हो कि उसे क्या करना चाहिए...

"अरे, ठहरो भी," सकीना ने चिरौरी की। "कम-से-कम कुछ कह तो लेने दो। बेटी," उसने माय्या को सम्बोधित किया, "क्या जल्दी लौट आओगी?"

माय्या की घनी बरौनियां आंखों की बेताब चमक छिपाकर झुक गयीं। माय्या रूस्तम व सास की आभारी थी कि उन्होंने उसके घाव नहीं कुरेदे, उससे सवाल नहीं पूछे और उसके साथ सहृदयता का व्यवहार किया। लेकिन गराश के घर वह आख़िर क्यों लौटकर जाये?

"नहीं, मेरे लिए यहां रुकना ज़रूरी है। यहां सिंचाई में इतनी गड़बड़ हो रही है कि उसे सुधारने में काफ़ी देर लग जायेगी।"

रुस्तम का झुर्रीदार चेहरा विजयी मुस्कान से खिल उठा। 'नवजीवन' में तो एक हेक्टेयर ज़मीन में भी नमक नहीं बढ़ा। इसे कहते हैं सही ढंग से खेती करना! .. बहू जितने ज़्यादा दिन यहां रहेगी, अकड़ू कारा केरेमोगलू को उतनी ही ज़्यादा शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। उसने अत्यन्त प्रभावशाली व सम्मानपूर्ण शब्दों से पत्नी को रोक दिया:

"नहीं, नहीं, मेरी बुढ़िया, अपना काम सबसे ज़्यादा ज़रूरी होता है। मुझे बहू के बिना कितनी ही बोरियत क्यों न होती हो, पर मैं उसके फ़ैसले की तारीफ़ करता हूं। अपना काम पूरी ज़िम्मेदारी से करना चाहिए। मैं इसकी प्रशंसा करता हूं..."

"क्या किया जाये," सकीना का चेहरा लाल हो उठा।

पेरशान ने कहा कि वह रात को माय्या के पास रहेगी और सुबह किसी ट्रक में लिफ़्ट लेकर सीधे खेत-कैम्प पहुंच जायेगी। मां और बाप ने एक दूसरे की तरफ़ देखकर ठण्डी सांस ली और अपनी स्वीकृति दे दी।

एक मिनट बाद कार के इंजन का शोर बंद हो गया, गांव के रास्तों में फिर सन्नाटा छा गया। पेरशान माय्या को बग़ीचे में ले गयी, वह उसे एक मिनट भी चैन से नहीं बैठने दे रही थी: कभी वह उसे डाल से तोड़ी चेरी खिलाती, कभी छिटकी चांदनी का आनन्द लेने को मनाती, कभी उसका कंधा पकड़कर फुसफुसाती:

"सुनो, सुनो, कहीं कोई प्रेमी अपनी प्रियतमा को बैत गाकर सुना रहा है। आख़िर कौन है वह ख़ुशक़िस्मत लड़की? उफ़, दिल कितना चाहता है कि कोई हमारे दरवाज़े पर प्यारा-सा गीत गाये..."

"तुम्हें अब शादी कर लेनी चाहिए। तड़प रही हो!" माय्या ने कहा। वह अल्हड़ पेरशान की तुलना में अपने को बुढ़िया महसूस कर रही थी,

उसे उसकी किसी को प्यार करने, किसी का प्यार पाने की उत्कट इच्छा से ईर्ष्या हो रही थी और उसने ठण्डी सांस लेकर आगे कहा: "लेकिन पहली ही उमंग को अपने पर हावी मत होने देना। लड़का कितना ही अच्छा क्यों न हो, पहले उसे अच्छी तरह देख-भालकर आज़मा लेना, सचमुच प्यार करता है या नहीं? हम लड़कियां भोली-भाली और बहुत जल्दी विश्वास कर लेनेवाली होती हैं, इसीलिए तो आंसू बहाती रहती हैं।"

उसकी बातों में अपनी क़िस्मत से शिकायत झलक रही थी और संवेदनशील पेरशान का हृदय सहानुभूति से भर उठा। उसने सोचा कि उसे किसी भी तरह माय्या को सान्त्वना दिलानी चाहिए और वह बड़े उत्साह से झूठ बोलने लगी:

"माय्या, सच, मेरी क़सम, तुम्हारे जाने के बाद गराश सूख कर कांटा हो गया है। वह तुम्हें बेहद प्यार करता है। कुछ दिन हुए मुझे वह बग़ीचे में ले गया और उसने अपना दिल खोलकर मेरे सामने रख दिया, रोने लगा: 'बुरे लोगों का घर ढह जाये, मैंने बेकार अफ़वाहों पर विश्वास करके पत्नी को नाराज़ कर दिया...'"

पेरशान को उस क्षण पूर्ण विश्वास था कि वह बिलकुल सच बोल रही है और उसकी बातों पर ही माय्या व भाई का सुखी जीवन निर्भर करता है। और युवती माय्या का हाथ अपने दिल पर रखकर बोलती रही...

"कल घर चलते हैं! गराश ने कहा है: 'अगर खेत से घर लौटने पर माय्या मुझे सोने के कमरे में नज़र आ जाये तो मैं चमत्कार पर विश्वास कर लूंगा...' चलोगी? 'दुनिया में मेरे लिए मेरी माय्या से बढ़कर प्यारा कोई नहीं है!' उसने यही कहा था। चलोगी?"

माय्या भांप गयी कि पेरशान की बातों में रत्ती भर भी सच्चाई नहीं है, लेकिन उसे युवती के दिल को ठेस पहुंचाने की इच्छा नहीं हुई, उसने नरमी से कहा।

"चलो, सोने चलते हैं। सोच-समझ लेंगे, अभी रात पड़ी है। कल दोनों को काम पर तो जाना है..."

दोनों ने परों का गद्दा फ़र्श पर ही बिछा लिया और सो गयीं। भोर में जब ज़मीन और पेड़ों से ठण्डक निकलती होती है, बहुत मीठी नीन्द आती है, लेकिन पेरशान चौंककर उठ बैठी, जैसे किसी ने उसे धक्का दे दिया हो। उसे किसी विपत्ति का पूर्वाभास हुआ। उसने घुटनों के बल बैठकर बग़ीचे में झांका: वहां सलमान और रहीम ख़ूबानी के घने वृक्ष के नीचे

बैठ दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे। "यह मरदूद यहां क्यों आ टपका?" पेरशान ने सोचा और सलमान पर नज़र रखने लगी। क्या सचमुच यह माय्या के पास आया है? भाभी इसे आवारा कुत्ते की तरह दुतकारकर भगा क्यों नहीं रही है? युवती के हृदय में वैर-भाव जाग उठा, उसने शान्ति से सो रही माय्या को हिलाकर ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा :

"उठो, उठो, मेहमान आया है... पर देखो, उसे मेरे बारे में मालूम नहीं होना चाहिए..."

"कौन-सा मेहमान?" माय्या डर गयी। सलमान के आने की ख़बर सुनकर वह सोच में पड़ गयी, लेटकर रज़ाई ओढ़ ली, पर फिर उचककर उठ खड़ी हुई। "शायद काम से आया है। लगता है उनके यहां ज़मीन में नमक बढ़ गया है।"

इस अटकल से पेरशान को शांति मिली। क्योंकि सलमान उपाध्यक्ष है, कोई ऐसा काम भी तो हो सकता है कि उसे आधी रात में दीवानों की तरह भागकर ज़रूरी आदमी को बिस्तर से उठाना पड़ जाये। क्या रुस्तम को कभी-कभी रात को नहीं जगाया जाता था? और पेरशान ने ख़ुश होकर भाभी की कपड़े पहनने, हाथ-मुंह धोने में मदद की, और जैसे ही माय्या बरामदे में निकली, वह फिर खिड़की के पास आराम से उस पर नज़र रखने के लिए बैठ गयी।

माय्या हाथ पीठ पीछे बांधे बरामदे से उतरी और उचककर लपके सलमान से उसने बेरुख़ी से पूछा :

"किस काम से आना हुआ आपका?

सलमान ने पहले रहीम को आंख मारी, बालक इशारा पाते ही भाग गया। तब सलमान ने झाड़ी में से एक टोकरी और पोटली निकाली और माय्या की ओर बढ़ाई।

"ख़ानम, मेरी बहन शहर गयी थी : इस टोकरी में मिठाइयां हैं, और यह गैबरडीन का टुकड़ा ओवरकोट के लिए है। बहुत बढ़िया कपड़ा है! दिल से दे रहा हूं," और उसने सिर नवाया।

"निकलो यहां से!" माय्या ने स्पष्ट स्वर में कहा।

सलमान का चेहरा उतर गया, वह पीछे हटकर हकलाता हुआ माफ़ी मांगने लगा, पर माय्या ने फिर ज़ोर से कहा :

"निकलो!.. अगर चुपचाप नहीं गये, तो पड़ोसियों को जगा दूंगी।"

माय्या की काली आंखों में इतना क्रोध उमड़ रहा था कि सलमान गली के फाटक की तरफ़ भागा, लेकिन टोकरी और पोटली भी उठा ले जाना नहीं भूला।

जैसे ही पीली पड़ी और ग़ुस्से से कांपती माय्या घर के अंदर आयी, पेरशान ख़ुशी से चिल्लाती उसके गले में हाथ डाल लिपट गयी।

"तुमने उस उल्लू को ख़ूब अच्छा सबक सिखाया, क़ुरबान जाऊं तुम पर!"

६

रुस्तम को बताया गया कि कार्यालय में असलान, शराफ़ोगलू और गोशातख़ां उसकी प्रतीक्षा में हैं।

यह अंदाज़ लगाने की कोशिश करते हुए कि सब एक साथ कैसे आये हैं, रुस्तम जल्दी से उनसे मिलने रवाना हो गया। अपने मोर्चे के साथी के साथ मिलने की उसे ख़ुशी थी, पार्टी की ज़िला समिति के सचिव के आगमन से वह परेशान नहीं था : अनाज की फ़सलें उठाने का काम एक प्रकार से ठीक ही ढंग से चल रहा था... लेकिन गोशातख़ां 'नवजीवन' में किस इरादे से आया है? वह शायद फिर किसी घाव को कुरेदने की कोशिश करेगा।

अगर सचिव काफ़ी ऊपर चढ़े सूरज की तरफ़ इशारा करके कहेगा : "देर तक सोते हो, कामरेड अध्यक्ष," रुस्तम जवाब में कह देगा कि वह रात की कटाई से तीन बजे लौटा था। जहां तक रात की कटाई का सवाल है, तो उसने उसे इसलिए बिलकुल नहीं शुरु किया है, क्योंकि कारा केरेमोगलू सफलतापूर्वक उसका उपयोग कर रहा है, इसलिए भी नहीं, क्योंकि शेरज़ाद ने इस पर ज़ोर दिया था, बल्कि इसलिए, क्योंकि रुस्तम के पास पर्याप्त बुद्धि और अनुभव है।

लेकिन असलान रुस्तम को देखकर उसकी तरफ़ बढ़ा और उसने बिलकुल और ही बात पूछी :

"अरे, चचा, आंखों के नीचे कितने नीले निशान पड़ गये हैं! आख़िर तुम सोते कब हो?"

"क़टाई ज़ोरों पर होने पर सोने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती।" अध्यक्ष हंस पड़ा।

"ऐसे मौक़ों पर ही तो नियम से काम करना चाहिए..." असलान

ने प्रतिवाद किया। "हमेशा की तरह हर काम खुद संभालते हो, किसी पर विश्वास नहीं करते। तुम आखिर जवान तो रहे नहीं। अपना ख़याल रखना चाहिए..."

सचिव रेशमी क़मीज़ व सलीके से लोहा किया हुआ मोटे कपड़े का सूट पहने था। "कहना तो आसान होता है," रुस्तम ने सोचा, "पर कोई ज़रा मेरी तरह काम करते हुए खेतों में घूमे, तो फ़ौरन धूल से काला पड़ जाये।" उसका इस प्रकार सोचना अनुचित था, असलान गरमियों में दिन-रात ज़िले का दौरा करता रहता था। रुस्तम को यह मालूम था। वह सचिव को इसलिए भी क्षमा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसने उसे केरेम को वापस पशुपालन फ़ार्म पर भेजने के लिए बाध्य किया था...

जब तक रुस्तम ने शराफ़ोगलू व गोशातख़ां से दुआ-सलाम की, ज़िला समिति के सचिव ने कार्यालय के निकट एकत्र हुए सामूहिक किसानों के पास पहुंचकर छीदी पीली दाढ़ीवाले वृद्ध से बात की:

"हां, तो आपको किससे शिकायत है?"

"चोट हमेशा वहीं से की जाती है जहां से उसकी आशा नहीं की जाती," रुस्तम ने सोचा और उसकी भौंहें तन गयीं।

"तुम्हीं से, तुम्हीं से है, कामरेड," वृद्ध अहत ने तुरन्त जवाब दिया।

सब हंस पड़े, जब कि रुस्तम सबसे ज़ोर से हंसा। "बला टल गयी," उसने राहत की सांस लेकर सोचा।

"आख़िर तुम हमें बिलकुल भी नज़र नहीं आते हो," वृद्ध ने आगे कहा, "जब कि तुम ज़िले में सबसे बड़े आदमी हो।"

"बस यही शिकायत है?"

"यह क्या कम?"

"नहीं, बाबा, बिलकुल कम नहीं है," असलान ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "ग़लती मेरी ही है!.. मैं सफ़ाई में कह तो सकता था कि हमारा ज़िला बहुत लम्बा-चौड़ा है, कि मैं पिछड़नेवाले सामूहिक फ़ार्मों में ज़्यादा जाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन..." उसने कंधे उचकाये, "कुछ भी हो ग़लती मेरी ही है। आगे ध्यान में रखूंगा। उलाहना काफ़ी चुभता हुआ और उचित है। और क्या?"

वृद्ध सोचकर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया और उत्तर देने के बजाय पूछ बैठा:

"तुम्हारा यहां क्या काफ़ी देर रुकने का इरादा है?"

"हर सूरत में पूरा एक दिन।"

"तो मैं शाम को झांकता जाऊंगा," वृद्ध सिर नवाकर लाठी टेकता हुआ बाहर निकल गया, उसके पीछे-पीछे अन्य सामूहिक किसान भी चल दिये।

रुस्तम का मूड ख़राब हो गया: उसने सलमान से नज़र मिलायी। लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता था, उच्चाधिकारियों के साथ ढंग से ही पेश आना चाहिए। उसने कृत्रिम मुस्कान के साथ सचिव से पूछा:

"शुरू कहां से किया जाये: अनाज से या कपास से?"

वृद्ध अहत के साथ हुई बातचीत से असलान भी अशान्त हो गया था। वह आंखें दबाकर कहीं दूर देखता हुआ अपने पर क़ाबू करके बोला कि शराफ़ोगलू और गोशातख़ां अपने-अपने काम करेंगे, जब कि वह स्वयं घर-घर जाकर सामूहिक किसानों का रहन-सहन देखेगा।

रुस्तम ने सचिव पर सरपरस्ती के अन्दाज़ में दृष्टि डाली। ऐसा आदमी एक साल से ज़्यादा नहीं टिक सकता। मुग़ान की जलवायु कठोर है, जबकि इस नौजवान का कोई ठोस सहारा नहीं है, इसका अवश्य ही चुनावों में पत्ता काट दिया जायेगा।

"हां, तो, कामरेडो, हम यहां कार्यालय में ठीक सात बजे मिलेंगे," असलान ने कहा।

रुस्तम को लगा कि इन बातों के पीछे कोई चाल है, शायद इनमें पहले से सांठ-गांठ हो चुकी है और ये उसे किसी अचम्भे में डाल देने के लिए एकत्र होने जा रहे हैं।

अपने विरोधियों की पहलक़दमी को नाकाम करने के इरादे से उसने शराफ़ोगलू से ज़ोर से कहा:

"ज़रा कुरा के किनारे चलकर अपनी कम्बाइन पर एक नज़र डाल लो: एक घंटा काम करती है, पांच घंटे खड़ी रहती है..."

"हां, मैं सुबह नजफ़ को वहां मरम्मत करने रवाना कर चुका हूं," शाराफ़ोगलू ने शान्ति से उत्तर दिया। कुछ मिनट बाद उसलान को निर्माणाधीन संस्कृति-भवन दिखाते समय रुस्तम जीवंत हो उठा, भावविभोर होकर भावी भवन की सुन्दरता का बखान करता रहा और ख़ूब डींग हांकता रहा।

"काम, सचमुच बहुत अच्छा है, पर शरत् में तुम्हें बैंक को पांच लाख रूबल लौटाना पड़ेगा," सचिव ने सरसरी तौर पर टिप्पणी की। "और श्रम-दिनों का भुगतान कैसे किया जायेगा? अवितरित निधि का क्या होगा?"

"मेहरबानी करके चिन्ता मत कीजिये!" रुस्तम कह उठा। "ऋण अदा

कर दिये जायेंगे और अवितरित निधि में कम-से-कम दस लाख रूबल डाल देंगे। पैसा कहां से आयेगा? इस साल सामूहिक फ़ार्म इतना अनाज उठायेगा कि जलन के मारे कारा केरेमोगलू की हालत ख़राब हो जायेगी। यह सच है कि कहीं-कहीं कपास की फ़सल अच्छी नहीं है, पर वसन्त में मौसम बहुत ख़राब भी तो रहा है..."

अध्यक्ष ने दुःखी हो ठण्डी सांस ली और मन-ही-मन सोचा: "मुझे ख़ुद मान लेना चाहिए, ज़मीन तैयार करनी चाहिए..."

निर्माण-स्थल पर काम तेज़ी से चल रहा था, दीवारें काफ़ी ऊंची उठ चुकी थीं, ईंटों, तराशे पत्थरों, बजरी के ढेर लगे हुए थे, सीमेंट के ड्रम पड़े हुए थे। रुस्तम हाथ हिला-हिलाकर दिखा रहा था कि पुस्तकालय कहां होगा, हॉल कितना बड़ा होगा। ऐसा मंच बाकू के थियेटरों में भी नहीं मिलेगा...

असलान नेकदिली से हंस पड़ा।

"बस यह संस्कृति-भवन महीने में उनतीस दिन ख़ाली न पड़ा रहे!"

रुस्तम ने बुरा मानकर प्रतिवाद किया कि सामूहिक फ़ार्म में शौक़िया कलाकार मण्डली की स्थापना हो चुकी है, उन्होंने हाल ही में एक शानदार कंसर्ट आयोजित किया था, कामरेड कलंतर उसमें आये थे और उन्होंने उसकी प्रशंसा की थी।

मोड़ पर यारमामेद का लम्बोतरा थोबड़ा दिखाई दिया और तत्क्षण ग़ायब हो गया।

रुस्तम के नथुने फूल गये, वह चिल्लाया:

"ऐ, दुबक क्यों गया मुर्ग़ी का पीछा करती लोमड़ी की तरह?"

यारमामेद असलान और अध्यक्ष को झुक-झुककर सलाम करता और अपने न मुड़नेवाले पैरों से धूल समेटता उनके पास आया।

"हमारा लेखाकार है। लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीला है," रुस्तम ने परिचय कराया। "बिलकुल गऊ, शान्त और शिष्ट है..."

"कहीं उस बादशाह का नाती तो नहीं है, जिसकी बेटी समुद्र में नर मछलियों के डर से नहीं नहाती थी?" असलान ने व्यंग्यपूर्वक पूछा और उसके चेहरे पर वितृष्णा की ऐंठन फैल गयी।

"नहीं, यह सचमुच शर्मीला है..." रुस्तम ने लेखाकार की तारीफ़ करते हुए यारमामेद से फ़ाइल लेकर बिना दस्तावेज़ देखे उन पर हस्ताक्षर कर दिये।

"क्यों, तुम्हारे रोगों का क्या हाल है, यारमामेद?" असलान ने पूछा।

"तन और मन दोनों दुःखी हैं।"

"तुम्हारा इलाज कर देंगे, यारमामेद, ज़रूर कर देंगे!"

"आपका साया हम बेसहारों के सिर पर हमेशा बना रहे!" और यारमामेद ने क़रीब-क़रीब ज़मीन तक सिर झुका दिया।

एकाएक असलान ने ठहाका लगाया और हाथ हिलाकर लम्बे-लम्बे डग भरता कार्यालय की ओर चल दिया, जहां उसकी मोटर खड़ी थी।

रुस्तम उस द्व्यर्थक बात में कुछ नहीं समझ पाया, उसने भौंहें सिकोड़कर लेखाकार को फ़ाइल लौटा दी और उसे खा जानेवाली नज़रों से देखा: दूर हो जा मेरी नज़रों से... जब वह असलान के पास पहुंचा, ज़िला समिति के सचिव ने उसे खीजभरी झिड़की दी:

"यह क्या आदत है–चलते-चलते काग़ज़ात पर दस्तख़त करने की? उनमें कोई ऐसा काग़ज़ भी रखा जा सकता है कि तुम्हें फिर बरसों पछताना पड़ जाये। चालाक को चालाकी से ही मात दी जा सकती है।"

रुस्तम ने सचिव को तसल्ली दिलायी: उसके कर्मचारी जानते हैं कि उनका वास्ता किससे पड़ रहा है,–उसके सामने कोई काग़ज़ पेश करने से पहले सौ बार उसकी जांच करते हैं।

असलान ने उससे बहस नहीं की।

अध्यक्ष का उत्साह अत्याधिक बढ़ गया और उसने गर्वपूर्वक घोषणा की कि महान अक्तूबर क्रान्ति की उनतालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर सामूहिक फ़ार्म सभी मदों के सरकारी कोटे पूरे कर लेगा, संस्कृति-भवन का निर्माण सम्पन्न कर लेगा और नल व बिजली की व्यवस्था कर लेगा।

असलान फिर चुप हो गया, पर जब वे मोटर के पास पहुंचे, वह पूछ बैठा:

"रुस्तम-कीशी, तुम क्या करोगे, अगर तुम्हें मालूम पड़ जाये कि अनाम पत्र किसने लिखे हैं?

"उसका गला घोंट दूंगा!" रुस्तम अचानक इतने ज़ोर से दहाड़ा कि उसका गला बैठ गया।

यह इतना भयावह लगा कि असलान चौंककर एक ओर हट गया और उसके मुंह से केवल इतना निकला:

"अच्छा! अच्छा!"

ग्रीष्म के सब से गरम दिन चल रहे थे। स्तेपी झुलस कर पीली पड़ चुकी थी, ऊंट की खाल जैसी लग रही थी, केवल सिंचित ज़मीन के टुकड़ों पर घनी हरियाली थी, और अनुन्मूलनीय ऊंटकटारा और नागदौने धृष्टतापूर्वक सूरज की तरफ़ बढ़ रहे थे। धूल की नमदे जैसी मोटी तह से अधढकी रास्ते के किनारों की झाड़ियां धूसर नज़र आ रही थीं। रास्ता देखने में साफ़ और समतल लगता था: धूल गड्ढों में भर गयी थी, लेकिन असलान का उसके साथ ज़िले के दौरे का आदी चालक सहज ज्ञान से गड्ढों का पता लगाकर आये क्षण गाड़ी के ब्रेक लगाता जा रहा था। अधगिरी खिड़की में से ललछौहां भूरी धूल के दमघोंटू ग़ुबार उड़कर अंदर आ रहे थे। असलान को खांसी आ गयी और उसने शीशे चढ़ाने को कह दिया: दम घुटने से पसीने में नहा जाना कहीं बेहतर होगा। पिछली सीट पर बैठे रुस्तम, शेरज़ाद व सलमान को सांस लेने में कठिनाई हो रही थी, वे आस्तीनों से अपने चेहरे पोंछ रहे थे, – रूमालों को निचोड़ा जा सकता था।

सलमान की देख-रेख में बनाये जा रहे ट्रांसफ़ोर्मर सब-स्टेशन का निरीक्षण करके असलान कपास के खेतों के लिए रवाना हो गया: रुस्तम ने उसे अपने सब से बढ़िया व सब से ख़राब खेत दिखाने का वादा किया था। जब गाड़ी गूंगे हुसैन की विरासत छीदे व दुर्बल कपास के पौधों के खेत के पास से गुज़र रही थी, असलान ने अचानक मोटर रोककर दरवाज़ा खोल दिया, और नीचे कूद गया। उसके पैर घुटनों तक वहां जमी धूल की तह में धंस गये।

"क्या सचमुच गोशातख़ां ने चुग़ली खायी है?" रुस्तम ने सोचा, पर बेधड़क सचिव के पीछे-पीछे चलने लगा।

लेकिन असलान को कपास में दिलचस्पी नहीं थी। वह बड़ी फुर्ती से ऊंचे खर-पतवार उगे गड्ढे को पार करके खेत के काफ़ी अंदर पहुंच गया, जहां स्त्रियां एकत्र थीं। वे दो किशोरों को घेरे हुए थीं, जो बड़े जोश में ज़मीन पर कुदालें मार रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थीं:

"एक बार और, सिर पर मारो!"

"मारो, मारो, इस मरदूद को!"

मर्दों ने निकट पहुंचकर रौंदी हुई घास पर छटपटाते वाइपर सर्प को

देखा: किशोरों ने तेज़ धारवाले कुदालों से उसके कई टुकड़े कर दिये थे, पर घिनौने जानवर का हर टुकड़ा छटपटा रहा था, फड़क रहा था।

असलान ने स्त्रियों से दुआ-सलाम की, उन्हें मज़ाक़ में डरपोक कहा और जाकर नाली में हाथ-मुंह धोने की सलाह दी।

एक तरफ़ ताने हुए तिरपाल के नीचे एक दूसरे को धकेलते, नन्ही-नन्ही क़मीज़ें पहने दो बालक घुटनों के बल चल रहे थे।

असलान को ग़ुस्सा आ गया:

"क्या शिशुशाला नहीं है?"

सलमान ने फ़ौरन बताया कि शिशुशाला यहां से दस किलोमीटर दूर स्थित केंद्रीय खेत-कैम्प में है। बीमारी के कारण पीले पड़े और धूप के प्रभाव से अभी सांवले न हो पाये चेहरेवाली स्त्री उनके पास आयी, केवल मुग़ान के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से गोरी चमड़ी के कारण रुस्तम केरेम की पत्नी को पहचान पाया।

"यही है शैतान का ख़ानदान!" उसने सोचा। "आख़िर मैं कब तक हर क़दम पर इन से टकराता रहूंगा?"

"अच्छा, अच्छा," असलान ने उलाहनाभरे अंदाज़ में सिर हिलाया और अध्यक्ष को अपने पास आने का संकेत करके पूछा: क्या रुस्तम यह नहीं महसूस करता कि शिशुशाला भव्य संस्कृति-भवन से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है? यह अच्छी, बहुत अच्छी बात है कि वहां का मंच बाकू के थियेटरों के मंचों से बहुत बड़ा है, फिर भी...

"अरे, भाई!" केरेम की पत्नी ने पीले पड़े गाल पर हथेली रखकर कहा। "मुझे काम करते हुए आज दूसरा ही दिन हुआ है, मैंने जुड़वां बच्चों को यहां छोड़ दिया था... सब गवाह हैं, अगर मैंने एक मिनट की भी देर की होती, तो सांप ने हूरी को डस लिया होता। मैंने इसकी फुफकार कैसे सुनी, अभी तक समझ नहीं पा रही हूं! मैं इधर लपकी, पर हूरी सांप की तरफ़ रेंग रही थी, और सांप बच्चे की ओर। मैं इतने ज़ोर से चीख़ी कि स्तेपी कांप उठी। शुक्रिया इन किशोरों का, जिन्होंने फ़ौरन भागकर आ इसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये..."

"तुम अपनी सास की उपटोली में क्यों नहीं हो?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "तुम वहां बच्चों को शिशुशाला में भरती करवा सकती थीं।"

"अरे, चाचा, मुझे कैसे मालूम हो सकता है कि मैं दायीं तरफ़ चलूं

या बायीं तरफ़। दफ़्तर ने यहां भेज दिया...'' स्त्री ने दोषी की तरह जवाब दिया।

सलमान एक तरफ़ हट गया : रुस्तम डांटना शुरू करेगा, तो भी अकेले में डांटेगा, असलान के सामने नहीं, पर अध्यक्ष ने फटे हुए होंठों को पोंछा और शान्ति से, सलमान को अमंगलसूचक लगनेवाली शान्ति से कहा कि वह दो-तीन दिन में सारे खेत-कैम्पों में शिशुशालाएँ खोल देगा।

"दृढ़निश्चयता के लिए आपकी प्रशंसा करता हूँ," असलान ने बिना हिचकिचाये रुस्तम पर विश्वास कर लिया। ऐसा आदमी कभी धोखा नहीं देगा, काम हाथ में लेगा, तो उसे पूरा करके रहेगा। "हां तो अब दिखाइये, फ़सलें," और वह मेड़ पर लम्बे-लम्बे डग भरता चल पड़ा।

रुस्तम ने घबराहट में मुस्कराते हुए उसे रोक दिया और बोला कि वहां देखने लायक़ कुछ नहीं है, पौधे नीचे, कमज़ोर हैं और कहीं-कहीं मिट्टी के ऊपर नमक निकल आया है...

"साफ़गोई के लिए आपकी तारीफ़ करता हूं," असलान बोला।

वसंतकालीन गेहूं के खेत में, जहां कम्बाइन काम कर रही थीं, सचिव का चेहरा खिल उठा, उसके सांवले चेहरे पर स्वप्निल भाव व्याप्त हो गये। गेहूं के पौधे ठोस दीवार की तरह खड़े थे, उनके तने मज़बूत थे और बालियां सोने से ढली हुई लगती थीं। असलान ने एक बाली हथेली पर मसलकर भूसी फूंक मारकर उड़ा दी और मंत्रमुग्ध-सा नन्हे-नन्हे छर्रो सदृश गेहूं के तृणमणि जैसे दानों को देखने लगा।

"'सारी बुग़दा'* पर आज़रबैजान को गर्व है। देखते ही रह जाइये! शाबाश, रुस्तम-कीशी, तुम असली अध्यक्ष हो!"

"यह तो कुछ भी नहीं है!" रुस्तम ने काफ़ी बेतकल्लुफ़ी से बात ख़तम कर दी। "कम्बाइन के पीछे खेत के बीचवाले हिस्से में चलते हैं, वहां दाने और भी बड़े हैं।"

उसने झुककर खूंटियों में से कुछ हल्के हरे रंग की घास की पत्तियां तोड़ लीं और असलान को दिखायीं:

"यह लबलाबी है। भेड़ों के लिए स्वादिष्ट चारा भी है और दवा भी। अगर रेवड़ को रात भर के लिए यहां छोड़ दिया जाये और भेड़ों

---

* 'सारी-बुग़दा' – 'सुनहला गेहूं'।

को सुबह दुहा जाये, तो दूध का स्वाद आप कभी न भूलें... चरवाहा केरेम...'' उसने बात शुरू की और फिर एकदम चुप हो गया।

असलान ने उसकी बात अनसुनी करके कम्बाइन के स्टियरिंग ब्रिज पर खड़े नजफ़ की तरफ़ अपनी टोपी हिलायी।

"यह लड़का लड़का नहीं, आग है!"

"हां, बहुत शाबाशी का काम किया है इसने, आख़िर फ़सल को बचा ही लिया। एक दिन की देर और हो जाती, तो गेहूं पूरा झड़ जाता।"

उसने स्नेहपूर्ण दृष्टि खेत पर डाली: कम्बाइन तब तक दूसरे छोर पर पहुंच गयी थी और उसके बंकर से अनाज ले रहे ट्रक खिलौनों जैसे छोटे लग रहे थे।

कम्बाइन के पीछे-पीछे चल रहे स्कूली बच्चे गेहूं की बालियां उठा रहे थे। शेरज़ाद ने गाराग्योज़ को रोका और उसका परिचय असलान से करवाया:

"यह हूरी और परी की बड़ी बहन है। कितनी मेहनती है – पूरा एप्रन बालियों से भरा है।"

असलान ने बालिका के उलझे हुए घुंघराले बालों पर हाथ फेरा।

"अच्छा, वही गाराग्योज़-ख़ानम है! मेलेक और गोशातख़ां इसे अकसर याद करते हैं।"

धूप निरन्तर तेज़ होती जा रही थी, गीली क़मीज़ें कंधों से चिपक गयी थीं। रुस्तम ने आंखें आकाश की ओर उठाकर शिकायत की:

"बिलकुल दहकती भट्ठी है!"

"चाचा शुभ ग्रह से नाराज़ है!" असलान हंस पड़ा।

"ख़ुश हो ही किस बात से सकता हूं? हमें मुग़ान में इतनी गरमी और रोशनी की ज़रूरत नहीं है। आदमी परमाणु का भंजन करना, समुद्र की गहराइयों से तेल निकालना और ध्वनि की गति से आकाश में उड़ना सीख गया है। काश अब सूरज की गरमी का कुछ हिस्सा अपने पड़ोसियों को देना सीख जायें, कम-से-कम केल्बजार ज़िले को ही।"

"ऐसा ही होगा," शेरज़ाद ने सिर हिलाया। "और बहुत जल्दी होगा।"

"तुम्हें इसका पूरा विश्वास है?" रुस्तम ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"पूरा। आप सबर रखिये, यह कर दिखायेंगे। हमारे वैज्ञानिक इस समस्या का समाधान खोज रहे हैं।"

"हां, मैंने भी पढ़ा था," असलान ने पुष्टि की।

रुस्तम ने सलमान को अपनी तरफ़ खींचा और उसके माथे पर उंगली से पटपटा दिया।

"यह खोपड़ी क्या-क्या तरीक़े सोच निकालती है! सोच-सोचकर डर लगता है।"

८

शाम के सात बजे, जब गरमी कुछ कम हो गयी, कार्यालय के अहाते में किसान एकत्र हो गये। गोशातखां व शराफ़ोगलू घने पोपलर के नीचे बैठे अध्यापकों से बातचीत कर रहे थे। जब असलान और रुस्तम उनके पास पहुंचे, सब ने उठकर सलाम किया।

"हम लोग यहीं ताज़ा हवा में बातचीत करेंगे," असलान ने कहा।

रुस्तम की भौंहें सिकुड़ गयीं: अनाज की फ़सलों ने हालांकि उसे बचा लिया था, पर बातचीत का रुख़ न जाने किस तरफ़ पलट जाये, कहीं सचिव एकाएक झाड़ ही लगाने लगे। बेहतर होगा यहां कोई गवाह न रहे।

"यहां लड़के भागकर आ जमा होंगे और परेशान करेंगे।"

"हम उनसे नम्रतापूर्वक चले जाने को कह देंगे," असलान ने कहा।

लोग कुरसियां, बैंचें ले आये, सामूहिक किसानों में से कुछ तो ज़मीन पर ही आलथी-पालथी मारकर बैठ गये।

बातचीत शान्तिपूर्वक हो रही थी: असलान ने अपने विचार बताये, अनाज की फ़सलों की तारीफ़ की, – फ़सल बहुत बढ़िया हुई है, जो विरले ही होती है, सामूहिक फ़ार्म की सम्पदा और ख़ुशहाली उसी से है। कपास की स्थिति काफ़ी ख़राब है, लेकिन अभी भूल सुधारने, पौधों को अतिरिक्त पोषण देने का समय है, शेरज़ाद के खेत में पौधे तगड़े और बड़े हैं, उनके सिरों पर काफ़ी शाखाएँ हैं, बोड़ियां भारी और तनी हुई हैं। असलान की राय में शेरज़ाद की टोली की अनाज व कपास की फ़सल सबसे अच्छी होगी।

और तरबूज़ों, ख़रबूज़ों और सागबाड़ियों की हालत ख़राब है, इस बात में सन्देह है कि ऐसे मौसम में सब्ज़ियों की हालत सुधर सकेगी, अब सिंचाई कितनी भी की जाये, कोई लाभ नहीं होगा। देर हो गयी है...

ज़िला समिति के सचिव की बात सुनता हुआ रुस्तम कभी मुस्करा

पड़ता था, कभी उसकी भौंहें सिकुड़ जाती थीं, तो कभी पाइप की नली का छोर चबाने लगता था।

"इसमें कोई शक नहीं," असलान ने कहा, "कि 'नवजीवन' इस वर्ष प्रगति करेगा, पर यह लम्बी छलांग नहीं होगी। उसकी समृद्ध क्षमताओं का विगत के वर्षों की तरह उपयोग नहीं किया गया, प्रबन्ध समिति और टोली-नायकों का सारा ध्यान कपास व अनाज की फ़सलों पर केंद्रित रहा, जब कि पशुपालन व साग-सब्ज़ियों की खेती की उपेक्षा की गयी।"

शराफ़ोगलू जब बता रहा था कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन इस वर्ष शरत् में खेतों में कितनी कपास चुनने की कम्बाइनें भेजेगा, सामूहिक किसान एक दूसरे को टहोके मारते हुए कानाफूसी कर रहे थे, फिर वृद्ध अहत खड़ा हुआ और उसने अपनी लाठी ज़मीन में गाड़कर कहा:

"हमारे सामूहिक फ़ार्म में आलोचना और आत्मालोचना नहीं की जाती है!.."

यह शब्द सुनते ही रुस्तम चौंक उठा और उसने पाइप में इतने ज़ोर से फूंक मारी कि राख का फ़व्वारा छूट गया।

"और इसके अलावा?" असलान ने पूछा।

लेकिन वृद्ध तब तक ज़मीन पर आलथी-पालथी मारकर बैठ चुका था, मुट्ठी में दाढ़ी ही मसल रहा था और आगे कुछ कहने को तैयार नहीं था।

भीड़ में उसके अनुमोदन की भनभनाहट होने लगी।

उसी समय कार्यालय के बाहर एक कार आकर रुकी, उसमें से कलंतर बाहर निकला और निर्लिप्ट व गम्भीर मुखमुद्रा में, जो शायद ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को शोभा देती है, एकत्र लोगों के पास पहुंचा।

सलमान ने अपनी कुरसी उसके लिए सरका दी।

असलान की प्रश्नात्मक दृष्टि देखकर कलंतर ने स्पष्ट किया:

"बाकू से टेलीफ़ोन आया था। हम ऊन का कोटा पूरा करने में पिछड़ रहे हैं। मुझे पशुपालन फ़ार्मों में जाना पड़ा।" और उसने अपनी सूजी हुई आंखें मलीं।

बाकू से उसे कोई फ़ोन नहीं आया था, लेकिन गूंगे हुसैन के पशुपालन फ़ार्म में वह सचमुच गया था, वहां उसने छककर पी, सींक-कबाब खाये और फिर मेहमाननवाज़ नज़नाज़ के यहां चला गया, जहां शहतूत के तले ठण्डक में लेटकर सोता रहा...

"अच्छा, अच्छा," असलान ने निर्लिप्त भाव से कहा और मुड़ गया।

लेकिन कलंतर को, जैसा कि स्पष्ट था, लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की इच्छा हो रही थी, और वह बड़ी बेतकल्लुफ़ी से बीच में बोल उठा :

"कामरेड असलान, आप तो प्रबन्ध समिति और व्यक्तिगत तौर पर रुस्तम-कोशी को अनाम पत्रों को लिखनेवाले के बारे में सूचित करनेवाले थे।"

यह कहना कठिन था कि कलंतर-लेलेश को अनाम पत्रों की बात उसी दिन छेड़ने की क्यों सूझी : या तो उसने यारमामेद को दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंकने की सोच ली थी, या वह उसे और बुरी तरह डराकर पूरी तरह अपना दास बना लेना चाहता था...

असलान के चेहरे पर चिन्ता की रेखा झलकी, उसने गोशातख़ां व शराफ़ोगलू से नज़रें मिलायीं। कैसा बेशऊर आदमी है यह कलंतर! बातचीत फ़सल के बारे में हो रही है, अवितरित निधि के बारे में भी विचार-विमर्श करना जरूरी है। और वृद्ध का यह कहना कि 'नवजीवन' में आत्मालोचना का नाम-निशान भी नहीं है, कितनी चिन्ताजनक और अप्रिय बात है... उसने दो शब्दों में यह बात कह दी, पर स्पष्ट है कि वह बहुत दिनों से कहना चाहता था, हिचकिचा रहा था, हिम्मत जुटा रहा था, अपने दोस्तों से सलाह कर रहा था...

सामूहिक किसान उचक उठे, शोर मचाने लगे, जबकि रुस्तम का चेहरा ऐसा लाल हो उठा, मानो उस पर किसी ने चेरी का रस मल दिया हो।

"तुम्हारे ख़याल से हम पर अनाम पत्रों की बौछार कौन कर सकता है?" सचिव ने रुस्तम को सम्बोधित किया।

वह बिना सोचे-विचारे कह उठा :

"तेल्ली चाची और उसका बेटा!" उसने पोपलर के पास खड़े शेरज़ाद व नजफ़ पर नज़र डाली और एकाएक चुप हो गया, पर गुस्से में आगे बोला, "और उनके अलावा कुछ और दिल के काले आदमी..."

भीड़ में से तेल्ली चाची की कर्णभेदी चीख़ गूंज उठी :

"अच्छा हो मुझे जल्दी से जल्दी क़ब्र में दफ़ना दो! क्या वहां मेरा पीछा करना छोड़ दोगे?"

असलान ने शान्त मुस्कान के साथ उसे रोक दिया :

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके ख़याल में उन्हें किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आंखें उठाते डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उंगलियों से बांकी मूंछों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता रहा : "अनाम पत्र लिखनेवाला ख़ुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"

सब स्तब्ध रह गये : पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज़ भी गूंजती सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नसदार गरदन निकालकर पंजों के बल भीड़ से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, ज़मीन में गहरे धंसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर उसका कंधा दबोचकर चिल्लायी :

"मैंने कहा था या नहीं–इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हमसे ज़िला समिति में क्या कहा था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक सटका और थर-थर कांपते, हकलाते हुए अपनी राय में अपनी चमत्कारी सफ़ाई दोहराने लगा :

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती हैं : कुछ शराब के शौक़ीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होंठों से सिगरेट अलग होती ही नहीं... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बग़ैर नहीं रहा जाता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है! .."

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुंह में फंसे ख़रगोश की तरह किकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुग़लख़ोर को रुस्तम के हाथों से छुड़ाया,–यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ़ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

मामेद के पास पहुंच नाक-भौं सिकोड़े, मानो वह उस पर थूकने जा रहा हो।

"चाचा के आगे पेट के बल रेंगता था और ख़ुद उन्हीं के लिए क़ब्र खोद रहा था! तुम जैसे नीच को धरती सहन कैसे करती है?"

सब झुण्ड बनाकर खड़े हो गये, वे चिल्ला रहे थे, घूंसे तानकर धमका रहे थे, पर असलान शान्त रहा, उसके चेहरे पर कटु मुस्कान व्याप्त थी। उसने हाथ उठाकर सब को शान्त होने को बाध्य किया और यारमामेद से पूछा:

"आख़िरी बार पूछ रहा हूं: क्या आगे भी इस लालच का शिकार होने का इरादा रखते हो?"

"मेरा दायां हाथ सूख जाये, अगर मैं क़लम को छुऊं भी," यारमामेद कराहा, "और अगर बायें हाथ में लूं, तो वह भी टूटकर अलग हो जाये।"

"क्या ख़याल है, कामरेडो, इसे माफ़ कर दें?" असलान ने सामूहिक किसानों से पूछा।

सब की ओर से जवाब रुस्तम ने दिया:

"लानत है उस घड़ी पर, जब मैंने इसे अपनी मेज़ पर बिठाया, इसके साथ रोटी बांटकर खायी। क्या इसे माफ़ किया जाये? नहीं, हरगिज़ नहीं! इसे सामूहिक फ़ार्म से निकाल बाहर करना चाहिए और इस पर झूठी निन्दा के आरोप में मुक़दमा चलाना चाहिए!"

सब तरफ़ से क्रुद्ध आवाजें आने लगीं:

"बिलकुल ठीक है!"

"आपका कहना बिलकुल सही है!"

"इस पर मुक़दमा चलाया जाये, मुक़दमा!"

यहां तक कि वृद्ध अहत भी पोपलर के तने पर लाठी ठकठकाकर और पूरा मुंह खोलकर, जिसमें एकमात्र काला दांत चमक रहा था, चिल्लाया:

"इसे कूरा में डुबो दिया जाये!"

कलंतर ने सोचा कि अब उसके हस्तक्षेप करने का समय आ गया है, वह धीरे-धीरे उठा और तनी हुई तोंद निकालकर प्रभावशाली ऊंचे स्वर में बोला:

"मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं, साथियो: हमें चुग़लख़ोर पर ठप्पा लगाना चाहिए! लेकिन मामले को जरूरत से ज़्यादा तूल देना फिर भी ठीक नहीं होगा। इसके हाथ खुजलाने लगे, दो-एक चिट्ठियां लिख डालीं... हम इसके हाथों को सज़ा दे देंगे, इसको फटकार देंगे, शर्मिंदा करेंगे, पर इसे सामूहिक फ़ार्म से निकालना ज़रा जल्दबाज़ी होगी। यह हद हो जायेगी, कामरेडो, हद हो जायेगी! हमें लोगों को शिक्षित करना चाहिए, पर आप लोग फ़ौरन इस पर मुक़दमा चलाने की बात करते हैं... नहीं, नहीं, कामरेडो, कर्मचारियों के साथ हमें मेहनत करनी चाहिए, सोच-समझकर धीरज से काम लेना चाहिए।"

"तुम्हारा, लेलेश, क्या यह ख़याल है कि इसे लेखाकार बनाये रखना चाहिए?" विस्मित रुस्तम ने पूछा।

"लेखाकार क्यों?" कलंतर ने अपनी श्रेष्ठता की अनुभूति से कंधे उचकाये। "इसे कोई मामूली काम सौंप देना चाहिए, इस पर नज़र रखनी चाहिए और सख़्त निगरानी..."

रुस्तम के लिए असलान का व्यवहार पहेली बना रहा: ज़िला समिति का सचिव एक बार भी ऊंची आवाज़ में नहीं बोला, नरमाई से बोलता रहा... बड़ा अच्छा आदमी मिला है इसे लिहाज़ करने को! अगर यारमामेद को नदी में न डुबाया जाये, तो कम-से-कम पैरों तले तो रौंदना चाहिए ही। उसने ऐसे नीच को अपना क़रीबी बनाया, उस पर कृपा की हर तरह से ख़ुश रखा। उसे अपने सफ़ेद बालों पर राख लगा लेनी चाहिए, शर्म के मारे स्तेपी में भाग जाना चाहिए! लेकिन रुस्तम को और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ, जब असलान ने कलंतर के यारमामेद को कठोर काम दिये जाने पर सामूहिक फ़ार्म में रखने के सुझाव को मान लिया।

"पर तुम ख़ुद काम करना चाहते हो?" असलान ने पूछा।

कितनी आश्चर्य की बात है! वह इस नीच चुग़लख़ोर की इच्छाओं का भी ख़याल रखता है! रुस्तम का ख़ून खौल रहा था। क्यों नहीं, अगर अनाम पत्र ख़ुद असलान के बारे में होते, तो यह दूसरे ही ढंग से बात करता। अभी तो यह अलग खड़ा देखता रहना चाहता है... वाह रे, नरमदिल सचिव, जल्दी ठण्डा हो जानेवाले, – अगले चुनावों में इसका पत्ता जरूर ही काट दिया जायेगा।

"अगर आदरणीय चाचा इजाजत दें," यारमामेद सकुचाता हुआ बुदबुदाया, "तो मैं पशुपालन फ़ार्म पर काम करने चला जाऊं।"

रुस्तम ने थूक दिया।

"मैं तेरा कोई चाचा-वाचा नहीं रहा। तुझे मरते दम तक माफ़ नहीं करूंगा कि मैंने तुझ पर इतना विश्वास किया, इतनी मेहरबानी की।"

"जैसा कि ज़ाहिर है, पशुपालन फ़ार्म में गूंगे हुसैन के यहां ही घिनौने काम होते हैं, अगर यह शातिर बदमाश, ठग वहां जाने को तड़प रहा है," असलान ने सोचा और उसने सामूहिक किसानों को यारमामेद की विनम्र प्रार्थना स्वीकार करने की हठपूर्वक सलाह दी।

"अब यह पशुपालन फ़ार्म में ही अपना नाम ऊंचा करे। बेशक, अगर कर सके। तुम्हारा क्या ख़याल है, सलमान?"

लेकिन सलमान वहां कहीं नहीं था। जैसे ही यारमामेद ने अपना दोष स्वीकार किया, सलमान ने मुसीबत से दूर रहने में ही बुद्धिमानी समझी। वह शेड व चहारदीवारी के बीच के कोने में घुसकर हथेली से ढककर सिगरेट पी रहा था।

लेकिन भीड़ में से किसी ने उसकी सपाट पीठ देखकर आवाज़ दी, और उसे अनिच्छापूर्वक लोगों के पास वापस आना पड़ा। असलान के चुग़लख़ोर के साथ अनपेक्षित नरमाई से पेश आने से सलमान का उत्साह बढ़ गया। शायद सचिव बच्चों-सा भोला-भाला है और उसे उंगली पर नचाने में कोई मुश्किल नहीं होगी।

"इससे अधिक उदारता व बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय हो ही नहीं सकता," सलमान ने यारमामेद की गरदन पर हाथ रखकर उसे ऐसे झुका दिया कि उसकी नाक ज़मीन से लग गयी। "रहम के लिए शुक्रिया अदा कर!"

"यह स्पष्ट है कि हम इसका न्यायपूर्ण समाधान चाहते हैं," असलान ने सलमान को एकटक घूरते हुए कहा। "जनता का निर्णय सदा न्यायपूर्ण होता है। हां, अगर कोई विरोध नहीं करता, तो हम इस मामले को समाप्त समझ लेंगे। क्यों यही बात है न, कामरेड रुस्तमोव?"

रुस्तम अप्रसन्न मुखमुद्रा में मौन रहा। अगर असलान यहां न होता, तो वह यारमामेद के साथ अपने ही ढंग से पेश आता। इस खरसैली भेड़ को रेवड़ से निकाल भगाता! अगर कलंतर भैया को कर्मचारियों को शिक्षा देने की ऐसी इच्छा है, तो फिर यारमामेद को अपने साथ ले जाये – यहां कोई आंसू नहीं बहायेगा। लेकिन रुस्तम ने सचिव की बात का विरोध नहीं किया और क्लान्त मुद्रा में हाथ हिला दिया: जो मन में आये कीजिये...

ज़िला समिति के सचिव ने तेल्ली चाची से बात की, चलते-चलते शेरज़ाद को कुछ सलाह दी और अपनी मोटर की तरफ़ चल दिया। लोग उसे हार्दिक विदाई दे रहे थे। वृद्ध अहत को अचानक चुग़लख़ोर पर दया आ गयी, वह बोला:

"हमें किसी भी आदमी को बिलकुल गिरा हुआ नहीं समझ लेना चाहिए, यारमामेद को भी आज़मायेंगे, उसके साथ सख़्ती बरतेंगे, हमेशा उस पर नज़र रखेंगे।"

मोटर के पास खड़े-खड़े असलान ने पूछा कि कलंतर किधर जा रहा है। मालूम पड़ा कि कलंतर-लेलेश का इरादा रात को एक पशुपालन फ़ार्म से दूसरे में जाकर सामूहिक किसानों को निश्चित समय से पहले ऊन सरकार को देने के लिए तैयार करना है।

"हम रात को केन्द्रीय खेत-कैम्प में सोयेंगे," असलान ने कहा।

जैसे ही मोटर रवाना हुई, कलंतर ने आत्मसन्तोष से मुस्कराकर चौड़ी पेटी में कसी तोंद पर हाथ फेरा और घृणापूर्वक रुस्तम व सलमान से बोला:

"मैंने देखा, तुम लोग तो बिलकुल ही घबरा गये थे... मर्द कहलाते हो! अगर मैं न बचाता, तो बुरी तरह बेइज़्ज़ती होती। इसकी क़ीमत समझना!"

"हां, कामरेड असलान ने हद कर दी!" सलमान कह उठा। "हमें दिन-भर दौड़ाते रहे: जहां भी गये, हर जगह उन्हें सिर्फ़ कमियां ही नज़र आयीं!"

"शर्म आनी चाहिए!" रुस्तम गरजा और कलंतर से विदा लिये बिना अपने घर रवाना हो गया।

उस समय कच्ची सड़क पर धूल उड़ाती जा रही ज़िला समिति की मोटर में ज़ोरदार बहस चल रही थी: शराफ़ोगलू और गोशातख़ां असलान को अक्षम्य दयालुता के लिए उलाहने दे रहे थे, वे भविष्यवाणी कर रहे थे कि उसे यारमामेद के साथ इतनी नरमाई से पेश आने के कारण आगे पछताना पड़ेगा।

"ठहरिये, कामरेडो, ठहरिये," उसने मित्रों को शान्त किया। "मेरे ख़याल से यारमामेद ने चुराये गये बीजों के बारे में सच लिखा था। लेकिन उन्हें चुराया किसने था? न तो उसने और रुस्तम की तो बात ही छोड़िये!.. इसीलिए मैं सोचता हूं कि हमें चौकन्ना रहना चाहिए, उस पर, गूंगे हुसैन पर और ख़ास तौर से सलमान पर नज़र रखनी चाहिए।"

कलंतर-लेलेश शाम के खाने पर सलमान के यहां गया और रात को वहीं रुका। उसे वास्तव में रात को रास्तों में हचकोले खाने और स्तेपी की धूल फांकने की आख़िर क्या ज़रूरत थी...

६

सकीना की भविष्यवाणी सच नहीं निकली : नज़नाज़ ने गराश को नहीं छोड़ा। यह सच है कि उसने कलंतर को लुभाने की कोशिशों को ठुकराया नहीं, लेकिन वह दो पुरुषों को कैसे क़ाबू में रख पा रही थी, – यह बात तेज़ नज़रवाली अक़्लमन्द तेल्ली चाची की भी समझ में नहीं आयी। निस्सन्देह महत्वाकांक्षी नज़नाज़ ने सोच लिया कि ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की पत्नी बनना साधारण ट्रैक्टर-चालक से शादी करने से कहीं ज्यादा फ़ायदेमंद होगा, और एक बार उसने कलंतर को इशारा भी किया था कि अब उन्हें अपने सम्बन्धों को क़ानूनी जामा पहना देना चाहिए।

"ख़ानम, जल्दबाज़ी मत करो, दो-तीन महीने में तुम्हारे लिए दूल्हा ढूँढ़ दूंगा, जिसके मैं पैर की धूल के भी बराबर नहीं हूं। मैं ख़ुद तुम्हारी शादी करवाऊंगा।"

नज़नाज़ ने कलंतर को पाने की आशा न रहने पर अपनी सारी शक्ति गराश पर लगा दी, वह उसकी सारी इच्छाएँ संकेत मात्र से समझ जाती थी, उसके पैरों में सिर रखती रहती थी। खेत-कैम्प जाते समय वह अपने साथ अत्यन्त स्वादिष्ट व्यंजन ले जाती थी, उसकी ख़ातिरदारी करती थी और उसकी ईर्ष्या का शमन करती थी : कलंतर बुड्ढा है, तोंदल है और उसके बाप की उम्र का है।

वह कल्पना किया करती थी कि गराश से शादी करके वह कैसे उसके पिता की नीली कार में बैठेगी, कैसे वे दोनों बाकू जाकर 'इन्टूरिस्ट' होटल में बाथरूमवाले कमरे में ठहरेंगे। वे दिन में हर दुकान में झांकते हुए छायादार चौड़ी सड़कों पर घूमेंगे, शाम को उनके सम्मान में दिये प्रीति-भोजों और थियेटरों में जाया करेंगे। हर जगह सुखी वर-वधू के पीछे-पीछे नीली 'पोब्येदा' कार चलेगी, ज़ाहिर है ड्राइवर रख लिया जायेगा, और नहीं तो क्या... इधर कार ओपेरा थियेटर के बाहर रुकेगी। काला सूट पहने गराश प्रिय पत्नी को गाड़ी से उतरते समय सहारा देगा, जबकि नज़नाज़ ताफ़्ता की सरसराती पोशाक, नाइलोन की झीनी जुर्राबें पहने, गुलाबी कानों में हीरे जड़े कर्णफूल पहने, सुन्दर पति के हाथ में हाथ डाले हॉल पार करेगी, सब उनकी तरफ़ देख रहे होंगे... नज़नाज़ को लोग प्रोफ़ेसर की पत्नी समझेंगे। सहेलियां डाह के मारे पागल हो जायेंगी। वह

उनसे दुआ-सलाम तक नहीं करेगी। सच पूछिये, यदि चाहे[illegible]र झुकायेगी, नहीं चाहेगी – मुंह फेर लेगी...

यह मालूम होने पर कि माय्या ज़ैनब के यहां रहने चली गयी है, नज़नाज़ को अपनी आशाएं पूर्ण होने का पूरा विश्वास हो गया। यहां तक कि जब पड़ोसिनों ने उसे बताया कि सकीना ने बहू को नहीं त्यागा है और उससे मिलने गयी है, नज़नाज़ केवल मुस्करा दी : "दिल छोटा मत करो, प्यारी सास, मैं पीछे नहीं रहनेवाली... उस सुखी शहरी लड़की के सामने अपनी बेइज़्ज़ती कराती रहो, पर गराश मेरी आग़ोश से नहीं निकल सकेगा।"

घर में ख़ूब ख़ुशियां मनायी गयीं, जब सलमान ने बताया कि रुस्तम ने अगुआ भिजवाने की इजाज़त दे दी है। उसने गुप्त स्थान से पैसा निकालकर बहन को तोहफ़े ख़रीदने शहर भेज दिया। नज़नाज़ की आंखें भेड़िये की आंखों जैसी चमक उठीं : अब वह सकीना के गले में दुहेरी ज़ंजीर डाल देगी, उसका एक छोर उसके भाई के हाथ में होगा और दूसरा ख़ुद उसके हाथ में। सास ने ज़रा भी चूं की और वे कुत्ते के पट्टे से बुढ़िया का गला घोंट देंगे। देख लेना!..

उसने सलमान के दिये हुए पैसों से एक अंगूठी, एक हार, कर्णफूल ख़रीदे और कुछ अपनी जेब में भी डाल लिये।

"अध्यक्ष की बेटी ऐसे तोहफ़े देखकर पागल हो जायेगी! अगुओं को कब भेजें?"

सलमान ने कांपती उंगलियों से क़ीमती चीज़ों को टटोलते हुए कहा :

"जल्दबाज़ी मत करो! रुस्तम बुड्ढा घोड़ा है और अड़ियल भी। न जाने कब काठी से गिरा दे। उस पर ग़म ज़रा हावी हो जाने दो, वह देख ले कि हमारे लिए उससे रिश्ता क़ायम करना कोई बहुत इज़्ज़त की बात नहीं है, फिर ख़ुद ही दिन तय करेगा..."

जब यारमामेद का भण्डाफोड़ किया गया था, तो सलमान बुरी तरह घबरा गया था। उसने बहन को सारा सामान बांधकर चलने की तैयारी करने को कह दिया था। नज़नाज़ की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि ऐसी जल्दबाज़ी का कारण है क्या। जब कि उसका भाई यारमामेद की सात पीढ़ियों को कोसता हुआ लाचार गुस्से में घर में फड़फड़ाता चहलक़दमी कर रहा था।

"तुमने क्या नहीं देखा कि वह उल्लू है?" नज़नाज़ ने तीखे स्वर में पूछा।

"मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा रहा हूं," सलमान ने स्वीकार किया। "लेकिन तुम्हें वह कहावत याद है: दुधारू गाय की लात भी सहनी पड़ती है... आख़िर मैं कर भी क्या सकता हूं? अब जब यारमामेद की सारी काली करतूतों का परदाफ़ाश हो चुका है, रुस्तम बौखलाया हुआ घूम रहा है, मुझे ही फंसा रहा है: 'तुम्हीं ने उस चुग़लख़ोर को मेरे मत्थे मढ़ा था।' उधर ज़िला समिति सामूहिक फ़ार्म पर बराबर नज़र रखे हुए है। मालूम पड़ा है कि जब असलान रात को केन्द्रीय खेत-कैम्प में रुका था, तो शेरज़ाद और नजफ़ फ़ौरन भागे-भागे वहां पहुंच गये थे। मैं सोच सकता हूं कि उन्होंने मेरी कैसी बुराई की होगी... सुनकर ख़ून जम जाये!"

"ख़ुदा कलंतर भैया को सेहत बख़्शे!" नज़नाज़ ने बड़ी धर्मनिष्ठा के साथ कहा।

"और अगर उसे हटा दिया गया तो?!"

"यह कैसे हो सकता है!.. तुम ज़रा देखो तो सही: ज़िला समिति के कितने सचिव हटाये जा चुके हैं, पर वह चट्टान जैसा खड़ा है। बिलकुल अडिग।"

"पर असलान के सामने वह नहीं टिक सकेगा," सलमान ने बहन की बात काट दी। "अगर कलंतर ताक़तवर होता, तो शहर से नये लेखाकार को नहीं भेजा गया होता। बुरी से बुरी हालत में मुझे वापस पुरानी जगह पर रख दिया जाता। पर कौन अड़ा रहा? बेशक, ज़िला समिति। नया लेखाकार कुछ शक्की क़िस्म का है, दिन-रात पुराना हिसाब-किताब जांचता रहता है..."

"तो क्या..." नज़नाज़ एकाएक चुप हो गयी। उसने कभी सोचने की कोशिश नहीं की थी कि भाई के पास इतने पैसे कैसे आये। "मैं अपने बदन पर मिट्टी का तेल छिड़ककर जल मरूँगी!" वह अचानक चीख़ उठी।

लेकिन सलमान बहन की ऐसी चालों का आदी हो चुका था, – उसके चेहरे पर शिकन भी नहीं पड़ी।

इन सब कष्टदायक परिस्थितियों के बारे में सोचकर नज़नाज़ इस दूरदर्शितापूर्ण निष्कर्ष पर पहुंची कि उसे अविलम्ब भाई की सगाई पेरशान से करा देनी चाहिए और ख़ुद उसे गराश को कसकर पकड़ लेना चाहिए। सामूहिक फ़ार्म के जाने-माने अध्यक्ष, कम्युनिस्ट रुस्तम की आड़ में और फ़िलहाल कलंतर का सहारा लेकर वे ख़तरे से साफ़ बच जायेंगे...

"मैं इसी वक़्त रुस्तम के घर मिलने जाती हूं," उसने कहा।

सलमान ने माथा पकड़ लिया और फुफकारा:

"चुप रहो! रुस्तम के कानों में अफ़वाहें पड़ चुकी हैं, वह मुझे धमकी दे चुका है: 'अपनी बहन को क़ाबू में रखो'!"

"तुम्हें मेरी तरफ़दारी करनी चाहिए थी, कहना चाहिए था: ये बिलकुल ओछी, गंदी अफ़वाहें हैं! सिर्फ़ हमारे गांव जैसी जंगली जगह में ही ऐसी नीच झूठी अफ़वाहें उड़ायी जा सकती हैं। कलंतर-लेलेश से जाकर शिकायत करो, वह मेरी बेइज़्ज़ती नहीं होने देगा।"

"चु ऽऽ प रहो ऽऽ!" सलमान चिल्लाया। "या तो उनमें तलाक़ की नौबत ला दो, या यहां से अपने अस्पताल चली जाओ!"

भीषण हताशा के कारण वह तख़्त पर गिरकर लेट गया।

नज़नाज़ समझ गयी कि उसे जल्दी करनी चाहिए। वह अगले पूरे दिन कहीं न कहीं गराश से मिलने की आशा में सामूहिक फ़ार्म में भटकती रही। अन्त में निराश होकर उसने एक मुर्ग़ी पकाई, रोटी बनाई, हरी सलाद तैयार की और उसे सफ़ाई से अपने लाल क्रासवाले प्रथम उपचार बैग में रख लिया, फिर कुछ सोचकर कोनक की एक नयी बोतल भी उसमें ठूंस ली।

जब सजी-धजी, पाउडर थोपने से गाल नीले-से किये, इत्र की भीनी ख़ुशबू फैलाती नज़नाज़ चौराहे पर पहुंची तो अंधेरा हो आया था। उसने सामने से आते ट्रक को रोका।

"तुम्हारे बलायें मेरे सिर! मुझे ज़रा गराश के पास छोड़ दो: सुना है, किसी ट्रैक्टर-चालक का हाथ मशीन में आ गया..."

बैग पर बना बड़ा-सा लाल क्रास देखकर चालक को विश्वास हो गया और उसने नर्स को सीधे खेत पर पहुंचा दिया।

गराश कम्बाइन पर काम कर रहा था, – उसने आज कोटे का दोगुना काम करने की क़सम खायी थी। उसने चिढ़कर मेड़ पर खड़ी नज़नाज़ को देखा, आंख-भौंह सिकोड़ीं, पर फिर भी स्टियरिंग व्हील अपने सहायक को देकर नीचे कूद गया। स्तेपी का विशाल जहाज़ आगे चला गया।

"क्या कुछ हो गया है? क्यों आयी हो?" उसने रुखाई से पूछा।

नज़नाज़ का उन्नत वक्ष हिल उठा; उसने मन्द मुस्कान के साथ आंखें चलायीं।

"चली जाओ इसी वक़्त!" गराश ने कहा।

"बेशक, मेरा यहां रात गुज़ारने का इरादा नहीं है," नज़नाज़ ने रूठकर मुंह फुला लिया। "पांचेक मिनट तो बैठ सकते हो न?"

गराश ने दूर जा पहुंची और अंधेरे में लगभग नज़र नहीं आ पा रही कम्बाइन की तरफ़ चिन्ताकुल दृष्टि डाली। सहायक भरोसेमंद लड़का है, मेहनती है, उसे स्वतंत्र रूप से काम करने की आदत डालनी चाहिए। और वह ठण्डी सांस लेता मेड़ की तरफ़ बढ़ा, जब कि नज़नाज़ वहां नाली के ऊपर झुके बेद-मजनूं पेड़ के तले काम में जुटी हुई थी, अख़बार पर खाना रख रही थी, फिर उसने बोतल भी रख दी।

"घबराओ मत, कोई नहीं देखेगा, अंधेरा है!" उसने मज़ाक़ में आवाज़ दी और कोनक का लबालब भरा प्याला गराश की तरफ़ बढ़ाया।

भुनी हुई मुर्ग़ी की ख़ुशबू सूंघ कर गराश ने महसूस किया कि उसे बहुत तेज़ भूख लगी है। नशीला पेय पीने से उसने साफ़ इनकार कर दिया: उसे सारी रात काम करना है, सिर चकरा जायेगा... नज़नाज़ ने बहस नहीं की, मनुहार नहीं की, हाथ से मुर्ग़ी के टुकड़े कर-करके सबसे चर्बीदार टुकड़े उसे देती हुई शिकायत करती रही:

"गली में निकलते शर्म आती है। तुम यह काम ख़तम करो, मैं विनती करती हूं, मैं चैन की ज़िन्दगी के लिए तड़प रही हूं।"

"कौन-सा काम?"

नज़नाज़ ने जवाब देने के बजाय उसे चूम लिया। गराश को अपने सारे बदन में सिहरन महसूस हुई, फिर भी उसने उसे धकेल दिया।

"मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। तुमने मुझे बदनाम करा दिया, मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गयी। अब मैं कहां जाऊं – ऐसी हालत में? जल्दी से तलाक़ ले लो, हम शादी की रजिस्ट्री करवा लेंगे, घर बसा लेंगे," नज़नाज़ गराश का आलिंगन करती हुई फुसफुसायी।

गराश में पिता से विरासत मिला अनम्य स्वभाव जाग उठा। नज़नाज़ की गरम बांहों से निकलकर युवक चिल्लाया:

"दफ़ा हो जाओ यहां से!"

और वह उससे दूर हो गया।

गुस्से से पागल हुई नज़नाज़ ने उसका पीछा करके उसकी आस्तीन

पकड़ ली और बार-बार यही दोहराने लगी, मानो उस पर भूत सवार हो गया हो:

"अपनी जान ले लूंगी और तुम्हें भी मार डालूंगी, याद रखना..."

"पिण्ड छोड़ो मेरा!"

"अच्छा, यह बात है!" नज़नाज़ ने उसके थप्पड़ जड़ने के लिए हाथ उठाया, पर गराश ने पीछे हटकर उसके हाथ इतने ज़ोर से दबाये कि वह घुटनों के बल गिर पड़ी।

"हाय, मार डाला, बचाओ!" नज़नाज़ धूल में लोटती और नाख़ूनों से अपने गाल खरोंचती चीख़ उठी, लेकिन गराश सिर पर पैर रखे कम्बाइन की तरफ़ भाग लिया था।

हृदयविदारक चीख़ें सुनकर कच्चे रास्ते से खेत से घर लौटती लड़कियां भागी हुई आ पहुंची...

सारी रात गांव में ताज़ा अफ़वाहें उड़ती रहीं...

१०

रुस्तम अपनी मनपसंद खाने की चीज़ शक्कर-से मीठे रसदार तरबूज़ का रसास्वादन कर रहा था; दिसम्बर में भी, जब मुग़ानवासी उसका स्वाद भूल चुके होते थे, रुस्तम की मेज़ पर कभी-कभी ख़ास तरीक़े से सुरक्षित रखा हुआ, सीधा खेत-से तोड़कर लाया हुआ-सा ताज़ा तरबूज़ दिखाई दे जाता था।

विशाल तरबूज़ आधा रह गया था, रुस्तम ने बुद्धिमत्तापूर्वक खाना बंद कर सुस्ताने का फ़ैसला किया।

"बेटी!" उसने बरामदे की रेलिंग पर झुककर आवाज़ दी। "अपने दोस्तों को बुलाकर तरबूज़ चखने को कहो..."

परेशान गिज़ेतार व नजफ़ के साथ आंगन में हम्माम का बाक़ी बचा हिस्सा बना रहे थे। पिछले कुछ दिनों में गृहस्वामी के साथ इतनी अप्रिय घटनाएँ घटी थीं, उसे इतनी परेशानियां उठानी पड़ी थीं कि वह गांव में पहला हम्माम बनाने के अपने वादे के बारे में भूल गया था और अब जब बेटी ने मित्रों को मदद करने के लिए बुला लिया था, तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह ख़ुश हो या बड़बड़ाये...

"अभी आयी, अब्बा, ठहरो!"

रुस्तम ने आदतन पाइप की तरफ़ हाथ बढ़ाया, पर तभी खाने के कमरे से सकीना ने झांककर देखा और उसे रोक दिया:

"अभी-अभी तो पीकर चुके हो! तुम्हारी छाती खरखर करती रहती है, रेल के इंजन की तरह। डाक्टर का कहना नहीं मानते!"

रुस्तम ने बात मान ली।

"अच्छा, अच्छा, बिना तम्बाकू के पाइप मुंह में रखने से ही मुझे कुछ चैन मिल जाता है।"

पेरशान खाने के कमरे से बड़ा लैम्प ले आयी, उसने उसकी चिमनी साफ़ की और माचिस की तीली से जली हुई बत्ती के किनारे ठीक कर दिये।

"अब्बा, आख़िर बिजली कब आयेगी?" उसने पूछा। "मिट्टी के तेल में हाथ सानते-सानते ऊब गयी हूं।"

"सलमान से पूछो, जिसे तुम सब तिरछी नज़रों से देखते हो," रुस्तम ने कटु व्यंग्य के साथ कहा। "अगर गांव में बिजली की रोशनी जगमगाये, तो इसका श्रेय सलमान को होगा, सिर्फ़ सलमान को!"

पेरशान के पीछे-पीछे कमरे में आयी गिज़ेतार ने इससे असहमति प्रकट की:

"बिजली सरकार की है, पैसा सामूहिक फ़ार्म का, और खंभे हम लगा रहे हैं। इसलिए सलमान की तारीफ़ के पुल बांधना ठीक नहीं है।"

रुस्तम की घनी मूंछें फूल गयीं।

"उसकी तारीफ़ के पुल कोई नहीं बांध रहा है। कुछ भी हो, पर लड़का पूरी कोशिश कर रहा है। अब तुम लोग उसे यारमामेद के साथ बेड़ियों में जकड़ना चाहते हो। बेकार! हां उसने उस बदमाश पर विश्वास किया, पर मैंने भी तो उस पर विश्वास किया था: यानी हम दोनों ही दोषी हैं।"

"यारमामेद का क़िस्सा अभी ख़तम नहीं हुआ है, चाचा," नजफ़ ने मेज़ पर बैठते और तरबूज़ की सबसे बड़ी फांक उठाते हुए कहा। "कल पार्टी ब्यूरो में इस बारे में बात होगी।"

गृहस्वामी जवाब सोचता हुआ उदासी से उसके सुशील चेहरे की ओर देखता रहा, पर अचानक किसी ने फाटक खटखटाया और कलंतर की बुलंद आवाज़ सुनाई दी।

"ऐ, कीशी, बिनबुलाये मेहमान का स्वागत करोगे?"

पेरशान ने अपना सिर पकड़ लिया:

"मैं इस घमण्डी बौने को देख भी नहीं सकती। चलो, बग़ीचे में चलते हैं!"

युवा चलते बने।

रुस्तम को कलंतर को देखकर लगा जैसे उस पर खौलता पानी डाल दिया गया हो। सकीना भी उदास हो गयी: वह कलंतर-लेलेश से कभी भले की आशा नहीं करती थी। वह किस लालच में यहां आया है?

फिर भी गृहस्थ चुप रहे। मेहमान से यह नहीं कहा जा सकता: "चले जाओ!.." न चाहते हुए भी दिल थामकर उसका शिष्टतापूर्वक स्वागत करना होता है...

सजीले, आडम्बरपूर्ण कलंतर के पीछे-पीछे बरामदे में दो मर्द और दो औरतें आयीं। उनमें से एक, मोटी व ऊंचे क़द की, अतलस के झालरदार थालपोश से ढका थाल उठाये हुए थी।

गृहस्वामी और गृहस्वामिनी ने एक दूसरे से नज़रें मिलायीं: अगुए आये हैं...

थाल को विधिवत् मेज़ के बीच में रख दिया गया, मेहमान उसके चारों ओर बैठ गये और थोड़ी देर चुप रहे। अन्त में ऊंचे क़द की मोटी औरत बोली:

"अरे, चचा! बेटी अखरोट के पेड़ की तरह होती है: हर राह चलता उसकी तरफ़ डाहभरी नज़रों से देखता है, जबकि अखरोट मालिक को मिलते हैं। आपको अपनी बेटी प्यारी है – आपका ख़ज़ाना है, पर हमारे पुरखों का कहना है कि बेटी बाप के घर में मेहमान होती है। देर-सवेर उसका पति उसे अपने घर ले जाता है। मां-बाप का फ़र्ज़ सभी को मालूम है: बस ग़लती न करें, लड़की की शादी अच्छे और लायक़ आदमी से करें..."

"हां, अच्छे आदमी से ही करें!" अगुआ औरत को लम्बी नाक व मोटे होंठोंवाले मर्द ने टोक दिया। "सबसे अहम बात है कि आदमी दिल का कैसा है... भला मैं मिसाल के तौर पर, अपनी ख़ूबसूरती से अपनी बीवी को लुभा सकता था? लेकिन वह मुझे समझ गयी, उसे मेरे स्वभाव से प्यार हो गया और कभी नहीं पछताती..."

अगुआ औरत ने फ़ौरन हां में हां मिलायी:

"पति का चेहरा शहद की रकाबी नहीं होता, उससे गृहस्थी में मिठास नहीं बढ़ता। मर्द में सब से अहम चीज़ है—अक़्ल। और बेशक दो जून रोटी कमाने की लायक़ी।"

बग़ीचे में सब सुनाई दे रहा था। नजफ़ पेरशान के कोहनी मारकर व्यंग्यपूर्वक हंस पड़ा:

"अगुए आये हैं? मुबारक हो!"

"आख़िर वह कौन है? तुमने छुपाया क्यों?" गिज़ेतार फुसफुसायी।

बरामदे में सच्ची बात को छिपाते हुए संकेतों से परिपूर्ण विनम्र भाषा में बातचीत हो रही थी, लेकिन कलंतर इससे जल्दी ही ऊब उठा: लड़कीवाले मीठी चाय से ख़ातिरदारी नहीं कर रहे हैं, वर का नाम बताये जाने का इंतज़ार कर रहे हैं... और उसने दृढ़ निश्चय के साथ रुस्तम की ओर हाथ बढ़ाया:

"चचा, तुम्हारी इजाज़त से हम अब पेरशान और अनाथ सलमान के नाम पर कोई मीठी चीज़ पियेंगे। जोड़ी अच्छी रहेगी न? देखते रह जाओगे!.."

सकीना चिल्ला उठी, अपनी जगह से थोड़ी उठी और निढाल हो धम्म से कुरसी पर वापस बैठ गयी। रुस्तम का चेहरा लाल हो उठा।

"मुबारक हो, मुबारक हो!" नजफ़ बग़ीचे में कह रहा था। "सारे काम गुप-चुप कर डाले? पर हमारे शायर का क्या होगा?"

गिज़ेतार ग़ुस्सा हो उठी:

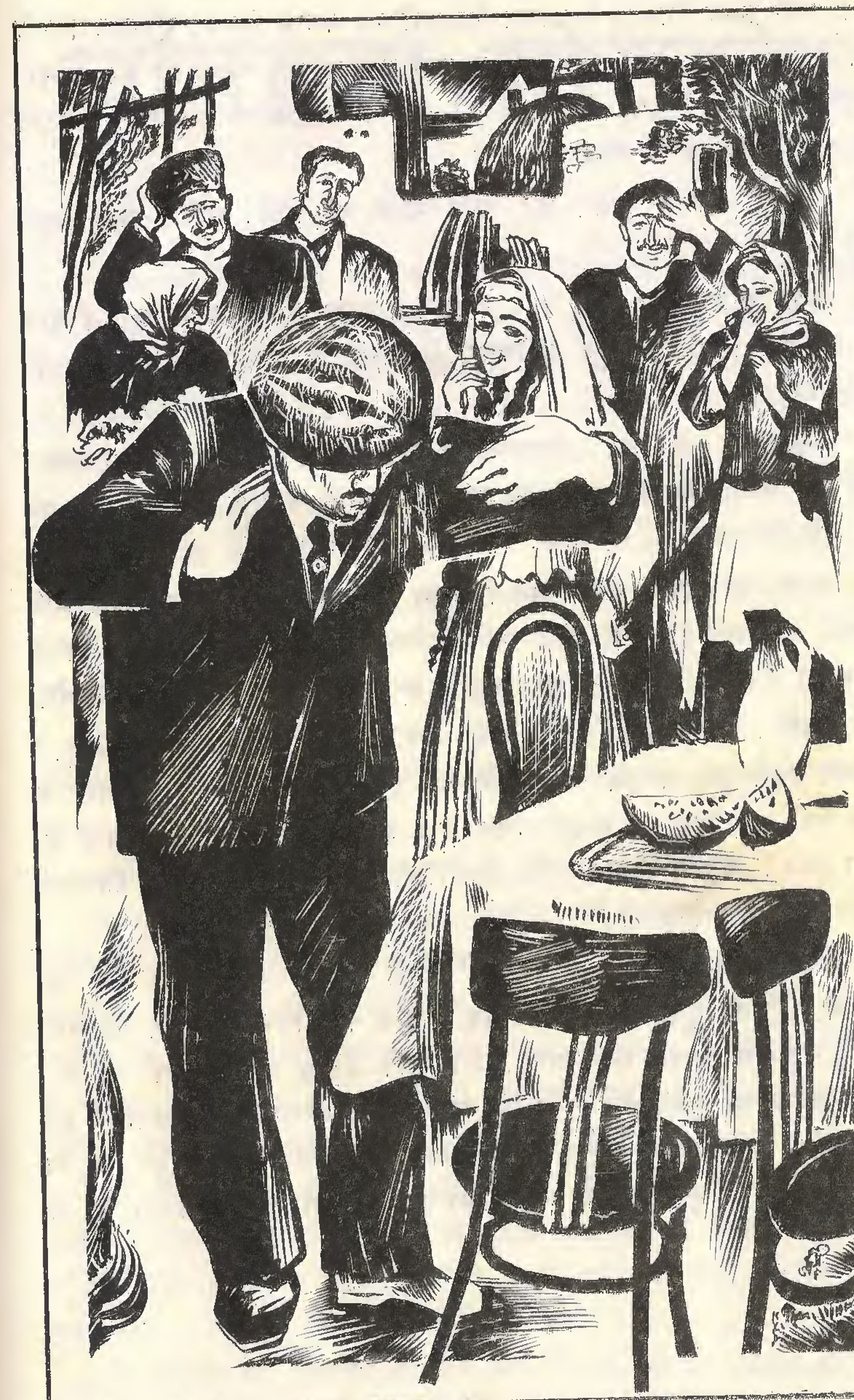
"इंतज़ार करती रही, घुटती रही और अब कछुए के साथ फंस गयी!.. बहुत अच्छा किया! हिरनी को कछुए से प्यार हो गया! अरे, वह ख़ुद भी यहीं, वहां फाटक के पास चहलक़दमी कर रहा है! यानी तुमने सब पहले से तय कर लिया है? अगर यही बात है, तो इस घर में मैं क़दम भी नहीं रखूंगी।"

पेरशान ने सहेली को डरा देनेवाली अजीब मुस्कान के साथ पुष्टि की:

"हां, हमने सब तय कर लिया!" और बरामदे में चली गयी।

कलंतर ज़ोर दे रहा था कि फ़ैसला जल्दी से जल्दी करना चाहिए, पर रुस्तम अपने लिए अस्वाभाविक हिचकिचाहट के साथ टाल-मटूल कर रहा था, बात पत्नी पर टाल रहा था, जब कि सकीना ने केवल हाथ हिला दिये:

"आख़िर मैं कौन होती हूं? बेहतर होगा, लड़की से पूछा जाये।"



उसी समय पेरशान ने आकर मेहमानों को सलाम किया, इजाज़त मिलने का इंतज़ार किये बिना थाल पर से थालपोश उठाकर ख़ोनचा* पर सरसरी नज़र डाली, पर उसने मिठाइयों को नहीं छुआ, बल्कि अंगूठी व मोतियों के हार में दिलचस्पी दिखाई।

"अहा, कितने सुन्दर हैं! और महंगे भी होंगे, क्यों? मुझे क़बूल है!"

अगुए ख़ुश होकर बोल उठे, कलंतर ने राहत की सांस ली और रिवाज के अनुसार किंकर्त्तव्यविमूढ़ बेटीवालों से जल्दी से मीठी चाय पिलाने की फ़रमाइश की...

"ठहरिये, ठहरिये!" पेरशान अचानक नख़रीले अंदाज़ में चिल्लायी। "लेकिन सबसे ज़रूरी आदमी तो यहां मौजूद ही नहीं है!" और वह पूरे ज़ोर से चिल्लायी: "सलमान, सलमान, यहां आओ!"

रुस्तम को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। कहीं ख़ुशी के मारे पागल तो नहीं हो गयी है? लेकिन उसकी बेटी अविश्वासपूर्ण ढंग से मुस्कराते युवक को प्यार से कुछ कहती बरामदे में खींच कर ला रही थी।

"उफ़, कितने ख़ूबसूरत हो तुम, मेरे दूल्हे! .." और उसने चाकू से खोखले किये हुए तरबूज़ के छिलके को उठाकर पूरे ज़ोर से सलमान के सिर पर रख दिया। "तुम्हारे लिए मेरा शादी का तोहफ़ा है! शाह का जैसा ताज! अब याद रखोगे कि लड़की की मर्ज़ी के बिना अगुआ भिजवाने का क्या नतीजा होता है!"

सलमान के चेहरे और गरदन पर से तरबूज़ के रस की धारें बह निकलीं, उसकी बूंदें उसकी सफ़ेद-झक क़मीज़ के कॉलर के अंदर भी चली गयीं, वह ऐसे चक्कर खाने लगा, जैसे उसके असह्य खुजली चल रही हो, और यह इतना हास्यास्पद लगा कि गिज़ेतार व पेरशान खिलखिलाकर हंस पड़ीं और उन्हें देखकर अगुए और मेज़बान भी हंसने लगे, यहां तक कि कलंतर गम्भीर मुखमुद्रा में भी हल्का-सा क़हक़हा लगाये बिना न रह सका।

---

*ख़ोनचा – थाल में सजी और क़ीमती कपड़े से ढकी पूर्वी मिठाइयां।

चौदहवां परिच्छेद

१

लगभग दो किलोमीटर चौड़े खेत के किनारे-किनारे दूर कहीं बहुछिद्रित नल में जाकर गिरनेवाली नालियां सर्पिल दरारों-सी फैली हुई थीं। यहीं ज़मीन में बढ़े नमक का प्रक्षालन आरम्भ हुआ था... माय्या ने नालियों की जांच की और कहीं-कहीं उनका तल गहरा करने का निर्देश दिया। कांसे के रंग के छितरे बादल आकाश में निश्चल लटके हुए थे; सूरज की प्रखर किरणें बड़ी निर्ममता से धरती को झुलस रही थीं।

बड़ी नाली से गंदला और गाद-भरा पानी छोड़ा गया। तड़की हुई ज़मीन उसे जल्दी-जल्दी पीने लगी, काली पड़कर फूल गयी, पर पानी बराबर आता रहा, शीघ्र ही उसका पेट भर गया, निचली नाली के किनारे पसीजने लगे, उनसे हरी-सी नीली बूंदें ढुलकने लगीं।

"वह रहा – ज़मीन का ज़हर, मुग़ान की मिट्टी का विष, जो उसकी उर्वरता को नष्ट कर देता है और स्तेपी को तबाह कर देता है!" माय्या ने सोचा।

पानी में घुले खनिज लवण नाली में बहकर दूर जाने लगे।

माय्या चौड़े छज्जेवाला स्ट्राहैट लगाये, जो झुलसती धूप से उसके चेहरे की रक्षा कर रहा था, नाली के किनारे-किनारे लम्बे डग भरती चली जा रही थी। उसे अच्छा लगा कि वह अकेली है, रुस्तम नहीं आया, वरना वह टांग अड़ाने लगता, हुक्म चलाने लगता... सामूहिक किसानों ने बताया था कि उसे व शेरज़ाद को अचानक ज़िला समिति में बुला लिया गया है जब कि सलमान पशुपालन फ़ार्म चला गया है।

एक मिनट बाद ही माय्या सोचने लगी कि रुस्तम शायद हुक्म नहीं चलाने लगता, पिछले कुछ अरसे से उससे मुलाक़ात के समय वह नरमाई से पेश आने लगा था और अपने को किसी हद तक दोषी अनुभव करता हुआ भी।

यह देखकर कि प्रक्षालन सामान्य ढंग से चल रहा है, माय्या कूरा तट पर चली गयी, जहां घास से साफ़ की हुई घासस्थलियों पर पास-पास लगी

ऊंची-ऊंची टालों की काली छायाएं पड़ रही थीं। उसका मन सुस्ताने और थोड़ी देर ठण्डक में लेटने को कर रहा था। गरमी के दिन का सबसे गरम प्रहर था, जब सांप भी हांफने लगते हैं और पत्थरों के नीचे छिप जाते हैं, केवल छाया में, जहां नदी की हवा के झोंके आते रहते थे, चैन से सांस लेना और होश संभाल पाना सम्भव था। कुछ समय से माय्या जल्दी थकने लगी थी, उसके पैरों में टीस उठने लगती थी और दिल ज़रा तेज़ी से धड़कने लगा था।

वह शाम तक बिलकुल पस्त हो गयी और उसे इस बात की ख़ुशी हुई कि उसका परिचित चालक उसे 'नवजीवन' से 'लाल झण्डा' पहुंचा गया।

माय्या 'नवजीवन' की ज़मीन के बारे में भी नहीं भूलती थी, वह अकसर सामूहिक फ़ार्म में आती रहती थी, सिंचाई पर और नालियों की सफ़ाई व मरम्मत पर नज़र रखती थी। हर उपटोली में उसकी सहेलियां थीं। वे उसे समय पर बता देती थीं कि कहां पौधे मुरझा रहे हैं, कहां नमक बढ़ा है, कहां नाली टूटी है...

स्त्रियां व युवतियां उससे सहानुभूति रखती थीं, पुरुष उसका आदर करते थे, युवक सहर्ष माय्या से बात करने लगते थे, पर कभी धृष्टता करने का साहस नहीं करते थे। वह कई बार सोचा करती थी कि रूप का मेहनतकश से ज़्यादा सच्चा और विनयशील प्रशंसक कोई नहीं हो सकता। लेकिन गराश भी तो मेहनतकश परिवार में बड़ा हुआ है। उसे आख़िर क्या हुआ है? क्या वह माय्या को प्यार नहीं करता था?

माय्या हर परिस्थिति से समझौता कर सकती थी, आदी हो सकती थी, पर प्रेम के सुखद काल की स्मृतियों को भुला पाना असम्भव था। नहीं, वे एक दूसरे को प्यार करते थे। कोई रहस्यमयी आवाज़ माय्या को पति को भविष्य के और प्रेम के मान पर क्षमा करने को कहती थी। उनका प्रेम नष्ट नहीं हुआ था, वह जीवित था। माय्या की प्रतिद्वंद्विनी को अपमानित करके गांव से निकाल दिया गया था। पति ने एक बार भी नहीं कहा था कि वह माय्या को प्यार नहीं करता। लेकिन अब वह क्यों खेत-कैम्प में रह रहा है? क्या वह डरता है या नहीं जानता कि शर्म के मारे कहां मुंह छिपाये? क्या माय्या को रुस्तम का घर नहीं छोड़ना चाहिए था? क्योंकि उससे किसी ने नहीं कहा था: "निकल जाओ!" इसके विपरीत सकीना और पेरशान उसके पास आयी थीं और उसे लौटने को

मनाती रही थीं। लेकिन ठण्डे, प्रेम व स्नेह से वंचित, आर-पार हवा आने-जानेवाले घर में भी तो माय्या नहीं रह सकती थी।

"बहन, तुम फिर अपने आप से बातें कर रही हो! किसलिए!" हाथ में भूगोल की पाठ्य-पुस्तक लिए कमरे में भागकर पहुंचा रहीम कह उठा।

खिड़कियां खुली हुई थीं, गोशाला में गाय दुह रही ज़ैनब ने सारी बात सुन ली और बेटे पर चिल्लायी:

"माय्या के पीछे मत पड़ो, उसे परेशान मत करो! बेहतर होगा कुछ सेब ही तोड़ लो!"

कहने की देर थी कि आदेश का पालन कर दिया गया: एक मिनट बाद ही माय्या के सामने सेबों से भरी प्लेट रख दी गयी। वे विचित्र रंगों से रंगी चीनी मिट्टी की प्यालियों जैसे लग रहे थे। रहीम शाबाशी मिलने का इंतज़ार कर रहा था। माय्या ने साहस करके, खट्टे रस के कारण मुंह न बनाने की कोशिश करते हुए सेब चखा और बोली:

"कितना रसदार है!"

बालक का चेहरा खिल उठा, वह ख़ुशी के मारे उछल भी पड़ा।

"मैंने ख़ुद पैवंद लगाया था, जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था। सचमुच बहुत बढ़िया हैं न?"

"हां, ख़ूब रसदार हैं। तुम क्या बनना चाहते हो?"

"सच्ची बात कहूं?"

"और क्या? सच्ची बात ही कहनी चाहिए।"

"तुम हंसोगी तो नहीं न?"

"अरे, तुम भी क्या!" रहीम माय्या को अच्छा लगता था। वह होशियार, फुरतीला था और मां को प्यार करता था। "काश, मेरे भी ऐसा ही बेटा हो!" वह आंखों में रात काटती हुई सोचा करती थी।

"मैं भी तुम्हारी तरह जल-इंजीनियर बनूंगा," लड़के ने फुसफुसाकर कहा। "मां अकसर ज़मीन में नमक बढ़ने की शिकायत करती रहती थीं: नमक के कारण कभी पौधे मुरझा जाते थे, तो कभी बाग़ में सेब के पेड़। और तुम लवणकच्छों से नहीं डरती हो! तुमने उन पर विजय पा ली! और मैं सिर्फ़ सामूहिक फ़ार्म की ज़मीन को ही नहीं, सारी मुग़ान को नमक से साफ़ कर दूंगा! क्या तुम्हें विश्वास नहीं है?"

"अरे, यह तो बहुत ही नेक और कठिन लक्ष्य है!" माय्या ने गम्भीर स्वर में कहा। "तुम्हारी सफलता की कामना करती हूं, रहीम!"

"मालकिन घर पर है?" फाटक से कारा केरेमोगलू की आवाज़ आयी।

रहीम मेहमान की तरफ़ लपका। उसने वृद्ध को बरामदे में लाकर आराम-कुरसी पर बिठा दिया, हांफ रही जैनब एप्रन से हाथ पोंछती हुई चूल्हे की तरफ़ लपकी, पर कारा केरेमोगलू ने उसे रोककर परेशान न होने के लिए कहा: वह थोड़ी देर के लिए आया है...

कारा केरेमोगलू ने रहीम के हाथों से पाठ्य-पुस्तक लेकर पूछा:

"कपास के खेत में काम करोगे?"

"मैं तो बड़ी ख़ुशी से करूं!" रहीम ने शिकायत-भरे स्वर में उत्तर दिया। "लेकिन अध्यापक नाराज़ होते हैं, कहते हैं: सामूहिक फ़ार्म की अपनी योजना है और स्कूल की – अपनी। स्कूली बच्चों की पढ़ाई छुड़ाकर शिक्षा सत्र देर से शुरू करने की आदत पड़ गयी है..."

कारा केरेमोगलू नेकदिली से हंस पड़ा।

"उनकी बात भी सही है, बेटा!.. हम कपास चुनने की कम्बाइनों से वैसे ही दूर भागते हैं जैसे प्लेग से और यह काम स्कूली बच्चों से कराना चाहते हैं। पर इस साल से यह बंद! तुम पढ़ो, बुद्धिमान बनो! अच्छा, ज़रा मुझे बताओ, मुग़ान कहां है?"

रहीम ने नक़्शा खोलकर मुग़ान दिखा दिया, फिर गंदा नाख़ून संकरी हरी पट्टी पर गड़ाया:

"और मुग़ान का यह भाग नदी पार दक्षिणी आज़रबैजान में है!"

"अराज़?" कारा केरेमोगलू ने दुःखी स्वर में पूछा। "अराज़!.. मैं इसे शान्ति से नहीं देख सकता: दिल दुखता है!"

माय्या नहीं समझ पायी:

"क्या आपके रिश्तेदार सीमा पार रहते हैं?"

"मेरे दिल का टुकड़ा है वहां!"

"कारा चाचा के मां और बहन की क़ब्रें वहीं हैं," नासमझ रहीम ने कहा।

मां ने उसकी आस्तीन खींची और सिर हिलाकर कहा:

"ज़रा कम बोला करो, बहुत ज़्यादा जानते हो!"

कारा केरेमोगलू अब कुछ प्रसन्नचित्त हो उठा।

"क्या हमारी मुग़ान काफ़ी विशाल है?"

"हमें अभी यह पढ़ाया नहीं गया है..." रहीम शर्मा गया।

माय्या ने तुरन्त उसकी मदद कर दी:

"तलीश की तराई में फैली सारी मुग़ान का क्षेत्रफल सात लाख हेक्टेयर है, उसमें से छः लाख हेक्टेयर हमारे क्षेत्र में है और एक लाख हेक्टेयर – दक्षिणी आज़रबैजान में।"

कारा केरेमोगलू की आंखें उत्साह से खिल उठीं: वह ये आंकड़े बचपन से जानता था, पर अपनी जानकारी के बारे में किसी को नहीं बताता था।

"उफ़ कितना असीम क्षेत्र है! नंगी आंख से पूरा नज़र भी नहीं आये, घोड़े पर पार करने की कोशिश की जाये, तो बेचारे क़दमबाज़ के सुम घिस जायें!.. पर तुम लोगों को पता है, मुग़ान की ज़मीन पके बालों-सी सफ़ेद क्यों है? वह नमक से कैसे ढक गयी, इस बारे में एक दंत-कथा है, और वह दंत-कथा भी लोगों ने रची है..."

रहीम ख़ुशी के मारे उछल पड़ा।

"कारा चाचा, सुनाओ, सुनाओ! मां, माय्या बहन, आप भी सुनिये!"

कारा केरेमोगलू ने सफ़ेद-झक मेज़पोश में उलझी जैनब को ज़बरदस्ती बिठा दिया और माय्या को इशारे से बैठने को कहकर ठण्डी सांस ली:

"आज मेरा दिल ख़ुश है... ठीक है, यही सही, तुम लोगों को एक हज़ार साल, शायद एक लाख बरस पहले रची गयी दंत-कथा सुनाता हूं।" उसने आंखें आधी मूंद, स्वप्निल ढंग से मुस्कराते हुए सुनाना शुरू किया: "बहुत पुराने ज़माने में यहां अग्वान क़बीला रहता था; वे बहादुर, नेक और ईमानदार लोग थे। क़बीले के सरदार की बेटी सयानी हुई, उसका नाम मुग़ाम था: सारी दुनिया में कोई अक़्लमंदी और ख़ूबसूरती में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अग्वान क़बीले में कुल मिलाकर थीं तो एक लाख लड़कियां, पर उनमें से एक भी मुग़ाम के जोड़ की नहीं थी। क़बीले में एक लाख लड़के थे, बहादुर योद्धा, एक से एक बढ़कर सुन्दर और साहसी... लड़कियां एक लाख नौजवानों में से किसी को भी आंख उठाकर देखते डरती थीं, नौजवानों की शौर्यपूर्ण व गर्वीली सुन्दरता पागल बना सकती थी। लेकिन अग्वान क़बीले के बांके नौजवान किसी की तरफ़ नहीं देखते थे – वे सब केवल मुग़ाम से प्यार करते थे। एक लाख नौजवान अपने दिल मुग़ाम के क़दमों में फेंकने को तैयार रहते थे। और मुग़ाम दिन-

बदिन कोमल, सुगंधित फूल की तरह खिलती जा रही थी, लेकिन उसका दिल शान्त रहता था, वह उन एक लाख नौजवानों में से किसी को भी तरजीह नहीं दे सकती थी। तब क़बीले के मुखिया लोगों ने सुन्दरी की शादी किसी से भी न करवाने का फ़ैसला किया, क्योंकि एक लाख नौजवान दूल्हे को ग्रौर उसके सारे ख़ानदान को मान डालते, फिर पुश्तैनी दुश्मनी ग्रौर परस्पर संहारक युद्ध शुरू हो जाता, महान क़बीले का धरती से नाम ही मिट जाता। लेकिन उसके भाग्य में कुछ ग्रौर ही बदा था... पड़ोसी क़बीले के सरदार के बेटे मुलास ने एक बार शिकार करते समय चश्मे से पानी भर रही चंद्रमुखी मुग़ाम को देख लिया ग्रौर उसे उससे प्यार हो गया – वैसे ही जैसे ज़मीन को पानी से प्यार होता है, बिजली को ग्रनन्त ग्राकाश से, ग्राग को – तेल से। ग्रौर चमत्कार हो गया: सुंदरी के दिल ने प्रेम में डूबे मुलास की पुकार का जवाब दिया ग्रौर वह ग्रपने मां ग्रौर बाप, मुखियों ग्रौर एक लाख नौजवानों की नज़र बचाकर ग्रपने प्रेमी के साथ भाग गयी। वे तेज़ घोड़ों को सरपट दौड़ाते उधर चल दिये, जहां न कोई रास्ता था, न कोई कारवां वहां से गुज़रता था ग्रौर न ही किसी ग्रादमी ने क़दम रखा था... वहां ग्रपनी प्रिया को सीने से लगाकर मुलास जोश में कह उठा:

'चाहे सूरज बुझ जाये, चंद्रमुखी मुग़ाम, पर तुम्हारे लिए मेरे दिल में प्यार कभी ख़तम नहीं होगा!'

इस तरह दिन ग्रौर वर्ष बीतते रहे; प्रेमियों को न भूख लगती, न प्यास: क्योंकि वे प्रेम के सुगंधित शरबत का पान करते रहे... लगता था उस स्वर्गिक सुख का ग्रन्त कभी नहीं होगा। लेकिन गरमी के बाद पतझड़ ग्राती है, दोपहर के बाद – शाम, ग्रौर क़िस्मत की नदियां भी छिछली होकर सूख जाती हैं। एक बार मुलास को यह देखकर धक्का लगा कि उसकी प्रियतमा के होंठ प्यास के मारे सूखकर फट गये हैं ग्रौर वह कुछ बोल भी नहीं पा रही है: 'ठहरो, मैं ग्रभी ग्राया, ग्रभी ग्राया!' मुलास ने कहा ग्रौर प्रियतमा को वहां छोड़कर जीवनदायी चश्मा ढूंढ़ने चल दिया।

कई दिन, महीने ग्रौर बरस बीत गये, – मुलास लौटकर नहीं ग्राया, समय का ग्रजगर ग्रपना मुंह पूरा फाड़कर उसे निगल गया... सुन्दरी मुग़ाम ग्रसह्य दुःख के कारण रोती रही, शोक मनाती रही, कराहती रही; उसके घने बाल पककर सफ़ेद हो गये, स्तेपी में बिखर गये ग्रौर उनसे

ज़मीन पाले की तरह ढक गयी। शोकाकुल मुग़ाम के ग्रांसुग्रों की धारें स्तेपी में बह निकलीं, कड़वा नमक ज़मीन सोख गयी, धारें नदियों में गिरकर प्यारे मुलास की खोज में समुद्र की ग्रोर बहने लगीं... लेकिन मुलास लौटकर नहीं ग्राया। दूर-दूर के देशों से ग्रानेवाले कारवां यहां से गुज़रने पर ऊंटवान रेगिस्तान में बिखरे हुए स्त्री के सफ़ेद बाल देखकर डर गये ग्रौर उन्होंने ग्रपने ऊंटों को वापस मोड़ लिया। गरम देशों से उत्तर की ग्रोर लौट रहे पक्षियों के झुण्ड भी यहां ग्राये, पर प्यास के मारे फटी किसी सुन्दरी के होठों-सी ज़मीन को देखकर दुःखी मन वापस उड़ गये। ग्रन्त में यहां एक बूढ़ा शायर ग्राया। वह ग्रभागिन के जलकर राख हुए प्यार ग्रौर प्यास के कारण स्तेपी में बिखरे दिल को देखकर नहीं डरा, न ही वापस लौटा, बल्कि उसने उस बेचारी पर रहम खाकर उसके सम्मान में एक प्रेरणादायक गीत रच डाला।

एक लाख लड़कियों ग्रौर एक लाख लड़कों ने यह गीत गाया, जब वे बूढ़े हो गये ग्रौर इस दुनिया को छोड़कर चले गये, तो दूसरी एक लाख लड़कियों ग्रौर एक लाख लड़कों ने इस ग्रधूरे रह गये दंतकथात्मक गीत को ग्रागे गाना शुरू कर दिया। यही सदा होता रहेगा, – यह ग्रमर गीत कभी शान्त ग्रौर समाप्त नहीं होगा... ग्रौर उस गीत का नाम है – मुग़ान।"

कारा केरेमोगलू ने सिर झुका लिया ग्रौर काफ़ी समय तक मौन रहा। व्यथित ज़ैनब, माय्या ग्रौर लड़के को भी गरम शाम की शान्ति भंग करने का साहस नहीं हुग्रा। स्तेपी में, गांव से बहुत दूर नीली छायाएं फिसलती नीचे ग्रा रही थीं, गहरा रही थीं।

"धन्यवाद, चाचा," माय्या ने धीरे से कहा। "ग्रब मुझे यहां की ज़मीन से ग्रौर भी गहरा प्यार हो गया!.. ग्राप जानते हैं, चाचा, हमारे रहीम ने ग्रपने जीवन का उच्च लक्ष्य निश्चित कर लिया है: मुग़ान का हमेशा के लिए लवण-कच्छों से उद्धार कराने का।"

"कितना ऊंचा लक्ष्य है!" वृद्ध ने प्रशंसा की। "जनता के लिए इतने ज़रूरी काम के लिए तुम्हें ग्राशीर्वाद देता हूं। कभी पीछे मत हटना, घबराना नहीं ग्रौर हमेशा बहादुरी से काम करना।" वह उठ खड़ा हुग्रा। "ग्रच्छा, मैं घर चलता हूं, ग्रौर, बेटियो, तुम ग्राराम करो!" ग्रौर उसने पुलकित हो उठे, ख़ुशी के मारे फूले न समा रहे लड़के के रेशमी बालों पर प्यार से हाथ फेर दिया।

छोर की ढालें पार करते ही माय्या की हैरानी के मारे चीख़ निकलते-निकलते रह गयी : कुम्मैत घोड़े को बांधकर सलमान क़मीज़ के बटन खोल, बूट दूर पटक और पैर व हाथ पूरे फैलाये ख़ुशबूदार सूखी घास के ढेर पर लेटा था।

माय्या ने पलटकर भाग जाना चाहा, पर ऐसा कर नहीं पायी।

"अहा, ख़ानम, सलाम, सलाम!" सलमान ने इस तरह प्यार से कहा, मानो उन दोनों में पहले कुछ भी नहीं हुआ हो, जैसे माय्या ने उसे दुतकार नहीं भगाया हो, उसका अपमान नहीं किया हो। "आइये, बैठिये, सुस्ता लीजिये! मैं पशुपालन फ़ार्म से आ रहा हूं। मुझे अचानक महसूस हुआ जैसे गरमी के मारे मेरा दिमाग़ ही पिघल गया है, इसीलिए मैंने यहां बैठने और साथ ही कुछ मुंह में डाल लेनें की सोची। यहां तो पहाड़ी चरागाहों जैसा जन्नत-सा लगता है! बैठिये और जो ख़ुदा ने दिया है, खाइये।" उसने सफ़ेद पोटली खोलकर देगची में रखा भुना गोश्त, रोटी व हरी सलाद निकाले।

माय्या ने अपना ध्यान रखने के लिए उसे धन्यवाद दिया और खाने से इनकार कर दिया।

"सुना आपने, मेरी कैसी बेइज़्ज़ती की गयी?" सलमान काठी के थैले से बोतल निकालता हुआ बोलता रहा। "इजाज़त है? सिर्फ़ एक प्याली भूख बढ़ाने के लिए!"

"नहीं!" माय्या ने सख़्ती से कहा।

"क्या करूं, बिना इजाज़त के पिऊँगा," सलमान ने दुःखी स्वर में कहा और कोनक की लबालब भरी प्याली मुंह में उलट ली। "ग़म के मारे पीता हूं!.." उसने स्पष्ट किया। "बहुत ग़म है मुझे! क़सम खाकर कहता हूं, नज़नाज़ बच्चे की तरह भोली-भाली है, उसने तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई ग़लत काम नहीं किया, उसे बेकार बदनाम किया गया! और यह बेदर्द, छैलछबीली पेरशान ख़ुद आंखें नचानचाकर इशारे किया करती थी, लुभाती थी। उफ़!" उसने फिर बोतल अपनी तरफ़ झुकायी और नशीला पेय गर-गर उठा।

"मैं चलती हूं!" माय्या ने शुष्क स्वर में कहा और जाने के लिए पलटी, पर सलमान मायूसी से चिल्लाया।

"माफ़ कर दो, ख़ानम, माफ़ कर दो! हज़ार बार माफ़ी मांगता हूं! किसी ने ठीक ही कहा है: 'गधा भी शहद का स्वाद जानता है!' मैंने पहले भी तुमसे वादा किया था, और अभी कहता हूं: तुम्हें सुखी रखने की ख़ातिर मैं मरने को तैयार हूं! माय्या, मुझे ग़म खाये जा रहा है!.."

"चुप रहो! बंद करो यह सब!" माय्या ने वितृष्णा से कहा और मन-ही-मन अपने को सामान्य चाल से चलने को मनाते हुए, न कि भागने को जैसी कि उसे इच्छा हो रही थी, वह किनारे-किनारे डग भरने लगी, पर सलमान ने ग़ुस्से से पागल भालू की तरह उसका पीछा किया और उसे कंधों से पकड़कर ज़मीन पर गिरा दिया। माय्या अपनी सारी ताक़त जुटाकर उसकी पकड़ से छुटने की कोशिश करती ज़मीन से चिपक गयी, जब कि सलमान ने उसके मुंह पर शराब की बदबू छोड़ते हुए अपने घुटने से उसके जुड़े हुए पैरों को दबा दिया।

"मैं... मैं चिल्ला पड़ूंगी!"

"चिल्ला, चिल्ला!" सलमान ने बड़ी उदारता से कहा। "कोई नहीं सुनेगा, सब खेत-कैम्प में खाना खा रहे हैं... मेरी हो जाओ! मैं तुमसे शादी कर लूंगा, ख़ुदा की क़सम, शादी कर लूंगा, फिर हम बाकू चले जायेंगे, गंजा या कज़ाख़! जहां का हुक्म दो – वहीं चले जायेंगे!"

माय्या ने अपना दायां हाथ छुड़ाकर उसके सपाट, थलथल गाल पर पूरे ज़ोर से थप्पड़ जड़ दिया, उसकी आंखें पल भर के लिए मिलीं, और माय्या ने उसकी आंखों में वह पाशविक व हिंसक भाव देख लिया, जो वह एक बार तब देख चुकी थी, जब सलमान ने मरणासन्न लोमड़ी को घोड़े के पैरों तले रौंद दिया था।

उस समय स्तेपी में बोझिल, दमघोंटू निस्तब्धता छायी हुई थी, न कोई आवाज़, न कोई सरसराहट, केवल नीचे नदी की धारा एकरस कलकल करती बह रही थी। माय्या समझ गयी कि कोई उसे नहीं बचायेगा। सलमान के घुटने के नीचे से ज़बरदस्ती अपना पैर निकालकर उसने उसके पेट में इतने ज़ोर से लात मारी कि वह लुढ़ककर दूर जा पड़ा।

माय्या उचककर बाल बिखेरे, फटे स्कर्ट में खड़ी चट्टान की तरफ़ भागी। "मेरा मर जाना बेहतर होगा!" उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा, पर सलमान ने भागकर उसकी कमर को अपने ताक़तवर फ़ौलादी हाथों से जकड़ लिया, पर माय्या ने यहां भी उसकी पकड़ से छूटकर उसे धक्का

दे दिया, और वह ज़ोर से गिरा, उसके मुंह में मिट्टी भर गयी और वह नीचे लुढ़क गया।

क़म्मैत घोड़े को खोलकर माय्या उछलकर काठी पर सवार हो गयी, और अच्छा, काफ़ी देर से बांधा खड़ा घोड़ा उसे स्तेपी में ले भागा।

३

तेल्ली चाची पेट पर हाथ बांधे खड़ी देख रही थी कि कपास चुनने की मशीन कैसे धीरे-धीरे रेंगती हुई अपनी चौड़ी सूंड़ से खिली हुई बोंड़ियों के सफ़ेद-झक गाले निगलती जा रही है।

"मैं बयान नहीं कर सकती कि मैं कितनी सुखी हूं। अगर कल कोई कहे कि आदमी चांद पर जाकर लौट आया है, तो मैं उस पर बिना बहस किये विश्वास कर लूंगी। वाह, वाह क्या मशीन है!" हर्षावेश में उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि वह ऊंचे स्वर में बोल रही है।

शेरज़ाद ने मोड़ पर मशीन रोक दी, कूदकर नीचे उतरा और चाची के पास आया:

"पसंद है?"

तेल्ली चाची ने केवल हाथ पर हाथ मारा।

नाली के किनारे नजफ़ सिर पीछे किये पानी ठण्डा रखने के लिए गीला कपड़ा लपेटी मिट्टी की सुराही से पानी पी रहा था।

"उसका शुक्रिया अदा करो, वह वसन्त से ही शराफ़ोगलू के साथ मशीनों की मरम्मत और जांच में जुट गया था," शेरज़ाद ने अपने मित्र की ओर संकेत किया।

भरपेट पानी पीकर नजफ़ ने सुराही वापस ठण्डी जगह पर रख दी और नाली फांदकर चाची को गले लगाकर चिल्लाया:

"अरे, मैं क्या देख रहा हूं! आख़िर अब तो हमारी ख़ूबसूरत तेल्ली ख़ुश हो गयी!.."

कपास के ऊंचे पौधों के पीछे से युवतियों के हंसते हुए चेहरे दिखाई दिये; निचली टहनियों से, जहां तक मशीन नहीं पहुंच सकती थी, कपास हाथों से चुननी पड़ रही थी।

"क्या हुआ?"

"हुआ यही कि चाची को आख़िरकार मनुष्य की सर्वशक्तिमान बुद्धि पर विश्वास हो ही गया!" नजफ़ ने चिल्लाकर कहा।

चाची ने ज़ोर से उसके हाथ पर मार दिया।

"झूठी बुराई मत करो! मैं हमेशा बुद्धिमान लोगों को इज़्ज़त की नज़र से देखती आयी हूं।"

तभी पेरशान भागी आयी और आंख मारती हुई सहेलियों से बोली:

"पर तुम बुद्धिमान किसको कहती हो, चाची?"

"तुम जैसी को। मुझे दो साल पहले पता था कि तुम तरबूज़ का छिलका सलमान की खोपड़ी पर रख दोगी!" तेल्ली चाची ने तपाक से कहा। "पूछो, क्यों? क्योंकि मुझे तुम्हारी बुद्धि पर भरोसा था!.."

पेरशान की समझ में नहीं आया कि वह सबके साथ हंसे या मुंह फुला ले। इस बीच तेल्ली चाची हवा में सरसराते सरकण्डों-से अपने स्कर्ट उठाकर खेत के दूरस्थ दूसरे छोर की तरफ़ रवाना हो चुकी थी, जहां गराश मशीन चला रहा था। नज़नाज़ के साथ सम्बन्ध समाप्त होने के बाद, जिसे बदनामी उठाकर गांव छोड़ना पड़ा था, गराश नामिलनसार हो गया था अगर कोई उससे बात करता, तो वह चुप रहता, पर तेल्ली चाची से पिण्ड छुड़ाना मुश्किल था। वह अपने विशाल वक्ष पर हाथ आड़े रखे, गराश पर बराबर नज़र रखे हुए, शान्तिपूर्वक मशीन के पीछे-पीछे चलती रही।

अन्त में युवक से रहा न जा सका, वह इंजन बंदकर नीचे कूद आया, पर चाची फोड़े के चीरा लगाते हुए जर्राह जैसी सख़्ती से बोली:

"मेरी सलाह ध्यान से सुनो, उसे मानना, न मानना तुम्हारा अपना काम है।"

"लेकिन जो कहना है थोड़े में कहो!" गराश ने कहा और इतने ज़ोर से दांत भींचे कि धूप में काले पड़े गालों की नसें फड़क उठीं।

तेल्ली चाची ने झोले में कपास का गाला डालकर हाथ पोंछे और ऊंचे कर्णभेदी स्वर में अपना लम्बा भाषण शुरू कर दिया:

"एक बार एक दुनियादारी के मामले में अनाड़ी लड़के को समुद्र में एक ख़ूबसूरती और वज़न के हिसाब से दुर्लभ मोती मिल गया। उसने उसे हथेली पर डालकर उलटा-पलटा, फिर चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी, देखा बालू पर रंग-बिरंगी कौड़ियां पड़ी हैं, चमचमा रही हैं, आंखें चौंधिया रही हैं। पर मोती तो बेरंग, बिल्कुल पनीर की गोली जैसा था। बस

नासमझ लड़के ने मोती को दूर फेंक दिया और सबसे चमचमाती कौड़ी उठाकर, खुशी से फूला न समाता घर भाग चला।"

कपास के पौधे हिल उठे : चारों ओर से लड़कियां सांस रोके उनकी तरफ़ बढ़ती आ रही थीं...

"पर घर का रास्ता लम्बा था : लड़का चलता रहा, चलता रहा, लेकिन अचानक उसने महसूस किया कि कौड़ी से बदबू आ रही है, उसकी चमक जाती रही है। उसने घर आकर मां को सारा क़िस्सा सुनाया। मां ने बदबूदार कौड़ी फेंक दी और बेटे से कहा : 'इसी वक़्त लौट जाओ और उस मोती को ढूंढ़कर लाओ!' लड़का ज़िद करने लगा : 'कैसे ढूंढूंगा, रास्ता लम्बा है, मैं थक गया हूं, लोगों के सामने शर्म आती है...' मां गुस्सा हो उठी। 'लोगों के सामने मोती फेंकते वक़्त तुम्हें शर्म नहीं आयी? चाहे घुटनों के बल चलकर जाओ, पर ढूंढ़कर लाओ।'"

गराश को याद आया कि शेरज़ाद और गिज़ेतार ने भी उसे यही बात समझाने की कोशिश की थी, वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया : "दलदल में फंसे आदमी से चिल्लाकर कहना 'छलांग लगाकर निकल आओ!' बड़ा आसान होता है... पर वह सहारा किसका ले?"

"मैं कैसे जाऊं, चाची?" गराश ने रुंधे गले से पूछा।

"ऐसे ही जाओ!" तेल्ली चाची ने आश्चर्य से कंधे उचकाये। "इस में शर्म की क्या बात है? तुम पर जादूगरनी ने जादू कर दिया था, कोई मोहित करनेवाली चीज़ खिला दी थी, इसीलिए धोखा खा गये... लेकिन तुम उसे छोड़कर भाग आये। तो फिर बीच रास्ते में क्यों रुक गये?... वैसे..." चाची ने जंभाई ली, "मेरा काम कहना है, फ़ैसला करना – तुम्हारा। जाओ काम करो!.."

४

सगाई तय कराने के असफल प्रयास के बाद सलमान ने सोचा कि सारा दोष रुस्तम का है। उसने जानबूझकर उसे झूठी आशा दिलायी ताकि सब के सामने इनकार करके उसकी बेइज़्ज़ती कर दे। सलमान कंधा हिलाता हुआ – अब उसकी ऐसी आदत पड़ गयी थी – मन-ही-मन अध्यक्ष से घोर घृणा करने लगा। अगर सलमान को रुस्तम को अपमानित करने, नीचा दिखाने के लिए सारे गांव को जलाकर ख़ाक करना पड़ जाये, तो भी वह

नहीं हिचकिचायेगा। फिर भले ही जेल जाना पड़े : यह इतनी भयानक बात नहीं होगी!.. बस उसे बदले का आनन्द लेना है।

एक बार अध्यक्ष सलमान को कपास के एक दूरस्थ खेत में ले गया। वह खेत गहरे पानी की नालियों के बीच फैला हुआ था, बोंड़ियों में कपास के रोयेंदार गाले हिम-कणों की तरह चमक रहे थे। सारे सप्ताह इतनी भीषण गरमी पड़ी थी कि अनखुली ढोंढियां भी चटक गयी थीं।

"अरे, यहां तो कपास का पूरा महासागर फैला है!" रुस्तम प्रसन्न हो उठा। "कम-से-कम दस हेक्टेयर में तो मशीन से चुनी जा सकती है। जब कि तुम लोग, ठस्स दिमाग़ के, कह रहे थे कि कपास अभी पकी नहीं है!"

"बोंड़ियां तो अभी खुली नहीं हैं," सलमान ने कंधा हिलाया। चापलूसी करने की मंशा न रहने से अब वह अध्यक्ष के साथ बड़ी मुश्किल से धृष्टतापूर्वक बोलने की इच्छा पर क़ाबू करके बात करता था।

"खुली नहीं है, पर चटक गयी हैं। क्या देख नहीं रहे हो? इतनी तो अक़्ल होनी चाहिए, मौसम कैसा है।"

"दिमाग़ में अक़्ल ही तो कम है," सलमान ने ज़बरदस्ती मज़ाक किया।

"खेत को एक छोर से दूसरे छोर तक देख लो। जहां गड्ढे हों, ऊबड़-खाबड़ जगह हो, उसे समतल करने को कह दो," रुस्तम ने कहा। "और मैं कपास चुननेवाली मशीनें भिजवाने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन टेलीफ़ोन कर दूंगा। तुम्हें क्या सांप सूंघ गया है? सुनते हो?"

"कर लूंगा..."

आसानी से उछलकर काठी पर बैठे रुस्तम को पीछे से घूरते हुए सलमान ने थूक दिया।

"जल्दी ही साठ का होनेवाला है, पर घोड़े पर नौजवान की तरह सवार होता है! शैतान बुढ़ाता नहीं है, सौ बरस तक ज़िन्दा रहेगा, अगर किसी ने इसकी खोपड़ी में कुंदा नहीं मार दिया..." उसने सोचा और वह अलसाता, पैर घिसटता खेत में चलने लगा।

नाली पर बने तंग पुल से थोड़ी दूरी पर उसे दो सामूहिक फ़ार्मवाली औरतों और चारों तरफ़ आंखें चकर-मकर करते पकोड़े-सी नाकवाले मर्द ने रोक लिया। औरतों ने पहले सलमान पर नज़र डाली, फिर पकोड़े-सी नाकवाले पर और होंठ भींच लिये।

"क्या है?" सलमान ने खिन्न स्वर में पूछा।

स्त्रियों ने केवल ठण्डी आह भरी।

"जाकर अपना-अपना काम करो!"

"हम काम की बात ही तो करना चाहते हैं, सलमान-गागा," पकोड़े-सी नाकवाले बहार ने कहा। "क्या यह सच है कि यहां कपास चुननेवाली मशीनें भेजी जायेंगी?"

"मान लिया सच है। पर तुम्हें इससे क्या मतलब?"

"मतलब क्यों न होगा?.. हाथों से कपास चुनकर हम काफ़ी पैसा कमा सकते हैं!" स्त्रियां क्रुद्ध हो उठीं।

"अच्छा, यह बात है!.." सलमान द्वेषपूर्वक हंस पड़ा। "साल-भर तो बाज़ारों में कालाबाज़ारी करते रहे, चायख़ानों में बैठे रहे, अब हाथों से कपास चुनकर पैसे भी जोड़ लेना चाहते हो और ज़रूरी श्रम-दिन भी। मैं तुम्हारी सारी चाल भांप गया।"

"सलमान भाई, अगर रुस्तम ने तुम्हें नीचा दिखाया है, तो इसमें हमारा क्या क़सूर है?" बहार की पत्नी ने कहा। "लड़की को प्यार करते हो, तो उसे उड़ा ले जाओ! हमारे ज़िले में बांके नौजवानों की कोई कमी है? दो-तीन से सौदा पटा लो और अंधेरी रात में उसे सूखी घास की टाल पर उठा ले जाओ। सुबह रुस्तम ख़ुद चिरौरी करने लगेगा: शादी कर लो, मुझे बेइज़्ज़ती से बचा लो..."

"क्या बकवास करती है, औरत?" सलमान चीख उठा। "यह सलाह अपने बेटे को दे!.. मैं जेल में नहीं सड़ना चाहता।"

"सलमान-गागा, कैसी जेल? हमें तो शादी के आसार नज़र आ रहे हैं," पकोड़े-सी नाकवाले बहार ने उकसाया। "हम हमेशा तुम्हारी मदद करेंगे, बेफ़िक्र रहो। पर इस खेत में हमारी औरतों को काम करने दो। अगर मशीन इतनी अक़्लमंद है, तो बची-खुची कपास चुनती रहे। और हम, तुम समझ गये, तुम्हारा एहसान चुका देंगे..."

"मौक़ा पड़ने पर ये कामचोर भी काम आ सकते हैं," सलमान ने सोचा और कंधा हिलाता हुआ दुःखी आवाज़ में बोला:

"मैं छोटा आदमी हूं, कामरेडो। हाथी ऊंट से ऊंचा होता है, और रुस्तम अपने उपाध्यक्ष से ऊंचा है। उसे तुम्हारे हितों की कोई परवाह नहीं है। वह तो बस यही सपना देखता है: जल्दी से जल्दी मशीनों से कपास चुनवा लूं, जिससे बाकू में लोग कहें: 'शुक्रिया'। तुम क्या अपने अध्यक्ष को नहीं जानते हो?"

"जानते हैं, भाई!" बहार ने उसी स्वर में कहा। "बुरे मालिक के नौकर भले होते हैं। तुम्हारे इशारे की देर है – सारी औरतें यहां भागी आयेंगी और सुबह तक कपास का एक गाला भी नहीं छोड़ेंगी। और हम तुम्हारे लिए दुआ मांगेंगे।"

"अच्छा, अच्छा, दफ़ा हो जाओ अब!" सलमान ने दिखावटी गुस्से में कहा। एक-दो क़दम दूर जाकर वह रुक गया और पुल पर सरसरी नज़र डालकर बोला: "पुल तो टुटियल है, इसका कोई भरोसा नहीं। कहीं मशीन नाली में न गिर जाये। इस पुल की मरम्मत होनी चाहिए!"

और वह जल्दी से खेत-कैम्प की ओर चल पड़ा...

५

थका-हारा रुस्तम रूमाल व आस्तीन से बार-बार पसीने से तर माथा पोंछता किसी तरह गिज़ेतार के खेत पर पहुंचा, पर लोगों को देखकर वह चुस्त हो गया।

"आप लोगों के यहां बहुत सारी खुली हुई बोंड़ियां हैं! मौसम बिगड़ने से पहले उन्हें चुन लेने की कोशिश करिये।"

"हम किसी मालिक की ख़ातिर नहीं, अपनी ख़ातिर काम कर रहे हैं!" गिज़ेतार ने थोड़ा रूठकर कहा। "वैसे ही हम एड़ी-चोटी का पसीना एक करके ज़ोर लगा रहे हैं। पर कितना प्रतिशत हुआ?"

"पंचानवे। अगर ज़ोर लगाया जाये, तो एक हफ़्ते में योजना पूरी कर लेंगे। देखो, सबसे पीछे मत रह जाना: पूरी भेड़ की खाल साफ़ करके पूंछ के पास गोश्त मत छोड़ देना।"

अपनी कमर सीधी करके तेल्ली चाची अपने स्वाभाविक व्यंग्यपूर्ण स्वर में पूछ बैठी:

"और कारा केरेमोगलू के यहां कैसा चल रहा है?"

"ज़बान पर चढ़ गया है कारा का नाम!.." रुस्तम झल्लाकर बड़बड़ाया। "बेहतर होगा तुम अपनी उपटोली पर नज़र रखो।" लेकिन जब उसने देखा कि चाची हठपूर्वक उसकी तरफ़ देखे जा रही है, तो उसने अनिच्छापूर्वक कहा: "वे तीन प्रतिशत ज़्यादा कर चुके हैं।"

चाची ने निराश होकर ठण्डी सांस ली।

"उनके यहां मिट्टी ज़्यादा उपजाऊ है," अध्यक्ष ने समझाने की

कोशिश की, लेकिन उसका नतीजा और भी बुरा हुआ : चाची ने उसे ज़मीन में नमक बढ़े हुए खेत की याद दिला दी, जहां उसकी चहेती पुत्रवधू ऐसे भागकर पहुंची है, जैसे आग बुझाने गयी हो।

"उफ, कैसी कतरनी-सी ज़बान चलाती है!" रुस्तम ने उदासी से सोचा और कष्टदायक विचारों से छुटकारा पाने तथा अन्य किसी भी काम में ध्यान लगाने के इरादे से वह झुककर पौधों की निचली शाखाओं से कपास के फुलफुले, कोमल गाले चुनने लगा।

गिज़ेतार को उस पर दया आ गयी।

"बेहतर होता, चाचा, जाकर अपना काम करते! हम किसी तरह निबटा लेंगे, दग़ा नहीं देंगे..."

पर रुस्तम की पीठ सुन्न हो गयी, उसने किसी तरह कमर सीधी की और क़मीज़ के पल्ले से चेहरा पोंछा।

शरत् ऋतु आ गयी थी, पर मुग़ान की गरमी कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी, केवल शाम को सूर्यास्त के बाद स्तेपी में कुछ ठण्डक हो जाती थी। लेकिन झुटपुटा जल्दी ही हो जाता था और एकाएक गहराकर समतल प्रदेश पर मोटा आवरण गिरा देता था। पत्तियां काकरेज़ी और चमकदार सुनहली होकर कुंचित होने लगी थीं और घास पर गिर रही थीं। घास भी मुरझाकर सूखने लगी थी। कपास के खेतों में हरियाली थी, लेकिन वहां भी पौधे छीदे होकर सिकुड़ने लगे थे, उनकी शाखाओं की बाढ़ रुक गयी थी। ख़ुदा न करे, कहीं रात को ज़ोरदार ओस पड़ गयी, या उससे भी बदतर, बारिश हो गयी, तो कपास की क्वालिटी ख़राब हो जायेगी, योजना पूरी नहीं की जा सकेगी।

गरमी और निरन्तर तनाव के कारण रुस्तम कुछ ही सप्ताह में काफ़ी बुढ़ा गया। उसकी मूंछों और ठोढ़ी पर एक भी काला बाल न बचा... आंखों के नीचे खाल लटक गयी, दम फूलने लगा, उसे सांस लेने के लिए अकसर मेड़ पर बैठना पड़ने लगा। वह अब सामूहिक किसानों के साथ पहले की तरह बात नहीं करता था, उन्हें हुक्म नहीं देता था, बल्कि उनकी मिन्नत करता था, उन्हें मनाता था।

तेल्ली चाची दुःखी हो उठी :

"लगता है, बुढ़ापा हर आदमी को उसकी असलियत बता देता है..."

उसने यह बात मन में नहीं रखी, सीधे रुस्तम के मुंह पर कह दी, पर उसने उत्तर में कुछ नहीं कहा, मुंह फेर लिया।

कपास के खेत से निकलकर रुस्तम ने मुड़कर स्तेपी पर नज़र दौड़ायी। पहाड़ों में ठण्डी हुई उत्तरी हवा का झोंका आया, कपास के पौधे लहलहा उठे, सूखी घास के गुच्छे उड़ने लगे, और सामूहिक किसानों ने चैन की सांस ली : अहा, कितना अच्छा है! .. लेकिन जहां कपास साफ़ करने की मशीन खड़ी थी, खेत-कैम्प के पीछेवाले खुले मैदान में धूल का ग़ुबार उठा और वहां काम कर रहे लोग धुंधले आवरण से ढक गये। उनके नज़दीक पहुंचने पर रुस्तम को हृदयविदारक खांसी सुनाई दी, सामूहिक किसानों के चेहरे व कपड़े धूल और कूड़े-कर्कट से सर। बोर हो गये थे।

रुस्तम ने हाथ उठाया, मशीन रुक गयी।

"तुम लोगों का दम क्यों घोंट रहे हो?" उसने मशीन-आपरेटर से कठोर स्वर में पूछा।

"धूल कोई मेरी मशीन से थोड़े ही उड़ रही है!" उसने जवाब दिया। "हमेशा ऐसा ही होता!"

"नहीं, हमेशा नहीं होता। मशीन को हवा के रुख़ की तरफ़ मोड़ो," रुस्तम ने सामूहिक किसानों को विस्मय में डाल देनेवाली नरमी से कहा और सबसे पहले कंधा लगाया।

दूसरे लोग उसकी मदद को आ पहुंचे और मशीन को मोड़ दिया। अब हवा धूल के ग़ुबार, कूड़ा-कर्कट स्तेपी की तरफ़ उड़ाकर ले जाने लगी, और लोगों ने चैन की सांस ली।

"ऐसे काम करना चाहिए!" रुस्तम ने धूल झाड़ी और खेत-कैम्प के पास पहुंच गया।

६

शेरज़ाद को देर से कपास चुनने का कष्टदायक नज़ारा कई बार देखना पड़ा था। कपास के पौधे सिर झुकाये लगातार होती बारिश में खड़े रहते, ठिठुरी हुई औरतें कीचड़ में चलती हुई फूली हुई बोंड़ियों से गाले चुनतीं। ऐसे में क़िस्म का ख़याल कैसे रहे! चिपकी हुई झिरझिरी रूई में बदली कपास को क्रय-केन्द्रों पर ले जाया जाता है, ताकि योजना किसी तरह तो पूरी हो सके, जबकि वास्तव में फ़सल बरबाद हो जाती है और बहुत से लोगों की कमरतोड़ और प्रायः कष्टदायी मेहनत बेकार चली जाती है।

रुस्तम को काफ़ी समय तक कपास चुननेवाली मशीन पसंद नहीं आयी,

वह उसका मज़ाक़ उड़ाता रहा। शेरज़ाद यह मानने को तैयार था कि उसके लिए वृद्ध के पास अपनी ठोस दलीलें थी: मशीन रेशे को तोड़कर ख़राब कर देती थी, उसकी क्वालिटी बिगाड़ देती थी। लेकिन ऐसा प्राय: इसी लिए होता था, क्योंकि मशीन की मरम्मत जल्दबाज़ी में, अन्तिम क्षणों में की जाती थी और उसकी ठीक से जांच किये बिना खेत में भेज दी जाती थी। अब जब मशीनों में काफ़ी सुधार किया जा चुका था और वे गराश और नजफ़ जैसे कुशल लोगों के हाथों में आ गयी थीं, तो स्थिति काफ़ी बदल गयी थी: क्रय-केन्द्रों से शिकायतें अब उतनी नहीं आ रही थीं – कपास की क्वालिटी में गिरावट उतनी नज़र नहीं आ रही थी।

यह मालूम पड़ने पर कि रुस्तम ने नालियों के बीच के तिकोने खेत में बहुत बढ़िया क़िस्म की कपास मशीनों से चुनने का आदेश दे दिया है, शेरज़ाद को बड़ी ख़ुशी हुई और वह जल्दी से खेत के लिए रवाना हो गया। उसे रास्ते में परिचित अध्यापक मिल गया और वे बातचीत करते न जाने कब दस किलोमीटर का फ़ासला तय कर गये, पर गहरी और ढालवां नाली पर बने पुल के निकट पहुंचने पर वे दंग रह गये।

पकोड़े-सी नाकवाला बहार अपनी पत्नी व पड़ोसन के साथ मिलकर बड़े ज़ोरों से पुल तोड़ रहे थे, उसके फ़र्श के तख़्ते उखाड़ रहे थे और शहतीर निकालकर किनारे पर फेंक रहे थे।

"यह क्या कर रहे हो? यह क्या कर रहे हो?!" शेरज़ाद अपनी आंखों पर विश्वास न कर पाकर चिल्लाया।

पकोड़े-सी नाकवाला जड़वत् रह गया, जैसे मौत का फ़रिश्ता उसके सामने आ खड़ा हुआ हो, उसने हड़बड़ाहट में स्त्रियों की तरफ़ तिरछी नज़रों से देखा और थूक सटका पर कुछ नहीं बोला।

"क्या तुम बहरे हो गये हो?" शेरज़ाद और ज़ोर से चिल्लाया।

बहार की पत्नी निस्स्वार्थ भाव से उसकी रक्षा को लपकी:

"ऊपर से हुक्म मिला है, भाई! हमें इससे क्या! हम कोई अपनी मर्ज़ी से थोड़े ही... हमसे कहा गया – इसकी मरम्मत करो, तो हम मरम्मत करने लगे।"

"पर किसने हुक्म दिया?" पार्टी संगठनकर्त्ता ने उनसे उगलवाने की कोशिश की।

औरत घबरा गयी, बग़लें झांकने लगी, जब कि बहार ने मुंह बनाते हुए आंख मारी: चुप रहो...

वृद्ध अध्यापक अपनी स्वाभाविक नरमी से, मानो कक्षा में किसी मंदबुद्धि छात्र से बात कर रहा हो, बोला:

"अक़्ल से काम लेना चाहिए था! तुम ख़ुद ही देख रहे हो कि पत्तियां झड़ चुकी हैं, यानी खेत फ़सल उठाये जाने के लिए तैयार है। लेकिन मशीन यहां से गुज़रेगी कैसे, अगर तुम पुल तोड़ दोगे?"

"ऐ मौलाना, तुम ज्ञान का सागर हो और दुनियादारी की बातें मुझसे बेहतर जानते हो," पकोड़े-सी नाकवाले ने उसे बदतमीज़ी से टोक दिया। "अगर सबसे भरपूर फ़सलवाले खेतों में मशीनें चलेंगी, तो हमारी बीवियों के श्रम-दिन कैसे बनेंगे? ज़रा समझाओ तो सही!"

"तुम्हारी बेवक़ूफ़ी पर तो उबली मुर्ग़ी भी ठहाके लगा-लगा कर बेहोश हो जाये!" अध्यापक ने व्यंग्य किया। "अरे, कपास तो सामूहिक फ़ार्म की है, यानी – तुम्हारी! जितनी जल्दी चुनेंगे, उतनी जल्दी पैसा कमा लेंगे। सामूहिक फ़ार्म में काम करनेवालों की कमी है: अगर तुम्हारी बीवी आलस नहीं करती, बाज़ारों में नहीं घूमती-फिरती, तो ढेरों पैसा बटोर लेती।"

"बिना बाज़ार के ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है?" बहार ने धृष्टतापूर्वक खीसें निपोड़ीं। "हम लोग बाज़ार में मेहनतकशों को खाने-पीने की चीज़ें मुहैया करते हैं।"

"दफ़ा हो जाओ यहां से!" शेरज़ाद अपने को क़ाबू में न रख पाकर चिल्लाया और बचे-खुचे पुल पर नज़र डालकर बोला: "केन्द्रीय कैम्प में जाकर कह दो कि फ़ौरन दो बढ़इयों को यहां भेज दें। फ़ौरन!"

लेकिन जब बहार सिर कंधों में धंसाये जल्दी-जल्दी जाने लगा, शेरज़ाद ने उसका पीछा करके सख़्ती से पूछा:

"हां, तो पुल तोड़ने का हुक्म किसने दिया था?"

बहार की बीवी पूर्णतया निराश होकर चीख़ी:

"उपाध्यक्ष ने, उपाध्यक्ष ने!"

सारे दिन शेरज़ाद को शंकाएं व्यथित करती रहीं: कहीं अध्यक्ष ने ज़बानी तौर पर मशीन से कपास चुनने को उचित मानकर आख़िरी क्षण में चालाकी से तो काम नहीं लिया है? कहीं उसने ख़ुशामदी सलमान को इशारा तो नहीं कर दिया है कि मशीन के पंख तो है नहीं, जो उड़कर नाली को पार कर ले... घोड़े पर काठी कसकर शेरज़ाद ने उजाला रहते सारे खेतों का चक्कर लगा लिया, रास्तों की जांच कर ली और फिर पुल

पर लौट आया, जब उसे विश्वास हो गया कि बढ़इयों ने दिल से मेहनत की है, तो वह गांव की ओर चल दिया।

शेरज़ाद रास्ते में अपने घर गये बिना कार्यालय रवाना हो गया, जहां उसने अध्यक्ष को टूटे हुए पुल के बारे में बताया; रुस्तम ने चौकीदार को पकोड़े-सी नाकवाले बहार को फ़ौरन उसके पास लाने का आदेश दिया।

बहार, उनींदा सूजी आंखें लिये रुस्तम के कक्ष में मौत की सज़ा सुनाये गये अपराधी की तरह आया। उसके बदन से काफ़ी दूरी से शराब की बदबू आ रही थी।

"बस इसी की कसर रह गयी थी।" अध्यक्ष गरजा। "सारी गरमी काम से जी चुराता रहा, कतराता रहा और तुझे अब मेहनत करने की सूझी है!"

"रुस्तम-चाचा," पकोड़े-सी नाकवाले ने कहा, "तुम ख़ुद पहले मशीनों के बारे में क्या कहते थे? औरतें खेत के एक-दो चक्कर लगाकर कपास चुन लें, इससे क्या नुक़सान हो जायेगा? फ़ायदा ही होगा! और अक़्लमंद मशीन बची-खुची कपास चुन लेगी।"

रुस्तम का क्रोध से दम घुटने लगा, पर उसने अपने पर नियंत्रण कर अप्रत्याशित शान्त स्वर में उत्तर दिया:

"तुम्हें लोगों की बिलकुल पहचान नहीं है, मेरे प्यारे। मैं मर्द हूं! जैसा हूं, वैसा ही कब्र तक बना रहूंगा। मैं बीच बाज़ार खड़े होकर भी अपने विचारों को त्यागने का इरादा नहीं रखता... हां, कपास चुननेवाली मशीन में अभी काफ़ी कमियां हैं, और मैं इस बारे में बाकू में मीटिंग में खुले आम बोल चुका हूं: मैंने डिज़ाइनरों और इंजीनियरों को भी ख़ूब आड़े हाथ लिया। लेकिन इस समय भी यह मशीन उपयोगी और ज़रूरी है, क्योंकि वह औरतों को कमरतोड़ मेहनत से छुटकारा दिलाती है!"

"नहीं, मालूम होता है बूढ़ा अभी काम से नहीं गया है, ऐसा ईमानदार आदमी कभी काम से नहीं जा सकता!" शेरज़ाद ने सोचा। उसके दिल में सुखद आशा की अनुभूति हुई।

"बता, अंधे, जाहिल, किसने हुक्म दिया पुल तोड़ने का?"

बहार ने लापरवाही से कंधे उचकाये।

"सपाट सलमान, उपाध्यक्ष ने कहा था।"

"भागकर जाओ, सलमान को यहां घसीट लाओ, चाहे जिन्दा हो या मरा।" रुस्तम ने चौकीदार से चिल्लाकर कहा।

सलमान अपने यहां मेहमान बनकर आये कलंतर के साथ आया। वे बूटों से ज़ोर से धप-धप करते कक्ष में दाख़िल हुए, वे निश्चित खड़े थे, पर रुस्तम की ख़ौफ़नाक नज़र से वे फ़ौरन दब गये।

सलमान ने डर के मारे ऐसी बेतुकी और मूर्खतापूर्ण सफ़ाई दी कि रुस्तम ने उसके एक भी शब्द पर विश्वास नहीं किया और उदास होकर बोला:

"बेईमान!.."

कलंतर-लेलेश भी जल्दी ही नरम पड़ गया, बग़लें झांकने लगा, पर साहस जुटाकर अपने हमबोतल की तरफ़दारी करने लगा:

"मामला साफ़ है! शेरज़ाद नेतृत्वकारी कार्यकर्त्ताओं और आम सामूहिक किसानों को अपना उल्लू सीधा करने के इरादे से एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़का रहा है। चलिये, माना कि कामरेड सलमान ने ग़लती की, समय का ठीक अंदाज़ नहीं लगाया। उसे उम्मीद थी कि बहार शाम तक गले हुए शहतीर को बदल देगा। इसमें ऐसी क्या ख़तरनाक बात हो गयी? हर कोई जानता है कि फुरतीला उपाध्यक्ष सामूहिक फ़ार्म का भला ही चाहता था। सिर्फ़ शेरज़ाद सरीखे बेशर्म लफ़्फ़ाज़ ही इस मौक़े का अपने हित में फ़ायदा उठाने की कोशिश कर सकते हैं।"

"बहार की पत्नी को आने दीजिये," शेरज़ाद ने सुझाव दिया।

"हम जांच-कर्त्ता नहीं हैं," कलंतर ने गर्व से कहा और अपने चमचमाते बूटों के मोज़े ठीक किये। "खेल ख़तम हो चुका है, अब दाँव पर कुछ नहीं लगा है, और सच कहूं, तो आपका पत्ता पिट चुका है, कामरेड शेरज़ाद।"

और उसने अपनी हाज़िरजवाबी पर ख़ुश होकर ज़ोरदार ठहाका लगाया।

जानी-पहचानी हंसी, जाने-पहचाने मज़ाक़, हमेशा के पिटे-पिटाये वाक्य... कलंतर के व्यवहार में जैसे कोई परिवर्तन नहीं आया, पर रुस्तम की पैनी नज़र से परिवर्तन छिपा न रह सका। कलंतर के व्यवहार में उसे आत्मविश्वास की कुछ कमी दिखाई दी: ऐसे क्षणों में कायर मामूली-सी सरसराहट से चौंक उठते हैं...

"तो सुनो, बहार," रुस्तम ने कलंतर से तत्त्वान्वेषी दृष्टि हटाये बिना बहार से शान्तिपूर्वक कहा, "कल छः बजे अपनी बीवी के साथ पशुपालन फ़ार्म पर पहुंच जाना। नहीं पहुंचे, तो बीस श्रम-दिनों का जुरमाना होगा।

अगर तुम्हें बाज़ार या चायखाने में देखा गया, तो तुम्हारा निजी प्लाट कम कर दिया जायेगा।"

"आप, चाचा, बेकार ही..." सलमान बोल उठा, पर रुस्तम की कठोर दृष्टि देखकर तत्क्षण चुप हो गया।

"लानत है मुझ पर तुम्हारे साथ गंदगी में घसीटे जाने के लिए!" कलंतर-लेलेश ने खड़े होते हुए कहा और इन सब बातों के प्रति अपनी पूर्ण उपेक्षा का भाव दिखाने के लिए उसने अंगड़ाई ली।

लेकिन वह कक्ष से बड़ी मुश्किल से अपनी भाग निकलने की इच्छा पर क़ाबू करके, पर जल्दी-जल्दी निकला। उसे रुस्तम के मौन ने इतना डरा दिया था। उसके पीछे-पीछे उदास सलमान भी धीरे-धीरे निकल गया।

अभी तक किसी को मालूम नहीं था कि ज़िला समिति के ब्यूरो में कर्मचारियों के चुनाव में पार्टी सिद्धान्तों का उल्लंघन करने के लिए कलंतर को सख़्त झिड़की दी गयी थी।

"उफ़!" रुस्तम ने ठण्डी सांस ली और कनखियों से शेरज़ाद की तरफ़ देखा। "लगता है, लड़के, हमारे सामूहिक फ़ार्म में सारे काम फिर नये सिरे से शुरू करने होंगे..."

७

कुछ दिन बाद, एक बार जब रुस्तम खेत से लौटा, उसे शराफ़ोगलू, कलंतर, शेरज़ाद और सलमान कार्यालय में बैठे मिले।

वृद्ध ने तुरन्त देख लिया कि सलमान का चेहरा नमकीन टमाटर जैसे सिकुड़ गया, जबकि कलंतर उदास था, मानो उसे अपने ही जनाज़े में बुलाया गया हो।

दुआ-सलाम हुई।

"बात यह है, रुस्तम," शराफ़ोगलू ने इतनी सावधानीपूर्वक बात छेड़ी, मानो किसी बीमार आदमी का ज़िक्र हो रहा हो, "हमने ज़िला समिति में असलान के साथ सलाह की और इस फ़ैसले पर पहुंचे कि तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म के हिसाब-किताब की जांच करना ठीक रहेगा। तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है?"

"ठीक है," रुस्तम खांसा। "बहुत अच्छी बात है। पर अध्यक्ष कौन होगा इस... लेखा-परीक्षा समिति का?"

"मैं ही अध्यक्ष हूं उसका।"

रुस्तम के दिल को बड़ी राहत मिली: उसका मित्र शराफ़ बेकार का झंझट नहीं खड़ा करेगा। और वैसे लेखा-परीक्षा कोई बुरी बात नहीं है— हिसाब जौ जौ, बख़्शिश सौ सौ; रुस्तम का हमेशा यही मत रहा था।

लेकिन सलमान अप्रत्याशित हठ के साथ बोला कि जब फ़सल उठाने का काम ज़ोरों पर हो, जांच करवाना बिलकुल अनुचित होगा, कम-से-कम वित्तीय वर्ष समाप्त हो जाने देना चाहिए। ऐसी क्या जल्दी है? लोगों को फ़सल का काम निबटा लेने देना चाहिए, कोई पीछे से धकेल रहा नहीं है। "क्यों, ठीक है न, मोहतरम कलंतर?"

कलंतर ने एक पल के लिए आंखें मूंद लीं, मानो एकाग्रचित्त होने की कोशिश कर रहा हो, पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

रुस्तम ने सलमान का समर्थन नहीं किया: "लोग सोचेंगे कि मैं डरता हूं..." और वह हठपूर्वक उसका विरोध करने लगा।

"कोई बात नहीं, ज़रूर जांच करें, लेकिन लोगों के काम से नहीं हटाना चाहिए।"

शेरज़ाद भी बोल उठा:

"लेखा-परीक्षा कर लेंगे, तो अफ़वाहें उड़ना बंद हो जायेंगी। और इससे लाभ ही होगा..."

सलमान से न रहा गया:

"तुम अपने बारे में सोचते हो, सार्वजनिक हित के बारे में नहीं!"

उसका उलाहना इतना तर्कहीन था कि शेरज़ाद ने ज़रा भी बुरा नहीं माना।

"तुम्हें क्या हुआ है?" रुस्तम बोल उठा। "इसे भी, मुझे भी और तुम्हें भी जांच से सिर्फ़ फ़ायदा ही होगा।"

"मैं भी यही सोचता हूं," शराफ़ोगलू ने अध्यक्ष का समर्थन किया। "हां, याद आया," उसने कनखियों से सलमान की तरफ़ देखा, "हम साथ-साथ पशुपालन फ़ार्म की भी जांच कर लेंगे!"

सलमान का दिल धुकड़-पुकड़ करने लगा, उसने याचनापूर्ण दृष्टि से कलंतर की तरफ़ देखा: "बचाओ!", लेकिन "भैया" चुप रहा।

"मुझे क्या? चाहे शिशुशालाओं की जांच की जाये," सलमान ने अपने पर क़ाबू करके कहा। "लेकिन मेरी अपनी राय वही है: ऐसे समय में लेखा-परीक्षा करना, लोगों को परेशान करना होगा। मैं इस बारे में

फ़ौरन बाक़ू ख़बर करूँगा। ऐसी क्या जल्दी है? इससे अफ़वाहें बंद नहीं होंगी, बल्कि और बढ़ जायेंगी: सब कहेंगे – रुस्तम चाचा पर विश्वास नहीं रहा... यानी मुझ पर भी नहीं रहा, और शेरज़ाद पर भी..."

"तुम इनकी नहीं, अपनी फ़िक्र करो!" शराफ़ोगलू ने सलाह दी और उठ खड़ा हुआ। "यानी सोमवार से शुरू कर देंगे... हां, एक और काम है..." वह थोड़ी देर चुप रहा। "कलंतर-लेलेश को कहीं काम पर लगाना है। हां, इसे हटा दिया गया... और कहीं नहीं, तो कम-से-कम शेरज़ाद की टोली में ही सही..."

"कामरेड शराफ़, इतने बड़े आदमी का बेटा ज़मीन कैसे खोदेगा?" रुस्तम ने इस समाचार से लेशमात्र भी विस्मित हुए बिना कहा। "इनके लिए तो ज़रा हल्का काम ढूंढ़ना चाहिए, जैसे दुकान में या गोदाम में। वहीं आराम फ़रमायें। मैं ठीक कह रहा हूं न, कलंतर-लेलेश?"

कलंतर ने, जिसके कंधे झुक गये थे, चेहरे पर ऐसी घिनौनी चमक थी, जैसे उस पर चर्बी मली गयी हो, मज़ाक़ नहीं समझा और आडम्बर-पूर्वक कह उठा:

"मुझे जहां भी भेजा जाये, मैं निस्स्वार्थ मेहनत करूँगा!"

शराफ़ोगलू और शेरज़ाद ने एक दूसरे की तरफ़ देखा: उन्हें इस कपटाचरण से मतली-सी आने लगी।

"हां, इनका काम मिट्टी का तेल बेचना है!" शराफ़ोगलू ने गम्भीर स्वर में कहा।

सलमान पिछले दिनों कुछ भी होने की आशा कर रहा था, पर ऐसी ख़बर सुनकर उसे ठण्डा पसीना आ गया। वह जड़वत् खड़ा रुस्तम, शराफ़ोगलू और शेरज़ाद को ज़िन्दादिली से आपस में बातचीत करते बाहर निकलते देखता रह गया...

"इनकी बातों पर ध्यान मत दो," कलंतर उसका हाथ पकड़कर फुस-फुसाया। उसका सारा घमण्ड चूर हो चुका था।

"मैं फिर भी तरक़्क़ी करूँगा, दोस्त बचा लेंगे।"

कलंतर का हाथ चिपचिपा था, और सलमान को लगा जैसे उस पर कोई मेंढक कूदा हो।

"तुम्हारे यहां चलते हैं, खाना खायेंगे, फिर तुम्हें सारी बात बता-ऊँगा!"

"बहन जा चुकी है, खाना नहीं बना है, और वैसे भी..."

सलमान एकदम पलटकर कलंतर भैया की तरफ़ देखे बिना पैर घिसटता घर चल दिया।

८

संस्कृति-भवन के निर्माण-स्थल पर कुल्हाड़ों की खट-खट, आरों की सर्र-सर्र की आवाज़ें गूँज रही थीं... भवन की छत डाली जा चुकी थी, बढ़ई तख़्तों पर रंदा फेर रहे थे, खिड़कियों के चौखटे लगा रहे थे, पलस्तरकार दीवारों पर पलस्तर कर रहे थे, उन्हें हमवार कर रहे थे, इमारत के अंदर रँगसाज़ रंग कर रहे थे।

रुस्तम जिसके पास भी जाता, वह उसे तसल्ली दिलाता: त्योहार तक काम पूरा कर लेंगे।

"अरे, ज़रा रफ़्तार बढ़ाओ, दोस्तो," रुस्तम कारीगरों को जल्दी करने को कहता। "त्योहार सिर पर आ गया है। इमारत को दुलहन की तरह सजाना है, ताकि सब देखते रह जायें।"

कितनी इच्छा हो रही थी उसे निर्माण-कार्य जल्दी से जल्दी पूरा करने की! वह मुख्य द्वार पर लाल फ़ीता काटकर एक ओर हट जायेगा और अपने गांववालों को सम्बोधित कर कहेगा:

"यह लीजिये चाबी, अब ख़ुद ही संभालिये इसे! मुझ में अब ताक़त नहीं रही! मेरे आराम करने का वक़्त आ गया है।"

वास्तव में रुस्तम महसूस करने लगा था कि उसका बोझ बहुत भारी है और उसे ज़मीन में दबाये जा रहा है। वह वर्ष के अन्त में सामूहिक किसानों से उसे अध्यक्ष के पद से मुक्त करने की प्रार्थना करना चाहता था, पर लेखा-परीक्षा समाप्त होने से पहले नहीं: "सारा काम जमा दूं, सब ठीक-ठाक कर दूं, फिर सारे काम नये अध्यक्ष को संभला दूंगा..."

लेकिन आख़िर किसे? यह विचार रुस्तम को कचोट रहा था। अब उसे सलमान पर विश्वास नहीं रहा था। "मैंने ख़ुद उसे नियुक्त किया था, ख़ुद ही हटा भी दूंगा," रुस्तम सोचता। "अगर हर आदमी अपना फैलाया कूड़ा-कर्कट साफ़ करता रहे, तो इस दुनिया के लोग चैन से जीने लगें..."

वह संस्कृति-भवन से कार्यालय में गया। वहां उसे शेरज़ाद, गोशातख़ां और बूढ़ा चरवाहा आगा मिले। रुस्तम ने शेरज़ाद के साथ संयमपूर्वक दुआ-

सलाम की, गोशातखां के साथ सर्दमिजाजी से, पर वृद्ध का उसने आलिंगन किया।

"ओ बाबा! कैसे आना हुआ?! बहुत ख़ुशी हुई, बहुत ख़ुशी हुई!" वह छज्जेदार टोपी खूंटी पर टांगकर वृद्ध के पास बैठ गया। "अच्छा, सुनाओ, क्या हाल हैं..."

बाबा ने दाढ़ी पर हाथ फेरा।

"नहीं, तुम मेज़ पर बैठो, तुम्हारा अध्यक्ष का स्थान वहां है। मैं सरकारी काम से आया हूं। मेरी बात सुनो और ज़रूरी क़दम उठाओ।"

रुस्तम शिष्टतापूर्वक मेज़ पर बैठ गया और उसने अपनी मुखमुद्रा कामकाजी बना ली।

"मैं इन्हें लाया हूं," गोशातखां ने इस बात की चिन्ता किये बिना कहा कि रुस्तम उसकी तरफ़ नहीं देख रहा है। "मैं रास्ते में पशुपालन फ़ार्म में यह पता लगाने गया कि सारे बच्चे पढ़ते हैं या नहीं, रात को वहीं रहा, और सुबह इन्होंने कहा: 'मुझे रुस्तम के पास ले चलो।' मैं इन्हें मनाने लगा, मुझे डर था कि गड्ढों में इन्हें बुरी तरह हचकोले खाने पड़ेंगे। मैंने कहा: 'मुझे बता दो, मैं ज्यों का त्यों रुस्तम को बता दूंगा।' लेकिन, नहीं, यह नहीं माने।"

चरवाहे ने शरारती ढंग से आंखें मिचकायीं।

"हम दोनों की दांत काटी रोटी थी, हम एक दूसरे को सलाम कहते थे, फिर मैं ज़रूरी ख़बर रुस्तम के पास दूसरों के ज़रिये कैसे भेज सकता था? यह तो रुस्तम की भी बेइज़्ज़ती होगी, और मेरी भी। वही तो मुझे ताना देता है: 'दोस्त, मेरा नाम क्यों उछाला तुमने?'"

"चाचा, लेकिन मुझे अभी क्या मालूम कि बात किसकी हो रही है," रुस्तम ने शिष्टतापूर्वक कहा।

"अभी मालूम पड़ जायेगा," बाबा ने उसे तसल्ली दिलायी। "पर क्या इनके सामने कह सकता हूं?" उसने शेरज़ाद व गोशातखां की ओर इशारा किया।

"क्यों नहीं? भरोसेमंद लोग हैं।"

"अच्छा, लो सुनो... दो रात पहले की बात है, भेड़ों को बंद करके चरवाहे अलाव के पास लेट गये। मैंने भी ज़मीन पर भेड़ की खाल बिछा ली। बुड्ढों को नीन्द जल्दी नहीं आती है, ऊब से बचने के लिए मैं बीते और आनेवाले ज़माने के बारे में सोचने लगा, दुःख और सुख के बारे में।

मेरी दायीं तरफ़ लेटा चरवाहा – हमारे यहां, ख़ुदा माफ़ करे, एक कुछ बुद्धू-सा लड़का है – इतने मज़े से खर्राटे लेता है कि उसके खर्राटों को झाड़ू से समेटा जा सकता है। और बायीं तरफ़ से एक मच्छर मेरे पीछे पड़ गया: गाल से उड़ाऊं, माथे पर जा बैठे, माथे से उड़ाऊं, तो नाक पर। और मच्छर शहनाई से भी ज़ोर से भन-भन कर रहा था..."

"चादर तान लेते," रुस्तम ने सलाह दी।

"जाड़े की बात कर रहे हो?" बूढ़े को आश्चर्य हुआ। "स्तेपी की हवा ही तो चरवाहे की दौलत होती है... हां, तो मैं क्या कह रहा था?"

"मतलब की बात कहो, बाबा!" अध्यक्ष ने उसे जल्दी करने को कहा।

"अरे, मैं क्या भटक गया हूं? काम की बात ही तो कह रहा हूं। हां तो मच्छर पीछा नहीं छोड़ रहा था, मैं उठकर थोड़ी देर टहला, भेड़ों को देख आया और तब मुझे याद आया कि गोला पत्थर के पास सुराही में लस्सी रखी है। और लस्सी – चरवाहे की ज़िन्दगी होती है, आप लोगों को मालूम होना चाहिए! लस्सी पी ली, फिर न गर्मी लगती है, न मौत पास फटकती है। पहाड़ी चरागाहों से जाड़े के पड़ाव पर लौट कर हाथ-मुंह धोये लस्सी पी और सारी बीमारियां दूर हो गयीं, फिर चाहे अभी शादी कर लो! अगर मैं किसी लेखक को लस्सी के बारे में जो जानता हूं, बताऊं तो बहुत ही लाभदायक किताब बन जाये।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ? लस्सी पीने के बाद ..."

"लस्सी पीकर भेड़ की खाल के पास लौट आया, पर मच्छर वहीं मौजूद था, सीधा गाल पर बैठकर ख़ून पीने लगा। अब क्या करूं? झाड़ी के पास गया और पीठ के बल लेट गया... और अचानक मुझे फुसफुसाहट सुनाई दी: झाड़ियों में पशुपालन फ़ार्म का नया इनचार्ज और क्या नाम है उसका..."

"यारमामेद?" रुस्तम ने धीरे से नाम सुझाया।

"तुम्हारे मां-बाप को जन्नत नसीब हो, हां, वही। मैं छिपकर उन की बात नहीं सुनना चाहता था, मुझे क्या मतलब उनसे? पर उनकी बातें मच्छरों की तरह कान में घुसने लगीं। 'सुन, यारमामेद,' गूंगे हुसैन ने कहा, 'अब सलमान पर बिलकुल भरोसा नहीं किया जा सकता: वह हम से ही पशुपालन फ़ार्म लुटवाकर, हमें ही क़ब्र में धक्का दे देगा!' यारमामेद ने जवाब दिया: 'हां, हां, यह मेढ़क का बच्चा ठूंसे जा रहा है, ठूंसे जा रहा है, पर इसका पेट ही नहीं भरता है! मैं मवेशियों के मरने की

रिपोर्टें दर्ज करते-करते ऊब चुका हूं... पर अब रेवड़ कहां है? साल्यान में है?' 'नहीं अभी सारीकमीश में कूरा तट पर।' हुसैन ने कहा। 'सुनो, यारमामेद चोरी की साठ भेड़ें बेचने से हमें दो-तीन हज़ार रूबल मिलेंगे, जबकि बाक़ी सलमान अपनी मूंछों पर ताव देकर हड़प जायेगा... ऐसे बदमाश की शिकायत करने का वक़्त आ गया है!' यारमामेद सोचने लगा, फिर बोला: 'बेशक, लिखना तो चाहिए, पर तब हम तीन हज़ार रूबल से भी हाथ धो बैठेंगे। हमें इंतज़ार करना चाहिए, उससे काफ़ी अच्छा हिस्सा हथिया लेना चाहिए, सिर्फ़ उसके बाद ही, जहां ज़रूरी हो, वहां शिकायत करनी चाहिए...'"

रुस्तम की कुरसी चरमरा उठी; शेरज़ाद के लिए चैन से बैठ पाना मुश्किल हो गया: कभी वह उचककर उठ जाता, कभी बैठ जाता, और गोशातख़ां की आंखें शर्म से झुक गयीं, होंठ टेढ़े हो गये।

"यह है असलियत," वृद्ध ने एकरस स्वर में कहा। "मुझे सुबह तक नीन्द नहीं आयी, जब मैंने इस आदमी को देखा," उसने गोशातख़ां की तरफ़ उंगली उठायी, "तो तुम्हारे पास आने की सोची..."

"यानी साठ भेड़ें इस समय सारीकमीश में हैं?"

"मुझे क्या पता?" बाबा ने शान से पीली धूसर दाढ़ी पर हाथ फेरा। "वे यही कह रहे थे।"

"हमें उन्हें क़ब्ज़े में ले लेना चाहिए, इसी वक़्त सारीकमीश पहुंचना चाहिए!" रुस्तम उचका और उसने गोशातख़ां व शेरज़ाद पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। वे सहमत हो गये: बेशक, उन्हें पकड़ना चाहिए...

रुस्तम की रगों में सैनिक का ख़ून जोश मारने लगा: छज्जेदार टोपी अपनी भौंहों तक खींचकर उसने आवाज़ दी: "मोटर तैयार करो!" लेकिन उसी समय कक्ष में शराफ़ोगलू फ़ाइल लिये दाख़िल हुआ और उदास स्वर में बोला:

"हाल ख़राब हैं, प्यारे दोस्त, बहुत ख़राब!.."

शेरज़ाद ने उसे उड़ाकर ले जाये गये रेवड़ के बारे में संक्षेप में बताया, पर शराफ़ोगलू को आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि उसने उन्हें मिलिशिया को टेलीफ़ोन करने की सलाह दी: वही चोरों को पकड़े... इस फ़ाइल में बहुत महत्वपूर्ण काग़ज़ात हैं। और उसने रुस्तम को कुरसी पर बैठने के लिए बाध्य करके काग़ज़ात दिखाये... संस्कृति-भवन की नींव की भराई के लिए पत्थरों पर तीस हज़ार रूबल ख़र्च किये गये, जब कि संभरक को

केवल पन्द्रह हज़ार रूबल ही दिये गये, शहतीर, तख़्ते और ईंटें ढोयी तो सामूहिक फ़ार्म के ट्रकों में गयी, पर न जाने कौन-कौन से ट्रक-चालकों को ग्यारह हज़ार रूबल का भुगतान किया गया। और इस के लिए कुछ और भी जाली बिल और रसीदें हैं। सामूहिक फ़ार्म के लगभग एक लाख से ज़्यादा रूबल का ग़बन किया गया है, पर जांच अभी पूरी नहीं हुई है।

"और सलमान क्या कहता है?" रुस्तम ने कुरसी के हत्थे दबाते हुए भयानक फुसफुसाहट में कहा।

"सारा दोष तुम्हारे सिर मढ़ता है: कहता है, तुमने उसे मजबूर किया, तुमने पैसा खाया, उसे मामूली-सा हिस्सा दिया, ज़्यादा बड़ी रक़म नहीं, सिगरेट के लिए भी काफ़ी नहीं होगी..."

"मैंने?!" रुस्तम ने भर्रायी आवाज़ में कहा और उसका सिर सीने पर झुक गया।

"तुम फ़िक्र मत करो, दोस्त," शराफ़ोगलू ने कहा। उसे रुस्तम पर दया आयी, लेकिन वह जानता था कि उसे सहानुभूति की भावना को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिए। "ये लिखित प्रमाणपत्र हैं: तेल्ली चाची, केरेम, गिज़ेतार, शेरज़ाद और दूसरे कई लोग तुम्हारी ईमानदारी की ज़मानत देते हैं।"

लेकिन रुस्तम को इससे भी शान्ति नहीं मिली। वह आंखें उठाकर देखते डरता सोच रहा था कि उसने तेल्ली, उसके बेटे, शेरज़ाद और उन सबके ख़िलाफ़, जिन्हें वह अपना शत्रु समझता था, कितना अक्षम्य अपराध किया है। और उसकी पत्नी? क्या सकीना ने उसे सही रास्ते पर लाने, चेताने की कोशिश नहीं की थी? क्या सकीना ने उससे बार-बार नहीं कहा था कि वह आस्तीन में सांप पाल रहा है?.. जो कुछ हुआ उसके बारे में सोचता हुआ रुस्तम अपने को समर्थ भी अनुभव कर रहा था और असहाय भी, रौंदा हुआ भी और पुनर्जीवित भी।

"हां, मैं दोषी हूं और मुझे सज़ा मिलनी चाहिए," उसने कहा और एकाएक ग़ुस्से में सिर झटका, पर फिर शिथिल हो गया।

सब आत्मग्लानि के कारण चुप थे।

गोशातख़ां अपनी सामान्य मुखमुद्रा में रहा: उसके चेहरे पर न विजयोल्लास था, न ही द्वेषपूर्ण प्रसन्नता का भाव।

"नहीं, रुस्तम, मुझे भी चोरी का शक नहीं हुआ था, मैं झूठ नहीं

बोलूंगा... मुझे यही डर था कि तुम्हारे दिमाग़ चढ़ गये हैं, तुम घमण्डी हो गये हो, तुमने अपने इर्द-गिर्द चापलूसों को जमा कर लिया है..."

"हां, मैं उन्हें सहारा समझता था। अपना सहारा," रुस्तम ने पहली बार हिचकिचाते हुए सहमति प्रकट की: उसकी ईर्ष्या व रोष जाते रहे, केवल असीम क्लान्ति बच रही।

रुस्तम सबके लिए, जिले के उच्चाधिकारियों के लिए भी हमेशा 'कीशी' रहा, यह स्वाभाविक था, पर चरवाहे बाबा की उपस्थिति में वह भी शेरज़ाद का हमउम्र-सा रह गया था... जब बाबा ने मुंह खोला, सब शिष्टतापूर्वक चुप हो गये।

"मैं तुम्हें अक़्लमंद समझता था, पर तुमने क्या कर डाला? ओफ़!... लोगों से मुंह फेर लिया और कुछ बदमाशों को अपने मुंह लगा लिया! तुमने हमारी कहावत सुनी है: लम्बा सफ़र भी अच्छा होता है, और ख़िलाफ़त करनेवाले लोग भी? लोगों के लिए तुम्हारा अकेले का कहना मानना ज़रूरी नहीं है, बल्कि तुम्हें, मुखिया को लोगों के आगे झुकना चाहिए! अकेली भेड़ को हवा का झोंका भी खाई में गिरा सकता है, पर पूरे रेवड़ का आंधी भी कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मैं अपनी पहाड़ी चरागाहों में जाता हूं, वहां तुम्हारे यहां से ज़्यादा अच्छा है..."

और रुस्तम ने एक बार फिर प्रतिवाद नहीं किया, बल्कि इसे मान लिया।

"हां, यही बात है, चाचा..."

९

नज़नाज़ के जाने के बाद गराश को अपने आप से गहरी घृणा महसूस होने लगी। कुलटा औरत का क़ैदी बनकर वह कितना नीचे गिर चुका है! प्रकृति की महान देन सुन्दरता को नज़नाज़ हर ख़रीदार को, बिना उससे घृणा किये, सस्ते में बेचती थी।

और ऐसी औरत की ख़ातिर उसने माय्या को ठुकरा दिया। पत्नी की वफ़ादारी की उपेक्षा करना, उसकी मर्यादा को रौंद डालना कितनी नीचता की बात है! भला माय्या इसे भूल सकती है, उसे क्षमा कर सकती है?!

पश्चात्ताप की भावना से छटपटाता गराश लोगों से कतराने लगा,

काम के बाद वह फ़ौरन घर लौट आता और घंटों बरामदे में खड़ा अंधेरी रात में शून्य में ताकता रहता।

घर में वैसे ही गहरा अंधेरा छाया हुआ था; सकीना और रुस्तम चिन्ता में डूबे थे, मौन रहते थे, और पेरशान भी कुछ उदास रहती थी...

एक बार सकीना ने रुस्तम से हठपूर्वक कहा कि वह बहू को लिवा लाये, वरना गराश बिलकुल ही सूख जायेगा...

वृद्ध नाराज़ होकर बोला:

"तुम कितनी बार वहां हो आयी हो? इतनी बेइज़्ज़ती तुम्हारे लिए क्या कम है? अब मुझे भी शर्मिंदा करवाना चाहती हो?"

"हमारा लड़का बेमौत मर जायेगा!" सकीना ने गहरी ठण्डी सांस ली।

"लड़का!" रुस्तम व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया। "तुम्हारा लड़का ख़ुद ही जाये। आदमी का अपमान करना आसान होता है, पर पत्नी से सुलह करना, उसे वापस घर लाना इससे भी कहीं ज़्यादा मुश्किल होता है, इसके लिए हिम्मत की ज़रूरत है..."

"हां, वह तुम पर नहीं गया है," मां ने शिकायत की, "उसकी उम्र में तो तुम आग जैसे थे!"

"मैं कुछ नहीं कर सकता," रुस्तम ने सिर झुकाकर कहा। "किसी का बेटा बाप पर जाता है, तो किसी का मां पर..."

"ग़लत बात है," पेरशान बेदर्दी से बीच में बोल उठी। "गराश बिलकुल तुम पर गया है; हू-ब-हू तुम्हारा जैसा है। वैसा ही ज़िद्दी है, मन-मौजी है, वैसे ही पत्नी की परवाह नहीं करता है..."

पिता ने उसकी चोटी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, पर पेरशान अपने कमरे में भाग गयी और दरवाज़ा बंद कर लिया।

फिर भी रुस्तम ने गराश को अपने पास बुलाया।

"बेटा," उसने दुबले और उदास युवक की ओर न देखने की कोशिश करते हुए कहा, "ज़रा कार लेकर जल्दी से कारा-केरेमोगलू के पास जाओ और ट्रक की धुरियां उधार मांग लाओ। कहना: गोदाम से मिलते ही रुस्तम उन्हें लौटा देगा।"

गराश ने चुपचाप कहना माना; बरामदे से उतरकर खूंटी से शेड की चाबी उतारी, लेकिन तभी सकीना भागी हुई आयी और उससे कपड़े बदलने को बोली:

"कितनी शर्म की बात है! क़मीज़ मुसी है, कॉलर मुड़ा हुआ है, बिलकुल भोज की छाल जैसा..."

जब बेटा रेशमी सफ़ेद क़मीज़ और भूरा सूट पहन रहा था, सकीना ने पति को उसे और पेरशान को भी जाने देने के लिए मना लिया।

"रात को वहीं रह सकती हो," रुस्तम ने जवाब में कहा। "लगता है तुम्हें अपना घर तो प्यारा है ही नहीं।"

१०

ज़ैनब क़ुलियेवा के घर की आदी हो जाने के बाद माय्या ने घर के कुछ काम ख़ुद संभाल लिये, यहां तक कि गाय को दुहना भी सीख गयी। उसे बाल्टी की दीवारों से दूध की धारों के टकराने पर होनेवाली गूंज और गोशाला की गरम और सौंधी हवा में सांस लेना अच्छा लगता था...

ज़ैनब ने उसे लोकगीत भी सिखा दिया, जो गृहणियां गाय को दुहते समय गाती थीं।

"इस भूरी गाय का दिल बड़ा कोमल है," उसने माय्या को बताया। "इसे गाना गाकर ख़ुश नहीं किया, तो एक बूंद भी दूध नहीं देगी।"

उस शाम गोशाला से दूध की पूरी भरी बाल्टी लिये निकलते समय माय्या को रहीम मिल गया: वह कमची से मुर्ग़ियों को बाड़े में हांक रहा था।

"बहन, मेरी दायीं आंख फड़क रही है!" लड़के ने चिल्लाकर कहा। "अच्छा सगुन है!"

माय्या मुस्करा दी: हर गांव में अपने-अपने शकुन और अपशकुन माने जाते हैं। और कितने सारे हैं! कई आश्चर्यजनक होते हैं, कई दिलचस्प होते हैं, लोग सदियों से उन्हें याद रखते आये हैं, कुछ सीधे-सादे तो कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण...

"तुम किसकी आस लगाये हो? पांच में से पांच अंक पाने की?"

लड़के ने वितृष्णा से होंठ निकाले: पांच में से पांच अंक तो उसे वैसे ही आये दिन मिलते रहते हैं, वह तो बहन की चिट्ठी का इंतज़ार कर रहा है। जब से सदफ़ विद्यालय में पढ़ने गयी, रहीम ऊबने लगा था।

"मैं उसे रोज़ रात को सपने में देखता हूं..." उसने रहस्यमय स्वर में बताया।

"बड़ी ख़ुशक़िस्मत है!.." माय्या ने ठण्डी सांस ली। "उसका भाई उसे कितना प्यार करता है... अरे, उदास मत होओ, पता भी नहीं चलेगा कि कब जाड़ा बीत गया, और गरमी आते ही सदफ़ छुट्टी में घर आ जायेगी।"

बरामदे में चढ़ने पर माय्या ने एक कार को राजमार्ग से गांव के रास्ते पर मुड़ते देखा, माय्या का हृदय एकाएक धकधक कर उठा, और जब 'पोब्येदा' घर के दरवाज़े पर रुकी, तो वह अत्यंत भयभीत हो उठी। अगर गराश अकेला आया होता, तो वह बग़ीचे में से होकर खेत में भाग जाती और वहां भोर होने तक भटकती रहती... लेकिन मोटर में से सकीना और पेरशान ने निकलकर गली का फाटक खटखटाया। रहीम फाटक खोलने बढ़ा, और माय्या रेलिंग पकड़े खड़ी रही, मानो डरती हो कि फ़र्श के तख़्ते उसके पैरों तले से सरक जायेंगे।

सौभाग्य से पेरशान ने माय्या को सोचने का समय नहीं दिया, लपककर उससे लिपट गयी, उसे चूमने लगी और पूछने लगी कि उसने नये कपड़े ख़रीदे या नहीं: जैसे अब वह नये कपड़ों के बारे में सोच सकती हो...

सकीना ने संयम से काम लिया, उसने सबसे पहले गृहणी से उसके कुशल-क्षेम के बारे में पूछा। ज़ैनब ने शिष्टतापूर्वक चिर-अभीप्सित अतिथियों को खाने की मेज़ पर बिठाया और फिर गराश को आवाज़ दी, जो मोटर के पास रह गया था।

"कार को अहाते में ले आओ और फिर बरामदे में आ जाओ!"

शुरू में बातचीत कुछ जमी नहीं: ज़ैनब और सकीना एक दूसरे को बिना विशेष उत्साह के फ़सल व श्रम-दिनों के बारे में बताती रहीं, जब कि माय्या और तख़्त के किनारे पर बैठा गराश एक दूसरे से नज़र मिलाने से डरते मौन बैठे रहे।

अन्त में गराश ने साहस जुटाकर दबी आवाज़ में कहा:

"माय्या, मेहरबानी करके, पांच मिनट के लिए बग़ीचे में चलो..."

"हां, हमें दिल खोलकर बात करनी चाहिए," माय्या ने सोचा, और सास भी उल्लसित स्वर में कह उठी:

"जाओ, बच्चो, जाओ, थोड़ा टहल लो!.."

माय्या ने कोई जल्दी नहीं की और गराश ने उसकी आंखों में झांककर देख लिया कि वे परायी-सी और शान्त हैं, मानो पत्नी क़िस्मत के आगे

झुक गयी हो और उसने जीवन में किसी परिवर्त्तन की आशा छोड़ दी हो...

सेब के पुराने वृक्ष की लगभग सारी पत्तियां झड़ चुकी थीं, और धुंधली रोशनी में भी बड़े-बड़े लाल सेब नज़र आ रहे थे। माय्या और गराश उसी के पास यह न समझ पाते रुक गये कि बात कहां से शुरू की जाये, एक दूसरे के साथ कैसे पेश आयें। आंखों में काटी रातों में माय्या ने कितनी बार इस क्षण की कल्पना की थी, उसे आशा थी कि गराश शुद्धहृदय से शक्तिशाली पुरुष की तरह आयेगा, जिस रूप में वह उसे जानती थी, लेकिन अब वह उसके निकट, बग़ल में था, पर माय्या को उस पर विश्वास नहीं रहा था, उसे लगता था कि यह विश्वासघाती व्यक्ति फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने आया है। और गराश न जाने क्यों चुप था, मानो उसे आशा हो कि सुलह का पहला क़दम माय्या उठायेगी।

"अच्छा, बोलो, तुम क्या चाहते हो?" उसने रुखाई से कहा।

गराश ने सेब की डाल अपनी तरफ़ खींच ली।

"मैं क्या कह सकता हूं? मैं दोषी हूं, सारा दोष मेरा है..."

उसे आशा थी कि इस स्वीकारोक्ति के बाद पत्नी उसका आलिंगन कर लेगी और वे ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट जायेंगे, पर माय्या को लगा कि वह इस समय भी कोई चाल चला रहा है, ढोंग रच रहा है।

"दोषी तुम नहीं, मैं हूं," उसने कटु स्वर में कहा। "हां, हां, तुम चुप रहो! मैं भोली-भाली थी और नहीं जानती थी कि प्यार के साथ खिलवाड़ किया जा सकता है, कि मर्द के सीने में दो दिल होते हैं: एक जोशीले क़समों-वादों के लिए, दूसरा – दग़ाबाज़ी के लिए।"

उसकी आंखें लाल हो रही थीं, आवाज़ में सख़्ती झलक रही थी, लेकिन गराश ने अभी आशा नहीं छोड़ी थी।

"मैंने तुम्हारे दिल को ठेस पहुंचाई, लेकिन मेरी ज़िन्दगी में भी ज़हर घुल गया, मुझे बिलकुल चैन नहीं मिल रहा है, मुझे माफ़ कर दो..."

माय्या पर अपने अपमान, निराशा में काटे दिनों की यादें एक बार फिर हावी हो उठीं: उसे सुलह करना कल्पनातीत और अपमानजनक लग रहा था।

"चले जाओ! .. धोखा सिर्फ़ एक बार दिया जा सकता है। मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती!"

गराश चौंक उठा, डाल उसके हाथ से छूट गयी और घास पर सेब

गिराती हिलने लगी। उसमें पिता से विरासत में मिला गर्व जाग उठा और वह माय्या से अलग खड़ा हो गया।

"मेरा प्यार मुझे यहां खींच लाया था। अगर तुम उसकी क़ीमत सेब से भी कम आंकती हो, तो उसे घास में पड़ा रहने दो! मैं किसी के सामने अपनी बेइज़्ज़ती नहीं कराऊंगा, हालांकि मैं अपना दिल तुम्हें दे चुका हूं। मैं यहां भीख मांगने नहीं, सुलह करने आया हूं... अच्छा, अलविदा!.."

गराश बग़ीचे से बाहर भाग गया, और माय्या ने फाटक के पास उसे रहीम से यह कहते सुना:

"बेटा, मैं ट्रक की धुरियां लेने जा रहा हूं: मेरी मां और बहन से कह देना कि हार्न की आवाज़ सुनते ही बाहर आ जायें..."

दिन-भर गरमी पड़ने पर भी घास अभी ठण्डी नहीं हो पायी थी, माय्या को आंसू बहाते हुए ज़मीन पर गिर पड़ने पर उसकी गरमी महसूस हुई।

११

जब लड़कों ने तेल्ली चाची से कहा कि अध्यक्ष ने उसे कार्यालय में बुलाया है, तो वृद्धा घबरा गयी: वह हमेशा बड़ी बहादुरी से रुस्तम के साथ झगड़ा करती थी, उस पर गला बैठ जाने तक चिल्लाती थी, इसके बावजूद वह उसके सामने कांपती थी। उसके कक्ष में दाख़िल होने पर उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ: रुस्तम शान्त और बुझा-बुझा-सा था, जैसे स्तेपी में राख में दबा अलाव...

"केरेम कहां है?" उसने बिना किसी भूमिका के पूछा। "दोपहर के खाने के समय तक आ जायेगा? उसे यहां भेज देना।"

"कोई बुरी बात तो नहीं हुई, चाचा?" चाची का स्वर कांप उठा।

"हम उसे उसकी पुरानी जगह पर रखना और सारा पशुपालन फ़ार्म उसे संभलाना चाहते हैं।"

"देख लिया, चाचा, क्या हुआ।" चाची स्कर्ट सरसराती कुरसी पर बैठ गयी। "तुमने ख़ुद अपना दायां हाथ काट लिया और अब क्या बायां भी काट डालना चाहते हो?"

"बहन, मैं वैसे ही मारा गया।" रुस्तम ने हथेलियों में चेहरा भींच लिया। "लाश को मत रौंदो।"

चाची का हृदय दयालु और स्नेहार्द्र था, उसने उसी क्षण रुस्तम को उस सब बुरे के लिए क्षमा कर दिया, जो उसने उसके बेटे के साथ किया था।

"ऐ, सुनो, छोड़ो इस तरह की बातें!" वह अपनी स्वाभाविक अशिष्टता से चिल्लायी। "मेरे बच्चों और पोतेपोतियों की क़सम, सारे गांव को इकट्ठा करके झण्डा उठाकर हम जिला समिति चल पड़ेंगे, पर, बुढ़ऊ, तुम्हें बचाकर रहेंगे। तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होने देंगे।"

तो यह नतीजा निकला सारी बातों का! मुझे लोग अब बुढ़ऊ कहने लगे हैं। ज़रा सोचिये तो सही: तेल्ली चाची उसे संरक्षण देगी... रुस्तम ने मुंह फेर लिया।

"शुक्रिया, बहन... इसकी ज़रूरत नहीं है। केरेम को भेज देना..."

उसने अपनी लाल हुई आखें छिपाने के लिए काग़ज़ात में नज़रें गड़ा लीं।

आधा घंटे बाद कार्यालय से निकलकर अध्यक्ष ने सईस को भूरी घोड़ी पर काठी कसने को कहा। रुस्तम बड़ी फुर्ती से उछलकर घोड़ी पर सवार होकर उसे सरपट कूरा की ओर दौड़ा ले चला। उसका इरादा जाड़े की फसलें देखने और यह पता लगाने का था कि लवण-कच्छवाले टुकड़े का प्रक्षालन कैसा किया गया है। लेकिन मुख्य कारण यह नहीं था: काठी पर सवार होने से उसका चित्त प्रसन्न हो उठता था, और जब तेज़ घोड़ा सुनसान स्तेपी में उसे लेकर सरपट दौड़ता था, ठण्डी हवा उसकी कटु स्मृतियों की तह को एक प्रकार से उड़ा देती थी। "कोई बात नहीं," रुस्तम बुदबुदा रहा था, "अभी रास्ता खुला है, सच्चा रास्ता... गराश और पेरशान भी इस रास्ते से नहीं भटकेंगे। उनके लिए पिता से ज़्यादा आसान होगा।" उसे जाड़े की फ़सलों के ज़मुर्रदी खेत, भरपूर फ़सल की आशा जगाते नज़र आने लगे। वृद्ध सन्तुष्ट हो गया: हां, बोवाई भी ढंग से की गयी है और सिंचाई भी... शेरज़ाद का खेत है। शेरज़ाद बहुत अच्छा लड़का है, समझदार भी है और नेक भी। कितना अन्याय किया रुस्तम ने उसके साथ, उसकी बिलकुल भी क़ीमत नहीं समझी!

घोड़ी किनारे की तरफ़ मुड़ गयी। सूर्यास्त की ज्वालाएं प्रतिबिम्बित करती कूरा में काकरेज़ी तरंगें उठ रही थीं, नदी के किनारे ठण्डक और ताज़गी ज़्यादा थी, और वृद्ध को सांस आराम से आ रही थी, उसका दिल नियमित गति से धड़क रहा था।



झुरमुट में घुसकर घोड़ी ने अचानक कनौतियां खड़ी कर लीं और टहनियां तोड़ती हुई पगडण्डी से एक तरफ़ कूद गयी। रुस्तम ने रकाब में अधखड़ा होकर देखा और टेकरी पर सलमान, यारमामेद और गूंगे हुसैन को बैठा पाया। घास पर कोनक की बोतल चमक रही थी, फटे मेज़पोश पर गोश्त के टुकड़े और रोटी पड़ी थी। दोस्तों के चेहरे लाल हो उठे, वे एक दूसरे की तरफ़ झुके बहुत पास-पास बैठे थे।

"ऐ, छिप क्यों रहे हो?" रुस्तम बड़ी मुश्किल से नाचती घोड़ी को क़ाबू में रखते हुए बुलंद आवाज में चिल्लाया।

आकस्मिकता के कारण मित्र स्तब्ध रह गये, गूंगे हुसैन ने तो आंखें भी मीच लीं, यारमामेद मुंह के बल जमीन पर लम्बा लेट गया, जैसे उसे आशा थी कि वह इस प्रकार रुस्तम की क्रुद्ध दृष्टि से बच जायेगा। केवल सलमान ने होश नहीं गंवाया और भागकर आ घोड़े की लगाम थाम ली।

"सलाम, चाचा। उम्मीद है आपकी सेहत अब ठीक है।"

चाबुक चमड़े की चार पट्टियों को गूथकर बनाया गया था, उसकी पहली चोट से ही सलमान बिलबिला उठा और हाथों से चेहरा ढक रुआंसी आवाज़ में चिल्ला उठा :

"जान से मत मारो मुझे! घोड़े से उतरो, बात करते हैं!"

पर गुस्से से भूत हुआ रुस्तम चोट पर चोट मारने लगा, पर हुसैन और यारमामेद ने भागकर आ उसके हाथ पकड़ लिए।

"चाचा, जान से मार डाला, तो जवाब देना पड़ेगा!" गूंगे हुसैन ने शान्तचित्तता से कहा। "घोड़े से उतरो, बात करते हैं..."

"जान ले लूंगा इसकी, जान!" रुस्तम, यह न महसूस करता कि वह क्या कर रहा है, गुस्से में गरजा। "ऐसे नीच की जान लेना तो कम है, इसकी तो जिंदा की खाल उधेड़ डालनी चाहिए!.."

"चाचा, इससे कुछ नहीं होगा,—हम तीनों अपना खून तुम्हारी खातिर बहाने को तैयार हैं। पर उससे कुछ फ़ायदा होगा?"

"फुफकार मत, सांप!" रुस्तम ने उसे भी चाबुक मारा।

हुसैन ने अचानक पूरी ताक़त से उसकी पेटी पकड़कर काठी से नीचे घसीट लिया। भूरी घोड़ी चमककर पिछली टांगों पर खड़ी हो झाड़ियों के झुरमुट में भाग गयी।

अब हुसैन और रुस्तम हांफते हुए एक दूसरे के सामने खड़े रह गये।

"यारमामेद, घोड़ी को पकड़कर छांद दो, नहीं तो भाग जायेगी!" गूंगे हुसैन ने स्पृहणीय आत्मसंयम के साथ कहा और अध्यक्ष को धमकी दी: "ख़बरदार, जो हाथ उठाया! .. और बताओ, क्या हुआ है? आंखें लाल क्यों हो रही हैं?"

उसकी शान्तचित्तता अनिष्टकारी और अबोधगम्य थी। सलमान ने दोस्त की तरफ़ आदर भाव से देखा।

"साठ भेड़ें कहां हैं?" रुस्तम ने दबी आवाज़ में पूछा।

"कौन-सी भेड़ें? अरे, चाचा, जो होना था, हो चुका है। ये रही रिपोर्टें उनके मरने की: भेड़िया खा गया, प्लेग से मर गयीं, कई कारण हैं... इन पर दस्तख़त भी हैं और मुहरें भी लगी हैं। आओ यहां बैठो, थोड़ी पीकर दिमाग़ लड़ायें कि शराफ़ोगलू को जो काग़ज़ात मिले हैं, उनके बारे में क्या किया जाये। तुम हमें बचाओ, और हम तुम्हें बचा लेंगे!"

रुस्तम ने उसके मुंह पर थूक दिया।

"ऐ, जल्दबाज़ी मत कर, मत कर जल्दबाज़ी!" हुसैन ने अनुद्विग्नता से थूक आस्तीन से पोंछा। "या तो तुम हमारा साथ दोगे, वरना..."

रुस्तम ने पूरे ज़ोर से उसके कान पर चोट की, और गूंगा गिर पड़ा, पर तभी वृद्ध पर सलमान और यारमामेद टूट पड़े।

रुस्तम ने सलमान को गिरा दिया, पर यारमामेद ने चुपके से पीछे से आकर उसको गिराने की कोशिश में उसके पैरों को कसकर जकड़ लिया, और होश में आ चुके हुसैन ने अपने लम्बे, बालदार हाथों से रुस्तम का गला दबोच लिया, बूढ़ा इतनी ज़ोर से चीखकर घुटनों के बल गिर पड़ा कि स्तेपी कांप उठी। और सलमान अपने उपकारक के अंधाधुंध चाबुक मारने लगा—आंखों पर, चेहरे पर, रुस्तम को स्तेपी और ख़ून-सी लाल कूरा घूमते नज़र आने लगे, पर वृद्ध ने इस बार भी हथियार नहीं डाले, उसने हुसैन तक हाथ बढ़ाकर उसकी गरदन ऐसे दबायी कि गूंगे के मुंह से केवल "टच्च" की आवाज़ निकली और गला घरघर करने लगा।

तभी कोई वज़नी चीज़ रुस्तम की गुद्दी में लगी। उसने हुसैन को छोड़ दिया, तनकर खड़ा हो गया, पर सलमान ने फिर उसके सिर पर डण्डा मारा। वृद्ध लड़खड़ाकर कटे पेड़ की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा।

बूढ़े का शरीर कूरा में फेंककर दोस्तों ने दम लिया, कोनक के घूंट लिये और दुःखद आश्चर्य के साथ एक दूसरे पर नज़र डाली: सबके चेहरे

ख़ून में लथपथ थे, खरोंचें लगी हुई थीं, नीले पड़ी हुई थीं, कमीज़ें फटी हुई थीं।

"सुनो," गूंगे हुसैन ने हुक्म दिया—अब वह उनका सरदार था। "रुस्तम अदालती जांच से डरकर डूब मरा। ईमानदार मेहनतकश को जन्नत नसीब हो! कुछ हो उससे पहले हमें भागने की तैयारी कर लेनी चाहिए: हमारा देश विशाल है, कहीं न कहीं छिप रहेंगे... और हो सकता है, यहां ही बच निकलें, क्या पता..."

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

१

मुग़ान पर धूसर धुंध छायी हुई थी। बहुत दिनों से बारिश नहीं हुई थी, हालांकि तालिश पहाड़ों के शिखरों से हवा के साथ आये बादल दिन-रात आकाश में छाये रहते थे। स्तेपी और गांव में भी वातावरण निरानन्द और विषण्ण था।

"काश, मूसलाधार बारिश ही हो जाये!" बरामदे में खड़ी पेरशान ने कहा।

"जल्दी से हो, नहीं तो सांस के साथ धूल आ रही है," सकीना ने भी यही कहा, और यह भूलकर कि उसके हाथों में गीली प्याली और तौलिया हैं, सोच में डूबकर जड़वत् खड़ी रह गयी।

"हां, जल्दी से होनी चाहिए!.."

"गराश आया क्यों नहीं?" सकीना ने कहा और होश में आने पर उसने चीनी-मिट्टी की काग़ज़ जैसी पतली प्याली को पोंछकर सुखा दिया। "कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया? दिल धक-धक कर रहा है: ज़रूर कोई मुसीबत आनेवाली है..."

"अरे, मां, छोड़ो भी ये बातें!" पेरशान ने कृत्रिम उत्साह के साथ प्रतिवाद किया।

दुःख से सकीना उदास हो गयी थी, मुरझा गयी थी। गराश और पेरशान भी शोकाकुल थे, लेकिन वे जवान थे, जबकि सकीना की वह उम्र बीत चुकी थी। वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि पति के बिना

वह एक दिन भी जी सकेगी। सुबह उठकर वह चूल्हा जलाती, पर रुस्तम नहीं नज़र आता; गाय को दुहकर चरागाह रवाना कर देती, पर रुस्तम नज़र नहीं आता, दोपहर का खाना पकाती, शाम की चाय बनाती, पर रुस्तम नज़र नहीं आता...

दासे पर रखी उसकी तम्बाकू की थैली और पाइप यों ही पड़े रहेंगे, उन पर धूल जम जायेगी...

पिछले कुछ दिनों से सकीना को हर समय विपत्तियों की ही आशंका रहती थी: पेरशान को खेत में देर हो जाती—मां परेशान हो जाती, गराश को दोपहर के खाने पर आने में देर हो जाती—मां का दिल डूबने लगता।

"चालक कहीं अपनी जान की परवाह करते हैं?" सकीना ने ठण्डी सांस लेकर कहा। "ट्रक को तेज़ दौड़ाते हैं, हवा से बातें करना चाहते हैं। जैसे घर में आग लग गयी हो।"

"पर गराश नौसिखिया नहीं है," पेरशान ने उसे याद दिलाया। "कुछ नहीं होगा।"

"दुर्घटनाएं कहीं सिर्फ़ नौसिखियों के साथ ही होती हैं? पलक झपकते सामने से आती मोटर से टक्कर हो जाती है... इस साल हमने इतने दुःख भोगे हैं कि अब मुझे हर चीज़ से डर लगता है।"

"रेडियो खोल दूं या तुम्हें किताब से कुछ पढ़कर सुनाऊं?" पेरशान ने सुझाव दिया।

"मुझे कुछ सूझ ही नहीं रहा है। गराश कहां है?"

"वह कोई बच्चा तो है नहीं..."

"कौन जाने, क्या हो जाये, मेरा दिल बहुत घबरा रहा है।"

"तुम किसी बारे में कुछ मत सोचो! जो होना था, सो हो चुका... अब सिर्फ़ अच्छे के बारे में सोचो," पेरशान मां को ऐसे मनाने लगी, जैसे वह बच्चा हो।

"लेकिन किस बारे में सोचूं, यह मेरा अपना मामला है," सकीना ग़ुस्सा हो उठी। "तुम्हारा क्लब में जाने का समय हो गया।"

"तुम्हारे बिना नहीं जाऊंगी।"

"हाय अल्लाह!.." सकीना ने अहाते में जाकर झाड़ू उठाई और झड़ी हुई पत्तियों को बुहारकर ढेर लगा दिया, नांद के पास जमा हुई मुर्ग़ियों को दाना डाला, फिर गली के फाटक को खोला और बंद कर दिया, मानो यह देखना चाहती हो कि उसके क़ब्ज़े ठीक से चरमराते हैं या नहीं।

"चलो, क्लब चलते हैं," बेटी ने बरामदे में निकलकर हठपूर्वक कहा।

"अरी, लड़की," सकीना ने खीजकर कहा, "मेरा पीछा छोड़ दे! अगर मेरी थोड़ी भी इज़्ज़त करती है तो कपड़े बदल और चली जा।"

पेरशान उसे मना भी रही थी और रुआंसी भी हो उठी थी, पर मां नहीं मानी।

उसे न चाहते हुए भी कपड़े बदलने जाना पड़ा। कुछ मिनट बाद पेरशान पिता द्वारा बाकू से लायी हुई पोशाक ठीक करती हुई बाहर निकली और पेटेन्ट चमड़े के जूतों से धूल झाड़ती हुई चिन्ताकुल स्वर में बोली:

"मैं कैसी लगती हूं?"

"तुम बस सुखी रहो..." सकीना ने सोचा और बरबस मुस्कराकर बोली:

"बहुत सुन्दर! ज़रा नखरे कम करो और नाक मत चढ़ाओ। भागो, वरना कहीं देर न हो जाये..."

अकेली रह जाने पर सकीना ने सूखी पत्तियां उठाकर रुस्तम द्वारा मुर्ग़ियों के दरबे के पीछे खोदे गड्ढे में डाल दीं और उसे मिट्टी से पाट दिया: वसन्त तक गल जायेंगी। फिर वह बरतन उठाकर अलमारी में रख आयी, फ़र्नीचर से धूल पोंछ दी, खिड़कियों के परदे खींच दिये, पर गराश नहीं आया...

अन्त में बाहर से मोटर के टायरों की हल्की सरसराहट सुनाई दी। सकीना जल्दी से फाटक की तरफ़ लपकी, पर बेटे ने उससे पहले पहुंचकर ख़ुद फाटक खोल दिया।

"सलाम, मां।"

"तुम कहां ग़ायब हो गये थे?"

गराश ने आंखें झुका लीं।

"रास्ते में 'लाल झण्डा' गया था।"

"फिर?"

"वहां कोई नहीं था। घर बंद पड़ा था।"

"और तुम्हारे अब्बा?"

"उनकी तबीयत पहले से बेहतर है।"

२

अगर किनारे के पास पानी छिछला होता, तो अवश्य ही पथरीले तल से टकराकर रुस्तम का काम तमाम हो जाता, पर खड़ी चट्टान के नीचे

पानी गहरे भंवर में चक्कर काट रहा था, भारी शरीर पानी को चीरकर नीचे गया, लहरें फैल गयीं और उसके बाद वे रुस्तम को सतह पर ले आयीं।

वह तैरकर पानी की सतह पर आ गया, खांसा और उसे महसूस हुआ कि उसके बुढ़ापे से अप्रभावित शरीर की सारी अति-प्रबल शक्ति उसके हाथों में आ गयी है। वह पानी को चीरने लगा, पानी उसे सहारा दे रहा था और प्रवाह उसे बहाकर ले जा रहा था।

वहां किनारे ढालवां और ऊंचे थे, रुस्तम को पत्थरों पर रेंगते हुए चढ़कर ऊपर पहुंचने की आशा नहीं थी, इसका अर्थ था कि उसे किसी भी तरह तैरकर पुल तक पहुंचना चाहिए। लेकिन क्या उसमें इतनी ताक़त है?

मौत परछाईं की तरह रुस्तम का पीछा कर रही थी, उसका काफ़ी ख़ून निकल गया था और वह बार-बार सिर के बल डुबकियां खा रहा था। अब उसे भय लग रहा था कि उसका दिल यह बर्दाश्त नहीं कर पायेगा, तनाव के कारण फट जायेगा, जब कि जैसे-जैसे वह पुल के नज़दीक पहुंच रहा था, वैसे-वैसे प्रवाह तीव्र और प्रचण्ड होता जा रहा था।

ये आ गये जीवन के अन्तिम क्षण, अब वह सकीना और बच्चों को कभी नहीं देख पायेगा... पैर वज़नी हो उठे और वह तल की तरफ़ खिंचने लगा... रुस्तम छटपटाया, कभी लहरों में डूबता, तो कभी ज़ोर लगाकर ऊपर आता, फिर हताशा और मृत्युकालीन पीड़ा के कारण ज़ोर से चीख़ पड़ा:

"बचा ऽऽ ओ ऽऽ!" और वह बेहोश हो गया।

रुस्तम ने अस्पताल के पलंग पर आंख खोली। उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि बाज़ार से लौट रहे चरवाहे केरेम ने उसकी चीख़ सुन ली थी और उसे बचाने के लिए पुल से पानी में कूद पड़ा था।

डाक्टर रुस्तम को हिलने-डुलने व उठने के लिए मना करते थे, – उसका दिल जवाब दे जायेगा। और वह धैर्यपूर्वक उनकी सलाह मान रहा था। लेकिन जब उन्होंने उससे कहा: "किसी भी बारे में मत सोचो!" – वृद्ध बिखरी हुई मूंछों में निःशब्द व्यंग्यपूर्वक मुस्करा पड़ा: "इस मामले में, प्यारो, तुम मुझ पर कोई हुक्म नहीं चला सकते!..." रुस्तम पहली बार स्वतन्त्र था, पूर्णतया स्वतन्त्र: न कोई ज़िम्मेदारी, न कोई काम... लेटे-लेटे छत को ताकते रहो और यादों में खो जाओ।

उसके पास उसके निकट सम्बन्धियों को नहीं आने दिया जा रहा था, लेकिन उसने विनती करके अपनी पत्नी और गराश से मिलने की अनुमति ले ली और बेटे से उसे सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष के पद से मुक्त करने का प्रार्थनापत्र बोलकर लिखवा लिया।

"अब मेरी तरफ़ से हस्ताक्षर भी कर दो," रुस्तम ने उससे कहा और सिर पर कम्बल ओढ़कर अपने आप से बोला: "लो, बुढ़ऊ, अब तुम्हारी नयी ज़िन्दगी शुरू हो गयी..."

सामूहिक फ़ार्म में अफ़वाहें फैल रही थीं कि पत्नी व पुत्र के अलावा माय्या भी बीमार से मिलने गयी थी। उसने ख़ुद उसे अपने पास बुलवाया... लेकिन किसी ने भी माय्या को वहां नहीं देखा था, इसलिए इस समाचार की सत्यता की पुष्टि करवाना असम्भव था। रुस्तम का प्रार्थनापत्र बेटा उसी दिन पार्टी की ज़िला समिति में दे आया।

"यह क़िस्सा लम्बा है, कष्टदायक है और काफ़ी सीमा तक स्वाभाविक भी है," कहते हैं ज़िला समिति के सचिव ने गराश से यह कहा था। "थोड़ा इंतज़ार करेंगे जब बुज़ुर्ग ठीक हो जाये, तभी इस पर विचार करेंगे।"

और सामूहिक फ़ार्म में फिर अफ़वाहों का बाज़ार गरम हो गया। कुछ लोग यक़ीन दिलाने लगे कि ज़िला समिति जांच के निष्कर्षों की प्रतीक्षा कर रही है: रुस्तम भी तो इस मामले में फंसा हुआ है, उसने सलमान, गूंगे हुसैन और यारमामेद के साथ मिलकर सामूहिक फ़ार्म का पैसा हड़पने की कोशिश की है। अभी तो देखना चाहिए कि जेल में बंद किये गये हुसैन और लेखाकार क्या कहते हैं। कुछ दावे के साथ कहते थे कि इस मामले में ज़्यादा से ज़्यादा उन लोगों को झिड़की दी जायेगी और रुस्तम-कीशी अपने पद पर बना रहेगा: उसका दिल शीशे-सा साफ़ है, दोष उसका केवल इतना ही है कि उसने लफ़ंगे पर विश्वास किया। कुछ लोग कहते थे कि ग़लतियां की गयी हैं, बेशक बहुत गम्भीर ग़लतियां की गयी हैं, पर वृद्ध ने जो महान सेवाएं की हैं, उन्हें भी नहीं भूलना चाहिए। उसे उसकी आयु के कारण पद से मुक्त कर देना चाहिए: रुस्तम पेंशन पाने योग्य हो चुका है।

लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि असलान दो दिन हुए, ज़िला समिति के ब्यूरो की बैठक के बाद शाम देर गये वृद्ध से अस्पताल में मिलने गया था और उन्होंने काफ़ी देर तक खुले दिल से बात की थी।

असलान ने रुस्तम का दिल बहलाने और बातचीत का रुख़ दुनियादारी की बातों की ओर मोड़ने की कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर वृद्ध बार-बार 'नवजीवन' के भविष्य की बात छेड़ देता।

"मुझे अब इस बात की चिन्ता नहीं है कि मेरे सिर का बोझ उतर गया, बल्कि इस बात की है कि सामूहिक फ़ार्म किसी भरोसेमंद और अक़्लमंद आदमी को सौंपना चाहिए। और मैं सिफ़ारिश करता हूं – तुमने कभी सोचा भी न होगा – ज़ैनब क़ुलियेवा के नाम की।"

साधारणतया शान्त रहनेवाला असलान भी आश्चर्यचकित रह गया।

"ज़ैनब?!"

"बेशक।"

रुस्तम दिन-रात अपने उत्तराधिकारी के बारे में सोचता रहता था, वह मन में अब बिना किसी दुर्भाव के शेरज़ाद, नजफ़ और यहां तक कि तेज़-ज़बान तेल्ली चाची के बारे में भी सोचता रहा, पर उसने चुना क़ुलियेवा को और वह अपने निर्णय से सन्तुष्ट था।

"दूसरे सामूहिक फ़ार्म से?" असलान ने सावधानीपूर्वक उसे याद दिलाया।

"अरे, तुम भी क्या, वह है तो हमारे गांव की। श्रम-वीर है!" वृद्ध ने सख़्ती से कहा। "अपने सामूहिक फ़ार्म में लौट आयेगी। और यह भी याद रखो, वह, वह मेरी शिष्या है," रुस्तम ने अंत में कहा और अपने आत्मसम्मान को बनाये रखने की चेष्टा की।

"अच्छा, अच्छा," असलान ने मज़ाक़ में कहा और कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

इस प्रकार की अफ़वाहें और कानाफूसी से सकीना का चित्त और अधिक अशान्त हो उठा था।

गराश ने उसे कितना ही क्यों न समझाया कि उसे क्लब में आयोजित सभा में जाना चाहिए, पर मां ने दृढ़तापूर्वक कह दिया कि वह घर पर ही रहेगी।

"मुझे वहां जाने की क्या जरूरत है, लाड़ले, अगर मेरा मन ही नहीं करता?"

"मां, मेहरबानी करके मना मत करो। शिष्टाचार के नाते जाना चाहिए। लोग क्या सोचेंगे? समाजवादी प्रतियोगिता में हम पीछे रह गये, प्रथम स्थान हमने 'लाल झण्डा' के लिए छोड़ दिया, तिस पर तुम,

अध्यक्ष की पत्नी, नहीं जाओगी... तुम्हें जाना चाहिए, वहां ज़रूर मौजूद रहना चाहिए। तुम ख़ुद जानती हो, क्लब अभी तैयार नहीं है: सब जगह दीवारों पर रंग नहीं हुआ है, बिजली नहीं है और पुस्तकालय भी अभी पूरा नहीं बना है... और सामूहिक किसानों ने सभा का आयोजन वहीं करने का निश्चय इसीलिए किया है, ताकि अब्बा को ख़ुशी हो।"

सकीना इस बारे में सुन चुकी थी: तेल्ली चाची और प्रबन्ध समिति के दूसरे सदस्य किसी न किसी तरह संस्कृति-भवन को जल्दी से जल्दी दुरुस्त करने में जुटे हुए थे—क्योंकि वह रुस्तम की सबसे प्रिय देन थी,—उनका यह मानकर चलना भी तर्कसंगत था कि नये भवन में सभा के आयोजन के समाचार से बीमार का उत्साह थोड़ा बढ़ जायेगा, उसे प्रसन्नता होगी।

"शुक्रिया, लाड़ले, मेरे लिए लोगों का आदर पाना ही काफ़ी है।"

"ख़ाली धन्यवाद से काम नहीं चलता, उठो और तैयार हो जाओ"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगी।"

"अब्बा ने कहा है," गराश ने अन्तिम दलील दी। "आज उन्होंने फिर याद दिलाया था: बढ़िया कपड़े पहनकर जाओ और सारे परिवार के साथ सबसे आगे की क़तार में बैठना।"

सकीना बरबस मुस्करायी: हां, ऐसी बात केवल उसका पति ही कह सकता है। प्रतियोगिता में कारा केरेमोगलू की विजय को उसने धैर्यपूर्वक लिया और तुरन्त अगले मुक़ाबले में बदला लेने के सपने संजोते हुए अपनी तैयारी शुरू कर दी।

लेकिन फिर भी घर छोड़कर जाने का इसका कोई इरादा नहीं था: उसके लिए लोगों की कुतूहली, बुरा चाहनेवाली और सहानुभूतिपूर्ण नजरें सह पाना अत्यन्त कठिन था।

किसी ने फाटक खटखटाया, और सकीना का दिल धड़क उठा। यह और क्या हो गया? शराफ़ोगलू और गोशातख़ां अपनी पत्नी के साथ अंदर आये।

"हम आप लोगों को ले जाने के लिए आये हैं," मेलेक ख़ानम ने कहा।

पति के मित्रों और शत्रुओं की चिन्ताशीलता सकीना के हृदय को छू गयी: उसने आदतन गोशातख़ां की तरफ़ शक की नजर से कनखियों से देखा...

मेलेक सकीना को एक तरफ़ ले जाकर बोली कि रुस्तम तेज़ी से स्वस्थ हो रहा है, उसका शरीर असाधारण रूप से स्वस्थ है। यह सच है कि उसका दिल कभी-कभी परेशान करता है, पर इतनी दुर्घटनाओं के बाद इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अगर वह डाक्टरों की सलाह का पालन करते रहते, तो दो-एक हफ़्ते में उसे घर जाने की छुट्टी मिल जाती।

"क्या वह कहना नहीं मानते हैं?" सकीना मुस्करायी, हालांकि वह जानती थी कि उसके पति ने सारे जीवन में किया ही यह है कि किसी का कहना नहीं माना।

"अरे, कहां मानते हैं!" मेलेक ने ज़ोर से कहा, ताकि सब सुन लें। "उन्हें अस्पताल के बाग़ में एक घंटा टहलने की इजाज़त मिली थी, पर उन्होंने क्या किया... ज़रा सोचिये तो सही, चहारदीवारी से बाहर निकलकर राजमार्ग पर एक ट्रक रोक लिया और जैसे गाउन और स्लीपर पहने थे, उसी हालत में घर रवाना हो गये..."

सकीना ने हाथ पर हाथ मारा।

"अच्छा हुआ कि नर्स ने यह सब तीसरी मंज़िल की खिड़की से देख लिया और मेरे पास भागी आयी... उन्हें वापस लाकर शर्मिंदा किया गया। बेशक दिल पर असर हुआ ही। सूई लगानी पड़ी..."

"कैसे हिम्मत हुई उनकी डाक्टरों का कहना न मानने की?" सकीना ने हंसते हुए और रोते हुए भी आश्चर्य व्यक्त किया।

"अरे, उन्होंने तो, चाची, बिना शर्माये हमसे कहा कि वह अपने को जेल में बंद महसूस करते हैं। 'मुझे तो बस एक बार अपने घोड़े पर काठी कसकर उसे कूरा तट पर सरपट दौड़ाने का मौक़ा मिल जाये, फ़ौरन ठीक हो जाऊंगा,' ये उन्हीं के शब्द हैं।"

"मैं जानती हूं रुस्तम-कीशी को!" सकीना दुःख मिश्रित गर्व के साथ मुस्करायी।

"और उसकी बात भी ठीक है," शराफ़ोगलू ने अपने मित्र का पक्ष लिया। "स्तेपी की हवा फ़ौरन सारे रोग ठीक कर देती। आख़िर वह मुग़ान में पैदा और बड़ा हुआ है। आप लोगों को समझना चाहिए: यह आख़िर मुग़ान है!.."

दूसरी मंज़िल पर खिड़कियों में शीशे न लगाये जाने के कारण मुंह बाये-सी लग रही उजली इमारत के बाहर सजे-धजे लोगों की भीड़ लग गयी। उनमें लाठियां टेके खड़े सफ़ेद-झक ग्रौर सफ़ाई से तराशी दाढ़ीवाले वृद्ध भी थे; सूट पहने हुए जवान मर्द भी थे; चहचहाती लड़कियां ग्रौर बच्चों के साथ ग्रायी स्त्रियां भी...

सकीना भीड़-भाड़ से बचने के इरादे से किनारे ही खड़ी थी, उसे झुककर किये गये सलामों का गरिमा के साथ जवाब दे रही थी ग्रौर सहेलियों के साथ धीरे-धीरे बातें कर रही थी।

"समय हो गया! समय!.." भीड़ में से किसी विनोदी व्यक्ति ने पूरे ज़ोर से चिल्लाकर कहा ग्रौर तुरन्त बैठकर ग्रपने पड़ोसियों की ग्रोट में छिप गया।

"हम 'लाल झण्डा' से ग्रानेवाले मेहमानों का इंतज़ार कर रहे हैं।"

"सभा का उद्घाटन कौन करेगा?"

सबने एक दूसरे की तरफ़ देखा।

शराफ़ोगलू ने सकीना के होंठ कांपते ग्रौर ग्रांखें नम होती देख लीं ग्रौर शान्त स्वर में, मानो रोज़मर्रा के कामों की बात हो रही हो, कहा:

"बेशक, उपाध्यक्ष ही करेगा।"

भीड़ में शोर होने लगा: कुछ दिन पहले सपाट सलमान भाग गया था। उसके घर के दरवाज़ों पर ग्राड़े तख़्ते ठुके हुए थे ग्रौर जंगली हुई मुर्ग़ियां कभी उड़कर छत पर जा बैठती थीं, तो कभी दूसरों के ग्रहातों में मारी-मारी फिरती रहती थीं।

ग्रचानक शान्ति छा गयी: दरवाज़े के पास हाथों में कैंची लिये घबराहट के कारण लाल हुई ज़ैनब क़ुलियेवा नज़र ग्रायी। तभी लोगों को याद ग्राया कि हाल ही में प्रबन्ध समिति ने ज़ोरदार बहस के बाद उसकी उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्ति की पुष्टि कर दी थी।

यह सच है कि ग्रारम्भ में किसी ने गिज़ेतार का नाम प्रस्तावित किया था: वह बुद्धिमान, मेहनती लड़की है, हम काम संभालने में उसकी मदद किया करेंगे। लेकिन गिज़ेतार ने साफ़ इनकार कर दिया।

तब ग्रसलान ने बोलने की ग्रनुमति लेकर रुस्तम की ज़ैनब क़ुलियेवा को सामूहिक फ़ार्म का ग्रध्यक्ष चुनने की सलाह की याद दिलायी।

"चलिये, हम ग्रभी उसे उपाध्यक्ष नियुक्त किये देते हैं। फ़िलहाल उपाध्यक्ष। ज़रा ग्रादी हो जाये, सब देख-समझ ले, काम संभाल ले, फिर ग्रागे देखा जायेगा।"

ज़िला समिति के सचिव के प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया ग्रौर जब मतदान हुग्रा, तो उसके विरोध में कोई मत नहीं दिया गया।

इसीलिए संस्कृति-भवन का उद्घाटन करने का सम्मान ज़ैनब क़ुलियेवा को प्राप्त हुग्रा।

सकीना उसके नामज़द किये जाने पर दिल से ख़ुश हुई, उसे कोई सन्देह नहीं था कि वह ग्रवश्य ही नये काम को संभाल लेगी।

ग्रब वह मैत्री भाव से ग्रन्तिम निर्देश दे रही ज़ैनब की तरफ़ देख रही थी। वहां स्कूली बच्चे बड़े लैम्प हाथों में उठाये ग्रा गये।

"बच्चो, दो लैम्प मंच पर रख दो।"

हां, हम तो ज़ैनब ख़ानम, लैम्प वहां रख चुके हैं।"

"मुझे मालूम है। ग्रगर मैं कह रही हूं कि दो लैम्प ग्रौर रखने चाहिएं, तो इसका मतलब है, उन्हें रखना ज़रूरी है," ज़ैनब ने ग्रत्यन्त शान्त स्वर में कहा। "जितनी रोशनी होगी उतना ही ग्रच्छा लगेगा।"

मोटरों का शोर सुनाई दिया, भीड़ ने बड़ी मुश्किल से उनके लिए रास्ता छोड़ा, भवन के सामने दो कारें ग्रौर एक बंद गाड़ी ग्राकर रुकी: 'लाल झण्डा' से मेहमान ग्रा पहुंचे थे।

सकीना की नज़रें मेहमानों की भीड़ में माय्या को ढूंढ़ने लगीं। वह 'पोब्येदा' कार से सब से ग्राख़िर में उतरती दिखाई दी। वह ग्रपने फूले बदन को ढकनेवाली चौड़ी पोशाक पहने हुए थी, बदसूरत हो गयी थी ग्रौर उसका चेहरा पीला ग्रौर पिचका लग रहा था।

सकीना पुत्रवधू की तरफ़ लपकी, पर परेशान कोहनियों से रास्ता बनाती हुई उससे पहले माय्या के पास पहुंच गयी ग्रौर उसका ग्रालिंगन कर उसे चूम लिया।

लैम्प जल रहे थे, ग्रौर भीड़ हाल में दाख़िल हो गयी। बेटी ग्रौर बहू के नज़रों से ग्रोझल हो जाने पर सकीना दीवार से सट गयी।

वह देर से ग्राये सारे सामूहिक किसानों के ग्रंदर जाने तक वैसे ही खड़ी रही, निस्सन्देह उसे देर हो गयी ग्रौर वह शेरज़ाद को कांपती ग्रौर घबरायी ग्रावाज़ में प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते, 'लाल झण्डा'

के सामूहिक किसानों को उनकी यथायोग्य, ईमानदारी से हासिल की गयी विजय पर बधाई देते नहीं सुन सकी।

गराश ने मां को वहां ढूंढ़ लिया, उसे उलाहना देने की इच्छा हुई, पर उसने केवल हाथ हिला भर दिया और मां को पहली क़तार में ले गया।

"पर रुस्तम नहीं है..." सकीना ने कीशी के लिए तैयार रखे गये सम्मानित स्थान की ओर दुःखी मन से सोचते हुए देखा। उस पर कोई नहीं बैठा...

कारा केरेमोगलू ने मेज़बानों को अतिथि-सत्कार के लिए धन्यवाद दिया और अपने सामूहिक फ़ार्म की उपलब्धियों के बारे में एक भी शब्द न कहकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया: उसका भाषण ज़्यादातर मुग़ान के भविष्य के बारे में दिली बातचीत-सा लग रहा था।

अपने भाषण के अन्त में उसने अस्पताल में रुस्तम को उसके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ करके घर लौटने की कामना का तार भेजने का प्रस्ताव रखा।

मंच पर युवतियों की गायक-मण्डली गा रही थी, और हालांकि माय्या सबसे दूर के कोने में खड़ी थी, पर सकीना बराबर उसी की तरफ़ देखती जा रही थी, अपनी बेटी की तरफ़ ध्यान नहीं दे रही थी। माय्या लम्बा, सफ़ेद रेशमी स्कर्ट और पीला ब्लाउज पहने थी और सिर पर रंगीन रूमाल बांधे थी, जो काराबाख़ की दुलहनों का पहनावा था... उसने भी अन्य सभी लड़कियों की तरह मेक-अप किया था, इसलिए वह पहले की तरह जवान और खिली हुई दिख रही थी।

वृंदगान सबको पसंद आया, पर सबसे शानदार सफलता 'चक्कीवाला और दुलहन' नामक नृत्य के प्रदर्शन के लिए तेल्ली चाची और शेरज़ाद को मिली।

बतख़ की तरह मटकती बहू की भूमिका में चाची का और घमण्डी व कामुक तथा कुछ-कुछ सपाट सलेमान की याद दिलानेवाले चक्कीवाले की भूमिका में शेरज़ाद का अभिनय इतना हास्यजनक था कि हॉल में निरन्तर ठहाके लगते रहे, तालियां बजती रहीं, दाद दी जाती रही।

तेल्ली अपनी बनाई हुई भौंहों को बड़ी नख़रीली अदा से चलाती हुई क्रूर चक्कीवाले से जल्दी से अनाज पीसने के लिए मिन्नत करती है,— क्योंकि उसकी बारी कभी की आ चुकी है:

मुझ पर तरस ही खाओ थोड़ा सा, चक्कीवाले,
बे आग जल रहा है दिल मेरा, चक्कीवाले।
गेहूं से कैसे रोटी पकेगी... यह बुरा दिन,
मैंने नहीं कभी भी देखा था, चक्कीवाले।

और उसकी सुन्दरता पर मोहित हुआ चक्कीवाला दुलहन को अधिक से अधिक समय तक अपने पास रोके रखने की कोशिश में उसे बड़े प्यार से मनाता है:

छाया हुआ है मेरे दिल में अंधेरा, ख़ानम,
पानी नहीं है, नाली का तल है दिखता, ख़ानम,
रोटी बिना भी आख़िर जी लेंगे जैसे तैसे...
दुःख मेरा, आप का है बस एक जैसा, ख़ानम।

"पार्टी संगठनकर्त्ता को ऐसे स्वांग रचना कुछ शोभा नहीं देता," सकीना को किसी की फुसफुसाहट सुनाई दी और उसने सोचा: "मेढक को उसकी टर्र-टर्र से पहचाना जा सकता है, जबकि यारमामेद के दोस्तों को उनके लोगों से नफ़रत करने से।"

उधर मंच पर बांके नौजवान तूफ़ानी गति के नृत्य में हवा में उड़-से रहे थे, उनके बीच में नजफ़ घूम रहा था, कूद रहा था, लगता था उसके मोटापे से उसकी फुर्ती और दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था लेकिन तभी वस्त्र बदलकर आते ही शेरज़ाद वृत्त में कूद पड़ा और उसमें इतना पुरुष-सुलभ आकर्षण था कि बहुत-सी युवतियां परेशान से मन-ही-मन डाह करने लगीं: "अरे, कितनी नासमझ है, बेकार वक़्त बरबाद कर रही है!"

हॉल में कुरसियां दीवारों से सटाई जाने लगीं, थके-हारे वाद्यकारों ने 'न्यलबेकी' और 'थल्ली'* की धुन छेड़ दी, केवल मेज़बान ही नहीं, मेहमान भी नाचने लगे: वे कारा केरेमोगलू को वृत्त में खींच लाये, गोशा-तखां भी नहीं बच सका, उसे भी धकेलकर नाचने के लिए बाध्य कर दिया।

...गराश को माय्या कहीं नज़र नहीं आयी। "क्या वह सचमुच कंसर्ट के बाद वापस चली गयी?" वह सोचकर दुःखी हो उठा, उसे दुनिया में कोई दिलचस्पी नहीं रही: वह हॉल में अकेला एक सिगरेट पीकर धीरे-धीरे अपने सूने और निरानन्द घर रवाना हो गया।

मेहमान वास्तव में जा रहे थे, कारा केरेमोगलू ने स्वागत व स्नेह के लिए धन्यवाद दिया और अपने यहां शस्योत्सव पर आने का निमंत्रण दिया।

---

* 'न्यलबेकी' और 'थल्ली'—आज़रबैजानी लोक-नृत्य।

"आयेंगे, आयेंगे," तेल्ली चाची ने वादा किया। "लेकिन यह उम्मीद छोड़ दो कि तुम्हारे लोग हमें नाच में मात दे सकते हैं।"

"जब हमने पैदावार में मात दे दी, तो नाच में भी मात देने की पूरी कोशिश करेंगे," कारा केरेमोगलू ने सोचा, पर सहृदय मुस्कान के साथ बोला:

"अरी, बहन, सूत न कपास, फिर जुलाहों में लट्ठमलट्ठा से क्या फ़ायदा? आओ हमारे यहां, तुम्हारा सदा स्वागत है..."

मुख्यद्वार पर मिट्टी के तेल का लैम्प टिमटिमा रहा था, शरत्कालीन रात की काली चादर पूर्ववत् गांव के ऊपर तनी हुई थी, पर ज़िन्दादिल संगीत के सुर स्तेपी में घरों व बग़ीचों के ऊपर गूंज रहे थे। त्योहार अभी समाप्त नहीं हुआ था।

गराश अहाते में घुसा। वहां सन्नाटा और अंधेरा था, यहां तक कि अलसेशियन भी नहीं भौंका, पर बरामदे में लैम्प जल रहा था—शायद मां लौट आयी थी।

लेकिन खाने का कमरा ख़ाली था, बहन के कमरे का दरवाज़ा बंद था, गराश अपने कमरे में गया और देहलीज़ पर जड़वत् खड़ा रह गया...

खिड़की के पास माय्या बैठी थी, लैम्प के प्रकाश में उसके बाल सुनहले लग रहे थे, उसका पूर्णतया युवा मुख हल्के अंधेरे में सजीव हो उठा था। अपनी आंखों पर विश्वास न कर पा रहे गराश ने उसके निकट आकर अपने दोनों हाथों में उसका बर्फ़ीला हाथ लेकर अपने होंठों से लगा लिया।

"मेरी प्यारी माय्या!"

"चुप रहो... देखो, बिजली चमक रही है, ज़रूर तूफ़ान आयेगा..." माय्या ने कहा नहीं, केवल सोचा, पर गराश सब समझ गया और उसने निःशब्द माय्या को अपनी ओर खींच लिया।

संगम के ऊपर बिजली की लपकें रात के अंधेरे को चीरती, अंधेरे में कभी खड़ी चट्टानों को, कभी तट की रेती को, तो कभी तेज़ प्रवाह को आलोकित करती अठखेलियां कर रही थीं। तट के झुरमुटों का सरसराता पवन का झोंका गांव के बाग़ों तक जा पहुंचा, वृक्षों के शीर्षों से खेलने लगा, और छत पर मोटी-मोटी बूंदें टप-टप गिरने लगीं...

दूर पड़ाव में भेड़ों से घिरे खड़े बाबा और केरेम मूसलाधार वर्षा होने की आशा कर रहे थे। अंधेरे में लगभग बिलकुल नज़र नहीं आ पा रहे कुत्ते उनके पास आकर उनके हाथ चाट रहे थे, और चरवाहे सुखी थे, उतने सुखी, जितने कि श्रम को अपना जीवन अर्पित करनेवाले लोग...

स्तेपी के रास्तों से दूर-दराज़ के सामूहिक फ़ार्मों से जीप में हवा के झोंके खाता जा रहा असलान भी वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा था, आगामी वर्ष की फ़सल के बारे में सोच रहा था, और उसे पूर्ण विश्वास था कि मुग़ान लोगों को ऐसा उपहार देकर निहाल कर देगा, जिसे उन्होंने सपने में भी नहीं देखा।

रुस्तम भी सो नहीं रहा था, अस्पताल के पतले गद्दे पर करवटें बदल रहा था। वह उठकर खिड़की के पास आया। बिजली की चमक को देखता, बादलों की गरज को ध्यानपूर्वक सुनता हुआ अपने जीवन के बारे में सोचने लगा।

और परिष्कारक बिजली कड़क उठी!

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन संबंधी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

रादुगा प्रकाशन,
३०, नवाई स्ट्रीट,
ताशक़न्द, सोवियत संघ